॥ श्री ॥

रागरत्नाकर ।

तथा

भक्तचिंतामणि ।

जिसको

श्रीयुत लाला भक्तराम मेम्बर धर्मसभा जालं-
धरने सज्जनोंके विनोदार्थ संग्रह किया ।

और

[illegible]

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९७८ शके १८५३

भूमिका।

श्लोक–नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद॥

प्रगट हो कि, जब साक्षात् श्रीभगवान् महाराजने श्रीगीताजीमें अपनी प्राप्तिका मुख्य हेतु भक्तिकोही वर्णन किया है और फिर कृपादृष्टिसे उसके साधनभी श्रीमद्भागवतमें प्रत्येक युगके लिये इस भांतिसे विधान कर दिये हैं कि, सतयुगमें ध्यान, त्रेतामें यज्ञ, द्वापरमें पूजा और कलियुगमें तो कीर्तनही सार है तो फिर परमपावन और अतिसुलभ केवल भगवद्गुणानुवादही भक्तजनोंका जीवन धन ठहरा क्योंकि –

सोरठा–हरिपद प्रीति न होय, बिन हरिगुण गाये सुने।
भवते छुटत न कोय, बिना प्रीति हरिपद भये॥

इसलिये मैंने सूरदास आदि अष्टछाप तथा तुलसीदास, कबीरदास, नामदेव, गुरु नानक आदि प्राचीन तथा नवीन भक्तोंके कथन कियेहुए भगवच्चरित्रोंको जो अभीतक छपकर विशेष विख्यात न होनेसे भक्तजनोंको दुर्लभ थे जहां तहांसे संग्रह कर तथा कुछ छपेहुए पद भी चुनकर जो उनके साथ मिलते थे आनन्द वृद्धिका हेतु होनेसे उनके बीचमें संचित कर दिये हैं और अबकी दशवींबार अत्यन्त विस्तारतापूर्वक पद बढा दिये हैं अर्थात् दोहजार पदोंके लगभग लीलाक्रमसे ग्रथित किये गये हैं और यों तो जहां बडे बडे ब्रह्मादिक देवताओंने आजतक प्रभुकी विचित्र लीलाओंका पारावार नहीं पाया अपनी मति अनुसार सबनेही यत्न किया है तो फिर यह मन्दमति किस गिनतीमें है "ज्यहि मारुत गिरि मेरु उडाहीं। कहौ तूल केहि लेखे माहीं" इसलिये सम्पूर्ण सज्जनोंसे अति विनयपूर्वक प्रार्थना तथा दृढ विश्वास है कि जहां जो कुछ भूल चूक हो उसे सुधार लेवेंगे और हरिचरित्र परमपवित्र समझकर अवश्य श्रवण कीर्तन करेंगे।

दोहा–अपनी ओर निहारके, क्षमा करो अपराध॥
जिहि तिहि विधि हरि गाइये, कहत सकल श्रुति साध॥

और यह परम अमृतमय जो रहस्य है वह वाणीसे परे है इसलिये भक्तजनोंके निर्मल हृदयमें आपही प्रकाशमान होजायगा।

इसका रजिष्टरी हक खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयाधीशको समर्पण है॥

रागरत्नाकर तथा भक्तचिन्तामणि संग्रहकर्त्ता;–
आपका दास–भक्तराम, जालन्धरनिवासी


श्री गणेशजी
श्री वागीश्वरी


श्रीकृष्ण
राधा
गोपी


गायक मंडली


श्री कृष्णजी की बाल लीला
यशोदाजी


माखनचोरीलीला


गोचारनलीला


कालीदमन


गोवर्धनलीला


वंशीलीला


रासलीला


दानलीला


हिंडोलाझूलन
लीला


सांगीलीला


मथुरा गमन लीला


रघुनाथलीला

॥ श्रीः ॥

रागरत्नाकरका—

अक्षरोंके क्रमसे पदोंका सूचीपत्र ।

(ओ—औ)

(अं)

(घ)

(च)

(भ)

(म)

॥ इति रागरत्नाकर पदसूची समाप्त ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ।

रागरत्नाकर

—.०॰X॰०—

मंगलाचरणश्लोकाः ।

अंसालंबितवामकुण्डलधरं मंदोन्नतभ्रूलतं
किंचित्कुंचितकोमलाधरपुटं साचिप्रसारेक्षणम् ॥
आलोलांगुलिपल्लवैर्मुरलिकामापूरयंतं मुदा
मूले कल्पतरोस्त्रिभंगललितं ध्याये जगन्मोहनम् ॥ १ ॥
जातु प्रार्थयते न पार्थिवपदं नैन्द्रे पदे मोदते
सधत्ते नवयोगसिद्धिषु धियं मोक्षं च नाकांक्षति ॥
कालिंदीवनसीमनि स्थिरतडिन्मेघद्युतौ केवलं
शुद्धे ब्रह्मणि वल्लवीभुजलताबद्धे मनो धावति ॥ २ ॥
ज्ञातं काणभुजं मतं परिचितैवान्वीक्षिकी शिक्षिता
मीमांसा विदितैव सांख्यसरणिर्योगे वितीर्णा मतिः ॥
वेदांतः परिशीलितः सरभसं किंतु स्फुरन्माधुरी-
धारा काचन नंदसूनुमुरली मच्चित्तमाकर्षति ॥ ३ ॥
काषायान्न च भोजनादिनियमान्नो वा वने वासतो
व्याख्यानादथवा मुनिव्रतभराच्चित्तोद्भवः क्षीयते ॥
किन्तु स्फीतकलिंदशैलतनयातीरेषु विक्रीडतो
गोविन्दस्य पदारविन्दभजनारम्भस्य लेशादपि ॥ ४ ॥
मेघैर्मेदुरमंबरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमै-

नंक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय ॥
इत्थं नंदनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंजद्रुमं
राधामाधवयोर्जयंति यमुनाकूले रहःकेलयः ॥ ५ ॥
फुल्लेन्दीवरकांतमिंदुवदनं वर्हावतंसप्रियं
श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ॥
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूपं भजे ॥ ६ ॥
वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात्
पीतांबरादरुणविम्बफलाधरोष्ठात् ॥
पूर्णेन्दुसुंदरमुखादरविन्दनेत्रात्
कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥ ७ ॥
ध्यानाभ्यासवशीकृतेन मनसा यन्निर्गुणं निष्क्रियं
ज्योतिः किंचन योगिनो यदि परं पश्यंति पश्यंतु ते ॥
अस्माकं तु तदेव लोचनचमत्काराय भूयाच्चिरं
कालिन्दीपुलिनेषु यत्किमपि तन्नीलं महो धावति ॥ ८ ॥
कुर्वंति केऽपि कृतिनः क्वचिदप्यनंते
स्वांतं विधाय विषयांतरशांतिमेव ॥
त्वत्पादपद्मविगलन्मकरंदबिंदु-
मास्वाद्य माद्यति मुहुर्मधुलिण्मनो मे ॥ ९ ॥
केचिन्निगृह्य करणानि विसृज्य भोग-
मास्थाय योगममलात्मधियो यतन्ते ॥
नारायणस्य महिमानमनंतपार-
मास्वादयन्नमृतसारमहं तु मुक्तः ॥ १० ॥
दोहा–श्रीगुरु श्रीगोविंदपद, मङ्गलहित करुँ ध्यान ।
मङ्गल श्रीव्रजराज घर, जो पाऊँ सन्मान ॥ १ ॥

गोपी गोपी जगतमें, जिनकी उलटी रीति।
तिनके पग वन्दन करूँ, करी कृष्णसो प्रीति ॥ २ ॥
हाथ जोरि विनती करों, सुनो गरीब निवाज।
अपनोही करि जानिये, बॉहगहेकी लाज ॥ ३ ॥
नन्दरायके लाडिले, भक्तन प्राण अधार।
भक्तरामके उर वसो, पहिरे फूलनहार ॥ ४ ॥
भक्ति भक्त भगवन्त गुरु, चतुर नाम वपु एक।
तिनके पग वन्दन किये, नाशत विघ्न अनेक ॥ ५ ॥
तिनपर भ्रमर समान नित, अटकि रहे मन मोर।
भक्तराम कबहूँ नहीं, चितवै काहू ओर ॥ ६ ॥
हर्षि देहु वर मांगहूँ, यशुमति जीवनमूर।
नित दासनके पगनकी, भक्तरामको धूर ॥ ७ ॥

समाजी वचन।

श्रीव्रजराजकुमारवरगाइये, आनन्दकीनिधिवरगाइये ॥
भक्तनकोमनभावतोगाइये, श्रीलाडिलीललनवरगाइये ॥
दोहा—नवरसमें कवियन कह्यो, सरस अधिक शृङ्गार।
ताहूमे अतिसरस पुनि, सो यह रासविहार ॥ १ ॥
नवहि अंग शृङ्गारके, होरी चोरी दान।
छलहिकरन वनऋतुगमन, विरहमिलन अरु मान ॥ २ ॥
नागरिया नवनागरी, खेलत रास विलास।
पल पल वारो हे सखी, नित नव नागरिदास ॥ ३ ॥
चन्द्रमिटै दिनकर मिटै, मिटै त्रिगुण विस्तार।
दृढव्रत श्रीहरिवंशको, मिटै न नित्य विहार ॥ ४ ॥
काहूके बल भजनको, काहूके आचार।

व्यास भरोसे कुँवरके; सोवत पाँव पसार ॥ ५ ॥
मुरली मदनगुपालकी, बाजत गहर गँभीर ।
कृष्णदास बाजत सुनी, कालिन्दीके तीर ॥ ६ ॥
सुख मन रूप अनूपहै, कह वरणै कविवृन्द ।
अब वृन्दावन वरणिहौं, जहँ वृन्दावनचन्द ॥ ७ ॥
वृन्दावन आनन्दघन, कछु छबि वरणि न जाय ।
कृष्णललित लीलाकरण, धारिरह्यो जडताय ॥ ८ ॥
मुक्ति कहै गोपाल सो, मेरी मुक्ति बताय ।
ब्रज रज उड मस्तक लगै, मुक्ति मुक्त ह्वै जाय ॥ ९ ॥
नारायण ब्रज भूमिको, सुरपति नावै माथ ।
जहां आय गोपी भये, श्री गोपेश्वर नाथ ॥ १० ॥
धनि वृन्दावन धाम है, धनि वृन्दावन नाम ।
धनि वृन्दावन रसिक जो, सुमिरें राधाश्याम ॥ ११ ॥

श्रीठाकुरजीको वचन ।

दोहा—राधे मेरी लाडिली, मेरी ओर तू देख ।
मैं तोहि राखो नयनमें, काजरकीसी रेख ॥ १२ ॥
राधे आधे नयनसो, तिरछी चितवन चाय ।
जो निशान आगे चले, पाछेको फहिराय ॥ १३ ॥
लटसम्हार प्रियनागरी, कहा भयोहै तोहि ।
तेरी लट नागिनिभई, डसा चहतहै मोहि ॥ १४ ॥
राधेजूके वदनपै, बेंदी अति छबिदेय ।
मानो फूली केतकी, भ्रमर वासना लेय ॥ १५ ॥
प्यारीजूके वदनपै, वसत चालिसौं चोर ।
दश सारस दश हंसहैं, दश चातक दश मोर ॥ १६ ॥
गोरेमुखपै तिल वन्यो, ताहि करूँ परणाम ।

मानो चन्द्र बिछायकै, पौढ़े शालिग्राम ॥ १७ ॥
लट छूटी तियशीशते, रहि कपोल लपटाय ।
मानो छौना नागको, पीपी अमीअघाय ॥ १८॥
ब्रजवासी वल्लभ सदा, मेरे जीवन प्रान ।
इन्है न नेक विसारिहौं, मोहिं नंदकी आन ॥ १९॥
ब्रज तज अनत न जाइहौं, मेरे है यह टेक ।
भूतल भार उतारिहौं, धरिहौं रूप अनेक ॥ २० ॥

श्रीप्रियाजीको वचन ।

मैं बेटी वृषभानुकी, राधा मेरो नाम
तीनलोकमें गाइये, बरसानो नँदगाम ॥ २१ ॥
वंशीवारे मोहना, वंशी नेक बजाय ।
तेरी वशी मन हर्यो, घर अँगना न सुहाय ॥ २२ ॥
आउ पियारे मोहना, पलक झांप तोहिं लेऊँ ।
ना मैं देखौं औरको, ना त्वहि देखन देऊँ ॥२३॥

सखियनको वचन ।

एरे कठिन अहीरके, नेक पीर पहिचान ।
तव मुख दर्शन कारणे, छांडि दई कुलकान ॥ २४ ॥
मोर मुकुट कटि काछनी, पीतांबरवनमाल ।
यह मूरति मम मन वसो, सदा विहारीलाल ॥ २५ ॥
कर मुरली लकुटी गहे, घूँघरवारे केश ।
यह बानिक नयनन वसो, श्याम मनोहर वेश ॥२६॥
मोहनि मूरति श्यामकी, मो मन रही समाय ।
ज्यों मेहँदीके पातपै, लाली लखी न जाय ॥ २७ ॥
मनमोहन मन मोहना, मनमोहन मनमाहिं ॥
या मोहन ते सोहना, तीनलोकमे नाहिं ॥ २८ ॥

चलो सखी तहँ जाइये, जहाँ बसैं ब्रजराज ।
गोरस बेचन प्रेमरस; एक पंथ द्वै काज ॥ २९ ॥
मोर मुकुटकी लटक पर, अटक रहे दृग मोर ।
कान्हकुँवर सखि यमुनतट, नटवर नंदकिशोर ॥ ३० ॥
जिन मोरनके पंख हरि, राखत अपने शीश ।
तिनके भागनकी सखी, कौन करिसकै रीश ॥ ३१ ॥
वृंदावनके वृक्ष को, मर्म न जानै कोय ।
डार पात फल फूलमे, राधे राधे होय ॥ ३२ ॥
वृंदावन बानिक बन्यो, भ्रमर करत गुंजार ।
दुलहिनि प्यारी राधिका, दूलह नंदकुमार ॥ ३३ ॥
ब्रज चौरासी कोशमें, चार गाम निज धाम ।
वृंदावन औ मधुपुरी, बरसानो नँदगाम ॥ ३४ ॥
नँद नंदीश्वर राजहीं, बरसाने वृषभान ।
दोनों कुलदीपक भये, गावत वेद पुरान ॥ ३५ ॥
ब्रज समुद्र मथुरा कमल, वृंदावन मकरंद ।
ब्रजवनिता सब पुष्प हैं, मधुकर गोकुलचन्द ॥ ३६ ॥
उत उरझी कुंडल अलक, इत बेसर वनमाल ।
गौर श्याम उरझे दोऊ, मंडल रास रसाल ॥ ३७ ॥
प्रेम सरोवर प्रेमको, भरयो रहे दिनरैन ।
जहँ प्रियप्यारी पग धरैं, लाल धरैं दोउ नैन ॥ ३८ ।
मोरमुकुटकी निरखि छवि, लाजत मदन करोर ।
चंद्र बदन सुख सदन पै, भावक नैन चकोर ॥ ३९ ।
कमलनको रवि एकहै, रविको कमल अनेक ।
हमसे तुमको बहुत हैं, तुमसे हमको एक ॥ ४० ॥
जलमे बसे कमोदनी, चन्दा बसे अकाश ।

जो जाके मनमें बसै, बसै सो ताके पास ॥ ४१ ॥
बाहँ छुडाये जात हो, निबल जानिके मोहि ।
हिरदे ते जब जाउंगे, सबल सराहो तोहिं ॥ ४२ ॥
जो मोसो मोसी करो, तो नहिं कहौं कठोर ।
तुमहो तैसी कीजिये, सुनो रसिक शिरमोर ॥ ४३ ॥
पाग बनो पटुका बनो, बनो लालको भेख ।
राधावल्लभ लालकी, दौर आरती देख ॥ ४४ ॥

अथ बाललीलाके पद ।

राग भैरव ।

बंदौ श्रीहरिपद सुखदाई । जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अंध-रेको सब कछु दरशाई । बहिरो सुनै गूंग पुनि बोलै रंक चलै शिर छत्र धराई । सूरदास स्वामी करुणामय बारंबार नमो तिहिं प ॥ १ ॥

राग रामकली ।

भयो जयकार जन्मे मुरारी ॥ शीश वसुदेव लै चले हैं कृष्णको शूपमे खेलत विहारी । लालके शीशपर मुकुट सिहश बन्यो हार हमेल छवि ललित पियारी । सूरके प्रभु अवतार लियो भक्तहित बढ्यो आनंद गोकुल मंझारी ॥ २ ॥

राग आसावरी ।

देखोरे अद्भुत अविगतिकी गति कैसो रूप धर्योहै॥ तीनलोक जाके उदर भवनमे शूपके कोन पड्यो है ॥ जामुख दरश काज सनकादिक चतुराई सब ठानी है ॥ सो मुख चूमत मात यशोदा दूध धार लपटानी है ॥ जिन कानन गजकी विपदा सुनि गरुडासन विसरायो है ॥ तिन काननके निकट यशोदा हुलरायो

गुणगायो है ॥ जिन्ही भुजा प्रहलाद उबारयो प्रगट होय खंभ फारयो है ॥ सो भुज पकर ग्वाल अरु गोपी ठाढे होय दुलारयो है ॥ जाके काज रुद्र ब्रह्मादिक कठिन योग व्रत साध्यो है ॥ ताको धाय नंदकी रानी ऊखल सों गहि बांध्यो है ॥ जाको मुनिजन ध्यान धरत हैं शंभु समाधि न टारी है ॥ सो ठाकुर है सूरदासको गोकुल गोप विहारी है ॥ ३ ॥

राग बिलावल ।

आदि सनातन हरि अविनासी । सदा निरंतर घट घट वासी ॥ पूरणब्रह्म पुराण वखाने । चतुरानन शिव अंत न जाने ॥ महिमा अगम निगम जिहि गावे । सो यशुदा लिये गोद खिलावे ॥ एक निरंतर ध्यावें ज्ञानी । पुरुष पुरातन है निर्वानी ॥ शुक शारदको नाम अधारा । नारद शेष नपावें धारा ॥ जप तप संयम ध्यान न आवे । सोइ नंदके आंगन धावे ॥ लोचन श्रवण न रसना नासा । बिन पद पाणि करे परकासा ॥ अरुण असित सित वरण न धारे । मुनि मनसामे कहा विचारे ॥ विश्वंभर निज नाम कहावे । घर घर गोरस जाय चुरावे ॥ जरा मरण ते रहित अमाया । मात पिता सुत बंधु न जाया ॥ आदि अनंत रहे जलशायी । परमानन्द सदा सुखदायी ॥ ज्ञानरूप हिरदेमे बोले । सो बछरनके पाछे डोले ॥ जल थल अनल अनिल नभ छाया । पांच तत्वमे जग उपजाया ॥ लोक रचे पाले अरु मारे । चौदह भुवन पलकमें धारे ॥ कालडरे जाके डर भारी । सो ऊँखल बॉंध्यो महतारी ॥ माया प्रकट सकल जग मोहे । अकरण करण करे सोई सोहे ॥ जाकी माया लखे न कोई । निर्गुण सगुण धरे वपु दोई ॥ शिव सनकादिक अंत न पावे । सो गोपनकी गाय

चरावैं ॥ गुण अनंत अविगतिहिं जनावै। यश अपार श्रुति पार न पावै ॥ चरणकमल नित रमा पलोवै। चाहत नेक नयन भर-जोवै ॥ अगम अगोचर लीला धारी। सो राधावश कुंजविहारी ॥ जो रस ब्रह्मादिक नहि पायो। सो रस गोकुल गलिन वहायो ॥ बड़भागी यह सब ब्रजवासी। जिनके सँग खेलैं अविनाशी ॥ सूर सुयश कहि कहा बखानै। गोविंदकी गति गोविंद जानै ॥ ४ ॥

साख मुनिजन भरैं देव अस्तुति करैं स्मृति पुराण गुण वेद गावैं। तुम प्रभु एक अनेक ह्वै रमि रहे अमित जगजंतु नहि अंत पावैं॥ शेष महेश गंधर्व किन्नर थके व्यास ब्रह्मादि नहि पार पावैं। चरण पाताल औ शीश आकाशमें चंद्र सूरज दोउ दृग सुहावैं ॥ यही परतीत तेरी चहुँ युगनमें भक्तके हेतु धारि देह धावैं। कहत मिहरदास निवास लियो नंदगृह कान्ह सुत जान यशुमति खिलावैं ॥ ५ ॥

राग रामकली।

हौं इक नई बात सुनि आई ॥ महरि यशोदा ढोटा जायो घर घर वजत बधाई। द्वारे भीर गोप गोपिनकी महिमा वरणि न जाई। अति आनद होत गोकुलमें रत्न भूमि निधि छाई। नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक गोरस कीच मचाई। सूरदास स्वामी सुखसागर सुंदर श्याम कन्हाई ॥ ६ ॥

राग भैरव।

देखो री यह कैसो बालक रानी यशोमति जायाहै। सुंदर वरण कमलदललोचन देखत चंद्र लजाया है ॥ पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी प्रगट नन्दघर आया है। मोर मुकुट पीतांबर सोहै

केसर तिलक लगाया है ॥ कानन कुंडल गलबिच माला कोटि-भानु छबिछायाहै । शंख चक्र गदा पद्म विराजे चतुर्भुज रूप बनायाहै ॥ परमेश्वर पुरुपोत्तम स्वामी यशुमति सुत कहलाया है । मच्छ कच्छ वराह औ वामन रामरूप दरशायाहै ॥ खंभ फारि प्रगटे नरहरि वपु जन प्रहलाद छुडायाहै । परशुराम बुध निहक-लंक ह्वै भुवका भार मिटायाहै ॥ कालियमर्दन कंसनिकन्दन गोपीनाथ कहायाहै । मधुसूदन माधव मुकुन्द प्रभु भक्तवछल पद पायाहै ॥ शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेप सहसमुख गायाहै ॥ सो परब्रह्म प्रगट ह्वै ब्रजमे लूट लूट दधि खायाहै । परमानंद कृष्ण मनमोहन चरणकमल चित लायाहै ॥ ७ ॥

राग वड़हंस ।

मोहिं नंदघर ले चलो ढाढिनियाँ मचल रही ॥ पुत्र भयो सब जगने जान्यो मोते क्यो न कही ॥ मोहि मिले नख शिखलौ गहनो लाऊँ तो बात सही ॥ जरदोजीके वस्त्र मिलैगे फरिया चोली नई । कृष्णकृपाबिन को या जगमे जिन मेरी बांह गही ॥ ८ ॥

राग आसावरी ।

आज बधाइयां वे बाबानंद दे दर्बार ॥ हुआ सुत सोहना वे मनदा मोहना सुकुमार ॥ आई मिल गोपियां वे गावें हर्प मंग-लचार । गुणी जन गावँदे वे नाचें देदे करतार ॥ ९ ॥

सवैया ।

पूत सुपूत जन्यो यशुदा , इतनी सुनिकै वसुधा सब दौरी । देव-नको सु अनंद भयो सुन, धावत गावत मंगल गौरी ॥ नंद

कछू इतनो जो दियो घनश्याम कुबेरहुकी मति बौरी॥ देखत मोहिं लुटाय दियो न बची बछिया छछिया न पिछौरी ॥ १० ॥

घनाक्षरी।

फूल गये गोप गृह गोपिकन भूल गये, हुलसी मचाई माते प्रेम सरसाईमे। कीच मची दधिकी अधिक गैल गैलनमें, कीचन दै सबै पगे आनँद बधाईमे ॥ छोटी सुठि चोटी है कछोटी कटी मोटी भई, फैलगई थौन बड़े स्वेदकी अवाईमें। राजी दिल मोदन विनोदन विहँसि नन्द, नाचे आज आँगन कन्हाईकी बधाईमें ॥ ११ ॥

राग प्रभाती।

गिरिधर लोरी लै मथुराके वासी ॥ चिरजीवो वसुदेवके नंदन बलि बलि माता घोरी। भूपर भार भयो अतिभारी सुर समूह सब जाय पुकारी।जगतपिता जगनायक स्वामी धर्म्म कथा जगथोरी। गगन गिरासो यो हरि भासो असुर मार संतन पतिराखो आदि पुरुष तेरो अंत न पायो धरहु भक्त हित खोरी। वसुदेव देवकी अतिहर्षाने पूरणब्रह्म जान सन्माने। स्तुति करत बहोर बहोरी कंसके भय चित चोरी ॥ नंद यशोदा हर्ष निरख मन पायो निरधन मनहुँ परमधन। आदियुगादि धरणिधर माधव लखि न जात गति तोरी। व्रजवधुआं मिल नँदगृह आई भाग भले हरि दर्शन पाई हिल मिल पलना देत झुलाई हाथ गहे पट डोरी ॥ दैत्यानी इक कस पठाई कर छल विप स्तन पर लाई बनि वरांगना अति छवि सुन्दर व्रज वधुआं चित चोरी। पलनासो हरिजाय उठाये चूमि नयन स्तन मुख लाये ऐसी चूस करी मेरे ललना लीने प्राण

निचोरी ॥यमलार्जुनको दर्शन दीनो नारद वचन सफल करलीनो ऊखलसो प्रभु आप बँधाये विमल वृक्ष दोउ जाय गिराये शब्द भयो घनघोरी।तृणावर्त अघासुर मारे और दैत्य कइ कोटि सँहारे कहा कहूँ अगणित गुण तोरे इक रसना प्रभु मोरी ॥ १२ ॥

राग पीलो।

आज श्रीगोकुलमें वजत वधावरारी।यशुमति नन्दलाल पायो कंसराज काल पायो गोपिनने ग्वाल पायो वनको शृंगार री ॥ गौअन गोपाल पायो याचकन भाग पायो सखियन सुहाग पायो प्रिया वर सांवरा री ।देवनने प्राण पायो गुणियनने गान पायो भक्तन भगवान पायो सूर सुखदावरा री ॥ १३ ॥

राग आसावरी।

आज नंदजू तुम्हारे घरमें पुत्र जन्म सुनि आयो। लग्नशोधि ज्योतिपको गिनिकै चाहत तुम्हे सुनायो ॥ संवत सरस भाद्रपद मासे आठे तिथि बुधवार ।कृष्णपक्षरोहिणी अर्द्धनिशि हर्षण योग उदार ॥ वृप है लग्न उच्चके निशिपति तनय वहुत सुखदेहै। चौथे सिंह राशिके दिनपति जीति सकलमें ह्वै है ॥ पांचें बुध कन्याके जो हैं पुत्रन वहुत वढ़े हैं । छठेहै शुक्र तुलाके बलयुत शत्रुरहन नहिं पैहैं॥ऊँच नीच युवती बहु करिहै सातें राहु परेहैं। भागभ- वनमें मकर महीसुत पूर्णैश्वर्य करैहै ॥ कर्म भवनमें ईश शनीचर श्याम वर्ण तनु ह्वैहै । लाभ भवनमें मीन बृहस्पति नौनिधि घरमें ऐहै॥आदि सनातन हरि अविनाशी घट घट अन्तर्यामी । सो तुम्हरे गृह आय प्रगट भये सूरदासके स्वामी ॥ १४॥

राग भैरव ।

मैं योगी यश गाया री वाला मैं योगी यश गाया ॥ तेरे सुतके दर्शन कारण मै काशी तजि धाया ॥ परब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम सकल लोक जा माया ॥ अलख निरंजन देखन कारण सकल लोक फिर आया ॥ धनि तेरी भाग यशोदा रानी जिन ऐसो सुत जाया । गुणन बडे छोटे मत भूलो अलख रूप धर आया ॥ जो भावे सो लीजिय रावल करो आपनी दाया । देहु अशीश मेरे बालककी अविचल बाढे काया ॥ना मै लेहों पाटपटम्बर ना मै कंचनमाया । मुख देखों तेरे वालकको यह मेरे गुरुने बताया ॥ कर जोरे विनवै नंदरानी सुन योगिनके राया । मुख देखन नहि देहों रावल वालक जात डराया॥जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो क्यो जात डराया॥ तीन् लोकका साहिब मेरा तेरे भवन छिपाया ॥ कृष्णलालको लाई यशोदा कर अंचल मुख छाया । गोद पसार चरणरज वदी अति आनंद बढाया॥निरख निरख मुख पकज लोचन नयनन नीर बहाया । सूरश्याम परिकर्मा करके शृंगीनाद बजाया ॥ १५ ॥

दर्श तो दिखाजा छैला दर्श तो दिखाजा॥ दिलदा महरम सॉवरा यार ॥ जांघनि काछनि कटि पीतांबर श्रवणन कुंडल शीश मुकुट अरु घूँघरवारी अलकै झलकै नयनोमे समाजा ॥ वंशीधुन यमुना तीरे नाचत गावत गोपन संग नदजूके किशोर मेरी तपन बुझाजा। जानकीदास भये निराश निकसत नाही पापी श्वास स्वप्नहू मे दर्श देके सकल दुख मिटाजा ॥ १६ ॥

राग भूपाली ।

बोलता क्यो नहीं रे मिजाजी बोलता क्यो नहीं रे ॥ शिरतेरे ककरेजी चीरा गल मोतियनकी माल रे । हाथमे दुधारा खडा मारता क्यों नही रे ॥ १७ ॥

राग बिलावल ।

काहू जोगियाकी लागी नजर मेरो बारो कन्हैया रोवै री। मेरी गली जिन आउरे जोगिया अलख अलख कर बोलै री ॥ घर घर हाथ दिखावे यशोदा बार बार मुख जोवै री । राई लोन उतारत छिन छिन सूरको प्रभु सुख सोवै री ॥ १८ ॥

राग भैरव ।

चल रे योगी नंदभवनमें यशुमति तोहिं बुलावैं । लटकत लटकत शंकर आवैं मनमें मोद बढावै ॥ नंद भवनमें आये योगी राई लोन कर लीनो । वार फेर लालाके ऊपर हाथ शीसपै दीनो ॥ व्यथा भई सब दूर वदनकी किलकि उठे नँदलाला । खुशी भई नँदजूकी रानी दीनी मोतियन माला ॥ रहु रे योगी नंदभवनमें ब्रजमे वासो कीजै । जब जब मेरा लाला रोवे तब तब दर्शन दीजै ॥ तुम तो योगी परम मनोहर तुमको वेद बखानें । बूढो बाबू नाम हमारो सूरश्याम मोहिं जानें ॥ १९ ॥

राग बिलावल ।

कर पग गहि अँगुठा मुख मेलत । प्रभु पौढे पालने अकेले हर्षि हर्षि अपने रँग खेलत ॥ शिव शोचत विधि बुद्धि विचारत पट्ठ बाढ्यो सागर जल झेलत । बिडारि चले युग प्रलय जानकर दिगपति दिगदंतौ न सकेलत ॥ मुनि मन भीत भये भू कंपत शेष सकुच सहसो फण पेलत । सो सुख सूर भयो सब गोकुल किलकत कान्ह शकट पग ठेलत ॥ २० ॥

शोभित कर नवनीत लिये । घुटरन चलत रेणु तनु मण्डित मुख दधि लेप किये ॥ चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक दिये । लट लटकन मनु मत्त मधुपगण मादक मधुहि पिये ॥

कठुला, कंठ वज्रके हार नख राजत रुचिर हिये। धन्य सूर एकौ पल यह सुख का शतकल्प जिये ॥ २१ ॥

राग भैरव।

जागिये गोपाल लाल जननी बलिजाई। उठो तात भयो प्रात रजनीको तिमिर गयो खेलत सब ग्वाल बाल मोहन कन्हाई ॥ उठो मेरे आनँदकन्द किरणचन्द मन्द २ प्रकट्यो आकाश भानु कमलन सुखदाई। संगी सब पुरत बेनु तुम बिना न छुटे धेनु उठो लाल तजो सेज सुन्दर वर राई ॥ मुख ते पट दूर कियो यशुदाको दर्श दियो माखन दधि मांगि लियो विविध रस मिठाई। जेवत दोउ राम श्याम सकल मंगल गुणनिधान जूठनि रहि थारमें सो मानदास पाई ॥ २२ ॥

जागिये व्रजराज कुँवर कमल कोश फूले। कुमुद वृन्द सकुच भये भृङ्ग लता झूले ॥ तमचर खग शोर सुनो बोलत बनराई। रांभत गौ क्षीर देन बछरा हित धाई॥ विधु मलीन रवि प्रकाश गावत व्रज नारी। सूरश्याम प्रात उठे अम्बुज कर धारी ॥ २३ ॥

राग रामकली।

मोहन जाग हौं बलि गई। ग्वाल बाल सब द्वार ठाढे वेर वनको भई। पीतपट कर दूर मुखते छांड दे अलसई ॥ अति अनन्दित होत यशुमति देख द्युति नित नई। सूरके प्रभु दरश दीजै अरुण किरण छई ॥ २४ ॥

राग भैरव।

जागो बशीवारे ललना जागो मोरे प्यारे ॥ रजनी बीती भोर भयोहै घर घर खुले किवारे। गोपी दही मथत सुनियत है कँगनाके झनकारे ॥ उठो लालजी भोर भयो है सुर नर ठाढे द्वारे।

ग्वाल वाल सव करत कुलाहल जय जय शब्द उचारे ॥ माखन रोटी हाथमें लीन्ही गौअनके रखवारे । मीराके प्रभु गिरिधर नागर शरण आयांको तारे ॥ २५ ॥

जागो हो मोरे जगत उजियारे।कोटि मदन मुसुकनि पर वा-रत कमलनयन अँखियनके तारे ॥ ग्वाल वच्छ सवरे सँग लैके यमुनतीर वन जाउ सवारे। परमानंद कहत नँदरानी दूर जनि जाउ मेरे व्रजके रखवारे ॥ २६ ॥

राग ललित।

जागो जागो ो गोपाल। नाहिन अति सोइयत है प्रात परम शुचिकाल॥फिर फिर जात निरखि मुख छिन छिन सव गोपनके वाल। विन विकसे मनो कमल कोश ते ते मधुकरकी माल॥ जो तुम मोहि पतियाउ न सूर प्रभु सुन्दर श्याम तमाल। तो उठिये आपन अवलोकिये तजि निद्रा नयनन विशाल ॥ २७ ॥

राग विलावल।

कौन परी नँदलालहिं वानि। प्रातसमय जागनकी विरियां सोवत हैं पीताम्वर तानि ॥ प्रात यशोदा कवकी ठाढी दधि ओदन भोजन घृत सानि। उठो श्याम कछु करो कलेऊ सुन्दर वदन दिखा-ओ आनि॥संग सखा सव द्वारे ठाढे मधुवन धेनु चरावन जानि। सूरश्याम सुन्दर अलसाने सोवत हैं अजहूं निशि मानि ॥ २८॥

राग भैरव।

दधिके मतवारे कान्ह खोलो प्यारे पलकें। शीश मुकुट लटें छूटी और छूटी अलकें ॥ सुर नर मुनि द्वार ठाढे दरश कारण किलकें। नासिकाको मोति सोहे बीच लाल ललकें ॥ कटि पीतांवर मुरली कर श्रवणन कुण्डल झलकें ॥ सूरदास मदनमोहन दरश देहु भलकें ॥ २९ ॥

राग बिलावल।

नन्दनँदन वृन्दावनचन्द । यह कहि जननि जगावत लालन जागो मोरे आनँदकन्द ॥आलस भरे उठे मनमोहन चलत चाल ठुमकत अतिमन्द । पोछि वदन अचलसो यशुमति उर लगाय उपज्यो आनन्द ॥ सब व्रजयुवती आई देखनको दर्शन होत मिट्यो दुख द्वंद । व्रजपति श्रीगोपाल परिपूरण जाको यश गावत श्रुति छन्द ॥ ३० ॥

बलि बलि जाउँ मधुर सुर गावो।अबकी बेर मेरे कुँवर कन्हैया नन्दहि नाच दिखावो ॥ तारी दै दे अपने करकी परमप्रीति उप जावो । आन जन्तु धुनि सुनि डरपत कत मो भुज कठ लगावो ॥ जिन शंका जिय करो लाल मेरे काहेको शर्मावो । बाँह उठाय काल्हकी नाई धौरी धेनु बुलावो ॥ नाचो नेक जाउँ बलि तेरी मेरी साध पुरावो । रत्नजटित किंकिणि पग नूपुर अपने रंग बजावो ॥ कनक खंभ प्रतिबिंब आपनो नव नवनीत खवावो । परमदयालु सूरके उरते टारे नेक न जावो ॥२१॥

राग बिलावल।

बलि बलि जाउँ छबीले लालके। धूसर धूरघुटुरुवन डोलन बोलन वचन रसालके ॥ छिटकरही चहुँदिशि जो लटुरिया लट-कनि लटकन भालके । मोतिन सहित नासिका नथुनी कंठ कम-लदल मालके ॥ कछु इक हाथ कछुक मुख माखन चितवन नयन विशालके । सूरदास प्रभु प्रेम मगन है ढिग न तजत व्रजवालके ॥ ३२ ॥

आउ गुपाल शृंगार बनाऊँ । अति सुगन्धको करूँ उवटनो उष्णोदक न्हवाऊँ ॥ अंगअँगोछि गुहो तेरी बेनी फूलन रचि रचि भाल बनाऊँ । सुंगलाल कतीचीरा रत्न खचित शिर पेच

बनाऊँ ॥ वागो लाल सुनहरी छापा हरी इजार चरण चरचाऊँ, पटुका सरस वैजनी रँगको हँसुली हेम हमेल धराऊँ ॥ गजमोतिन्के हार मनोहर वनमाला लै उर पहिराऊँ । लै दर्पण देखो मेरे बारे निरखि निरखि छवि नयन सिराऊँ ॥ मधु मेवा पकवान मिठाई अपने कर लै तुम्हे खवाऊँ । विष्णुदासको यही कृपाफल बालचरित हौं निशिदिन गाऊँ ॥ २३ ॥

राग देश।

धूर भरे अँग खेलत मोहन आछी बनी शिर सुन्दर चोटी । देखो री कागके भाग भले हैं हाथसो लै गयो माखन रोटी ॥ खात पियत कूदत भए अँगना पाइन पाइन पर्त कछोटी । सूरदास प्रभु या छवि निरखत वारि डारों शिर रवि शशि कोटी ॥ २४ ॥

राग गौरी।

कहन लागे मोहन मैया मैया । नंदरायसो बाबा, बाबा अरु हलधर सो भैया ॥ खेलत फिरत सकल गोकुलमें घर घर बजत बधैया । परमानन्द दासको ठाकुर ब्रजजन केलि करैया २५ ॥

राग रामकली।

हौं लालको मुख देखन आई । कल्ह मुख देख गई दधि बेचन जातहि गयो बिकाई ॥ दिनसो दूनो लाभ भयो घर काजर बछिया जाई । आई हो धाय थमाय सङ्गकी मोहन देहु जगाई ॥ इतनी सुनत बिहँसि उठ बैठे नागरि निकट बुलाई । सूरदास प्रभु चतुर ग्वालिनीसैन सँकेत बताई ॥ २६ ॥

राग बिलावल।

मैया मोहि बडो कर लैरी । दूध दही घृत माखन मेवा जब मांगो तब दै री॥कछू हौंस राखे जिन मेरी जोइ जोइ मोहि रुचै

री । होउ सबल सबहिनमें जैसे सदा रहौ निर्भय री ॥ सूर कंस गहि केश पछारो करिहौ मथुरा जय री ॥ ३७ ॥

राग रामकली ॥

मैया मेरी कब्र बाढैगी चोटी । किती बेर मोहि दूध पियत भइ यह अजहुँ है छोटी ॥ तू जो कहत बलकी बेनी ज्यो ह्वै है लांबी मोटी । काढ़त गुहत न्हावात जैहे नागिनसी भुइँ लोटी ॥ काचो दूध पियावत मोहन देती माखन रोटी ॥ सूर मैया याही सर रिझयो हरि हलधरकी जोटी ॥ ३८ ॥

राग सारंग ।

अब मेरी खेलन जात बलैया । जबहि मोहि देखत लरिकन संग तबहि खिझत बल भैया ॥ मोको कहत तात बसुदेव है देवकी तेरी मैया । मोललियो कछु दे बसुदेवहि कर कर यतन बडेया ॥ पाछे नद सुनत है ठाढे तब हँसहँस उर लैया । सूर नद बलरामहि हटक्यो सुन मन हर्ष कन्हैया ॥ ३९ ॥

राग सोरठ ।

मैया मोहि दाऊ बहुत खिजायो । मोसो कहत मोलको लीनो कब यशुमतिने जायो ॥ कहा करूँ या रिसके मारे खेलन हौ नहिं जात । पुनि पुनि कहत कौन है माता कौन है तेरो तात ॥ गोरे नंद यशोदा गोरी तुम कत श्याम शरीर । तारी दे दै ग्वाल हँसत है सीख देत बलबीर ॥ तू मोहीको मारन सीखी दाउहि कभू न खीझे । मोहनको मुख रिस समेत लखि सुमि सुनि यशुमति रीझे । सुनो कान्ह बलभद्र चवाई जन्महिको वह धूत । सूरदास मोहि गोधनकी सौ हौं जननी तू पूत ॥ ४० ॥

राग रेखता ।

इस नंदके फरजंदने बाकी अदा धरी । भौंहे कमान झुक रही गोशेसे आ मिली ॥ तिरछा मुकुट धर शीशपर मुरली अधरधरी । कानोंमें कुंडल झलकते गल मोतियोंकी लरी ॥ चितवन जो तेरी भाला जिन घायल मुझे करी । शिर मुकुट सोहै मोरका और पाग जरकरी ॥ इमि सूर कहै श्याम सों धन्य आजकी घरी ॥ ४१ ॥

राग बिलावल ।

नंदभवनको भूषण माई । यशुदाको लाल वीर हलधरको राधा-रमण परम सुखदाई ॥ शिवको धन संतनको सर्वस महिमा वेद पुराणन गाई । इंद्रको इन्द्र देव देवनको ब्रह्मको ब्रह्म अधिक अधिकाई ॥ कालको काल ईश ईशनको अतिहि अतुल तोल्यो नहिं जाई । नंददासको जीवन गिरिधर गोकुल गामको कुंवर कन्हाई ॥ ४२ ॥

राग रामकली ।

हाहा लेहु एको कोर । बहुत बेर भई है भूँखे देख मेरी ओर ॥ मेल मिश्री दूध औट्यो पीउ ह्वैहै जोर । अबहि खेलन टेरि है तुव ग्वाल भयो अति भोर ॥ जगे पक्षी द्रुम द्रुमन प्रति करन लागे शोर । खेलबेको उठि भजोगे मान मोर निहोर ॥ लेहुँ ल-लन बलाय तेरी जोर अंचल ओर । वदनचंद्र विलोकि शीतल होत हृदयो मोर ॥ बैठ जननी गोद जेवन लगे गोविंद थोर । रसिकबालक सहज लीला करत माखन चोर ॥ ४३ ॥

मानो वा लालन मोरी। करो भोजन रोष भूलो हौं जो मैया तोरी ॥ दूध दधि नवनीत घृतपक परसि राख्यो थार । कहा लोट-त धरणिमें मेरे लाल होत अबार॥गोद बैठो हौं जिवाऊं गाऊं तेरे गीत । खेलबेको तोहिं बोलत ग्वाल तेरे मीत ॥ कहो जाको ताहि

टेहूँ बैठे तेरे पास । करौ दधि मंथान उदयो सूर कमल विकास॥ मायके सुनि वचन हँसि उर आय लगे गुपाल । कियो भोजन दियो अतिसुख रसिक नयनविशाल ॥ ४४ ॥

राग धनाश्री ।

महरानेते पांडे आयो । ब्रज घर घर बूझत नंदरावर पुत्र भयो सुनिके उठधायो ॥ पहुँच्यो आय नदके द्वारे यशुमति देखिअनद बढायो। पांव धोय भीतर बैठायो भोजनको निज भवन लिपायो। जो भावे सो भोजन कीजे विप्र मनहि अति हर्ष बढायो । बडी आस विधि भयो दाहिनो धनि यशुदा ऐसो सुत जायो॥ धेनु दुहाय दूध ले आई पांडे रुचिकर खीर चढायो । घृत मिष्ठान्न खीर मिश्रित करि परसि कृष्णहित ध्यान लगायो ॥ नयन उघार विप्र जो देखे खात कन्हैया देखन पायो । देखो आय यशोदा सुतकृत सिद्ध पाक यह आन जुँठायो ॥ महरि विनयकरि दोउकर जोर्‍यो घृत मधु पय फिर बहुत मँगायो। सूर श्याम कत करत अचगरी बारम्बार ब्राह्मणहिं खिझायो ॥ ४५ ॥

राग रामकली ।

पांडे भोग न लागन पावै ।कर कर पाक जभी अर्पत हे तभी तहि छुइ आवै॥इच्छाकर मैं ब्राह्मण नोत्यो ताको श्याम खिझावै।वह अपने ठाकुरहि जिमावत तू तबहीं छुइ आवै ॥ जननी दोष देत कत मोको विधि विधान कर ध्यावै ॥नयन मूँदि कर जोर नाम लै बारबार बुलावै ॥ यह अंतर नहि होत भक्त सो क्यों मेरे मनभावै॥सूरदास बलि बलि विलास पर जन्म पाय यशगावै॥४६॥

राग बिलावल ।

सफल जन्म मेरो आज भयो । धनि गोकुल धनि नंद यशोदा जिनके हरि अवतार लियो॥प्रगट भयो पुण्य अरु सुकृत फलदीन-

बंधु मोहिं दर्श दियो। वारंबार नंदके आँगन लोटत द्विज आनंद भयो ॥ मैं अपराध कियो विनजाने को जानेकिहिं वेष जियो । सूरदास प्रभु भक्त हेतु वश यशुमतिके अवतार लियो ॥ ४७ ॥

राग झँझोटी ।

चंद्र खिलौना लेहौं मैया मेरी चंद्र खिलौना लेहौं ॥ धौरीको पयपान न करिहौं वेणी शिर न गुथैहौं । मोतिन माल न धरिहौं उरपर झँगुली कंठ न लैहौं ॥ जैहौं लोट अभी धरणीपर तेरी गोद न ऐहौं । लाल कहै हौ नंद बवाको तेरो सुत न कहै हौं ॥ कान लाय कछु कहत यशोदा दाउहि नाहि सुनै हौं । चंदाहूते अति सुंदर तोहिं नवल दुलहिया ब्यैहौं ॥ तेरी सौंह मेरी सुन मैया अवही व्याहन जैहौं । सूरदास सव सखा वराती नूतन मंगल गैहौं ॥ ४८ ॥

राग विलावल।

सुन सुत एक कथा कहुँ प्यारी । कमलनयन मन आनद उपज्यो रसिक शिरोमणि देत हुकारी॥दशरथ नृपति हुते रघुवंशी तिनके प्रगट भये सुत चारी । तिनमे राम एक व्रतधरी जनकसुता ताकी वर नारी ॥ तात वचन सुनि राजतज्योहै भ्राता सहित भये वनचारी ॥ तहँ तिन जाय कनकमृग मारचो राजिवलोचन गर्व प्रहारी ॥ रावण हरण सियाको कीन्हो सुनत श्यामघन नीद विसारी । सूर श्याम प्रभु रटत चापको लक्ष्मण देहु जननी भ्रम भारी ॥ ४९ ॥

राग सारंग ।

नंद बुलावत हैं गोपाल। आवो वेगि वलैया लेहौं मोहन श्याम तमाल ॥ परस्यो थार धरचो मग जोवत क्यो न चलो ततकाल । हौ वारी इनप्रति पाँयन पर दौर दिखावो चाल॥ छाँड देहु तुम लाल

लटपटी यह गति मंद मराल । सो राजा जो पहिले पहूँचे सूर सो भवन उताल।जो जे है बलराम अगमने तो हँसिहैं सब ग्वाल ५०॥

लावनी।

रूप रसिक मोहन मनोज मनहरण सकल गुण गरवीले। छैल छबीले चपल लोचन चकोर चित चटकीले ॥ रत्नजटित शिरमुकुट लटक रहि सिमट श्याम लट घुँघरारी । बालविहारी कन्हैया लाल चतुर तेरी बलिहारी ॥ लोलकमोती कान कपोलन झलकवनी निर्मल प्यारी । ज्योति उज्यारी हमें हरबार दर्श दे गिरिधारी ॥ दंत छटासी विज्जु घटा मुख देख शरद शशि शरमीले ॥ छैल० ॥ मंद हँसन मृदु वचन तोतरे वय किशोर भोली भाली । कृगत चोचले अधर अमोलक पीक रच रही लाली ॥ फूल गुलाब चिबुक सुन्दरता रुचिर कठछबि वनमाली । करसरोजमें बुन्द मेहँदी अमन्दहै बहु प्रतिपाली ॥ फूलछरीसी नरम करम करधनी शब्द भये तुरसीले ॥ छैल ० ॥ झँगुली झीन जरीपट कछनी श्यामल गात सुहात भले। चाल निराली चरण कोमल पंकजके पात भले ॥ पग नूपुर झंकार परम उत्तम यशुमतिके तात भले । सग सखनके निकट यमुना बछरान चरात भले।।व्रज युवतिनके प्रेम भोग भये घर घर माखन गटकीले॥ छैल० ॥ गावै वाग विलास चरित हरि शरद रैनि रसरास करै। मुनिजन मोहे कृष्ण कंसादिक खलदल नाश करै॥ गिरिधारी महराज सदा श्रीव्रज वृन्दावन वास करैं। हरिचरित्रको श्रवण सुन सुन कर मन अभिलाप करे॥ हाथ जोर कर करै वीनती नारायण दिल दरदीले॥ छैल०॥ ५१ ॥

माखनचोरीलीला ।

राग रामकली ।

माखन तनक देरी माय । तनक करपर तनक रोटी मॉगत चरण चलाय ॥ कनक भूपर तनक रेखा करन पकरचो धाय । कंपियो गिरि शेप शंक्यो उदधि अति अकुलाय ॥ मेरे मनके तनक मोहन लागे मोहि बलाय । तनक मुखपर तनक बतियां बोलत है तुतराय ॥ यशुमतिके प्राण जीवन धन लिये उरमे लाय । नंदकुँवर गिरिधरन ऊपर सूर बलि बलि जाय ॥ ९२ ॥

राग भैरव ।

विलँब तजि माखन देरी माई । बछरे हमरे दूर निकस गये दधि मथती देर लाई ॥ जो न देय तोरे बछरे न चाहूँ हौ नहि विपिनको जाई ॥ यह लै अपनी कारि कमरिया मुरली और लकुटाई ॥ इतनी कह हारि अतिहि रिसाने लोटत भूमि कन्हाई । धूर सहित सब अँग लिपटाने मैया लेत उठाई ॥ गोदी बीच विठाय यशोदा मुख चूमत दूध पिलाई । धनि धनि भाग सूर जननी जाके कृष्ण करत लरिकाई ॥९३॥

राग भैरवी ।

दोऊ भैया मैयासो मॉगत दे मा माखन रोटी । बलदाऊ गही नासिका मोती कान्ह गही कर चोटी ॥ मानो हंस मोर भखु लीन्हो कवि कृत उपमा छोटी । यह छवि निरखि नद आनंदे प्रेम मगन गये लोटी । सूरदास धनि धन्य यशोदा भाग भले कम-नकी मोटी ॥ ९४ ॥

राग रामकली ।

मोहिं दधि मथन दे वलिगई । जाउँ बलि बलि वदन ऊपर छाँड मथनी रई ॥ देहुँ त्वहि नवनीत लौंदा आर कित यह ठई । सुत-सनेह विलोकि यशुमति प्रेम पुलकित भई ॥ ले उछंग लगाय उरसों प्राणजीवन जई । बालकेलि गुपालकी व्रज आश कर नित नई ॥ ९५ ॥

राग विलावल ।

नेक मेरे वारे कान्ह छाँडिदे मथनियाँ ॥ कंठमे वघनहा सोहे नाकमे नथुनियां । नयननते नीर मानो मोतिनकी मनियां ॥ नेक रहो देहों माखन मेरे प्राण धनियां । और जिन करो मेरे छगन मगनियां ॥ सुर नर मुनि काहूके ध्यान न अवनियां । सूर सुत देख सुख लेत नंदरनिया ॥ ९६ ॥

राग गौरी ।

मैया री मोहिं माखन भावे । जो मेवा पकवान कहत तू मोहि नहीं रुचि आवे ॥ व्रजयुवती इक पाछे ठाढी सुनत श्यामकी बात । मनमें कहत कभूं अपने घर देखों माखन खात ॥ बैठे जाय मथनियांके ढिग तव मे रहो छिपानी । सूरदास प्रभु अंत-र्यामी ग्वालिन मनकी जानी ॥ ९७ ॥

गये श्याम तिहि ग्वालिनिके घर । देख्यो जाय द्वार नहिं कोऊ इत उत चित चले तव भीतर ॥ हरि आवत गोपी जव जान्यो आपन रही छिपाई । सूने सदन मथनियांके ढिग बैठिगयेअरगाई ॥ माखन भरी कमोरी देखी लै लै लागेखान । चितै रहे मणि खंभ छाह तन तासो करे सयान ॥ प्रथम आज मे चोरी आयो भलो बन्योहै संग । आप खात प्रतिबिंव खवावत गिरत कहतका रंग ॥ जो चाहो सव देहुँ

कमोरी अति मीठो कत डारत । तुम्हें देख में अति सुख पायो तुम जिय कहा विचारत ॥ सुन सुन बात श्यामके मुखकी उमंग हँसी सुकुमारी ॥ सूरदास प्रभु निरख ग्वालिमुख तब भजि चले मुरारी ॥ ५८ ॥

राग बिलावल ।

आज सखी मणि खंभ निकट वीर जहं गोरसकी खोरी । निज प्रतिबिंब सिखावत या शिशु प्रगट करै निज चोरी ॥ अर्द्ध विभाग आजते हम तुम भली बनी है जोरी । माखन खाउ कतहि डारतहो छाँडि देहु मति भोरी ॥ हिस्सा न लेहो सभी चाहतहो यही बात है थोरी । मीठो परम अधिक रुचि लागे देहो काढि कमोरी ॥ प्रेम उमंग धीरज न रह्यो तब प्रगट हँसी मुख मोरी । सूरदास प्रभु सकुचि निरखि मुख चले कुंजकी ओरी ॥ ५९ ॥

ग्वालिन घर गये श्याम सांझकी अँधेरी । मंदिरमें गये समाय श्यामल तनु लखि न जाय देह मेहरूप कहो को करै निबेरी ॥ दीपक गृह दान कर्‍यो भुजा चार प्रगट धर्‍यो देखत भइ चकित ग्वालि इत उत को हेरी ॥ श्याम हृदय अति विशाल माखन दधि बिंदु जाल मन मोह्यो नंदलाल बाल कही वेरी । युवती अति भइ निहाल भुज भरदे अंकमाल सूरदास प्रभु कृपालु डार्‍यो तनु फेरी ॥ ६० ॥

राग रामकली ।

माखन चोर री हौ पायो ॥ जावत कहाँ जान कैसे पावत बहुत दिन नहि खायो । श्रीमुखते उघरी द्वै दतियां तब हँसि कंठलगायो ॥ परमानंद प्रभु प्राणजीवन धन वेद विमल यश गायो ॥ ६१ ॥

सखि मोहि हरि दर्शनको चाव ॥ साँवरेसो प्रीति बाढी लाख लोग रिसाव । श्यामसुंदर कमल लोचन अंग अंग नित भाव ॥ सूर हरिके रूप राची लाज रहो चाहे जाव ॥ ६२ ॥

कवित्त।

धेनुके चरैया प्यारे भैया वलभद्रजूके, नदके ललैया मोरे अॅग-नामें आउ रे। दही दूध वहु प्याऊं माखन घनो सो लाऊं, मीठी मीठी तान नेक गायके सुनउ रे। प्यारे नंदके किशोर मेरे चित्तहूके चोर, नेक तो अधरधर बॉसुरी वजाउ रे। या छवि ऊपर कोटि काम वारि वारि, डारो दया सखी प्रेमवश हियमें समाउ रे॥६३॥ आया कर सॉवरे गलिन इन रूमझूम, सॉझ औ सवेरे कभी दर्श तो दिखाया कर। जाय कर जमुनाके तट रोज रोज प्यारे, वांसुरी अनोखी इक लहजा सुनाया कर॥ कादर कहत छाया कर नैनोबिच मेरे, आय रूखो सूखो थार गरीबोको पाया कर। खाया कर माखन मलाई दधि लूट लूट, कर हावभाव मेरे हियमे समाया कर॥ ६४॥

चीराकी चटक औ लटक नव कुंडलकी, भौहकी मटक मोहि ऑखिन दिखाउ रे। जा दिना सुजान गुण रूपके निधन कान्ह, बांसुरी वजाय तनु तपन सिराउरे॥एहो वनवारी वलिहारी जाऊँतेरी आज, मेरी कुंज आय नेक मीठीतान गाउरे। नंदके किशोर चित्तचोर मोर पंखवारे, वंशीवारे सॉवरे पियारे इत आउ रे॥६५॥

राग पीलू।

वंशीवारे तु मेरी गली आजा रे। तेरे विन देखे कल ना परतहै टुक मुखडा दिखलाजा रे॥ रैनि दिना मोहिं ध्यान तिहारो वंशीकी टेर सुनाजा रे। चरणदास सुखदेव पियारे माखन खाजा रे॥ ६६॥

सवैया।

जोगिया ध्यान धरै जिसको तपसी तनु गारके खाक रमावे। चारहु वेद न पावत भेद वडे तिवेदी नहीं गति पावें॥ स्वर्ग रु

मृत्यु पतालहुमें जाको नाम लिये ते सभी शिर नावें । चर्णदास कहै गोपसुता ताहि माखन दे देके नाच नचावे ॥ ६७ ॥ शंकर-से मुनि जाहि रटैं चतुरानन चारीहु आनन गावें । जो हिय-नेसुक आवतही रसखान महाजन मूढ कहावें ॥ जापर देव अदेव भुजंगम वारत प्राणन बार न लावैं ॥ ताहि अहीर कि छोहरियां छछिया भारि छाँछ पै नाच नचावैं ॥ ६८ ॥

कवित्त ।

ब्रह्माहूके ध्यानमें न आवे कभू एक क्षण, शंकर समाधि लाय ध्यान धर्त गाढो है । ऋषि और मुनि जाको रैन दिन धरैं ध्यान; ध्यानमे न आवे कभूं तासों हेत बाढो है ॥ सोई निरंजन जाकी माथाको न आवे अंत, ध्यानी ध्यान लाय रहैं सहै धूप जाडो है । देखो भाग्य ब्रजवनितनकेरी आज आली, ह्वे के हू अनंत नवनीत मागे ठाढो है ॥ ६९ ॥ जाके पदपरसको तरसत विश्व ब्रज, ग्वालनको खेलमांझ कधन चढाये हैं । जाकी यह माया सुर नर मुनि बांधि राखे, सोई गर यशुदा पै ऊखल बँधाये हैं ॥ जाके देव यज्ञमें बुलावें नाहिं आवे सो तो, नंद एक थार मांझ जेमके सिहाये हैं । जानेले नचाये सब दारुमयी पूतरी ज्यो, प्रेमवश गोपिनके हियमे समाये हैं ॥ ७० ॥ दीनहूके बंधु ग्वाल मोचो दुःख ततकाल अविनाशी नंदलाल वेदनमें गाये है । गावतहैं नेति नेति नेति कहि चारो वेद, शेषके सहस्रमुख पार नहि पाये हैं॥ ब्रह्मा आदि सनकादि जाको धरैं ध्यान सदा, शंकर समाधि लाय हीयमे बसायेहैं । कहै मयाराम देखो भाग्य ब्रजग्वालिनके, ऐसे घनश्याम दैदे माखन नचायेहैं ॥७१॥ कोऊ कहे मेरे आगे नेक तू नाचहु लाला, लोन मिलो छाँछ दूंगी आछीसी छुँगारके । भोर भयोवाके गयो वासो मेरो वेर भयो, धींगीसी गुजरियाने आन लियो धायके॥ खिरकी

सब तोरडारे बासन सब फोर डारे, दूध ढरकाय दियो बंदरा बुलायके। नंदरानी मुसकानी कछु कछु सकुचानी, सूरश्याम उँलूभे लियो शीश पे चढायके ॥ ७२ ॥

ब्रजकी अहीरनाके भागभले देखो भैया, देवनाके देव कैसी सेवनाकर पायो है। शिव औ विरंचि जाको पार नहीं पावे ताहि गोकुलाकी नारी करतारी दे नचायो है ॥ नारद मुनीसे तुंवरूसे पढि पचिहारे, व्यासजूकी वाणीसो विमल यश गायो है। कहे रणधीर भाग्य भले हैं अहीरनीके प्रेमको पयोधि ब्रज वीथिन बढायो है ॥ ७३ ॥

उराहनो लीला ।

दोहा—योग ध्यान आवे नहीं, यज्ञ भाग ना लेयँ।
ताको ब्रजकी गोपिका, हँसि हँसि माखन देयँ ॥

राग कान्हरो ।

माखनकी चोरी रे। तुम सीखो हो करन जब लागे करन चित चोरी रे॥जबते दृष्टि परे नँदनदन पाछे फिरो दौरादौरी रे।लोकलाज मर्यादा तोरी वन वन विहरत नवल किशोरी रे॥ आशकरण प्रभु मोहन नागर निगम शृंखला तोरी रे॥ ७४ ॥

राग देवगधार ।

जो तुम सुनो यशोदा गोरी। नदनँदन मेरे मदिरमें आज करत है चोरी ॥ हौं भइ आन अचानक ठाढी कह्यो भवनमें कोरी। रहे छिपाय सकुच रचक ह्व मनो भई मति भोरी॥ मोहि भयो माखन पछतावो रीती देख कमोरी। जब गहि बाहि कुलाहल कीन्हो तब गहि चरण निहोरी॥लागे लेन नयन जल भर भर मे

हरि कान न तोरी । सूरदास प्रभु देत निशदिन ऐसे अल्प सलारी ॥ ७५ ॥

राग ठुमरी ।

तेरो री कन्हैया वलको भैया री यशोदा मैया आज मेरे घर आयो। दधि मेरो खायो मटुकिया फोरी रह्यो सह्यो ढरकायो ॥ जो पकरूं तो हाथ न आवे ढूँढ फिरी नहि पायो।जानकीदास याहि बरजो क्यो ना पूत अनोखो जायो ॥ ७६ ॥

राग मलार ।

यहां लौ नेक चलौ नॅदरानी जू ।अपने सुतके कौतुक देखो कियो दूधमें पानी जू॥ मेरे शिरकी चटकचूनरी लै गोरसमें सानी जू । हमरो तुमरो बैर कहाहै फोरी दधिकी मथानी जू ॥ या ब्रजको बसिबो हम छांडें यह निश्चय कर जानी जू । परमानन्द दासको ठाकुर गोकुल कियो रजधानी जू ॥ ७७ ॥

राग ईमन ।

रानीजू लीजिये यह गाम॥दीजिये हमको बिदा राम ,राम है जु हमारी॥वसि हैं अनतहिं जाय वात लखि लई है तुम्हारी ॥ अ- न तो नाहि करत री सुतको देत पठाय । सि दिनाकी वात है यह कापै सहियो जाय ॥रानी०॥ मेरे शिरपर वसो गाम काहे- ो छोरो।श्याम आपनो जान मानले मेरो निहारो ॥ जो कछु तुमते सुत कही मोहिं कहो समुझाय । मैं तो यह जानो नही तुम लीजो सौह धराय ॥ ग्वालिन गामको मत छोरै॥ काल्ह तीसरे पहर श्याम गयो भवनन माहीं । वाने कियो जो जियान आवत मुखते कहि नाही ॥ बछरा छोरे खरिकते बांधनको नाजाय । सखा भीर लै द्वारे पैठे दूध दही ढरकाय ॥ रानी० ॥ जेतो खा-

यो दही दूध करे लयो मोते लेखो। दुगनो चौगुनो नौगुन सौगुनो लेहु विशोखो ॥ माट भरे दधि दूधके घरमे चाखत नाय मोहिं यही अचरज बडो पावत तुम घर जाय ॥ ग्वालिन० काहेको घरको छुये जौलौं कहुं मिलत परायो । अपनो सुन्द मान काहू पै न जात लुटायो ॥ आप खाय तौहूँ सहे मर्कट दे खवाय । जो वे भी चाखत नहीं देत भूमि ढरकाय॥रानी०॥७८।

राग भैरवी।

मेरी भरी मटुकिया लेगयो री । कछु खायो कछु ग्वालन खवायो रीतीकर मोहि देगयोरी ॥ वृन्दावनकी कुञ्जगलिनमे ऊँच नीची मोते कहि गयो री। परमानन्द ब्रजवासी सॉवरो अँगुठा दिखाय रस लै गयो री ॥ ७९ ॥

राग जंगला काफी।

दधि पीगयो री माई आज ॥ तेरो नट खट करगयो चट पट यह कहा सीख तै दई कृष्णको ब्रजनारियोके पट खोलनकी री॥ चला जाय नट खट पीगयो गट गट फिर दिखतारी नही ॥ एक रोज गूजरीका दांव जो लगा लहिंगेमे पकर वाको दाव लाई री॥ तू जो कहे थी मेरो नट नही चोर अव याहि ले री माई ॥ ब्रज की सखी सव देखनको धाई आज पकरे गये हैं यादवराई री॥ खोलके दिखावो इतवार नही आवे जाने किसको पकर लाई री॥ भीतर प्रभुने ऐसो रूप लियो धार गूजरीको पति–भर्तार वनो री ॥ गूजर जैसी पगडी औ तगडी गूजर जैसी डाढी गोडोलौं लटकाई री॥ वोली ब्रजनारी ऐसी वावरी भई तु आपनी तो ताली तैने वजवाई री ॥ तूतो कहेथी तेरो नट पकरो ले गूजरको पकरलाई री ॥ छल कृत रूप देख गूजरी विहाल भई काढके घूँवट वडी

शर्माईरी ॥ दूसरी कोठरीमें आप रहे बोल मैं तो यहां बैठो माई री ॥ एक बोली व्रजनारी तू तो बावरी भई आपनी तो हाँसी तैनें करवाई री ॥ कहे जियाराम यह तो पूर्ण ब्रह्म गति ऋषियोंने नही पाई री ॥८० ॥

राग रेखता ।

सुनिये यशोदा रानी छोडें ये व्रज तिहारो । कहिं जायके बसैंगी अतिही करैं किनारो ॥ नित कहां तलक सहिये नुकसान तेरे सुतको । घर जायके हमारे माखन चुरावे सारो ॥ तेरेही पास बालक यह वनके आय बैठे । जब जाय घर सखिनके सुन्दर तरुण निहारो ॥ छीके पैहो कमोरी लठियाते फोरडारे । दधिकी मथनियां तोरके माखन सभी विगारो ॥ नित करे हानि हमरी रंगीन याहि वरजो । ऐसो चपल यह ढीठ है यशुदाजी सुत तिहारो ॥८१ ॥

राग देश ।

गारी मत दीजो मो गरीबिनीको जायो है । तेरो जो विगारचो सो तो मोसो आन कहो वीर मैं तो काहू बातको नही तरसायो है ॥ दधिकी मटुकिया भरी अँगनामें आनि धरी तोल २ लीजो वीर जेतो जाको खायोहै ॥ सूरदास प्रभु प्यारे नेकहू न हूजे न्यारे कान्हरा सों पूत मैंने बडे पुण्य पायो है ॥ ८२ ॥

राग रामकली ।

मैया मेरी मैं नहिं माखन खायो ॥ भोर भयो गैयनके पाछे, मधुवन मोहिं पठायो । चार पहर वंशीवट भटक्यो सांझ परी घर आयो ॥ मैं बालक बैयनको छोटो छीका किस विधि पायो । ग्वाल-बाल सब बैर पडे हैं बरवश मुख लपटायो ॥ तू जननी मनकी अति भोरी इनके कहे पतियायो । जिय तेरे कछु भेद उपज है जा-

न परायो जायो ॥ यह ले अपनी लकुट कमरिया बहुतहिं नाच नचायो । सूरदास तब हँसी यशोदा ले उर कण्ठ लगायो ॥८३॥

राग काफी ।

बर्ज री महरी मोहनको चञ्चल चोर चतुर सुत तेरो ॥ आँगन आवे गोरस खावे दधि मट्ठकी भूपर पटकावे बाल रुआवे धूम मचावे ऐसो नित उठ करत बखेरो ॥ पलनापर ऊखलहि टिकावे तापर चढकर माखन लावे कपि बालनको टेर खिलावे देखत दुखित भयो मन मेरो ॥ छिपकर भीतर जाय निकासे अंधकार में मणी प्रकाशै ना पावे तो गारी देवें आग लगो उजरो घर तेरो ॥ साँझहि धेनु वत्स ले आवे यशुदाजू दुख सह्यो न जावे राख गाम अपनो हम जावे केशव जन मन प्रेम घनेरो ॥ ८४ ॥

राग भैरवी ।

कान्ह नित नये उरहना लावे । दूध दही घर काहूकी कमी नहिं नाहक धूम मचावे ॥ तनक दहीके कारण मोहन माखन चोर कहावे । सूर श्यामको यशुपति मैया बारबार सिखावे ॥ ८५ ॥

राग शहानो ।

देख चरित मोहिं अचरज आवे । जो करता जग पालक हरता सो अब नन्दको लाल कहावे ॥ बिन कर चरण श्रवण नासा हग नेति नेति जाको श्रुति गावे । ताको पकर महरि अँगुरीते आगनमे चलिवो सिखावे ॥ ब्रह्म अनादि अलक्ष अगोचर ज्योति अजन्म अनन्त कहावे । सो शशि वदन सदन शोभाको नँदरानी निज गोद खिलावे ॥ जाके डर डोलत नभ धरणी काल कराल सदा भय पावे । सो ब्रजराज आज जननीकी भौंह चढीको निरखि डरावे ॥ जाके सुमिरणते जीवनको भव बंधन छनमे छुटजावे ।

सोई आज बँध्यो ऊखलते निरखनको सगरो ब्रज धावे ॥ पूरण-काम क्षीरसागरपति मांगमांग दधि माखन खावे । भक्ताधीन सदा नारायण प्रेम कि महिमा प्रगट दिखावे ॥ ८६ ॥

राग रामकली।

यशोदा तू वडी कृपण री माई । दूध दही सब विधिको दीन्हो सुतडर धरत छिपाई॥वालक वहुत नही री तेरे एके कुँवरकन्हाई । सोऊ तो घरही घर डोले माखन खात चुराई॥वृद्ध वेस पूरे पुण्यनते तैं बैठी निधि पाई। ताहूके खइवे पीवेको कहा इती चतुराई ॥ सुनो न वचन चतुर नागरके यशुमति नन्द सुनाई । सूर श्यामको चोरीके मिस देखनको यह आई ॥ ८७ ॥

राग गूजरी।

यशोदा कान्हहूं ते दधि प्यारो । डार देहु कर मथत मथानी तरसत नन्ददुलारो॥दूध दहीमाखनसे वारे जाहि करत तू गारो। कुम्हिलानो मुखचन्द्र देख छबि काहे न नेक निहारो ॥ ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत सो ब्रज गैयन चारो । सूर श्याम-पर बलि बलि जैयै जीवन प्राण हमारो ॥८८ ॥

राग धनाश्री।

यशोदा तेरो कठिन हियो री माई । कमलनयन माखनके कारण बाँधे ऊखल लाई ॥ जो संपदा देव मुनि दुर्लभ सुपनेहुँ दे न दिखाई।याही ते तू गर्व भरी है घर बैठे निधि पाई॥तब काहूको सुत रोवत सुनि दौरि लेत हिय लाई।अब काहे घरके लरिकासो करत इती जडताई ॥ वारंवार सजल लोचन भरि जोवत कुँवर-कन्हाई।कहा करूं बलि जाऊं छोरती तेरी सौंह दिवाई॥जो मूरति जल थलमे व्यापक निगमन खोजि न पाई । सो यशुमति अपने आंगनमें दे करतारि नचाई ॥ सुरपालक प्रभु असुर सँहारक

त्रिभुवन जाहि डराई। सूरदास स्वामीकी लीला निगम नेति नेतगाई ॥ ८९ ॥

राग सारंग ॥

यह सुनिके हलधर तहँ आये । देखि श्याम ऊखलसो बांधे ाबहि दोउ लोचन भर आये ॥ मै वरज्यो कइ बेर कन्हेया भली गरि दोउ हाथ बँधाये । अजहूँ छाँडोगे लँगराई दोउ कर जोरि ाननि पै आये ॥ श्यामहि छोरमोहि वरु बांधो निकसतशकुन ले नहि पाये । मेरो प्राण जीवन धन माधो तिनकर भुज मोहि धे दिखाये ॥ माता सो कह करो ढिठाई शेष रूप कहि नाम नाये ॥सूरदास तव कहत यशोदा दोउभैयातुमइक ह्वै आये॥९०॥

अब घर काहूके जनि जाहु । तुम्हरे आज कमी काहेकी कत न अनतहि खाहु । जरै जेवरी जिन तुम बांधे वरै हाथ महाराय । ; मोहि अतित्रास करैगो बांधे कुवर कन्हाय ॥ वलि जाउ ाने हलधरकी छोरतहे जो श्याम । सूरदास प्रभु खात फिरो न माखन दधि तुम धाम ॥ ९१ ॥

मगरोकन लीला ॥

राग आडा कालिंगडा ॥

छांडो मोरी गैल नातो गारी मैं सुनाऊँगी । औरनके भूले कहूँ । जिन अटको अभी यशुमति पै पकर ले जाऊँगी ॥ पहले- ाँ अपनी वडाई कहा करूँ मैं देखियो तो कैसो तुम्हे नाच ाऊँगी । जो मैं तुम्हे सूधो न वनाऊँ नारायण तो मैं निज की न आजसे कहाऊँगी ॥ ९२ ॥

राग दादरा ।

यारे जिन मेरी बाँह गहो ॥ मारगमे सब लोग देखतहें दूरी न रहो । मनमे तुम्हरे कौन बातहै सोई क्यो न कहो ॥ कहि

हौं जाय आज यशुमतिसों हमरी बाट रोकत हो । इतनेपे नहिं मानत आनँदघन लरकाही तुम हो ॥ ९३ ॥

राग सोरठ ।

छांडो लँगर मोरी वहियां गहो ना ॥ मैं तो नारि पराये घरकी मेरे भरोसे गुपाल रहो ना ॥ जो तुम मेरी वैहां गहतहो नैन मिलाय मेरे प्राण हरो ना ॥ वृंदावनकी कुंजगलीमें रीत छोड अनरीत करो ना ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरणकमलचित टारे टरो ना ॥ ९४ ॥

राग मलार ।

गैल गैल मत रोके तू हमारी रे । चाल कुचाल चलो जिन चंचल चर्चा करै सब पुर नर नारी रे ॥ हम सुकुमार ठाढी कांपत हैं शिरपर दधिकी मटुकिया भारी रे । नारायण व्रज कौन बसेगो ऐसी अनीति जो करनी विचारी रे ॥ ९५ ॥

राग विहाग ।

बरजो नहीं मानत वार बार । जब मैं जात सखी दधि वेचन भाजत कंकर मार मार ॥ ले लकुटी मटुकी महि पटकत घूंघट देखत टार टार । हरवा तोरत गरवा लगावत करत कंचुकी तार तार ॥ कपटी कुटिल कठोर श्याम वन देखत छवि तरु डार डार । हरि विलास व्रजराज हठीलो बैठगई मैं हार हार ॥ ९६ ॥

राग झंझोटी ।

बडो खोटा ढोटा नन्दको आली जाको नाम कहत वनमाली मिल्यो यमुना तट हँस हँस मटकत लपट झपट पटकी मटुकी चट दधि गट नटखट कठीन हियो मोहि देत चलो गयो गाली ॥ माथे पे मुकुट धरे कानमें कुंडल पहरे भाल पर तिलक गोरोचनको करे गल वैजंती मुक्तमाल आली मुख तमोलकी लाली ।

कटि पीत वसन मानो घन दामिन नूपुर बजत वरणे छवि को कवि देखतही मन हरयो युगल प्रभु तिरछी चितवनशाली ॥ ९७ ॥

लावनी ।

सुनो यशोदारानी तेरे गिरिधारीने नाहक लूटी। मै देत दुहाई बबा नन्दजूकी हाहाखाके छूटी॥ मै दधि बेचन जात वृन्दावन शिर धरे गोरसकी मटकी । आन अचानक तेरे कान्हाने मेरी बैहां झटकी॥ जब झटकी हिरदेमे खटकी लटकी शिरमे आ अटकी । में व्याकुल ह्वै गई रही ना सुरत मोहि घुंघट पटकी ॥ ऐसी भई सुध हरन गिरी मैं धरन मेरी मटुकी फूटी ॥ मैं देत० ॥ एक सखी कह चुकी दूसरी कहे सुनो यशुदारानी । आज या व्रजमे तेरे कान्हाने धूम ऐसी ठानी ॥ घाट बाट पे रोकत डोलै नही भरन देवे पानी । पानी भरनमे दान मांगत ऐसो दधिको दानी ॥ करकी चूरी गई करक मेरी मोहनमाला न्यारी टूटी ॥ मे देत० ॥ ९८ ॥

राग देश ।

सुन री गुण कान्ह कुंवरके ॥ तेरो री सुत चपल कहावे यमुनाके तट वंशीवटके निकट नट झटक मटक दधि गटक पियो ॥ वदनकी छवि कान्हा मुकुटको शिर धर कदमके तरुतर कुंवर दुरयो ॥ बांसुरी बजाई मेरी सुध विसराई कान्हा देख ललाई मेरो कर पकरयो ॥ ९९ ॥

ठुमरी ।

मोको डगर चलन दीन्ही गारी रे । ऐसो री ढीठ बनवा री गी गोइया विनती सकल कर हारी रे ॥ नीर भरन मै चलीहूं धामसो बीच मिले पनघट्में कान्ह रे । वह तो जाने न दे पनघटको सनद पिया निरखंत सगरी पनिहारी रे ॥ १०० ॥

राग भैरव ।

देखो री मथनियां कैसे फोरी नंदलालने ॥ वनमें निवासी भयो री नंदको करत फिरत बरजोरी॥नन्दलालने०॥ जित जाऊं तित आडोइ आवे ए री दैया मोते जोर जनावे री ॥ यह व्रज कैसे वसेगो री । सासुरे जाउं तो सास लरे इत यह घर वाले री। आत्माराम नरसिंहके स्वामी कहा मुख ले घर जाउं हो कान्हा मोतिनकी लर तोरी ॥ १०१ ॥

राग टोडी ।

गागर ना भरन देत तेरो कान्ह माई । हँस हँस मुख मोर मोर गागर छिटकाई॥घूंघटपट खोल खोल सांवरो कन्हाई । यशुमति तैं भली बात लालको सिखाई ॥ अगर वगर झगर करत रार तों मचाई । हौं तो वीर यमुना तीर नीर भरन धाई ॥ गिरिधरके चरण ऊपर मीरा वलिजाई ॥ १०२ ॥

राग भूपाली ।

लगर मोको गारियां देदे जारी ॥ यह कलका छोकरा यह ढीठ लंगर री ॥ गारीकी गारी टोनेका टोना तुम जीते हम हारी हारी । आवत जावत प्यारा लगत है चलत चाल गति प्यारी प्यारी॥मोर मुकुट माथे तिलक विराजे कुण्डलकी छवि न्यारी न्यारी ॥ दोउ कर जोरे विनती करतहों सूर शरणागत तिहारी तिहारी ॥ १०३ ॥

राग सिंध ।

रोके मोरी गेल्वा मे कैसे जाउं पानियां । शीश मुकुट कंचनको झलके मकर मनोहर कुण्डल अलकें माथे खौर चंदनकी राजे उर वैजंतीमाल विराजे पीतांवर कटि कस्यो री चौतनियां ॥ अधर

सुधारस बेणु बजावे ग्वाल बाल लिये सँगही आवे कहा न माने नन्दमहरको माखन खात फिरत घर घरको ऐसो री निडर झकझोरी मोरी बेनियां। कर किंकिणियां नूपुर बाजे रुनुझुनात बहु मुनि-मन राजें पग पैजनियां सुन्दर साजें दर्श देख अघ दूरते भाजें अति चंचल अलबेली चितवनियां॥ गागर फोर मोर मुख हँसके करते गह निज उर तेलचके सूर शाम प्रभु नागर नटको बरज रही मानत नही हटको काहेना बरजोरी यशोदा महरनियां॥१०४॥

राग रेखता॥

यमुना न जान पावे भरने न देत पानी। छोटा वडा अनोखा है नन्दको गुमानी॥ लेकर जो गागर गृहसे यमुना पे भरने आई। आगे जो ठाढो मगमे वह साँवरो कन्हाई॥ देखी सखी अकेली वेहां पकर मरोरी। छातीसों कर लगावे गलहीर हार तोरी॥ निरखी अली नवेली या कुज बाट पाई। हँस हँसके ललित किशोरी उर कंठसो लगाई॥ १०५॥

राग छायानट॥

अंगुरी मेरी मरोर डारी छीन दधि लीना साँवरो। हाँ जो जात कुंजन दधि वेचन बीच मिले गिरिधारी॥ अगर सुने मोरी बगर सुनेगी सास सुने देवे गारी॥ चन्द्र सखी भज बालकृष्ण छबि हरि चरणन वलिहारी॥ १०६॥

राग श्यामकल्याण॥

नट नागर चितचोर गेद तक मारी सँवलिया॥ भयो निशंक अक भरलीनी भ्रुकुटी नयन मरोर॥ कहा करू कछु वश ना मेरो ऐसो जालिमजोर॥ रसिक हठीलो जिया तरसावे मानत नहिं निहोर॥ १०७॥

नयनोकी मारीरे कटारी मेरे ॥ सुनियो री मेरी पार परोसन ढीठ भयो गिरिधारी ॥ यमुनाके तट भेंट भई मोसो ऐसो छैल बिहारी ॥ सास बुरी घर ननँद हठीली देवर सुनै देय गारी ॥ मधुर अली घर जात बनै ना पीर उठी अति भारी ॥ १०८ ॥

राग भूपाली ।

लगर मोरी गागर फोर गयो ॥ सखी जानै कहांसों अचक आय ॥ लगर० ॥ नई चुन्दरिया चीर २ कर निपट निडर पुनि आंख दिखावे देख वीर अति कोमलबेहां दोउ कर पकर मरोर गयो ॥ मोसो कहे सुन एरी सुन्दरी तो समान ब्रज सुघर न कोऊ नख-शिख लौं छविपरख निरख मुख सघन कुंजकी ओर गयो ॥ कहँ-लग कहो कुचाल ढीठकी नाम लेत मेरो जीया कांपे नारायण मैं घनो वरजरहि मोतियनकी लर तोर गयो ॥ १०९ ॥

राग रेखता ।

सुनले यशोदा रानी तू लालकी बडाई । सब लोक लाज वान यमुनामें धो वहाई ॥ भोरहि मैं गई जो जल भरवे काज भयना । पीछेसों आ अचानक उन मूँदे मेरे नयना ॥ डरपी मैं हाय को है तब बोले टेढे बैना । हौ तो रही अकेली वा संग ग्वाल सेना ॥ तब सबने हो हो करके तारी मेरी बजाई ॥ सुनले० ॥ हँस हँसके छैल मोसो करवे लगो ठठोली । वह छवि तिहारे मुखकी अब कासो जावे तोली ॥ निरखे कबू वदनको कबहूँ व छूटै चोली । मैं तो सकुचकी मारी वासो कछू न बोली ॥ पुनि बैहाँ मेरी झटकी गागर धरणि गिराई ॥ सुनले० ॥ कबहुँ कहे बता री तू क्यो अकेली आई । कै घरमें तेरे पतिकी तोसो भई लराई ॥ तू चल भवन हमारे कर मोसों मित्रताई । विधनाने

तेरी मेरी जोरी भली बनाई ॥ नारायण वाकी बातें सुनके मैं अति लजाई ॥ सुनले० ॥ ११० ॥

सुनिये यशोदा कान दे अरजी यही हमारी । हम छांडजांय ब्रजको मरजी यही तुम्हारी ॥ नित घाट बाट नट खट जेहर झड़ाक पटके । बैयाँ मरोरे झटपट छातीसों हार झटके ॥ पुनि कूद कर कन्हाई घूंघट सम्हार खोले । ठोढीसो कर लगाके रस-कीसी बात बोले ॥ निजदृष्टि बाण करके भौंहे कमान ताने । चोरी सिवाय रसके वह और कछु न जाने ॥ चोरी करे सो चोरी घरमे डगरमे पावे । भाजनको देत फोरी माखन दही लुटावे ॥ कोई सखी इकेली घरमे वगरमें पावे । हँसके शरीर मसके वाको दया न आवे ॥ हम बारबार तुमपे करती पुकार हारी ॥ तुमने दया हमारी कबहूँ नही विचारी॥कीजे कृपा शितावी हम गोपकी कुमारी। दीजे निकास देखूं कैसो रसिक विहारी ॥ १११ ॥

राग झूलनाके स्वरमें ।

लिये फिरत सँग सँग सखियनका जाने मोहनी डारीहै । ढूंढत डोलत आप आपको ऐसो खेल खिलारीहै ॥ आप अमृतघट आपहि पीवे आपहि प्यावन हारीहै । आपहि दृष्ट अदृष्ट आपही आपहि गोपकुमारी हे ॥ वंशी बजन दिशा अवलोकन घूंघट ओट निहारी है । सब सखियनमें चतुर राधिका श्रीवृषभानु-दुलारी है ॥ सुनो सखी जाके सँग डोलो सोइ त्रिया वपु-धारी है । लीजे पकर निकस कहुँ जाय न यही रसिक वनवारी है ॥ ११२ ॥

गोचारनलीला ।

राग रामकली ।

मैया मैं गाय चरावन जैहो । तू कह नंदमहर बाबासो बडो भयो न डरैहों ॥ ॥श्रीदामा आदि सखा सब अपने औ दाऊ सग लैहो । बंसीबटकी शीतल छैयां खेलत अतिसुख पैहों ॥ देहु भात कामर भर लैहों भूँख लगै तब खैहों । परमानंद प्रभु तृषा लगे जब यमुनाजलहि अचैहों ॥ ११३ ॥

राग सारंग ।

शीशमुकुट मणि विराज कर्ण कुंडल अधिक साज अधर लाल चिबुक सुंदर यशुमतिको प्यारो । कमलनयन कुँवर लाल कुंकुमको तिलक भाल गुंजमाल कंठधार कान्ह कमरी वारो । चारन वन धेनु जात मुखमें मुरली सुहात गोपिनको चित चुरात कहियत नदवारो । अतिस्वरूप श्याम गात दरश देखे पाप जात मिहरदास प्रभु प्रवीन पतित तारन हारो ॥ ११४ ॥

राग बिलावल ।

खेलनमे का काको गुसैयां । हरि हारे जीते श्रीदामा बरबश ही कन करत रुसैयां ॥ जाति पांति हमते बड नाही ना हम बसत तुम्हरी छैयां । अति अधिकार जनावत ताते जाते अधिक तुम्हारे गैयां ॥ रूठ करै तासो को खेलै हाहाखात परत तब पैयां । सूरदास प्रभु खेल्योही चाहे दाव दियो कर नंद दुहैयां ॥ ११५ ॥

राग जंगलासिंध ।

न्यारी करो प्रभु अपनी गैयां । नाहिन वनत लाल हम तुमसों कहा भयो दश गैयां अधिकैयां ॥ ना हम चाकर नंदबबाके ना

तुम हमरे नाथ गुसैयां । आपन रहत नीदको मातो हम चारत तेरी वन वन गैयां ॥ कबहूँ जाय कदम चढ बैठे हम गैयन सँग लगत पठैयां । मानी हार सूरके प्रभुने अब नहि जाउँ मोहिं नंदकी दुहैया ॥ ११६ ॥

राग टोडी।

आज कौने धों वन चरावत गाय कहा धो भई बडी बेर। बैठे कहँ सुध लेहुँ कौन विधि ग्वालि करत अवसेर ॥ वृन्दावन आदि सकल वन ढूँढ्यो जहि गायनकी टेर। सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि कैसे दुराए दुरत डुंगरनकी ओट सुमेर ॥ ११७॥

राग सारंग।

ब्रजवासिन पटतर कोउ नाही। ब्रह्मसनक शिव ध्यान न पावत तिनकी जूठन लै लै खाही ॥ धन्य नद धन्य जननि यशोदा धन्य जहां अवतार कन्हाई । धन्य धन्य वृन्दावनके तरु जह विहरत- प्रभु त्रिभुवन राई ॥ हलधर कहत छाक जेवत सग मीठो लगत- सराहत जाई । सूरदासप्रभु विश्वम्भरहे ग्वालन कौर अघाई ११८

राग हमीर कल्याण।

ठुमक गति चलत अनोखी चाल। मोर मुकट मकराकृत कुण्डल केसर वेदी भाल ॥ आगे गैयां पाछे गैयां सग सोहे ब्रजवाल। विष्णुदास मुरलीधरकी छवि देखत भई निहाल ॥ ११९ ॥

राग केदार।

बन आये वनवारी। शिर धार चन्दन खौंर मोतियनकी गल- माल मोर मुकट पीताम्बर सोहे कुण्डलकी छवि अति न्यारी ॥

वृन्दावनकी कुञ्जगलीमें चाल चलत गति अति प्यारी। चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि चरणकमलपर बलिहारी॥ १२० ॥

राग जंगला।

चले आते हैं मोहन वनसे धेनु चराये हुए। लिये वंशी अधर पर धर मधुर सुर गाये हुए॥ उडी गोरज परी मुख पै छबीले लालाहूके। लटकता नाकमें मोती कुण्डल झलकाये हुए॥ मुकुटकी लटकपें अटकी मोरी अँखियां यह लाला। लेगई जो मन मेरा जुलफे नागिन बल खाये हुए॥ नयननकी सैनदे मोही सकल ब्रजहूकी बाला। परी वश प्रेमके ऐसी छुटती नहीं छुडाये हुए॥ अपने कृष्णदासपै कीजिये कृपा नन्दजूके लाला। दीजिये दर्शन चरणसो रहूँ लिपटाये हुए॥ १२१॥

राग कान्हरो।

देखन दे मोरी बैरन पलकें। निरख स्वरूप मदनमोहनको बीच परत वज्जरसी सलकें॥ आगे आगे धेनु पाछे नंदनन्दन गोचरणन रज मंडित अलके। कुण्डल कर्ण कोटि रवि पसरे परत कपोलनमें कछु झलके॥ऐसो स्वरूप निरख मेरी सजनी कहारी किये इस पूत कमलके। नन्ददास जननकी यह गति तरफत मीन भाव विन जलके॥ १२२॥

राग खम्माच।

लटक लटक चलत चाल मोहन आवे। भावे मन अधर मुरली मधुर सुर बजावे॥ चन्दन कुण्डल चपल डोलन मोर मुकट चन्द्रकलन मन्द हँसन जियाकी फसन मोहनी मूरत राजे। भ्रुकुटी कुटिल चपल नयन अरुण अधर मधुर बैन गति गयंद चारु तिलक भालपर विराजे॥ लछमनदास श्याम रूप नखसिख सोभा अनूप रसिक भूप निरखि वदन कोटि मदन लाजे॥ १२३॥

राग गौरी।

लटकत चलत युवति सुखदानी। सन्ध्या समय सखा मंडलमें शोभित तनु गोरज लपटानी॥मोर मुकुट गुंजा पियरो पट मुख मुरली बाजत मृदुवानी। चतुर्भुज प्रभु गिरिधारी आये वन ते ले आरती वारत नन्दरानी॥ १२४॥

राग गौरी।

मैया मोरी कमरी चोर लही। मैं वनजात चरावन गैयां सूनी देख गही॥ एक कहे कान्हा तेरी कामर यमुनामें जात वही। एक कहे श्याम तेरी कामर सुरभी खाय गई। एक कहत नाचो मेरे आगे लेदेहो और नई। सूरदास यशुमतिके आगे अंशुअन डार दई॥१२५॥

राग कान्हरो।

पौढे श्याम जननि गुणगावत। आज गयो मेरो गाय चरावन यह कहि मन हुलसावत॥ कौन पुण्य तपते में पायो ऐसो सुंदर बाल। हर्ष हर्षके देत सखनको सूर सुमनकी माल॥ १२६॥

कालीदमनलीला।

छन्द।

गेंदके संग कूद बालक यमुना जल पैठे धायके। नाग नागिन करत क्रीडा हरि उतरे तहां जायके॥ कौन दिशाते आयो रे बालक कहां तुम्हारो गाम है। कौन सखीके पुत्र जो कहिये कहा तिहारो नामहै॥ पूर्व दिशाते आये री नागिन गोकुल हमरो गामहै। मात यशोदा पिता नंदजू कृष्ण हमरो नाम है॥ प्रभुके सम्मुख कहते नागिन जारे बालक भागके। तेरो रूप देखे दया उपजे नाग मारे जागके॥ भागे कुलको दाग लागे अब भागे

कैसे वने। होनी होय सो होय री नागिन नागतो नाथे वने॥ असुर राजा दुखी धरणि नृप चोर वन आइयां। कंससेती द्वन्द्व कीनो नाग नाथन आइयां॥ कै वालक तुम मग जो भूले कै घर नारि रिसाइयां। कै तुम्हरे मन क्रोध उपज्यो वालक जूझन आइयां॥ ना नागिन हम मग जो भूले ना घरनारि रिसाइयां। ना हमरे मन क्रोध उपज्यो नाग नाथन आइयां॥ ले वालक गलहार माला सवा लाखकी वोरियां। सोतौ ले घर जाउ रे वालक नागसो देउँ चोरियां॥ कहा करो गलहारमाला सवालखकी वोरियां॥ वृन्दावनमें गड़ो हिंडोला नागकी करो डोरियां॥ चौसठ चोप मरोर नागिन नाग जाय जगाइयां। जागो हो वलवंत योधा वालक जूझन आइयां॥ जव उठे हो जलके राजा इन्द्र जल घहराइयां। प्रभुके मुकुटको झपट कीनो शब्द ताल वजाइयां॥ दोऊने मिलके द्वन्द्व कीनो राग भेद सुहाइयां। सहस फण प्रति निर्त कीनो थेइ थेइ शब्द उचारियां॥ कर जोरि नागिन करत स्तुति कुटुम सहित उठ धाइयां। नाथ अव अपराध क्षमा कर कृपा हम पति पाइयां॥ वामन वलिके द्वार हरिजू आप रूप वढाइयां। मच्छ कच्छ वाराह नरसिंह रामरूप दिखाइयां॥ हम दासी प्रभुजू तिहारी मत मारो छोडो नागको। प्राणदान तुम देहु हमको राखो नाथ सुहागको॥ नदनदन तव भये राजी दियो काली छोड़के। करि अनुग्रह दास कीनो ताके मदको तोडके॥ कालीदहमे नाग नाथ्यौ मथुरा कंस पछारियां। प्रभु मदनमोहन रहस मंगल याहि विधिसो गाइयां॥ १२७॥

राग काफी।

कालीके फनन ऊपर निर्त्तत गोपाललाल अद्भुत छवि कहि न जाय त्रिभुवन मन मोहें। ताता थेई थेई करत हरत सवके चित्त जात

गात सुर नर मुनिजन चित्र लिख सोहे ॥ रुनक झुनक नूपुर धुनि उठत उठत पैजनी पग ठुमक ठुमक किंकिणी कटि बाजत चित करखे । विद्याधर गंधर्व किन्नर जहां उघटत गत जय जय जय भाषत सुरवधू पुष्प वरखे ॥ ज्यो ज्यो फण ऊंचे करत त्यो त्यो कृष्ण मारें लात देत न अवकाश प्रभु नाचत गति धीमे । तरुण वदन गरल वमन सरल किये या विधि कर लटक लटक पटकत पग ललित रग भीने॥नारदादि शिव विरंचि तज प्रपंच धरत ध्यान ताको पग दुर्लभ सोई उरग शीश धारे । विद्याधर प्रभु दयाल तज विवाद कियो निहाल काली तेरे धन्य भाग बिसरत न विसारे ॥ १२८ ॥

तांडव गति मुंडन पर निर्तत वनमाली । पंपंपं पग पटकत फंफंफं फनन ऊपर बिबिबि बिनती करत नागवधू आली ॥ ससंसं सनकादिक नंनंन नारदादि गंगंग गंधर्व सभी देत ताली ॥ सूर-दास प्रभुकी बानी किंकिंकि किनहूं न जानी चंचंच चरण धरत अभय भयो काली ॥१२९॥

राग कान्हरो ।

जबहि श्याम तनु अति विस्तार्यो । पटपटात टूटत अँगजा-न्यो शरण२अहिराज पुकार्यो ॥ यह वाणी सुनतहि करुणामय तबहि गये सकुचाये । यही वचन सुन द्रुपदसुताके दीनो वसन बढाये ॥ यही वचन गजराज सुनायो गरुड छॉड तहँ धाये । यही वचन सुन लाक्षागृहमे पांडव जरत बचाये ॥ यह वाणी सहिजात न प्रभु पै ऐसे परमकृपाल । सूरदास प्रभु अग सकोर्यो व्याकुल देख्यो व्याल ॥ १३० ॥

वदौं मै चरण सरोज तिहारे । सुंदर श्याम कमलदल लोचन ललित त्रिभग प्राणपति प्यारे ॥ जे पद पद्म सदाशिवको धन

सिन्धुसुता उतरे नहिं टारे।जे पद पद्म तात रिस त्रासत मन वच क्रम प्रह्लाद सम्हारे॥ जे पद पद्म फिरत वृन्दावन अहि शिर धरि अगणित रिपु मारे। जे पद पद्म परस ब्रज युवती सर्वस दे सुत सदन विसारे॥जे पद पद्म लोकत्रयपावन सुरसरि दरश कटत अघ भारे। जे पद पद्म परसि ऋषिपत्नी नृप अरु व्याध अमित खल तारे॥जे पद पद्म फिरत पांडव गृह दूत भये सब काज सवारे। ते पद-पंकज सूरदास प्रभु त्रिविध ताप दुख हरण हमारे॥ १३१ ॥

श्याम कमलपद नखकी शोभा। जे नख चन्द इन्द्र सुर परशे शिव विरंचि मनलोभा॥जे नख चन्द्र सनक मुनि ध्यावें नहिं पावत मर्माही। जे नख चन्द प्रगट ब्रज युवती निरखि २ हर्षांही॥ जे नख चन्द फणीद्र हृदय ते एको निमिप न टारत। जे नख चन्द्र महामुनि नारद पलक कहूँ न विसारत॥जे नख चन्द्र भजत खल तारत रमाहृदय नित पर्शत। सूर श्याम नख चन्द्र विमल छवि गोपीजन मिल दर्शत ॥१३२ ॥

राग विहाग।

अवकी राखि लेहु गोपाल। दशो दिशाते दुसह दवागिनि उपजी है यहि काल॥पटकत वांस कॉस कुश चटकत लटकत ताल तमाल। उचटत अतिअङ्गार फुटत फिर झपटत लपट कराल॥धूमि धुंधि वाढी धुर अम्बर चमकत विच २ज्वाल। हरिन वराह मोर चातक पिक जरत जीव वेहाल॥ जिन जिय डरो नयन सब मूंदो हँसि बोले नँदलाल। सूर अनल सब वदन समानी अभय करे ब्रजबाल ॥ १३२ ॥

गोवर्द्धनलीला ।

राग मलार ।

देखो माई वादरकी वरिआई मदनगोपाल धरचो कर गिरिवर इन्द्र ढीठ झर लाई ॥ जाके राज्य सदा सुख कीनो ताको शमन वडाई । सेवक करे स्वामिसो सरवरि इन वातन पति जाई ॥ इंद्र ढीठ वलि खात हमारी देखो अकिल गॅवाई । सूरदास तिनको काको डर जिहिं वन सिह कन्हाई ॥ १२४ ॥

राग विलावल ।

राखि लेहु गोकुलके नायक । भीजत ग्वाल गाय गोसुत सव विपम वूंद लागत जनु सायक ॥ वर्पत मूसलधार सेनपति महामेघ मघवाके पायक । तुम विन ऐसो कौन नन्दसुत यह दुख दुसह मेटिवे लायक ॥ अघमर्दन वकवदन विदारन वकीविनाशन सव सुखदायक । सूरदास तिनको काको डर जिनको तुमसे सदा सहायक ॥ १२५ ॥

राग लावनी ।

साँवरे शरणागत तेरी । इंद्रने आय व्रज घेरी ॥ देखोजी यह वादर मिल आये । दामिनी दमकत भरलाये ॥ मेघभर लोका वरसावें । भाग अव कहो कितको जावें ॥ कहोजी अव कैसे वने परचो इंद्रसो वैर। कोप्योहै पृथिवीको पालक होगी किसविधि ठैर॥ जुगत हम वहुतेरी हेरी ॥साँवरे०॥ कही हम तुम्हरी सव मानी । भट गिरिवरकी मन ठानी । इद्रकी झूंठ सभीजानी । लखी हम तुम्हरी नादानी ॥ गोकुल राजा नन्दजू जाघर कुँवर कन्हाय । वृथा वचन अव होत तिहारो जनकी करो सहाय ॥ यतनमें नहि

लाओ देरी ॥साँव०॥कहत हम तुम्हरे गुण भारी । पुतना बालक-पन मारी॥दुष्टनी माया विस्तारी । वनी आप सुन्दर नारी॥कुचमें जहर लगायके दियो कृष्ण मुखमाहिं । एक मासको रूप तिहारो जीवत छोड़ी नाहिं॥मारकर मारगमे गेरी॥ साँवरे०॥जो निर्मल जल यमुनाको कियो । तुरतही दावनल ते पियो ॥ अभय व्रज-वासिनको करदियो । खैंच कर मन सबको हर लियो ॥ व्रज तेरी-को साँवरे करै इंद्र बेहाल । अबके सहाय करो नँदनन्दन करुणा-सिन्धु गोपाल ॥ शरण यह व्रज मण्डल तेरी ॥ साँवरे० ॥ अधर हरि आपन मुसुकाये । वचन यह मुखते बतलाये ॥ कहो तुम ह्यां कैसे आये । सभी मिल गिरिवरपै आय धाये ॥ नखपर गिरिवर धारके कियो कृष्णने खेल । गोवर्द्धनके शीशपर दियो सुदर्शन मेल ॥ अधर धर वंशीको टेरी॥साँवरे०॥सोहेशिर पचरंगी चीरा । लगे मुख पाननको बीरा । गले मोतिनकी माल हीरा ॥ सोहे कटि पीतांबर पीरा । सात कोसके बीचमें गोवर्द्धन विस्तार । सात वर्षको रूप हरीको लीनो पुष्प समान ॥ अशीशां दे रही व्रज सारी ॥ सांवरे० ॥ इद्रकर कोप कोप गरजे । नहीं जल गिरिवर पर बरसे ॥ दामिनी घन घनमें चमके । कि मूशलधार परी बरसे ॥ वर्ष वर्षके हारचो सुरपति तब्रजन्यो जगदीश । दोनो हाथ पसार के धरचो चरणमें शीश ॥ मेरी बुधि मायाने फेरी ॥ साँवरे० ॥ अचंभव याको कछु नाही । इंद्र तो लाख कोटि ताई ॥ बनावत पल छिनके माही । बिगारत देर कछु नाही ॥ उत्पति परलै जगत-की गिरिधारीको खेल । गंगाधर ब्रह्मा शिव ध्यावे, इंद्र, विचारो कौन ॥ नामते काटो यम बेरी ॥ साँवरे० ॥ १२६ ॥

प्रथम सनेहलीला ॥

राग गौरी।

बूझत श्याम कौन तू गोरी । कहां रहत काकी है बेटी देखी नही कबहुँ ब्रज तन आवत खेलत रहत आपनी पोरी ॥ सुनत रहत श्रवणन नंद ढोटा करत फिरत माखनकी चोरी । तुम्हरो कहा चोर हम लीनो खेलन चलो संग मिलजोरी ॥ सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि बातन भुरे राधिका भोरी ॥१२७॥

राग धनाश्री ।

प्रथम सनेह दोउअन मन मान्यों । नयन सैन बातें सबकीनी गुप्त प्रीति शिशुता प्रगटान्यो ॥ खेलन कभूँ हमारे आवो नद सदन ब्रजधाम । द्वारे आय टेर मोहि लीजो कान्ह है मेरो नाम ॥ जो जानो घर दूर हमारो बोलत लेहो टेर । तुम्हें सौंह वृषभानु ववाकी प्रात सांझ इक बेर॥सूधी निपट देखियत तुमको ताते करियत साथ । सूर श्याम नागर उत नागरि राधा हारि मिल गाथ ॥ १२८॥

राग आसावरी ।

खेलनके मिस कुँवरि राधिका नंदमहर घर आई हो । सकुच सहित मधुरे सुर बोली घर है कुँवर कन्हाई हो ॥ सुनत श्याम कोकिल धुनि वाणी निकसे अति अतुराई हो । माता सों कछु कलह करत हरि डारयो रिस बिसराई हो ॥ मैया री तू इनको चीन्हति बारंबार बताई हो । यमुना तीर कालिह मैं भूल्यो बांह पकरि मेरी लाई हो ॥ अबतो यहां तोहि सकुचति है मैं दे सौंह बुलाई हो । सूर श्याम ऐसे गुण आगर नागरि बहुत रिझाई हो ॥१२९ ॥

कवित्त।

कीर्ति महरानी वृषभानु आदि गोप गोपी कैसे या कलीके माहि धन्य कहलावते ॥ कौन तप करतो या ब्रज माहिं वसबेको कौन सो वैकुंठहूके सुख विसरावते ॥ नागरिया जोपै राधे प्रकटहू होती नाहि श्याम पर कामहूके विपती कहावते ॥ छाय जाती जडता बिलाय जाते कवि सब जर जातो रस तो रसिक कहा गावते ॥ १४० ॥

आखमिचौनीलीला।

राग गौरी ।

हो प्यारी लागे ब्रजकी डगर । लुक लुक खेलत ऑख मिचौनी चरण पहारी वगर॥सांत पांच मिल खेलन निकसी कोकिला वनकी डगर । परमानंद प्रभुकी छबि निरखत मोहिं रह्यो ब्रज सगर॥ १४१॥

राग आसावरी।

गावे देदे तारियां हो ब्रजकी नारियां सुकुमार । नंदके नंदनहो ब्रजके चंदन रस गार ॥ मिलि वसानेकी गोरी गारी गावैं नवल-किशोरी तुम सुनो नंदके नंदा । तुमको पूछे सब ब्रज चंदा ॥ तेरी वहन छैलछिनगारी । हमारे श्रीदामा ते यारी ॥ तेरी वडी विनोद-नताई । जाकी सब जग करत हँसाई ॥ नँदनंदन तेरी बूआ । सो करे झूठके पूआ ॥ नँदनंदन तेरी काकी । सो कामकलामे पाकी ॥ नंदनंदन तेरी मौसी।सो रहत सदा मन हौसी॥नदनंदनतेरीमामी। सो सब अवलनमें नामी ॥ नंद नंदन तेरी नानी । वाकी वात न हमते छानी ॥ नंदनंदन तेरी दादी । सो सदा फिरै उन्मादी॥गोरे नंद यशोदा मैया । तुम कारे कौनके दैया ॥ सुध न्हाय यशोदा रानी । काहू कारे ते रति मानी॥अपनी यशुमतिको गहि आनो ।

सो आय मिले वृपभानो ॥ यह नँद वृपभानु सनेही। यहएक प्राणरे द्वै देही ॥ वे नंदगामकी वाला। यां वसानेके लाला ॥ गठ जोरे आनि करावो ॥ हथरेलो हमें दिवावो ॥ यह रहस किशोरी गायो। सो वास सदा व्रज पायो ॥ १४२ ॥

राग जंगला।

यशोदाने कारी अँधेरीमें जायोयाते कारो रूपहरी पायो ॥ कीरति गोद गोपाल लिये मुख चूमत मोद बढायो ॥ रूपकी राशि मयंक मुखी मेरी राधेको रूप लजायो ॥ नाम अनेक सुने घनश्यामके जबसे गर्ग गृह आयो ॥ ना हमने वसुदेव सुने वासुदेव कहांते आयो ॥ कर्मकी रेख मिटे ना सजनी वेद पुराणन गायो। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको वेद विमल यश गायो ॥ १४३ ॥

भूपण अपने लेरी मैया मोरकि चंद्रिका कांचकि मणियां गुंजा फल मोहिं देरी ॥ दुरादुरीमें खेलत सखन संग खेलन मैं नहिं पैहों ॥ मुख शशि प्रभा वराही राखो इनको कहां दुरैहौ ॥ आज सदन वृपभानु गोपके खेलन में जो गयो ॥ सगरे सखा अगमने भागे मैं ही चोर भयो ॥ जवहि महरि वृपभानु गोपघर गहिअंचर मोहि रोक्यो। वदन चूमि मिष्टान्न हाथ धर अंग अग अवलोक्यो॥ तव वृपभानु सभाते आये नदकुमार न होई। परमानद कुँवरिको दूलह कहत रहे सवकोई ॥ १४४ ॥

मैया मोहिं ऐसी दुलहिन भावे। काहू गोपकी तनक ढोटनियां रुनक झुनक चलि आवे ॥ कर कर पाक रसाल अपने कर मोहिं परोसि जिमावे। करअंचर पट ओट बवाते ठाढी व्यार डुरावे ॥ मोहिं उठाय गोद बैठारे कर मनुहार मनावे। अहो मेरे लाल कहो वावाते तेरो व्याह करावे ॥ नदराय नँदरानी दोउ मिलि मोद समुद्र वढावे। परमानन्द दासको ठाकुर वेद विमलयश गावे ॥ १४५ ॥

सजीव जंतु जल थलके नाद स्वाद सुर पोह्यो॥धरणीते गोवर्द्धन धारचो कोमल प्राणअधार। अव हारि लटक रहत हैं टेढे तनक मुरलिया भार॥ हमैं छुडाय अधर रस पीवे करें न रंचक कान। सूरदास प्रभु निकस कुब्जते चेरी सौत भइ आन॥१५१॥

राग दादरा।

चोरो सखी बंशी आज दाव भलो पायो हैायह उपकार प्यारी सदा हम मानेंगी गौरीराग रसिक सांवरो रिझायोहै॥ बहुत अधरामृत चुवायो श्याम मुरली बीच दिन दिनकी कसक आज काढ पायो है। रसिक पीतम जोपे विनती करैं हजारवार तौहू या बांसुरीको भेद ना वतायोहै॥ १५२॥

राग देश।

सकी याकी वंशी लीजै चोर॥ जिन गोपाल किये अपने वश प्रीति सबनसो तोर। अधरनको रस लेत मुरलिया हम तरसत निशि भोर॥ छिन इक घर भीतर निशि वासर धरत न कवहूं छोर। कवहुंक कर कवहूं अधरनपर कवहूं कटि उर मोर॥ ना जानूं कछु मेल मोहनी राखी सवअंग कोर। सूरदास प्रभुको मन सजनी बंध्यो है नादकी डोर॥ १५३॥

कौन वसत या वृन्दावनमे मो मुरलीको चोर॥ जानी नही लई काहू करमें कटिमे उरसी जोर। चोरी नाह बरजोरी एरी प्यारी मो मुरलीको चोर॥राजाहीको दिये बनेगी यही न्यावकी तोर। वृन्दावन हित रूप सुघर पिया वाट गवाई ढूंढो काननके कछु देहु अकोर॥ १५४॥

राग खम्माच।

किन लई देहु बताय मुरलिया राधे॥ प्राणते प्यारी तिहारी सौंह मोहिं जीवत हो गुणगाय॥सत सुरन सुर नर मुनि मोहे वसु-

री नेक बजाय ॥ यह विनती बलिहार सुनो क्या ना प्यारीजी होत सहाय ॥१५५॥

राग काफी ।

मुरलिया जो पाऊं तो मैं तेरोही गुणगाऊं। सुनहो कुँवारि किशोरी राधे श्रीराधे राधे गाय सुनाऊं॥ चरण छुवाय कहतहो तुमसो तेरोहि ध्यान लगाऊं। यह विनती बलिहार विहारन तेरेहि हाथ विकाऊं॥ १५६॥

राग भूपाली ।

वंशीमेरी प्यारी दीजो प्रान प्रान प्रान । यहि ठौर काल्हि भूल्यो री सुखदान दान दान ॥ नहि कामकी तिहारी दीजै आन आन आन। जाते करू मैं तेरो री गुण गान गान गान ॥ विनती सुनो हमारी दे कान कान कान । कीजै कृपा रसिकपै जन जान जान जान ॥ १५७॥

राग ईमन ।

काल्ह सखी यहि ठौर वांसुरी भूल विसारी । लै जो गई तुम धाम वात हम सुनी है तुम्हारी ॥तुम्हरे काम न आवहि वसी हमरी देहु । हम आतुर होय मांगते तुम नाहि नाहि जु करो ॥ वांसुरी दीजिये ब्रजनारि वसी कैसी होत नही हम नयनन देखी । पिता तुम्हारे साधु लाल तुम कपट विशेखी ॥ इत उत खेलत तुम फिरो वाही भूलरही । सांच शपथ वावाकी सौ तेरी वँसुरी नाहिं लई ॥ वांसुरी कैसी. है ब्रजनाथ वशी हमरी देहु काहेको रारि वढावो । समझ बूझ मनमाहिं काहेको लोग हँसावो ॥ लोग हसे चर्चा करे प्यारी मनमे शोच विचार । यह वंसी मनमोहनी तुम देती क्यो न गवांर ॥ वसी दीजिये० ॥ हमको कहत गँवारि आपनी करत वडाई । मारू गुलचा गाल तोहूँ वावाकी जाई॥ तुमसे केते ग्वा-रिया मॉगत हम पै आय । चतुराई तुम छांडिकै जाय चरावो

गाय ॥ वंसी केसी० ॥ या बंसीकी सार कहा तुम ग्वालिन जानो। तीन लोक पटतर तासो मेरो मन मानो ॥ या वंसी खोजत फिरै शिव विरंचि मुनिनाथ । परचावो परचैं नही तुम कहा नचावत हाथ ॥ वंसी दीजिये० ॥ नंद मिहरके कुंवरकान्ह तोहि कौन पतीजे । भूल गये कहूँ अनत दोष हमको नहिं दीजे ॥ ले लकरी मुखपै धरी वंसुरी याको नाम । जिन घर ऐसे पूत हैं उजरत तिनके गाम ॥ वंसी केसी० ॥ वसौ कि ऊजर जाउ तुझे क्या परी हमारी । तुमसी हैं लखचार नंद घर गोबरहारी । इकलख मेरे सग चलै लखआवै लख जांय । लख ठाढी दर्शन करें लख खडी खडी ललचाय ॥ वंसी दीजिये० ॥ सुधरसयानी नारि हाथगहि वंसीलाई । पूरण परमानंद सांवरे सुख हि वजाई ॥ ले वसी ग्वालिन मिली घूंघट वदन छिपाय । सूरदास हारी गूजरिया जीते यादव राय ॥ बांसुरी लीजिये व्रजनाथ ॥ १५८ ॥

राग कल्याण।

श्यामकी वंशी वन पाई । उठो यशोदा मैया खोलो किवारिया मैं वंसी गृह देनेको आई । वहुत दिननके उनीदे मोहन सोने दे वृषभानुकि जाई । इतनी सुनत निकसि आये मोहन अंतर्यामी प्रभु कुंवर कन्हाई॥मुरलीके संग पटची हमारी दे राधे वृषभानुकि जाई । हमजानी कछुमान बढैगो तुम हरि हमको चोरी लगाई॥ श्रवणन सुनी नयन नहिं देखी चलो ठौर हम देहि वताई । सूरदास गुण कहँ लग वरणे दोनोमें एकै चतुराई ॥ १५९ ॥

वेणीगूँथनलीला।

राग कल्याण।

बेणी गूंथ कहा कोई जाने मेरीसी तेरी सौंह राधे ॥ विच विच फूले श्वेत पित राते को करसके एरी सौंह राधे ॥ बैठे

रसिक सँवारन वारन कोमल कर कंगहीसो साधे । हरीदासके स्वामी श्यामा,नखशिखलौं वनाई दे काजर नखहीसो आधे॥ १६०॥

राग दादरा ।

प्यारीको शृंगार करत नँदलाला । वार वार मे मोती पोहे कन विच झलके वाला ॥ कलीदार जरीको लहँगा ऊपर सुर्ख दुशाला । पुरुषोत्तम प्रभु रसिक शिरोमणि छवि निरखत ब्रजवाला ॥ १६१ ॥

राग गौरी ॥

तेरो मुख नीको कि मेरो राधा प्यारी । दर्पण हाथ लिये नँदनंदन साँची कहो वृषभानु दुलारी ॥ हम का कहें तुमहीक्यो ना देखो मे गोरी तुम श्याम विहारी । हमरो वदन ज्यो चंदाकी उजारी तुमरो वदन जेसे रेन अंध्यारी ॥ तिहारे शीशपर मुकुट विराजे हमरे शीशपर तुम गिरिधारी । चद्र सखी भज बालकृष्ण छवि दोउ ओर प्रीति वढी अति भारी ॥ १६२ ॥

राग विहाग॥

वेसर कोनकी अतिनीकी । होड परी लालन औ ललना चौप वडी अति जीकी ॥ न्यावपरो ललताके आगे कौन ललित कौन फीकी । दामोदर हित विलग न मानो झुकनझुकी प्यारी-जीकी ॥ १६३ ॥

राग श्यामकल्याण॥

राधा प्यारी रूप उजारी मोतन नेक हेरो । मेरी प्यारी तन मन धन छवि ऊपर वारो नाम उचारो मे तेरो ॥ हँस मुसकाय वदन तन हेरो मोहि करो चरणनको चेरो । अली किशोरी एक बार कहो लाल विहारी मेरो ॥ १६४ ॥

राग खेमटा।

तेरो मुख चंद्र री चकोर मेरे मैना। पलहूं न लागे पलक विन देखे भूल गये गत पलहूं लगै ना। हर्बरात मिलबेको निशिदिन ऐसे मिले मानों कबहूं मिलें ना॥ भगवत रसिक रसकी यह वातें रसिक बिना कोइ समझे सकैना॥ १६५॥

तू है मुख कमल नयन अलि मेरे। अति आरत अनुरागी लंपट हर्बरात इत फिरत न फेरे॥ पान करत मकरंद रूप रस भूल नही फिर इत उत हेरे। भगवत रसिक भये मतवारे घूमत रहत छके मद तेरे॥ १६६॥

प्रीतम तुममों हगन वसतहो। कहा भोरसे है पूछतहो कै चतुराई कर जो हँसत हो॥ लीजे परख स्वरूप आपनो पुतरिनमें तुमही जो लसतहो।वृन्दावन हित रूपरसिक तुम कुंज लडावत हिय हुलसतहो॥ १६७॥

रागजंगला सवैया।

चैन नहीं दिन रैन परै जबते तुम नैनन नेक निहारे॥ काज बिसार दिये घरके ब्रजराज मैं लाज समाज बिसारे॥ मो विनती मनमोहन मानियो मोसों कहू जिन हूजियो न्यारे॥ मोहि सदा चितसों अति चाहियो नीकेके नेह निवाहियो प्यारे॥ १६८॥

गोरे ग्वालकी लाला।

ठुमरी।

चन्दा सों वदन जामे चन्दनको बिंदा दिये चन्दा तन चितवत चन्दा छवि छाई प्यारी। चन्दनकी सारी सोहै चन्दनको हार हिय चन्दनको लहँगा सोहै चन्दा मुख भाई प्यारी॥ चन्दनकी कंचुकी चन्दनकी वन्दनी चन्दनकी बँगली चन्दा तनु भाई

प्यारी। कहा कहूँ कछु कहत न आवे तिहारो मुख देख चन्दा गयोहै लजाई प्यारी ॥ १६९ ॥

राग बिहाग।

यह कहिके प्रिय धाम गई ॥ चौक परे हरि जब यह जानी अब यह कहा भई ॥ दोप न होय कछू सखि मेरो उपमा चंद दई। रिस न भरी नख शिखलौं प्यारी यौवन गर्व मई ॥ लागो वेगि मनाय सखीरी यामिनि जात वही। पुरुपोत्तम प्रभुकी छवि निरखत लावो वेगि सही ॥ १७० ॥

राग गौडमलार।

वृपभानु कुँवारि जब देखों।तब जन्म सफलकारि लेखो॥मैं राधा राधा गाऊँ।राधा हित वेणु वजाऊँ॥मैं राधारमण कहाऊँ। काहे दूजा नाम धराऊँ॥जहँ राधा चर्चा कीजे। तहँ प्रथम जान मोहिं लीजै॥जहँ राधा राधा गावै। तहँ सुनबेको हम आवैं॥ श्रीराधा मेरी सम्पति। श्रीराधा मेरी दम्पति ॥ श्रीराधा मेरी शोभा। श्रीराधाको चित लोभा ॥ मे राधाके संग नीको। राधा बिन लागत फीको ॥ १७१ ॥

राग खेमटा।

देखी कहूँ गलिनमें मो प्राण जीवनी। एहो सुजान प्यारी मम चूक क्या विचारी क्यो दुरगई लतनमें दे दर्श आनन्दनी॥ जब चलत चाल छबिसो तब हलत हार उरसो ठुम ठुम चरन धरन पै तू गति गयन्दनी ॥ तेरी छटा चरणकी निंदत रवी किरणकी हाहा कुँवरि किशोरी तू है सुख समूहनी। यह सुनत वचन मेरो पापाण द्रवत हेगे हित रूप लाल चेरो एहो दुख-निकन्दनी ॥ १७२ ॥

राग देश ।

वाधा दे राधा कित गई। वृन्दाविपिन अछत प्यारी बिन सब विपरीत भई ॥ मेरे मन्द भाग्यसों काहू पोच प्रकृति सिखई । व्यास स्वामिनी वेगी मिले तो बाढै प्रीति नई ॥ १७३ ॥

राग पीलू।

मेरी सुध आन लियो प्यारी राधा । तनहूँलडैती राधे मनहूँ लडैती हरत सकल दुख वाधा ॥ कुंजमहलमें सदाहि वसतहो सुख संपति लिये साधा । विट्ठल विपिन विनोद विहारन सर्वस प्राण अगाधा ॥ १७४ ॥

राग सोरठ।

श्रीराधा प्यारी देखीहै चितकी चोर। लागी काहू ठौर मैने देखी है चितकी चोर ॥ चन्द्रवदनि मृगलोचनि राधे जैसे चन्द्र चकोर। नई प्रीति सों सवरस बाढचो जोवना करतही जोर ॥ पायनमें नूपुर धुनि बाजै गजगति चलती तोर । या छबि निरखिके मगन भये गुण गावत दास किशोर ॥ १७५ ॥

राग विभास।

मेरी तो जीवन राधा विन देखे नहि चैन । मोसे तो कछु चूक परी ना कैसे रूठी सुखदैन ॥ पैयां परूँ मैं तोरे ललिता तोरे विशाखा तुम जैयो प्यारी लेन। धीरज प्यारीजूके देखे श्रीराधाजूके देखे शीतल होगे मेरे नैन ॥ १७६ ॥

राग विहाग।

तुम कहुँ देखीरे इत जात रूप गरविनी प्यारी राधा ॥ चम्पक वरण गात मन रंजक खंजन चख कुरंग मद गंजन अमल कमल मुख ज्योति विलोकत होत शरद शशि आधा ॥ अहो सुगन्ध मृग

शावक नयनी कहूँ देखी प्यारी पिकवैनी सुषुमा सिन्धु अगाधा ॥ अहो मराल मानसर वासिक अहो अलिन्द मकरंद उपासिक देहु बताय मोहि दाया करि होत अपत अपराधा ॥ अहो कदम्ब अहो अंब निंब वट सोहत सुखद छांह यमुना तट हरत तापकी बाधा ॥ सन्तत देत गोप गोधन सुख कबहूँ नहि सहिसकत मेरो दुख उपकारी वपु वेद बखानत अबहि मौन क्यों साधा ॥ आरत वचन पुकारत लालन मन जो फँस्यो विरहीके हालन मदन जाल सो बांधा ॥ अतिशय विकल देखि बनवारी प्रकट भई वृषभानु दुलारी सूरदास प्रभुको लगाय उर पुरवत रसकी साधा ॥ १७७ ॥

राग काफी।

कर विचार वृषभानु दुलारी । ग्वालरूप धर छलन कृष्णको नन्दगामकी ओर सिधारी॥जहँ हरि अपनी गाय चरावैं तहां आप चल आई । देख रूप मोहे मुरलीधर भूलगये चतुराई॥अरे मित्र क्या नाम तिहारो वास कहां है तेरो॥मै तो तोहिं कभूं नहि देख्यो करत सदा ब्रज फेरो ॥ गोरे ग्वाल भानुपुरके हम गोधन वृन्द चरावें । रसिक विहारी गाय हमारी आई भज कहँ पावें ॥ १७८ ॥

राग देश ।

गुन सुन वृषभानु कुवँरिके ॥ जाके लाल तुम रहो अधीन । वह तो गृहसे सटक बन रहत अटक नहि मानत हटक इत उत ही फिरत ॥ ऐसीफीरे इतरात नहीं काहूको सुहात मन माने तित जात नहीं नेकहू डरत । बेटी बडेकी कहावे दधि बेचबेको जावै ताहि लाजहू न आवे सब नाम धरत ॥ इक मेरी सुन लीजे ऐसी नार ना पतीजे ब्याह कहूँ जासो कीजे तेरो चित्त हरत ॥ जाकी मुख उजियारी देख रीझोगे विहारी पियो वारि वारि पानी जब प्रीति करत ॥ १७९ ॥

राग प्रभाती ।

सखा तुम बोलो न बात विचारी । कहौं कौनसी बाल जगत में जैसी है भानुदुलारी ॥ भानु नगरके बसन हार तुम प्यारीके अनुहारी ॥ रवि शशि कोटि मदन हूंकी छवि दीजै तुम पर वारी ॥ कहो कौनसे मैं व्याह कराऊं रची कवन विधि नारी । करत वास हिरदै मेरे में कीरति कुंवर दुलारी ॥ प्रेम विवश कछु सुरति रही ना तनुकी दशा विसारी । लिये लगाय वेग उर प्यारी तब हँसि रसिक विहारी ॥ १८० ॥

राग देश ।

सखी री मैं हूं नंद किशोर । मै दधि दान लेत वृन्दावन रोंकतहूं वर जोर॥यह जो माननी मान कर बैठत विनंती करूं कर जोर ॥ पुरुषोत्तम प्रभु मैं हूं रसिक वर यह मेरी चितचोर ॥ १८१ ॥

रास लीला ।



राग गौडमलार ।

शरद निशि देखिहारि हर्ष पायो । विपिन वृन्दावनहिं सुभग फूले सुमन रास रुचि श्यामके मनहिं आयो ॥ परम उज्ज्वल रैनि चमक रहि भूमिपर सदा फल तरुन प्रति सुभग लागें । तै- सोई परम रमणीक यमुना पुलिन त्रिविध वहे पवन आनंद जागै । राधिकारमण वन भवन सुख देखके अधर धर वेणु सुर ललित गाई । नाम ले ले सकल गोप कन्यानके सबनके श्रवण यह ध्वनि सुनाई ॥ सुनत उपज्यो मयन परत ना काहू चैन शब्द सुन श्रवण भईं विकल भारी । सूर प्रभु ध्यान करके चली उठ सभी भवन जन नेह तज घोष नारी ॥ १८२ ॥

राग कल्याण ।

जब हरि मुरली नाद प्रकाश्यो । जंगम जड थावर चर कीन्हें पाहन जलज विकाश्यो ॥ स्वर्ग पताल दशोदिशि पूरण धुनि आच्छादित कीनो । निशि हरि कल्प समान बढाई गोपिनको सुख दीनो ॥ भर्मत भये जीव जल थलके तनुकी सुध न सम्हार । सूर श्याम मुख वेणु विराजत उलटे सब व्यवहार ॥ १८३ ॥

राग झँझोटी ।

बंसी यमुना पै बाज रही रे लालछवि निरखन कैसे जाउं री आज ॥ बंसीकी टेर सुनी मेरे श्रवणन तन मन सुधि बिसरी रे लाल ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहे चन्दन खौर लगी रे लाल॥ चंद्रसखी भज्ञ बालकृष्ण छवि चरणन चेरी भई रे लाल ॥ १८४ ॥

राग यमन ।

वृन्दावन सघन कुंज माधुरी लतान तरे यमुना पुलिनमें मधुर बजी बांसुरी ।जबसे धुनि परी कान मानो लागे मयन बान प्राननकी कहा चले पीर होत पांसुरी ॥ व्याप्यो जो अनंग तामें अगसुध भूल गई कोई कछू कहो कोई करो उपहासु री । ऐसे व्रजाधीश जीसो प्रीति नई रीति बाढी जाके उर बसगई प्रेमपुंज गांसु री ॥ १८५ ॥

कवित्त ।

एक उठ दौरी एक भूल गई पौरी एक राख भर कौरी सुध रही नाहि तनमें ॥एक खुले बार एक छतियां उघार एक भूषणको डर चली दामिनी ज्यो घनमें ॥ एक उजियारी गोपी नाथने निहारी बारी एक भई बौरी डोले मदन उमगमें ॥ ऊधम भयो है घरी चार व्रज मडलमें बासुरी बजाई कान्ह जभी वृन्दावनमें ॥ १८६ ॥

बाजी घर आई बाजी देखबेको धाई बाजी मुरझाई सुनि त
गिरिधरधरकी ॥ बाजी हँस बोलें बाजी करत कलोलें बा
संग लाग डोलें सुधि बिसारी सब घरकी ॥ बाजी ना धरें ध
बाजी ना सम्हारे चीर बाजिनके उठी पीर दावानल भरकी
बाजी कहैं बाजी बाजी बाजी कहें कहां बाजी बाजी कहें बा
बंसी सांवरे सुघरकी ॥ १८७ ॥

राग भैरव ।

बांसुरी बजाई आज रंगसो मुरारी । शिव समाधि भूल ग
मुनि जनकी तारी॥वेद भनत ब्रह्मा भूले भूले ब्रह्मचारी । सुनतः
आनंद भयो लगी है करारी ॥ रंभा सब ताल चूकी भूलि नृत्य
कारी । यमुना जल उलट बह्यो सुध ना सँभारी ॥ श्रीवृन्दाव
बसी बजी तीन लोक प्यारी । ग्वालबाल मगन भये व्रजके
सब नारी ॥ सुन्दर श्याम मोहनी मूरत नटवर वपु धारी । सू
किशोर मदन मोहन चरणो बलिहारी ॥ १८८ ॥

राग जंगला ।

वृन्दावन कुंज धाम विचरत पिय प्यारी।कातिककी शरद रैनि
चंद्रकी उजारी ॥ पवन मंद मंद चलत फूली फुल वारी । विकसे
सर कमल फूले शोभा अतिभारी ॥ झरना चहुँओर झरत यमुना
सुखकारी । आनँदकी रैनि जान मुरली मुखधारी ॥ लेलेके नाम
सकल टेरी ब्रजनारी ॥ सुनके धुनि भवन त्याग धाई सुत डारी ॥
उलटे तनुचीर पहर आई मिल सारी । वीणा मृदग चंग बाजत
करतारी ॥ दास सुखानंद प्यारे चरणन बलिहारी ॥ १८९ ॥

राग कल्याण ।

प्यारी मैं ऐसे देखे श्याम ॥ बांसुरी बजावत गावत कल्याण ॥
कदंबकीमें ठाढी भैयां सुध बुध भूल गयां छौने जैसे जादूडारा भूले

मोसे काम ॥ जब धुन कान पैया देहकी ना सुध रहिया तन मन हर लीनो विरहोंवाले कान्ह॥ मीराबाई प्रेम पाया गिरिधर लाल ध्याया देह सो विदेह भैयाँ लागो पग ध्यान ॥ १९० ॥

राग विहाग ।

निशि काहेको वन उठ धाई। हँस हँस श्याम कहत हो सुंदरि की तुम व्रज मारगहि भुलाई॥ गई रही दधि वेचन मथुरा तहां आज अब देर लगाई। अति भ्रम भयो विपिन क्यो आई मारग वह कह सवन वताई॥जाहु जाहु गृह तुरत युवतिगण खीझत गुरुजन लोग लुगाई । की गोकुलते गमन कियो तुम इन वातन कछु नाहिं भलाई॥ यह सुनिके व्रज वाम चकित भई कहा करत गिरिधर चतुराई। सूर नाम लैले सवहिनको मुरली वारंवार वजाई ॥ १९१॥

राग प्रभाती ।

सानू मुड घर वंजन कह्यो वे श्यामां। सांई सांई वै करे दया सारा जग वे ठगे दया असां माप्यांते चोरी इकन्योहडा लगाया, यमुना किनारे श्यामां ॥ वचन की तोई जब चीर हमारे हरें वे श्यामां ॥ यमुना किनारे श्यामां धेनु चराइया जब मुरलीकी धुनक सुनाइया वे श्यामां॥ सूरके स्वामी प्रभु शरण तिहारी अब लज्जा हमारी राखो वे श्यामां ॥ १९२॥

राग कान्हरा ।

कैसे रास रसहि मैं गाऊँ। श्रीराधिका श्यामकी प्यारी तुम्हरी कृपा वास व्रज पाऊ ॥आनदेव स्वपने नहि जानू दंपतिको शिर नाऊ। भजन प्रताप चरण महिमा ते गुरुकी कृपा दिखाऊ ॥ वृंदावन वीथिन यमुना तट आनंदकुटी छवाऊ। सूरदास प्रभु तिहारे मिलनेको वेद विमल यश गाऊँ॥ १९३ ॥

महारानी श्री राधे रानी । जाके बल मैने सवते तोरी लोक वेद कुलकानी ॥ प्राण जीवनधन लाल विहारीको, वार पीवत हैं पानी। भगवत रसिक अनन्य सहायक सब ऊपर सुखदानी ॥ १९४॥

परम धन राधे नाम अधार ।जाहि श्याम मुरलीमें टेरत सुमिरत वारंवार ॥ यंत्र मंत्र और वेद तंत्रमे सभी तारको तार । श्रीगुरु प्रकट कियो नहिं याते जानि सारको सार ॥ कोटिन रूप धरै नँदनंदन तऊ न पाया पार । व्यासदास अब प्रकट वखानत डार भारमे भार ॥ १९५ ॥

राग देश ।

रच्यो श्रीवृंदावन रास गोविंद । चलो सखी देखन चलिये नवल अनंद ॥ यमुनाके नीरे तीरे शीतल सुगंध । त्रिविध पवन डोलै अति गति मंद ॥ खंजरी सरंगी बाजे ताल मृदंग । वीण उपंग मुरली मोहर मुहचंग ॥ भालमे तिलक सोहै मृगमद रेख । रली मनोहरजीको नटवर भेख ॥ ब्रह्मा देखे विष्णु नारी नरेश । देखन आये शंभु गौरी गणेश॥ वृंदावन माहिं रच्यो रास विलास । गुण गावे स्वामी माधुरी दास ॥ १९६ ॥

राग केदारा ।

सुनि धुन मुरली वैन बाजे हरि रास रच्यो । कुंज द्रुम बेली प्रफुलित मंडल कंचन मणिन रच्यो ॥ नितंत युगल किशोर युवतिजन रासमें राग केदार रच्यो । हरिदासके स्वामी श्यामा कुंजविहारी नीकेही आज गोपाल नच्यो ॥ १९७ ॥

कवित्त ।

तालन पै ताल पै तमाल पै मालन पै वृंदावन वीथिन विहार वंसीवटपै। छितिपै छवाननपै छाजत छटाननपै ललित लताननपै लाडिलीकी लटपै ॥ कहै पदमाकर अखंड रास मडलपै मडत

उमंड महाकालिंदीके तटपै ॥ कैसी छबि छाई आज शरद जुन्हाई आली जैसी छबि छाई या कन्हाईके मुकुट पै ॥ १९८ ॥

सवैया ।

शूकर ह्वै कब रास रच्यो अरु वामन ह्वे कब गोपी नचाई । मीन ह्वे कौनके चीर हरे कछुवा ह्वै कब वीन बजाई ॥ होय नृसिंह कहो हरि जू तुम कौनकी छातिन रेख लगाई । वृषभानु-सुता प्रगटी जबते तबते तुम केलि कलानिधि पाई ॥ १९९ ॥

राग पीलू ।

ठाढी रहरी लाड गहेली मैं माला सुरझाऊं । नकवेसरकी ग्रथि जो ढीली ताहू सुभग वनाऊँ ॥ एरी टेढी चाल छॉड मैं सूधी चलन सिखाऊँ । वृंदावन हित रूप फूलकी माल रीझ जो पाऊँ ॥ २०० ॥

प्रीतम रहे पिया मन लीये प्रिया रहे मन पीको । सखी रहैं दोउ अन मन लीये रंग बढे नित हीको ॥ कानन छबि ते नये दिखावे प्राण बढे नित हीको । वृंदावन हित रूप विहारन सकल त्रियन शिर टीको ॥ २०१ ॥

सवैया ।

सोनजुहीकी बनी पगिया रु चमेलीको गुच्छ रह्यो झुकि न्यारो। दो दल फूल कदंबके कुंडल सेवती जामाहु घूम घुमारो ॥ नौ तुलसी पटुका घनश्याम गुलाव हजार चमेलीको न्यारो । फूलन आज विचित्र वन्यो देखो कैसो शृङ्गारच्योहे प्यारीने प्यारो॥२०२॥

सारी सॅवारी हे सोनजुही अरु जूहीकी ताप लगाई किनारी। पंकजके दलको लहिगा अँगिया गुलाबासकी शोभित न्यारी ॥ चमेलीको हार हमेल गुलाबकी मोरकी वेंदी दै भाल सॅवारी । आज विचित्र सॅवारिके देखिये कैसी शृङ्गारी है प्यारेने प्यारी२०३

राग पीलू ।

संग चली ब्रजबाल लाल करतालन लै लै जोरी । लाई गति मृदंग उपजाई झाई वन घनघोरी ॥ ततथेई थुमकिट ततथेई यह धुन सुनले जोरी । वल्लभ रसिक विहारी प्यारी प्यारी तान झकोरी ॥ २०४ ॥

कवित्त ।

माथे पै मुकुट देख चंद्रिका चटक देख छविकी लटक देख रूप रस पीजिये । लोचन विशाल देख गरे गुञ्जमाल देख अधर सुलाल देख चित्तचौंप कीजिये ॥ कुण्डल हलन देख अलकें वलन देख पलकें चलन देख सरवस दीजिये । पीतांवर छोर देख मुरलीकी घोर देख सांवरेकी ओर देख देखवो ही कीजिये ॥ २०५ ॥

राग पीलू ।

भाग्यवान वृषभानु सुतासी को तिय त्रिभुवन माही । जाको पति त्रिभुवन मनमोहन दिये रहत गल बाही ॥ ह्वै अधीन संगहि संग डोलत जहां कुँवारि चल जाही । रसिक लख्यो जो सुख वृन्दावन सो त्रिभुवनमें नाही ॥ २०६ ॥

कवित्त ।

वृन्दावन धाम नीको ब्रजको विश्राम नीको श्यामा श्याम नाम नीको मदिर अनंदको । कालीदह न्हान नीको यमुनाको नीर नीको रेणुकाको खान नीको स्वाद नीको कंदको ॥ राधाकृष्ण कुंड नीको संतनको सग नीको गोरश्याम रंग नीको अग शुग चंदको । नील पीत पट नीको वसीवट तट नीको ललितकिशोरी नीकी नट नीको नंदको ॥ २०७ ॥

भृकुटी तनीको नकवेसर वनीको लट नगन फनीको लखि फूल्यो कंज फीको है । मैनकी मनीको नैनवानकी अनीको चोखे

सैन रजनीको हाँस हुलसन हीको है ॥ रूप रानीको कैधो रमारमनीको गज-गती गमनी कैधो सिंधु मूर जीको है।वेनीवद नीको मृदुहास फंद नीको मुख चंदहूसे नीको वृपभानुनदलीकोहै॥२०८॥

छन्द।

जैसी है मृदु पटकन चटकन कटतारनकी। त्रियतन मोरमुकुटकी लटकन कल कुडल हारनकी॥ सॉवरे पिय संग निर्तत व्रजकी चंचल वाला। मानो घन मडल मंजुल खेलत दामिनिसी वाला॥ २०९॥

सवैया।

मडल रासविलास महारस मंडल श्रीवृपभानु दुलारी। पंडित कोक सॅगीत भरी गुण कोटिन राजत गोपकुमारी॥ प्रीतमके भुजदंडमे शोभित संगमें अंग अनगनवारी।तान तरंगन रंग वढ्यो ऐसे राधिका माधवकी वलिहारी॥ २१०॥

जामा वन्यो जरी तासको सुन्दर लाल सुवद रुजर्द किनारी। झालरदार वन्यो पटुका अरु मोतिनकी छवि जात कहा री॥जैसि कि चाल चलै गजराज कहें वलिहारी है मौज तिहारी॥ देखत नैनन ताक रही झुक झॉक झरोखन वॉकेविहारी॥ २११॥

कवित्त।

सुदर सुजान कान्ह सुन्दर है पाग शीश सुन्दरसे नैन धर सुन्दर वॅसुरिया। सुन्दरसी भ्रूकमान सुन्दर पलक वान सुन्द्र मुसक्यान चितवन चितहरिया। सुन्द्र वाजूबद राजे सुन्द्र वनमाल साजे सुन्द्र गलहार मोती जामो जो केशरिया। सुन्द्र कंकन अमोल सुन्द्र कुंडल कपोल सुन्द्र नारायण बोल दीन दर्द हरिया॥२१२॥ वारि डारो शरदइंदु मुखछवि गोविंद पे दिनेशहु वारि डारो नखन छटान पर। कोटिकाम वारि डारो अग अग श्याम लखि वारि

डारों अलि आलि कुञ्चित लटान पर। नैननकी कोरनपें कँजहूको वारि डारो वारि डारों हंसहूको चाल लटकान पर। देख सखी आज ब्रजराज छबि कहा कहूं कामधेनु वारि डारों भ्रुकुटीमटान पर ॥ २१३ ॥ नैनन चकोर मुख चन्द्रहूको वारि डारो वारि डारो चित मनमोहन चितचोर पै। प्राणहूको वारि डारो हसन दशन लाल हेरन कुटिल वाके लोचनकी कोर पै ॥वारि डारों मैन रंग अंग अंग श्याम श्याम हिलन मिलन रस रासकी झकोर पै। अतिही सुघर वर सोहत त्रिभगी लाल सर्वहू वारि डारो ग्रीवाकी मरोर पै ॥ २१४ ॥ मुकुट के रंगन पै इन्द्रको धनुष वारो अमल कमल वारो लोचन विशाल पर । कुण्डलप्रभापै कोटि प्रभाकर वारि डारों कोटिकमदन वारों वदनरसाल पर ॥ तनुकी तरुण पर नीरद सजल वारो चपला चमक उर मोतिनकी माल पर । चाल पै मराल वारों मनहूको वारि डारों और कहा कहा वारो छवि नंदलाल पर ॥ २१५ ॥

राग जैजैवंती ।

आवरी बावरी ऊजरी पाग पै मेलके बाँध्यो है मंजर चोटा। चंचल लोचन चाल मनोहर आन्यो अबे गहि खजन जोटा ॥ देखत रूप ठगोरीसी लागत ऐन मैन मानो कमलके जोटा । नंददास रस रास कोटिन वारी आज बन्यो ब्रजराजको ढोटा ॥ २१६ ॥

राग बिलावल।

आली री रासमंडल मध्य निरतत मदन मोहन अधिक प्यार लाडिली रूप निधान । चरण चारु हँसत भेद मिलवत गति भाँति भाँति भ्रविलास मंद हास लेत नयननहीमें मान ॥ दोऊ

मिलि राग अलापत गावत होडा होडी उघटत देकर तारी तान। परमानंद निरख गोपीजन वारतहे निज प्रान ॥ २१७॥

राग भैरवी।

निरतत गोपाल सग राधिका वनी। वाहुदंड भुजन मेलि मंडल मध्य करत केलि सरस गान श्याम करें संग भामिनी॥ मोरमुकुट कुण्डल छवि काछनी वनी विचित्र झलकत उरहार विमल थकित चाँदनी। परममुदित सुर नर मुनि वर्षत सव कुसुममाल वारत तन मन प्राण कृष्णदास स्वामिनी ॥ २१८ ॥

राग झंझोटी।

गोपी गोपाल लाल रास मंडल माहीं। ताताथेई ता सुघंग निरतत गहि वाही ॥ द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम मृदग छन नन नन रूप रंग दगता दगता लतंग उघटत रसनाई। वीच लाल विच वाल प्रति प्रति अति द्युति रसाल अविगत गति अति उदार निरखि दग सराही ॥ श्रीराधा मुख शरद चद पोछत जल श्रम अनन्द श्रीव्रजचन्द लटक करत मुकुट छाही ॥ तत्तत तत सुघर गात स्वरिगम पदनी ग ठाठ और पदहि प्रलाद दांप दंपति अति सादही। गावत रस भरे अनंद तान तान सुर अभंग उमँगत छवि अति अनन्द रीझत हरि रावही ॥ छाये देवन विमान देखत सुर शक्र भान देवांगन निधान रीझि प्राण वारही । चकित थकित यमुना नीर खग मृग जग मग शरीर धन नन्दके कुमार वलि वलि जाय सूरदास रास सुख तिहारही ॥ २१९ ॥

राग देश।

लालको नाचन शिखवत प्यारी। जैसोइ सुभग वन्यो श्रीवृंदावन तेसी शरद उजियारी ॥ मान गुमान लकुट लिये ठाढी

डरपत कुंजबिहारी । थेई थेई करत लाल, मनमोहन उरप तुरप गति न्यारी ॥ वंशीवट यमुना तट, कुंजन रहस रच्यो गिरिधारी । कोउ मृदंग कोउ वीण बजावत कोई हँसत दै तारी ॥ छविसो गावत खडी नचावत रोम रोम बलिहारी। देख देख ब्रह्मादिक नारद अचरज सोच विचारी ॥ व्यास स्वामिनी सो छबि निरखत रीझ देत करतारी ॥ २२०. ॥

राग काफी।

देखो री या मुकुटकी लटकन । निरतत रास लिये राधा संग वैजती बेसरकी अटकन॥पीतांवर छुटि जात छिनै छिन नूपुर शब्द पगनकी पटकन। सूर श्यामकी या छवि ऊपर झूँठो ज्ञान योगको भटकन ॥ २२१ ॥

राग विहाग।

आज वनवारी बन्योहै मुरारी। सखी कुञ्जविहारी गिरिधारी सँग सोहे राधा प्यारी वृषभानुकी दुलारी ॥ दोनो मिलकर निरत करत हैं राधा अरु गिरिधारी । मोरको मुकुट धारी चंदनकी खोर न्यारी भ्रुकुटी कुटिल अलकें घूँघरवारी ॥ टेढी चितवन प्यारी नासिका मोती सँवारी मुरली अधर सप्त सुरन उचारी । मोहिं लीनी ब्रजनारी देहकी दशा बिसारी दया सखी पाँयन परके लीनी बलिहारी ॥ २२२ ॥

राग रेखता।

नाचै छली छबीला नँदका कुमार है।गल बाहिं दै पियाके सुन्दर शृङ्गार है॥इत मद मंद झीनी नूपुर अवाज है। उत पायजेब पायल घनकीसी गाज है ॥ पगिया लसी कुँवरके शिरपेंच लाल है ॥ भ्रुकुटी लगी ललोई प्यारीके भाल है ॥ कटि काछनी सुचोली पट्टुका किनारका । कानो जडाऊ झुमका गल हीर हार है ॥ दा-

मिनि सुरंगी सेला कीरति कुमारिका।मोतिनकी माल सुन्दर शोभा अपार है॥गुजा गले गुनीके तर गुजमाल है। छतियां लगी ललासो बंसी रसाल है ॥ नासा बुलाक बेसर माथेपै मुकुट सोहै। दोनो झुके परस्पर छबि वेशुमार है ॥ प्यारीके नख छटापर रवि चंद्र कोटि मोहै। केशव खड़ा विलोकै प्राणन अधार है ॥ २२३॥

मानलीला ।

राग सोरठ

चलो तो बताऊँ विहारीजी म्हारे महलों फूली है केशर क्यारी। अतिसुन्दर बहुत अमोलक रंग रँगीली है छे बारी॥ यो मत जानो झूठ कहत है म्हाने सौंह तिहारी । ब्रजनिधि तुमसों लगन लगी है प्रीति पुरातन यारी ॥ २२४ ॥

राग कान्हरो ।

लालन मेरेही आये आज सुहावनी रात । तन मन फूली अग ना समावत कुजन करत बधाये ॥इक रसना गुण कहँ लग वरणो नखशिख रूप मेरे हीयमें समाये। गिरिवरधर पिय रस वश कर लीनो कृष्णदास वलिजाये ॥२२५ ॥

राग कान्हरो ।

एजी अब तो जान न दूंगी शकुन भलेजी ॥ बहुत दिनन मेरे घर आये कर राखो उर हार । श्यामसुन्दर पिया अतिही रँगिलवा सॉची तो कहो तुम काके वसोजी ॥ २२६ ॥

राग कमोद ।

वारियांवे लाल वारियां ॥ तुसां आमनां फेरा पामनां कुञ्ज हमारियां ॥ कौन सखीके तुम रँग राते हमसे अधिक प्यारियां॥ ऊँची अटारियांते लाल किवारियां तक रहियां वाट तिहारियां ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर या छवि पर वलिहारियां ॥२२७ ॥

राग दादरा ।

सखी नँदलाल आवन नहि पावैं।भीतर चरन धरन जिनदीजो चाहे जिते ललचावे ॥ ऐसेनको विश्वास कहाँ री कपटकी बात बनावैं।नारायण इक मेरे भवन विन अन्त चाहे जहां जावैं ॥२२८॥

राग झन्झोटी ।

मोहिं मत रोके तू एरी ब्रज नागरी । रूपकी निधानहै तू सभी गुणखानहै तू तेरे सम कौन आज तेरो बडो भाग री ॥ कहे तो मैं नृत्य करूं बांसुरीमें राग भरूं कान्हरो केदारो भैरव सोरठ बिहाग री। तू तो सदा उपकारी हितहूकी करनहारी आज नारायण मोसों क्यों राखे लाग री ॥ २२९ ॥

सवैया ।

द्वारके द्वेरिया पौरिके पौरिया पैहरुवा घरके घनश्याम हैं। दासके दास सखीनके सेवक पारपरोसनके धनधाम हैं॥ श्रीधर कान्ह कह्यो सुन भामिन मानभरी नहिं बोलत बामहैं॥ चूक अचूकहि माफ करो वृषभानुललीके गलीके गुलामहैं ॥ २३० ॥

राग पंचम ।

जागत जागत रैनि बिहानी। कहि गये साँझ आवन मेरे गृह बसे अनत अनते रति मानी॥उर बिच नख क्षत प्रगट देखियत यह शोभा अति बानी। भाल महावर अधरन अंजन पीककपोल निशानी॥निशि मग जोवत बीती मोको आये प्रात यह जानी । चतुर्भुज प्रभु गिरिधर सिधारो तहां जो तुम्हरे मन मानी॥२३१॥

राग ठुमरी खम्माच ।

प्यारे तेरे जियाकी न जानी जात बात रे। कहूं तो सांझ आधीरात रहत कहूं पिछलीरात कहूंप्रात रे॥ उनही सों जाओ बतराओ

सुख पाओ तुम जिन यह सिखाये दाँव घात रे । अब तोसो भूल न बोलू नारायन जहाँ गल अपनी बसात रे ॥ २३२ ॥

राग देश ।

अब आये प्रात क्यो मेरे धाम । तुम जाओ जहां जाके ज हो याम । वश किये तुम्हे सो धन धन्य बाम ॥ पग धरत धरन डगमगात मुख वचन कहत तुतरात जात कत भूल परे इत कौ काम ॥ अंजन अधरन पर पीक गाल जावक है भाल दोउ नय लाल विन गुनकि माल कहाँ पहरी श्याम ॥ तुम्हरे जि भावत है जो वाल मै परखी रसिक बिहारीलाल अब की पिया वा घर आराम ॥ २३३ ॥

राग भैरव ।

सांची कहो रँगीले लाल । जावकमें कहाँ पाग रंगाई रंग जिन कोइ मिलि है ग्वाल ॥ वदन रंग कपोलन दीये अरुण अध भये श्याम तमाल । माला कहाँ मिली विन गुनकी नखशिख देखत भई विहाल ॥ जिन तुम्हरे मन इच्छा पुजई धन्य धन्य पिया धन वै वाल । सूर श्याम छवि अद्भुत राजत यही देख मोको जंजाल ॥ २३४ ॥

राग रामकली ।

आज हरि रैनि उनींदे आये । अंजन अधर ललाट महावर नयन तमोर खवाये ॥ शिथिलत वसन मरगजी माला कंकन पीठ सुहाये । लटपटी पाग अटपटे भूषण विनु गुन हार बनाये ॥ शिथिल गात अरु चाल डगमगी भ्रुकुटी चंदन लाये । सूरदास प्रभु यही अचंभो तीन तिलक कहाँ पाये ॥ २३५ ॥

इत उत बहलायो पुनि तोहू मन धीर ना धरत है। एतो हठ आगे कब कीयो नारायण जेतो हठ आज तू करत है॥ २४४॥

राग जोगिया।

सांची कहो किधों हांसी करो जी । आज कहा कारण जो मोसो वेर बेर कहो यहांसे टरो जी॥ कौन सखी कित में घर वाको तुम जाको मोहि दोप धरो जी। नारायण यह अचरज मोको झूंठ कहत नहि नेक डरो जी॥ २४५॥

राग जंगला।

राधा प्यारी तोहि मनावन आयो । जबते तू निकसी मंदिर ते मोहि न कछू सुहायो॥ भीतर वाहर द्वार पौरि लौ राधा नाम न पायो । किशोरी गोपालकी यह इक विनती हाहा करत हरायो॥ २४६॥

राग पीलू।

राधा प्यारी बात सुनो इक मोरी। मैं आयो चाहतहों तुम पै बीच लियो उन घेरी॥ जतन अनेक विनती कर हार्‌यो कैसे जात न फेरी। परवश पर्‌यो दास परमानद काहि सुनावो टेरी॥ २४७॥

राग भूपाली।

बिनती कुँवरि किशोरी मेरी मान मान मान। विन चूक मोते मान की मत ठान ठान ठान ॥ काहेको बैठी श्यामा भौंहे तान तान तान। तू ही तो मेरे जीवन धन प्रान प्रान प्रान॥ मेरे हिया कि पीरको तू जान जान जान । जन जान रसिक लीजै दीजै दान दान दान॥ २४८॥

राग विहाग।

एतो श्रम नाहिन तबहु भयो। सुन राधिका जेतो श्रम मोको ते यह मान दयो॥ धरणीधर विधि वेद उधारे मधु से शत्रु हयो।

द्विज नृप किये दुसह दुख मेटे बलिको राज्य लियो ॥ तोरचो धनुष स्वयंवर कीनो रावण अजित जयो। अघ बक बच्छ अरिष्ट केशि मथि दावानल अँचयो ॥ त्रिय वपु धरचो असुर सुर मोहे को जग जो न दयो। गुरुसुत मृतक ज्यायवे काजे सागर शोध लियो ॥ जानूं नही कहा या रिसमे सहजहि होत नयो। सूरसो बल अब तोहि मनावत मोहि सब बिसर गयो ॥ २४९ ॥

राग पूरबी।

हमसे रूठ रहत क्यो प्यारी। कित मुख फेर फेर दृग बैठो कौन चूक वृषभानु दुलारी ॥ गयो सखन सँग मै यमुना तट जहँ जल भरत रही ब्रजनारी। मोते कहन लगी गागर भर लालन देहु उठाय हमारी ॥ मै न सुनी जब कही सबन मिल लेगी समझ तुम्हें बनवारी। देहे मान कराय राधिका सो सब दई आय दरशारी ॥ जो वै कहत करत हो सोई तुम समझत नहि भोरी भारी। एककी सात लगाय सुनावत झूठी ग्वालन रसिक बिहारी ॥ २५० ॥

राग खम्माच।

इक अरज हमारी सुन भानकी दुलारी मान तज कीरति-कुमारी प्यारी हो। ऐसी चूक क्या किशोरी मोते सांची कहदेवजी काहेको बैठी मुख मोरी जीकी ज्यारी हो ॥ कृपा अब कीजे लाय उर लीजे अधर रस पीजे दीजे दुख टारी हो। कहे रसिकबिहारी चरण शिर धारी कुँवरि सुखकारी तू तो भोरी भारी हो ॥२५१॥

राग भूपाली।

हमते न प्राणप्यारी मुख मोरिबो करो। वृषभानुकी दुलारी चित चोरिबो करो ॥ कछु दोष नाहि मेरो री क्यो मान कीजिये। रजनी विहात सजनी री रिस छांडि दीजिये ॥ मोतन निहार

गोरी मैं तो हूं शरण तोरी। आननहै चंद्र तेरो री लोचन मेरे चकोरी॥ कीजे कृपा किशोरी दीजे अधरसुधा री। लीजे लगाय अपने री हिरदे रसिकविहारी॥ २८२॥

राग देश।

तुम सुनो राधिका विनय कान। नहि सोहत मान तजिये सुजान॥ अव करो कृपा जन अपनो जान। ऐसी काहेको रही हो मोन ठान॥ मेरे तू ही है जीवन अधार अव वेगि मिलो नहि जात प्रान॥ तुम देहु वात मोको वताय प्यारी जाते अब गइ रिसाय अपराध कौन कहो गुणनिधान। सुनि रसिकविहारीजूकी वात मेरे आनंद उरमें नही समात हँसि मिलिये कंठमें डारि पान॥२८३॥

राग धनाश्री।

सांची कहो के प्यारी हांसी। काहेको इतनी रिस पावत कत होत तुम उदासी॥ पुनि पुनि कहत कहा तवहीं ते कहाँ ठगीसी ठाढी। इकटक चितै रही हिरदे तन मानो चित्र लिखि काढी॥ समझी नहीं कहा मन आई मदन त्रसे तू आगे। सूर श्याम अति भये आतुर भुजा गहन तब लागे॥ २८४॥

लावनी।

उठो अव मान तजो गोरी। रही है रैनि वहुत थोरी॥ सदासो तुम मनकी भोरी। कहूं मे शपथ खाय तोरी॥ दोहा—औरनके वहँकावते, करि वैठतहो रोप। झूठ सांच परखत नही, वृथा देत हो दोष॥ यही मोहिं अचरज है भारी। तनक हँस चितवो सुकुमारी॥ शशि मुखपै हौं वलिहारी॥ दोहा—अपनी ओर निहारके, देहु अभय वरदान। क्षमा करो सव चूकअव, जो कछु भई अजान॥ इतनी विनती मानो मोरी। तिहारे गुण नितप्रति गाऊं। विना आज्ञा न कहूं जाऊं॥ दोहा—ताहू पै दृग अरुण कर, भ्रुकुटी

लेत चढाय । जोरावर सो निबल की, काहू विधि न वसाय ॥ हारे हू हार जीते हू हार ॥ जिन्हें तुम समझो हितकारी । सोई अति कपटी व्रजनारी । दोहा—हममें फूट करायके, आप अलग मुसक्यात । नारायण तुमने करी, खरी न्यावकी बात ॥ भलेको दंड बुरे पे प्यार ॥ २९५ ॥

राग बिहाग ।

तनक हँस हेरो मेरी ओर । हम चितवत तुम चितवो नाही काहे भई हो कठोर ॥ निशिदिन तुम्हरोही नाम रटत हो चातक ज्यों घन घोर ॥ कृष्ण प्रिया दर्शनके लोभी जैसेचंद्र चकोर ॥२९६ ॥

सवैया ।

एक समै व्रजकुंजनमें री नाचत ग्वाली सभी दय तारी॥नाचत चन्द्रभगा ललितादिक नैनकी सैनसो ताल विचारी ॥ वा रिस धार लियो जियमें उन रूठ परी वृषभानुदुलारी ॥ मैं ना कह्यो कछु जान उन्हे तुम लावो मनायके प्यारी हमारी ॥ २९७ ॥

गुर्जरीरागेण प्रतिमंठताले गीयते ।

मामिय चलिता विलोक्य वृत वधूनिचयेन ॥ सापराधतया मयापि न वारितातिभयेन॥ हरि हरि हतादरतया गता सा कुपितेव ॥ध्रु० ॥ किं करिष्यति किं वदिष्यति सा चिरं विरहेण ॥ किं जनेन धनेन किं मम जीवितेन गृहेण ॥ हरि हरि० ॥ चिंतयामि तदानन कुटिलभ्रुरोपभरेण॥शोणपद्ममिवोपरिभ्रमताकुल भ्रमरेण॥ हरि हरि०॥ तामहं हृदि सगतामनिशं भृशं रमयामि॥किं वनेनुसरामि तामिह किं वृथा विलपामि ॥ हरि हरि० ॥ तन्वि खिन्नमसूयया हृदयं तवाकलयामि ॥ तन्न वेद्मि कुतो गतासि न तेन तेनुनयामि ॥ हरि हरि० ॥ दृश्यसे पुरतोगता गतमेव मे विदधासि ॥ किं पुरेव स सभ्रम परिरभणं न ददासि॥हरि हरि० ॥ क्षम्यतामपर

गोरी मैं तो हूं शरण तोरी । आननहै चंद्र तेरो री लोचन मेरे चकोरी ॥ कीजै कृपा किशोरी दीजै अधरसुधा री ।लीजै लगाय अपने री हिरदे रसिकविहारी ॥ २५२ ॥

राग देश ।

तुम सुनो राधिका विनय कान ।नहिं सोहत मान तजिये सुजान॥अब करो कृपा जन अपनो जान । ऐसी काहेको रही हो मौन ठान ॥ मेरे तू ही है जीवन अधार अब वेगि मिलो नहि जात प्रान ॥ तुम देहु बात मोको बताय प्यारी जाते अब गइ रिसाय अपराध कौन कहो गुणनिधान । सुनि रसिकविहारीजूकी वात मेरे आनँद उरमें नही समात हँसि मिलिये कंठमें डारि पान ॥२५३॥

राग धनाश्री ।

सांची कहो कै प्यारी हांसी । काहेको इतनी रिस पावत कत होत तुम उदासी ॥ पुनि पुनि कहत कहा तबही ते कहाँ ठगीसी ठाढी । इकटक चितै रही हिरदे तन मानो चित्र लिखि काढी॥ समझी नही कहा मन आई मदन त्रसै तू आगे । सूर श्याम अति भये आतुरे भुजा गहन तब लागे ॥ २५४ ॥

लावनी ।

उठो अब मान तजो गोरी।रही है रैनि बहुत थोरी ॥ सदासो तुम मनकी भोरी । कहूं मैं शपथ खाय तोरी ॥ दोहा—औरनके वहँकावते, करि बैठतहो रोप । झूठ सांच परखत नही, वृथा देत हो दोप॥यही मोहिं अचरज है भारी।तनक हँस चितवो सुकुमारी ॥ शशि मुखपे हो वलिहारी ॥ दोहा—अपनी ओर निहारके, देहु अभय वरदान । क्षमा करो सव चूकअब, जो कछु भई अजान॥ इतनी विनती मानो मोरी । तिहारे गुण नितप्रति गाऊं । विना आज्ञा न कहूँ जाऊं ॥ दोहा—ताहू पै हग अरुण कर, भृकुटी

लेत चढ़ाय । जोरावर सो निवल की, काहू विधि न वसाय ॥ हारे हू हार जीते हू हार ॥ जिन्हे तुम समझो हितकारी । सोई अति कपटी ब्रजनारी । दोहा—हममे फूट करायके, आप अलग मुसक्यात । नारायण तुमने करी, खरी न्यावकी वात ॥ भलेको दंड बुरे पै प्यार ॥ २५५ ॥

राग विहाग ।

तनक हँस हेरो मेरी ओर । हम चितवत तुम चितवो नाही काहे भई हो कठोर ॥ निशिदिन तुम्हरोही नाम रटत हो चातक ज्यों घन घोर ॥ कृष्ण प्रिया दर्शनके लोभी जैसेचंद्र चकोर ॥२५६ ॥

सवैया ।

एक समै ब्रजकुंजनमे री नाचत ग्वाली सभी दय तारी॥नाचत चन्द्रभगा ललितादिक नैनकी सैनसो ताल विचारी ॥ वा रिस धार लियो जियमे उन रूठ परी वृषभानुदुलारी ॥ मैं ना कह्यो कछु जान उन्हे तुम लावो मनायके प्यारी हमारी ॥ २५७ ॥

गुर्जरीरागेण प्रतिमंठताले गीयते ।

मामियं चलिता विलोक्य वृत वधूनिचयेन ॥ सापराधतया मयापि न वारितातिभयेन॥ हरि हरि हतादरतया गता सा कुपितेव ॥ध्रु० ॥ किं करिष्यति किं वदिष्यति सा चिर विरहेण ॥ किं जनेन धनेन किं मम जीवितेन गृहेण ॥ हरि हरि० ॥ चिंतयामि तदानन कुटिलभ्रुरोपभरेण॥शोणपद्ममिवोपरिभ्रमताकुल भ्रमरेण॥ हरि हरि०॥ तामहं हृदि संगतामनिशं भृशं रमयामि॥किं वनेनुसरामि तामिह किं वृथा विलपामि ॥ हरि हरि० ॥ तन्वि खिन्नमसूयया हृदय तवाकलयामि ॥ तन्न वेद्मि कुतो गतासि न तेन तेनुनयामि ॥ हरि हरि० ॥ दृश्यसे पुरतोगता गतमेव मे विदधासि ॥ किं पुरेव स सभ्रम परिरंभण न ददासि॥हरि हरि० ॥ क्षम्यतामपर

गोरी मैं तो हूं शरण तोरी। आननहै चंद्र तेरो री लोचन मेरे चकोरी ॥ कीजे कृपा किशोरी दीजै अधरसुधा री।लीजे लगाय अपने री हिरदे रसिकविहारी ॥ २८२ ॥

राग देश।

तुम सुनो राधिका विनय कान।नहिं सोहत मान तजिये सुजान॥अब करो कृपा जन अपनो जान। ऐसी काहेको रही हो मौन ठान॥ मेरे तू ही है जीवन अधार अब वेगि मिलो नहि जात प्रान ॥ तुम देहु बात मोको बताय प्यारी जाते अब गइ रिसाय अपराध कौन कहो गुणनिधान।सुनि रसिकविहारीजूकी बात मेरे आनंद उरमें नहीं समात हँसि मिलिये कंठमें डारि पान॥२८३॥

राग धनाश्री।

सांची कहो के प्यारी हांसी। काहेको इतनी रिस पावत कत होत तुम उदासी॥ पुनि पुनि कहत कहा तबही ते कहॉ ठगीसी ठाढी। इकटक चितै रही हिरदे तन मानो चित्र लिखि काढी॥ समझी नही कहा मन आई मदन त्रसै तू आगे। सूर श्याम अति भये आतुरे भुजा गहन तब लागे॥ २८४ ॥

लावनी।

उठो अब मान तजो गोरी।रही है रैनि बहुत थोरी ॥ सदासो तुम मनकी भोरी।कहूँ मैं शपथ खाय तोरी ॥ दोहा—औरनके वहॅकावते, करि वैठतहो रोष।झूठ सांच परखत नही, वृथा देत हो दोष॥यही मोहिं अचरज है भारी।तनक हँस चितवो सुकुमारी ॥ शशि मुखपै हो वलिहारी ॥ दोहा—अपनी ओर निहारके, देहु अभय वरदान।क्षमा करो सब चूक अब, जो कछु भई अजान॥ इतनी विनती मानो मोरी।तिहारे गुण नितप्रति गाऊं। विना आज्ञा न कहूँ जाऊं ॥ दोहा—ताहू पै दृग अरुण कर, भ्रुकुटी

लेत चढ़ाय । जोरावर सो निबल की, काहू विधि न बसाय ॥ हारे हू हार जीते हूँ हार ॥ जिन्हें तुम समझो हितकारी । सोई अति कपटी व्रजनारी । दोहा—हममें फूट करायके, आप अलग मुसक्यात । नारायण तुमने करी, खरी न्यावकी बात ॥ भलेको दंड बुरे पै प्यार ॥ २९५ ॥

राग बिहाग ।

तनक हँस हेरो मेरी ओर । हम चितवत तुम चितवो नाहीं काहे भई हो कठोर ॥ निशिदिन तुम्हरोही नाम रटत हो चातक ज्यों घन घोर ॥ कृष्ण प्रिया दर्शनके लोभी जैसेचंद्र चकोर ॥२९६ ॥

सवैया ।

एक समै व्रजकुंजनमें री नाचत ग्वाली सभी दय तारी॥नाचत चन्द्रभगा ललितादिक नैनकी सैनसो ताल विचारी ॥ वा रिस धार लियो जियमें उन. रूठ परी वृषभानुदुलारी ॥ मैं ना कह्यो कछु जान उन्हें तुम लावो मनायके प्यारी हमारी ॥ २९७ ॥

गुर्जरीरागेण प्रतिमंठताले गीयते ।

मामियं चलिता विलोक्य वृत वधूनिचयेन ॥ सापराधतया मयापि न वारितातिभयेन॥ हरि हरि हतादरतया गता सा कुपितेव ॥ध्रु० ॥ किं करिष्यति किं वदिष्यति सा चिर विरहेण ॥ किं जनेन धनेन किं मम जीवितेन गृहेण ॥ हरि हरि० ॥ चिंतयामि तदाननं कुटिलभ्रुरोपभरेण॥शोणपद्ममिवोपरिभ्रमताकुल भ्रमरेण॥ हरि हरि०॥ तामहं हृदि सगतामनिशं भृशं रमयामि॥ किं वनेनुसरामि तामिह किं वृथा विलपामि ॥ हरि हरि० ॥ तन्वि खिन्नमसूयया हृदय तवाकलयामि ॥ तन्न वेद्मि कुतो गतासि न तेन तेनुनयामि ॥ हरि हरि० ॥ दृश्यसे पुरतोगता गतमेव मे विदधामि ॥ किं पुरेव स संभ्रमं परिरंभणं न ददासि॥हरि हरि० ॥ क्षम्यतामपर

कदापि तवेदृशं न करोमि ॥ देहि सुन्दरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि ॥ हरि हरि०॥ वर्णित जयदेवकेन हरेरिदं प्रणतेन ॥ तिदु विल्वसमुद्रसंभवरोहिणीरमणेन ॥ हरि हरि० ॥ २५८ ॥

राग देश सोरठ।

ललिता राधा नेक मनायदे ॥ मैं बलिजाऊँ नाम तेरे पै दुखमें सुख सरसायदे ॥ तू सजनी अति चतुर शिरोमणि मेरे मनको प्रीति जतायदे । व्यास स्वामिनी रतिगुनगतिले सरवस पियाको रिझायदे ॥ २५९ ॥

राग बरवा।

चलो री क्यो ना माननी कुजकुटीर । तुम विन कुँवर कोटि वनिता युत मथत वदनकी पीर ॥ गदगदसुर विरहाकुल पुलकत स्रवत विलोचन नीर।कासि कासि वृषभानु नंदिनी विलपत विपिन अधीर ॥ बंशी विशद व्याल माला उर पचानन पिक कीर। मलै जो गरल हुताशन मारुत शाखामृग रिपु चीर॥हित हरिवंश परम कोमल चित चली चपल पिय तीर। सुन भयभीत वज्रको पंजर सुरत सूर रणवीर ॥ २६० ॥

राग केदारा ।

जाके दरशको जग तरसत है ताहि दरश तू दे मेरी प्यारी ॥ जाकी मुरलीकी धुनि सुर मोहे ता तन नेक चितै मेरी प्यारी ॥ शिव विरंचि जाको पार न पावत सो तेरे पग परसै री प्यारी।सूर-दास वश तीन लोक जाके सो तेरे वश है मेरी प्यारी ॥ २६१ ॥

राग बिहाग।

अलवेली लख लटक मुकुटकी । मान छाँड़ वृषभानुनंदिनी मान किये क्या नागर नटकी ॥ है कछु सुरत तोही वा दिनकी ।

जब वनमालसो वेसर अटकी। कर गह कमल कमल मुख मोहन मुरझाई तव नेक न हटकी॥ सो मुख लियो छिपाय सुन्दरी नयन ओट कर घूँघट पटकी। नख भौं लिखे सिखे क्या सजनी कौन चहत कछु टोना टटकी॥ कर गहि वाहि मनावत मोहन मानत नाहिं मान मद अटकी। युगल युगलको वदन विलोकत भुज भर भेट मेट तप घटकी॥ २६२॥

राग वरवा॥

मान तज चल सजनी ब्रजचदा बुलावे री। हा हा हठको काम नही है क्यो जीया तरसावे री॥ जो हमरे सँग चलो न भामिनि वह तो आपही आवे री। धन छाया सम जोवन जानो पल छिनमें यह जावे री॥ यमुना निकट कदमकी छैयां गोपीं संग नचावे री॥ मुरलीधर तेरा ध्यान धरत है तेरो ही गुण गावे री॥ २६३॥

राग केदार॥

छाँडदे माननी श्याम संग रूठिवो। रहत तू अलीन जलमीन लौ सुन्दरी करो किन कृपा नव रंग पर टूटिवो॥ वेगि चल वेगि चल जात यामिनि घटत कुजमें केलिकर अमीरस घूटिवो॥ वालकृष्ण दास नवनाथ नदनकुँवर सेज चढ ललन सँग मदन गढ लूटिवो॥ २६४॥

राग देश।

तुम काहेको लाडिली मान करत। वाकी प्रकृति जैसी है तैसी तुम जानो वाके गुण अवगुण कत जियामें धरत॥ ताहीसो कीजिये कोप कुँवरि विन कारण वैठत लर लर तुमसे तो पिया प्यारो नित ही डरत। व्यास स्वामिनी चतुर नारि में तोहि मनावत गई जो हारि कव देखूगी पियासे तोको अक भरत॥ २६५॥

राग जिलेमें ।

तोसी त्रिया नहि भवन भटूरी । रूपराशि रसरासि रसिक वर तोहिं देख नँदलाल लटू री ॥ लेकर गांठ दई जो दृष्टि भर तेरी सुरंग चूँदरी वाको पीतपटू री । नन्ददास प्रभु गिरिधर नागर तू नागरी वे नागर नटू री ॥ २६६ ॥

रैनि गई री प्यारी छाँडो हठे री । सुन वृषभानु कुँवरि हरि तो वश निशिदिन तेरोहि नाम रटे री॥मदन गुपाल निरख नयनन भर वेगि चलो अब काहे नटेरी । दास गोविंद प्रभुकी छवि निरखे प्रीति करेसे तेरो कहा घटे री ॥ २६७ ॥

कवित्त ।

हाहा री हटीली हठ छॉडदे छबीली अली भूले हू न कान्ह आज पान हू न खातहे ॥ तेरी चितवनको चाहतहै गोपाल लाल तजे सब ख्याल प्राण तोहीमें बसात है । मेरो कह्यो मान प्यारी चल देख तू अटारी ठाढे बनवारी अब देर क्यो लगात हे ॥ करके शृंगार तू उतारति है बार बार तू तो इतरात उत रात बीती जात है ॥ २६८ ॥

राग जिलामें ।

तोसी नही कोऊ देखी री हटीली । ज्यो ज्यो मैं अब तोहिं मनावत त्यो त्यो तू होवे अति गरबीली ॥ ऐसे समय बल रोप न कीजै भौंहें कमान तनक कर ढीली । नारायण उठ मिल प्रीतमसो तजदे मानकी वान छबीली ॥ २६९ ॥

राग रेखता ।

इतनो न मान कीजे वृषभानुकी दुलारी । तेरे मनायवेमें मोहिं श्रम भयोहै भारी ॥इतनो०॥प्रीतमको आज तो विन पल छिन न

चैन आवे। नहिं जी लगे भवनमें नहि वनकी छवि सुहावे॥ हँस बोलिबो कहाँको नहि खान पान भावे॥हाथनमें चित्र तेरो पुनि पुनि हिये लगावे॥अति विकल है रह्यो है वह साँवरो बिहारी॥ इतनो०॥ प्यारेके आगे अपने गुणकी मैं कर बड़ाई। तेरे मनायवे को बीरा उठाके आई॥ चल बुद्धि मोमें जितनी तितनी मैं सब लगाई। पै नेकहू न मेरी चतुराई काम आई॥ सब विधिसो राजनीति मे कहके तोसो हारी॥ इतनो०॥ तेरी तो नित बड़ाई सब सखी जन बखाने। प्यारी हियेकी कोमल सपनेहू रिस न जाने॥ यह आज का भयो है बैठी हो भ्रुकुटी ताने। उन सखीजनको कहवो अव कौन साँच माने॥ सब झूँठही वड़ाई भामिन करें तिहारी॥ इतनो०॥ लालनके साथ मिलके वन-शोभा निरख प्यारी। कहुँ सघन ललित छाया कहूँ फूली फुल-वारी॥ जलसो भरे सरोवर झुकरहि द्रुमन की डारी। बोलत अनेक पक्षी वर्णत है छवि तिहारी॥ चल वेग ही सिधारो यह लालसा हमारी॥ इतनो०॥ एरी सुघर सयानी मो विनती मान लीजे। तजके ये मानमुद्रा प्यारे सो हेत कीजे॥ नितही अधर सुधारस हँस हँसके दोऊ पीजे। फिर कर न उनसो रूठो वरदान यही दीजे॥ नारायण याही कारण निज गोद मैं पसारी॥ इतनो०॥२७०॥

राग कान्हरा।

देख री आज नवनागरी वेषधर ललीके छलन हित ललन कैसे सजे॥ पहिर भूषण वसन दृगन कजरा दियो निरखि शृङ्गार सुरवधू मनमें लजे॥ मंद मुसक्यान मग चलत गति ठुमकके मधुर धुनि किंकिणी चरण नूपुर वजे॥ रूप अभिराम नारायण लख श्यामको कौनसी माननी मान जो ना तजे॥ २७१॥

राग कमोद ।

जयति नव नागरी सकल गुण सागरी कृष्ण गुण आगरी दिनन भोरी ॥ जयति हरिभामिनी कृष्णघन दामिनी मत्तगज-गामिनी नव किशोरी ॥ जयति सौभागमणि कृष्ण अनुरागमणि सकल त्रिय मुकुटमणि सुयश लीजे ॥ दीजिये दान यह व्यासकी-स्वामिनी कृष्णसो वहुरि नहि मान कीजे ॥ २७२ ॥

राग विहाग ।

कह्यो क्यों न मानत मेरो । मदनमोहन नव कुञ्जद्वार ठाढ़े पन्थ निहारत तेरो ॥ झगरो करत सव रैनि गँवाई छिन छिन पल पल झेरो । साज शृङ्गार हार अपने लै प्राणदान दे तेरो । अजहूँ समझ शोच री आली और नही कुछ केरो ॥ गोविद प्रभुके हृदयकी कौन मेटै तो विन विरह अंधेरो ॥ २७३ ॥

राग कान्हरो ।

रह री मानिनी मान न कीजे । यह जोबन अंजलिको जल है जो गोपाल मांगै तो दीजे ॥ छिन छिन घटत वढ़त ना रजनी ज्यो ज्यो कला चन्द्रकी छीजे । पूरव पुण्य सुकृत फल कीनो काहे न रूप नयन भर पीजे ॥ सौह करत तेरे पायनकी ऐसे जीवन दशोंदिन जीजे । सूर सुजीवन सफल जगत्को वैरी वांध विवश कर लीजे ॥ २७४ ॥

राग विलावल ।

चलो री ऐसो मान न करिये मानिनी प्यारा आया तोरे वेरे । तूही मान तूही दान तूही रोम रोम रम रही ऐसे नयन भये हेरे ॥ झूठी कहो मोहि शपथ रामकी सांच कर वचन आली मान मेरे । छांडो निठुराई अव मान मेरो कह्यो गुण अवगुण भये तेरे ॥२७५॥

राग कान्हरा।

तू है सखी बडभाग भरी, नँदलाल तेरे घर आवत है। निज कर गूँथ सुमनके गजरे हर्षि तोहि पहरावत है ॥ तू अपनो शृङ्गार करत जब दर्पण तोहि दिखावत है। आनँदकन्द चन्दमुख तेरो निरख निरख सुख पावत है ॥ जाके गुण सब जगत बखानत सो तेरे गुण गावत है। नारायण बिन दाम आज कल तेरेहि हाथ बिकावत है ॥ २७६ ॥

राग कान्हरा। (अंतर दोहा)

मनावत हार परी मेरीमाई ॥ राधे तू बडभागनी, कौन तपस्या कीन। तीनलोकके नाथ हरि, सो तेरे आधीन ॥ शिव विरंचि नारद निगम, जाकी लहत न डीठ।ता हरिसो प्यारी राधिका देदे बैठत पीठ॥अहो लडैते दृग किये, परे लाल बेहाल। कहुँ मुरली कहुँ पीत पट, कहूँ मुकुट बनमाल॥ बिछुरे होय सो फिर मिलें, रूसे लेहि मनाय। मिल्यो रहे औ ना मिलै, तासो कहा बसाय॥ तनक सुहागो डारके, जड कंचन पिघलाय। सदा सुहागिनि राधिका, क्यों न कृष्ण ललचाय॥ मान कियो तै भली करी, कैसो तेरो मान॥ जैसो मोती ओसको, तैसो तेरो मान ॥ तू चटते मट होत नहि, राधे उन मोहि लेन पठाई। राजकुमारी होय सो, जाने के गुरु सीख सिखाई ॥ नँदनंदनको जान महातम, अपनी गरब बडाई। ठोडी हाथ दे चली दूतिका, तिरछी भौंह चढाई ॥ परमानंद प्रभु कहूँगी दुलहैया, तो बाबाकी जाई ॥ २७७॥

राग वसंत।

गूँजेंगे भ्रमरा विराग भरे वन बोलेंगे चातकवा पिक गायके ॥ फुलेंगे केसू कुसुम्भा जहांलो मारेगो काम कमान चढायके॥ बहेगी

सीरी सुगंध मारुत जबहिं लगेगी साखसों साख मिल आयके॥मेरे कहे न चले बाबाकी सौंह ऋतु वसंत लेय जायँगे मनायके ॥२७८॥

राग विहाग।

पहले तो देखो आय माननीकी शोभा लाल पीछे तो मनाय लीजे प्यारे गोविन्द ॥करपर धर कपोल रही है नयनन मूँद कमल बिछाय मानो सोयो है चंद ॥ रिस भरी भौंवां मानो भौंरा बैठे अरवरात इन्दु तरे अरविंद भरचो मकरंद ॥ नंददास प्रभु प्यारो ऐसी न रुठैये बलि जाको मुख देखे ते कटत दुख द्वन्द ॥ २७९॥

राग देश ।

कर नेह नयन लगायके फिर मान करना किन बदा । तज रोष दोष लगायवो सज मोदमें मगल मुदा ॥ अपराध बिन अपराध धरवो सीख तोहें किन दई । धरं ध्यान गहि मुख मौन बैठी मनो कोइ जोगिन नई ॥ रस रीति प्रीति प्रतीति बिसरी कठिन कुच-संगति किये। यह जान अब परसो नहीं लगजाय कहुँ मेरे हिये॥ सुन बैन आतुर नयन फेरे रसिक भगवत यूँ कही । हँस कंचुकी बँद खोल लिपटी मनो घन दामिनि गही ॥ २८० ॥

राग पीलू ।

तूतो मोहिं प्राणनहूँ ते प्यारी । भूले मान न कीजिये सुंदरि हौं तो शरण तिहारी ॥ नेक चितै हँस बोलिये सुन्दरि खोलिये घूँघट सारी। कृष्णदास हित प्रीति रीति वश भरलिये अंकन वारी॥ २८१ ॥

राग भूपाली।

मन मोहनी मन मोहना मन मोहिवो करो । मुखचंद चख चकोरी सदा जोहिवो करो॥ घनश्याम रसिक नागर तू है जो

दामिनी। तज मान अधर पान करो जात यामिनी॥ कछु दोष ना पियाको तू भूल क्यो गई। प्रतिविंव देख आपनो तें पी क्यो दई॥ समझाय कही भगवत जब लाग कानसों। सुखदान उठी आतुर भेटी सुजान सो॥ २८२॥

राग देश।

कुञ्जन पधारो राधे रंग भरी रैन॥ रंग भरी दुलहन रंगभरे पिया श्याम सुन्दर सुखदेन॥रंगभरी सैनी विछी सेजपर रंगभरयो उलहत मैन॥ रसिक विहारी पिय प्यारी जी दोऊ मिल करो सेज सुख शैन॥ २८३॥

राग विहाग।

अव पौढ़नको समय भयो। इत ढुरगई द्रुमनकी छैयाँ उत ढुर चद गयो॥ पौढ़ रहे दोउ सुखद सेज पर वाढ़त रंग नयो। रसिक विहारी विहाग्नि दोउ पौढे यह सुख दृगन लयो॥ २८४॥

द्वितीयमानलीला।

राग कान्हरा।

रैन मोहिं जागत विहानी मोहनसो मै मान कियो ताते भई तनु अधिक तपत॥ सेज सुगन्ध मलय विष लागत पावकहूते दाह सखी री त्रिविध पवन उडपत॥ ऐसो अति व्याप्यो है मन्मथ मेरोई जीया जाने मोहि श्याम श्याम कह रैनि जपत॥ वेग मिलावो सूरके प्रभुको भूल अभिमान करूँ कबहूं नहिं मदन वाणते कँपत॥२८५॥

राग जैजैवती।

वनत वनाउ कछु वन नहि आवे साँवरे सजन विन तलफत प्राण हमारे। शोच किये क्या होत री सजनी वे हरि कठिन हृदय

समझाउं कैसे कारे ॥ तपोंगी ताप चहूँ ओर अगन दे तनुको जराऊँ तो मैं पाऊँ पिया प्राण प्यारे। सूर सकल विधि कठिन भई है बीतत रैनि गिनत गई दईके तारे ॥ २८६ ॥

राग काफी।

सखी मोहिं मोहनलाल मिलावे । ज्यों चकोर चंदाका इकटक भृंगी ध्यान लगावे ॥ बिन देखे मोहि कल न परे री यह कह सवन सुनावे। बिनकारण में मान कियो री अपनेहि मन दुखपावे ॥ हाहा कारि कारि पॉयन पारि पारि हारि हारि टेरि लगावे । सूर श्याम बिन कोटि करो जो और नहीं जिय भावे ॥ २८७ ॥

राग रामकली।

धन मेरे भागकी शुभ घरी । श्याम सुन्दर मदनमोहन भुजाले उर धरी ॥ जासु चरणसरोज गगा शंभु ले शिरधरी। जासु चरण-सरोज परसत शिला सुनियत तरी ॥ जाके वदन सरोज निरखत आश सगरी सरी । सूर प्रभुकी भेट ते मेरी सकल आपदा टरी ॥ २८८ ॥

राग विभास।

कित श्वास उसॉस भई सजनी, उत दौर गई इत दौरके आई ॥ टीकी जो मिटी अलकैं जो छुटी, प्यारी मे तेरे लालके पॉयन पर आई ॥ अरुणाई कहॉ गई होठनकी प्यारी, मैं व्रजनाथने बहुत बकाई ॥ कहा पलट्यो पट प्रीतम को, प्यारी मैं तेरी प्रतीतिको लाई ॥ २८९ ॥

राग विहाग।

आय क्यो न देखो लाल अपनी प्यारीको ख्याल, चॉदनीमें पौढी जाते चंदाहू गयो लजाय ॥ मडप पुहुप हार बहु विधि नीलो

पट नाशिकाको मोती देख उडुगण सकुचाय ॥ आये हैं निकट लाल देखरीझे व्रजबाल बारबार मुखकी लेत वलाय ॥ नंददास प्रभु प्यारे अधरन बीरी धरी झझक उठी अकुलाय ॥ २९० ॥

नींद तोहि बेचूंगी आली जो कोई गाहक होय । आये मोहन फिर गये अँगना मे बैरिन रही सोय ॥ कहा करू कछु वश ना मेरो आयो धन दियो खोय । लछीराम प्रभु अबके मिले तो राखोगी नयनन समोय ॥ २९१॥

मेरे कर मेहँदी लगीहै लट उरझी सुरझाय जा । शिरकी सारी सरक गई है अपने हाथ उढाय जा ॥ भालकी बेंदी मोरि गिरे जो परीहै हाहा करत लगाय जा । नीलांबर प्रभु गुणना भूलूँ बीरी नेक खवाय जा ॥ २९२ ॥

परस्परमान लीला ।

राग कल्याण ।

श्याम तेरी वँसुरी नेक वजाऊँ । जो तुम तान कहो मुरलीमें मोड मोड गाय सुनाऊँ ॥ हमरे भूषण तुम सब पहरो हौ तुमरे सब [illegible]ऊँ । हमरी बिंदरी तुमही लगावो हो शिर मुकुट धराऊँ ॥ [illegible]म दधि बेचन जाहु वृंदावन हौ मग रोकन आऊँ । तुम्हरे शिर [illegible]ाखनकी मटुकिया हौ मिलग्वाल लुटाऊँ ॥ माननी होकर मान [illegible]रो तुम हौ गहि चरण मनाऊँ । सूर श्याम प्रभु तुम जो राधिका [illegible] नदलाल कहाऊँ ॥ २९३ ॥

राग देश ।

युगलछबि आज अनूप वनी । गोरे श्याम साँवरी राधा नख-[illegible]ख द्युति कमनी ॥ खंजन नयन मैनमदगजन अंजन रेख अनी॥ [illegible]लित किशोरी लाल रसिकवर मृदु मुसुक्यान घनी ॥ २९४ ॥

राग पीलू॥

श्याम श्याम श्याम रटत प्यारी आपही श्याम भई। पूंछत फिर अपनी सखियनते प्यारी कहां गई॥ वृन्दावन वीथिन यमुना तट श्रीराधे श्रीराधे। सखी सगकी यह छवि निरखत रही सकल मौन साधे॥ गरुवी प्रीति कहा न करावे क्यो न होय गति ऐसी कहै भगवान हित रामराय प्रभु लगन लगे जो जैसी॥ २९५॥

राग विलावल।

नंदलाल निठुर होय बैठ रहे। प्यारी हाहा करत न मानत पुनि पुनि चरण गहे॥ नहिं बोलत नहिं चितवत मुख तन धरणी नखन करोवत। आप हँसत पुनि पुनि उर लागत चकित होत मुख जोवत॥ कहा करत यह बोलत नाहीं पिय यह खेल मिटावो। सूरश्याम मुख चंद्र कोटि छवि हँसकर मोहिं दिखावो॥ २९६॥

राग विहाग।

तनक हरि चितवो मेरी ओर। मेरे तो मोहन तुमही इक हो तुमको लाखकरोर॥ कवकी मैं ठाढी ठाढी अरज करतहों सुनिये नंदकिशोर। कृष्णप्रियाके प्राण जीवन धन करुणानिधि चितचोर॥ २९७॥

राग परज।

मृदु मुसुकान कीजे थोरी थोरी। हमसों कहा रूसनो हम तुम नेह कुँजके चद चकोरी॥ तजिये मान तनैनी भ्रुकुटी ढीली करिये ललित किशोरी। निठुराई सब छॉड छवीली वचन सुधा दीजे श्रुति घोरी॥ २९८॥

इत मत निकसे तू चौथेके चदा देखेते कलंक मोहिं लगजायगो रे। दूर ते गुलाल भरो छूओ जिन छैला मोहि तेरो श्यामरंग

मोहिं लग जायगो रे ॥ हाहा खाऊँ पैयाँ परूँ नियरे न आओ छैला करन चवाव गाम लग जायगो रे । नागरिया लोभी फाग स्वार्थहीको मीत मो मन निगोरो भूल जायोगो रे ॥ १९९ ॥

कान्हरे बांसुरिया वारे रे तू ऐसे जिन बतराय । यो न बोलिये एरे घर बसे मैं लाजन दव गई हाय ॥ मै हारी तेरे खेलनहीते तू सहज चल्यो क्यो ना जाय । रसिकविहारी जीसो नाम पायके क्यों एतो इतराय ॥ २०० ॥

राग देश।

हमसे न बोलो साँवलिया तू मतवारो रे । हठ मोहन हटको नहिं मानैं नट खट जात अहीर कहावै जाय कहूँ यशुदासो हटको वारो रे ॥ कुबिजा सौत भली मनभावे हमैं बधंवर योग पठावें। छोड़ दियो हम नाहक जियग जारो रे ॥ २०१ ॥

राग कालिंगड़ा।

अपनी डगर चल्यो जा रे ब्रजवासी । तू मेरे ढिग जिन ठाढो रह देखेंगे लोग करेंगे हाँसी ॥ तुम ब्रजवासी अपनी गरजके नयना मिलाय गले डारगयो फांसी । पुरुषोत्तम प्रभु नीठ मिलेहो तू मेरो ठाकुर मै तेरी दासी ॥ २०२ ॥

राग प्रभाती।

मै तो थांपे वारी वारी हो विहारी जी । मृदु मुसकनपर जावो वलिहारी जी । लोक लाज तज थारे लडलागी थे काई उर धार्ग गिरिधारी जी ॥ औगत राजिन जानोहो विहरी जी लाखा भांति करो म्हांसे प्यारी जी ॥ ब्रजनिधि अरजी सुनो जी हमारी अनमोली अनतोली करो म्हांसे यारी जी ॥ २०३ ॥

दानलीला ।

दोहा--कछु माखनको बल बढ्यो, कछु गोपन करी सहाय
श्रीराधाजूकी कृपा सो, गोवर्द्धन लियो उठाय ।

राग विहावल।

श्री वृन्दाविपिन सुहावनो जहँ बंसीवटकी छांह हो । श्रीरा
दधिले निकसी कन्हैया रोकत राह हो॥वृषभानु लडैती दान
नंदराय,लला घर जानदे ॥ लाला सबही सयाने साथके अरु तुम
सयाने लालहो।लाला लिख्या दिखावो सांवरे कब दान लिये
पशुपालहो॥नंदराय लला घर जानदे । प्यारी लियाहै सो लेहिगे
नई गीति न करते आज हो ॥ वृषभानु० ॥लाला क्या लादे
हम जातहो श्याम काह भरे हम बैलहो । लाला तुम टेढे ठाढे
भये मोरी रोक महीकी गैल हो ॥ नंदराय० ॥ प्यारी अँगअंग
बसन सुहावने मानो भरे हैं रतन भूपाल हो।राधे नीकेरूप लडैती
ये कोइ जोवन लादे जायहो ॥ वृषभानु० ॥ लाला याहीते कारे
भये कोइ लैलै ऐसे दानहो।लाला कब छूटोगे भारसो सबरे तीरथ
गंग नहायदो ॥ नंदराय० ॥ प्यारी गोरज गंगा न्हातहौं और
जपत गौंअनके नामहो । प्यारीपावन पवित्र सदा रहो ऐसे दान
ते ना सकुचात हों ॥वृषभानु० ॥ लाला देश हमारे बापको जाकी
बाहँ बसे नंदराय हो।लाला घास जो राख्यो सॉवरे यात सुख
सो चरावो गाय हो ॥ नंदराय० ॥ प्यारी देश तुम्हारे बापको
सो मैं ही दियाहै बसाय हो । प्यारी सब सकल्प्यो वा दिना जब
पियरेरे कीने हाथहो ॥ वृषभानु० ॥ लाला दानले दानले दानले
मन फूल्यो अति सुखपायहो। लाला लैरे मोहन दानले कछु गाय
बजाय रिझायहो ॥ नंदराय० ॥प्यारी नटज्यो नाचे सांवरो कोइ

पढत कवित जैसे भाट हो । श्रीवृंदावन लीला रची यश गावत अलि भगवान हो ॥ २०४ ॥

हमरे गोरस दान न होय मोहन लाडिले हो। हमारे मगमग फिरत ग्वाल ग्वालिन दानदे हो ॥ कबके तुम दानी भये लाल कब हम दीनो दान । गाइ चरावो बाबा नंदकी तुम सुनो अनोखे कान्ह ॥ हम दानी तिहुँ लोकके तुम चारो युगकी ग्वार । दान न छाडों आपनो तेरो राखो गहनो हार ॥ रत्न जटितकी इंडुरी मेरी हीरा जडी हो हार । सो तुम राखन कहतहो कामरके ओढनहार ॥ ब्रह्मा तानो पूरियो हो बुनी हो बैठ महेश । सो हम ओढी कामरी जाको पार न पायो शेष ॥ भौहें नचावत चातुरी ढोटा बोलत बडबड बोल । मेरो हार किरोरको तेरी सब गायनको मोल ॥ यह गाय तिहूँ लोक तारनी चारो युग परमान। दूध दहीके कारणे तेरो हार लेहो रसदान ॥ काहेको बाद बदतहो ढोटा काहे करत अतिसोर । जैसी बाजे तेरीबाँसुरी मेरे नूपुर की घनघोर ॥ या बसीकी फूंक पै मैने गिरवर लियो है उठाय । ढीठ बहुत यह ग्वालिनी इनकी मटुकी लेहो छिड़ाय ॥ हमहैं सुता वृषभानुकी तुम नन्द महरके कान्ह । प्रेमप्रीति रुचि मानके ढोटा अब जिन करोगुमान ॥ वृन्दावन क्रीड़ाकरी हो कीनो रास विलास । सुर नर मुनि जय जय करत गुण गावे माधुरी दास ॥ २०५ ॥

राग भैरवी ।

दे जा गुजरिये दधि माखन ॥ गूजरी ये गुजरें टरीये मेरे इतेक मारग आव री ॥ मैं हूँ नंदमहरको ढोटा भरला मटुकी मैं मारू सोटा तेरे बिच बिच धूम मचाऊँ । मैं वृषभानु गोपकी बेटी मत जानो कोइ और सहेटी कंस राजकी फेंगां लाऊं तेरे नंद समेत बँधाऊ ॥ २०६ ॥

मोहन मैं गूजर बरसाने की मोते नाहक मांडी रार ॥ पांच टकाकी कामर ओढे तापर करत गुमान॥गाय चरावत नंदकी मोपै मांगत दधिको दान॥ रत्न जडित मेरी ईंडुरी हीरा लगे करोर ॥ एक हीरा गिरजाय गो तेरी सब गायनको मोल ॥ कृष्णजीवन लछीरामके प्रभु प्यारे मोते नाहक मांडी रार ॥ नेक चितै बलि जाऊँ सांवरे मेरो विमल विमल दधि खाय ॥ ३०७ ॥

राग बिलावल ।

ग्वालिन दान हमारो दे । हम दानी या माल के ॥ देहो लेहो तुम जात कहां हो लेहो चुकाय नित हाल कोरे ॥ सघन कुंज-वन वीथिन गहवर सांकरी खोर कुआँ ताल कोरे ॥ पुरुषोत्तम प्रभुकी छवी निरखत बार बार व्रजबाल कोरे ॥ २०८ ॥

याही मेरा प्यारा रे दान मांगे अरेहो हाथ लकुटिया कांधे कमरिया अरे हो गौअन रखवारा ॥ मोर मुकुट माथे तिलक विराजे अरे हो नयनो रतनारा ॥ कृष्ण जीवन लछीरामके प्रभु प्यारे जीवन प्राण हमारा ॥ ३०९ ॥

राग दादरा ।

हमरो दान देहु व्रजनारी । मदमाती गजगामिनि डोलै तू दधि-बेचनहारी ॥ रूप तोहि बिधनाने दीयो ज्यों चन्दा उजियारी । मटुकी शीश कटीले नयना मोतिन मांग सँवारी ॥ हार हमेल गलेमें साजे अलकैं घूंघरवारी । या व्रजमे जेती सुन्दर हे सब हम देखी भारी॥नारायण तेरी या छबिपर नंदनंदन बलिहारी॥३१०॥

राग बरवा पीलूकाजिला ।

पहले मेरो दान चुका री पीछे बतरायो प्यारी ॥ तो समान तूही देत दिखाई नव जोबन नव सुन्दरताई और कहां लौं करौं बड़ाई मोहनको मन मोहन हारी ॥ अति बांके हैं नयन तिहारे

सान धरे पेने अनियारे जिन हमसे घायल कर डारे इन समान नहि बान कटारी। नारायण जिन भीर लगावो देहु दान अपने घर जावो क्यो मटुकी चौपट गिरवावो देख हँसेंगे पुर नर-नारी ॥ ३११ ॥

राग मल्हार।

जोबनकी मदमाती डोले री गुजरिया। अंग अंग जोबनकी उठत तरंग नई नयना कजरारे बांके तिरछी नजरिया ॥ हाथन-मे चूरी नकबेसर करनफूल मुँदरी ललित छबि देत अँगुरिया। अबलों तोसी नही देखि नारायण दधिकी बेचनहारी नन्दकी नगरिया ॥ ३१२ ॥

राग सोरठ।

ठाढी रहरी गुजरी तू देजा मेरो दान। ढिग नही आवत वगद-जात तुम फोडूं तेरी मटुकी लकुटिया तान ॥ कैसो दान मांगे लाला चतुर सुजान। या मारग हम नित प्रति आवत कबहूं न दीनो दधिका दान ॥ दानके काजहि हम व्रज आये छांड दियो वैकुंठ सो धाम। या गहवरमे हमहीं बसत है ह्यां धौं कहा ति-हारो काम ॥ क्या तुम ग्वालिन आंख दिखावो दावानलको कर गयो पान। सूरश्याम प्रभु तुम्हरे मिलनको मनमोहनको राख्यो मान ॥ ३१३ ॥

राग भैरव।

देखतकी सुख ऊजरी गूजरी शीश विराजत बासन कोरो ॥ दान बिना कहो कैसेके जान द्यो तू इत भोरी कि मे इत भोरो ॥ गोरसकी सौंह सो रस छांड देऊँ तनक चखाय घनो है कि थोरो ॥ जैसे तुम लाई हो याहि निहोरो कर तैसे इक मान लेहु मेरो निहोरो ॥ ३१४ ॥

अटपटी पाय सूधे बाबा कैसे रहो कान्ह कौने दान लायो जो दानको कहायो है ॥ किधौ शनी मंगल किधौं राहु केतु चौथ आये किधौ संक्रांति किधौ ग्रहणहू ल्जायो है ॥ अँचरा न गहो कहो कैसो दान मांगत हो कहा जगजीवन तू ऊधम मचायो है ॥ देखो सखी कैसे नयन खंजनसे नाचत हैं जाने तो यशोदा मैया कहा खाय जायो है ॥ ३१५ ॥

राग जंगला ।

द्वार पौरियाको रूप राधेको बनाय लाई गोपी मथुराते वृन्दावनकी लतान मे । कह्यो टेर कान्ह सो बुलायो तोहि कसजीने कौनके कहेते दधि लूटत हो दानमें॥सगके सखा सब डगर भुलाय गये कृष्ण सो सयाने गये पकर भुजा पान पें। छूट गयो छल तो छबीली अवलोकनमे ढीलीभई भौह वा लजीली मुसकानमे ३१६॥

राग विलावल ।

एरी यह को है री याहे दान देत गोवर्द्धन केरी ग्वैड़े ॥ हारन खेतन गाम मडैया कान्हर ठाढो ऐड़े ॥ बाप भरे कर कंस रजाको पूत जगाती पैडे। या ब्रजकी अब रीति नई है औ लातीको नीर बरेडे ॥ पराये वगर जिन देहु अडीठन कान्हर छैंडी छैंडे। कृष्णदास बरजो नहि मानत तोरत लाजकी मैंडे ॥ ३१७ ॥

राग सोरठ ।

कांकडली ना घालो म्हारी फूटे गागड़ली । तू तो ठानो घरमें ठाकड़ होभी ठाकड़ली ॥ आकड़ आकड़ बोलो कान्हा मैभी आकड़ली । मोढे थानो कारी कामर हाथमे लाकड़ ली ॥ नौलख धेनु नंद घर दुहिया एकन वाखड़ली । माखन माखन आपने खायो रहगई छाछड़ली ॥ जाय पुकारूं कंसके आगे मारे थाप-

ड़ली । वृन्दावनमे रास रच्योहे मोरकी पांखड़ली ॥ नरसींके स्वामी सामलिया दूधमें साकड़ली ॥ ३१८ ॥

रागपरज ।

तुम टेढे म्हारी टेढी गगारिया । टेढी टेढी चाल चलो त्रिभगी काहेको दिखावे लाल टेढी पगारिया ॥ टेढी अलकमें क्या वॉधूँगी कछु न सुहावे मोहि थारी सगारिया । टेढो श्रीवृन्दावन गोकुल टेढो वाहूसे टेढी वृपभानु नगारिया ॥ टेढो श्रीनंद वावा मात यशोदा और टेढी वृपभानु डुलारिया । सूरदास टेढीकी संगत टेढे होकर पार उतरिया ॥ ३१९ ॥

राग गुर्जरी ।

गिरिवर धर्‌यो आपने करको । ताहीके वल दान लेतहो रोक रहतहो हमको ॥ अपनेही मुख बडे कहावत हमहूं जानत तुमको । यह जानत पुनि गाय चरावत नितप्रति जात हो वनको ॥ मोर-मुकुट मुरली पीतांबर देखे आभूपनको । सूर कांध कमरी हूँ जानत हाथ लकुटिया करको ॥ ३२० ॥

राग विलावल ।

यह कमरी कमरी कर जानत । जाके जितनी बुद्धि हृदयमें सो तितनी अनुमानत ॥ या कमरीके एक रोमपर वारो कोटिन अंवर । सो कमरी तुम निन्दत गोपी तीनलोक आडम्वर ॥ कमरीके वल असुर सँहारे कमरी ते सव भोग । जात पॉत कमरी है मेरी सूर सवहि यह योग ॥ ३२१ ॥

अव तुम सांची वात कही । एते पर युवतिनको रोकत मॉगत दान दही ॥ जो हम तुमहिं कह्यो चाहतहीं सो श्रीमुख प्रकटायो । नीके जाति उघारी अपनी युवतिन भले हँसायो । तुम कमरीके

ओढनहारे पीतांबर, नहिं छाजत । सूर श्यामकारे तनु ऊपर कारी कामरि भ्राजत ॥ २२२ ॥

मोसो बात सुनो ब्रजनारी । एक उपख्यान चलत त्रिभुवनमें सो तुम आज उघारी ॥ कबहूँ बालक मोहन दीजै मोहन दीजै नारी ॥ जो मन आवै सोइ कर डारै मूड चढतहै भारी ॥ बात कहत अठिलात जात सब हँसत देत कर तारी ॥ सूर कहा ये हमको जाने छाँछकी बेचनहारी ॥ २२३ ॥

यह जानत तुम नंदमहर सुत । धेनु दुहत तुमको हम देखत जबहि जात खरकहिं उत ॥ चोरी करत यही पुनि जानत घर घर ढूँढत भांडे । मारग रोक भये अब दानी वे ढंग कबतें छाँडे ॥ और सुनो यशुमति जब बाँधे तब हम करी सहाय । सूरदास प्रभु यह जानत हम तुम ब्रज रहत कन्हाय ॥ २२४ ॥

राग आसावरी ।

को माता को पिता हमारे । कब जनमत हमको तुम देख्यो हँसी लगतसुनि बात तुम्हारे ॥ कब माखन चोरी कर खायो कब बाँधे महतारी । दुहत कौन गैयाको चारत बातकही तुम भारी ॥ तुम जानत मोहिं नंदढोना, नंद कहांते आये । मैं पूरण अविगत अविनाशी माया सबन भुलाये ॥ यह सुनि ग्वालि सभी मुसुकानी ऐसेही गुण जानत । सूर श्याम जो निदरचो सबही मात पिता नहिं मानत ॥ २२५ ॥

राग सोरठा ।

तुम का जाने री गूजर दधिकी बेचनहार । कौन पिता को मात हमारे जन्म अजन्म रूप रंग धार ॥ भुवके भार उतारन कारन लीन मनुज अवतार । मेरी माया जगत भुलानो मेरो कह्यो सत्यकर मानो गावत वेद पुराण भागवत यश गावत श्रुति चार ॥

जो मेरो निज दास कहावे रसिक प्रीतम निज भक्ति पावे ब्रह्मादिक सनकादिक नारद शेष न पावत पार ॥ ३२६ ॥

राग आसावरी।

भक्त हेत अवतार धरो मैं ॥ कर्म धर्मके वश मैं नाही योग यज्ञ मतमें न करो मैं ॥ दीन गुहार सुनो श्रवणन भर गर्व वचन सुन हृदय जरो मैं ॥ भावाधीन रहो सबहीके और न काहू ते नेक डरो मैं ॥ ब्रह्मा आदि कीटलौं व्यापक सबको सुख दे दुखहि हरो मैं ॥ सूर श्याम तब कह्यो प्रगट ही जहां भाव तहंते न टरो मैं ॥ ३२७ ॥

राग लावनी।

मैंही तो हूँ नंदको लाला मात यशुदाको कन्हैया मैंही तो हूँ । धरके अवतार भूमिको भार हरैया मैंही तो हूँ । मथुरामें लियो जन्म ब्रजमंडलको बसैया मैंही तो हूँ । प्रथम पूतना तृणावर्त शकटाको हनैया मैंही तो हूँ॥ कागाको मारके चोचको फार डरैया मैंही तो हूँ । ब्रजवासिनको प्रेम देखि माखनको खवैया मैंही तो हूँ ॥ यमलाअर्जुन हेत ऊखल सो हाथ बँधैया मैंही तो हूँ । मोहे गोपी ग्वाल बाल गौवनको चरैया मैंही तो हूँ ॥ वत्सासुरको पटक अघाके प्राण कढैया मैंही तो हूँ । नौलख धेनु खिरक मेरेमें तिनको दुहैया मैंही तो हूँ ॥ दावानलको कियो पान कालीको नथैया मैंही तो हूँ । चीर चोर चढ गयो कदम युवतिनको रिझैया मैंही तो हूँ ॥ गोवर्द्धन नख धरयो इन्द्रको गर्व हरैया मैंही तो हूँ वंसीवटके तट अधरन धर वंसीको बजैया मैंही तो हूँ ॥ श्यामके संग रासमें नीको तो नचैया मैंही तो हूँ । पकरू कंसके केश देख ऐसो तो लरैया मैंही तो हूँ ॥ उग्रसेनको राज्य मथुराको दिवैया मैंही तो हूँ । सब खेलनको खेल खेलनको खिलैया मैंही तो हूँ ॥ भक्तन हितकारी बलदेवको भैया मैंही तो हूँ । मझधारके

बीच टेर गजकी सुनवैया मैंही तो हूँ ॥ कुंदन विप्र यो कहत नाम राधाको रटैया मैंही तो हूँ ॥ २२८ ॥

कवित्त ।

अंत ते न आयो याही गांवरेको जायो माई बाप री जिवायो प्याय दूध दधि बारे को ॥ सो तो रसखान तज बैठो पहिंचान जान लोवन नचावत नचैया द्वारद्वारे को ॥ भैयाकी सौं सोच कछु मटुकी उतारे को न गोरसके ढारेको न चीर चीरडारे को ॥ याही दुख भारी गहे डगर हमारी देखो नगर हमारे ग्वार वगर हमारे को ॥ ३२९ ॥

राग झिंझोटी ।

चल परे हटरे काहेको इतरावे ।भूषण वसन दधि माखन चुरैया अब कैसी कैसी बात बनावे ॥ जिनके वसाये तुम उनही सों झगरत निलज न नेक लजावे ॥ नितप्रति धेनुको चरैया नारायण आज तू भूप कहावे ॥ ३३० ॥

राग कल्याण ।

रजधानी तुम्हरे चित नीकी । मेरे दास दास दासनके तिनको लागत हैं अतिफीकी ॥ ऐसी काहे मोहि सुनावत तुमको यही अगाध । कस मारि शिर छत्र फिराऊं कहा तुच्छ यह साध ॥ तवही लग यह संग तिहारो जवलों जीवत कंस । सूर श्यामके मुख यह सुन तब मनमे कीनो संस ॥ ३३१ ॥

राग रामकली ।

राधासो माखन हरि मांगत । औरनकी मटुकिनको चाख्यो तुम्हरो कैसो लागत ॥ लेआई वृषभानुनंदनी सदलोनी है मेरो । ले दीनो अपने कर हरि मुख खात अलप हँस हेरो ॥ सवहिनते

मीठो दधि है यह मधुरे कह्यो कन्हाई। सूरदासप्रभु सुख उपजाये व्रजललना मन भाई ॥ ३३२ ॥

राग कालिंगडा।

अच्छा लेहु व्रजवासी कन्हैया अच्छा लेहुरे ॥ बरसानेसे चलीरे गुजरिया आगे मिले महाराज रे ॥ कोरीकोरी मटुकीमे दही रेजमाया चाख लेहु महाराज रे ॥ दधि मेरो खायो मटुकिया रे फोरी इंडुरी कहां डारी लाल रे ॥ हार शृङ्गार सभी मेरो तोरयो दुलरी कहां डारी लाल रे ॥जाय पुकारूंगी कंसके आगे न्याव करो महाराज रे॥मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल वलिहाररे ३३३॥

हिंडोराझूलन लीला।

राग मलार।

व्रज पर नीकी आज घटा। नान्ही नान्ही बून्द सुहावनी लागत चमकत बिज्जु छटा ॥ गर्जत गगन मृदंग बजावत नाचत मोर नटा। गावत सुरहि देत चातक पिक प्रकटयो मदन भटा ॥ सब मिल भेट देत नदलालहि बैठे ऊंची अटा। चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनलाल शिर कसूमी पीत पटा ॥ ३३४ ॥

आज कछु कुंजनमे बरसासी। बादरगणमे देख सखी री चमकत है चपलासी॥नान्ही नान्ही बुन्दन कछु धुरयासी पवन बहुत सुखरासी। मंद मद गर्जनसी सुनियत नाचत मोर सभा सी ॥ इन्द्र धनुषमे बग मिल डोलत बोलत है कोकिलासी। इन्द्रवधू छवि छाय रहीहै गिरिपर श्याम घटासी ॥ उमग महीरुहसे महि कपत फूली मृगमालासी। रटत व्यास चातककी रसना रसपीवत हौ प्यासी ॥ ३३५ ॥

आई वदरिया वरसनहारी । गरज २ दामिनि दमकावे ज्यों चूंदरमें झलक किनारी ॥ मधुर मधुर कोयल वन वोले भवन भवन गावत व्रजनारी । चलत पवन शीतल नारायण परत फुहार लगत अति प्यारी ॥ ३२६ ॥

देख युगुल छवि सावन लाजे । उत वन इत वनश्याम लाडलो उत दामिनि इत प्रिय सँग राजै ॥ उत वर्षत वून्दनकी लरिया इत गल मोतियन हार विराजै । उत दादुर इत वजत बांसुरी उत गर्जत इत नूपुर वाजै ॥ उत रंगके वादर इत वारे उतै धनुष वनमाल इत साजै । उत घन घुमड इतै दृग घूमत नारायण वर्षा सुख आजै ॥ ३२७ ॥

श्याम सुन नियरे ही आयो मेहु । भीजेंगी मेरी सुरँग चुनरिया ओढि पितांवर लेहु ॥ दामिनी सो डरपतहौं मोहन निकट आपने लेहु । कुम्भनदास लाल गिरिधर सो वाढ्यो अधिक सनेहु ३२८॥

राग रेखता ।

आयो है मास सावन इक मान कह्यो प्यारी । चल झूलिये हिंडोरे वृषभानुकी दुलारी ॥ यमुनाके तीर वसीवट कैसी छवि छाई । शीतल सुगंध मद पवन चलत अति सुहाई ॥ करती है शोर यमुना उठते तरग भारी । प्रति कुञ्ज २ छाय रह्योहै परागरी ॥ लागत परम सुहाई अवलोकि नागरी फूली लता द्रुमनकी धरणी झुकीहै डारी ॥ जापै मलिंद घूमै मकरन्द हेत छाये । नाचतहैं मोर वनमे लागत परम सुहाये ॥ माती कोयल पुकारे वैठी कदम-की डारी । कालिन्दियाके तटपै झूलत हैं सव सहेली ॥ नवसत शृगार साजे इक एकते नवेली तुमहू प्रिया सिधारो कीजे न अव अवारी ॥ झूले निकुञ्ज अपनी अवही चलो पियारे । कीजे विहार हमसो तुम नन्दके दुलारे ॥ तव संग ले पिया-

को सुनि कुञ्जमें सिधारी । बैठो कुँवर हिंडोरे अब मै तुम्हें झुलाऊँ । गाऊँ तुम्है रिझाऊँ छवि देख दृग सिराऊँ ॥ बैठो सुरङ्ग पटली डोरीगहो सँभारी ॥ बाढै न रमक मोहन टुक मन्दही झुलावो । डरपे हियो हमारो पिया पैंग ना बढाओ॥यह बात सुन प्रियाकी उरसो लई लगारी । भीजैगी लाल सारी कारीघटा जो आई ॥ लीजे उढाय मोको कामर कुँवर कन्हाई। तब हँस रसिक विहारी कामर उढाई कारी। चल० ॥२३९॥

राग देश ।

आज बन्यो रसरंग हिंडोरो कदम तरें। सघन लता झुक सुगन सुगन्धन अलिगण गुंज करें॥वर्ण वर्ण तनु भूषण चुँदरी श्यामा जू पहरे। लाल लड़ाय चाय हित चित सों रूप समुद्र भरे ॥२४०॥

झूलो प्यारी आज निकुंज हिंडोरना।बोलत चातक मोर पवन झकझोरना॥ सघन लता निधि वनकी आज सुहाई हैं । श्याम-घटन सों परत बूंद सुखदाई है ॥ तैसीही दामिनी चमक चमक छबि छाई हैं। मनो डरत तुव तेज लाज दरसाई है ॥ हरित भूमि हुलसी तुव आगम जानके। मनो विछौना कियो मदन मद आनके ॥ २४१ ॥

चल झूलिये हिंडोरे श्री वृषभानुकी लली। तिहारे काज आज इक मेने बिरची कुंज भली ॥ रत्न जडितको बन्यो हिंडोरो केसी झला झली । ब्रजवनिता झूलत अनेक तहँ एक एक नवली ॥ शब्द करत जहे कीर कोकिला गुंजत मोर वली । रसिकविहारीकी सुन वाणी तुरतही कुँवरी चली ॥२४२॥

चलो इकेले झूले वनमे प्यारी मेरे प्रान । तुम नई नागर रूप उजागर सुखसागर छविखान ॥ वर्ण वर्णके वादर छाये मानो गगन

बितान । वर्षत बूंद सोई मोतिनकी झालर शोभावान ॥ बोलत खग मृग डोलत इत उत सो नहिं जात बखान ले रग रंगके फूल खिले हैं भ्रमर करत रसपान ॥ ऐसे समय विपिन सुख विलसे एरी परम सुजान । नारायण उठ वेगि पधारो कुलदीपक वृषभान ॥३४३॥

राग खेमटा ।

झूलन चलो हिंडोरने वृषभानु नन्दनी । सावनकी तीज आई नभ घोर घटा छाई मेघन झरी लगाई परे बूँद मन्दनी ॥ सुन्दर कदमकी डारी झूला पर्योहै प्यारी देखो कुमर हहारी सब दुख निकन्दनी । पहरो सुरंग सारी मानो विनय हमारी मुखचन्द्रकी उजारी मृदु हास फन्दनी ॥ मम मानि सीख लीजे सुन्दर न देर कीजे हम तो विलोकि जीजे तू है गति गयन्दनी ॥ शोभा लखो विपिनकी फूली लता द्रुमनकी सुन अरज रसिक जनकी करो चरण बन्दनी ॥ ३४४ ॥

राग सोरठ।

झूलो मेरी राधा प्यारी रंगीलो हिंडोरना । डॉडी चार सुदेश बनाई हीराखम्भन झुल्मकलाई जगमग जगमग होय रवि शशि डोरना ॥ उमड़ी घटा घुमड़ घिर आई रिमझिम रिमझिम बूद सुहाई दमक दमक दामिनियां बोलें मोरना । गावत राग मलार अवाई शीतल मन्द सुगन्ध सुहाई तान तरगन ललित भान तृण तोरना ॥ ३४५ ॥

धवल महल चढ़ रत्न बंगला झूलो सुरंग हिंडोर । नवकिशोर सुकुमार छबीली नेह नवल भुज जोर॥सुरंग कसूमी सारी प्यारी हरत झँगाली कोर । हित अलि रूप लाल रुचि औरे पिया उठत हिलोर ॥ ३४६ ॥

राग मलार।

तेरी झमक झूलन कटि लचक जात प्यारी रमक रंगीली अति सोहे । तू गुण रूप यौवन रग रसभरी तेरी उपमा को कोहे ॥ हाथन चूरी महाउर मेहँदी चटक चौगुनी सोहे । रसिक गोविंद अभिराम श्याम घन तू दामिनि मन मोहे ॥ ३४७ ॥

राग पीलू ।

चलो पिया वाही कदम तेरे झूलें । झुक रही लता अति सघन प्रफुल्लित कालिन्दीके कूलें ॥ बोलत मोर चकोर कोकिला अलिगण गुंजत भूलें । ललित किशोरी मग बतरावे कहकह बतियां फूलें ॥ ३४८ ॥

राग मलार ।

हर्ष झुलाइये मन भावन । उधर परयो हित हेत गह गह्यो झूटा दियो चित चावन ॥ यह जो कल्पतरु यह रविजातट वह वन घन झुक आवन । वृन्दावन हितरूप बलि गई वह हरियाली सावन ॥ ३४९ ॥

राग खेमटा ।

हिंडोरे आज झूलत रग रयो। अचल सुहाग सुभग श्यामाको दिन प्रति होत नयो ॥ हरित भूमि वसीवट यमुना सो सुख दृगन लयो।रसिक प्रीतम मिल गावत भावत ब्रज सब रीझरह्यो ॥३५०॥

राग रेखता ।

झूलन युगल किशोरकी दिलमें मेरे वसी । बैठेंहैं रंग हिंडोरना करते हैं रसमसी ॥ फहरात पीत पटुका दुपटा जो छोरदार। शिरपे सुरंग सारी प्यारीके क्या लसी ॥ वेसर बुलाक बेनी बेंदी जो भालपै । हीरोका हार उर पै कटि काछनी कसी ॥ जोवनके जोर शोरसो रमके बढावती । ललिता किशोरी श्यामकी छवि देखके हँसी ॥ ३५१ ॥

राग मलार ॥

झूलत तेरे नयन हिंडोरे । श्रवण खंभ भुहें भई मर्यारी हरि किरण डांडी चहुँ ओरे ॥ पटली अधर कपोल सिहासन बैठे युगल रूप रति जोरे ॥ वरुनी चमर ढुरत चहुँ दिशिते लर लटकत स्मुदना चित चोरे ॥ ढुर देखत अल्कावलि अलि कुल लेत हे पवन सुगध झकोरे ॥ कच घन आड दामिनी दमकत इंद्र मांग घन करत निहारे ॥ थकित भये मडल युवतिनके युग ताटंक लाज मुख मोरे ॥ रसिक प्रीतम रराभाव झुलावत विविध कटाक्ष तान तृण तोरे ॥ ३८२ ॥

राग खेमटा ।

युगल वर झूलत दे गलबाही । बादर बरसें चपला चमकें सघन कदमकी छाही ॥ इत उत पैंग चढावत सुन्दर मदन उमंगन माही । ललित किशोरी हिंडोरा झूले चढ यमुना लौ जाही ॥ ३८३ ॥

राग देश ।

झूलत श्याम श्यामा संग । अतिरंग शोभाके मानो लहत यमुना गंग ॥ झलक भूषण चित्त चोरत श्यामा गोरे अंग । ललित किशोरी हिडोरने पै आज बरसत रंग ॥ ३८४ ॥

बलि बलि जाँदियां झूलन पर । प्यारी पहरे कुसुमल सारी प्यारेके मन भाँदियां । चहूँ ओर सब सखी झुलावें झुक झुक झूटे खाँदियां । पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत तन मन नयन सराँदियां ॥ ३८५ ॥

राग मलार ।

आज हिंडोरे झूले झूलन नवल कुँवर नव दुलहन दूलें । धादा किटता धादा किटता बजत मृदंग सखि सुघर तान गावें झननन

ननु नाचत मोर सघन वन प्रफुलित श्री यमुनाजीके कूले कूलें ॥ नवल किशोरी वृषभानुकी कुँवर भोरी भोरी संग जोरी रस राचो उरझी माल लटक नकबेसर अग अंग भुज फूलें फूलें॥ ३५६ ॥

राग देश ।

मनभावन हर्पावन आवन सावन तीज सुहाई ॥ चावन गावन रीझ रिझावन दंपति रति दरशाई ॥ चढे हिडोरे नयनन जोरे चितचोरे सुखदाई । युगल चन्द रसकन्द कोरनी नख रूपलाल बलिजाई ॥ ३५७ ॥

राग रेखता ।

प्यारी पीतमके संग झूले रंग हिडोरना । दो खंभ हैं जडाउ जडे चितके चोरना॥डॉडी मरुवे लगन लगी बेलन अमोलना ॥ पटली संदलकी साफ देखो खूबहै बनी । लागेहे उस्के बीचमे हीरा चुनी मनी ॥ चुदरी घूंघटकी ओटमे नयना विशाल हे । खजन भुलामनेके घेरनको जाल हे ॥ मुझको रसिक गोविंदकी छविहीमें झूलना । प्यारी अनूप रूपको दिलसे न भूलना ॥ ३५८ ॥

राग खेमटा ।

युगल वर झूलत डार गलबाही । रत्न जडितको बन्यो है हिंडोरा सघन कुञ्जके माही ॥ रेशम डोर पवन पुरवैया लखि रति काम लजाही । सखी सखा दोउ ओर झुलावत मधुर मधुर सुर गाही ॥ मध्य श्यामा श्याम दोउ हिल मिलपुनि पुनि हिय हर्षाही॥ऊँची डार तोर कलियन दोउ निज निज कलिन सराही ॥ या छबि निरख प्रियाकी प्रीतम मोहन मन न अघाही ॥ ३५९॥

आज दोउ झूलत रंगभरे । झूटा खर लेत कबहुक सखिकबहूं रे हरे॥कर्णफूल कुंडल मिल भेटत मनु शशि मीन लरे । चन्द्रमाल

हलकत उर राधे हरि वनमाल गरे ॥ विहँसत दमक उठत दशनावलि अवनी सुमन झरे । ललित किशोरी टरत न लखि छवि दृग शिशु अरन अरे ॥ ३६० ॥

राग देश ।

कहत श्याम श्यामाजू मोको दर्शन देत रहो जू । अंचल अलक पलक सुनिरंतर इक संकोच सहो जू ॥ यह विनती मानिये जो श्रवण सुन नाहिन वचन कहो जू । विहारन दास कहत रुख लीये यह सुख सहज लहो जू ॥ ३६१ ॥

सुहावन सावन गधा सुख तिहारे बाट पर्‌यो । यह जो शतगुणो रूप अंग संग झूलनमे उघर्‌यो ॥ यह जो जो चौगुनो चाव कौन विधि भागनते जो वढ्यो । वृन्दावन हित रूप रसिक प्रीतमको लहनो सुकृत कर्‌यो ॥ ३६२ ॥

राग मलार ॥

एहो लाल झूलिये तनक धीरेधीरे।काहेको इतनी रमक वढावत द्रुम उरझत चीरेचीरे ॥ जो तुम झुक झुक झूटनेके मिस आवत हो नीरे नीरे । नागर कान्ह डरात न काहू लेत भुजन भीरे भीरे ॥३६३ ॥

राग यमन ।

झोका दीजौ सम्हारके मेरी सारी न लटके । सघन कुंज द्रुमडारकँटीली काहू छोर जिन अटके ॥ उन बातन अव भेट नहीं कछु और धोखे जिन भटके । ललित किशोरी लाल जाओ घर काहेको चटके मटके ॥ ३६४ ॥

राग मलार ।

कैसे झुलो हिडोरे वतिया माने नाहिं हरी । वरजो न मानत यह काहूको लोककी लाज टरी ॥ हाहा खात यह तो पैयां परतहे

प्रेमके फंद परी । रसिक गोविंद अभिराम श्यामने भुज भर अंक भरी ॥ ३६५ ॥

राग वडहंस मलार ।

हिंडोलनामे काई छे झूला राज ॥ म्हारा झूलत हिया लरजे॥ रत्न जड़ितके खभ जडाये अगर चंदनके पटा । रेशम डोर पवन पुरवैया झुरआई सावनकी घटा ॥ श्यामा झूले श्याम झुलावें कालिंदीके तटा । उड उड अँचरा परत भुजन पर निरखत नागर नटा ॥ ३६६॥

राग सारंग ।

फूलनके बॅगलेमें राजें पिया प्यारी हो । फूलनके भूषण विचित्र सोहें अंगअंग फूलनके वसन वदन छवि न्यारी हो ॥ फूलसे मुखारविंद वचन फूलन सम फूली सखी तनमन शोभा लखि भारी हो ॥ जैसो ही समाज साज आज नारायण मानो कुंज भवनमें फूली फुलवारी हो ॥ ३६७ ॥

कवित्त ।

फूलनके खभा पाट पटरी सुफूलनकी फूलनके फुंदने फंदेहें लाल डोरे में । कहें पदमाकर वितान तने फूलनके फूलनकी झालरें सु-झूलत झकोरे मे ॥ फूलरही फूलन सुफूल फुलवारी तहां फूलके ही फरस फवे हैं कुंज कोरे मे ॥ फूलझारी फूलभरी फूल जरी फूलनमें फूल ही सी फूल रही फूलके हिंडोरेमें ३६८ ॥

राग कान्हरा ध्रुपद ।

फूलनकी चन्द्रकला शीश फूल फूलनको फूलनके झुमका श्रवण सुकुमारीके । फूलनकी वन्दनी विशाल नथ फूलनकी फूलनको

बेंदा भाल राजत दुलारीके॥फूलनकी चम्पाकली हारगले फूलनके फूलनके गजरा ललित कर प्यारीके। फूलनकी पगमें पायल नारायण फूले फूलें भाग सदा लाडिली हमारीके॥२६९॥

कवित्त ।

फूलन चन्दोआ तने फूलन फरस बिछे फूलनकी सेज औ फूलन छवि छैरही॥ फूलनकी गरेमाल फूलन करनफूल फूलनको टीको मांग फूलन भरे रही॥ फूलनके वस्त्र औ शृंगार सब फूलनके विक्रम मृगेश मन उपमा बनै रही॥ फूली फुलवारी जामें बैठी प्राणप्यारी आज देखत बसन्त या बसन्त ऋतु ह्वै रही॥ २७०॥

राग पीलो ।

सो तू राखले री झूटा तरल भये। इत नव कुंज कदम लौं पसरत उत यमुना लौं गये॥ आवत जात लता निरवारत कुसुम वितान छये। कल्याणके प्रभू रीझ विवस भये झूलत नये नये॥ २७१॥

मेरो छांडदे अँचरवा मैं तो न्यारी झूलोगी। झूटनमिस मोहन लँगरैयां अजहूं टहोकत ना भूलोगी॥ ललता संग रंगीले झूल झूल झूल मनही मन फूलोगी। ललित किशोरी तरल पैंग कर लालन तो सँग सम तूलोगी॥२७२॥

राग दादरा ।

सुनसखी आज झूलन नहि जैहो॥श्यामसुँदर पिया रस लपट है अतिही ढीठचो देत। झूटा तरल करे पाछेते धाय भुजनभर लेत॥ चितवन चपल चुरावत अनतै हमें जनावत नेह। रसिक गोविंद अभिराम श्याम सँग क्यो न जाय रस लेह॥ २७३॥

राग सोरठ।

कौन समय रूठनको प्यारी झूलो ललित हिडोरे । रग विरग घटा नभ छाई विच विच चपला चमक सुहाई परत परम सुखदाई चलत समीर झकोरे॥ विविधभाँति पक्षी वन बोले मृगिन सहित मृग विहरत डोले जीवजंतु मिल करत कलोलें यही अचरज मन मोरे। कुसुमचीर पहरे व्रजनारी साज समाज आज है भारी नारायण बलिजाऊँ तिहारी प्रीतम करत निहोरे ॥ २७४ ॥

राग मलार।

या ऋतु रूस रहनकी नाहिं। बरसत मेघ मेदिनीके हित प्रीतम हरष बढाही ॥ जे वेली ग्रीषम ऋतु जरही ते तरुवर लपटाही । उमडी नदी प्रेम रस माती सिधु मिलनको जाही ॥ यह संपदा दिवस चारककी शोच समझ मनमाहि । सूर सुनत उठ चली राधिका दे दूती गलबाही ॥ २७५ ॥

राग गौरी।

झूलनहार नई कौन है ॥ श्यामाके सँग रग भरी सोहत सखी नवेल। अति सुन्दर तनु सामरी मानो नील मणिनकी बेल ॥ स्वेद कम्प रोमांच हो जान परत कछु और। झुक झुक झूटनमें मिले हँस कुँवारि लजोई होत ॥ निरखो झूलन नेहकी सखी चतुर शिरमौर। हप जानी जानी सभी सखी यह झूलन कछु और॥ सभी छकाई नागरी दृगन सुधारस प्याय । कपट रूप धर मोहनी प्रगट भई व्रज आय ॥ २७६ ॥

राग यमन।

झूलत को श्यामाके सँग सखी सामरी प्यारी है। कजरे नयन सैनसो बतियाँ अँखियन कोर कटारी है ॥ जोबन जोर मरोर

भौहकी ललित किशोरी वारी है । ललिता करी परिहास कही यह नागर नददुलारी है ॥ ३७७॥

राग झँझोटी

श्यामाजी झूले पीरी पोखार । पार गावत है उचेस्वर कोकिल रही मौन मुख धार ॥ रमकनकी दमकन नग भूपण शोभा विपिन निहार। चौकाकी चमकन पर डारूं श्वेत दामिनी बार॥थरकतहै अतर अतराट शिर पर सूही सार । खुमक बनी उर पीतकचुकी मुख पर श्रमकण वार ॥ सजनी री इक साँवरि आई झूलनको रिझवार। ताके सँग झूलत हैं प्यारी करत अधिक मनुहार ॥ कौन गाम क्या नाम तिहारा करिये कृपा विचार । तरुणिनमें अति सुदर प्यारी चतुरनमें वर नार॥ललिता कहै बोल रीसामर नातर देहुँ उतार । राजसुता सँग झूलन आई दियो ढीठ डर डार ॥ डोरी गह लीनी ललिता ने दोऊ दिये उतार । हँस पुनि चपल बलैयाँ लेवे कोउ पीवत जल वार ॥ सैननमें समझावत मुखसे वचन न सके उचार। नदगामकी ओर बतावे ऊचे हाथ पसार ॥ अँचराकी सरकनमे कौस्तुभमणिकी परी चिन्हार। हर हर हँसत सकल व्रज सुदरी यह वोही खिलवार ॥ नईपाहुनी आई झूलन बैठी घूँघट मार । वृन्दावन हित रूप बलिगई छदम न सकत उघार॥ ३७८ ॥

बाँकी छबि झूलत प्यारी बाँकी आप विहारी बाँके बाँकी सँग सुकुमारी ॥ बांकी घटा घिरी इत चमकन चपलाहूँको न्यारी । ललित किशोरी बांकी मुसकन बंक पॅग पर वारी ॥ ३७९ ॥

राग पीलू खेमटेकी राहमें ।

कौन चढे पहले सुरंग हिडोरे । सोई करत मनुहार हिये हित रमकदेत जोराजोरे।गावत राग तान मधुरे स्वर कोटि काम चित चोरे। रसिक प्रीतम यह होड पियापरी रीझ देत तृण तोरे॥३८०॥

राग सोरठ ।

गाय चरायके गिरि धार्‌यो तुम्हें झूलन समझ कहाहे । अति-सुकुमार प्रिया गौरांगी ता सँग झूलोहि चाहे ॥ हम जो सिखावें तैसेहि सीखो कहा फिरत हो भरे उमाहे । वृंदावन हित रूप बलिगई ह्यां पायोके वॉ हे ॥३८१ ॥

राग वरवा सारंग ।

तेरी झूलन अति रस सानी सुखदानी श्रीराधा वल्लभ लाडले । गावत बजावत रिझावत प्रियाको तान तरगन सब मिल आव रे ॥ सब शृङ्गार हार फूलनके प्यारीको पहरावत मनमें चाव रे । राधे-वर कृष्ण याही कृपा करविपिन वसावो अनत न जाव रे ॥२८२॥

राग मलार ।

झूलो तो सुरग हिंडोरे झुलाऊँ । मरुवे बयार करू हित चित दे तन मन खंभ बनाऊ ॥ सुध पटली बुध डांडी वेलन नेह विछौना विछाऊं । अति अवसेर धरूं टुक कलसा प्रीति ध्वजा फहराऊ ॥ गरजन कुहक किलक मिलबेकी नेह नीर वरसाऊं । श्रीविट्ठल गिरिधरन लालको जो इकले कर पाऊ ॥ २८३ ॥

भीगत कब देखूं इन नयना । राधाजूकी सुरँग चूनरी मोहनको उपरेना ॥ श्यामा श्याम कुञ्ज तन चितयो यत्न कियो कछु मे ना। श्रीभटके प्रभु नयनन निरखत जुर आई जल सैना ॥ २८४ ॥

भीगत कुञ्जनमे दोऊ आवत । ज्यो ज्यो बूंद परत चुनरी पर त्यो त्यो हरि उर लावत ॥अधिक झकोर होत मेघनकी द्रुम तरछिन बिलमावत । वे हँस ओट करत पीतांबर वे चुनरी ज्ञु ओढावत ॥ तैसेहि मोर कोकिला बोलत पवन बीच घन धावत । ले मुरली कर मन्द घोर स्वर राग मलार बजावत ॥ भीजे राग रागिनी दोऊ भीजे तनु छवि पावत । सूरदास हरि मिलत परस्पर प्रीति अधिक उपजावत ॥२८५ ॥

मोहकी ललित किशोरी वारी है । ललिता करी परिहास कही यह नागर नंददुलारी है ॥ ३७७ ॥

राग झँझोटी

श्यामाजी झूले पीरी पोखार । पार गावत है उंचेस्वर कोकिल रही मौन मुख धार ॥ रमकनकी दमकन नग भूषण शोभा विपिन निहार । चौकाकी चमकन पर डारूं श्वेत दामिनी वार ॥ थरकतहै अतर अतराट शिर पर सूही सार । खुमक वनी उर पीतकंचुकी मुख पर श्रमकण वार ॥ सजनी री इक साँवारि आई झूलनको रिझवार । ताके सँग झूलत हैं प्यारी करत अधिक मनुहार ॥ कौन गाम क्या नाम तिहारा करिये कृपा विचार । तरुणिनमे अति सुदर प्यारी चतुरनमें वर नार ॥ ललिता कहै बोल रीसामर नातर देहुँ उतार । राजसुता सँग झूलन आई दियो ढीठ डर डार ॥ डोरी गह लीनी ललिता ने दोऊ दिये उतार । हँस पुनि चपल वलैयाँ लेवे कोउ पीवत जल वार ॥ सैननमे समझावत मुखसे वचन न सके उचार । नदगामकी ओर बतावे ऊंचे हाथ पसार ॥ अँचराकी सरकनमें कौस्तुभमणिकी परी चिन्हार । हर हर हँसत सकल व्रज सुंदरी यह वोही खिलवार ॥ नईपाहुनी आई झूलन बैठी घूँघट मार । वृन्दावन हित रूप वलिगई छदम न सकत उघार ॥ ३७८ ॥

बाँकी छवि झूलत प्यारी बाँकी आप बिहारी बाँके बाँकी सँग सुकुमारी ॥ बांकी घटा घिरी इत चमकन चपलाहूँको न्यारी । ललित किशोरी बांकी मुसकन वंक पैंग पर वारी ॥ ३७९ ॥

राग पीलू खेमटेकी राहमें ।

कौन चढे पहले सुरंग हिंडोरे । सोई करत मनुहार हिये हित रमकदेत जोराजोरे ॥ गावत राग तान मधुरे स्वर कोटि काम चित चोरे । रसिक प्रीतम यह होड पियापरी रीझ देत तृण तोरे ॥ ३८० ॥

राग सोरठ ।

गाय चरायके गिरि धारचो तुम्हें झूलन समझ कहाहे । अति-
सुकुमार प्रिया गोरांगी ता सँग झूलोहि चाहे ॥ हम जो सिखावें
तैसेहि सीखो कहा फिरत हो भरे उमाहे । वृंदावन हित रूप बलिगई
ह्यां पायोके वाँ है ॥२८१ ॥

राग बरवा सारंग ।

तेरी झूलन अति रस सानी सुखदानी श्रीराधा वल्लभ लाडले ।
गावत बजावत रिझावत प्रियाको तान तरंगन सब मिल आव रे ॥
सब शृङ्गार हार फूलनके प्यारीको पहरावत मनमे चाव रे । राधे-
वर कृष्ण याही कृपा करविपिन बसावो अनत न जाव रे ॥२८२॥

राग मलार ।

झूलो तो सुरंग हिंडोरे झुलाऊँ । मरुवे बयार करूं हित चित दे
तन मन खंभ बनाऊ ॥ सुध पटली बुध डांडी बेलन नेह बिछौना
बिछाऊं । अति अवसेर धरू टुक कलसा प्रीति ध्वजा फहराऊ ॥
गरजन कुहक किलक मिलबेकी नेह नीर बरसाऊं । श्रीविठ्ठल
गिरिधरन लालको जो इकले कर पाऊ ॥ २८३ ॥

भीगत कब देखूं इन नयना । राधाजूकी सुरँग चूनरी मोहनको
उपरेना ॥ श्यामा श्याम कुञ्ज तन चितयो यत्न कियो कछु मैना।
श्रीभटके प्रभु नयनन निरखत जुर आई जल सैना ॥ २८४ ॥

भीगत कुञ्जनमे दोऊ आवन । ज्यो ज्यों बूंद परत चुनरी पर
त्यो त्यो हरि उर लावत ॥अधिक झकोर होत मेघनकी द्रुम तरछिन
बिलमावत । वे हँस ओट करत पीताबर वे चुनरी जु ओढावत ॥
तैसेहि मोर कोकिला बोलत पवन बीच घन धावत । ले मुरली
कर मन्द घोर स्वर राग मलार बजावत ॥ भीजे राग रागिनी
दोऊ भीजे तनु छबि पावत । सूरदास हरि मिलत परस्पर प्रीति
अधिक उपजावत ॥२८५ ॥

होरी लीला।

राग जङ्गला।

प्यारी पिया दोऊ खेलत होरी। नन्दनँदन व्रजराज सॉवरो श्रीवृषभानुकिशोरी॥ परमानन्द प्रेम रस भीने लिये अबीर भर झोरी। करत मनमें चित चोरी॥ भुजभर अंक सकुच तज गुरु-जन विचरत हैं मिल जोरी। छूटी अलकॉ उरझीं कुण्डलसों बेसर प्रीत फँस्योरी॥ चलो सुझांवो गोरी॥ कर कङ्कण कञ्चन पिच-कारी केसर भर लै दौरी। छिरकत फिरत हुलस लिये हर्षत निर-खत हँस मुख मोरी॥ चलो क्यो होइयो बौरी॥ धनि गोकुल धनि धनि श्रीवृन्दावन जहँ यह फाग रच्योरी। श्रीरसरंग रीझरहे व्रजपर वारो वैकुण्ठ करोरी॥ मुक्ति काशी जहँ थोरी॥२८६॥

राग होरी सारंग।

श्यामा श्याम सो होरी खेलत आज नई। नदनँदनको राधे कीनो माधव आप भई॥ सखा सखी भई सखी सखा भये यशु-मति भवन गई। बाजत ताल मृदग झॉझ डफ नाचत थेइ थेई॥ गोरे श्याम सामरी राधे या मूरति चितई। पलटचो रूप देख यशुमतिकी सुध बुधि विसर गई॥ सूर श्यामको बदन विलोकत उघरगई कलई॥२८७॥

राग जङ्गला।

या व्रजमे कैसी धूम मचाई॥ इत ते आई कुवॅरि राधिका उतते कुवॅर कन्हाई। खेलत फाग परस्पर हिल मिल या छवि वरणि न जाई॥ घरै घर बजत बधाई॥ बाजत तालमृदग झांझ डफ मंजीरा सहनाई। उडत गुलाल लाल भये बादर केसर कीच मचाई॥ मनो मघवा झर लाई॥ राधे सैन दई सब सखियन यूथ यूथ मिल धाई-

पकरोरी पकरो श्याम सुदरको गृह अब जान न पाई॥ करो अपने मन भाई॥छीन लियो मुख मुरली पितांबर शिरपर चुनरि उढाई। बेंदी भाल नयनमें काजर नकवेसर पहराई ॥ मनो नई नारि बनाई ॥ कहाँ गये तेरे पिता नदजी कहाँ यशोमति माई । कहां गये तेरे सखा संगके कहां गये बल भाई॥ तुझे अब लेत छुडाई॥ फगुवा लिये बिन जान न दूंगी करियो कोटि उपाई । लेहो चुकाय कसर सब दिनकी तुम हो चोर चुराई । छीन दधि माखन खाई ॥ धनि गोकुल धनि धनि श्रीवृन्दावन धनि यमुना यदुराई । राधा कृष्ण युगुल जोरी पर नददास बलिजाइ ॥ प्रीति उर रही न समाई ॥ २८८ ॥

राग सारंग।

रसियाको नारि बनावो री । कटि लहँगा गल माहि कचुकी चुँदरी शीशउढ़ावो री॥गाल गुलाल दृगनमे अजन वेंदीभाललगावो री।नारायण तारी बजायके यशुमतिनिकट नचावो री ॥२८९॥

राग जंगलासिंध।

श्याम मोसे न खेलो होरी पालागो कर जोरी॥ गैयां चरावन मैं निकसी हूं सास ननँदकी चोरी। सगरी चुँदरिया रग न भिजोवो इतनी सुनो बात मोरी ॥ छीन झपट मोरे हाथसे गागर जोरसे बहियां मरोरी । दिल धडकत मेरो सांस चढ़त है देह कपत गोरी गोरी ॥ अविर गुलाल लिपट गयो मुखसे सारी रंगमे बोरी । सास हजारन गारी देवै अरु बालम जीती न छोरी ॥ फाग खेलके तैने रे मोहन क्या कीनी गति मोरी । सूरदास आनंद भयो उर लाज रही कछु थोरी ॥ २९० ॥

राग जंगला।

थारे करुगी कपोलन लाल जी म्हारी अँगिया न छूओ ॥यह अँगिया नहिं धनुप जनकको छुअत टुटो ततकालानहि अँगिया

गौतमकी नारी छुअत उडी नँदलाल ॥ कहा विलोकत भ्रुकुटी कुटिल कर नही पूतना खाल । यह अँगिया काली मत समझो जा नाथ्यो पाताल॥गिरिवर उठाय भयो गिरिधारी लाला नही जानो व्रजवाल । जाओजी खावो सुदामाके तंडुल गौवनके रखवाल ॥ इतनी सुन मुसकाय साँवरे लीनो अबिर गुलाल । सूर श्याम प्रभु निरख छिरक अंग सखियन कियो निहाल ॥ २९१ ॥

राग भूपाली जंगला ।

डगर मोरी छांडो श्याम विंध जावोगे नयननमें।भूल जाओगे सब चतुराई लाला मारुंगी सैननमें ॥ जो तोरो मनमे होरी खेलनकी तो लेचल कुंजनमे ॥ चोआ चंदन और अर्गजा छिरकूंगी फागनमे॥चंद्रसखी भजवालकृष्णछबि लागीहै तनमनमे॥२९२॥

राग जंगला ।

जनि जाओ री आज कोऊ पनिया भरन ॥ ठाढो मगमे मोहन इक इकको मारत पिचकारी तकतक॥जिनको चाहत तिनको रंगमे भिगोय डारे गारियां देन लागो न्यारो बक बक ॥ उनको देखके उलटी दौर आई मुख अपनो इक बारी ढक ढक ॥ शीश कँपन लागो पाँय थकन लागे छतियाँ करन लगी न्यारी धक धक ॥ आई वसत विरहोकी मौजसों सब रंग रह्यो वनवारी छक छक ॥ मौज हरी तिहारो यही रंग रहैगो सग चलनको मै रही तक तक ॥ २९३ ॥

राग गजल ।

मची है आज वशीवट पै होली । खडा नट गैलमें भर रग कमोली ॥ गई थी मैअभी दधि बेचवे को, झपट मोहन मली मुख मेरे रोली॥पटक मटुकी झपट अचल झटक कर, लपट दरकाई चूनर और चोली ॥ अजब नट खटहै नंदका हँस मटक कर, लगा बातोमें मेरी नीबी खोली ॥ ये लखि मै ढीठता उस नंदके की

कहा मैं क्यो जी यह क्या है ठठोली ॥ अटकते हो जो हरदम हमसे मगमें चलो अब माफ कीजे होली होली। नही हूं दासी में कछु कृष्ण तेरी बस, अब हमसे न बोली टेढी बोली ॥ ३९४ ॥

राग बरवा होरी।

मोको रंगमे बोर डारी रे इस नदके छैल विहारी। ले बूका मेरे सन्मुख आने भर पिचकारी मेरे मुख पर डारे ले करवा ऊपर ढरकावे ऐसो ढीठ विहारी॥कहा करूं कहां जाऊं मोरी आली या बनमे अब भई कुचाली चितवन हंसन फास गल डारे ऐचत है मोरी सारी॥जेकर पाऊं पकरूं वाको हो भी कसर कछू ना राखो ब्रह्मदास हियमे अभिलाषों मुख मीडो गिरिधारी ॥ ३९५॥

राग होरी।

छैल रंग डार गयो मोरी वीर ।भीगगयो अति अतलस रोटा हरित कचुकी चीर ॥घालत कुकुम ताक कुचन पर ऐसो निपट वेपीर।ललित किशोरी कर बरजोरी मुखसो मलत अबीर॥३९६॥

रगन भीग गई हो मोहन सारी सुरख नई। बरजत ननदी पहिरत निकसी अबही मोल लई ॥ नेक अनोखी गारी गावे या मति किन हृदई ॥ देया सखी या गोकुलवसके ऐसी कभू न भई ॥ ३९७ ॥

राग परज।

होरी रे मोहन होरी रग होरी। कालह हमारे आंगन गारी दे आयो सो कोरी ॥आय अचानक भुज भर पकरी गहि बैयां जो मरोरी। दैया सखीयह निठुर नन्दको कीनी मोसो जोरा जोरी ॥ ३९८॥

रंग होरी में प्रीतम पाया मेरा दांव लगा । सुन री सखी तोहिं साची कहत हो तें मेरा लाल बताया बहुत दिनन पाछे मोरी

सजनी सुहाग भाग में पाया । देया सखी या गोकुल वसके किया अपना मनभाया ॥ ३९९ ॥

राग जंगला।

या मोहना मोहि आन ठग्योरी सखीको रूप धर्यो नँदनंदन आयो हमारी पौरी॥ मैं जान्यों कोई परम सुन्दरी आई हमारी ओरी । धायके मैं चरण गह्यो री ॥ चरण पखार मन्दिर ले आई हँस हँस कंठ लग्यो री । सुन्दर वर्ण मधुर स्वर सजनी तव मेरा जिया वश भयो री ॥ प्रेम तन होरही वोरी ॥ मोहिं लिवाय गई कुञ्जनमे कर छल वल वहुतेरी । निपट इकेली मोहि जान मेरो तन मन गह्यो री ॥ ढीठ छलिया नन्दको री ॥ ऐसो री यह कुञ्जविहारी याते कोउ न वच्यो री । सूरदास ब्रजकी सखियनमें पारब्रह्म प्रगट्यो री ॥ जाने सबको री ॥ ४०० ॥

अनुरागलीला।

राग खंमाच।

दर्शन देना प्राण प्यारे।नदलला मेरे नैनोके तारे ॥ दीनानाथ दयाल सकल गुण नवकिशोर सुन्दर सुखवारे । हम मोहन मन रुकत न रोक्यो दर्शनकी चित चाह हमारे ॥ रसिक खुशाल मिलनकी आशा निशि दिन सुमिरन ध्यान लगा रे ॥ ४०१ ॥

राग सोरठा।

ोहि डगर चलत का भयो री वीर । कहूँ पगकी पायल कहूँ शिरको चीर॥भई वावरी न कछु सुध वुधि शरीर । तेरे मतवारन सम झूमत नयन । मुख भापत है तू अति विरहके वैन ॥ मानो घायल काहूने करी हगनतीर ॥ मोसो नागयन जिन रख दुराव

जो तू कहेगी सोई मै तेरो करूँ उपाय ॥जासो रोग हू घटे हटे सकल पीर ॥ ४०२ ॥

राग पिलू।

आली री तू क्यों रही मुरझाय । पनिघट गई जमुनाजल भरने आई है रोग लगाय ॥ केशो कारो चद्र उजारो टोना डार गयो । करो उपाय सखी अब मेरो ब्रजनिधि वेद मगाय॥४०३॥

राग रामकली ।

मै श्याम दिवानी मेरा दरद न जाने कोय । शूली ऊपर सेज पियाकी किसविधि मिलना होय ॥घायल घायलकी गति जाने जिस तनु लागी होय । मीराके प्रभु गिरिधर नागर वेद समलिया होय ॥ ४०४ ॥

राग देश ।

नारी हू न जाने वेदा निपट अनारी रे । बूटी सब झूठी परी औपधि नकारी रे ॥ जाउ वेद घर अपनेको मोरे पीर भारी रे । यमुना किनारे ठाढी ओढ कसूमी सारी रे ॥ नदजूके ढोटा मोहिं नयना भर मारीरे । गोकुलमे वेद वसे साँवरो विहारी रे । वाहीको बुलायके दिखाओ मेरी नारी रे ॥पुरुपोत्तम प्रभु वेद हमारे वाही छबीलेते लगी है मेरी यारी रे ॥ ४०५ ॥

सवैया ।

काहेको वैद बुलावत हो मोहिं रोग लगाय न नारी गहो रे॥ वो मधुआ मधुरी मुसकान निहारे विना कहो कैसे जियो रे ॥ चन्दन लाय कपूर मिलाय गुलाव छिपाय दुराय धरो रे ॥ और इलाज कछू न वने ब्रजराज मिले सो इलाज करो रे ॥ ४०६ ॥

कवित्त।

कोउ कहो कुलटा कुलीन अकुलीन कोऊ, कोऊ कहो रंकन कलंकन कुनारी हूँ ॥ कैसो देवलोक परलोक तिरलोक मै तो, लीनो हौ अलोक लोक लीकन ते न्यारी हू ॥ तन जाओ धन जाओ देव गुरुजन जाओ, जीव क्यो न जाओ नेक टरत न टारी हूँ ॥ वृन्दावन वारी गिरिधारीके मुकुट वारी, पीत पट वारी बांकी मूरति पे वारी हूँ ॥ ४०७॥

घर तजो वन तजों नागर नगर तजो, बंशीवट तट तजों काहू पै न लजहो ॥ देह तजो गेह तजो नेह कहो कैसो तजो, आज काज राज वीच ऐसे साज सजहो ॥ बावरो भयो हैलोक बावरी कहत मोको, बावरीकहेते मै काहू ना वरजहो ॥ कहैया सुनैया तजो बाप और भैया तजो दैया तजो मैया पे कन्हैया नहि तजहो॥४०८॥

तौंक पहिरावो पांव वेरी ले भारवो, गाढे बधन बँधावो औ खिचावो काची खाल सों॥ विप ले पिलावो तापै मूठ भी चलाओ मांझी, धारमें बहाओ बांध पत्थरकमालसो ॥ बिच्छू लै बिछावो तापे मोहिं ले सुतावो फेर, आग भी लगावो बांध कापर दुसा-लसो ॥ गिरिसे गिरावो कालीनागसे डसावो, हाहा प्रीति नाछुड़ावो गिरिधारी नंदलालसों ॥ ४०९ ॥

सवैया।

मोरपखा मुरली वनमाल लगी हियमे हियरा उमँग्यो री॥ ता दिनते निज वैरनको मैं तो बोल कुबोल सभी जो सह्यो री ॥ अब तो रसखानसो नेह लग्यो कोऊ एक कहो कोऊ लाख कहो री ॥ और ते रग रहो न रहो इक रंगरगीलेते रंग रहो री ॥ ४१० ॥

कवित्त ।

जिन जानो वेद तेतो वादकी विदित होय, जिन जानो लोक लोक लिकन पे लर्मरो ॥ जिन जानो तप तीनो तापन सो तप तप, पंच अग्नि सगले समाधि धर्धमरो ॥ जिन जानो जोग तेतो जोगी जुग जु जिये, जिन जानो जोत सोऊ जोत ले जर मरो ॥ हौं तो देव नन्दके कुमार तेरी चेरी भई, मेरो उपहास कोऊ कोटिन कर्कर मरो ॥ ४११ ॥

सवैया ।

सुन्दर मूरति दृष्टि परी तव ते जिय चंचल होय रह्या है ॥ शोच संकोच सभी जो मिटें अरु वोल कुबोल सभी जो सह्या है॥ रैनि दिना मोहि चैन न आवत नैनन ते जल जात वह्या है ॥ तापै कहे सखी लाज करो अब लाग गई तब लाज कहाँ है ॥४१२॥

राग भैरवी।

लाग गई तब लाज कहाँ री । जे दृग लागे नन्दनँदनसो औरनसो फिर काज कहा री ॥ भर भर पियें प्रेमरस प्यालेओछे अमलको स्वाद कहा री । व्रजनिधि व्रज रस चाख्यो चाहै या सुख आगे राज कहा री ॥ ४१३ ॥

राग पीलू ।

लागी रे लगनियां मोहना सो ॥ सुन्दर श्याम कमल दल लोचन नन्दजूको छैल चिकनियां । कछु टोना सा डार गयो री कैसे भरन जाऊ पनियां ॥ कृष्णदासकी प्यास मिटे जब निरखो गिरिके धरनियां ॥ ४१४ ॥

राग गिरिनारी सोरठ ।

मैंने देखी री आज मोहनकी हँसन । अधरनपे अद्भुत अरुणाई मोतियनकी लर पांति दशन ॥ वा शोभाके दृग रहे प्यासे पीने

लगे भर भरके पसन। नारायण तवसो मोहि सजनी सुधि न रही निज वदन वसन ॥ ४१५ ॥

राग कान्हरो।

आज व्रजराजकी देख शोभा नई गई तनु भूल सुध भई हौ बावरी ॥ अधर रँग पान मुसक्यान जादू भारी ताहू पै चित हरन दृगनके भाव री । कुंडलनकी हलन छलन मन मदनकी चलत गज चाल वश करनके चाव री ॥ निरखके रूप नारायण हरयो हियो कौनसे भाग्यसो लग्यो है दॉव री ॥ ४१६ ॥

राग खट।

आज नन्दलालमुख चन्द अयनन निरख परम मङ्गल भयो भवन मेरे ॥ कोटि कदर्प लावण्य एकत्र कर वारो तवही जवहि नेक हेरे ॥ सकल सुखसदन हर्पत वदन गोपवर प्रवलदल मदन जनो संग घेरे । कहो कोउ कैस हूँ नाहि सुधबुध रहे गदाधर मिश्र गिरिधरन टेरे ॥ ४१७ ॥

मुकुट माथे धरे खोर चन्दन करे माल मुक्ता गरे कृष्ण हेरे ॥ पीतपट कटि कसे कर्ण कुण्डल लसे निशिदिना उर वसे प्राण मेरे ॥ मुरलिका मोहनी कर कमल सोहनी ले कनक दोहनी खिरक नेरे ॥ लाल लोचन बने ललित रसमे सने सैनसे अनगिने ग्वाल टेरे ॥ किंकिनी काछनी देत शोभा वनी देख कौस्तुभ मनी सुर छकेरे ॥ प्रभु छबीलो रंगीलो रसीलो आली लग्रसे मग्न मनमें वसेरे ॥ ४१८ ॥

राग विलावल।

माई री आज और काल्ह और दिन प्रति और और देखिये रसिक गिरिराज धरन॥दिन प्रति नई छवि वरणे सो कौन कवि

नितही शृङ्गार वागे वरनवरन ॥ शोभासिंधु श्याम अग छविके उठत तरग लाजत कोटिक अनग विश्वको मनहरन ॥ चतुर्भुज प्रभु श्रीगिरिधारीको स्वरूप सुधा पान कीजिये जीजिये रहिये सदाही शरन ॥ ४१९ ॥

माई री आजको शृङ्गार सुभग सांवरे गोपालजीको कहत न वने कछु देखे ही वन आवे ॥ भूषण वसन भांति भांति अग अङ्ग अद्भुत काति लटपटी सुदेश पाग चित्तको चुरावे ॥ मकर कुण्डल तिलक भाल कस्तूरी अति रसाल चितवन लोचन विशाल कोटि काम लजावे ॥ कंठ श्रीवनमाल फेटा कटि छोरन छवि हरप, निरख त्रियनके धीरज मन न आवे ॥ मेरे सग चल निहार ठाढे हरि कुञ्ज द्वार हित चितकी वात कहत जो तेरे जिया भावै ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधारीको स्वरूप सुधा पीवत नयननपुट तृप्त ह्वै न आवे ॥ ४२० ॥

राग भैरवी।

छवि आछी वनी वनवारी की । मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल अलकां घूँघरवारी की ॥ मृदु मुसुकान आन नयननकी को वरणे गिरिधारी की । कृष्णदास युगल जोरी पर तन मन धन सव वारी की ॥ ४२१ ॥

राग कान्हरा।

री हौं तो या मग निकसी आय अचानक कृष्ण कुँवर ठाढे री अपनी पौर । दृष्टि हूँ से दृष्टि मिली रोम रोम शीतलभई तनमे दीखत कछु काम रौर । लाल पाग लिपटी भाल परी भुजन पर पान खात मुसकरात और किये चन्दन खौर । सूरदास मदनमोहन वांकेविहारी लाल मनमे आवत कव मिलूँ ही दौर ॥ ४२२ ॥

राग सिंदूरा ।

एरी मैं तो सहज स्वभाव गई नन्दजूके तहां देख्यो सुख और । डकले श्याम नईकी धज सों ठाढे भवनकि पौर ॥ रतन शृङ्गार वहार हँसनकी माथे केसर खौर । नारायण सो छबि दग छाई रही न काजर ठौर ॥ ४२३ ॥

राग कालिंगड़ा ॥

भवन ते निकसे नन्दकुमार । पँचरंगी चीरा शिर सोहै चितवन पे बलिहारी ॥ कानोमें मुतियनको चौकडा गल फूलनको हार । नारायण जे आपहि सुन्दर तिनको कहा शृङ्गार ॥ ४२४ ॥

राग बिहाग ।

सुपनेमें दरश दिखाय मोहन मन हरलीनो प्यारे । रैनि दिना मोहि कल न परत है तलफत जिय अकुलाय ॥ ललित त्रिभंगी माधुरी मूरत नयननमें रही छाय । कृष्ण प्रिया छवि देख मनोहर बिन दामन गई हौ बिकाय ॥ ४२५ ॥

राग देश ।

हँसके मारी मेरो मन लेगयो वडी वडी आँखन वारो कारो ॥ भौंह कमान वान जाके लोचन मेरे हियरे मारे कसके । रजा रजा भयो री कलेजा मेरा भीतर देखो धसके ॥ यत्न करो यन्तर लिख ल्याओ औषध ल्यावो वसके । रोम रोम विष छायरहो है कारे खाइयो डसके ॥ जो कोइ मोहन मोहिं आन मिलावे मोहन गल मिलूंगी हँसके । चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि क्या री करूं घर वसके ॥ ४२६ ॥

राग खम्माच ।

सुन्दर मुख सुख सदन श्यामको निरख नयन मन थाक्यो । बारिक होय बिथिनसों निकस्यो उचक झरोखे झाक्यो ॥ लालने

इक चतुराई कीन्ही गेंद उछाल गगन मिस ताक्यो। वहुरो लाज वैरन भई मोको मैं ग्वॉरन मुख ढाक्यो॥ कछू करगये प्रेम चितवन सो ताते रहत प्राण मद छाक्यो॥सूरदास प्रभु सर्वस लेगये हॅसत हॅसत रथ हॉक्यो ॥४२७॥

राग देश।

अपने गृहसे निकसी अवलासी दूजको चांद चढ्यो। कोऊ कहै काहूकी सुन्दर कोऊ कहै काहूकी दासी॥आगे मिले नन्दजूके नन्दन मारत गेंद मचावत हांसी। घूंघटको पट छूट गयो री दूजकी होगई पूरणमासी ॥४२८॥

राग प्रभाती।

मोर मुकुट वंसीवारेने मन मेरा हरलीना। हौं जो गई यमुना जल भरने आगे मिले रसभीना॥ मुझको देख मुसकात सांवरा चितवनमे कछु टोना। विवश भई जल भरन विसर गयो वड़ा धरणि धर दीना॥लोकलाज कुलकान बिसर गई तन मन अर्पण कीना। कृपा सखी भई रूप दिवानी अधर सुधारस पीना॥ श्रीगोपाल धार उर अपने जन्म सफल करलीना॥ ४२९॥

राग अडाना।

हौं गई यमुना जल लेन माई हौं सॉवरेसे मोही।सुरंग केशरी खौर कुसुमकी दाम अभिराम कण्ठ कनककी दुलरी ढुलकत पीताम्बरकी खोही॥ नान्ही नान्ही बून्दनमें ठाढो री वॅसुरिया वजावे गावे मालाकरी मीठी तानने तोलाकी छवि नेकहु न जोही। सूरश्याम मुरमुसक्यान छवि री ॲखियनमें रही तव न जानौं हौ कोही४३०॥

राग रेखता।

मन हरलियो हे मेरो वा नन्दके दुलारे। मुसकायके अदासो नयनोंके कर इशारे॥ इक दृष्टिमेंही वाने जाने कहा कियो है।

जब द्रौपदीका चीर खींचा दुश्शासनने।अंबरको ढेर लगाया॥मेरा जी०॥ कहांतक सिफत करूं करुणाकर तेरी । कृष्णदासके मन भाया ॥ मेरा जी० ॥ ४२६ ॥

याद आता है वही बंसीका बजाना तेरा । छागया दिलपर मेरे तानका लगाना तेरा ॥जिस दिनसे दिलमें समाया क्यो नजरा आता नही । मैं पता कैसे लगाऊं चोरका ठिकाना तेरा ॥ खुशनुमा आवाज शीरीं सुनके मायल दिल हुआ । अब कहूँ लगता नही फिरता हूँ दीवाना तेरा ॥ कानोमे कुण्डल शिर मुकुट जुलफे तेरी क्या खूब हैं । यह अदा जीसे न भूले झलके दिखाना तेरा ॥ दॉवमें ऐसे फॅसे ग्वाल और गोपी सभी । यह बयां किससे करूं गउओका चराना तेरा ॥ नाग नाथन केशी मथन इंद्रका तोडा गरूर । सात बरसके सिनमे गोवर्द्धनका उठाना तेरा ॥ हो गुनहागार रोशन मुद्दतसे दरपे पडा । यह सिफत जाहिर जहांमे पार लगाना तेरा ॥ ४२७ ॥

राग भैरवी ॥

श्रीकृष्णजीको ध्यान मेरे निशिदिनारी माई । माधुरी मूरत मोहनी सूरत चित्त लियोहै चुराई॥ लालपाग लटक भाल चिबुक बेसर कंठमाल कर्णफूल मन्दहास लोचन सुखदाई।मोरपख शीश धरे मोतिनको हार गरे बाजूबंद पहुँची कर मुद्रिका सुहाई ॥क्षुद्रघण्टिका जेहर नूपुर बिछिया सुदेश अङ्ग अङ्ग देखत उर आनंद न समाई । मुरलीधर अधर श्याम ठाढे ब्रज युवती माहिं सप्त सुरन तान गान गोवर्द्धन राई ॥ निरख रूप अति अनूप छाके सुर नर विमान वल्लभ पद किंकर दामोदर वलिजाई ॥ ४२८ ॥

सॉवरे सो ध्यान मेरो निशिदिना री माई । मनके महल प्रीति कुंज तामें यादवराई ॥ कोमल चरण श्याम वरण नख शिख चख चोहदी होत पॉयन पर पेजनी सो विधना ने बनाई।

दाहने पद पदम ताते टेढो कर धरत आली ऐसे चरण दुखके हग्ण है सदा सुखदाई ॥ लालसी इजार तामें कञ्चनको तार सखी काछिनी पचरगी तापे किंकिणि छबि छाई । गुंजमाल मुक्तमाल कंठ बनी कौस्तुभमणि पीतांबरकी चटक तापे दामिनि द्युति पाई॥ बाजूबन्द पहुँची मुँदरी नगनको अति चमत्कार अरुण अधर मुरली मधुर मधुर सुर बजाई । कमलनयन कुण्डल कांति गण्डन प्रतिबिम्ब होत आनंदसो मुख सम्हार रह्यो री मुसकाई॥ मोर मुकुट अति चटकन घूँघरवारी अलकें झलक केसरको खोर उमँग चली सुंदरताई । कहें भगवान हित रामराय प्रभुको निहार श्रीगुपाल श्रीगुपाल रसना लवलाई ॥ ४३९ ॥

राग जंगला ॥

बट तर सांवरो ठाढो । पीत दुकूल गले बिच सेली चद्र चीर बाढो ॥ मोर मुकुट पीतांवर सोहे फेटा कस गाढो । पुरुषोत्तम प्रभु तुम्हरे मिलनको मो हित अति बाढो ॥ ४४० ॥

राग टोडी ॥

जबते मोहिं नन्दनँदन दृष्टि परो माई । कहा कहूँ वाकी छवि वरणी नहिं जाई ॥ मोरनकी चंद्रकला शीश मुकुट सोहे । केसरको तिलक भाल तीन लोक मोहे ॥ कुण्डलंकी झलक कपोलन पर छाई । मनो मीन सरवर तजि मकर मिलन आई ॥ ललित भ्रुकुटि तिलक भाल चितवनमे टोना । खंजन औ मधुप मीन भूले मृग छौना ॥ सुदर अति नासिका सुग्रीव तीन रेखा । नटवर प्रभु वेप धरे रूप अतिविशेपा ॥ हँसन दशन दाडिम द्युति मंद मद हासी । दमक दमक दामिनि द्युति चमकी चपलासी ॥ क्षुद्रघटिका अनूप वरणी नहि जाई । गिरिधर प्रभुचरणकमल मीरा वलिजाई ॥ ४४१ ॥

राग लावनी ।

सखि कैसे करूं मै हाय न कछु वश मेरो । बिन देखे सांवरो चन्द्र दृगनमें अँधेरो ॥ सखिऐसो सुन्दर नाहिं कहूँ मैं सब जग हेरो । वाकी जो लिखै तसवीर सो कौन चितेरो ॥ सखि कठिन छैलको विरह आन मोहिं घेरो । सगरी निशि तारे गिनतहि होत सवेरो ॥ सखि जो तू मिलावे आंजे वो रूप उजेरो । जवलौं जीवोगी गुण न भूलोंगी तेरो ॥ सखि नारायण जो नाहिं मिलैगो वह मनको लुटेरो । तौ नन्दद्वारगै जाय करूंगी मैं डेरो ॥४४२॥

राग काफी ।

वेदरदी तोहिं दरद न आवे । चितवनमें चित वशकर मेरो अब काहेको आंख चुरावे ॥ कबसो परी तेरे द्वारेपे बिन देखे जियरा घबरावे । नारायण महबूब सँावरे घायल कर फिर गैल बतावे ॥ ४४३ ॥

नयनों रे चितचोर बतावो । तुमही रहत भवन रखवारे वांके वीर कहावो॥तिहारे बीच गयो मन मेरो चाहे जिती सौह खावो । अब क्यो रोवतहो दईमारे कहूँ तो थांग लगावो ॥ घरके भेदी बैठ द्वारपै दिनमें घर लुटवावो ॥ नारायण मोहि वस्तु न चहिये लेने हार दिखावो ॥ ४४४ ॥

बिन देखे मन मान न मेरो । श्याम वरन चित हरन लाडिलो रूप सुधानिधि जगत उजेरो ॥ चालमराल मनोहर बोलन चपल नयन मोतन हँसि हेरो । नारायण त्रिभुवनको स्वामी श्रीवृषभानुकुँवारिको चेरो ॥ ४४५ ॥

राग मलार ।

नही विसरत सखी श्यामकी सुरतियां । हँसन दशन द्युति दामिनी सी दमकन चंदसे १५ ॥ कुंडल

झलक लखि लगे ना पलक नकवेसरकी हलन चलन गज-गतिया। नारायण जब निरखूं लालको सफल नयन शीतल हैं छतिया ॥ ४४६ ॥

राग देवगंधार।

प्यारे तेरे बैन अमीरस बोरे। व्रज वनितन काननमे लग लग छिनमें मानहिं छोरे ॥ सुनत बनत है कहत बनत नहि प्रेम प्रीतिके डोरे। श्रीरघुराज सुनावो निशिदिन माँगो यह कर्जोरे ॥४४७॥

कमलसी अँखिया लाल तिहारी। तिनसो तक तक तीर चलावत वेधत्र छतियां हमारी ॥ इन्हे कहा कोउ दोष लगावत यह अजहूँ न सम्हारी। श्रीविठ्ठल गिरिधरन कृपानिधि सूरत ही सुखकारी ॥ ४४८ ॥

राग विलावल ।

लाल तेरे चपल नयन अनियारे। नन्दकुमार सुरत रस भीने प्रेम रंग रतनारे ॥ कछु अस रीझे चकित चहूँ दिशि नव वर जोवनवारे । मानों शरद कमलपर खजन मधुर अलक घुँघरारे ॥ ए जो मीन घनश्याम सिंधुमे विलसत लेत झुलारे। गोवर्द्धनधर जान मुकुट मणि कृष्णदास प्रभु प्यारे ॥ ४४९ ॥

राग खम्माच।

तेरे जी नयना कारे अनियारे मतवारे प्यारे। रतनारे कज-रारे मीन मृग छौना वारे अजना सँवारे खजन वारे डारे ॥ नन्दके दुलारे मोह लीनो बसीवारे प्यारे ऐसे जी अनोखे नयना काहेसे सँवारे। कृष्णदास बलिहारे तन मन धन वारे विधना सँवारे टरत हूँ न टारे ॥ ४५० ॥

राग विभास ।

जादूगर रे थारे नैन । भवां कमान बान कर तैंने तिरछी मारी सैन ॥ लगत कलेजेमें वरछी सी घायल कीनी ऐन ॥ देखी अजब गजब तेरी चितवन मों नेक न नाहि रुकै न ॥ युगल बिहारीके बिन देखे रंचक परत न चैन ॥ ४५१ ॥

राग भैरवी ।

जादूगर नयन नयन बडे विशाला । मोर मुकुट मकराकृत कुंडल गल बेजती माला ॥ पीतांवर कटि कछनी काछे नन्दयशोमति लाला । नाम लिये जाके पाप कटतहें मेटत कालको ताला॥ सूर बसत उर मोहनी मूरत टेढी विरहो बाला ॥ ४५२ ॥

कवित्त ।

टेढी कला चंद्रकी सकल जग वन्दित है टेढीतान मोहत है मन्मथके जालकी ॥ टेढी है कमान बान लागत ही बेध जात श्रीपति न चूके चोट टेढी करवालकी ॥ टेढी लकडीको कोउ वनमें न काटि सके टेढी काशीपुरी जामें शंका नही कालकी ॥ टेढी जरकसभाल टेढी उर वनमाल मेरे मन वसी टेढी मूरति गोपालकी ॥ ४५३ ॥

टेढे हू सुन्दर नैन टेढे मुख कहे वैन टेढो हू मुकुट बात टेढी कछु कहगयो ॥ टेढे घुंघरारे वाल टेढी गल फूलमाल टेढो हू बुलाक मेरे चित्तमें बसै गयो ॥ टेढे पग ऊपर नूपुर झनकार करे बाँसुरी वजाय मेरे चित्तको चुरे गयो ॥ ऐसी तेरी टेढीन को ध्यान धरैं मयाराम लटपटी पागसे लपेट मन लेगयो ॥ ४५४ ॥

राग भैरव।

देखो री यह नंदका छोरा वरछी मारे जाता है। वरछीसी तिरछी चितवनकी सैनो छुरी चलाता है ॥ हमको घायल देख वेदरदी मन्द मन्द मुसकाता है। ललित किशोरी जखम जिगर-पर नोन पुरी बुरकाता है ॥ ४५५ ॥

राग कालिंगडा।

अँखियां लागी सामलिया प्यारे सो। जब बरज्यो बरजी नहि मानी अब क्या होत पुकारे सो ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल लगरही सांझ सवारे सो। मधुर अली दरशन बिन तरसत नेह लगा वशीवारे सो ॥ ४५६ ॥

राग रामकली।

लोचन भये श्यामके चेरे। एते पर सुख पावत कोटिक मो-तन फेर न हेरे ॥ हाहा करत परत हरि चरणन ऐसे वश भये उ-नही। उनको वदन विलोकत निशदिन मेरो कह्यो न सुनही ॥ ललित त्रिभंगी छबिपर अटके फटके मोसों तोरी। सूरदास यह मेरी कीनी आपन हरिसो जोरी ॥ ४५७ ॥

नयना मान अपमान सह्यो। अति अकुलाय मिले री वर्जत यद्यपि कोटि कह्यो ॥ जाकी वान परी सखि जैसी तेही टेक रह्यो। ज्यो मर्कट मूठी नहिं छांडत नलिनि सुवास गह्यो। जैसी नीर प्रवाह समुद्रहि मांझ वह्यो सो वह्यो। सूरदास इन तैसेइ कीनी फिर मोतन न चह्यो ॥ ४५८ ॥

राग विहाग।

ललित छबि निरखें अघात न नयन। रोम रोम प्रति जो चख होते तऊ न पावत चैन ॥ हाहा रूप दिखाय रसिकवर करुणा-

राग विभास ।

जादूगर रे थारे नैन । भवा कमान बान कर तैंने तिरछी मारी सैन ॥ लगत कलेजेमे बरछी सी घायल कीनी ऐन ॥ देखी अजब गजब तेरी चितवन मों नेक न नाहिं रुके न ॥ युगल बिहारीके बिन देखे रंचक परत न चैन ॥ ४५१ ॥

राग भैरवी ।

जादूगर नयन नयन बडे विशाला । मोर मुकुट मकराकृत कुंडल गल बैजंती माला ॥ पीतांबर कटि कछनी काछे नन्दयशोमति लाला । नाम लिये जाके पाप कटतहैं मेटत कालको ताला॥ सूर बसत उर मोहनी मूरत टेढी विरहो पाला ॥ ४५२ ॥

कवित्त ।

टेढी कला चंद्रकी सकल जग वन्दित है टेढी तान मोहत है मन्मथके जालकी ॥ टेढी है कमान वान लागत ही वेध जात श्रीपति न चूके चोट टेढी करवालकी ॥ टेढी लकडीको कोउ वनमें न काटि सके टेढी काशीपुरी जामें शका नहीं कालकी ॥ टेढी जरकसभाल टेढी उर वनमाल मेरे मन बसी टेढी मूरति गोपालकी ॥ ४५३ ॥

टेढे हू सुन्दर नैनं टेढे मुख कहे बैन टेढो हूँ मुकुट बात टेढी कछु कहगयो ॥ टेढे घुँघरारे बाल टेढी गल फूलमाल टेढो हू बुलाक मेरे चित्तमें बसे गयो ॥ टेढे पग ऊपर नूपुर झनकार करे बांसुरी बजाय मेरे चित्तको चुरे गयो ॥ ऐसी लगी टेढीन को ध्यान धरें मयाराम लटपटी पागसे लपट मन लेगयो ॥ ४५४ ॥

राग भैरव।

देखो री यह नंदका छोरा बरछी मारे जाता है । बरछीसी तिरछी चितवनकी सैनो छुरी चलाता है ॥ हमको घायल देख वेदरदी मन्द मन्द मुसकाता है । ललित किशोरी जखम जिगर-पर नोन पुरी बुरकाता है ॥ ४५५ ॥

राग कालिंगडा।

अँखियां लागी सामलिया प्यारे सो। जब बरज्यो बरजी नहि मानी अब क्या होत पुकारे सो ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल लगरही सांझ सवारे सो । मधुर अली दरशन विन तरसत नेह लगा वशीवारे सो ॥ ४५६ ॥

राग रामकली।

लोचन भये श्यामके चेरे । एते पर सुख पावत कोटिक मो-तन फेर न हेरे ॥ हाहा करत परत हरि चरणन ऐसे वश भये उ-नही । उनको वदन विलोकत निशदिन मेरो कह्यो न सुनही ॥ ललित त्रिभंगी छविपर अटके फटके मोसो तोरी । सूरदास यह मेरी कीनी आपन हरिसो जोरी ॥ ४५७ ॥

नयना मान अपमान सह्यो । अति अकुलाय मिले री वर्जत यद्यपि कोटि कह्यो ॥ जाकी बान परी सखि जैसी तेही टेक रह्यो । ज्यो मर्कट मूठी नहि छांडत नलिनि सुवास गह्यो । जैसी नीर प्रवाह समुद्रहि मांझ वह्यो सो बह्यो । सूरदास इन तैसेइ कीनी फिर मोतन न चह्यो ॥ ४५८ ॥

राग विहाग।

ललित छवि निर्ख अघात न नयन । रोम रोम प्रति जो चख होते तऊ न पावत चैन ॥ हाहा रूप दिखाय रसिकवर करुणा-

निधि सुखऐन । कृष्ण प्रिया छिन बिलम न कीजे कल न परे दिन रैन ॥ ४५९ ॥

राग विभास ।

अँखियन यह टेव परी । कहा करूँ वारिज मुख ऊपर लागत ज्यों भ्रमरी ॥ चितवत रहत चकोर चन्द्र लौं नहि बिसरत मोहि एक घरी । यद्यपि हटक हटक हौं राखत त्यों त्यों होत खरी ॥ चुकजो रही वा रूप जलधिमें प्रेम पियूष भरी । सूरदास गिरिधर तनु परसत लूटत निशि सगरी ॥ ४६० ॥

राग भैरव ।

आंखनमें दुराय प्यारी काहू देखन न दीजिये । हिये लगाय सुख पाय सब गुणनिधि पूर्ण जोई जोई मन इच्छा होय सोई सोई क्यो न कीजिये॥मधुर मधुर वचन कहत श्रवणन सुख दीजिये । निर्मल प्रभु नन्दनन्दन निरख निरख जीजिये ॥ ४६१॥

राग बिहाग ।

श्यामा मोरी आंखन बीच बसो लोक जानत कजरो । दुरत नही घूँघटपट उरझ्यो प्रेम प्रीतिको झगरो ॥ जित देखूँ तित माधुरी मूरत पीत बसन बनमाल गरे । बलि बलि जाऊँ छबीले छबिपर मदन गोपाल ललाके । बरज रही बरज्यो नहि मानत दिन दिनको अगरो । सूर सुधा सम रूप श्यामको याहि परचो धगरो ॥ ४६२ ॥

राग रेखता ।

चकोरी चख हमारे हैं तिहारे चांदसे मुख पर । छुटे बिखरेसे बालोको सँभालोगे तो क्या होगा ॥ नही कछु हमको है शिकवा अगर तुम प्रीति बिसराई।जरा टुक नयन ऊचे कर निहारोगे तो क्या

होगा ॥ तुम्हारे होचुके वारी हमारे हो न हो प्यारे । भला मुख-पानका बीरा जो धारोगे तो क्या होगा । ललित किशोरी कर-जोरी हहा यह है विनय मोरी । तड़फते मुझ बिचारेको पुकारोगे तो क्या होगा ॥४६३ ॥

राग बरवा।

सुन्दर सांवरे सलोने ढोटा । तेरी सानूं डाढी लगनलागी हाथ लकुटी कांधे कमरी काछिनी बांधे कछोटा ॥ निशि दिनही लागो रहत गोपिनके पाछे भर भर पीवत छाछा महरीके ढोटा। पुरुपोत्तम प्रभुके निरखनको फिर फिर खावत प्रेमकी चोटा ४६४

तेरी हँसन बोलन लाल मेरे मन वसियां।चलते मृगराज चाल कांधे सोहे रुमाल केसरके तिलक ऊपर फरकत मोर पखियां ॥ मुरली अधरान धरे गुञ्जमाल सोहे गरे हरी हरी कुञ्जनमे सग लिये सखियां । अरजी जुगरामदास सुनिये महाराज श्याम निरख निरख नयननकी कोर मांझ रखियां ॥४६५ ॥

राग देश ।

सांवरे दी भालन माये सानूं प्रेमदी कटारियां । सखी पूछे दोऊ चारे व्याकुल क्यो भैयां नारे रगके रगीले मोस हग भर मारियां॥ व्याकुल बहाल भैयां सुध बुध भूल गेयां अजहूं न आये श्याम कुञ्ज विहारियां । यमुनाकी घाटी बाटी असां तेरी चाल पछाती वंसिया बजावां कान्हा भैयां मतवारियां ॥ मीरावाई प्रेम पाया गिरिधरलाल ध्याया तू तो मेरी प्रभुजी प्यारा दासी हों तिहा--रियां ॥४६६ ॥

ठुमरी।

इस सॉवलियाकी लटक चाल जियमे मोरे बसगई रे॥ मुकुट पितांबर अधिक सुहावे ले मुरली पढ फक बजावे लट कारी नागि नीसी लपटे तन मन डसगई रे ॥ विन देखे नहि परत चैन

विरहन कैसे कटत रैन कहा करूं मेरी गोइयां बिन दरश तरशगई रे ॥ लिखी ललाट मिटत नहि मोहन भयो उचाट जिया किहि कारण अब आन फँसी मधुवन कुञ्जन परवश होय फँसगई रे ॥ मधुसूदन पिया प्यारा आवे तिरछी बांकी छबि दिखलावे डार गले बैयां सजनी सब कसक निकस गई रे ॥४६७ ॥

राग जंगला ।

कभी गली हमारी आव रे मोर जियाकी तपन बुझाव रे नन्द जूके मोहन प्यारे लाला। तेरे सांवरे बदनपे कई कोटि कामवारे ॥ तोरियां जुलफा दिलादियां कुलफां जी दोऊ नैन हैं सतारे । तेरी खूबीके दरशपे लाल नयन तरसते हमारे ॥ पिया पिया करे पपीहरा रे निशिदिनसो याद तेरी । मेरे सांवरे सलोने मोहन आशा दर्शन केरी ॥ घायल फिरूं दरशकी पीर जाने नही कोई । मोहि लागी चोट प्रेमकी जिन लाई जाने सोई॥ जैसे जलके सोख हुए मीन क्या जीवे बिचारे । कृपा कीजो दरशन दीजो मीरा माधो नन्ददुलारे ॥४६८ ॥

राग रेखता ।

दिलदार यार प्यारे गलियोमें मेरी आजा । आंखें तरस रहीहैं सूरत इन्हें दिखाजा ॥ चेरी हूं तेरी प्यारे इतना तू मत सता रे । लाखों ही दुख सहारे टुक अबतो रहम खाजा॥तेरे ही हेत मोहन छानी है खाक वन वन । दुख झेले शिर पै अनगिन अबतो गले लगाजा ॥ मनको रहूं मैं मारे कबतक बतादे प्यारे । सूखे विरहमें तारे पानी इन्हें पिलाजा ॥ सब लोक लाज खोई दिन रैन बैठ रोई । जिसका कही न कोई तिसका तू जी बचाजा॥ मुझको न यूं भुलाओ कछु शरम जीमें लाओ । अपनोंको मत सतावो ऐ प्राण प्यारे राजा॥हरिचंद नाम प्यारी दासी है जो तुम्हारी । मरती है वह बिचारी आकर उसे जिलाजा ॥४६९ ॥

राग जंगलाझिंझोटी ।

गलीवे हमारी क्यो नही आमदा बिहारी प्यारे। दर्श दिखाय निहाल करोगे सुन्दर रूप उजारे प्यारे ॥ तेरी याद मेरे मन पर रहिंदी श्याम स्वरूप आँखनके तारे । पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत तन मन धन सब वारे ॥ ४७० ॥

रागकाफी ।

मिलना वे महबूब बिहारी। भोरभये वृन्दावन कुञ्जो जाना होकर गली हमारी ॥ मृदु मुसकन सानूं दिलबिच भांदी झमक चलन नूपर धुन प्यारी। ललित किशोरी साँवरी सूरत घुघरी अलकों पर बलिहारी ॥ ४७१ ॥

मिलना वे दिलदार साँवरे। हुसन तुसाडे चूर हुआ दिल लीता तें न कबका दांव रे । बाँकी अदा चशमो बसदी दीठापरे न दूजा ठांव रे ॥ ललित किशोरी नू लख समझावो एक नही मेरे मन भावरे ॥ ४७२ ॥

राग देश ।

मेरे नयनोंका तारा है मेरा गोविद प्यारा है ॥ व सूरत उसकी भोली सी व शिर पगिया मठोली सी। व बोलीमें ठठोलीसी हगवाण मारा है ॥ व घूघरवारियां अलकें व झोकेवारियां पलकें। मेरे दिल बीचमें हलकें छुटा घरवार सारा है ॥ दरस सुख रैन दिन लूटे न छिनभर तार यह टूटे। लगी अब तो नही छूटे प्रान हरिचद्र बारा है॥ ४७३ ॥

राग रामकली।

एक गामको वास धीरज कैसेके धरो। लोचन मधुप अटक नहिं मानत यद्यपि यत्न करो ॥ वेया मग नितप्रति आवत है हौ दधि लै निकरो । पुलकत रोम रोम गद गद स्वर आनँद उमँग

महिदी रंगुली माए लाई कुछ जहान । इकनाँ नूंरंग चढगया इ
रह गए अमना मान ॥४८१ ॥

राग विहाग ।

मन अटक्या वेपरवाहे नाल ॥ नयन फँसे दिल मिल्या लों
मूरख लोक असानूं मोडे मेरा हरदम जांदा आहे नाल ॥ मुल्ल
काजी नमाज पढावन हुकम शरादा भय दिखलावन साडे इशक
मूं की इस राहे नाल ॥ नदियो पार सजन दा ठाना कीते कौल
जरूरी जाना कुछ करलै सलाह मलाहे नाल ॥ आशिक सोइ
जेहडा इश्क कमावे जितवल प्यारा उते वल जावै बुल्लेसाह
जामिल तू अलाहे नाल ॥४८२ ॥

राग पहाड ।

मैंनूं हरदम रहिंदा चा सज्जन दे शोक नजारे दा ॥ जब तें
कीता असॉवल फेरा हार शृङ्गार पया भट मेरा सीने रडके साँग
गुझडा इश्क प्यारे दा ॥ रल मिल सैयाँ मारन वोली ओह
मेरा साहिव मैं ओहदी गोली रखदीहां जान पछान जामिन
हशर दिहाडे दा ॥ ना आदम ना हव्वा आई ताते जाता अपना
माही आया साहव आप वनके रूप सतारे दा ॥ मीरांशाह
विभूति रमावां सॉवरे दे दर अलखजगावां ओही हे शिरताज
आजज नीच न कारे दा ॥ ४८३ ॥

राग देवगंधार ।

बसे मेरे नयननमें नँदलाल । सॉवरी सूरत माधुरी मूरत राजिव
नयन विशाल ॥ मोरमुकुट मकराकृत कुण्डल अरुण तिलक
दिये भाल । अधरन वंसी करमें लकुटी कौस्तुभमणि वनमाल ॥
बाजूबन्द आभूषण सुन्दर नूपुर शब्द रसाल । दास गोपाल
मदनमोहन पिय भक्तनके प्रतिपाल ॥ ४८४ ॥

बसे मेरे नयननमें दोउ चन्द । गौर वर्ण वृषभानु नन्दनी श्याम वरण नँदनन्द ॥ गोलक रहेलुभाय रूपमें निरखत आनँद-कन्द । जय श्रीभट्ट युगल रस बन्दो क्यों छूटे दृढ़ फन्द ॥४८५॥

राग परज ।

या ब्रजमें कछु देख्यो री टोना । ले मटुकी शिर चली गुजरिया आगे मिले बाबा नन्दके छोना ॥ दधिका नाम विसर गयो प्यारी ले लेहु री कोउ श्याम सलोना । वृन्दावनकी कुंजगलीमें आंख लगाय गयो मनमोहना ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर सुन्दर श्याम सुघर रस लोना ॥ ४८६ ॥

राग मलार ।

कोऊ माई लेहै री गोपालहि । दधिको नाम श्यामसुन्दर वन मुख चढ्यो ब्रजबालहि॥मटुकी शीश फिरत ब्रज वीथिन बोलत वचन रसालहि । उफनत तक्र चहूँ दिशि चितवत चित लाग्यो नँदलालहिं॥हँसत रिसात बुलावत बरजत देखो उलटी चालहिं । सूर श्याम बिन और न भावत या विरहिन बेहालहि ॥ ४८७ ॥

राग भैरव

नयननकी कोरे कोऊ लेहै । है कोइ ऐसी रसिक रंगीली प्राण निछावर देहै ॥ नूतन मधु में मोल ले आई छुवत खुमारी ऐहै । ललित किशोरी ततछिन जियरा टूक टूक ह्वै जैहै ॥ ४८८ ॥

राग बरवा ।

हमीको प्यारे दरश दिखायदे ॥ लपट झपट कर मटुकी फोरी कर मोर मुकुटकी छैयां॥मोहन प्यारे नन्ददुलारे तुम लीजो कांवे धर उनको ॥ सुन यशुमति इक न्याउ सुन्यो प्रीतिहि इन मोहनको ॥ हमीको० ॥ हौं वृन्दावन जात हती शिर धरि मटुकी

माखनकी । वैंयां आन झकोरत मोहन सब सखियां मुसकाय घरको सरकी ॥ हमीको० ॥ यह मटुकी अनवेध मोतिनकी मोल जो लागे नन्द यशोदा दोऊ बिकैंगे । सूरदास कहा ब्रजको वसबो नित उठि मांगत दान ॥ हमीको० ॥ ४८९ ॥

राग विहाग ।

तुम्हें कोउ टेरतहै रे कान्ह । गोरी सी भोरी थोरे दिननकी वारी सी वैस उठान ॥ छूटी अलक नील पट ओढे नागरि परम सुजान । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिन धीर धरत नहि प्रान ॥ ४९० ॥

राग गौरी ।

ग्वालिन क्यो ठाढी नंद पौरी । वेर वेर इतउत फिर आवत विजया खाय भई बौरी ॥ सुन्दर श्याम सलोनेसे ढोटा उन दधि लेन कह्यो री । हमको कह गयो नेक खडी रह आपुन वैठ रह्यो री ॥ नौ लख धेनु नन्द बाबा घर तेरोही लेन कह्यो री । जोबन माती फिरत ग्वालिनी ते मेरो लाल ठग्यो री ॥ इतनी सुनत निकस आये मोहन दधिको मोल कहो री । परमानंद स्वामी रूप लुभाने यह दधि भलो विक्यो री ॥ ४९१ ॥

राग जिला ।

श्रीवृन्दावन रज दरशावे सोई हितू हमारा है । राधा मोहन छवी छकावे सोई प्रीतम प्यारा है ॥ कालिंदी जलपान करावे सो उपकारी सारा है । ललित किशोरी युगल मिलावे सो अँखियोका तारा है ॥ ४९२ ॥

राग देश ।

नीको लगे राधावर प्यारो । मोर मुकुट पियरो पटुका है लकुटी कर मतवारो ॥ रौकत गैल छैल अलबेलो नटवर वेष सँवारो । ललित किशोरी मोहन रसिया जीवन प्राण हमारो ॥ ४९२ ॥

राग खेमटा ।

सखी राधावर कैसा सजीला । देखो री गोइयां नजर नहि लागे कैसा खिला शिर चीर छबीला । बार फेर जल पियो मेरी सजनी मत देखो भर नयन रँगीला । हरीचद मिल लेहा बलैयां अँगुरिन कर चट काय चुटीला ॥ ४९४ ॥

राग देश ।

दम्पति दर्पण हाथ लिये । निरखत मुख अरविंद कपोलन मेल मुदित गलबाहि दिये ॥ ललित किशोरी मदन तरंग पर्श अंग सरसात हिये । छिनहू यह छवि जिन न विलोकी कहा कोटिशत कल्प जिये ॥४९५॥

राग देवगंधार ।

निरखत सखि चार चद्र इक ठौर। बैठे निरखत पिया तिया दोउ सूर सुताकी ओर ॥ द्वै बिधु नील श्याम घन जैसे द्वै विधुकीगति गौर । ताके मध्य चार शुक राजत द्वै फल आठ चकोर ॥ शशि शशि सग प्रवाल कुन्द अलि तहँ उरझ्यो मन मोर । सूरदास प्रभु उभय रूपनिधि बलि बलि युगल किशोर ॥ ४९६ ॥

राग खेमटा ।

तू मेरा मन मोहा सामलिया । भौंह कमान तान काननलौं नयन बान हँस मारे छलबलिया । ठुमक चलन बोलन मुख पकज मधुरहँसनकर डारे बेकलिया । जन रघुनाथ इतेपर मोहन अब न बजा प्यारे लाल मुरलिया ॥ ४९७ ॥

राग रेखता ।

लगा है इश्क तुमसेती निबाहोगे तो क्या होगा । मुझे है चाह मिलनेकी मिलाओगे तो क्या होगा ॥ हुस्न चश्मोंके प्याले भर

पिलाओगे तो क्या होगा । चमन बिच आनकर मुखडा दिखा-ओगे तो क्या होगा ॥ भरमथर्ता है कुलआलम हँसाओगे तो क्या होगा ॥ सजन तुम बिन तड़फता जी जिवाओगे तो क्या होगा ॥ मेरे इस दिल दिवानेको सताओगे तो क्या होगा । अजब दीदार रोशन है छिपा ओगे तो क्या होगा ॥ चुराकर दिल परायेको दिलाओगे तो क्या होगा । जिगरके दर्दकी दारू बता ओगे तो क्या होगा । रसिक गोविन्द सीनेसे लगा ओगे तो क्या होगा ॥ ४९८ ॥

लावनी ।

हम तेरे इश्कमे श्याम बहुत दिन भटके । अब मिला हमें तू सनम खुले पट घटके ॥ किय रजो अलम मंजूर जरा नहि भटके । सब दहशत दिलकी निकल गई छटछटके ॥ कर लाख बजाके सनम दिया तूने झटके । पर गिरे न हरगिज कदम पकड़ हट हटके ॥ कड वार गया शिर तेरे इश्कमें कटके । फिर पाया हमने नाम तुम्हारा रटके ॥ जब नाम बनाकर फाँद जानकर लटके । तब मिला हमें तू सनम खुले पट घटके ॥ ४९९ ॥

गजल ।

किया बिस्मिल मुझे उसकी अदाके हाथ क्या आया । तड़पता छोड़कर तेगे कजाके हाथ क्या आया ॥ दिखाकर टुक जमाल अपना मुझे तो कर दिया शैदा । भला पूछे कोई उस मैहल-काके हाथ क्या आया । मेरे इस गुंचये दिलको कभी उसने न आ खोला । गई बोलाई बाला उस सबाके हाथ क्या आया ॥ लगाना खूबदिल चाहथा मैने उसके पाऊँसे । बल इस पेश कद-मीसे हिनाके हाथ क्या आया । फिर शहरो बियावां तालबे दीदार नारायण । बिठाया उसको परदेमें हयाके हाथ क्या आया ॥ ५०० ॥

जहां व्रजराज कल पाये चलो सखि आज वा वनमे । विना वा रूपके देखे विरहकी दौं लगी तनमे ॥ न कल पडती है वेकलको न जी लगता है विन जानी । भई फिरती हूँ योगिनसी सरे बाजार गलियनमे ॥ करूँ कुर्बान जी उसपर जनम भर गुण न भूलूँगी । मेरा महबूब जो लाकर बिठादे तेरे आँगनमे ॥ नही कुछ गर्ज दुनियांसे न मतलब लाजसे मेरा ॥ जो चाहो सो कहो कोई वसा अब तो वही मनमें ॥तेरी यह बात सांची है नही शक इसमे नारायन । जो सूरतका है मस्ताना वह परचे कैसे बातनमे ॥५०१ ॥

राग नट ।

कान्हर कारो नन्ददुलारो मोनयननको तारो री। प्राणपियारो जग उजियारो मोहन मीत हमारो री॥दृगमे राजत हियमे छाजत एक छिना नहिं न्यारो री । मुरली टेर सुनावत निशिदिन रूप अनूपम वारो री ॥ चरण कमल मकरन्द लुब्ध ह्वै मन मधुकर गुञ्जारो री । रस रग केलि छबीले प्रभु सँग हितसो सदा विहारो री ॥५०२ ॥

राग भैरव ।

प्यारा नयना लाय छिप,जामदा । यादतांरहिदी हरदम तेरी मुखडा क्यो नही दिखलामदा मेरा जिया तसांमदा॥ जवते लग्न लगीहै मनमे गृह अंगना न सुहामदा । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश–को मन विच क्यो ना मन जामदा ॥ ५०३ ॥

राग देस ।

मन मोह लिया श्यामने वसीको वजाके। वेखुद किया दिल–दारने जुलफोको दिखाके ॥ पटपीत मुकुट मोर लकुट लटपटी पगिया । चलते है लटक चालसे भ्रुकुटीको नचाके ॥ अलमस्त

किया दममें ब्रजनारिको मोहन । मुरलीके साथ किंकिणी नूपुरको वजाके॥ कुर्बान सनम् तुझपै दिलो दीन हमारा । राखो ललितकिशोरीको गरेसे लगाके ॥ ५०४ ॥

ठुमरी।

कोई दिलवरकी डगर वतायदे रे ।. लोचन कञ्ज कुटिल भ्रुकुटी कर कानन कथा सुनायदे रे ॥ जाके रंग रँग्यो सव तन मन ताकी झलक दिखायदे रे । ललितकिशोरी मेरी वाकी चितकी सांट मिलादे रे ॥५०५ ॥

राग कान्हरा ।

श्याम भुजाकी सुन्दरताई । चन्दन खौर अनूपम राजत सो छवि कही नजाई ॥ अति विशाल जानूँलौं परसत इक उपमा मन आई । मनो भुअग गगनसों उतर्यो अधमुख रह्यो झुलाई ॥रत्न-जडित पहुँची कर राजत अँगुरीसुन्दर भारी। सूर मनो शिर मणि सोहत फण फणकी छवि न्यारी ॥५०६ ॥

राग सारंग ।

जाको मन लागो गोपालसो ताहि और नहि भावै । लेकर मीन दूधमें राख्यो जल विन सचु नहि पावै॥ जैसे शूरमा घायल घूमत पीर न काहु जनावै । ज्यो गूँगो गुड खाय रहत है स्वाद न काहु बतावै॥ जैसे सरिता मिली सिंधुमे उलट प्रवाह न आवै । तैसे सूर कमलमुख निरखत चित इत उत न चलावै ॥ ५०७ ॥

राग देश।

गौर श्याम वदनारविंद पर जिसको वीर मचलते देखा। नयन वान मुसक्यान सङ्ग फस फिर नहिं नेक सँभलते देखा ॥ ललित-किशोरी युगल इश्कमे वहुतोका घर घलते देखा । डूबा प्रेम-सिंधुका कोई हमने नही उछलते देखा ॥५०८ ॥

साँवरेकी जिन निरखी मुसक्यान । सो तो भई घायल ताही छिन विन वरछी बिन वान ॥ कल नहि लेत धरत नहि धीरज तलफत मीन समान । नारायण भूली सुध तनुकी विसर गयो सब ज्ञान ॥ ५०९ ॥

राग काफी।

राधारमण मनोहर सुन्दर तिनके संग नित रहते हे । छके रहत छबि ललित माधुरी और नही कछु चहते हे ॥ चितवन हँसन चोट दशननकी निशिदिन हियपर सहते हे । ललितकिशोरी करें न ओटैं फरी नही कर गहते हैं ॥ ५१० ॥

राग धनाश्री।

सबसे ऊँची प्रेम सगाई । दुर्योधनकी मेवा त्याग्यो साग विदुर घर पाई ॥ जूंठे फल शवरीके खाये बहु विधि प्रेम लगाई । प्रेमके वश नृपसेवा कीनी आप बने हरि नाई ॥ राजसूयज्ञ युधिष्ठिर कीनो तामें जूठ उठाई । प्रेमके वश अर्जुन रथ हांक्यो भूल गये ठकुराई ॥ ऐसी प्रीति वढी वृन्दावन गोपिन नाच नचाई । सूर क्रूर इस लायक नाही कहँलग करौं बडाई ॥ ५११ ॥

राग कवित्त।

चढे गजराज चतुरंगिनी समाज सह, जीति छितिपाल सुरपालसों सजत हैं ॥ विद्याहू अपार पढ तीरथ अनेक कर, यज्ञ और दान बहु भाँतिसो करत हैं ॥ तीनकालमें नहाय इन्द्रियोको वश लाय, करके संन्यास विषे वासना तजत हैं ॥ जोग और जप तपको अनेक करे, बिना भगवन्तभक्ति भव ना तरत हैं ॥ ५१२ ॥

चाहे जोग कर तू भ्रुकुटीमध्य ध्यान धर चाहे नाम रूप मिथ्या जानके निहार ले ॥ निर्गुण निर्भय निराकार ज्योति व्याप

रह्यो ऐसो तत्व ज्ञान निज मनमें तू धार ले ॥ नारायण अपनेको आपही वखान कर मोते वह भिन्न नही या विधि पुकार ले ॥ जौलो तोहि नन्दको कुमार नही दृष्टि परे तौलो तू भलेही बैठ ब्रह्मको विचार ले ॥ ५१३ ॥

सवैया ।

चारहु वेद पुराण अठारहों चौसठ तन्त्रके मन्त्र विचारे ।
तीन सौ साठ महाव्रत संयम मगल यज्ञपुरी पुर सारे ॥
योग वियोग प्रयोग उपासन मैं हरिदत्त सभी निरधारे ।
तीनोहि लोकनके सगरे फल मे हरि नामके ऊपर वारे॥५१४॥

राग भैरव ।

कृष्ण नाम रसना रटत सोई धन्य कलिमें । ताके पदपंकज-की रेणुकी बलि मे ॥ सोई सुकृत सोइ पुनीत सोई कुलवन्ता । जाको निशिवासर रहै कृष्ण नाम चिन्ता ॥ योग यज्ञ तीरथ व्रत कृष्ण नाम माही । विना कृष्ण नाम कलि उद्धार और नाहीं ॥ सब सुखको सार कृष्ण कबहूँ न बिसारिये । कृष्ण नाम लेले भव-सागरको तारिये ॥ श्रीगोवर्द्धन धरन प्रभु परम मंगलकारी । उधरे जन सूरदास ताकी बलिहारी ॥ ५१५ ॥

राग माँझ ।

हर हर जिनके मुखसों निकसे वारे तिन्हांदे जाइयेजी ।धूड तिन्हांदे चरणांदी लै मस्तक अपने लाइयेजी ॥ दुर्मति दूर करे निह केवल शिव घर वासा पाइयेजी । डुनीदास हर साधु संगति मिल निर्मल महल समाइयेजी ॥ ५१६ ॥

राग आस ।

हर हर हर हर हर हर हरे ॥ हर सुमिरत जन बहु निस्तरे ॥ हरिके नाम कबीर उजागर । जन्म जन्मके काटे कागर ॥ जन

रामदास राम सँग राता। गुरू प्रसाद नरक नहिं जाता॥ गोविंद गोविद संग नामदेव मन लीना। आठ दामको छीपरो होयो लाखीना॥ बुनना तनना त्यागके प्रीति चरण कबीरा। नीच कुला जोलाहरा भयो गुणी गहीरा॥ सेन नाई बुतकारिया ओह घर घर सुनिया। हिरदे बस्या पारब्रह्म भक्तनमे गिनिया रामदास अधमते वाल्मीकि तिन त्यागी माया। परघट होय साध संग हरी दर्शन पाया॥ यह विधि सुनके जाटरो उठ भक्ती लागा। मिले प्रतक्ष गुसाइयां धन्ना बडभागा॥ ५१७॥

राग मलार।

प्रभुके ऊच नीच नहि कोई। प्रेम भक्ति कर जो जन ध्यावे उत्तम कहिये सोई॥ कुलवन्ता राजा दुर्योधन तिस गृह पग ना धारयो। जाय विदुरके भाजी अरपी जाति न जन्म विचारयो॥ ब्राह्मण एक करत नित पूजा ताको भोग न लीना। धन्ने जाटके शोच न काई होय प्रगट दुध पीना॥ ऊँचे जन्म कर्मके तपसी ना किसे मन्दिर धावे। महा कुचील भील दे कर ते ले जूठे फल खावे॥ जाय पंडे सब आगे बैठ ना किसे देत दिखाई। नामदेवको देहरा फेरयो लीनो कण्ठ लगाई॥ पारब्रह्म पूरण अविनाशी सब घटकी मति जाने। दुनीदास प्रभु भक्तवछल है कपट हेतु नहि मानै॥ ५१८॥

राग कान्हरा।

माधव केवल प्रेम पियारा। गुण अवगुण कछु मानत नाहीं जान लेहु जो जाननहारा॥ व्याधाचरण अवस्था ध्रुवकी गजने शास्त्र कौन विचारा। भक्त विदुर दासीसुत कहिये उग्रसेन कछु बल नहिं धारा॥ सुन्दर रूप नही कुब्जाको निर्धन मीत सुदा-

महुँ तारा । कहँलों बरणि सकौं सबहिनको मोपै पायो जात न पारा ॥ सुनेप्रभु सुयश शरण हौं आयो मोसे दीनकों काहे बिसारा ।भक्तराम पर वेग द्रवो क्यों ना कहिये दासन दास हमारा ॥ ५१९ ॥

राग जंगला काफी ।

मन मानेकी बात नही कछु जातिको कारन ॥ कुब्जा कर्मा और भीलनी पूतना और निषाद । गति पाई जिन यशुमति जैसी भये भुवन विख्यात ॥ वाल्मीकि रयदास विदुर औ केशव कवीर किरात । सेन भक्त अरु सदन कसाई कहु इनकी क्या जात ॥ जप तप योग दान व्रत संयम नहिं इनसो हर्पात। रसिक नाथ प्रभु इक रस सांचो भाव भक्ति पतियात ॥ ५२० ॥

राग जिला झिंझोटी ।

गोपी प्रेमकी धुजा । जिनने गुपाल किये वश अपने उरधर श्यामभुजा॥ शुक मुनि व्यास प्रशंसा कीनी उद्धव सन्तसराहीं । भूरि भाग्य गोकुलकी वनिता अति पुनीत जगमाही ॥ कहा भयो जो विप्र कुल जन्म्यो सेवा सुमिरण नाही । श्वपच पुनीत दास परमानंद जो हरि सम्मुख जाहीं ॥ ५२१ ॥

राग विहाग ।

प्यारो पैये केवल प्रेम में । नही ज्ञानमें नही ध्यानमे नहीं करम कुल नेममें ॥ नही भारतमें नही रामायण नही मनुमें नहि वेदमे ॥ नही झगरेमें नही युक्तिमें नहीं मतनके भेदमे ॥ नहि मन्दिरमे नहि पूजामें नहिं घंटाकी घोरमे ॥ हरीचद वह वांध्यो डोलै एक प्रेमकी डोरमे ॥ ५२२ ॥

मुँदरिया लीला ।

ठुमरी ।

माथेपे मुकुट श्रुति कुंडल विशाल लाल अलक कुटिलसे अलिन मद गञ्जनी ॥ काछनी कलित कटि किंकिणी विचित्र चित्र पीत पट अंग सो विराजै द्युति बेजनी ॥ दिये गलबाहीं प्रिया प्रीतम विहार करैं अति अनुराग भर आई नई ढैजनी । कहै जैदयाल प्रभु मेरो मन मोहि लियो मन्दमन्द बाजत गोविन्द पायँ पैजनी ॥५२३ ॥

राग कान्हरा ।

कहाँ करते मुँदरिया डरी । मैं बलि जाऊँ बताय किशोरी तें कबते न निहारी ॥ आवतहै भुज अंसन दीने एहो छैलविहारी जो देखी तो कहिये मोते मुदित होत कह भारी ॥ चोरी चपल लगावत मोको न्याव करो तुम प्यारी । वृंदावन हित रूप दरश पडी लाल फेट जब झारी ॥ ५२४ ॥

राग प्रभाती ।

गहनो तो चुरायो तैंने केशो यादोरायको । हाथकी अँगूठी लीनी तोरा लीनो पॉयको ॥ माथेको शिरपेच लीनो रतनजराय-को । गाम तो बरसानो कहिये श्रीसुखधामको ॥ लालजीको सासरो श्रीराधे जूको मायको । लेके तो भाग, आई फेर नहि पायगो । सूर श्याम मदन मोहन नयो गढवायगो ॥५२५ ॥

राग आसावरी ।

मोहनि रूप बनायो हरि बाना । बाहिं वरा बाजूबँद सोहै छला छाप दस्ताना ॥ मुखभर पान सीक भर सुरमा लै दर्पण

कान्हा मन मुसकाना । माय यशोदा यों उठ बोली तू क्यों भयो जनाना । मोहिं छलिगई वृषभानु किशोरी ताहि छलवेको वर-साने मोहिं जाना ॥ वरसानेकी कुञ्जगलिनमें कान्हा फिरे दिवाना । भानुरायकी पौर वूझके काहू गूजरियासो जाय बतराना ॥ ५२६ ॥

राग दादरा ।

तुम या ग्राम कहाँ रहो आली । हम कबहूं देखी न सुनीहै यह शोभा छवि रूप निराली ॥ नख शिख लौं शृंगार मनोहर अधर रची पाननकी लाली । नारायण कहो प्रगट खोलके बात न राखो वीच बिचाली ॥ ५२७ ॥

सवैया ।

मनमोहन लाल बडो छलिया सखि वारूकी भीत उठावतहै ॥ कर तोरतहै नभकी तरियां चट चन्दमे फन्द लगावत है ॥ जहां पौन न जायसकै मुरली धुनकी तहां दूती पठावत है ॥ कहुँ चोर कहूँ दधिदानी बने कहूँ शाह लली बनि आवतहै ॥ ५२८ ॥

कवित्त ।

कौन रूप कौन रग कौन शोभा कौन अंग, कौन काज महराज त्रिया वेष कीयो है ॥ नाकहूमे नत्थ हत्थ चूरिन भरे हैं लाल, काननमें कर्णफूल वेदी भाल दीयो है ॥ चन्द्रहार उर राजै चम्पकली कण्ठसाजे, मुकुट उतार ओढ चूनरीको लीयोहै ॥ नारायण स्वामी देख चीन्ह गई प्यारी भेख, खिल खिल हँसि राधे पट मुख दीयो है ॥ ५२९ ॥

छन्द
मालिनलीला ।

राग कालिंगडा ।

प्यारी यकमालिन पौंर तिहारी ॥ टेक ॥ रंग सॉवरो वा मालिन-
को नील मणिन अनुहारी । ठाढी है वृषभानु पौरिपै पूछत नाम
दुलारी॥ बिंदी भाल नयन विच काजर बेसरकी छवि न्यारी। चलत
चाल चपला ज्यों चमकत झूमत झूम घटा री ॥ यह सुनके वृष-
भानु नन्दनी बोली तब मुसकाई । ले आओ तुम वा मालिनको
कैसी है वह आई । लै आज्ञा प्यारीकी तबही सखी वेग उठधाई।
चल री मालिन याद करी तू दासि चरण बलिजाई ॥ ५२० ॥

मालिन मधुभरे नयन रसीले ॥ टेक॥ कहो कौन है तात तुम्हारो
कौन तुम्हारी माई । क्या है सुन्दरि नाम तिहारो कौन गामते
आई ॥ अचल प्रेम है तात हमारो भक्ति हमारी माई । श्याम-
सखी है नाम हमारो धुर गोकुल ते आई ॥ तुम्हरो रूप देखि मन
उमँग्यो सुन मालिनकी जाई । हम लेगी सब वस्तु तिहारी क्या
क्या सौदा लाई ॥ चम्पाकली हमेल चमेली फूलन हार बनाई ।
सेवती गुलाब सुमनके झुमका तिहारे कारण लाई ॥ कित म-
थुरा कित गोकुल नगरी कित बरसाने आई । कौन बताओ नाम
हमारो किन यह ठौर बताई ॥ तीन भुवनमें सुयश प्रकट है
अरु तुम्हरी ठकुराई । राधे नाम रूपकी आगरि श्रीवृषभानुकी
जाई ॥ चञ्चल चतुर सुघर तू मालिन हम जानी चतुराई ।
फूलनहार बने अति सुन्दर और कहो क्या लाई ॥ सुन्दर तेल
फुलेल उबटनो अतर सुगन्ध मिलाई । जो रुचि होय सो लै
मेरी प्यारी बेर भई मोहि आई ॥ बेर बेर तू जनि कर मालिन

देहों माल अघाई । हीरे लाल रत्न मणि माणिक भूषण वसन मँगाई ॥ बडे घरनकी मालिन हूँ मैं धनकी रुचि कछु नाही। मैं सौदागर प्रेमरतनकी और न कछू सुहाई ॥ फूल फुलेल कि बेचनहारी कहा अधिक इतराई । लेहु लेहु फूल करत कुञ्जनमे हमपे करत बडाई ॥ सुकृत जन्मके फलते भामिन यह मेरे फूल सुहाई। पच पच हार रहे सुर नर मुनि ऐसे फूल न पाई ॥ जिन फूलनको खोजि थकित भये सुर नरपति मुनिराई। ऐसे फूल कहो मृगनयनी कौन बागसो लाई ॥ त्रिभुवनपति जगदीश दयानिधि नन्दकुँवर यदुराई । वा मोहनके बागसो प्यारी नवल फूल चुन लाई। यह सुनके वृषभानु नन्दनी तन मन सुख अधिकाई। आज कि रैन रहो घर हमरे भोर भये उठ जाई ॥ साची प्रीति देख प्यारेकी रैनकी शैन ठहराई । यह छबि निरखि मगन भये सुर नर दास चरण बलिजाई ॥ ५३१ ॥

मनिहारीलीला।

राग गौरी।

मिठ बोलनी नवल मनिहारी। भौहे गोल गहर हैं याके नयन चुटीले भारी ॥ टेक ॥ चूरी लख मुखते कहे घूँघटमें मुसकात । शशि मनु बदरी ओटते दुरदर्शन यहि भांत ॥ चूरो बडे जो मोलको नगर न गाहक कोय । मो फेरी खाली परी आइ घर घर सब जुट होय॥चुरी नील मणि पहरवे नाहिन लायक और । भगवान कोइ ले चलो मोहि दीसत है इक ठौर॥जिहि नगरी रिझवार नहीं सौदागर क्यो जाय।वस्तु घनेरी गाठमे बिन गाहक सो पछिताय॥ रंग सावरी गुण भरी धन सुन्यार कुल ओप ॥ मुदित होत सब देखके री यह पुर गोपी गोप॥काहूपे न ठगायहे तेरी बुद्धि विशाल।

लाभ अधिक कर जायगी भटू बेच बडे वर माल ॥ मेरे मालहिं लेहिं सो जो मुहँ माँग्यो देय । ऐसी है कोउ भामिनी ताको नाम प्रगट किन लेय॥बेचनहारी काँचकी कहा अधिक इतराय । पौरि भूप वृषभानुकी लाखनकी वस्तु विकाय॥ पुर बजार देखे नही है गर्वीली नार।व्यापारिन अवहीं वनी कछु वात न कहत विचार ॥ तोहि ले चलिहो नृप घरै क्यों जिय होत उदास । लेहि लाडिली राधिका जो सौदा तेरे पास ॥ यह सुनके टोढी गही सुखित भई अँग अग । भलो जो तेरो मानिहो लैचल अपने सग॥लैगइ पौरी भानुकी वात कही समझाय । गुणन प्रगट कर सांवरी तोहि लेहें वेग बुलाय ॥ हो जो मुन्यारी दूरकी आई राजद्वार । बेचों चूरी चूरला कोउ बोल लेहु रिझवार ॥ सुन आई चित्रा चतुर तू चल रावर माँझ । प्रात चुरी पहराइये अब वसरह परगड माँझ ॥ अलभ लाभसो पायके हिय जिय पायो चैन । रूखेसे मुख सों कहै गौं गर्जिन रचर बैन॥पर घर वसत जु वलिगई रिझे सकल परिवार । वडे भोर ही आयहो मैं यह मन कियो विचार ॥ एक वार भीतर जु चल प्यारी सो बतराय । भली लगे सो कीजियो लग लाडलीके पाय ॥ चली जो झूमत झुकतसी वेनी रुरकत पीठ । घूँट अमीको सो भरयो जब मिली दीठ सो दीठ ॥ वहुत हँसी नव-नागरी देखी परम अनूप । कै बेचत चूरी सखी तू कै बेचत है रूप॥ मोहि खिलौना जिन करो रजकुँवरि बलि जाऊँ । तन थाक्यो वासर गयो मोहि फिरत फिरत सब गाऊं॥ मुख दीखत तेरो डहडह्यो लगत चीकनो गात। थाकी कौन बतावही कछु ऊपरकीसी वात॥ हौं तो सूधे जीयकी वटवढ़ समझत नाहिं ।तुम्हें कछू दरश्यो कहा प्यारी कपट मेरे हिय माहि ॥ रँग पहराऊँ चूरला चोखो वणिज कमाऊँ। चोखी प्रीति जु आदरो नहि कपटी जन पतियाऊँ ॥ मेरे जिय यह टेक है कहे देतहों सांच । हौं भूखी सम्मानकी नहीं

सहो झूठकी आंच ॥ आउ आउ री निकट तू देखो वदन निहार। एक बातहीमें चिढी तू गुस्सा हियते टार॥ शीतल हो व्यापारिनी तेरो ऐसो काम। तमक नई यह वैसकी तज तोहिं फिरनो सब धाम ॥ हौं आई तकिराज घर करन प्रथम पहचान। मणिलीयेही बिन करी गइ हांसी होय हितकी हान ॥ कासो है तै हित कियो अवलग परी न दृष्टि। बात कहत उरझै सखी तू रची कौन विधि सृष्टि ॥ अब अपनी कर हित कहो भूषण युवति समाज। सबविधि पूरण होय तौ प्यारी मोमन वांछित काज ॥ मणि चौकी बैठी कुँवरि दीनी भुजा पसार। काढ़ चुरी अति सोहनी महराई सुघर सुन्यार ॥ भुजा कढ़न मुन्यारि दृग फूल्यो मनो वसन्त। मन छुट चल्यो जु हाथते धीरज बांधत गुणवत ॥ जवही करसो कर गह्यो शिव अरि कियो प्रताप। तनु गतिवेपथु जानके कछु मधुरे कियो अलाप ॥ तुम लाय चूरी कुँवरि भूल जु आई गेह। निरख निरख प्यारी कह्यो तेरी क्यो कांपति है देह ॥ सरस्यो प्रेम हिये बली उत्तर देह जु कौन। रूप अमल तापै चढ्यो लाल क्यों न गहै मुख मौन ॥ ललिता कह यह प्रेमहै कोऊ परस्यो रोग। यत्न करो तनु पेखके सखी कौन दई संयोग ॥ परम गुणीलो नंदसुत मै देख्यो टकटोय। अहो प्रिया प्रीतम बिना बल ऐसो प्रेम न होय ॥ सींचे नीर गुलाब दृग प्रिया चिबुक कर लाय। प्रेम गहरते काढ़के सखी पुनि पुनि लेत बलाय॥ यश दीयो सबही कुलन वनिता रूप वनाय। कौन बड़ाई कीजिये यशवर्द्धन गोकुलराय ॥ कौतुक-रूपी खेलमे रजनी वाढी शोभ। रसिकन हिये बढ़ावनी यह नवल प्रेमकी गोभ ॥ युगल प्रीति गाढी निरख भयो हियो अहलाद। वरणी लीला मोहनी यह श्रीहरिवंश प्रसाद ॥ वल-हित्त रूप चरित्र यह जो विचार है नित्त। वृन्दावन हित भीज है दम्पति रस ताको चित्त ॥ ५२२ ॥

विसातिनलीला ।

राग परज ।

गली गलीमें कहत फिरत कोई लालहि लेहु मुल्याई । यों कहत विसातन आई ॥ टेक ॥ जबहि गई वृषभानु पौर तब ऊंची टेर सुनाई । श्याम पोत अरु श्याम नगीना या बर लायक लाई ॥ द्वारे उझक उझक फिर आवे आगे जात सकाई । तनु ढापे पुनि घूँघट मारे लाज जु भीजत जाई ॥ भीतर खबर भई तब प्यारी बोल निकट बैठाई । कौन अपूरब वस्तु पास तोहि कहु मोसो समुझाई ॥ कौन नगर तू बसत विसातिन अबही दई दिखाई । तोसी भट्ट बडे घर चहिये धनि विधि जिन जु बनाई ॥ सबही भांति ऊजरी तनुकी किहि मुख करो बडाई । तोहिं बसाऊ राजद्वार जो मनमें होत सचाई ॥ कैसी चुन्नी कैसे मोती कीमत देहु बताई । है लघु वैस कौनपै सीखी परखनकी चतुराई ॥ कांख माहि ते गांठ काढ़कर श्याम जु लरी गहाई । बडे मोलके नग यह मेरे तुम रिझवार महाई ॥ जो जो रुचै वस्तु सो राखो बडे गोपकी जाई । औरौ बात कहत सकुचतहो प्रीति जु देख बिकाई ॥ ना विधिकी डबिया छल्ला आरसी मणिन जडाई । श्रीराधाके आगे धरके बोली ने भेट चढाई ॥ तुम नृप अति लडी हो जु विसातिन देखत कृपा अघाई । हौं भूखी याहीको चाहौं द्रव्य न बहुत कमाई ॥ श्याम पोतको गुजा सुन्दर मो घर धर्‍यो दुराई । मोसो प्रीति करे जो भामिनि ताहि देहुँ पहराई ॥ हौं हित करो बचन मन क्रम कर रह मो पास सदाई । प्राणनहूंते प्यारी मोको भाग्य बडेते पाई ॥ बटुवा खोल दिखाई बेदी नागरिके मन भाई । सुघर विसातिन अपने करलो माथे कुँवरि लगाई ॥ पुनि झोरीते दर्पण काढ्यो

कोमल परम स्वभाव हो जानत प्रीति विकाय । जो अब आदर देहु गी तो फिर आवैंगी धाय ॥ सरिता जल थिर ह्वै रहै जाको सुनत अलाप । शिव समाधि टारे बली विधिको टारत है जाप ॥ ब्रज मंडल ऐसी नहीं नही भरतके खंड । अति गुणवंती भामिनी यह आई परचड ॥ यह सुन अति अकुलायके चली सखी लै संग । रूपसिंधु उमँग्यो मनो तामें नाना उठत तरंग ॥ उठ सन्मानत साँवरी फूली सरवस पाय । दृगसो दृग मनसो जो लखि उरझे सहज सुभाय ॥ अहो कुशल मति नागरी तुम गुण भये प्रशंस । राग अलापि सुनाइये सखी वीणा धरके अंग ॥ चपल करज नख द्युति बडी गोरी गाई बाल । रीझी अति लली भूपकी दई ताहि आप हिय माल ॥ मान बडी तानन बडी बडी रूप लहि लाह । प्रगट करो सव चातुरी जाके मनमे विपुल उमाह । विद्या निपुण उजा- गरी धन तुम शिखवन हार । कोउ दिन बर्साने बसो अब चलो हमारे लार ॥ सुनत कछू मोरयो बदन चुप ह्वै रही सुजान । वीणा धर दियो कन्धते रूखी ह्वै गई निदान । ललिता बूझत समझके का कारण बलिजाऊँ । तुम उदास अतिही भई सुन धाम हमारे नाऊँ ॥ मेरे छक है गुणनकी सुनो खोलके कान । पर घरगये जो को सहै सखी जो न होय अपमान ॥ तुम्हे प्राण सम राखि है लाड़ नयो नित होय । अहो गुणीली भामिनी यह संशय मनते खोय ॥ गुणगाहक विरचे नहीं दूर करो सन्देह । जे गुणको समझे नही परहरिये तिनके गेह ॥ यह सुन भई जो डहडही सखी साँवरी गात । चम्पक वरणी धन्य तू कही निपट समझकी वात ॥ अव हों निश्चय चलोगी जान तुम्हारो हेत । तो मन थाह मिली भटू नृपसुता न उत्तर देत । कहा न्याव सा करत हो कहत अतिलडी बौन सुख पावो तो विरमियो नही कर जैयो गौन ॥ मसक उठी कर

बीण ले लगी कुँवरिके साथ । निपट मन्द गमनी भई गहि प्यारी-जूको हाथ ॥ गोपनके मंदिर जिते सबको बूझत नाम । तनु श्रम अधिक जनावही कहै कितक दूर तुम धाम ॥ हम जो चढे रथ पालकी अतिही आदर योग । गुणी रीझ जानै कहा ये ब्रजके भोरे लोग ॥ कहो मँगाऊँ अश्वरथ कहौ पालकी रग । आज्ञा पहले करी नहि योहि उठ लागी सग ॥ हम जान्यो नियरे भवन यह तो निकस्यो दूर । याते खबर परी नही तुम नेह रह्यो उर पूर ॥ और सुनो मो बीणको नीके धार्यो साज । मेरो जीवन प्राण है मेरो याही सो रग समाज ॥ तुम मानतहो खेल सो सुन मो मुख रसरीत । नारदशारदके सदा अति या बाजे सो प्रीत ॥ हौं सीखी उनकी कृपा सो हियकी गाढी लाग । ता प्रतापते करतहो सखी तुम मोसों अनुराग ॥ लाई न्यारे भवनमें बहुत करत सम्मान । अब एकान्त सुनाइये सखी सुघर साँवरी गान ॥ वीणा-के सुर साधके अंक लाय मुसकाय । गायो चितकी चोपसो जिन लीनो सभन रिझाय ॥ जैसिहि रजनी ऊजरी तैसोइ हिये हुलास। चपल करज तैसे चलैं भयो तैसोई परकाश ॥ अहो सहेली साँवरी कर इहि नगर निवास । असन बसन करहो सखी चल रह नित मेरे पास ॥ मोहि अंशा यह नगर वर यामे शंक न कोय । आवत जात रहौ सदा जो रावर हित होय ॥ सखिन और बाजे लिये प्यारी लई कर बीन । ग्रीव डुराई साँवरी अस गायो कुँवरि प्रवीन । जब उघरी सगीत गति प्यारी दे करताल । छदम विसर गई साँवरी लगी निरतन गति नँदलाल ॥ ह्वै त्रिभङ्ग ठाढी भई कर मुरलीको भाव ॥ फूँक चले अँगुरी चलै गइ भूल कपटको दाव॥राधा राधा रटलगी अधरनहीके माहिं । समझ समझ ललता कही प्यारी यह तो भामिन नाहिं ॥ भुजा असपर धरनको झुकी प्रियाकी ओर। सावधान होन साँवरी कह कौतुक रचत जु जोर॥

राज भवनमें आयके भूल न आदर पाय । स्यानी है के बावरी तू अपनो रूप बताय॥यासों प्रीति न तोरिये हौ लाइज्जु बुलाय । भेद हिये को बूझके देहु सादर वेग पठाय ॥ प्रीतमको देख्यो कहूँ इन लीनी गति चोर। परम चातुरी सीव यह गुण आछे लेत टटोर ॥ कान लाग चित्रा कह्यो है यह नन्दकिशोर । मैं लक्षण नीके लखे दृग चालत गौहीं कोर ॥ भटू वहुरि नीके परख बात न भॉडो फोर । लायकसों समझे विना अति गरुवो नेह न तोर ॥ भरी कटोरी अतरकी लाई सखी सुजान । सबकी चोली लगायके तिहि चोली परसे पान ॥ वह अधरनहीमें हँसी यह जो हँसी मुख खोल । है यह दूत शिरोमणि कह्यो सब सखियनसो बोल ॥ मेरीही भूलन सखी तब तुम लियो विलोक । प्रेमसिन्धु उमंगन जहां कह छद्म जो तिनको रोक ॥कवहुँ दूर कवहूँ प्रगट आवत भान निकेत। मधुप अनतविरमैं नहीं दृढ कियो कमलसों हेत॥वरण्यो कौतुक प्रेमको नेम नहीं मरयाद ।लखी ज्ञु रसिकनकी गली श्रीहरिवंश प्रसाद ॥ यह रस रसिक जो विलसहै जामे अति ही चोज । वृन्दावन हित वलिरुचें दपति केलि मनोज ॥ ५२९ ॥

राग भैरव ।

यह रसरीति प्रिया प्रीतमकी दिव्यदृष्टि जल जेसे री ॥ विपयी ज्ञानी भक्त उपासक प्राप्त सवनको तैसे री ॥ कदली खंभ पपीहा सीपी स्वाति बूँद जल जैसे री ॥भगवत कछू विषमता नाही भूमि भाग फल तैसे री ॥ ५३६ ॥

दोहा--जय जय जय व्रजचन्दकी, जय जय जय सुखराश ।
निज चरणनमें राखिये, एक तुम्हारी आश ॥

इति श्रीरागरत्नाकर प्रथमभाग समाप्त १

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ रागरत्नाकर।

द्वितीय भाग २



मथुरागमनलीला।

राग विहाग।

अब नँद गैयां लेहु सँभार। हौं जो तिहारे आन प्रगट्यो गैयां चराई दिन चार॥ दुध दही तेरी बहुतही खायो बहुतहि कीनी रार। मातु पितु तेरे चरित उरसे डारिहौ न बिसार॥कोकिला सुत काग पाले अत होत परार। तिहारे यशुमति आन विलमे दृग मत आसू डार॥ को पिता को पुत्र काको देखु मनहिं विचार। सूरके प्रभु चले व्रज तजि कपट कागज फार॥१॥

राग सोरठ।

यशुमति बार बारयह भाखे। है कोऊ व्रज हितू हमारो चलत गोपालहि राखे॥ कहा काज मेरे छगनमगनको नृप मधुपुरी बुलाय। सुफल्क सुत मेरे प्राण हरणको कालरूप हो आये॥ वरु यह गोधन कंस लेय सब मोहि बन्दी लै मेलै। इतनो मांगत कमलनयन मेरि आँखन आगे खेलै॥ को कर कमल मथानी गहिहै को दधि माखन खैहै। बहुरो इन्द्र वरसिहै व्रजपर को गिरि नख पर लैहै॥ वासर रैनि विलोकत जीयो सग लागि दुलराऊ। हरि बिछुरत जो रहो कर्मवश तो किहिकण्ठ लगाऊं॥

टेर टेर घर परत यशोदा अधर वदन बिलखानी। सूर सो दशा कहां लग वरणो दुखित नंदकी रानी ॥ २ ॥

राग बिहाग।

उठ चले ग्वाँढों यार। रब्बा इनकी करीये उठ चल्ले हुन गहिदे नाही होया साथ त्यार ॥ चारो तरफ चलन दी चरचा केही पडी पुकार। डाढ कलेज बल बल उठती बिन देखे दीदार। बुल्हा-शाह प्यारे बाझो ना रहसाँ घर बार ॥ ३ ॥

राग सोरठ।

उलट पग कैसे दीनो नन्द। छांडे कहां उभय सुत मोहन धृग जीवन मतिमन्द ॥ कै तुम धन जोवन मदमाते कै तुम छूटे वंद। सुफलक सुत वैरी भयो मोको लै गयो आनँदकन्द ॥ राम कृष्ण बिन कैसे जीवो कठिन प्रीतिको फन्द। सूरदास अब भई अभागिन तुम बिन गोकुलचन्द ॥ ४ ॥

राग बडहंस।

सांझ परी घर आये न कन्हैया। गोपी पूछे ग्वालनसो कहां गये मोरे ब्रजके बसैया ॥ घर रहे बछरू बन रही गैयां यमुना किनारे ठाढी यशुमति मैया। जाय पताल कालीनाग नाथ्यो फण ऊपर प्रभु निरत करैया ॥ लालदा[illegible] करजोरे चरण कमल पर चितको धरैया ॥ ५ ॥

धनाश्री[illegible]

ऊधो मोहि ब्रज [illegible] ही। [illegible]
अरु कुञ्जनकी छाही [illegible] ने ब[illegible]
बन जाही। ग्वाल [illegible]
[illegible]बाही ॥ यह मथुरा क[illegible]

जबहिं सुरत आवत वा सुखकी जिय उमँगत सुधि नाही ॥ अनगिन भाँति करी बहु लीला यशुदानन्द निबाही । सूरदास प्रभु रहे मौन गह यह कह कह पछताही ॥ ६ ॥

राग बिहाग ।

ऊधो ब्रजको गमन करो । मेरे बिना विरहिनी गोपिका तिनको दुःख हरो ॥ योग ज्ञान परबोधि सबनको ज्यो सुख पावे नारि । पूरणब्रह्म अलख परचो करि डारे मोहि बिसारि ॥ सखा प्रवीन हमारे हो तुम याते थापि महत । सूर श्याम कारण यहि पठवत ह्वै आवेगो सत ॥ ७ ॥

कवित्त।

कामरी लकुट मोहि भूलत न एक पल, घुँघुची ना बिसरो जाकी माल उर धारे है ॥ जा दिन ते छाके छूट गई ग्वालनकी प्रभु, तादिन ते भोजन न पावत सकारे है ॥ भने यदुवश जो पै नेह नन्दवशहु सो, वंसी ना बिसारो जो पे वशहु बिसारे है ॥ ऊधो ब्रज जैयो मेरी लैयो चौगान गेद, मैयाते कहैयो हम ऋणियां तिहारे हैं ॥ ८ ॥

कौन विधि पावें कर्म बलवान उदयभो, छाँछ छछियाकी ब्रज भामिनको भातहे ॥ मुक्तिहू पदारथ सो देचुके वाकी को अब, देहे जननीको कहा याते पछतात हे ॥ विधि जो बनाई आहि कौन विधि मेटे ताहि,ऐसे कर शोचत रहत दिन रात है ॥ ऊधो ब्रज जैयो मेरी कहो समुझाय मैया जापै ऋण बाढै सो विदेश उठि जात है ॥ ९ ॥

परम पवित्र तुम मित्रहो हमारे ऊधो, अन्तर विथाकी कथा मेरी सुन लीजिये ॥ ब्रजकी वे बाला जपे मेरी जप माला बाढी, विरहकी ज्वाला तामे तन मन छीजिये॥ मेरो बिसवास मेरी आस रस रास मेरी, मिलवेकी प्यास जास सावधान कीजिये ॥ प्रीति-

सो प्रतीति सो लिखी हैं रस रीतिसो सो, पत्रिका हमारी प्राण प्यारिनको दीजिये ॥ १० ॥

जैसे तुम दीनो तन मन धन प्राण मोहिं, तैसेही समाधि साध ध्यान धरवावोगी ॥ अलख अनाथ घट घटको निवास मोहि जान अविनाशी जोग जुगत जगावोगी ॥ आसन कै प्राणायाम साधि ध्यान धारणा ते,ब्रह्मको प्रकाश रस रास दरशावोगी ॥ ऐसे चित लावोगी तौ सुखमें समावोगी, औ मुक्ति पद पावोगी हमारे पास आवोगी ॥ ११ ॥

भेजो तुम योग हम लीयो धरि शीश पर, वडोहै परेखो चेरी कौनकी कहावेंगी ॥ अँसुवन माला लेके जपें नित राम नाम, लोचनके खप्पर लेके भिक्षाकोहू धावेंगी ॥ पहरेगी कन्था गलमें डारेंगी सेली माल, मर्घट पै बैठके मशानहू जगावेंगी ॥ ऊधोजी सो एती बात हरिजीसो कहो जाय, एती ब्रजबाला मृगछाला कहां पावेगी ॥ १२ ॥

राग देश ।

श्यामका सँदेशा ऊधो पाती लेके आयो रे । पाती तो उठाय लीनी छाती सो लगाय लीनी घूँघटकी ओटदेके उद्धव समुझायो रे ॥ वसती उजाड़ दीनी उजडी वसाय लीनी कुब्जा पटरानी कीनी मोहि न सुहायो रे । सूर श्यामजूके आगे ऐसे जाय कहियो ऊधो जीवत खसम किन भसम रमायो रे ॥ १३ ॥

राग टोडी ।

पाती सखि मधुवनसे आई । ऊधो हाथ श्याम लिख पठई तुम सुनोहो मोरी माई ॥ अपने अपने गृहसे दौरी ले पाती उर लाई । नयनन नीर नीरखं नहिं खण्डित प्रेम विथा बुझाई ॥

कहा करूं सुनो यह गोकुल हरि बिन कछु न सुहाई । सूरदास प्रभु कौन चूक ते श्याम सुरति बिसराई ॥ १४ ॥

राग जङ्गला होरी।

साँवरे सो कहियो मोरी ॥ शीश नवाय चरण गह लीजो करि विनती कर जोरी। ऐसी चूक कहा परी मोसो प्रीति पाछली तोरी ॥ सुरति ना लीनी बहोरी ॥ भूषण बसन सभी तज दीने खान पान विसरो री। विभूति रमाय योगिन होय बैठी तेरोही ध्यान धर्‍यो री ॥ अव मैं कैसे करो री ॥ निशि दिन व्याकुल फिरत राधिका विरह व्यथा तनु घेरी । बार कलेजा जार दियो है अब मै कैसे करो री ॥ बेग चल आवो किशोरी॥ रोम रोम विप छाय रहो है मधु मेरे वैर पर्‍यो री । श्याम तुम्हे ढूँढ़त कुंजनमे शीशलटा गहि झोरी ॥ कहो हरि हो हरि होरी ॥ जा दिन गमन कियो मथुरामे गोपिन सुध विसर्‍यो री । हमको योग भोग कुब्जाको कहा तकसीर है मोरी ॥ कहा कछु कीनी चोरी ॥ सूरदास प्रभु सो जाय कहियो आय अवधि रही थोरी । प्राणदान दीजो नँदनदन गावत कीरति तोरी ॥ प्रीति अब कीजे बहोरी ॥ १५ ॥

सवैया।

जो मथुरा हरि जाय वसे हमरे जिय प्रीति बनी रही सोऊ ॥ ऊधो बडो सुख येहू हमें अरु नीके रहें वह मूरति दोऊ ॥ हमरेहु नामकी छाप परी अरु अन्तर बीच अहै नहि कोऊ ॥ राधाकृष्ण सभी तो कहें पर कूवरि कृष्ण कहे नहि कोऊ ॥ १६ ॥

कवित्त।

जाकी कोख जायो ताको कैद करवाय आयो, धाय कर मारी नारी निठुर मुरारिहैं ॥ जेती व्रजनारी तेती मिल मिल मारी

अन,-मिल हूं तो मारी जो मिलिहैं ताहि मारि हैं ॥ सुनरी ए चेरी तेरी सौंह मे कहत वे तो,हरि सरस नयन आँसुहू न ढारिहैं ॥ बडे ऐ शिकारी पर इन्हें न सँभारी नारी,मारबेको नवल कन्हैया तलवारि हैं ॥ १७ ॥

याही कुञ्ज तर वह गुंजत भँवर भीर, याही कुज तर अव शिर न धुनत है॥याही रसनाते करी रसकी रसीली बातें,याही रसना ते अब गुण न गनत हैं ॥ आलम बिहारी विन हृदय अचेत भये, एहो दई हित कहे कैसेकै बनत हैं ॥ जेही कान्ह नयनके तारे हुते निशि दिन,तेही कान्ह कानन कहानीसी सुनत है ॥ १८ ॥

आयो आयो भयो ऊधो अब ब्रज मण्डलमें, रागमे कुराग योग रीतको सुनायो है ॥ झोली झण्डा गूदडी और भस्म मुद्रा काननमे,हाथनमें खप्पर ये स्वाँगले दिखायो है ॥ संयम नियम ध्यान धारणा हठासन हो,ब्रह्मको प्रकाश रस रास दरशायो है॥ कूबरीपै पढ़ आयो वेदको भुलाय आयो,रथ चढ़ आयो अनरथ गढ़ लायो है ॥ १९ ॥

जोगी तजे जग हम जग जोग दोऊ तजे,जोगी लावे छार हम छारहूके मटिहैं॥जोगी बेधैं कान हम हीये अरु प्रान बेधें, जोगी कहें नाथ हम नाथ नाथ रटि है ॥ जोगी कान मुद्रा हम भूपण बनाय राखे, म्हारे शिर केश बहु जोगी शिर जटि है ॥ जानके अजान आज ये कहा भये ऊधोजी, जोगीकी जुगत सो वियोगी कहा घटि हैं ॥ २० ॥

श्याम तन श्याम मन श्यामही हमारो धन, आठो याम ऊधो हमे श्यामही सो काम है॥ श्याम हीये श्याम जीये श्याम विन नाहिं तीये, आंधे कीसी लाकरी अधार श्याम नाम है ॥ श्याम गति श्याम मति श्यामही है प्राणपति, श्याम सुखदाई सो

भलाई शोभाधाम है॥ ऊधो तुम भये बौरे पाती लैके आये दौरे, योग कहाँ राखे यहाँ रोम रोम श्याम है ॥ २१ ॥

राग मलार।

जित देखो तित श्याम मई है। श्याम कुंज वन यमुना श्यामा श्याम गगन घन घटा छई है ॥ सब रगनमें श्याम भरो है लोग कहत यह बात नई है। मे बौरनके लोगनहीकी श्याम पुतरिया बदल गई है ॥ चन्द्रसार रवि सार, श्याम है मृगमद श्याम काम विजई है ॥ नील कण्ठको कण्ठ श्याम है मनों श्यामता भेलि बई है ॥ श्रुतिको अक्षर श्याम देखियत दीप शिखा पर श्याम तई है। नर देवनकी मोहर श्यामा अलख ब्रह्म छवि श्याम भई है ॥ २२ ॥

राग देश।

कुब्जाने जादू डारा जिन मोह्यो श्याम हमारा री। निशिदिन चलत रहत नहिं राखे इन नयनन जलधारा री ॥ अब यह प्राण कैसे हम राखें बिछुरे प्राण अधारा री ॥ ऊधो तबते कल न परत है जबते श्याम सिधारा री ॥ अबतो मधुवन जाय ले आवो सुन्दर नन्ददुलारा री। सूरदास प्रभु आन मिलावो तन मन धन सब वारा री ॥ २३ ॥

राग नट।

ऊधो धनि तुमरो व्यवहार। धनि वे ठाकुर धनि तुम सेवक धनि धनि परसन हार ॥ आमको काटि बबूर लगावत चन्दन झोकत भार। शाहको पकर चोरको छोरत चुगलनको अधि-कार ॥ हमको योग भोग कुब्जाको ऐसी समझ तिहार। हस मयूर शुकापिक त्यागत कागनको इतवार ॥ तुम हरि पढे चातुरी

चकोरन हूले तीया तरन तेज मोपै सह्यो न जाय जब मैं तज
प्राण फिर क्या करोगे आय ॥ ३२ ॥

राग धनाश्री ।

हरिके संग में क्यो ना गई । हरिसँग जाती कंचन बन अ
अब माटीके मोल भई ॥ बरजो न कोई इन दूतिनको ज
बैर मोहि रोक लई । हरि बिछुरन इक मरन हमारा नई दासी स
प्रीति भई ॥ छल गयो काल बहुर्‌ि नहिं आवे अपने हाथसे
विदा दई । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको पिछली प्रीति अ
नई भई ॥ ३३ ॥

राग बसंत ।

जा जा रे भँवरा दूर दूर । तेरो सो अग रग हे उनको जि
मेरो चित कियो चूर चूर ॥ जबलग तरुन फूल महकत है तबल
रहत हजूर जूर । सूरश्याम हा मतलब मधुकर लेत कलीरस
घूर घूर ॥ ३४ ॥

राग बिहाग ।

मधुकर श्याम हमारे चोर । मन हर लियो माधुरी मूरत निरखि
नयनकी कोर ॥ पकरेहुते आन उर अन्तर प्रेम प्रीतिके जोर
गये छुडाय तोर सब बन्धन देगये हँसन अकोर ॥ उचक परे
जागत निशि बीते तारे गिनत भई भोर । सूरदास प्रभु हरि मन
मेरो सरवस लै गयो नन्दकिशोर ॥ ३५ ॥

राग केदार ।

नाहि न रह्यो मनमें ठौर । नन्दनन्दन अछत कैसे आनिये
उर और ॥ चलत चितवत दिवस जागत स्वप्न सोवत रात । हृद-
यते वह श्याम मूरति छिन न इत उत जात ॥ श्यामगात सरोज

आनन ललित गति मृदु हास सुर ऐसे रूप कारण मरत लोचन प्यास ॥ २६ ॥

राग सारंग।

विन गोपाल वैरन भई कुंजें। तब वे लता लगत अति शीतल अब भई विषम ज्वालकी पुंजें ॥ वृथा वहत यमुना खग बोलत वृथा कमल फूलत अलिगुंजें। सूरदास प्रभुको मग जोवत अँखियां भईं अरुण ज्यों गुंजें ॥ ३७ ॥

राग मलार।

निशिदिन वरसत नयन हमारे। सदा रहत पावसऋतु हमपर जबसो श्याम सिधारे ॥ अजन थिर न रहत अँखियनमें कर कपोल भये कारे। कंचुकि पट सूखत नहि कबहू उर बिच बहत पनारे ॥ आंसू सलिल भये पग थाके बहे जात सित तारे। सूरदास अब डूबत है ब्रज काहे न लेत उबारे ॥ ३८ ॥

हरि परदेश बहुत दिन लाये। कारीघटा देख बादरकी नयन नीर भर आये ॥ पालागो तुम वीर बटाऊ कौन देशते धाये। इतनी पतियाँ मोरी दीजो जहां श्याम घन छाये ॥ दादुर मोर पपीहा बोलें सोवत मदन जगाये। सूरदास स्वामीके बिछुरे प्रीतम भये पराये ॥ ३९ ॥

राग देश।

नाथ अनाथनकी सुधि लीजे। तुम बिन दीन दुखित हैं गोपी वेगहि दर्शन दीजे ॥ नयनन जल भर आयें हरि बिन ऊधो को पतियाँ लिख दीजे। सूरदास प्रभु आस मिलनकी अबकी वेर हरि आवन कीजे ॥ ४० ॥

राग बिहाग।

पिया विन नागिन कालडी रात। कबहूँ यामिन होत जुन्हैया डस उलटी ह्वै जात ॥ यन्त्र न फुरत मन्त्र नहिं लागत आयु सिरानी जात। सूर श्याम विन विकल विरहिनी मुर मुर लहरी खात ॥ ४१ ॥

राग भैरवी।

अँखिया हारि दर्शनकी प्यासी। देख्यो चहत कमल नयनको निशिदिन रहत उदासी ॥ केसर तिलक मोतिनकी माला वृन्दावनके वासी। नेह लगाय त्यागगये तृण सम डार गये गलफाँसी ॥ काहूके मनकी को जानत लोगनके मन हाँसी। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश विन लेहा करवटकाँसी ॥ ४२ ॥

ठुमरी खम्माच।

बतादे सखी कौन गली गये श्याम। रैनि दिवस मोहिं तलफत बीती बिसर गये धन धाम ॥ गोकुल ढूंढ वृन्दावन ढूंढ्यो मथुरामें होगई शाम ॥ ४३ ॥

राग आसावरी।

कहीं देखे री घन श्यामा ॥ मोरमुकुट पीतांबर सोहे कुण्डल झलकें काना। सांवरी सूरत पर तिलक विराजै तिससों लगे मोरे प्राना ॥ वरसानेसों चली गुजरिया नन्दगामको जाना। आगे केशो धेनु चरावें लगे प्रेमके वाना ॥ सागर सूख कमल मुरझाना हंसा कियो पयाना। भौंरा रहगये प्रीतिके धोके फेर मिलनको जाना ॥ वृन्दावनकी कुञ्जगलीमें नूपुर रुनझुन लाना। मीरा वाईको दरशन दीजो व्रज तज अनत न जाना ॥ ४४ ॥

कृपाकर दरशन दीजो हरी। नित प्रति ठाढी अपने द्वारे निरखो पंथ खरी ॥ छिन छिन अन्तर बाहर आवो शांति न होत घरी। विरहो अगिन रची प्रति रोमन हाहा दग्ध करी॥ तेरी लगन लगी मोरे अन्तर नाहिन जात जरी। दुनीदास प्रभु तुमरे दरश बिन लोटत धरणि परी॥ ४५ ॥

ऐसी है कोई सखी हमारी मेरे हरिजीको आन मिलावे री। तन मन धन मै तिसपर वारूं जो इक पल नजरी आवे री॥ करशृङ्गार मैं सेज बिछावो सो मोहिं कछु न सुहावे री। अहिनिशि या तनु सकट उपजे तलफत रैनि बिहावे री॥ क्या करूं मन कहूं न लागत मे फिरती हूं प्रेमप्यासी री। दुनीदास धीरज ना होवे बिन देखे अविनाशी री ॥ ४६ ॥

सुन्दर श्याम देखन दी आशा नयनन बान परी। चार याम मोहि तलफत बीते रहगइ एक घरी॥ भूषण बसन भवन नहि भावे बिरह वियोग भरी। दया सखी अब वेगि मिलो क्यों ना हौअकुलात खरी ॥ ४७ ॥

ठुमरी।

छतियाँ लेहु लगाय सजन अब मत तरसावो रे। तुम बिन तलफत प्राण हमारे नयनन सो बहे जलकी धारे। बाढी है तनु बिरह पीर सूरत दिखलावो रे। हरीचन्द पिया गिरिवरधारी पैयां परूं जाऊ बलिहारी अब जिया नहिं धरत धीर जल्दी उठि धावो रे ॥ ४८ ॥

राग खमाच।

सजन मुखड़ा दिखलाजा रे। तेरे दरशनको तरसे हैं नयन बालेपनकी लागी लगन छूटत नाही करो कोटि यतन दिखलाजा मरत मोहन जरा बँसिया बजाजा रे ॥ ढूँढ फिरी सारा बन बन मैं

तऊ न पाये नन्दके नन्दन विरमाय राखे काहू सौतन रसिया महाराजा रे ॥ लेकर भसम रमाई बदन सब छाँड़ उतारे भूपण वसन तेरे कारण मैं भई योगिन कुलकी तजि लाजा रे ॥ जो कछु चूक परी हमपै अब माफ करो नँदके नन्दन श्रीधर पिया आजा जल्दीसे मोहि गरवा लगाजा रे ॥ ४९ ॥

राग विहाग।

मिलजाना हो प्यारे नन्दकिशोर। देख नजर भर घायल कीनो बांके नयनादी कोर ॥तेरे दरश बिन फिरो दिवानी ढूंढती चहुँ ओर। जानकीदास तुसी देख हपां जैसे चन्द चकोर॥५०॥

राग परज।

कबलग तरसाये रहिये पलक ॥ नंदनन्दन, व्रजराज साँवरो दरशन दीजे तनक तनक। बिन दरशन मोहि नींद न आवे जबते सुनी मुरलीकी भनक ॥ श्यामसुन्दर बांकी माधुरी मूरत आउ मोरे अँगना छनक छनक । जानकीदास बसो जो दृगनमें करि राखों उर नयन पलक ॥५१ ॥

राग खेमटा।

रे निरमोही छबि दरशाय जा। कान चातकी श्याम बिरह घन मुरली मधुर सुनाय जा ॥ ललित किशोरी नयन चकोरन द्युति मुख चंद दिखाय जा। भयो चहत यह प्राण बटोही रूसे पथिक मनाय जा ॥ ५२ ॥

राग वडहंस।

विरहोने नोकां झोकां वे लाइयां कौन असांवल रोके ॥ सो गल मेरी झोली पैंदी जो मैं कहिंदी लोके ॥ अज़ानी गललावे असानूं तिखीयां नोक चभोके॥ वज वे राही वज माही वल खडी

उर्डाकां वाटां ॥ मे जातासी इशक सुखाला मुसकल इस दीयाँ घातां ॥ मुख देखन नू फिरॉ दिवानी दर दर देनीहां होके॥ आखी माही गलवाहि तुसाडे अरज करां मे खलोके ॥ इशक तुसाडेने घायल कीती एह गल आँखी रोके ॥ सूरत सोहनी दसके मेराली तोई मनमोहके ॥ आपे टुम्ब्र जगायाई मैनूं हँसके मुख दिखलाके ॥ जाँ म मोही तॉ तू छिप्या विरहोनूं मोड़भुवा- के ॥ इस विरहो मे वल वल कुट्टी हँसदाहै पास खलोके । कैदर कूकॉ कूक सुनावो लाया नेह मैं आपे ॥ जॉ मैं जग विच रोशन होइयॉ रहन न देंदे मापे ॥ दु:खो सूलॉदा हार में पहिदा हत्थी आप परोके ॥ मैं दरमॉदी दरश तेरे दी मुख दिखला इक वारी॥ तें मुख डिठियॉ सब दुख जांदे तू तबीब है भारी ॥ मुख देखन नू फिरॉ दिवानी तैंडी सुहागन होके ॥ बखश रब्बा वे मैं अवगुण हारी तूहीं बखश अलाही ॥ एकोनजर तुसाडी काफी दु:ख न रहिदा काई ॥ बरकत नाल साहिब दे बुल्हिया देई दीदार खलोके ॥ ९३ ॥

राग पीलू।

सुरतिया रे लागरही हरि सो । आवन कह गये अजहूं न आये वीतिगयॉ बरसो ॥ यह तो जोवन चार दिहाडें आज कल्ह परसो। अँबुआ मौले केसू फूले और फूली है सरसो ॥ ९४ ॥

कवित्त ।

योग देन गयो हो वियोग वारि वारिधिमे, बूडत बच्यो हो नाथ नारी नैन यूँ वहे ॥ गगा हू सहस्र धारा अधिक सुधार जान, वरषा न होय जो रहोगे गिरिहू गहे ॥ एतो जल भूमि न समाये कहूँ वारिधिमे, मुनी पै न अच्यो जात कान खोल हो कहे ॥ कवि प्रहलाद जो मिलाप पाल बांधो नाहि, बटके वहूक पात सॉवले भले रहे ॥ ९५ ॥

बहुत दिनानमे विदेश होय आये मेरे, प्यारे मनमोहन बधाये सब गावो री ॥ नाचो रस राचो नीकी नीकी गति ले ले कर, नीकी नीकी भाँतिन सो भावन बतावो री ॥ ताल कठताल औ तमूरा मुरचंगन सो घुंघरू बजायके मृदंग सो मिलावो री॥ नन्दके कुमार रिझावारको रिझावो आज, सकल समाज कर रंग सरसावो री ॥ ९६ ॥

विनयके पद।

दोहा।

कदम कुंज ह्वै हो कबै, श्रीवृंदावन मांह। ललित किशोरी लाड़िले, बिहरैंगे तिहि छाँह ॥ कब हौं सेवा कुंजमें, ह्वै हौं श्याम तमाल । लतिका कर गहि विरमि हैं, ललित लडैतीलाल॥सुमन वाटिका विपिनमें, ह्वै हो कब हौ फूल। कोमल कर दोउ भावते, धरि हैं बीन दुकूल ॥ कालीदह कब कूलकी, ह्वै हौ त्रिविध समीर। युगुल अंग अँग लागि हौं, उडि हैं नूतन चीर ॥ मिलि है कब अँग छार ह्वै, श्रीवन वीथिन धूर। परि है पदपंकज युगुल, मेरी जीवन मूर ॥ कब गहवरकी गलिनमे, फिरि ह्वौ होय चकोर। युगुल चन्द मुख निरखि हौं, नागरि नवलकिशोर ॥ कब कालिन्दी कूलकी, ह्वै हौं तरुवर डार। ललितकिशोरी लाडिले, झूले झूला डार ॥ श्यामा पद दृढ गहि सखी, मिलिहैं निश्चय श्याम। ना माने दृग देखले, श्यामा पद बिच श्याम ॥ ९७॥

कवित्त।

दीनबन्धु दीनानाथ ब्रजनाथ रमानाथ, राधानाथ मो अनाथकी सहाय कीजिये। तात मात भ्रात कुलदेव गुरुदेव स्वामी, नातो तुमहींसो मो विनय सुन लीजिये ॥ रीझिये निहाल देर कीजिये न झीनी कहूं, दीन जान दास मोहि आपनाय लीजिये।की-

जिये कृपा कृपाल सॉवरे विहारी लाल, मेटि दुख जाल वास वृन्दावन दीजिये ॥

गिरि कीजे गोधन मयूर नव कुजनको, पशु कीजे महाराज नन्दके वगर को ॥ नर कीजे तौन जौन राधे राधे नाम रटे, तट कीजे वर कूल कालिंदी कगर को॥इतनेपै जोई कछु कीजिये कुँवर कान्ह, राखिये न आन फेर हठीके झगर को ॥ गोपी पद पकज पराग कीजे महाराजतृ,ण कीजे गवरेई गोकुलनगर को॥५८॥

सवैया।

मानुषहोऊँ वही रसखानि बसौ मिल गोकुल गॉवके ग्वारन। जो पशु होउँ कहा वश मेरो चरो पुनि नन्दकि धेनु मँझारन ॥ पाहन होहुँ वही गिरिको जो कियो ब्रज छत्र पुरन्दर धारन। जो खग होउ बसेरो करौ वहि कूल कलिंदी कदम्बकि डारन ॥५९॥

राग चैतीगौरी।

यमुना पुलिन कुञ्ज गहवरकी कोकिल ह्वै द्रुम कूक मचाऊँ। पदपंकज प्रिय लालमधुप ह्वै मधुरे मधुरे गुज सुनाऊं ॥ कूकर ह्वै वन वीथिन डोलो वचे सीथ रसिकनके पाऊं। ललित किशोरी आश यही मम ब्रज रज तज छिन अनत न जाऊं ॥ ६० ॥

राग देश।

अब विलंब जिन करो लाडिली कृपादृष्टि टुक हेरो। यमुना पुलिन गलिन गहवरकी विचरू साझ सवेरो ॥ निशिदिन निरखो युगल माधुरी रसिकनते भटभेरो। ललित किशोरी तन मन अकुलत श्रीवन चहत बसेरो ॥६१ ॥

राग यमन।

प्यारी जी मोतनहू टुक हेरो। श्रीवन द्रुमन लतनके नीचे रसमय चहू गानगुन तेरो॥ आन न जानो अन्य न मानो तृही कृपापद

साधन मेरो । ललित माधुरी आश पुरावो अव जिन करो इहा अवसेरो ॥ ६२ ॥

कवित्त ।

एक रज रेणुका पै चितामणि वारि डारों वारि डारो विश्वसेवा कुञ्जके विहार पै ॥ लतनके पत्तन पै कोटि कल्प वारिडारों रंभा-हूको वारि डारो गोपिनके द्वारपै ॥ ब्रजकी पनिहारन पै शची रची वारि डारो वैकुण्ठहू वारि डारो कालिंदीकी धार पै । कहे अभैराम एक राधाजूको जानतहो देवनको वारि डारो नन्दके कुमार पै ॥ ६३ ॥

राग झिंझोटी ।

जो कोउ वृन्दावन रस चाखे । भवन चतुर्दश तिहूँ लोक लौ सुप-नेहुँ नहि अभिलाखै ॥ ललित किशोरी परे कोनमे श्याम राधिका भाखे । युगल रूप विन पलक न खोलै लोभ दिखावो लाखै॥६४॥

राग धनाश्री ।

हमारे श्रीवृन्दावन उर और । माया काल तहां नहि व्यापै जहा रसिक शिरमौर॥छूट जात सत असत वासना मनकी दौरा दौर । भगवत रसिक वतायो श्रीगुरु अमल अलौकिक ठौर॥६५॥

ऐसे वसिये व्रजकी वीथन । साधुनके पनवारे चुन चुन उदर जो भरिये सीथन ॥ पेडेके सव वृक्ष विराजत छाया परम पुनीतन । कुज कुंज प्रति लोट लोट कर रज लागे रँगरीतन ॥ निशिदिन निरख यशोदा नन्दन अरु यमुना जल पीतन । परशत सूर होत तनु पावन दर्शन करत अतीतन ॥ ६६ ॥

राग विलावल ।

कहा करूं वैकुण्ठहि जाय । जहँ नहिं नन्द जहां न यशोदा जहाँ न गोपी ग्वाल न गाय ॥ जहा न जल यमुनाको निमल

और नही कदमन की छाय। परमानन्द प्रभु चतुर ग्वालिनी ब्रज रज तज मेरी जाय बलाय ॥ ६७ ॥

राग गौरी।

ब्रजरज मोहनी हम जानी । मोहन कुंज मोहन श्रीवृन्दावन मोहन यमुना पानी ॥ मोहनी नारि सकल गोकुलकी बोलत अम्मृत वानी । श्रीभट्टके प्रभु मोहन नागर मोहनी राधा रानी ॥ ६८ ॥

राग शहानो ।

धनि धनि श्रीवृन्दावन धाम। जाकी महिमा वेद वखानत सब-विधि पूरणकाम ॥ आश करत है जाकी रजकी ब्रह्मादिक सुर-ग्राम । लाडिली लाल जहां नित विहरत रति पति छवि अभि-गम ॥ रसिकन को जीवन धन कहियत मगल आठो याम । नारायण विन कृपा युगल वर छिन न मिलै विश्राम ॥ ६९ ॥

राग दादरा ।

ऐसो कब करि है मन मेरो । कर करवा गुञ्जनके हरवा कुंजन माहिं बसेरो ॥ ब्रजवासिनके टूक झूँठ अरु घर घर छॉछ महेरो। भूख लगे तब मांग खाय हो गिनो न सांझसबेरो ॥ इतनी आश व्यासकी पुजिये मेरो गांव न खेरो ॥ ७० ॥

राग परज ।

भजो मन वृन्दावन सुखदाई । अवनी कनक सुहाई ॥ अवनी कनक सुरग चित्र छबि कालिंदी मणि कूले । लतन रहे भर पाय सखी यह कचनके द्रूम मूले ॥ जलज थलज रहे विकस जहां तहँ वरण वरण छबिछाई । सहज गेन सुखदेन विराजत वृन्दावन सुखदाई ॥ भजो० ॥ राजत नवल निकुजाहिं । लालन निरख होत

सुख पुजहि । निरख होत सुख पुंज कमल दल रचि है सुन्दर सैन । वहत समीर त्रिविध गुण लीने आकर्षत मन मैन ॥ डोलत केक कीर पिक बोलत जित तित मधुवर्न गुंजहिं । रत्न खचित फूलन सो फूली राजत नवल निकुंजहिं ॥ भजो० ॥ करत निकुज विहार । सखियन प्राण अधार रसिक वर नवल किशोर किशोरी । हँस मुर चित चोरत प्यारेको सभ अंग नागर गोरी ॥ अति विलास नव नव रुचिउपजत वल किंकिणी झंवार । अति प्रवीन रति कोककलनमे करत निकुञ्ज विहार ॥ भजो०॥ निर्ख निर्ख बल जाई । श्रम जल कण झलकाई ॥ श्रम जल कण रहे झलक वदन विच कहुँ कहुँ पीक जु सोहे । हस मुर चित चोरत प्यारेको ऐसी को जु न मोहे ॥ चितहि चिह्न रजनीके सजनी नयननमें मुसकाई । जै श्रीहित ध्रुव सखी सरस रंग भीनी निर्ख निर्ख वल जाई ॥ भजो ॥ ७० ॥

राग विहार ।

वृन्दावन विपिन सघन वशीवट पुलिन रमन निधि वन कोकिला वन मोहन मन भावे । सेवा कुञ्ज सुखको पुज जहां राजत पिया प्यारी ललितादिक संग लिये उमँग उमँग गावे ॥ यमुना जल अति गंभीर कदमनकी जहां भीर ललितलता कुसुम भार अपने बरसावे । हंस मोर कोकिला पपीहा जहां शब्द करे पशु पक्षी दास कान्हर राधा कृष्ण राधा कृष्ण राधा कृष्ण गावे ॥ ७२॥

राग धनाश्री ।

नमो नमो वृन्दावनचंद । आदि अनन्त अनादि एक रस पिय-प्यारी विहरत स्वच्छन्द ॥ सत चित आनद रूप घन खग मृग द्रुम बेली और वृन्द । भगवत रसिक निरन्तर सेवत मधुप भये पीवत मकरन्द ॥ ७३ ॥

कवित्त।

नन्दके आनन्दहो मुकुन्द पर्मानंद हरी, काटो यमफन्द मोहि भयसो वचाइये। नही जानो ज्ञान ध्यान योग यज्ञ नाहिं कियो, भरयो मान अहकार कैसे तोहिं ध्याइये ॥ सुनो कृष्ण हरी जैसी करी सो करी दयालु, तैसे दीन जान मेरी पीरको मिटाइये। सुख-के निधान दान दीजे प्रेम भक्ति दृ को, चरेणन चित्त मयारामको ऊगाइये ॥ ७४ ॥

जानके पतित तारो आनके विरद धारो, काढो भुजा तानके कहाँसो देर डारी है ॥ तार्यो है सुदामा यार उबार्यो है प्रहलाद, द्रौपदीकी लाज राखी सभा देखे सारी हे ॥ गज नेक ध्यायो प्रभु छोडि धायो गरुडहू, व्रजको वचायो ताते नाम गिरिधारीहै ॥ दास तो पुकारे प्रभु काटि कष्ट कोटि भारे, अरजी हमारी आगे मरजी तिहारी है ॥ ७५ ॥

आप सव नेरे और दुरकी पछानतहो, छिपी नाहि कूरकी रु, साहिव शऊर की ॥ निकुता निवाजी कर राजी छिन ही मे होत, कर इतराजी नाहि सुनिके कसूरकी । तुमसो न दूसरो दयालु श्रीविहारी लाल, जाहि लाज आवे निज जनके जहूर की॥गरजी विचारे को तो अरजी किये ही वने,माननी न माननी सो मरजी हुजूरकी ॥७६ ॥

दीनानाथ दयासिधु आरत हरण भारी, द्रौपदी उवारी तैसे मोहूको उवार ल्यो । गणिका उवारी गजसंकट निवारी, प्रहलाद हितकारी दुःख दारुण निवार ल्यो ॥गोतमकी तिय तारी चरणन रज धारी, गऊ हितकारी भवसागर उधार ल्यो । टेरे प्रभु नन्दलाल दीनवधु भक्तपाल, करुणा कृपाल लाल विरद सम्हार ल्यो ॥ ७७ ॥

मैं तो हूँ पतित आप पावन पतित नाथ, पावन पतित हो तो पातक हरोईगे॥मैं तो महादीन आप दीनबंधु दीनानाथ, दीनबंधु हो तो दया जीयमें धरोईगे ॥ मैं तो हूँ गरीब आप तारक गरीब-नके,तारक गरीब हो तो विरद बरोईगे॥ मेरी करणीपे कछु सुकर न काज कान्ह, करुणा निधान हो तो करुणा करोईगे ॥ ७८ ॥

श्याम घन तन पर बिज्जुसे दशन पर, माधुरी हँसन पर खिलत खगी रहै॥ खौर वारे भाल पर लोचन विशाल पर, उर वनमाल पर जुगत जगी रहै ॥ जंघ युग जानु पर मंजु मुर-वान पर, श्रीपति सुजान मति प्रेम सो पगी रहै॥ नूपुर नगन पर कुञ्जसे पगन पर, आनन्द मगन मेरी लगन लगीरहै ॥ ७९ ॥

जौन हाथ वामन हो बलि द्वारे दान मांग्यो, जौन हाथ कूबरी मिलाई गहि गात सो ॥ जौन हाथ प्रहलाद तातसो उबार लीनो, जौन हाथ कस मार्‍यो बलभद्र साथ सो ॥ जौन हाथ गोपिनको गिरिवर ओट कीनो,जौन हाथ कालीनाग नाथ्यो परजात सो॥ हौ तो कहूँ बार बार सुनो नाथ एक बार, वही हाथ गहो मोको हाथीवाले हाथ सो ॥ ८० ॥

सवैया।

दीनदयालु सुने जब ते तबते, मनमे कछु ऐसी बसी है॥
तेरो कहायके जाऊँ कहां, तुमरे हितकी पट खेंचि कसी है ॥
तेरो ही आसरो एक मलूक, नहीं प्रभु सो कोऊ दूजो यसी है ॥
एहो मुरारि पुकारि कहो अब, मेरी हँसी नहि तेरी हँसी है॥८१॥

कवित्त।

मोरके मुकुट वारो धरे वेश नटवारो, छुटी लोल लट वारो जगत उज्यारो है॥सांवरे बरन वारो मुरली धरन वारो,संकट हरन वारो नन्दजूको प्यारो है॥ दानव दलनवारो छबिको छलन वारो,

मन्दसी चलन वारो पोखी उर धारो है ॥ कञ्जसे चखन वारो भृगुलता लख वारो, मोरपच्छ वारो सो हमारो रखवारोहै ॥८२॥

देवहग तारे तोहि गावे वेद चारे तारे, पतित अनेक जेते नभमे न तारे हैं ॥ रतनारे नैननते नेकहू निहारे नाथ कोटि कोटि दीन-नके दारिद विदारे है ॥ श्रीपति पुकारे कहै नीरद वरन वारे, राधाजूके प्राणप्यारे यशुदाके बारे हैं ॥ नन्दके दुलारे धराधरके धरन हारे, मोरपच्छवारे सो हमारे रखवारे है ॥ ८३ ॥

राग जंगला।

श्याम सुन्दर मनमोहनी मूरत सुन्दर रूप उजारी रे ।चरण-कमल पिड़ुरी जंघन पर सोहत कटि लचकारी रे ॥ नाभि गँभीर हृदय अतिकोमल कृपासिंधु बनवारी रे। भुज आजानु करन बिच बंसी लकुट लिये गिरिधारी रे ॥ ग्रीव चिबुकमृदु हँसन मनोहर हौं लखि छवि वलिहारी रे। नासा नयन भौंह अति बांकी जिन मोही ब्रजनारी रे ॥ श्रवण कपोलन पर छूटी वे नागिन लट वल-हारी रे। भाल विशाल पेच शिर जूटा मुकुट झुलन सुखकारी रे ॥ युगल किशोर मोरपख धारी अब क्या सुरत विसारी रे ॥८४ ॥

राग भैरवी।

मेरी तो विहारी जी प्यारे तोहि लाज। माया फन्द गलेमें डारचो जग भमायो बेकाज ॥ भवसागरके पार जानको पायो नाम जहाज । वलिहारीका बेडा पार उतारो अपनो जान ब्रजराज ॥ ८५ ॥

राग बिलावल।

माधोजू जो जन ते बिगरै । सुन कृपालु करुणामय कवहूं प्रभु नहि चित्त धरै ॥ ज्यो शिशु जननि जठर अंतरगत शत अपराध करे। तऊ तनय तनु तोष पोष चित विहसत अंक भरै ॥ यदपि

विटप जड हतन हेत कर कर कुठारपकरै । तदपि स्वभाव सुशील सुशीतल रिपु तन ताप हरै ॥ कारण करन अनन्त अजित कह किहिविधि चरण परै । यह कलिकाल चलत नहि मोपै सूर शरण उवरै ॥ ८६ ॥

राग भैरवी ।

जे जन शरण गये ते तारे । दीनदयालु प्रगट पुरुषोत्तम सुनिये नन्ददुलारे ॥ माला कण्ठ तिलक माथे दे शंख चक्र वपु धारे । जितने रवि छायाके कनका तितने दोष हमारे ॥ तुम्हरे दरश प्रताप तेज ते तत्क्षण ते सब टारे । मानिकचन्द प्रभुके गुण ऐसे महापतित निस्तारे ॥ ८७ ॥

राग बरवा ।

शरण गये प्रभुको न उबारे । जित जित भीर परी भक्तनको चक्र सुदर्शन तहाँ सम्हारे ॥ महाप्रसाद बैठ अम्बरीषहि दुर्वासाको कोप निवारे । ग्राह ग्रसत गजको जल डूबत नाम लेत वाको दुःख टारे ॥ सूर श्याम विन करै और को रंगभूमिमें कंस पछारे ॥ ८८ ॥

राग बिलावल ।

अबके माधो मोहि उधार । मगन होत भवसिन्धुमें कृपासिन्धु मुरार ॥ नीर अति गंभीर माया मोह लहर तरंग । लिये जात अगाधको वर गहे ग्राह अनंग ॥ मीन इंद्रिय अतिहि काटत पेट अघ शिर भार । भूमि पाइन जात जितकित उरझ मोह सिवार ॥ क्रोध दंभ भयानक तृष्णा पवन अति झकझोर । नाहि चितवत देत सुत त्रिय नाम नौका ओर ॥ पर्यो बीच विहाल विह्वल सुनहु करुणामूल । श्याम भुज गहि काढि डारहु सूर जन ब्रजकूल ॥ ८९ ॥

राग धनाश्री।

कबहूँ नाहिन गहर कियो। सदा स्वभाव सुलभ सुमिरण वश भक्तन अभय दियो॥ गाय गोप गोपी जन कारण गिरि कर-कमल लियो। अघ अरिष्ट केशी काली मथ दावा अनल पियो॥ कसवंश वध जरासन्ध हति गुरुसुत आन दियो। कर्षत सभा द्रुपदतनयाको अम्बर आन छियो॥ काको शरण जाउँ यदुनन्दन नाहिन और बियो। सूर श्याम सर्वज्ञ कृपानिधि करुणा मृदुल हियो॥ ९०॥

अब हौं नाच्यो बहुत गुपाल। काम क्रोध को पहर चोलना कण्ठ विषयकी माल॥ महा मोहके नूपुर बाजत निन्दा शब्द रसाल। तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधिकी ताल॥ मायाको कटि फेंटा बाँध्यो लोभ तिलक दियो भाल। कोटिक कला नाच दिखराई जल थल सुध नहि काल॥ सूरदासकी सबी अविद्या दूर करो नँदलाल॥ ९१॥

राग कल्याण।

तुम्हारे आगे हौं बहुत नच्यो। सुनिये दीनदयालु देव मणि बहुबड़ रूप रच्यो॥ कियो स्वाँग जल हू थलहू मे एकौ तौ न बच्यो। शोध सबै गुण गूढ़ दिखाये अन्तर हो जु सच्यो॥ रीझत नाहिं गोविद गुसाईं कह कछु जाय जच्यो। इतनी तो कहो सूर पुरोदे काहे मरत पच्यो॥ ९२॥

राग टोडी॥

दीनन दुख हरन देव सन्तन हितकारी। अजामील गीध व्याध इनमें कहो कौन साध पक्षीहू पद पढ़त गणिका सी तारी॥ ध्रुवके शिर छत्र देत प्रहलादको उबार लेत भक्त हेत बाँध्यो सत लङ्कपुरी जारी। तन्दुल देत रीझ जात साग पातसो अघात

गिनत नाही जूँठे फल खाटे मीठे खारी ॥ गजको जब ग्राह ग्रस्यो दुःशासन चीर खस्यो सभा बीच कृष्ण कृष्ण द्रौपदी पुकारी । इतनेमे हरि आयगये वचनन आरूढ भये सूरदास द्वारे ठाढो ऑधरो भिखारी ॥ ९३ ॥

मोसम कौन कुटिल खल कामी । जिन तनु दियो ताहि बिसगयो ऐसो निमक हरामी ॥ भर भर उदर विषयको धावों जैसे शूकर ग्रामी । हरिजन छांड़ हरी विमुखनकी निशिदिन करत गुलामी ॥ पापी कौन बडो है मोते सब पतितनमे नामी । सूर पतितको ठौर कहाँ है सुनिये श्रीपति स्वामी ॥ ९४ ॥

राग झिझोटी ।

मोसम कौन अधम जग माही । भ्रमत रहत नित विषय वासना तज निधि वन द्रुम बेलिन छाही ॥ चिंतन करत न ललित किशोरी युगल लाल दीने गरबाही । निरतत नवल नागरी ललना लालन करत मुकुट परछाहीं ॥ ९५ ॥

राग धनाश्री ।

मेरी सुध लीजो श्रीनन्दकुमार । अधम उधारन नाम तिहारो मै अधमन सरदार ॥ अजामील गज गणिका तारी दुर्जन और अपार । शोभन जनकी तारन बिरियां लाई एती बार ॥ ९६ ॥

मेरी सुध लीजो श्रीब्रजराज । और नही जगमे कोउ मेरो तुमहि सुधारन काज ॥ गणिका गीध अजामिल तारे औ शबरी गजगाज ॥ सूर पतित तुम पतित उधारन बांह गहेकी लाज ॥ ९७॥

राग बिलावल ।

तुम गुपाल मोसो बहुत करी । नरदेही सुमिरणको दीनी मो पापीसे कछु न सरी ॥ गर्भवास अतित्रास अधोमुख ताहि न मेरी सुधि बिसरी । पावक जठर जरन नहि दीनो कंचन सी मेरी देह

करी ॥ जगमे जन्मि पाप बहु कीने आदि अतलौं सब बिगरी । सूर पतित तुम पतित उधारन अपने विरद कि लाज धरी ॥९८॥

राग पीलू ।

इक नजर मिहर दी देख असांवल सांवरो गिरिधारी । चरण-सपरश अहल्या तारी द्रुपदसुताकी लज्जा राखी पाप करती गणिका तारी शोच कहाँ मेरी वारी ॥ भक्त सुदामाके दरिद्र विदारे जल-डूबत गजराज उबारे अजामीलसे पापी तारे हमरी कहा विचारी । सकल धरणिको भार उतारे लंकापति रावण ते मारे हरणाकुश नख उदर विदारे महादुष्ट बलकारी ॥ भीर समय प्रभु लेत बचाई वाहन तज पांयन उठ धाई निज भक्तनके सदा सहाई सुध लेहु बेग हमारी।नाम सुजानराय तेरो कहिये निशिदिन चरण शरण तेरी रहिये मनकी व्यथा सब तुमहि सुनैये सूरदास बलिहारी ॥ ९९ ॥

राग देश सोरठ ।

हमारे प्रभु अवगुण चित न धरो ॥ समदरशी हैं नाम तिहारो चाहे तो पार करो ॥ इक नदिया इक नाल कहावत मैलो नीर भरो। जब मिल करके एक वर्ण भये सुरसरि नाम परो ॥ इक लोहा पूजामें राख्यो इक गृह वधिक परो । पारस गुण अवगुण नहि चितवे कंचन करत खरो ॥ यह माया भ्रमजाल निवारो सूरदास सगरो । अबकी बेर मोहिं पार उतारो नहिं प्रण जात टरो ॥ १०० ॥

राग सोरठ ॥

म्हानें पार उतारो जी थाने निज भक्तनकी आन । हमरे अव-गुण नेक न चितवो अपनो ही कर जान ॥ काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह वश भूल्यो पद निर्वान । अब तो शरण गही चरणनकी मत दीजो मोहि जान ॥ लाख चुरासी भरमत भरमत नेक न परी पछान । भवसागरमें बह्यो जात हौं रसिये श्यामसुजान ॥

हौ तो कुटिल अधम अपराधी नहि सुमिरचो तेरो नाम । नरसीके प्रभु अधम उधारन गावत वेद पुरान ॥ १०१ ॥

राग बडहंस ।

कहोजी कैसे तारोगे मेरो औगुण भरचो शरीर ॥ रका तारचो बंका तारचो तारचो सदन कसाई । सुआ पढावत गणिका तारी तारी मीराबाई ॥ धन्न भक्तका खेत जमाया नामे छान छवाई । सेन भक्तकी विपति निवारी आप भये प्रभु नाई ॥ वृन्दावनकी कुंज गलिनमे लगी श्यामसे डोर । अबकी वेर उबारो प्यारे लीनी कबीराने ओट ॥ १०२ ॥

राग देश सोरठ ।

सुन लीजै विनती मोरी । मैं शरण गही प्रभु तोरी ॥ तैं पतित अनेक उधारे । भवसागर पार उतारे ॥ मैं सबका नाम न जानूं । मैं कोई कोई भक्त बखानूं ॥ अम्बरीप सुदामा नामा । पहुँचाये हे निज धामा ॥ ध्रुव पांच वरसका बाला । ते दर्श दियो नँदलाला॥ धन्नेका खेत जमाया । कबीर घर बैल ल्याया ॥ शबरीके ते फल खाये । सब काज किये मन भाये ॥ सदनाते सैना नाई । तैं बहुत करी अपनाई ॥ कर्माकी खिचडी खाई । तैं गणिका पार लगाई॥ मीरा तुम्हरे रँगराती । यह जानत हौ सब भाँती ॥ चरणदास तेरो यश गावे । फिर जन्म मरण नहिं पावे ॥ १०३ ॥

राग कान्हरो ।

ऐसी कब करिहो गोपाल । मनसा नाथ मनोरथ दाता हो प्रभु दीनदयाल ॥ चित चरणन जु निरन्तर अनुरत रसना चरित रसाल । लोचन सजल प्रेम पुलकित तन कर कञ्चन दल माल ॥ ऐसी रहत लिखत छिन छिन यम अपनो भायो भाल । सूर सुयश रागी न डरत मन सुन यातना कराल ॥ १०४ ॥

राग झंझोटी ।

राधा रमणचरण जो पाऊँ । शुक समान दृढ कर गहि राखो नलिनी सम दुलराऊं ॥ सौरभ युत मकरन्द कमल वर शीतल हीय लगाऊं । विरह जनित दृग तपन किशोरी महजे निरखि नशाऊं ॥ १०८ ॥

राग सारंग ।

आनंदकन्द सुख निधान दीनानाथ भक्तपाल शोभासिंधु राखो मान अनेक विघन टारिये जी । जहा जहां परी भीर तहा तहा धरी धीर गरुड छोड वेग धाये ऐसी कृपा धारिये जी ॥ द्रौपदीको दिये चीर काटत प्रभु जनकी पीर भक्त हेतु रूप धार अपनो जन तारिये जी । कहत है महीधर दास चाहत प्रभु पद निवास जन्म जन्म शरण तेरी भवसिंधुसे उबारिये जी ॥ १०९ ॥

राग प्रभाती ।

नामकी पेज राखो धनी । सकट काट निवाजे केते गिनत न जाय गिनी ॥ खंभाते प्रह्लाद छुडाये द्रौपदीके पुनि चीर बढ़ाये गजके फंदन काट निकाले सुनतहि टेर कनी । नामदेवकी गऊ जिवाई धन्नेके दूध पिया जाई सुदामाके मन्दिर ऊंचे साजे सुरत-सो सुरत बनी ॥ कबीर राख गैयरसे लीने सूर भक्तको दर्शन दीने पीपा बीच सभा कर सांचा दियो मिलाय जनी । जयदेव-की अष्टपदी विचारी मीराबाईकी जहर निवारी रामदासको कनक जनेऊ दीना ऐसे दयालु धनी ॥ भीलनीते ले बन फल खाये त्रिलोचनके अतिथा हो धाये अंबरीष भक्तको बरत रखायो चक्रकी फेर अनी । कर्माबाईकी खिचडी लीनी सैनेकी जाय प्रतिज्ञा दीनी ध्रुव राख्यो अटल द्वारे लागी प्रीति घनी ॥ मुझ पद्मावत

गनिका तारी अहल्या चरणन लाय उधारी नांनक वेदी कियो हजूरी राख्यो लाय तनी। दुनीदास प्रभु सन्तसहाई असुर सँहारत वेगहि आई ताको नाम हृदयमें राखो सुमिरो एक मनी॥ १०७॥

राग भूपाली जंगला।

गजकी वाणी सुनके सिंहासन तजि उठ धाये महाराज ॥ श्री श्री श्री चकृत भई सुनके खगपति पार न पाये महाराज ॥ कटिको पीतांवर कहूं गिरोहै तनुकी सुध विसराये महाराज ॥ ग्राह मार गजराज उबारयो सुरन सुमन झर लाये महाराज ॥ रत्न हरी शरण तिहारी नाम तिहारो नित गाये महाराज॥ १०८॥

राग विहाग।

दीन भयो गजराज हीन भयो वलहूते टूट गयो मान टेरयो हरी हरी करके ॥ पौंढे प्रभु रमा संग पीत पट राते रंग सोये उठ धाये नाथ नयन आये भरके॥आधीरात धाये नाथ चक्र सुदर्शन लिये हाथ तोड दीन तंदुवाको जरी जरी करके ॥ तुलसीदास त्रिलोकी नाथ भक्तनके सदा साथ गरुड़ छोड़ धाये नाथ करी करी करके ॥ १०९ ॥

चौपाई छंद।

द्रौपदि धारयो ध्यान जवहि मन आतुर होई। तुम बिन श्रीनन्द लाल और मेरो नहि कोई॥ वूड़तहो दुखसिंधुमें, शरण द्वारकानाथ॥त्राहि त्राहि सुध लीजिये, अव मैं भई अनाथ॥ हाय हाय यदुनाथ हाय गोवर्द्धन धारी। हाय हाय वलवीर हाय श्रीकुंजविहारी ॥ हाय हाय राधारमण, हाश्रीकृष्ण मुरार। हाय हाय रक्षा करो, श्रीव्रजराज दुलार॥ शरन शरन सुखधाम शरन दुख भंजन स्वामी। शरन शरन रक्षपाल शरन प्रभु अन्तरयामी ॥ शरनपरी

मैं हारके, शरणागत प्रतिपाल । लज्जा राखो दासकी, दीनानाथ दयाल॥भीर परी प्रह्लाद रूप नरसिंह बनायो । गजने करी पुकार पॉय प्यादे उठ धायो ॥ दुर्वासा अम्बरीप हित, जिन जन करी सहाय । कौन अवज्ञा दासकी विलम करी यदुराय ॥ युग युग भक्त सहाय पैज तिनकी तुम राखी । सबही कहत पुराण वेद स्मृति मुनि साखी ॥ मैं तो दासी चरणकी, जानत सब संसार । विरद आपनो जानके, लज्जा राख मुरार ॥ अन्तर्यामी श्याम वेर इतनी क्यों लाई । कापै करूँ पुकार ताहि तुम देहु बताई॥ तुम माता तुम पिता तुम, बांधव सुहृद सुवीर । तुम बिन मेरो कौन है, जाहि सुनाऊँ पीर ॥ नगर द्वारका माहि सार खलत गिरिधारी । जानी श्रीबलबीर दीन होय दासि पुकारी ॥ नयन रहे जल पूरके, पासा डार अनन्त । पचहारी सेना सकल, चीर न आयो अन्त ॥ नग्न न होई द्रौपदी, रक्षा करी मुरार । पुष्प देव वर्षा करी, जय जय शब्द उचार ॥ ११० ॥

राग धनाश्री ।

लज्जा मोरी राखो श्याम हरी । कीनी कठिन दुशासन मोसे गहि केशो पकरी ॥ आगे सभा दुष्ट दुर्योधन चाहत नग्न करी । पॉचो पाण्डव सब बल हारे तिनसो कछु न सरी ॥ भीषम द्रोण विदुर भए विस्मय तिन सब मौन धरी । अब नहि मात पिता सुत बाँधव एक टेक तुम्हरी॥ वसन प्रवाह किये करुणानिधि सेना हार परी। सूर श्याम जब सिंह शरणलई स्यालोंको काहि डरी ॥ १११ ॥

राग भैरवी ।

पति राखी मोरी श्याम बिहारी । बनवा [illegible] गिरि[illegible] [illegible] कृष्ण मुरारी ॥ शूर समूह भूप सब बैठे भीषम द्रोण कर्ण [illegible] धारी ।

कहि न सकै कोउ बात परस्पर इन पतितन मेरी अपत विचारी ॥ त्रल विहीन पांडव सुत डोलै भीम गदा करसों महि डारी । रही न पैज प्रबल पारथकी जबसे धरणि धर्मसुत हारी ॥ लाक्षागृहते जरत उवारयो नाथ तुम्हैं छोड़ कहि हौ पुकारी । अवलग नाथ नाहि कछु विगरयो उघरत माथ अनाथ पुकारी ॥ छूटत लाज दास दासिनकी बहुरि आय का करिहो मुरारी । सूरके स्वामी वेगि दरश देव फिरि पछितैहौ देख उघारी ॥ ११२ ॥

भजन ।

जब पट गह्यो दुशासन करसो । इत उत चितै सकुच कमठी जिमि करत पुकार राधिका वरसो ॥ हो यदुनाथ अनाथ होतहौं कुल परिवार सभापति घरसो । बूड़त वेग बॉह गहि राखो दीना-नाथ दुःखके सरसो ॥ हो भगवन्त अन्त पछितैहो बहुरि मिलोगे आय नर हरिसो । युगल कारि मानो वसन पूतरी लई लपेट शीश पद करसो ॥ ११३ ॥

कवित्त ।

दुर्जन दुशासन दुकूल गह्यो दीनबंधु, दीन ह्वैकै द्रुपददुलारी यो पुकारी है ॥ आपनो सबल छॉड ठाढे पति पारथसे, भीम महा भीमग्रीवा नीचे करडारी है ॥ अबर लौ अबर पहाड कीनो शेष कवि, भीषम करण द्रोण सभी यो विचारी है । सारी मध्य नारी है कि नारी मध्य सारी है कि, सारी है कि नारी है कि नारी है कि सारी है ॥ ११४ ॥

राग देश ।

मेरे माधोजी आयो हो सरे । तेरा वार वार यश गाऊँ सॉवरे आयो हो सरे ॥ करुणा करे लिखे गुणवन्ती यह मनमे उचरे । लिख पतिया द्विज हाथ पठाऊँ द्वारका गमन करे ॥ लगन लि-

खाय चंदेरीको भेजा कागज मेल धरे। रुकमैया जब मानत नाहीं कुडे वचन करे ॥ दल जोडे शिशुपाल जो आये लगर घेर खडे । पदमके स्वामी वेग पधारो रुक्मिणि याद करे ॥ ११५ ॥

राग धनाश्री।

म्हारी सुध लीजो हो त्रिभुवन धनी । छोंनी दल शिशुपाल ले आयो तुम अजहूं न सुनी ॥ कुडिनपुरको घेर लियो है गाढी विपति वनी । हौं हठ ठान रही अपने जिय खाय मरूगी कनी ॥ ताके सग जीवत नहि जैहौं यह निश्चय मति ठनी । थोरीसे वहुती कर जानो और कहांको धनी ॥ विष्णुदास पर कृपा कीजिये रख लीजे रुकमनी ॥ ११६ ॥

राग आसावरी।

सन्तन प्रतिपाल राखो लाज हरि मेरी । पिता कहे मैं व्याहूं द्वारका भैया कहत चन्देरी ॥ लिख लिख पतियां रुक्मिणि भेजे दासी तडफ रही तेरी । इत दल जोड शिशुपाल आयो व्याहनको बरजोरी ॥ जब शिशुपाल वेदीपर बैठे जल बल हो जाऊ ढेरी । सिंहका शिकार स्यार लिये जात है यह गति भई अब मेरी । जो मेरको वर लै जावै क्या पति रहजाय तेरी ॥ कुंडिनपुरमे अम्बिका देवी पूजन जात सबेरी । पदमके स्वामी अन्तर्यामी [illegible]ग खबर लीजे मेरी ॥ ११७ ॥

राग सोरठ ।

सुन अलकां वाले कृष्णजी मोरे मनमें आन वसो । जरद [illegible]ाना पहरके शिर मुकुटको कसो ॥ चलतेहो टेढी चाल मत [illegible]ायल मुझे करो । शिवगिरिकी अरज मानिये दीनानाथ हरे । [illegible]हाराज तेरी कृपासे कई कोटि पतित तरे ॥ ११८ ॥

राग झपताल।

मो मन वसो श्यामा श्याम । श्याम तन मन श्याम कामर मालकी मणि श्याम ॥ श्याम अंगन श्याम भूपण वसनहैं अति-श्याम । श्यामा श्यामके प्रेम भीने गोविद जन भये श्याम ११९

राग आसावरी।

संकट काट मुरारी हमरे सकट काट मुरारी । संकटमे एक सकट उपज्यो अरज करै मृग नारी ॥ इक ढिग वावर जाय गड-रिया इकढिग श्वान विहारी ॥ इक ढिग जा अग साडी इक ढिग जा वैठ्यो फन्द कारी ॥ उलटी पवन वावरको लागी श्वान गयो ससकारी । बरनीसे भुवग जो निकर्यो तिन डस्यो फन्दकारी॥ नाचत कूदत हरनी निकसी भली करी गिरिधारी । सूरदासप्रभु तुम्हरे दरशको चरण कमल वलिहारी ॥ १२० ॥

बन्धन काट मुरारी हमरे वधन काट मुरारी । ग्राह गजराज लडै जल भीतर ले गयो अबु मॅझारी ॥ गजकी टेर सुनी यदुन-न्दन तजी गरुड़ असवारी ॥ पांचली कारण प्रभु मोरे पग धार्यो गिरिधारी ॥ पट शठ खैचत निकसत नाही सकल सभा पचहारी । चरण सपर्श परमपद पायो गौतम ऋपिकी नारी ॥ गणिका शवरी इन गति पाई बैठ विमान सिधारी ॥ सुन सुन सुयश सदा भक्तन को सुखसो भज्यो इक वारी । विधीचन्द दर्शनको प्यासो लीजिये सुरत हमारी ॥ १२१ ॥

राग कान्हरा ।

दीजै दरश मोहि चतुर भुजनकर । शख चक्र गदा पद्म धारिये पीतांवर ओढवर साजे गल मोतियनकी माल मनोहर १२२॥

राग टोडी।

तुम बिन श्रीकृष्ण देव और कौन मेरो। कई अनेक ऐरावत ऐसो वल मेरो॥मै तो अभिमानी नाम जान्यो न है तेरो। भ्रमत भ्रमत प्यास लगी चाह्यो चित मेरो॥ सभी कुटुम्ब छोड नाथ सागर पद गेरो। जलमें पग बोरत ही आन ग्राह घेरो॥ मै तो वलहीन नाथ वाहि वल घनेरो॥मात पिता भाई बन्धु कुटुम्ब तो घनेरो॥ दशो दिशा हेर हेर शरण गह्यो तेरो। केते गज ग्राह फद अतुलित वल श्रीमुकुन्द काटो भवफद प्रभु जरा नजर फेरो॥ डूवत गजराज जान टेरत श्रीकृष्ण नाम दीनबन्धु दीनानाथ विरद जात तेरो। लड़त लडत देर भई आयो अन्त मेरो॥ जव लग मै जीवो नाथ जपो नाम तेरो। गोपीनाथ मदन मोहन करुणा कर हेरो॥ सूरदास गरुड छोड करदिये निवेरो॥ १२३॥

राग कान्हरा।

आये आये जी महाराज अपने भक्तके काज सारे। तज वैकुण्ठ तज्यो गरुडासन पवन वेग उठि धाये॥ जवके दृष्टि परे नँदनदन भक्तहेतु रूप धारे। मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल चितलाये॥ १२४॥

राग देश।

म्हारो कांई विगरेगो थारोई विरद लजेगो। रुकमैया बन्धु जो वैरी कूडीसाख भरेगो॥ जरासन्ध शिशुपाल जो आये भूपसे भूप अडेगो। पदमके स्वामी अन्तर्यामी करता कौन करेगो॥१२५॥

राग देश सोरठ।

पाती मेरी द्वारका लेजाय। विप्र तुम वेग धायो जाय॥ लिख लिख भेजूँ चिठिया जीमे लिखा दुगाय दुगाय। है क॰ हितकारी

राग झपताल।

मो मन वसो श्यामा श्याम । श्याम तन मन श्याम कामर-मालको मणि श्याम ॥ श्याम अंगन श्याम भूषण वसनहैं अति-श्याम । श्यामा श्यामके प्रेम भीने गोविद जन भये श्याम ११९

राग आसावरी।

संकट काट मुरारी हमरे संकट काट मुरारी । संकटमें एक संकट उपज्यो अरज करै मृग नारी ॥ इक ढिग वावर जाय गड-रिया इकढिग श्वान विहारी ॥ इक ढिग जा अग साडी इक ढिग जा वैठ्यो फन्द कारी ॥ उलटी पवन वावरको लागी श्वान गयो ससकारी । वरनीसे भुवग जो निकस्यो तिन डस्यो फन्दकारी ॥ नाचत कूदत हरनी निकसी भली करी गिरिधारी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको चरण कमल वलिहारी ॥ १२० ॥

वन्धन काट मुरारी हमरे बंधन काट मुरारी । ग्राह गजराज लडे जल भीतर ले गयो अबु मँझारी ॥ गजकी टेर सुनी यदुनन्दन तजी गरुड़ असवारी ॥ पांचली कारण प्रभु मोरे पग धार्यो गिरिधारी ॥ पट शठ खैचत निकसत नाही सकल सभा पचहारी । चरण सपर्श परमपद पायो गौतम ऋपिकी नारी ॥ गणिका शबरी इन गति पाई वैठ विमान सिधारी ॥ सुन सुन सुयश सदा भक्तन को सुखसो भज्यो इक वारी । विधीचन्द दर्शनको प्यासो लीजिये सुरत हमारी ॥ १२१ ॥

राग कान्हरा ।

दीजै दरश मोहिं चतुर भुजनकर । शख चक्र गदा पद्म धारिये पीतांबर ओढंबर साजे गल मोतियनकी माल मनोहर १२२॥

राग टोडी।

तुम विन श्रीकृष्ण देव और कौन मेरो। कई अनेक ऐरावत ऐसो बल मेरो॥मैं तो अभिमानी नाम जान्यो न.ह तेरो। भ्रमत भ्रमत प्यास लगी चाह्यो चित मेरो॥ सभी कुटुम्ब छोड नाथ सागर पद गेरो। जलमे पग बोरत ही आन ग्राह घेरो॥ मै तो बलहीन नाथ वाहि बल घनेरो॥मात पिता भाई वन्धु कुटुम्व तो घनेरो॥ दशो दिशा हेर हेर शरण गह्यो तेरो। केते गज ग्राह फद अतुलित बल श्रीमुकुन्द काटो भवफंद प्रभु जरा नजर फेरो॥ डूबत गजगज जान टेरत श्रीकृष्ण नाम दीनवन्धु दीनानाथ विरद जात तेरो। लड़त लड़त देर भई आयो अन्त मेरो॥ जब लग मे जीवों नाथ जपों नाम तेरो। गोपीनाथ मदन मोहन करुणा कर हेरो॥ सूरदास गरुड छोड करदिये निवेरो॥ १२३॥

राग कान्हरा।

आये आये जी महाराज अपने भक्तके काज मारे। तज वैकुण्ठ तज्यो गरुडासन पवन वेग उठि धाये॥ जबके दृष्टि परे नँदनदन भक्तहेतु रूप धारे। मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल चितलाये॥ १२४॥

राग देश।

म्हारो काई विगरेगो थारोई विरद लजेगो। रुकमैया बन्धु जो वैरी कूडी साख भरेगो॥ जरासन्ध शिशुपाल जो आये भूपसे भूप अडेगो। पदमके स्वामी अन्तर्यामी करता कौन कहेगो॥१२५॥

राग देश सोरठ।

पाती मेरी द्वारका लेजाय। विप्र तुम वेग धायो जाय॥ लिख लिख भेजूँ चिठियां जी मे लिखा दुगय दुगय। है कोः हितकारी

डमरो सुनत ही उठ धाय ॥ कुंडिनपुरमें आश्चर्य देखो सिंह घेरी गाय । भाग राख्यो हस कारण काग पहुँचे आय ॥ लग्न जोर बरात आई दिये खंभ गडाय । रुकमैया शिशुपाल आये जरासध सहाय ॥ अम्बिका पूजन चलीहै रुक्मिणि सग सहेलियां लाय । जे अंबे वर देत है श्रीकृष्ण देहु मिलाय ॥ अंबिका पूजके आई है रुक्मिणि श्रीकृष्ण पहुँचे आय । अपने बिरदकी लाज राखी सूर वलि वलि जाय ॥ १२६ ॥

कवित्त दण्डक।

कैसे तुम गणिकाके औगुण न गिने नाथ,कैसे तुम भीलनीके जूंटे बेर खाये हो ॥ कैसे तुम द्वारकामे द्रौपदीकी टेर सुनी, कैसे तुम गज काज नंगे पग धाये हो ॥ कैसे तुम सुदामाके छिनमें दरिद्र हरे कैसे तुम उग्रसेन बदीते छुडाये हो । मेरी बेर एती देर कान मून्द रहे नाथ, दीनबधु दीनानाथ काहेको कहाये हो १२७॥

राग विहाग।

किन तेरो गोविंद नाम धरचो । लेन देनके तुम हितकारी मोते कछु न सरचो ॥ विप्र सुदामा कियो अयाची तडुल भेट धरचो । द्रुपदसुताकी तुम पति राखी अवर दान करचो ॥ सदीपनके तुम सुत लाये विद्या पाठ पढचो । सूरकी बिरियां निठुर ह्वै बैठे कानन मूँद धरचो ॥ १२८ ॥

राग धनाश्री।

पतित पावन हरी नाम तिहारो कौनेहू धरचो । हौं तो दीन दुखित ससृत रत द्वारे रटत परचो ॥ गज गणिका नृग गीध व्याधते मे घट कहा करचो । ना जानो यह सूर महाशठ कौन दोष बिसरचो ॥ १२९ ॥

राग देश सोरठ।

हरि हौं बडी बेर को ठाढो । जैसे और पतित तुम तारे तिनहीमे लिख काढो ॥ युग युग विरद यही चल आयो टेर कहत हौ ताते । मरियत लाज पञ्च पतितनमे हौं घट कहो कहांते ॥ कै अब हार मान कर बैठो कै कर विरद सही । सूर पतित जो झूंठ कहत है देखो खोल बही ॥ १२० ॥

राग धनाश्री ।

नाथ मोहि अबकी बेर उबारो । तुम नाथनके नाथ स्वामी दाता नाम तिहारो ॥ करम हीन जन्मको अंधो मोते कौन नकारो। तीन लोकके तुम प्रतिपालक मै तो दास तिहारो । तारी जात कुजात प्रभूजी मोपर किरपा धारो ॥ पतितनमे इक नायक कहिये नीचनमे सरदारो । कोटि पापी इक पा संगमेरे अजामील कौन विचारो। नाठो धरम नाम सुन मेरो नरक कियो हठनारो । मोको ठौर नही अब कोऊ अपनो विरद सम्हारो ॥ क्षुद्रपतित तुम तारे रमापति अब न करो जिय गारो । सूरदास सांचो तब मानै जो होय मम निस्तारो ॥ १२१ ॥

गजल ।

जहा देखो वहीं मौजूद मेरा कृष्ण प्यारा है । उसीका सब है जलवा जो जहां मे आशिकारा है ॥ भला मखलूक खालिककी सिफत समझे कहां मुमकिन । उसीसे नेत नेत ए यार वेदोने पुकाराहै ॥ न कुछ चारा चला लाचारी हार कर बैठे । विचारे वेदने प्यारे बहुत तुझको विचारा है ॥ जो कुछ कहते है हम यह भी तेरा परकाश है वरना । किसे ताकत जो मुँह खोले यहां हर शख्स हारा है ॥ तेरा है तेज हर शै में काहसे कोह तक प्यारे ।

उसी से कहके हर हर तुझको सब जगने उचारा है ॥ कोई तुझको पुकारै ब्रह्म कर्त्ता एक कहते हैं । कहैं निर्लेप इक ज्ञानी ध्यानी ध्यान धारा है॥ करो किरपा रसाई दो सजन अपनेही चरणोमें । भला है या बुराहै जैसा है आखिर तुम्हारा है ॥ बहुत दुस्तर है भवसागर न पारावार कुछ सूझै । कहै कर जोड़ राधानाथ इक तूही सहाराहै ॥ १२२ ॥

वह नाथ अपनी दयालुता तुम्हे यादहो कि न याद हो । वो जो कोल भक्तोसे किया था तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ सुनि गजकी ज्यूंही आपदा न विलम्ब छिनका सहा गया । वही दौड उठके पियादे पा तुम्हें० ॥ य जो चाहा दुष्टोने द्रौपदीसे कि, शर्म उसकी सभामें लें । बढाया वस्तरको आप जा तुम्हें० ॥ अजामील एक जो पापी था लिया नाम मरने पै बेटे का।वह नरकसे जो बचा दिया तुम्हे०॥जो गीध था गणिका जो थी जो व्याध था मल्लाह था । उन्हे तुमने ऊचोका पद दिया तुम्हे० ॥ खाना भीलनीके व जूठे फल कही साग दासके घर पै चल । यूही लाखो किस्से कहूं मैं क्या तुम्हें० ॥ जिन वानरोमे न रूप था न तो गुण ही था न तो जात थी । तिन्हें भाइयोंकासा मानना तुम्हे० ॥ वह जो गोपी गोप थे ब्रजके सभ उन्हे इतना चाहा कि क्या कहूं । रहे उलटे उनके ऋणी सदा तुम्हें० ॥ कहो गोपियोसे कहा था क्या करो याद गीताकी जरा । वैदा वक्त उद्धार का तुम्हे० ॥ यह तुम्हार ही हरीचद है गो फासदमें जगके बद है ॥ है दासजन्मसें आपका तुम्हे० ॥ १२३ ॥

अफसोस भरी नाथ सुनो मेरी भी हालत । पापी हूं मुझे अरजसे आती है खिजालत ॥ कैदीकी तरह उमर कटी मोहके वशमें । पावद किया लोभने वेदाना कफस मे ॥ हर एक घडी गुजरी

है दुनियां की हवस मे । इक दिन भी नही काम का हर माह वरस से ॥ इक वक्तका तोसा नहीं औ शिरपे सफरहै । पापोका वहुत वोझ है शिकस्ता कमरहै ॥ हूं आपके चरणोसे लगा जानलो इतना । कुछ और नही चाहता पर मानलो इतना ॥ जिस दम मेरी उम्मेदसे घर वालोको होयास । सव दूर हो सरकार ही सरकार हो इक पास ॥ फैलीहुई शृंगारके फूलो की हो वूवास । मुरलीकी सदा कानमें जातीहो चपो रास ॥ होजाऊं फना पाऊं जो इतना मे सहारा । जव वद हो आंख तो मुकुट का हो नजारा ॥ दम लव पे हो सीने मे तसव्वरहो तुम्हारा । मिटकर भी जुदाई न हो चरणोकी गॅवारा॥जो व्रजकी रज है वही खाके कफे पा है।मिट्टी यहीं रह जाय तो वैकुण्ठमे क्या है ॥ रोशन है कि यह सिजदह गहे अहले यकी हैं । जो जर्रा है यां खातमें कुदरत का नगी है ॥ उठाहै यहीं आके निकावे रुखे तौहीद । हर वक्त नजर आता है या जलवएजा वीद ॥ जो खाकमें यां मिल गये किसमत है उन्हीं की । जो मिटगये यां आके हकीकत है उन्हीकी ॥ गलियोमेंजो यां विसटे है जिन्नत है उन्हीकी । जो भीखको या खाते है दौलत ह उन्हीकी ॥ वह ताजशाहीपर भी कभी हाथ न मारे । दुनियाका मिले तख्त तो इक लातन मारे ॥ कह सक्ताहूं क्या व्रजकी ख्वी व लताफत । वह आंख नहिं जिसमे हो नज्जारेकी ताकत ॥ मे यह भी नही चाहता तकलीफ उठाओ । मे यह भी नही चाहता विगडी को वनाओ ॥ पर कुछ तो मेरे वास्ते तदवीर वताओ । इतना भी नही हूं जिसे चरणोसे लगाओ ॥ नकशे कफे पाफ्क निकलनेको तो मिलजाय । दो हाथ जमी व्रजमे जलनेको तो मिलजाय ॥ देखो न खुदाईकी करामात विगड जाय । ऐसा न हो शोलेकी कहीं वात विगडजाय ॥ १२४ ॥

उसी से कहके हर हर तुझको सब जगने उचारा है ॥ कोई तुझको पुकारे ब्रह्म कर्त्ता एक कहते हैं । कहें निर्लेप इक ज्ञानी ध्यानी ध्यान धारा है॥ करो किरपा रसाई दो सजन अपनेही चरणोमें । भला है या बुराहै जैसा है आखिर तुम्हारा है ॥ बहुत दुस्तर है भवसागर न पारावार कुछ सूझे । कहै कर जोड़ राधानाथ इक तूही सहाराहै ॥ १३२ ॥

वह नाथ अपनी दयालुता तुम्हे यादहो कि न याद हो । वो जो कौल भक्तोंसे किया था तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ सुनि गजकी ज्यूंही आपदा न विलम्ब छिनका सहा गया । वही दौड उठके पियादे पा तुम्हे० ॥ य जो चाहा दुष्टोने द्रौपदीसे कि, शर्म उसकी सभामें ले । बढाया वस्तरको आप जा तुम्हे० ॥ अजामील एक जो पापी था लिया नाम मरने पै बेटे का।वह नर्कसे जो बचा दिया तुम्हें०॥जो गीध था गणिका जो थी जो व्याध था मल्लाह था । उन्हें तुमने ऊंचोका पद दिया तुम्हे० ॥ खाना भीलनीके व जूंठे फल कहीं साग दासके घर पै चल । यूंही लाखो किस्से कहूं मैं क्या तुम्हे० ॥ जिन वानरोमें न रूप था न तो गुण ही था न तो जात थी । तिन्हे भाइयोंकासा मानना तुम्हे० ॥ वह जो गोपी गोप थे ब्रजके सभ उन्हें इतना चाहा कि क्या कहूं । रहे उलटे उनके ऋणी सदा तुम्हे० ॥ कहो गोपियोंने कहा था क्या करो याद गीताकी जरा । वेदा वक्त उद्धार का तुम्हे० ॥ यह तुम्हार ही हरीचंद है गो फासदमें जगके बद है ॥ है दासजन्मसे आपका तुम्हे० ॥ १३३ ॥

अफसोस भरी नाथ सुनो मेरी भी हालत । पापी हूं मुझे अरजसे आती है खिजालत ॥ कैदीकी तरह उमर कटी मोहके वशमे । पाबंद किया लोभने वेदाना कफस मे ॥ हर एक घडी गुजरी

ह दुनियां की हवस मे । इक दिन भी नही काम का हर माह वरस मे ॥ इक वक्तका तोसा नहीं औ शिरपे सफरहै । पापोंका बहुत बोझ है शिकस्ता कमरहै ॥ हूं आपके चरणोसे लगा जानलो इतना । कुछ और नही चाहता पर मानलो इतना ॥ जिस दम मेरी उम्मेदसे घर वालोको होयास । सब दूर हो सरकार ही सरकार हो इक पास ॥ फैलीहुई शृंगारके फूलो की हो बूवास । मुरलीकी सदा कानमे जातीहो चपो रास ॥ होजाऊं फना पाऊं जो इतना मे सहारा । जब बद हो आंख तो मुकुट का हो नजारा ॥ दम लब पे हो सीने मे तसव्वरहो तुम्हारा । मिटकर भी जुदाई न हो चरणोकी गॅवारा॥जो व्रजकी रज हैं वही खाके कफे पा है।मिट्टी यहीं रह जाय तो वैकुण्ठमे क्या है ॥ रोशन है कि यह सिजदह गहे अहले यकी है । जो जर्रा है या खातमें कुदरत का नगी है ॥ उठाहै यही आके निकाबे रुखे तौहीद । हर वक्त नजर आता है यां जलवएजां वीद ॥ जो खाकमें या मिल गये किसमत है उन्हींकी । जो मिटगये या आके हकीकत है उन्हीकी ॥ गलियोमेजो या घिसटे हैं जिन्नत है उन्हीकी । जो भीखको यां खाते है दौलत है उन्हीकी ॥ वह ताजशाहीपर भी कभी हाथ न मारे । दुनियाका मिले तख्त तो इक लातन मारे ॥ कह सक्ताहै क्या व्रजकी खूबी व लताफत । वह आंख नहि जिसमे हो नज्जारेकी ताक्त ॥ मै यह भी नही चाहता तकलीफ उठाओ । मै यह भी नही चाहता बिगडी को बनाओ ॥ पर कुछ तो मेरे वास्ते तदबीर बताओ । इतना भी नही हूं जिसे चरणोसे लगाओ ॥ नकशे कफे पाफूक निकलनेको तो मिलजाय । दो हाथ जमी व्रजमे जलनेको तो मिलजाय ॥ देखो न खुदाईकी करामात बिगड जाय । ऐसा न हो शोलेकी कहीं बात बिगडजाय ॥ १२४ ॥

राग परज ।

मैनूॅ तारी वे रव्वा वदी औगुण हारी । सभ सैयां गुन वालडियांवे मे औगुण हारी ॥ जिस कारण शौह भेज्या लाल वे मैनूॅ तारी वे रव्वा सोईयो गल्ल विसारी । पकड तुला मे तर पैयां लाल वे मैनूॅ तारी वे रव्वा शिरपर गठरी है भारी ॥ इकनां दाज रगां लिया लाल वे मैनूं तारी वे रव्वा आईया साडडी वारी । हुकुम साईं दे पर्वत तरदे लाल वेरे मैनूं तारी वे रव्वा वदी कौन विचारी । इकनां सेजां मानीयां लाल व मैनूॅ तारी वे रव्वा बंदी रही है कुँआरी । कहे शाह हुसेन सुनो सहेलीयो मेरीयो मैनूॅ तारीं वे रव्वा अमलां वाझ सुआरी ॥ १२५ ॥

राग वड्हंस ।

अपने सग रलाई वे मैनूं अपने सङ्ग रलाई ॥ राह पवां तां धाडी वेढे वेले लखाॅ वलाई ॥ चीते वाघे कौडल हारे भखॅर करन अदाई ॥ भार तेरे जागत्तर चढ्या वेडा पार लंघाई ॥ हौल दिलेदा थर हर कवे झबदे पार लघाई ॥ पहलां नेह लगायासी ऐवे आपे चाईं चाईं ॥ मे लायाके तुध लाया सी अपनी ओर निभाई ॥ जेकर आगे है लड लाया तीवे गले लगाईं ॥ बुल्लाशाह शहाना मुखडा घूँघट खोल दिखाईं ॥ १२६ ॥

राग सोरठ ।

मालक कुल आलमके हो तुम साँचे श्रीभगवान । स्थावर जंगम पानी पावक धरती वीच समान ॥ सभमे जलवा तेरा देखा कुदरतके कुरदान । सुदामाके दरिद्र खोय पाँडेकी पहॅचान ॥ दो मूटीतंदुलकी चाबी बखशे दो जहान । भारतमे अर्जुनकी खातर आप भये रथवान ॥ उसने अपने कलको देखा छुट गये तीर

चेतन अचल अमर है यह गीताको ज्ञान । मुझ आजज पर किरपा कीजे बदा अपना जान ॥ मीर माधो में शरण तिहारी लागे चरणन ध्यान ॥ १२७ ॥

राग कालिंगडा ।

माधव गति तेरी ना जानी ॥ मारन कारन चली पूतना अस्तन विप लपटानी । ताको गति यशुमतिकी दीनी सो वैकुंठ सिधानी ॥ लख गउअनको दान करत है राजा नृगसो दानी । ताको सुख किरलेका दीना पाछे कूप पठानी ॥ बलिराजा स्वर्ग धामकी खातर रचे यज्ञ बहु दानी । सो राजा पाताल पठायो चौकी ताकी मानी ॥ बडे बडे राज भूपनकी बेटी तिनको योग हढानी । कुब्जा मालन कसकी चेरी सो कीनी पटरानी ॥ पांचो पांडव अधिक सनेही सो हिमअचल गिरानी । दुर्योधन राजा बड़ा अभिमानी ताकी मुक्तो निशानी ॥ शेपनागको नेता कीनो पर्वत कियो मथानी॥चौदा रत्न मथन कर काढे तब लक्ष्मी वर आनी ॥ जैसी जाकी मनोकामना तैसी कर दिखलानी । सूरदास आनन्द मगन भयो प्रेम भक्ति मनमानी ॥ १२८ ॥

राग कान्हरा ।

दे पूतना विप रे अमृत पायो । जो कछु देयत सो फल पैयत नाहक बदन गायो ॥ शत यज्ञ राजा बलि कीनो बॉध पताल पठायो । लक्ष गऊ राजा नृग दीनी गिरगट रूप करायो ॥ एक जन्मके मित्र सुदामा कञ्चन धाम बनायो । सूरदास तेरी अद्भुत लीला वेद नेति कहि गायो ॥ १२९ ॥

राग धनाश्री ।

अविगति गति जानी न परे । मन वच अगम अगाध अगोचर किहि विधि बुधि सँचरे ॥ अति प्रचड पौरुष सो मातो केहरि

भूँख मरै । तज उद्यम अकाश कर बैठ्यो अजगर उदर भरै ॥ कबहुँक तृण बूडत पानीमे कबहुँक शिला तरै । वागरसे सागर कर राखे चहुँ दिशि नीर भरै ॥ पाहन बीच कमल विकसाही जलमें अगिन जरै । राजा रंक रंकते राजा ले शिर छत्र धरै ॥ सूर पतित तरजाय छिनकमे जा प्रभु टेक करै ॥ १४० ॥

राग सोरठ।

हरीकी गति नहि कोऊ जाने । योगी यती तपी पचहारे अरु बहु लोग सयाने ॥ छिनमें राव रंकको करही राव रंक कर डारे । रीतभरे भरे ढरकावे यह ताको व्यवहारे ॥ अपनी माया आप पसारे आपै देखन हारा । नाना रूप धरै बहुरंगी सबसे रहत नियारा ॥ अमित अपार अलख निरंजन निज सब जग भरमाया । सकल भरम तज नानक प्राणी चरण ताहि चित लाया ॥ १४१ ॥

राग कान्हरा ।

ज्यों भावे त्यो राख गुसाई । हमरे संकट काटो जी साँवरे कृपा करौ प्रहलादकी नाई ॥ तोहि त्याग और जो सुमिरे सो नरपे दे नरकन माही । नन्ददासको दीजे अभय पद चरणकमल राख्यो मन माही ॥ १४२ ॥

राग सोरठ ।

दरमा दे ठाढे दरबार । तुझ बिन सुरत करे को मेरी दरशन दीजे खोल किवार ॥ तुम धन धनी उदार त्यागी श्रवणन सुनियत सुयश तुम्हार । माँगो कौन रंक सब देखों तुमहीते मेरो निस्तार॥ जयदेव नामा विप्र सुदामा तिनपर कृपा भई है अपार । कहे कबीर तुम समरथ दाता चार पदारथ देत न बार ॥ १४३ ॥

राग झंझोटी ।

हरी अब बनिहे नाहि बिसारे । दीनदयालु कृपानिधि हे प्रभु गिनिये न दोष हमारे ॥ गीध अजामिल गणिका आदिक जा पन पै तुम तारे। मोहनलाल आपनो पण सोइ बनि है नाथ सम्हारे ॥ १४४ ॥

राग अडाना ।

अपने विरदकी लाज विचारो । सब घटके तुम अंतर्यामी भवसागर ते पार उतारो ॥ गुण औगुण यह कछू न मानो ज्यो जानो त्यो पतित उधारो । जानकीदास प्रभु शरण तुम्हारी आवागमनका दोष निवारो ॥ १४५ ॥

राग परज ।

भरोसो कृष्णको भारी ॥ ग्राहने गजराज घेरचो बल कियो भारी । हारके जब टेर कीनी धाये गिरिधारी ॥ प्रहलाद गिरिसो डार दीनो कीनी रखवारी । अगिनहूँसो राख लीनो दूसरी वारी ॥ द्रौपदीकी लाज राखी कूबरी तारी । ध्रुवको दीनी अटल पदवी कियो घरवारी ॥ विभीषणको लंका दीनी रावण मारी । आगे पतित अनेक तारे सूरकी वारी ॥ १४६ ॥

राग विभास ।

और कोई समझो तो समझो हमको एती समझ भली है। ठाकुर नन्दकिशोर हमारे ठकुरायन वृषभानु लली है ॥ सुबल आदि ले सखा श्यामके राधा सँग ललिता जो अली है । नितको लाड चाव सेवा सुख भागबेलि बढि सुफल फली है ॥ वृन्दावन वीथिन यमुना तट विहरन ब्रज रज रङ्ग रली है । कहै भगवान हित रामराय प्रभु सबते इनकी कृपा बली है ॥ १४७ ॥

राग विहाग ।

हमरी आखिनके दोउ तारे । राधा मोहन मोहन राधा यह दो रूप उजारे ॥ गौर श्याम अभिराम मनोहर व्रज वरसाने वारे शुक शारद नारद बलिहारी महिमा वर्णत हारे ॥ १४८ ॥

कुण्डलिया ।

आचारज-ललिता सखी रसिक हमारी छाप । नित्त किशोर उपासना, युगल मन्त्रको जाप ॥ युगलमन्त्रको जाप वेदरसिक-नकी बानी । वृन्दावन निज धाम इष्ट श्यामा महरानी ॥ प्रेम देवता मिले बिना सिधि होय न कारज । भगवत सब सुखदेन प्रगट भये रसिकाचारज ॥ १४९ ॥

राग धनाश्री ।

है हम रसिक अनन्य प्रिया पिय कुञ्जमहलके वासी। नइ नइ केकि विलोकत छिन छिन रति विपरीत उपासी ॥ वीरी बसन सुगन्ध आरसी रुचि ले करत खवासी। देत प्रसाद प्रेम सों हँस हँस कह कह भगवत दासी ॥ १५० ॥

राग कालिंगडा ।

हम नँदनन्दन मोल लिये। यमकी फाँस काट मुकराये अभय अजात किये ॥ सब कोउ कहत गुलाम श्यामके गुणत सिरात हिये । सूरदास प्रभुजूके चेरे जूठन खाय जिये ॥ १५१ ॥

राग जंगला ।

साँवरो जग तारन आयो। निशि दिन जाको वेद रटत हैं सुर नर पार न पायो ॥ मथुरामें हरि जनम लियो है गोकुल जाय बसायो । लाल यशुमतिको कहायो ॥ भानुसुतामें कूदि परे हैं विषधर जाय जगायो । फणिपति लै पाताल पठायो

तीन लोक यश गायो ॥ मनो मेघुला झुक आयो ॥ भारतमे प्रण भीषम राख्यो अर्जुन रथमें बहायो । गीता ज्ञान दया कर दीनो रूप विराट दिखायो ॥ भर्म मनको जो मिटायो ॥वृन्दावनमें रास रचो है गोपी ग्वाल नचायो । सूरदास यह प्रेमको झगरो रूप निरख कर गायो ॥ बहुरि इतना सुख पायो ॥ १५२ ॥

दोहा।

चार बीस अवतार धारि, जनकी करी सहाय । राम कृष्ण पूरण भये, महिमा कही न जाय ॥ चौपाई ॥ नेति नेति कह वेद पुकारै । सो अधरन पर मुरली धारै ॥ जाको ब्रह्मादिक मिल ध्यावहिं । ताहि पूत कहि नन्द बुलावहिं॥शिव सनकादिक अन्त न पावें । सो सखियन सँग रास रचावें ॥ सकल लोकमें आप पुजावें । सो मोहन ब्रजराज कहावें ॥ निरंकार निर्भय निरवाना । कारण सन्त धरे तिन जाना ॥ निर्गुण सगुण भेद ना कोई । आदि अंत मधि एकै सोई ॥ दोहा—योगी पावें योग सो,ज्ञानी लखै विचार ॥ नानक पावै भक्ति सो, जाको प्रेम अधार ॥ १५३ ॥

राग धनाश्री ।

हरि सन्तनकी पैज राखत आप निरकार भापत ॥ खंभसे प्रभु निकसे आय नरसिह रूप होय रिसाय असुरनको उदर छेद प्रह्लाद तिलक थापत ॥ गहरे गंभीर ग्रस्यो कालवश ले व्याल धस्यो गजकी जब टेर सुनी फदन काटत । बीच सभा आन खडी द्रौपदीको भीर पडी उचरत हरि शरण तेरी अनेक चीर बाढत ॥ दौड़के हरि आन खडे अपने जन काज करे विलम न लायो नेक दुनीदास आखत ॥ १५४ ॥

राग सोरठ।

जानत प्रीति रीति यदुराई। को अस जग मतिमद मनुज जो भजत न सकल बिहाई॥ कनक भवनमे रुक्मिणिके सँग राजत सब सुख छाई। रंक दीन लखि मीत सुदामहि धाय लियो उरलाई॥ यदुकुल कौरव कुल पांडव कुल जहि जहि भई सगाई। तहि तहि व्रज वासिनकी बातें वर्णत वदन सुखाई॥ छप्पन विधि व्यंजन दुर्योधन राख्यो सदन बनाई। सो तजि विदुर साग भोजन किये बहुत सराह मिठाई॥ सुरदुर्लभ यदुकुल विलास वर प्रभुता प्रभु बिसराई। श्रीरघुराज भली भारतमें पाथ सारथि आई १९५॥

राग पूरवी।

जय मनमोहन श्याम मुरारी। जय व्रजनाथ मुकुंद विहारी॥ जय नखपर श्रीगिरिवर धारी। जय श्रीकृष्णचन्द्र बनवारी॥मोसे नाथ कछु लखी न जाई। वरणो कहँलग तोरि बड़ाई॥ महिमा तुम्हारी अपार कन्हाई। थकित भये वर्णत श्रुति चारी॥ हे अपार अलख तव माया। ब्रह्मादिकने भेद न पाया॥ कोटिन मुनिने ध्यान लगाया। पर कछु समझ परी न तिहारी॥ कहांतलक गुण तुम्हरे गाऊ। कौन हृदयमें ध्यान लगाऊं॥ कहां समझ प्रभु तोहि मनाऊं। शोच भयो जन उर यह भारी॥सुध लीजे अब तो प्रभु मेरी। निज जन समझ करो मत देरी॥ दीनदयालु शरण हूँ तेरी। कृपा करो भक्तन सुखकारी॥ १९६॥

राग जंगला।

जय नारायण ब्रह्मपरायण श्रीपति कमलाकंत। नाम अनंत कहां लग वरणो शेष न पावत अंत॥ नारद शारद शिव सनकादिक ब्रह्मा ध्यान धरंत। मच्छ कच्छ सूकर नरहरि प्रभु वामन रूप धरंत॥ परशुराम श्रीरामचंद्र जग लीला कोटि करंत। जन्म लियो

वसुदेव देवि गृह नाम धर्‍यो नँदनन्दं ॥ पैठ पताल कालीनाग नाथ्यो फण-२ निरत करंत । बलभद्र होकर असुर सँहारे कंसके केश गहंन ॥ जगन्नाथ जगपति चिन्तामणि होय बैठे निश्चिन्तं । कलियुग अन्त अनन्तत होकर कलकीरूप धरत ॥ दश अवतार हरिजके गाये सूर शरण भगवतं ॥ १५७ ॥

लावनी ।

नाथ तुम दीनन हितकारी । पतितपावन कलिमलहारी ॥ प्रथम नरसिंह रूप धार्‍यो । नखन सो हरनाकुश मार्‍यो ॥ ब्रह्मादिक थरथर करें, लक्ष्मी ढिग नहि जात । जन अपने प्रहलादके, धर्‍यो शीश पर हाथ ॥ भक्तकी बिपति कटी सारी ॥ नाथ० ॥ जुडे दल दोउ और भारी । करी जब भारतकी त्यारी ॥ भरूही दीनहो पुकारी । खबर मेरी लीजो गिरिधारी ॥ ऐसोको या जगतमे मेरो राखनहार । इतनी सुनत तब तुरतही, गज घटा दियो डार ॥ करी अंडनकी रखवारी ॥ नाथ० ॥ सभामे द्रुपदसुता नारी । करन जो लगी जवाब भारी ॥ देखते सकल धर्मधारी । कर्ण भीष्म द्रोणाचारी ॥ कहा भयो बैरीप्रबल, जो सहाय बलबीर । दश हजार गज बल घट्यो, घट्यो न दश गज चीर ॥ दुःशासन बैठ गयो हारी ॥ नाथ० ॥ ग्राहने गजको गहलीनो । परस्पर युद्ध बहुत कीनो ॥ भयो गजराजको बल हीनो । याद तब गोविंदको कीनो ॥ सुनतहि टेर गजेंद्रकी, उठधाये व्रजराज । सुध ना रही शरीर की, कियो भक्तको काज ॥ जनार्दन सन्तन दुखहारी । नाथ तुम दीनन हितकारी ॥ १५८ ॥

राग देश ।

हे अच्युत हे पारब्रह्म अविनाशी अवनाश । हे पूरण हे सर्वमें दुख भञ्जन गुण तास ॥ हे सगी हे निरकार हे निर्गुण सब टेक ।

हे गोविन्द हे गुणनिधान जाके सदा विवेक ॥ हे अपरंपार हर हरे हे भी होवन हार । हे सन्तनके सदा संग निराधार आधार ॥ हे ठाकुर हौ दासरो मैं निर्गुण गुण नहि कोय । नानक दीजै नाम दान राखौ हिये परोय ॥ १५९ ॥

छंद ।

श्रीकृष्णजीके कमल नेत्र कटि पीतांबर अधर मुरली गिरिधरं । मुकुट कुण्डल कर लकुटिया सांवरे राधेवरं ॥ कूल यमुना धेनु आगे सकल गोपिन मन हरं । पीत वस्त्र गरुड़ वाहन चरण नित सुखसागरं ॥ करत केलि कलोल निशि दिन कुंज भवन उजागरं॥ अजर अमर अडोल निश्चल पुरुषोत्तम अपरापरं ॥ गोपीनाथ गुपाल गिरिधर कंस हरनाकुश हरं । गल फूल माल विशाल लोचन अधिक सुन्दर केशव ॥ वशीधर वसुदेव छैया बलि छल्यो हरि वामन । जल डूबते गज राख लीनो लंक छेद्यो रावन ॥ सप्त द्वीप नौखंड चौदा भुवन कीने इक पल । द्रौपदीकी लाज राखी कहां लौ उपमा करं ॥ दीनानाथ दयालु पूरण करुणामय करुणाकरं । कवि दत्तदास विलास निशिदिन नाम जप नित नागर ॥१६० ॥

प्रथम गुरुके चरण बदो जासो ज्ञानप्रकाशत । आदि विष्णु युगादि ब्रह्मा सेवते शिव शंकरं ॥ श्रीकृष्ण केशवकृष्ण केशवकृष्ण केशव केशवं । श्रीराम रघुवर राम रघुवर राम रघुवर राघवं ॥ राम कृष्ण गोविन्द माधव वासुदेव श्रीवामनं । मच्छ कच्छ वाराह नरसिंह पाहि रघुपति पावनं ॥ मथुरामे केशोराय विराजे गोकुल बाल मुकुन्दजी।श्रीवृन्दावनमे मदनमोहन गोपीनाथ गोविन्दजी॥ धन्य मथुरा धन्य गोकुल जहां श्रीपति अवतरे । धन्य यमुनानीर निर्मल ग्वालबालसखा बने ॥ ग्वाल बाल सग सखा विराजे संग

राधा भामिनी । वशीवट तट निकट यमुना मुरलीकी टेर सुहावनी ॥ कृष्ण कलिमल हरन सबके जो भजें हरि चरनको । भक्ति अपनी देहु माधो भवसागरके तरनको ॥ जगन्नाथ जगदीश स्वामी बदरीनाथ विश्वभर । द्वारकाके नाथ श्रीपति केशवं करुणाकर । कृष्ण अष्टपदीकी धुन सुन कृष्णलोक सगच्छतं । गुरू रामानन्द नीमानन्द स्वामी छवि दत्तदास समापत ॥ १६१ ॥

राग भैरव ।

मगल आरती गोपालकी नित उठ मगल होत। निरखं मुख चितवन नयन विशालकी ॥ मगल रूप श्यामसुन्दरको मंगल छवि भ्रुकुटी भालकी । चतुर्भुज दास सदा मगलनिधि वानिक गिरिधर लालकी ॥ १६२ ॥

राग रामकली ।

आरती कीजे श्याम सुन्दरकी । नन्दकुमार राधिका वरकी भक्ति कर दीप प्रेम कर बाती । साधु सगति कर अनुदिनराती॥ आरति व्रज युवती मनभावे ॥ श्याम लीला नित हरिवंश गावे ॥ १६३ ॥

आरती कीजे सुन्दर वरकी । नन्दकिशोर यशोदानन्दन नागर नवल ताप तम हरकी ॥ वन विलास मृदुहास मनोहर श्रवण सुधा सुख मोहन करकी । विहारीदास लोचन चकोर नित अश प्रिया भुजधरकी ॥ १६४ ॥

राग कालिंगड़ा ।

आरती लीजो श्रीनन्दके लाला मदनगुपाला । टेरत हैं कबके जन ठाढे होउ बेग दयाला ॥ कोटिन शशि तेरे नखकी शोभा कहाँ लौं दीपक वाला ॥ धुनि मिरदंग अनाहद बाजे कथा

मुहूरत उधरे तुमरे हैं सतवार । तुमतो राजा परमभक्त हो मानो वचन हमार॥हरिजीकी भक्ति युगोयुगवरणो आनधर्म दिनचार। एक समय दुर्वासा पठये आये समय विचार ॥ के राजा मोहिं भोजन दीजे कै जावोव्रत हार। राजा कहै मोहिका सकट दीजो नाहिन और उपाय।द्रुपदसुता कहै कृष्ण सुमिर लेहु तुमरे सदा सहाय ॥ तब पांडव सुत सुमिरण कीनो प्रगटे कृष्ण मुरारा।चक्र सुदर्शनकी सुधि आई ऋषी चले व्रतहार ॥ अष्टादश षट तीन चार मिल करते यही विचार । एकै ब्रह्म सकल घट पूरण केवल नाम अधार ॥सतयुग सत त्रेता तपसंयम द्वापर पूजा चार । सुर भजन कलि केवल कीर्त्तन लज्जा कान निवार ॥ १६९ ॥

राग सोरठ।

टेर सुनो व्रजराज दुलारे। दीनमलीन हीन शुभ गुणसो आय परचो हूँ द्वार तिहारे ॥ काम क्रोध अति कपट लोभ मद सोइ माने निज प्रीतम प्यारे। भ्रमत रह्यों इन सँग विपयनमें तो पद कमलनसे उर धारे ॥ कौन कुकर्म कियो नहि मैंने जो गये भूल सो लिये उधारे। यहां लौं खेप भरी रचपचके चकितरहे लखिके वनजारे ॥अवतो एक बार कहो हँसके आजहि सो तुम भये हमारे।याहीं कृपातेनारायणकीवेगिलगेगी नाव किनारे ॥१७० ॥

राग मलार।

हम भक्तनके भक्त हमारे । सुन अर्जुन परतिज्ञा मोरी यह व्रत-टरत न टारे॥भक्तन काज लाज हिय धरके पांय पियादे धाये । जहँ जह भीर परी भक्तनको तहँ तहँ होत सहाये॥जो भक्तन सो बैर करत है सो निज वैरी मेरो। देख विचार भक्त हित कारण हांकत हो रथ तेरो॥जीतो जीत भक्त अपनेकी हारे हार विचारो। सूरश्याम जो भक्त विरोधी चक्र सुदर्शन मारो ॥ १७१ ॥

राग सारङ्ग।

दास अनन्य मेरो निज रूप। दर्शन निमिष तापत्रयमोचन पर्संत मुकत करत गृहकूप॥ मेरी बांधी भक्त छुड़ावै बांधे भक्त न छूटे मोहि। एक वेर मोको गहि बांधे तो पुनि मोपै जुवाब न होहि॥ मै गुण वन्ध सकलको जीवन मेरो जीवन मेरे दास। नामदेव जाके जिय जैसी तैसो ताको प्रेम प्रकाश॥ १७२॥

राग विभास।

ऊधो हौं दासनको दास। जो जन मेरो नाम जपतहै मै तिनहीके घट परकाश॥ धन्नेकी मै गऊ चराई नामेको देहरा फेरिया। त्रिलोचनके मै भयो ब्रतीया सुदामेको दरिद्र हरिया॥ कवीरके मै रह्यो वनिजारा सेनेकी विरती धाया। गजके जाय चरण गहे मै काढ जलो थल ल्याया॥ जो जन कहत करौ मै सोई सन्त मेरी रह रास। हित चित प्राण भक्त है मेरे गावतहै दुनीदास॥ १७३॥

राग काफी।

जो जन ऊधो मोहिं न विसारं ताहि न्रा विसारों छिन एक घरी। जो मोहिं भजे भजूमै वाको कल न परत मोहि एक घरी॥ काहू जन्म जन्म मै फदन राखो सुख आनन्द करी। चतुर सुजान सभामे वैठे दुःशासन अनरीत करी॥ सुमिरण कियो द्रौपदी जवही खैचत चीर उवार धरी। ध्रुव प्रहलाद रैनि दिन ध्यावै प्रगट भये वैकुंठ पुरी॥ भारतमें भरुहीके अडा तापर गजको घट ढुरी। अवरीप गृह आये दुर्वासा चक्र सुदर्शन छांहि करी॥ सूरके स्वामी गजराज उवारे कृपा करी जगदीश हरी॥ १७४॥

आज अति राजत दंपति भोर । सुरत रंगके रसमे भीनें नागरि नंदकिशोर ॥ अंसन पर भुज दिये विलोकत इंदु वदन विव ओर । करत पान रस मत्त परस्पर लोचन तृषित चकोर ॥ छूटी लटन लाल मन करष्यो ये बांके चितचोर ॥ पारिंभन चुंबन आलिंगन सुर मन्दिर कल वोर ॥ पग डगमगत चलत वन विहरत नव निकुंज घनघोर । हित हरिवंश लाल ललना मिलि हियो सिरावत मोर ॥ १८९ ॥

राग बिलावल ।

आज इन दोउअन पै वलि जैये । रोम रोम सों छवि बरसत है निरखत नयन सिरैये ॥ रूप रास मृदुहास ललित मुख उपमा देत लजैये । नारायण या गौर श्यामको हिये निकुंज वसैये १९०

राग रामकली ।

उरझ्यो नीलांवर पीताम्बर महियां । कुंडलसों लर लटवेसरसों पीतपट हारनसो वनमाल वहियांसो वहियां । हरा गति अति छवि अग अंग रही फवि उपमा विलोकिवेको पटतर नहियां । कामके कलोल छूटे सेजहूंके सुख लूटे सूर प्रभु विलसत कदमकी छहियां ॥ १९१ ॥

राग प्रभाती ।

छॉडो कृष्ण युगल वैयां भोर भई अँगना । दीपककी ज्योति फीकी चद्रहूंको चांदना ॥ मुखको तंवोल फीको नयनहूको आंजना ॥ पनिघट पनिहारी जात हौंभी जाउँ यमुना । गैयां सव वनको जात पक्षी जात चुगना ॥ घर घर दधि मथन होत छनकत हैं कॅगना । ग्वाल बाल द्वारे ठाढे उठो नन्दनँदना ॥ सूर श्याम मदनमोहन ऐसो नयनठगना । श्रीराधाजूके कुण्डल सोहै कृष्णजूके वॅगना ॥ १९२ ॥

राग कालिंगडा ।

प्रीतम नूपुर मति न उतारो ।इनकी धुनि सुनि पार परोसिन कहा करेंगीहमारो॥भले करो जग चर्चा मेरी तुम निज प्रण नहि टारो ।नारायणजे शरण चरणकी तिन्हे न कीजे न्यारो॥१९३॥

राग भैरव ।

भोर भयो जागो मनमोहन टेरत राधे प्राणपियारी । बोलत तमचर मुखर सुहावन निशि तम विगत भई उजियारी ॥ दधि मथि माखन तुमपेल्याई मिश्रित मिश्री मधुर सुधारी । ललितादिक सखियां सब ठाढी भेवा पान लिये जल झारी ॥ सुन प्रियबानी सुखरस सानी नयन कमल खोले गिरिधारी । दरश परश नयनन फल पायो वारि अपनपो भई सुखारी ॥ आदि सनातन राधे मोहन विलसत हुलसत संग सुकुमारी। दपति लीला सुखद सुशीला गावत दीन मगन बलिहारी ॥ १९४॥

राग रामकली ।

लटकत आवत कुंज भवनते । ढुर ढुर परत राधिका ऊपर जाग्रत शिथिल गवनते ॥ चौंक परत कबहू मारग बिच चलत सुगंध पवनते ।भर उसास राधा वियोग भय सकुचे दिवस रवन ते ॥ आलस मिस न्यारे न होत हे नेकहू प्यारी तनते । रसिक टगे जिन दशा श्यामकी कबहू मेरे मनते ॥ १९५ ॥

राग कान्हरा ।

प्रीतिकि रीति रंगीलोइ जाने । यद्यपि सकल लोक चूडामणि दीन अपनपो माने ॥ यमुना पुलिन निकुंज भवनमे मान मानिनी ठाने ।निकट नवीन कोटि कामिनी कुल धीरज मनहि न आने॥ नश्वर नेह चपल मधुकर ज्यो आन आनसे बाने ॥ जयश्रीहितहरिवंश चतुरसोइलालहि छांड मेड पहिचाने॥१९६॥

राग रेखता ।

हर इक तरफ चमनमें कैसी वहारछाई । चल देखिये छबीली गुलशन कि खुशनुमाई॥गेंदा गुलाव तुर्रा क्या मालती निवारी । फूलोके भार सेती क्या झुकरही हें डारी॥ सखियोंके संग जाके देखी विपिनकी शोभा । नागर नवल छबीली छवि देखके मन लोभा ॥ फूलनकी गूँध वेनी सखियन भली वनाई । हँस हँसके ललित किशोरी उर कठसो लगाई ॥ १९७ ॥

टुक वंगलामें वैठो वागकी वहार है । घरको न जावो प्यारा यां भइ अवार है॥जाही जुही चमेली क्या मालती सुहाई । क्या सर्व सुहागिन सेवती क्या गुल डोरी लगाई ॥ चारो तरफ लगी है क्या गुलावकी क्यारी॥ क्या सर्व सफेद कनेर हे क्या गुलावास न्यारी॥ हँस करके ललित किशोरी उर कठसो लगाई । गुलशन सिधारो प्यारी क्या भई चमन सवाई ॥ १९८ ॥

कीजे गवन भवनमें वृषभानुकी दुलारी । देखो वहार कैसी वड़ गोपकी कुमारी ॥फूले गुलाव चपा केसर कि फूली क्यारी । सुन्दर खिली चमेली गेदा खिले हजारी ॥ चहुँओर मोर बोलें कोयल कि कूक प्यारी ।पहरो सम्हार भूपण ओढो सुरग सारी ॥ जल्दी चलो किशोरी अरजी यही हमारी । माखनको चोर ठाढो विनती करे तिहारी ॥ १९९ ॥

दादरा ।

महलन चलो नवल अलवेली। रग महलमें सेज विछीहें चुन २ कुसुम चमेली॥ चम्पा मरुवा और केवडा विच विच फूल रवेली। चित्रकारी मेरे देखोजी मन्दिरमें सुन्दर गर्व गहेली ॥ पुरुपोत्तम प्रभु रसिक शिरोमणि थारे चरणकी मे चेली ॥ २०० ॥

लावनी ।

चल वृषभानु कुमारी बाग अवलोक बनी शोभा भारी । भाँति भाँतिके खिले हैं फूल झुकी धरणी डारी ॥ सुन प्रिय वचन चली हँस सुन्दर पहुँची नजर बागकी ओर । वचन अमीसे कहतहैं नागरिसे पिय नन्दकिशोर ॥ देखो बाग मनोहरता क्यारिनमें कैसी बनी मरोर । अति सुढार है रोस सुरखी पट्टीकी हरी किनोर ॥ फूले चीन गुलाब चारु गुल तुर्रा केतकि है न्यारी । भाँति भाँति० ॥ गेदा गुलाबास गुलतुर्रा गुलसब्बू गुलगोटी । गुलइलायची लगीहै गुलमेंहँदी रँगकी मोटी ॥ फूली गुलचाँदनी भली यह गुलबहार झुकमें लोटी । कुन्द केवडा भली कचनारनकी सुन्दर जोटी ॥ रायबेल चम्पा बेला मोतिया जुही फूली प्यारी । भाँति भाँतिके० ॥ गुलखैरा गुलदाउद नीकी आवत महक चमेलीकी । मौलसिरी है ललित केवरा माधुरी बेलीकी ॥ सर्गे सरस कनेर फुहारनमें बहार जलरेली की । होज बीचमें भली शोभा बाढी जल केलीकी ॥ फूले कज तड़ागनमें तिनपै अली पाँती झुकन्यारी । भाँति भाँतिके० ॥ करो विहार आज या उपवन सुनो कुँवर जिय भावतहै । कुञ्ज छबीली छबीली ऋतु वसंत सरसावत है ॥ बोलत मोर चकोर हंस कोयल मधुरे सुर गावत है । पवन सुहावन विविध विधि चलत अनन्द बढावत है ॥ कुञ्जभवन मिलि बैठे दोऊ निरखें रसिक जन बलिहारी । भाँति भाँतिके० ॥ २०१ ॥

राग दादरा ।

प्यारी तेरे अगमें फूलनकी बहार है । फूलनके बाजूबंद फूलनके गजरे फूलनके सोहै गलहार ॥ चम्पा मरुवा राय चमेली सब फूलनमें गुलाब । चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि सब गोपिनमें गुपाल ॥ २०२ ॥

राग वसन्त ।

नई बहार आई मन भाई । व्रजकी नारि सब बन बन मिल मिल फुलवा बीननको धाई ॥ डारी डारी रस लेत भवँरवा कोयलिया बोल रही । अँबुआ मौल रहे सब शीतल मन्द सुगन्ध मारुत वहे ललित लता द्रुम छाई ॥ बोलत सारस मोर कोकिला नाना पक्षी शब्द सुनाई । चलो न बेग कुँवरि कुञ्जनमे फूल रही फुलवारी प्यारी ॥ तोहि श्याम बुलावत लेहु प्रेम रस कृष्णदास मन भाई ॥ २०२ ॥

ललित लवंग लता परिशीलन कोमल मलय समीरे । मधुकर निकर करवित कोकिल कूजित कुज कुटीरे ॥ विहरति हरिरिह सरसं वसन्ते ॥ नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहि जनस्य दुरंते ॥ उन्मद मदन मनोरथ पथिक वधू जन जनित विलापे ॥ अलिकुल सकुल कुसुम समूह निराकुल बकुल कलापे ॥ मृगमद सौरभ रभस वशंवद नव दल माल तमाले ॥ युवजन हृदयविदारण मनसिज नख रुचि किंशुक जाले ॥ मदन महीपति कनक दंड रुचि केशर कुसुम विकासे ॥ मिलित शिलीमुख पाटलि पटल कृतस्मर तूण विलासे ॥ विगलित लज्जित जगदवलोकन तरुण करुण कृतहासे ॥ विरहिनि कृंतन कुन्त मुखाकृति केतकि दंतुरिताशे ॥ माधविका परिमल ललिते नव मालति जाति सुगन्धौ ॥ मुनि मनसामपि मोहन कारिणि तरुणा कारण बन्धौ । स्फुरदतिमुक्तलता परिरंभण मुकुलित [illegible] चूते ॥ वृन्दावन विपिने परि सर परि गत, यमुन [illegible] जयदेव भणितमिद [illegible] वन वर्णन मुदयतु हरिचरण स्मृति [illegible] ॥

देखोसखिआजवन्यो श्रीवृन्दाविपिन समाज। आनंदित सव लोक ओक सुख सदा श्यामको राज॥ राधारमण वसत मचायो पञ्चम धुनि सुनि कान। धरणि गिरत सुर किन्नर कन्याविथकित गगन विमान॥किलकतकोकिल कुंजन ऊपर गुजत मधुकर पुञ्ज। वजत महावर वेणुझांझ डफ ताल पखावज रुञ्ज॥ केशर भर भर ले पिचकारी छिरकत श्यामहि धाई॥ छिरक कुँवर वृका नर चोवा लिये कण्ठ लिपटाई॥वर्षत सुमन विवुध कुल ऊपर पावन परम पराग। तन मन धन न्योछावर कीनो निरखि व्यास वड-भाग॥ २०५॥

कोयलिया वोलन लागी रे। फूल रही फुलवारी पिय प्यारी ऋतु वसत आई मदन जागे टेसू फूले अँवुआ मौले भ्रमर करत गुजार॥ पिया विन मेरो मन भयो विरागी॥ अवधि वीती अजहू नहि आये कुब्जा सौति विरमाये॥ रैनि दिवस रसना रटत उनही संग लागी॥ प्रीति रीति श्याम जान दर्शन देहु सुख निधान॥ कृष्णदास मिटे प्यास आनँद उर वाढे॥२०६॥

रागविभास।

प्यारी तुम कौनहो री फुलवा वीननहारी॥नेह लगनको वन्यो वगीचा फूल रही फुलवारी। नन्दलाल वनमाली सो तुम वोलो क्यो नहिं प्यारी॥ हँस ललिता तव कही श्याम सो यह वृषभानु दुलारी। तिहारे कहा लागे या वनमें रोके गैलहमारी॥ गवेजू फल फूल लिये हैं विविध सुगंध सँवारी। शूर श्याम राधे तन चितवत इकटक रहे निहारी॥ २०७॥

रागा कालिंगडा।

कोई फुलवा लेहुरी फुलवा। नीलश्वेतपीरे पचरंगी वरण वरण

राग वसन्त ।

नई वहार आई मन भाई । ब्रजकी नारि सब बन ब्रन मिल मिल फुलवा बीननको धाई ॥ डारी डारी रस लेत भवँरवा कोयलिया बोल रही । अँबुआ मोल रहे सब शीतल मन्द सुगन्ध मारुत वहे ललित लता द्रुम छाई ॥ बोलत सारस मोर कोकिला नाना पक्षी शब्द सुनाई । चलो न वेग कुँवरि कुञ्जनमे फूल रही फुलवारी प्यारी ॥ तोहि श्याम बुलावत लेहु प्रेम रस कृष्णदास मन भाई ॥ २०३ ॥

ललित लवंग लता परिशीलन कोमल मलय समीरे । मधुकर निकर करंवित कोकिल कूजित कुज कुटीरे ॥ विहरति हरिरिह सरस वसन्ते ॥ नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहि जनस्य दुरते ॥ उन्मद मदन मनोरथ पथिक वधू जन जनित विलापे ॥ अलिकुल संकुल कुसुम समूह निराकुल बकुल कलापे ॥ मृगमद सौरभ रभस वशवद नव दल माल तमाले ॥ युवजन हृदयविदारण मनसिज नख रुचि किंशुक जाले ॥ मदन महीपति कनक दंड रुचि केशर कुसुम विकासे ॥ मिलित शिलीमुख पाटलि पटल कृतस्मर तूण विलासे ॥ विगलित लज्जित जगदवलोकन तरुण करुण कृतहासे ॥ विरहिनि कृंतन कुन्त मुखाकृति केतकि दंतुरिताशे ॥ माधविका परिमल ललिते नव मालति जाति सुगन्धौ ॥ मुनि मनसामपि मोहन कारिणि तरुणा कारण बन्धौ । स्फुरदतिमुक्तलता परिरंभण मुकुलित पुलकित चूते ॥ वृन्दावन विपिने परि सर परि गत यमुना जल पूते ॥ श्रीजयदेव भणितमिद मुदयतु हरिचरण स्मृति सारं ॥ सरस वसन्त समय वन वर्णन मनुगत मदन विकारं ॥ २०४ ॥

देखोसखिआजबन्यो श्रीवृन्दाविपिन समाज। आनंदित सब लोक ओक सुख सदा श्यामको राज॥ राधारमण बसत मचायो पञ्चम धुनि सुनि कान। धरणि गिरत सुर किन्नर कन्याविथकित गगन विमान॥किलकतकोकिल कुंजन ऊपर गुजत मधुकर पुञ्ज। बजत महावर वेणुझांझ डफ ताल पखावज रुञ्ज॥ केशर भर भर ले पिचकारी छिरकत श्यामहि धाई॥ छिरक कुंवर बूका भर चोवा,लिये कण्ठ-लिपटाई॥वर्षत सुमन विबुध कुल ऊपर पावन परम पराग। तन मन धन न्योछावर कीनो निरखि व्यास बड-भाग॥ २०५॥

कोयलिया बोलन लागी रे। फूल रही फुलवारी पिय प्यारी ऋतु वसंत आई मदन जागे टेसू फूले अँबुआ मौले भ्रमर करत गुंजार॥ पिया बिन मेरो मन भयो विरागी॥ अवधि बीती अजहूं नहि आये कुब्जा सौति बिरमाये॥ रैनि दिवस रसना रटत उनही संग लागी॥ प्रीति रीति श्याम जान दर्शन देहु सुख निधि,न॥ कृष्णदास मिटे प्यास आनंद उर बाढे॥२०६॥

रागविभास।

प्यारी तुम कौनहो री फुलवा बीननहारी॥नेह लगनको बन्यो बगीचा फूल रही फुलवारी। नन्दलाल बनमाली सो तुम बोलो क्यों नहि प्यारी॥ हँस ललिता तब कही श्यामसो यह वृषभानु दुलारी। तिहारे कहा लागे या बनमे रोके गेलहमारी॥ गंधेज फल फूल लिये हैं विविध सुगंध सँवारी। शूर श्याम राधे तन चितवत इकटक रहे निहारी॥ २०७॥

रागा कालिंगडा।

कोई फुलवा लेहुगी फुलवा। नीलश्वेतपीरे पचरंगी बरण बरण

के हरवा॥ चुन चुन कली चमेली चटकी टटकी दोना मरुवा। ललित किशोरी विवश होय चट पहराये पिया गरवा॥ २०८॥

राग जंगला दादरा ।

प्यारी मे तो तिहारी मालिनियां । मेरी फुलवगियामें चलोगे के ना विविध रंग फूली फुलवारी अलवेली मन भामिनियां ॥ वहुत दिनाकी आशा लागी सीचसींच कर कामिनियां। सफल करो पद तल अकित कर ललित किशोरी दामिनियां ॥२०९ ॥

राग गौरी ।

द्वारें मेरे वसी कौन वजावे । नई नई तान लेत वसीमें ठाढो गौरी गावै ॥चलो सखी वाको मुख देखे नन्दकि धेनु चरावे । सांवरी सखी सोई बड़ भागन जो हँस कठ लगावे ॥ २१० ॥

राग गौरी।

मुरलीकी टेर सुनावे री माईको । मेरे आंगनमें ऐडोई डोले मोर मुकुट छवि भावे ॥ श्रवण सुनत रस मीठी वतियां रहस रहस कर गरे लगावे । सूर घूंघट वाहन मुख देखत लजारिपुछूटत जावे ॥ २११ ॥

राग देश ।

अकेली मत जइयो राधे यमुना तीर । वसींवटमे ठग लागत है सुन्दर श्याम शरीर ॥ विन फांसी विन भुज वल मारत विन गांसी विन तीर । वाके रूप जालमें फँसिके को वचिहै ऐसो वीर ॥ घर वेठो भर देउँ गगरिया मनके मनमें राखो धीर । वीरन पान करन हम त्यागो कालिन्दीको नीर ॥धन सुत धाम गये नाहि चिता प्राण गये नहिं पीर । सूरदास कुलकान गई धृग धृग जन्म शरीर॥ २१२ ॥

राग विहाग ।

मेरे गिरिधारीजीसो कवन लरी । गिरिधारी जीके चरण कमल पर वार डारो सगरी ॥ चल री यशोदा मैया तोहि वताऊं जो हमसे झगरी । गोरे वदन पर नीला पट ओढे चचल चपल खरी ॥ तू तरुणी मेरो गिरिधर वालक कैसे भुज पकरी । गिरिधर मेरो आंसू भर रोवे तू मुसकात खरी ॥ तू तो यशोदा मेरो न्याव न कीनो सुतकी ओर करी । सूरदास वनमें जव पाऊं तो वाते हमरी ॥ २१३ ॥

राग रामकली ।

श्रीयमुना तिहारो दरश मोहि भावे । श्रीगोकुलके निकट वहति है लहरनकी छवि आवे । सुखकरनी दुखहरनी यमुना जो जन प्रात नहावे । मदनमोहनको अतिही प्यारी पटरानी जो कहावे ॥ वृन्दावनमें रास रच्यो है मोहन मुरली वजावे । सूरदास प्रभु तुमरे मिलनको वेद विमल यश गावे ॥ २१४ ॥

राग कालिंगड़ा ।

सखी स्वप्नमें ववरानी तुझ पर जादू किन डारा रे । स्वप्नमें देख्यो वाहीको मिलाऊं तनु तेरेकी तपन मिटाऊं तीन लोक मूरत लिख ल्याऊं चित्ररेखा तव नाम धराऊं पहिले लिखो स्वर्गकी रचना तामे ना कोऊ न्यारा रे ॥ दूजे लिखो पतालके वसैया तामे ना कोउ स्वप्न दिखैया वार वार मोहि लेत वलैया आन मिलाओ मेरे चितको चुरैया क्या करो कछु वश ना मेरो होत न वटसे न्यारा रे । तीजे लिखो मध्यके वासी श्रीवृन्दावन लिख लइ काशी द्वारावतीके हो तुम वासी श्रीकृष्ण ठाकुर अविनाशी तव सकुचाय रही कछु मनमें घूंघट वहुरि सँवारा रे ॥ प्रद्युमनकी मूरत लिखल्याई तव वाको कछु हाँसी आई अनिरुद्धको जव दियो दिखाई प्रेम

सहित अँखियां भर आई पिया पिया कर रोवन लागी स्वप्नेमे मोहि मारा रे ॥ तभी द्वारका पहुँची जाई पलँग सहित वाको ले आई ऊषाको जब दियो मिलाई तब वाने कछु दछिना पाई विष्णुदास मथुराको वासी जीवन प्राण हमारा रे ॥ २१५ ॥

पद ।

भजन भावना हीय न परसी प्रेम नही उर कपटी । कुआँ परयो आकाश उडत खग ताको करत जो झपटी ॥ रसिक कहावे वेई जिनके युगल मिलनकी चटपटी । वृन्दावन हित रूप कहां लग वरणो सृष्टि अटपटी ॥ २१६ ॥

कुण्डलिया ।

साँचे श्रीराधा रमण, झूँठो सब संसार । बाजीगरको पेखनो मिटत न लगत अवार ॥ मिटत न लगत अवार भूतकी संपति जेसे । मेहरी नाती पूत धुआंके बादर तेसे ॥ भगवत ते नर अधम लोभवश घर घर नाचें । झूँठे गढ़े सुनार वैनके बोले साँचे ॥ २१७ ॥

छंद ॥

देखा देखी रसिक न होइ हे रस मारगहे वंका । काह सिंहकी सरवर करिंहे गीदर फिरे जो रंका ॥ असहन निंदा करत परार्ई कबूँ न मानी शंका । वृन्दावन हित रूप रसिक जिन दियो अनन्यपथ डंका ॥ २१८ ॥

सबसों न्यारे सबके प्यारे ऐसी रहनी रहिये । स्तुति अरु निंदा छोड पराई युगल जीभ यश गहिये ॥ दुख सुख हानि लाभ सम वर्तन आनि परे सो सहिये । भगवत चरण शरण गहि गोविंद मन वांछित सुख लहिये ॥ २१९ ॥

कवित्त ।

कामिनी निहारयो काम सन्तन विचारयो राम, योगी योग ध्यान सिद्ध सिद्धन विशेषिये । दुर्जनको शारदूल मल्लनको वज्र-तूल, शत्रुनको सूर प्रजा प्रजापति पेखिये ॥ घन घटा मोरनको चन्द्रमा चकोरनको, भ्रमरको कज मञ्जु मकरन्द लेखिये । कंस जाने काल ग्वाल बाल सब जाने सखा, एक नन्दलाल ही अनेक रूप देखिये ॥ २२० ॥

राग विहाग ।

ऊधो चलो विदुर घर जैये । दुर्योधनके कहा काज जहं आ-दर भाव न पैये ॥ गुरुमुख नही वडो अभिमानी तापर सेवक रहिये । टूटी छत्त मेघ जल बरसे टूटो पलँग बिछैये ॥ चरण धोय चरणोदक लीनो त्रिया कहै प्रभु ऐयं । सकुचत वदन फिरत छिपाये भोजन काह मँगैये ॥ तुमतो तीन लोकके ठाकुर तुमसे कहा दुरैये । हमतो प्रेम प्रीतिके गाहक भाजी साग चखैये ॥ सूरदास प्रभु भक्तनके वश भक्तन प्रेम बढैये ॥ २२१ ॥

राग जंगला ।

जो मै हरी न शस्त्र गहाऊँ । तो लाजो गगा जननीको संतनु सुत न कहाऊं ॥ शर धनु तोड महारथ मारूँ कपिध्वज सहित गिराऊ । पांडव सेन समेत सारथी शोणित सिन्धु बहाऊ ॥ जीवों तो यश लेउँ जगतमे जीत निशान फिराऊँ । मरो तो मण्डल भेदि भानुको सुरपुर जाय बसाऊँ ॥ इतनी शपथ करों प्रभु तुम्हरी क्षत्रिय गति ना पाऊ । सूरश्याम रण विजय सखाको जियत न पीठ दिखाऊँ ॥ २२२ ॥

जो मै पारथ नाम कहाऊँ । हठ कर इन्द्र चाप शोणित शर म-ज्जन नेग कराऊँ॥ गीध कवध कन्ध वैठाऊ काग कराल उडाऊँ।

दे भगदत्त द्रोण दुश्शासन इक इक बाण लगाऊं ॥ प्रलय करूँ कौरव दल ऊपर जंबुक कुलहिं अघाऊ । भीष्म कर्ण राजा दुर्योधन शरकी सेज सुलाऊं ॥ इतनी न करो शपथ मोहिं कृष्णकी क्षत्रिय गति ना पाऊं । सूरदास पारथ परतिज्ञा इक छत राज कराऊ ॥ २२३ ॥

राग सोरठ।

वा पट पीतकी फहरानि । कर गह चक्र चरणकी धावन नहि बिसरत वह बानि ॥ रथ सो उतर वेगि पग धावन कच रजकी लपटानि । मानो सिह शैलसे उतर्यो महामत्त गज जानि॥ जन गोपाल मेरो प्रण राख्यो मेट वेदकी आन । सोई सूर सहायक हमरे गावत वेद पुरान ॥ २२४ ॥

कवित्त ।

आगे प्रहलाद बाबा तेरो,नृप ऐसो रह्यो, जाके हित राम नरसिंह रूप धार्यो है । जाको जश परम पुनीत व्यास भागौतमे, गायो सो भयो है भक्त प्रभुजीको प्यारो है ॥ तैसोई सपूत भयो वेरोचन ताके आप, छायो यश जग कुल ऐसो सो तिहारो है । पूजो मनकाम मेरी सुनिये हो राजा बलि, याते आशीर्वाद दानी तुमको हमारो है ॥ २२५ ॥

राग श्यामकल्याण ।

सुन लेहु बात हमारी नगर सब । पढने जाओ प्रहलाद संग सब राम नाम उर धारी ॥ हरनाकुशके नाश करनको होगे नरसिह अवतारी।माखन चोर दास यो भाषे यह कह भवन सिधारी२२६ ॥

सुन लेहु राजकुमार । अरज मेरी याके पुत्र चढे अगनीमे राम बचावन हार ॥ राम नाम है सत्य कुँवर जी झूठो सब ससार । माखनचोर दास यो भाषे जाके हरि आधार ॥ २२७ ॥

छन्द ।

मत ले तू रामको नाम । झूठ मत बोले वृथा कुमारी । मेरो जो सुन पावेगो पिता खाल कढ़ लेगा भुस भरवारी ॥ अरी यह तो अगिन चढे वच नही इनको अपराध हमारी । यह तो बिल्ली करत विलाप दोष भयो भारी ॥ २२८ ॥

राग श्यामकल्याण ।

मत ले रामको नाम मौत जिन घेरे कुम्हारी । काल जो तेरे शिरपर आयो आगई दशा तिहारी ॥ राम नामको वाद न कीजै लीजै शोच विचारी । माखनचोर दास यू आपे मेरो पिता बलधारी ॥ २२९ ॥

छन्द ।

कुम्हरी मनमें अति शोच चली प्रहलाद बुलावन आई । डेउढी पर ठाढी भई अरज दासीने जाय सुनाई । तुम सुनहो राजकुमार मेरो आँवा उतरचो आज तुम चलो वेग महाराज वेर भई भारी ॥ २३० ॥

माताजी दूँगा द्रव्य अघाय कहूँ मैं सत्य कि वानी । गुण भूलोगो नाहि पढाई तैने राम कहानी ॥ माताजी भले दिये उपदेश मैने हिरदेमें जानी । विष प्याले छुड़वाय प्याय दियो अम्मृत पानी ॥ २३१ ॥

छन्द ।

पाँच वरसके भये कुँवरजी राजा निकट बुलाये जी । ले प्रहलाद गोद बैठाये मनमें मोद बढाये जी ॥ पडामर्का ब्राह्मण दोनो राजा निकट बुलाये जी । लेजावो चटसार कुँवरको अस कछु रीति पढाओजी ॥ यह है कुलकी रीति हमारे कठिन कठोर कुचाली जी । धर्मको खडन पापको मडन हत्या हृदय बसाओ जी ॥ २३२ ॥

लावनी ।

विद्या पढ़ने गये गुरूकी चटशाला । तिन भर भर पट्टी राम नाम लिख डाला ॥ प्रहलाद काज भगवान भक्त हितकारी । भये सतनके हित काज आप गिरिधारी ॥ निरखी प्रभुकी प्रहलाद प्रथम प्रभुताई । बिल्लीने बच्चे धरे अँवामें लाई ॥ विनाजाने आँच कुम्हारि जो दई है लगाई । कीनी प्रभु आय सहाय बचे सुखपाई ॥ जिन जाना राम स्वभाव परम शुभकारी ॥ भये सन्तनके० ॥ इतनेमें पाँडे आय निहारी पाटी । पढ़ रह्यो रामका नाम चलाई साटी ॥ क्या तुझे रामसे काम कह्यो ललकारी ॥ भये संतनके० ॥ भूपति बोला ललकार कहाँ हरि तेरो । तू है मूरख नादान मौतने घेरो ॥ अब छोडूंगो नाहि गयो मैं हारी ॥ भये सन्तनके ॥२२३॥

राग श्यामकल्याण ।

पाँडे जी मोहि राम नाम लिख देह । गंगाजल तजि पियत कूप जल अम्मृत छाँड विप देह ॥ और पढ़नसे कहा काज है वृथा त्रास क्यों देह । युगलदास प्रभुके चरणनमें बार बार शिर देह ॥२२४॥

कडा ।

प्यारे जी गिनती कई हजार पढे हम बिकट पहारे । पट्टी लिखी अनेक लगे हरि नाम पियारे प्यारे ॥ जी राम नामके हरफ मेने हिरदै में धारे। औ सब झूँठा ख्याल जगतमें धुध पसारे ॥२२५॥

पाँडेजी मैं नहि रखता प्यार कुँवरकी शामत आई । पूत नहीं यमदूत करें मेरी लोग हँसाई ॥ पाँडेजी जाको ले यह नाम सोई मेरो दुखदाई । मार उड़ाऊ खाल करैगा कौन सहाई ॥ २२६ ॥

प्यारेजी फूलोकीसी सेज कुँवर हरिके गुण गावे । धन मेरो महराज पार जिनका नहिं पावे ॥ प्यारे जी निश्चय करके रटे विपतिके फन्द छुडावे । दर्शनते गति होय मुक्तके धाम वसावे ॥२२७॥

राग देश ।

जननी विष मोहि दे पिलाय । अब और कछू तो नाहि उपाय ॥ संगे आप हरी कर ले सहाय । इकबाहँ पकरके खैच लाय मोहि गिरि पर्वतसे दियो गिराय । तहां आप हरीने मोहि लियो उठाय ॥ इक जलती अगिनमे दियो बिठाय । तहँ कूद परे हरि आप धाय ॥ मोहि अमृत ह्रदयसे लियो लगाय । हरिकी गति मोपे लखी न जाय ॥ मोरे रोम रोममें रह्यो समाय । कहे युगल चरणमें चित लगाय ॥ २३८ ॥

राग वसन्त ।

नहि छोडू रे बाबा रामनाम । मेरो और पढनसो नही काम ॥ प्रह्लाद पठाये पढन शाल । संग सखा बहु लिये बाल ॥ मोको कहा पढ़ावत आल जाल । मेरी पटिया पे लिखदेउ श्रीगोपाल ॥ यह पडेमर्का कह्यो जाय । प्रहलाद बुलाये वेग धाय ॥ तू राम कहनकी छोड बान । तुझे तुरत छुडाऊ कह्यो मान ॥ मोको काह सतावो बार बार । प्रभु जल थल नभ कीने पहार ॥ इक राम न छोड गुरुहिं गार । मोहि घाल जार चाहे मार डार ॥ काढ खड्ग कोप्यो रिसाय । तुझे राखन हारो मोहि बताय ॥ प्रभु खभसे निकसे हो विस्तार । हरनाकुश छेद्यो नख विदार ॥ श्रीपरमपुरुष देवादिदेव । भक्त हेतु नरसिंह भेव ॥ कह कबीर कोउ लखे न पार । प्रहलाद उधारे अमित बार ॥ २२९ ॥

राग भैरव ।

मगल रूप यशोदा नन्द । मगल मुकुट कान मधि कुडल मगल तिलक विराजत चन्द ॥ मगल भूपण सब अँग मोहन मगल मूरत आनंद कन्द । मंगल लकुट कांखमें चापे मगल मुरलि बजावत मन्द ॥ मगल चाल मनोहर मगल दर्शन होत

मिट्यो दुख द्वंद । मंगल व्रजपति मंगल मधुवन मंगल यश गावत श्रुति छंद ॥ २४० ॥

राग भूपाली कल्याण ।

मुकुट पर वारी जाऊँ नागर नन्दा । सब देवनमें कृष्ण बडे हें ज्यों तारोमें चन्दा ॥ सब सखियनमें राधे बडी हें ज्यों नदियोंमें गंगा । चन्द्र सखी भज बालकृष्ण छवि काटो यमके फन्दा ॥ २४१ ॥

राग देश ।

आदि मणि ब्रह्म अवतार मणि कृष्ण युग मणि सतयुग दिशन पूर्व सब घट रमण रमैया । दिवस मणि भास्कर निशा मणि चन्द्रमा उडुगण मणि ध्रुव द्वीपन मणि जवूद्वीप खण्डन मणि भरतखड चतुरमहैया ॥ स्वर्गमणि वैकुठ राजन मणि इन्द्र गुरुन मणि बृहस्पति वेद मणि ब्रह्म सब जग रचैया ॥ हस्तिन मणि ऐरावत विहगन मणि वैनतेय पुराण मणि श्रीभागवत परमहस मणि शुकदेव कहैया ॥ ज्ञानिन मणि महादेव ध्यानिन मणि लोमश ऋषि आयुर्बल मणि मार्कण्डेय गिरि मणि सुमेरु थिरैया । तरुन मणि कल्पवृक्ष वीरन मणि महावीर सागर मणि पयसमुद्र सरित मणि विष्णुपदी तीरथ मणि व्रज स्थान हरि प्रगटैया ॥ भक्तन मणि प्रहलाद यतियन मणि लक्ष्मण नारिन मणि उर्वशी तुरंगन मणि उच्चैःश्रवा इन्द्रधाम रहैया । रागमणि भैरव ऋतुन मणि वसन्तऋतु शास्त्रमणि वेदांत रञ्जन मणि सगीत पार ना लहैया ॥ ताननमणि तानसेन गायन मणि नारद गंधर्व मणि हाहाहूहू वीणन मणि सरस्वती वीन प्रात ही नाम लेया । स्वरन मणि खरज स्वर सुर्तन मणि तैव्यारा मूर्छना मणि आनदी तिथिन मणि एकादशी उत्तम मणि गोविद नाम ले कृष्णनंद भवसागर पार पैया ॥ २४२ ॥

राग बिलावल।

धर्ममणि मीन मर्याद मणि रामचन्द्र रसिक मणि कृष्ण और तेज मणि नरहरी। कंठन मणि कमठ बल विपुल मणि वाराह छलन मणि वामन देह विक्रम धरी॥ गिरिन मणि कनकगिरि उदधिन मणि क्षीरनिधि सरन मणि मानसर नदिन मणि सुरसरी। खगन मणि गरुड द्रुमन मणि कल्पतरु कपिन मणि हनूमान पुरिन मणि अवधपुरी॥ सुभट मणि परशुधर कान्तमणि चक्र वर शक्ति मणि पार्वती जान शंकर बरी। भक्त मणि प्रहलाद प्रेम मणि राधिके मणिनकी माल गुहि कंठ कान्हर धरी॥ २४३॥

राग भैरव।

मदन गुपाल हमारे राम। धनुष बाण धर विमल वेणु कर पीत वसन अरु तन घन श्याम॥ अपनी भुज जिन जलनिधि बांध्यो रास नचाये कोटिन काम। दशशिर हति सब असुर सँहारे गोवर्द्धन धार्‌यो कर वाम॥ तव रघुवर अब यदुवर नागर लीला नित्त विमल बहु नाम। परमानन्द प्रभु भेद रहित हरि निज जन मिल गावत गुणग्राम॥ २४४॥

राग सारंग।

हरि हरि हरि सुमिरण करो। हरि चरणारविंद उर धरो॥ हरिकी कथा होतहै जहां। गंगा हू चल आवै तहां॥ यमुना सिंधु सरस्वति आवै। गोदावरी विलंब न लावै॥ सर्व तीर्थको वासो तहां। सूर हरि कथा होत है जहां॥ २४५॥

राग बिलावल।

नन्दरायके नव निधि आई। माथे मुकुट श्रवण मणि कुण्डल पीत वसन भुज चारु सुहाई॥ बाजत ताल मृदंग यन्त्र गति चरि

अरगजा अग चढाई । अक्षत दूब लिये शिर वन्दत घर घर वन्दनवार बँधाई ॥ छिरकत हरद दही हिय हर्षत गिरत अंक भर लेत उठाई । सूरदास सब मिलत परस्पर दान देत नहि नन्द अघाई ॥ २४६ ॥

राग जैतश्री।

नदजू मेरे मन आनंद भयो हौं गोवर्द्धन ते आयो । तुमरे पुत्र भयो हौ सुनिके अति आतुर ह्वै धायो ॥ वदीजन अरु भिक्षुक सुन सुन जहां तहां ते आये । इक पहले ही आशा लागी वहुत दिनन के छाये ॥ ते पहरे कञ्चन मणि भूपण नाना वसन अनूप । मोहि मिले मारगमे मानो जात कहूंके भूप ॥ तुमतो परम उदार नंदजी जो मांग्यो सो दीनो । ऐसो और कौन त्रिभुवन मे तुम सर साटो कीनो ॥ कोटि देहु तो परचो रहै गो विन देखे नहि जैहौ । नन्दराय सुन विनती मोरी तवही विदा भल है हौं ॥ दीजे वग कृपा कर मोको जो हौ आयो माँगन । यशुमति सुत अपने पांयन चल खेलत आवै आँगन ॥ मदन मोहन मेया कह टेरै यह सुनके घर जाऊँ । हौं तो तुम्हारे घरको ठाढी सूरदास मोहि नाऊ ॥ २४७ ॥

राग कान्हरा ।

अनोखा लाडिला खेलन मांगत चन्द । हँसन खेलनको रारि करत है मनमें भयोगी अनन्द ॥ २४८ ॥

राग जैतश्री।

दूर खेलन जिन जाहु ललन मेरे हाऊ आये है । तव हँस वोले कान्हर मैया इनको किन्हो पठाये हैं ॥ यमुनाके तट धेनु चरावत जहां सघन वन झाऊ । पैठ पताल व्याल गह नाथ्यो तहां न देखे हाऊ ॥ अब डरपत सुन सुन यह वाते कहत हँसत वलदाऊ।

सत रसातल शेषासन रहि तवकी सुरत भुलाऊँ॥ चार वेद लैगयो शखासुर जलमे रह्यो लुकाऊँ। मीन रूप धरके जव मारचो तवहिं रहे कहँ हाऊ॥ मथि समुद्र सुर असुरनकेहित मन्दर जलहि खिसाऊँ॥ कमठ रूपधरि धरिणि पीठ पर सुख पायो सुरराऊँ॥ जव हरिणाक्ष युद्ध अभिलाष्यो मनमे अति गरवाऊँ। धरि वाराह रूप रिपु मारचो लै क्षिति दन्त अगाऊँ॥ विकटरूप अवतार धरचो जव जन प्रहलाद बचाऊँ। होय नरसिंह जब असुर विदारचो तहां न देख्यो हाऊँ॥ वामन रूप धरचो बलि छल कर तीन पैग बसुधाऊँ। श्रम जल ब्रह्म कमडलु राख्यो दरश चरण परसाऊँ॥ मारचो मुनि विनही अपराधहि कामधेनु ले आऊँ। इकइस वेर करी निछत्र क्षिति तहा न देख्यो हाऊ॥ राम रूप रावण जव मारचो· दश शिर बीस भुजाऊँ। लंक जराय छार जव कीनो तहा रहे कहँ हाऊँ॥ माटीके मिस वदन बिकास्यो जव जननी डरपाऊँ। मुख भीतर त्रैलोक दिखायो तवहुँ प्रतीति न आऊँ॥ नृपति भीम सो युद्ध परस्पर तेहि कर भाव वताऊँ। तुर्त चीरि द्वै टूक कियो धर ऐस त्रिभुवन राऊँ॥ भक्त हेतु अवतार धरचो सब असुरन मार वहाऊँ। सूरदास प्रभुकी यह लीला निगम नेति नित गाऊँ॥२४९॥

राग रामकली ।

किहि मिस यशोमतिके जाऊँ। सकल सुखनिधि मुख निरखके नयन तृषा बुझाऊ॥ द्वारे आरज सभा जुर रही निकसवे नहि पाऊ। बिन गये पतिवर्त छूटै हँसै गोकुलगाऊँ। श्याम गात सरोज आनन ललित लेले नाऊँ। सूर लगन कठिन मनका कहो काहि सुनाऊँ॥ २५०॥

राग दादरा ।

जगमे देखत हू सब चोर। जोर इंद्रिन वश महा लुब्ध मन मोर॥ पाच चोर सबके उर भीतर चोरी करैं करावे। चोरि चोरि

हिये। ताको पकर नन्दकी रानी ऊखल सो लै बांध दिये॥ जै दुखमोचन पंकजलोचन उपमा जाय न कहत बनी। जै सुख-सागर सब गुण आगर शोभा अङ्ग अनग घनी॥ नारदको हम अति गुण माने शाप नहीं वरदान दियो। जा कारणते प्रभु आपने दर्शन दियो सनाथ कियो॥ जो हरहूके ध्यान न आवत अपर अमर हैं किहि लेखे। सो हरि प्रगट नंदके आँगन ऊखल सङ्ग बँधे देखे॥ जिनकी पदरजको सुर तरसें अगम अगोचर दनु-जारी। त्राहि त्राहि प्रणतारत भंजन जन मन रंजन सुखकारी॥ तुमारी माया जीव भुलानो किहि विधि नाथ तुम्हें जाने। तुमहीं कृपा करो जब स्वामी तबही तुमको पहँचानें॥ हे मुकुंद मधुसू-दन श्रीपति कृपानिवास कृपा कीजे। इन चरणनमें सदा रहै मन यह वरदान हमै दीजे॥ जै केशव जै अधम उधारन दया-सिंधु हरि नित्य मगन। जै सुंदर ब्रजराज शशीमुख सदा बसो मम हृदय गगन॥ रसना नित तुमरे गुण गावे श्रवण कथा सुन मोद भरे। कर नित करें तुम्हारी सेवा नयन सत जन दरश करे॥ नेम धर्म व्रत जप तप संयम योग यज्ञ आचार करे। नारा-यण विन भक्ति न रीझो वेद सन्त सब साख भरें॥ २५६॥

राग सुघराई।

वजावे मुरलीकी तान सुनावे यहि विधि कान्ह रिझावै। नट-वर वेप वनाय चटकसो ठाढो रहे यमुनाके तीर नित वन मृग निकट बुलावै॥ ऐसो को जो जाय यमुनाते जल भर घरहि लै आवे। मोर मुकुट कुण्डल वनमाला पीतांवर फहरावै॥ एक अङ्ग शोभा अवलोकत लोचन जल भर आवे। सूर श्यामके अङ्ग अङ्ग प्रति कोटि काम छवि छावै॥ २५७॥

राग वसन्त ।

बरज यशोदे तू अपनो बाल । रसिया गोपाल नित उठ हमसे करत रार॥ स्नान करन गई यमुना तीर, लहि भूषण वस्त्र धरे हैं तीर ॥ जल प्रवाह मोरी लगी दीठ । तेरा कृष्ण कुँवर मोरी मलत पीठ ॥ रहु री ग्वालन मत झूँठ बोल । मेरा कृष्ण कुँवर झूले पलना ओर ॥ ना खावे अन्न ना पीवे नीर । वह कौन समय गयो यमुना तीर ॥ घर आवे जब बाल सार । आगन धाये जब ढोटा सार । देखो सूर प्रभुके यह ख्याल । उठ चली है ग्वार मुख भई है लाल ॥ २८८ ॥

राग वरवा ।

माई नित उठ कुंजन रोकत व्रज बनवारी । कल न परत मोरी मटुकी फोरी और भीजी पचरँग सारी ॥ जाय कहूँ जी मैं नन्दजू-के आगे कबके छैल विहारी । हम रग प्यारा देख मुसकत हैं और देत रस गारी ॥ २८९ ॥

पीलो ।

हे प्यारी नाहि फोरी गगरिया हेरी छवि हार नई पनिहार । तू तो री मोरी चकियों की डोरी तापे देती है गार ॥ तू जोवन अलमस्त ग्वारन चलत न आप संभार । झूम झूम पग धरत भूमिपर मैं तोहिं दीन सभार ॥ २९० ॥

राग गौरी ।

छबीले बंसी नेक बजावो।बलिबलि जात सखा यह कह कह अधर सुधा रस प्यावो ॥ दुर्लभ जन्म दुर्लभ वृन्दावन दुर्लभ प्रेम तरग । ना जानिये बहुरि कब ह्वै है श्याम तुम्हारे संग ॥ विनती करत सुबल श्रीदामा सुनो श्याम दे कान । या यश[illegible] सनकादि शुकादिक करत अमर मुनि ध्यान ॥ कब पुनि गोप वेष ब्रज धरिहो

फिरिहो सुरभिन साथ । कब तुम छाक छीनके खैहौ श्रीगोकुलके नाथ ॥ अपनी अपनी कांध कमरिया ग्वालन दई डसाई । सांह दिवाय नन्द बाबाकी रहे सकल गहि पाँई ॥ सुन सुन दीन गिरा मुरलीधर चितये मुख मुसकाई । शुण गंभीर गोपाल मुरलिका लीनी कंठ लगाई ॥ धर कर वेणु अधर मनमोहन कियो मधुर धुन गान । मोहे सकल जीव जल थलके सुन वारें तन प्रान ॥ चपल नयन भ्रुकुटी नासापुट सुन सुन्दर मुख बेन । मानो निर्तत भा दिखलावत गति लिय नायक मैन ॥ चमकत मोर चंद्रिका माथे कुंचित अलक सुभाल । मानो कोमल कमल कोश-रस चाखन उड आये अलिमाल ॥ कुंडल लोल कपोलन झलकत ऐसी शोभा देत । मानो सुधासिंधुमें क्रीड़त मकर पानके हेत ॥ उपजावत गावत गति सुन्दर अनाघातके ताल । रस सभ दियो मदनमोहनका प्रेम हर्ष सभ ग्वाल ॥ लोलित वैजन्ती चरणन पर श्वासा पवन झकोर । मानो सुधा पियन अहि आयो ब्रह्म कमण्डलु फोर ॥ डोलत लता मन्द मारुत गति सुन सुन्दर मुख बैन । खग मृग मीन अधीन भये सब कियो यमुन जल सैन ॥ झलमलात भ्रुकुटी पद रेखा सुभग सांवरे गात । मनु पटवधू एक रथ बैठी उदय कियो अधरात ॥ बाँके चरण कमल भुज बांके अवलोकन जो अनूप । मानो कल्प तरोवर बिरवा आन रच्यो सुर भूप ॥ अति सुख दियो गोपाल सबनको सुखदायक जिय जान । सूरदास चरणन रज मांगत निरखत रूप निधान ॥ २६१ ॥

राग पूरवी ।

धरें टेढी पाग टेढी चंद्रिका टेढी त्रिभंगीचाल । कुंडलोंकी छवि देख कोटि रवि उदय होत और सोहे वनमाल ॥ सांवरे वदन पर पीत पट ओढन मुख मुरली बाजे मधुर रसाल । श्रीमत वल्लभ वनते आये संग लिये ब्रजबाल ॥ २६२ ॥

राग कल्याण।

तोसो कहा धुताई करिहौं। जहां करी तहँ देखी नाही कह तोसो मे लरिहौं॥ मुँह सम्हार तू बोलत नाहीं कहत बराबर बात। पावोगे फल अपनो कीयो रिसन कँपावत गात॥ सुनो श्याम तुमहूं सर नाही ऐसे गये बिलाई। हमसों सतर होत सूरज प्रभु कमल देहु अब जाई॥ २६८॥

राग देवगंधार।

कालीके नथन काज कालीनाथ आये हैं। ऐसो रूप धार खडे मानो कोटि शशि चढे चांदना बेहद भयो तिमिर मिटाये हें॥ ब्रह्मा विचार कही बलिको ना सुध रही भूल गयो सब कछु बेग उठधाये हैं। चरणनमें आय परे हो अधीन आगे खडे धन्य धन्य भये भाग दरश दिखाये हे॥ और केती नर नार हर्ष वही प्रेम-धार नख शिख रोम रोम आनँद बढाये हैं। कोई ऐसो कौतुक कियो अहिसुत बांध लियो नाक छेद विष हर कमल लदायेहें। यमुनाके मध्य काढे फणहूंके ऊपर ठाढे राग रग निरत करत अधिक सुहाये हें॥ कहत यो दुनीदास वृन्दावन भयो विलास इच्छा पूरी नदकी यशोदा कण्ठ लगाये हें॥ २६९॥

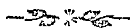
राग वसन्त।

श्रीराधे देडारो ना बांसुरी मोरी। जिस बंसीमें मोरे प्राण बसतहैं सो बसी गई चोरी॥ सोनेकी नाही कान्हा रूपेकी नाही हरे हरे बांसकी पोरी। काहेसे गाऊ राधे काहेसे बजाऊ काहेसे लाऊँ गउआं घेरी॥ मुखसे गाओ प्यारे तालसे बजाओ लकुटी से लाओ गैयां घेरी। चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि हरि चरणनकी चेरी॥ २७०॥

राग टोडी ।

खोलोजी किवांर को है एती वार हरी नाम है हमार बसो कदरा पहारमे । हाँ तो आली माधव कोकिलाके माथे भाग मोहन हो प्यारी फिरी मंत्रके विचारमें ॥ रागी हो रगीली जावो क्यो न दाता पास भोगी हीं छबीली जाय धसोजी पतारमे ॥ नायक हो नागरी तो टांडो क्यो न लादो जाय हाँ तो घनश्याम प्यारी वरसो जी वहारमे ॥ २७१ ॥

श्रीरघुनाथ लीला ।



दोहा ।

मुरली मुकुट दुरायके, नाथ भये रघुनाथ ॥
तुलसी रुचि लखि दास की, धनुपवाण लियो हाथ ॥ १ ॥
तुलसी कौशलराज भज, मत चितवे कहुँ ओर ॥
सीता राम मयक मुख, तू कर नयन चकोर ॥ २ ॥
राम वाम दिशि जानकी, लपण दाहनी ओर ॥
ध्यान सकल कल्याणमय, तुलसी सुरतरु तौर ॥ ३ ॥
सीतापति रघुनाथजू, तुम लग मेरी दौर ॥
जैसे काग जहाजको, सूझत और न ठौर ॥ ४ ॥
नहिं विद्या नहिं वाहुवल, नही गांठमे दाम ॥
तुलसी ऐसे पतितकी, तुम पति राखो राम ॥ ५ ॥
कामिहि नारि पियारि जिमि, लोभिहि प्रिय जिमि दाम ॥
ऐसे हो कब लागिहो, तुलसीके मन राम ॥ ६ ॥
वार वार वर मांगहो, हर्षि देहु श्रीरग ॥
पदसरोज अनपायनी, भक्ति सदा सतसग ॥ ७ ॥

सिंधु सुकृत सीकरते शिव विरंचि प्रभुताई । सो सुख उमँगि अवध रह्यो दश दिशि कवन जतन कहो गाई ॥ जे रघुवीर चरणचिंतक तिनकी गति प्रगट दिखाई । अविरल अमल अनूप भक्ति दृढ तुलसिदास तब पाई ॥ २७६ ॥

राग भैरव ।

सूरजवंशी नमो गुरु ईष्ट हमारो दशरथ सुत राजा राम । जानकीके नायक नाथ त्रिभुवनके धनुपधारी सुंदर श्याम ॥ लक्ष्मण हनूमान भरत शत्रुहन तिनके सँवारे कोटि काम । धीरज प्रवीन रघुकुल तिलक विदित प्रगटे अयोध्या धाम ॥ २७७ ॥

राग तिलंग ।

ढाढिन चल दशरथ घर जाइये । ढाढी कहै सुनो मेरी प्यारी जहाँ सकल सिधि पाइये ॥ कंचन वसन रतन भूपण धन अनगिन अशन अघाइये । रतन हरी प्रभु राम जनमकी विमल वधाई गाइये ॥ २७८ ॥

हौं तो रघुवंशिनको ढाढी ॥ सुन दशरथ सुत जन्म दूरते आयो आशा वाढी ॥ तुमरोइ यश गाऊ जहँ जाऊ पूछो दुनिया ठाढी। रतन हरी मेरो नाम रामकी लेहुँ वलैया गाढी ॥ २७९ ॥

राग तिलंग ।

कौशल्या मैया चिरजीवो तेरो छौना । राज समाज सकल सुख संपति अधिक अधिक नित होना ॥ मुनि जन ध्यान धरत निशिवासर आविक जन्म धर मौना । रत्न हरी प्रभु त्रिभुवन नायक तै कर लियो खिलौना ॥ २८० ॥

सवैया ।

दन्तकि पगति कुन्द कली अधराधर पल्लव खोलनकी ॥ चपला चमकै घन विज्जु जगै छवि मोतिन माल अमोलनकी ॥ घुँघु-

वारी लटें लटकें मुख ऊपर कुण्डल लोल कपोलन की॥निवछावर प्राण करे तुलसी बलि जाऊं लला इन बोलन की ॥२८१ ॥

राग कान्हरो।

ठुमुकि चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनियां। किलकत उठि चलत धाय परत भूमि लटपटाय धाय मोद गोद लेत दशरथकी रनियां ॥ अंचल रज अंग झार विविध भांतिसो दुलार तन मन धन वारिदेत कहत मृदु वचनियां। मोदक मेवा रसाल मनभावत लेउ लाल और लेउ रुचिर पान कञ्चन रुनझुनियां ॥ आनन्द सज कंबु कण्ठ ग्रीवा अति रुचिर रेख कच कुटिल वदन मन्दसो हँसनियां। विद्रुमसो अधर ललित बोलत प्रिय मधुर वचन नाशा अति सुभग बीच लटकत लटकनिया ॥ अद्भुत छबि अति अपार को कवि नहि वरणे पार कहन सके शेष जिहि सहस्र तो रसनियां। तुलसिदास रूप रंग परतरको दिये कहा रघुवरकी छबि समान रघुवरछबि वनियां ॥ २८२ ॥

राग विभास।

भोर भयो जागो रघुनंदन। गत व्यलीक भक्तन उर चदन॥ शशि करे हीन छीन द्युति तारे। तमचर मुखन सुनो मेरे प्यारे॥ विकसत कञ्ज कुमुद विलखाने। ले पराग रस मधुप उड़ाने॥ अनुज सखा सब बोलन आये। वन्दिन अति पुनीत गुण गाये॥ मन भावतो कलेऊ कीजे। तुलसिदासको जूठन दीजे॥ २८३॥

राग प्रभाती।

प्रात समय रघुवीर जगावें कौसिल्या महतारी। उठो लालजी भोर भयो है सुर नर मुनि हितकारी॥ ब्रह्मादिक इन्द्रादिक नारद सनकादिक ऋषि चारी। वाणी वेद विमल यश गावें रघुकुल यश

राग असावरी ।

सखी री मुनि सँग बालक काके । रतनारे नयना जाके ॥ रवि शशि कोटि वदनकी शोभा श्याम गौर तनु जाके । राम लषण कौशल्या जाये दशरथ नाम पिताके ॥ ऋषिको यज्ञ संपूर्ण करके अब अये राजाके । आपदा सबकी हरी रामने कारज करन सियाके ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल धनुष बाण कर जाके। गौतम ऋषिकी नारि अहल्या तारी चरण छुवाके ॥ सब सखियाँ मिल सियाके स्वयंवर पूजा करत उमाके । तुलसिदास सेवक रघुनन्दन लेखे लिख विधनाके ॥ २९० ॥

राग कन्हरा ।

ठुमक ठुमक चलत चाल जनकनन्दनी । मधुर वचन तोतरे त्रयतप मोचनी ॥ सोहत नव नील बसन मन्द हास रुचिर दशन झलकत उरमाल सकल देववंदनी । नूपुर पग बजत मानो साम वेद करत गान क्षुद्र घण्ट रुचिर नाद उर आनंदनी ॥ जगत मात सखिन संग बिहरत बहु करत रंग अग्रदास निरखत छबि भवनिकंदनी ॥ २९१ ॥

राग मलार ।

विहरत वागवामें देखे कुल भानवा । क्रीट मुकुट कचनको झलके मकर मनोहर कुण्डल अलके भाल तिलक केशरको राजे गल वैजंती माल विराजे मधुर वचन कर लीने धनुष बानवा ॥ पीतांबर कटि पर कस काछे मन मुसुकात फिरत वन आछे काकपक्ष शिर सुन्दर सोहे देखत राम लषण मन मोहे विधि शंकर इनहीको धरें ध्यानवा । कही सखी जब ऐसी बानी अखिल लोक पति जीवन जानी शोभा सकल लोककी जगमे तारी शिला चरणकी रजने दरशन

लीजो तजो गृह मानवा ॥ कुसुम समेत वामकर दोना छोटा कुँवर सखी अति लोना या देखत सब भई सुखारी तुलसी मुदित विदेह कुमारी बहुरि चली गिरिजाके भँवनवा ॥ २९२ ॥

राग देश।

मैया मोको वैरन धनुप भयो री। जन्म जन्मको परा शरासन खड धुन क्यो न गयो री ॥ देश देशके भूपति आये तिल भर कछु न टर्‌यो री। कहा कहौं मै माइबापको होतेही विप क्यो न दियो री ॥ उठे राम गुरु आज्ञा पाई सुमन समान लियो री। तुलसिदास प्रभुके कर परशे खडो खड भयो री ॥ २९३ ॥

राग परज।

सखी रँग भीने दोउ राजकुमार। निरख सखी नयनन भर नीके शोभा अमित अपार ॥ भुजदंडन चन्दन मडन पर चमक चांदनी चार। ललित कठ रेखा विचित्र सखि उर कमलनके हार ॥ रंगभूमि मणि जटित मञ्च पर वैठे सभा मँझार। मानो रवि उदयाचल गिरिते निकस्यो तिमिर विदार ॥ खड खड ब्रह्मड खडके भूपति जुरे अपार। कैसे धनुप उठायो तोर्‌यो किनहु न पायो पार ॥ कटि निपंग कर धनुप वाण लिये हरन चले महिभार। लाला रामचन्द्र छबि ऊपर दास कान्हर बलिहार ॥ २९४ ॥

राग केदारो।

लेहु री लोचनको लाहु। कुँवर सुन्दर साँवरो सखि सुमुखि सुन्दर चाहु ॥ खण्डि हरको दड ठाढ़े जानु लबित बाहु। रुचिर उर जयमाल राजत हेत सुख सबकाहु ॥ चितै चित हित सहित नख शिख अग अग निबाहु। सुकृत निज सियराम रूप विरंचि

राग खम्माच ।

चंचल दृग रतनारे तेरे चोट लगे सोई जाने । सुन दशरथके कुँवर लाडिले कासो कहूँ को माने । चितवतही घायल कर डारत राखत ना तनु प्राने । रामलला यह प्रीति अलौकिक रामसखे पहिचाने ॥ ३०२ ॥

राग परज ।

तेरे रतनारे नयन लगे कोशलराज किशोर ॥ मिथिलापुरमें आय सबनके बरबस प्राण ठगे । कछुक श्यामता लिये सिताई सुधा शृंगार पगे ॥ रामसखे लखि जनु रतिपतिके शायकसे उर डगे ॥ ३०३ ॥

राग कालिंगडा ।

पिया तोरी नजरिया जादू भरी । जिहि चितवत तिहिं वश कर राखत सुन्दर श्याम राम धनुधरिया ॥ जुलफन युत मुखचन्द प्रकाशे नासा मणि लटकत मन हरिया । युगल प्रिया मिथिलापुर वासिन फँसी जाल मनो रूप मछरिया ॥ ३०४ ॥

तेरी नजरों कि सैफली धार । सुनिये हो अवध छैल दशरथके घायल किये तें हजार ॥ तेरी चितवनमें मन आन फँस्यो है मिथिलापुरके बजार । मधुर अली पिया सांची कहदेउ कब आओगे दिलदार ॥ ३०५ ॥

राग भैरवी ।

जालम नयन मेरे नहि रहिदे । लालच लगे रूप रघुवरके कर आराम नहि बहिदे ॥ बरज बरज रही अरज न मनदे हरज मरज सब सहिदे ॥ कर कर यत्न रत्न हरि हारे जाय जोरावरी खहिदे ॥ ३०६ ॥

राग श्याम कल्याण ।

कुँवर दशरथके रंग भरे । कोटि काम सुन्दर सुख मन्दर अंदर आन अरे ॥ रँगीली पगिया पेच धरे । रत्न जडित शिरपेंच पेच मोरे मनके वीच परे ॥ श्रवण शुभ कुण्डल सुघरघरे । अलकां झलक कपोल लोल मन मोह लिये हमरे ॥ बनी मोतियनकी माल गरे कमलनयन सुखदैन रैन दिन मनते नाहि टरे ॥ करन कंकन रत्न जरे । श्याम वरण मन हरन रत्न हरी चरण शरण उबरे ॥२०७॥

राग विलावल ।

क्रीट मुकुट शीश धरे मोतियनकी माल गरे कानन कुडल कर धनुप वाण सोहे री । अरुण नयन अनियारे अतिही लगत प्यारे दशरथ दुलारे सबहीको मन मोहेरी ॥ सुन्दर नासा कपोल अलक झलक मधुर बोल भाल तिलक राजत बॉकी भौहे री । लवित भुज अतिविशाल भूपण जडित जाल अग अग छबि तरग कोटि मदन मोहे री ॥ पीताम्बर सोहे गात मन्द मन्द मुसकरात जनक भँवन चले जात गति गयन्द को है री । कान्हर करुणानिधान मेरे सखि जिवन प्राण जानकी झरोखे वैठी रामको मुख जोहे री ॥ २०८ ॥

राग खमाच ।

रामकुमार लाल दशरथके या गलियन अबही जो गयो री॥ पहरे तनु भूपण फूलनके अग अग अद्भुत रूप छयो री ॥ ठाढी देख अटापर मोकों खेलन मिस छिन एक ठयो री ॥ गेंद उछाल तक्यो हरि मोतन घूँघट पट तव खोल दियो री॥तव अपनाय लई मैं वा पिया हियमें प्रेम अँकूर भयो री ॥ रामसखे भूली सुध बुध सब अँखियनमें अब राम रयो री ॥ २०९ ॥

धनुष जनक प्रण पूरण तीनलोक में जानी ॥ जनकरायकी लज्जा राखी परशुराम हित मानी । सुरपुर नारि अवध पुरवासी करत विमल यश गानी ॥ नचत नवल अपसरा मुदित मन वरप सुमन हर्षानी । रत्न मंदिरमें रत्न सिंहासन बैठे सारँगपानी ॥ मात कौशल्या करत आरती हर्ष निरखि मुसकानी । दशरथ सहित अवधपुर वासी उचरत जैजै बानी ॥ तुलसिदास यह अविचल जोरी भक्त अभय पद दानी ॥ ३१५ ॥

राग ललित ।

रघुवर आज रहो मेरे प्यारे । जो तुमको वनवास दियो है करियो गमन सकारें ॥ रघुवर कहैं सुनो मोरि जननी यह व्रत नेम हमारे । अब न रहूँ घर मात कौशला दशरथ बाचा हारे ॥ सीता सहित सुमित्रानंदन भये कुटुंबते न्यारे । तुलसिदास प्रभु दूर गमन कियो चलत नयन जल डारे ॥ ३१६ ॥

राग पीलू ।

मेरी सुध आनि लियो रघुराया । चौदा वरस मोहि कब लग बीतें मोहि पल इक न रहाया ॥ भरत शत्रुहन अवधके वासी रो रो हाल बताया । राम लपण सिया वनको सिधारे भरत फिरे बौराया ॥ तुलसिदास जिन हरि नहिं सुमिरे विरथा जन्म गँवाया ॥ ३१७ ॥

राग देश ।

बिना रघुनाथके देखे नहीं दिलको करारी है । हमारी मातकी करनी सकल दुनियासो न्यारी है ॥ विमुख जिन रामसो कीना ऐसी जननी हमारीहै । लगी रघुवशमें अगनी अवध सगरी उजारी है ॥ भरत शिर लोट धरणीपै यही करता पुकारी है । सुना जब तातका मरना मनो बरछी सी मारी है ॥ परा व्याकुल हुआ

बेसुध द्दगनसे नीर जारी है । धरूं मैं ध्यान सूरतका मुझे तृष्णा जो भारी है ॥ पहू रघुनाथके पाऊँ यही तुलसी विचारी है ॥ २१८ ॥

राग विहाग ।

मिल जाना राम प्यारे नयना तरसे तेरे देखनको ॥ वन प्रमोद में खडी पुकारूं सुनियो रूप उजारे । सुन्दर श्याम कमलदल-लोचन मो नयननके तारे ॥ राम सखे ज्यों जल बिन मछली तड़फत प्राण हमारे ॥ ३१९ ॥

राग कालिंगड़ा ।

मैं कौन वन ढूँढो री माई मेरे दोनो बालकवा ॥ आगे आगे राम चलतहे पाछे लक्ष्मण भाई । वीच जानकी अधिक बिराजे राजा जनककी जाई ॥ अन्तर रोवे मात कौशल्या बाहर भारत भाई । राजा दशरथने प्राण तजेहे कैकेयी मनमे पछताई ॥ इंद्र गरजे भादो बरसै पवन चले पुरवाई । कौन वृक्ष तले भीगत होगे सिया लषण रघुराई ॥ रावण मार राम घर आये घर घर बजत बधाई । मात कौशल्या करत आरती तुलसिदास बलि जाई ॥ ३२० ॥

राग बिलावर ।

नृपति कुँवर राजत मग जात । सुन्दर वदन सरोरुह लोचन मर्कत कनक वर्ण मृदु गात ॥ अशन चाप तृण कटि मुनि पट जटा मुकुट विच नूतन पात । फेरत पाणि सरोजन सायक चोरत चितहि सहज मुसकात ॥ सग नारि सुकुमारि सुभग शुठि गाजत विनु भूपण नव सात। सुखमा निरख ग्राम वनितनके नलिन नयन विकसत मनु प्रात ॥ अंग अग अगणित अनग छवि उपमा कहत सुकवि सकुचात । सिय समेत नित तुलसिदास चित बसत किशोर पथिक दोउ भ्रात ॥ ३२१ ॥

राग कल्याण ।

पूछत ग्राम वधू मृदु बानी । गौर श्याम अभिराम सुभग तनु यह तुम्हरे को लगत सयानी॥शील स्वभाव लषण लघु देवर कर शर धनुप समंजल पानी । पिय तन चिते दृष्टि नीचे करि सखिन बिलोकि सिया मुसकानी ॥ को तुम कोन देशते आये जिहि पुर बसो सुमंगल खानी । चलत पियादे पॉय ज्ञान विन राज-कुँवरि किमि करो बखानी ॥ यह दोउ कुँवर अवधपतिके सुत मैं विदेह तनया जग जानी । ठान कुमति उर बसी सवतिपन राज समय बन दीनो रानी ॥ सियके वचन सुनि सखी दुखितभई पल-छिन मानो विरह गलानी । एक कहैं भल भूप न कीनो बन नहि दीनो कीनो हानी ॥ राम लषण सिय पंथ कथा सुनि जाके हृदय बसी छिन आनी । सो भवसिंधु तरैं गोपद जिमि जन तुलसी यह करत बखानी ॥ २२२ ॥

राग बिलावल ।

फिर फिर राम सिया तन हेरत । तृपित जान जल लेन लषण गये भुज उठाय ऊँचे चढ टेरत ॥ अवनि कुरंग विहँग द्रुम डारन रूप निहारत पलक न प्रेरत । मग न डरत निरख कर कम-लन सुभग शरासन सायक फेरत ॥ अवलोकत मग लोक चहूँ दिशि मनो चकोर चन्द्र महि घेरत । ते जन भूरि भाग्य भूतल पर तुलसि राम पथिक पद जेरत ॥ २२३ ॥

राग पीलू ।

मेरी सुध आजि लियो सियपियारी । मात केकयी बनवास दि-योहै प्राणों सो अधिक प्यारी ॥ कपटी मृगके पाछे धायो लछम-न कियो रखवारी । मै तोहि सिया बहुत समुझायो तैं एक न मा-

नी हमारी ॥ रामचंद्र जब गिरे धर णि पर लछमन रोय पुकारी तुलसिदास प्रभु वन वन ढूँढत विधनाकी गति न्यारी ॥ ३२४ ॥

राग गौरी।

कुटुम्ब तज शरण राम तेरी आयो। तज गढ लंक महल औ मन्दिर-नाम सुनत उठ धायो॥भरी सभामें रावण बैठ्यो चरण-प्रहार चलायो। मूरख अंध कह्यो नहि मानै बार बार समुझायो॥ आवत ही लंकापति कीनो हरि हँस कंठ लगायो। जन्म जन्मके मिटे पराभव राम दरश जब पायो॥ हे रघुनाथ अनाथके बंधू दीन जान अपनायो। तुलसिदास रघुवरकी शरणा भक्ति अभयपद पायो ॥ ३२५ ॥

राग केदार।

दीन हित विरद पुराणन गायो । आरत बंधु कृपालु मृदुल चित जान शरण हौ आयो॥ तुम्हरे रिपुको अनुज विभीषण वंश निशाचर जायो। सुन गुण शील स्वभाव नाथको मैं चरणन चित लायो॥जानत प्रभु दुख सुख दासनके तातें कहि न सुनायो। कर करुणा भर नयन विलोको तब जानौ अपनायो॥ वचन विनीत सुनत रघुनायक हँसकर निकट बुलायो। भेट्यो हरि भर अंक भरत जिमि लंकापति मन भायो॥ करपंकज शिर परश अभय कियो जन पर हेतु दिखायो। तुलसिदास रघुवीर भजन कर को न अभयपद पायो ॥ ३२६ ॥

राग धनाश्री ।

सत्य कहो मेरो सहज स्वभाउ। सुनो सखा कपिपति लंकापति तुमसों कहा दुराउ॥ सब विधि दीन हीन अति जड मति जाको कतहुँ न ठाउ। आये शरन भजा न तजों तिहि यह जानत ऋपि-

राउ ॥ जिनको हौ हित सब प्रकार चित नाहिन और उपाउ। तिन हित लगि धर देह करो सब डरों न सुयश नशाउ ॥ पुनि पुनि भुजा उठाय कहतहों सकल सभा पतियाउ। नाहिन कोउ प्रिय मोहि दास सम कपट प्रीति बहजाउ ॥ सुनि रघुपतिके वचन विभीषण प्रेम मगन मन चाउ। तुलसिदास तज आस त्रास सब ऐसे प्रभुको गाउ ॥ ३२७ ॥

राग काफी जंगला।

तात कि शोच न मात कि शोच रु शोच नही मोहि औध तजे की। शोच नहीं वनबास लियेहु शोच नही मोही सीय हरे की ॥ बालि हते किहु शोच नही अरु शोच नहीं मोहिं दुःख परे की। लक्ष्मण भूमि परेकिहु शोच न शोच नही मोहि लक जरे की। तुलसी शोच भयो इक मोको भक्त विभीषण बांह गहेकी ॥३२८॥

राग विहाग।

शरण गहु शरण गहु शरण गहु रावणा सेतु जल बन्ध रघुवीर आये। अष्टदश पदम योधा जुरे अति बली उडंत पग धूर रवि गगन छाये ॥ कोटि योधा जुरे जनकके नगरमें धनुप ना सक्यो उठाय कोई। तोरचो धनुप गज नाल तोरत जैसे जान लीजो राजा राम सोई ॥ बालिसो शूरमा योधा अतुलित बली नाहि सामर्थ्य ना जगत माही। लग्यो जब वाण रघुनाथके हाथको गिरि परयो धरणि फिर उठयो नाही ॥ लै मिलो जानकी बात आसान की नेग धावो नही विलम कीजै। सूर स्वामी रंगलाल लय लाय लै आयो है काल बचाय लीजै ॥ ३२९ ॥

राग गौरी।

अब देखो रामध्वजा फहरानी। हलकत ढाल फरकत नेजा गरद उठी असमानी॥लक्ष्मण वीर बालि सुत अंगद हनूमान अग-

वानी। कहत मन्दोदरि सुन पिय रावण कौन कुमति सिय आनी॥ जिस सागरका मान करत है तापर शिला तरानी॥ तिरिया जाति बुद्धिकी ओछी उनकी करत बड़ाई। ध्रुव मण्डलसे पकर मँगाऊं वह तपसी दोउ भाई॥ हनूमान सम पायक उनके लक्ष्मण जैसे भाई। जरत अग्निमे कूद परेगे शोच कभू नहि पाई॥ मेघनादसे पुत्र हमारे कुंभकर्णसे भाई। एक बेर सन्मुख होय लडैगे युग युग होत वडाई॥ इक लख पूत सवा लख नाती मौत आपनी आई। अग्रके स्वामी गढ लंका घेरी अजहुँ समुझ अभिमानी२२०॥

राग कालिंगडा।

जय जय जय रघुवश दुलारे। सुखसागर रविवश उजागर लीला ललित मनोहर प्यारे॥ यज्ञ सुधारन असुर सँहारन गौतम नारि उधारन हारे। जनक स्वयम्बर पावन कीनो भृगुपति गर्व निवारन हारे॥ पिता वचन सुन राज काज तज अनुज सहित वनको पगधारे। वालि वधन वैदेही शोधन लकापति भुज भंजन हारे॥ जगनायक प्रभु सन्त सहायक गावत वेद पुराण पुकारे। राम सखे रघुनाथ रूप लख युग युग येही विरद तिहारे॥ २२१॥

राग श्यामकल्याण।

सखी वह देखो रघुराई। गगन मगन पुष्पक विमान पर है बैठे सुखदाई॥ संगमे फवी जनक जाई। ज्यो सावन वन माहिं दामिनी दमकत छवि छाई॥ कपिनकी भीर सँग भारी। हनूमान सुग्रीव विभीषण अगद युवराई॥ मात कौशल्या हरपाई। कञ्चन थार सुधार आरती करै सुमन भाई॥ देवगण फूलन झरिलाई। अटल राज सम्पति रघुवरकी सुर नर मुनि गाई॥ याचकन मन-माँगी पाई। देत अशीश अघाय रतनहारै वलि वलि वलि जाई॥ २२२॥

राग गौरी।

अवध आनन्द भये घर आये हैं लक्ष्मण राम ॥ पहले मिले भरतजी भैया पाछे कैकयी माय । घर घर मिले अयोध्यावासी पाछे कौशल्या हरिकी माय ॥ जबही राम सिंहासन बैठे कही लंककी बात ॥ मातु कौशल्या पूछन लागी कैसे तोडे गढलंक। घाट घाट लक्ष्मणने रोक्यो अवघट रोक्यो राम । दरवाजा अंगदने रोक्यो कूद पडे हनुमान ॥ रावण मार अहिरावण मार्यो दियो विभीषण राज ॥ गाय बजाय जानकी ल्याये गावत तुलसीदास ॥ ३२३ ॥

राग पीलू।

भरत कपिसे उऋण हम नाही । सौ योजन मर्याद सिंधुकी कूद गयो छिन माही ॥ लंकाजार सिया सुध लाये गरब नही मनमाही । शक्ती बाण लग्यो लक्ष्मणके शोर भयो दल माही ॥ द्रोणागिरि पर्वत ले आये भोर होन नहि पाई । अहिरावणकी भुजा उखारी बैठ रह्यो मठ माही ॥ जो पै भरत हनुमत नहिं होते को लावे जग माहीं । आज्ञा भंग कभू नहि कीनी जहि पठायो तहि जाई ॥ तुलसिदास मारुतसुत महिमा प्रभु अपने मुख गाई ॥३२४॥

राग प्रभाती।

प्रात समय उठ जनकनन्दनी त्रिभुवन नाथ जगावे । उठो नाथ मम नाथ प्राणपति भूपति भवन बुलावे ॥ उरझी माल गले मोतियनकी कर कङ्कन सुरझावे । घूंघर वारी अलके झलकें पागके पेच सँवारे ॥ कमलनयन मुख निरख रामको आनन्द उर न समावे । कान्हर दास आश रघुवरकी हरप निरख गुणगावे ॥ ३२५ ॥

राग कल्याण।

देख सखि आज रघुनाथ शोभा बनी । नील नीरद वरण वपुप भुवनाभरन पीत अम्बर धरन हरन द्युति दामनी ॥ सरयू

मज्जन किये सङ्ग सज्जन लिये हेतु जन पर हिये कृपा कोमल धनी । सजनी आवत भवन मत्त गज वर गवन लंक मृगपति ठवन कुँवर कौशल धनी ॥ सघन चिक्कन कुटिल चिकुर विलुलित मृदुल करन विवरत चतुर सरस सुखमा जनी । ललित अहि शिशु निकर मनो शशि सन समर लरत थरहर करत रुचिर जनु युग फनी ॥ भाल भ्राजत तिलक जलज लोचन पलक चारु भ्रू नासिका सुभग शुक आननी । चिबुक सुन्दर अधर अरुण द्विज द्युति सुघर वचन गभीर मृदु हास भव भाननी ॥ श्रवण कुण्डल विमल गंड मंडल चपल कलित कल कांति अति भांति कछु तिन तनी । युगल कचन मकर मनो विधु कर मधुर पियत पहँचान कर सिधु कीरति भनी ॥ उरसि राजत पदिक ज्योति रचना अधिक भाल सु विशाल चहूँ पास वनी गजमनी । श्याम नव जलद पर निरख दिनकर कला कौतुकी मनो रही घेर उड़गन अनी ॥ मन्दरन पर खरी नारि आनन्द भरी निरख वरषहि विपुल कुसुम कुकुम कनी । दास तुलसी राम परम करुणा धाम काम शत कोटि मद हरत छबि आपनी ॥ ३२६ ॥

राग पहाड़ ।

छवि रघुवीरकी चित चोरन ॥ जरकसी पाग तिलक मृगमदको तापर कलगी हीर । उर मणिमाल पीतपट राजत चलत मत्त गज धीर ॥ कृपा निवासीके प्राण जीवन धन सुधहूँ न भूषण चीर ३२७॥

हगन वसी रघुवीरकी छवि हो ॥ शोभा सरस रही मोरी आली विहरत सरयूके तीर ॥ शीतल मन्द सुगध झकोरा वहती है त्रिविध समीर ॥ जानकीदास छवि देख मगन भये शोभा श्याम शरीर ॥ ३२८ ॥

ॲखिया लगी थारे रूप रँगीले रामा ॥ क्या री कहूं कछु वश ना मेरो बूड गैयां रस कूप । चेटक लाय लुभाय लियो मन चतुराई सें अनूप ॥ कृपा निवासी लगन ना छूटे सुनियो अवधके भूप ॥ ३३९ ॥

राग सोरठ।

ॲखिया राम रूप अनुरागी । श्याम वरन मन हरन माधुरी मूरति अति प्रिय लागी ॥ सुन्दर बदन मदन शतशोभा निरख निरख रस पागी । रत्न हरी पल टरत न टारी परम प्रेम रंग रागी ॥ ३४० ॥

ॲखिया राम रूप रस भीनी । कोटि काम अभिराम श्याम घन निरख भई लय लीनी ॥ लोकलाज कुलकान न मानत नूतन नेह रंगीनी । रत्नहरी कैसे अब निकसे होगई ज्यो जल मीनी ॥ ३४१ ॥

राग खट।

मेरो दृग लाग्यो जाय सुन रामा रूप तिहारो। वन प्रमोदकी कुज गलीमे चोरचो चित्त हमारो ॥ मृदु मुसक्यान विलोचन से कछु टोना मो पै डारो । राम सखे अब विन पिया देखे सब सुख लागत खारो ॥ ३४२ ॥

राग कालिंगडा।

बॉकी हमारो यार सॅवलिया । बॉकी लटपटी पीत लपेटे बॉकी बॉधे तलवार सॅवलिया ॥ बॉके शीश जरतकी पगिया बॉके घोड़े असवार सॅवलिया ॥ रामसखेको मन हरी लीनो दशरथ सुत सरदार सॅवलिया ॥ ३४३ ॥

राग जंगला।

काहेको वॉधे तीर कमनियां । भौहें कमान बनी जो तिहारी नयन पलक दोउ शरकी अनियां ॥ सन्त हृदय वन मन मृग ढूढत

चुन चुन मारत शब्द रसनियां । रामसखेको घायल कोनो वन आवे लै जाउ घर कनियां ॥ ३४४ ॥

क्या बुलाक अधरन पर हलके । जबते दृष्टि परी है मेरी तबते छिन पल परत न पलकें ॥ किधो असमसर शर स'धाने क्या सुखमा पर सरवर झलकें ॥ सिय राम पिय सुख मयक पर मनो अमीकी मूरत झलके ॥ ३४५ ॥

यह दो चन्द्र बसें उर मेरे । दशरथ सुत औ जनकनंदिनी अरुण कमल करकमलन फेरे ॥चन्द्रवती शिर चमर ढुरावत आस पास ललना गण घेरे। बैठे सघन कुञ्ज सरयू तट चन्द्रकला तन हँस हँस हेरे । ललित भुजा दिये अस परस्पर झुक रहे केश कपोलन नेरे । रामसखे छवि कहि न परत जब पान पीक मुख झुक झुक गेरे ॥ ३४६ ॥

जय श्रीजानकीवल्लभ लालहि । मणि मदिर श्रीकनक महलमे विपुल रगीली बालहिं ॥ कोउ गावत कोउ वेणु बजावत कोउ मृदग डफ तालहि । युगुल बिहारी भावत दोऊ लालन लखि छवि भई निहालहिं ॥ ३४७ ॥

राग वडहस मलार।

तुम झूलो मेरे प्यारे दशरथ राजदुलारे । नवल दुलहैया अति सुकुमारी तुम जोबन मतवारे॥ झूले देत डरत अति सुन्दर चोरत चित्त हमारे । सुन सखि वचन मधुर मुसकाने प्रिया रूप मतवारे॥ मधुर प्रियाके गरे लाग अब मिलो जानकी प्यारे ॥३४८ ॥

राग पीलु।

झूलत सीताराम अवधपुर रगमहिलमे । मणि कञ्चनको रच्यो हिंडोग झूलत पिया प्यारी परम महिलमें ॥विमलादिक सखी

रसिक झुलावें अतर लगावे पश्मचहिलमें । सरयू सखी दंपति अनुरागे पान लिये ठाढी परस टहिलमें ॥ ३४९ ॥

राग देश मलार ।

सावन घन गरजे घूम घूम । वरसत शीतल जल झूम झूम ॥ कोयल कीर कोकिला बोले हँस चकोर चहूँ दिस डोलें नाचत वन अति करत कलोलें मोर मोरनी चूम चूम । कंचनको हिंडोला झलके रेशम पाट मढे मखमलके चुन चुन कली बिछौना हलके कली कली दल तूम तूम ॥ चलत समीर त्रिविध पुरवाई मन्द सुगंध महा छबि छाई झूलै जनकसुता रघुराई हु वाल झुलावे ऊम ऊम । गावें राग रागनी भामिन दमक रही मानो छबि दामिन झूटा देत नारि गज गामिन पायल वाजे छम छूम छूम ॥ जय जय करत सुमन सुर वर्षत इंद्र निशान बजावत हर्षत दास गणेश युगल छबि निरखत छाय रह्यो सुख रूम रूम ॥ ३५० ॥

राग वसंत ।

गायो वसत वसंत पचमी मङ्गल दिन रघुराज कुँवरको।आवो सब मिल गंधर्व गुणी जन तान तरंग उमग रंग भरको ॥ वाजत ताल मृदंग झांझ डफ प्रेम रंगी सारंगी करको । गाय गाय रघुनायक गुण गण रतनरी हिये रामही हरषो ॥ ३५१ ॥

नवल रघुनाथ नव नवल श्रीजानकी नवल ऋतु कन्त वसत आई । नवल कुसुमावली फूल चहुँ दिशि रही नवल मारुत नवल सुगंध छाई ॥ नवल भूपण वसन पहिन दोउ रंगमगे नवल पिया सखी निरखै सुहाई । नवलगुण रूप जोबन जड़त नित नयो रतन हरि देत आशिप बधाई ॥ ३५२ ॥

खेलत वसत राजाधिराज । देखत नभ कौतुक सुरसमाज ॥ सोहै अनुज सखा रघुनाथ साथ झोरिन अबीर पिच-

कारी हाथ ॥ बाजें मृदंग डफ ताल वेणु । छिरके सुगंध भरे मले रेनु ॥ बरषत प्रसून वर विबुध वृन्द । जै जै दिनकर कुल कुमुद-चन्द ॥ ब्रह्मादि प्रशसत अवध वास । गावत कल कीरति तुल-सिदास ॥ ३५३ ॥

राग टोडी ।

अवध नगर सुन्दर समाज लिये खेलत राम लषण होरी । बाजत ताल मृदंग झाझ डफ केशर रग करी घनघोरी ॥ इतते भरत शत्रुहन आये उडत गुलाल लाल भई खोरी । रतन हरी श्रीअवध बिहारी चिरजीवो सुन्दर दोउ जोरी ॥ ३५४ ॥

राग होरी दादर ।

खेलत रघुराज आज रग भरी होरी । राम लषण भरत शत्रुहन सुन्दर वर जोरी ॥ कंचन पिचकारी करन केशर रग बोरी । गह गह भर रग भरत कह कह हो होरी ॥ उड़त रग वर गुलाल भर भर भर झोरी । गारी दे दे अबीर डारत बरजोरी ॥ रगसो मृदग बाजत डफकी घनघोरी । गाय गाय धाय धाय मीडत मुख रोरी ॥ अवध नगर रंग बढयो सजनी निरखोरी । रतन हरी रामराज युग युग न टरोरी ॥ ३५५ ॥

राग होरी ।

दशरथ राज छबीलो छैल होरी खेलत आवै री । राजकुमार हजार सग लिये रग मचावे री ॥ कचनकी पिचकारी करन लिये अति छवि पावै री ॥ उडत गुलाल लाल रँग भीने मन सो भावैं री ॥ डफ मृदगकी धुन मिल अद्भुत राग सुहावे री । रतन हरी श्रीअवध विहारी पे बलि बलि जावे री ॥ ३५६ ॥

परज।

लाल गुलाल जिन डारो। बरजोरी न करो रघुनन्दन छोडो जी हाथ हमारो॥झकझोरो न मुरक जाय बैयां छूट जाय कचवारी। रामसखे थारे पैयां परत मेरो घूंघट पट न उघारो॥ २८७॥

राग होरी।

तेरी होरीकी झलक दशरथके लाल मेरे मनमे बसी निकसे न पलक। गाल गुलाल लाल रंग भीनी तेरी प्रेम भरी अँखियनकी पलक॥ नयन विशाल ललित मतवारे तेरी अजब फँसी कुंडलमे अलक। रतनहरी जो सुनो तो कहूँ इक अचरज हमारी है तुम्हारे तलक॥ २८८॥

राग देश।

रघुवर तुमको मेरी लाज। सदा सदा मैं शरण तिहारी तुमबडे गरीवनिवाज॥ पतितउधारन बिरुद तिहारो श्रवण सुनी अवाज। हौं तो पतित पुरातन कहिये पार उतारो जहाज॥ अघ खंडन दुखभजंन जनके यही तिहारो काज। तुलसिदास पर किरपा करिये भक्तिदान देहु आज॥ २८९॥

राग वसन्त।

वंदौ रघुपति करुणानिधान। जाते छूटे भव भेद ज्ञान॥ रघुवंश कुमुद सुखप्रद निशेश। सेवत पद पंकज अज महेश॥निज भक्त हृदय पाथोजभृंग। लावण्य वपुप अगणित अनग॥ अति प्रबल मोह तम मारतड। अज्ञान गहन पावक प्रचड॥ अभिमान सिंधु कुभज उदार। सुररजन भंजन भूमिभार॥ रागादि सर्प गण पन्नगारि। कन्दर्प नाग मृगपति मुरारि॥ भव जलधि पोत चरणारविंद। जानकीरमण आनन्दकन्द॥ हनुमंत प्रेम वापी मराल।

निष्काम कामधुक गो दयाल ॥ त्रैलोकतिलक गुण गहन राम कह तुलसिदास विश्राम धाम ॥ ३६० ॥

राग नट।

हौं हरि पतित पावन सुने । हौं पतित तुम पतितपावन दोउ बानक बने ॥ व्याध गणिका गज अजामिल साख निगमन भने। और पतित अनेक तारे जात कापे गने ॥ जान नाम अजान लीने जान यमपुर मने । दास तुलसी शरण आयो राखिये अपने ॥ ३६१ ॥

राग जंगला ।

चितहि राम दीन ओर कोरकी कटाक्षहि । चितहि दीन ओर कोर वार वार करि निहोर जान दीन विपति छीन साहिवी विचार लीन लाय लीन पाछहि ॥ गुला रोटि महीन मोटि खरा खोटि बड़ा छोटि तुमसे नहि कछू ओट हाथ है तिहारे । ना तिहाई रोजगार पेटहीसे ऐहै काज सुनिये गरीबनिवाज राम रतन उदर भरन मेरे राम राखो शरण यथा धेनु बाछहि ॥ दासी दास खाय पाय श्वान औ मंजार जाय वारिउकहार जहां आसनकर डासहि। बचे जूठनको प्रसाद तोरा कुँवर सरा कुरा तो फिर सुधि लीजो मोरी इनके सब पाछहि ॥ कौलते वेकौल हो तो सुनिये रघुवंश केतु तो निकेत ते निकार तुमको नहिं खोरराम खेद देव आछहिं। मांगो वलि चरण सेई वार वार हेई हेई नाहि कछु लेहो देहो राखिये किनारे । ताते कर चरण जोर मोको नहिं और ठौर तुम तज और जाऊ कहां अवधके दुलारे ॥ दास तुलसी टुकर खोर लाग रहो तुम्हरी ओर चौकट नही छूटे नाथ जो कोई झिझकोरे । शीश झगर नाक रगर कल न परे तुम्हरे विगर छूटे नही नाम नगर डगर श्याम प्यारे ॥ ३६२ ॥

राग देश ।

करुणानिधान सुनियोजी कहुं मेरो काजहै भारी । प्रह्लादके हितकारी खंभ फोर देह धारी नरसिंह नाम पाये सब सन्तनके मन भाये ॥ द्रौपदी जो भक्त तेरी जो आन सभामे घेरी चीरोकी लाई ढेरी अब आई वार मेरी ॥ तुमहो विपतिके साथी जल डूबत राख्यो हाथी अब मेरी वेर माधो कहिं सोये हो तो जागो ॥ गजकी जो अरज मानी यह विदित वेद वानी अब मेरी ओर देखो मोहि अपनो कर लेखो ॥ भक्तनके फंद काटे अघ कोट कोट नाटे जी मे वारवार टेरूं टुक वाट तेरी हेरूं ॥ कई कोटि पतित तारे जी मे गिनत गिनत हारे महाराज अवधविहारी भज रामसखे वलिहारी ॥ ३६३ ॥

राग भैरव ।

जाऊं कहां तजि चरण तिहारे ॥ काको नाम पतित पावन जग किहि अति दीन पियारे ॥ कौन देव वराय विरदहित हठिहठि अधम उधारे । खग मृग व्याध पषाण विटप जड यमन कवन सुर तारे ॥ देव दनुज मुनि नाग मनुज सब मायाविवश विचारे । तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे ॥ ३६४ ॥

राग टोडी ।

दीनको दयालु दानि दूसरो न कोई । जाहि दीनता कहो हौ दीन देखो सोई ॥ सुनि सुर नर नाग असुर साहिब तो घनेरे । पै तोलौ जौलौ रावरे न नेक नयन फेरे ॥ त्रिभुवन तिहुं काल विदित वदत वेद चारी । आदि अन्त मध्य राम साहिवी तिहारी ॥ तोहि मॉग मॉगनो न मॉगनो कहायो । सुन स्वभाव शील सुयश याचक जन आयो ॥ पाहन पशु

विटप विहँग अपने कर लीने महाराज दशरथके रक राव कीने ॥ तू गरीबको निवाज मैं गरीब तेरो। बारक कहिये कृपालु तुलसिदास मेरो ॥ २६५ ॥

राग टोडी।

तू दयालु दीन हौं तू दानि हौं भिखारी ॥ हौं प्रसिद्ध पातकी तू पापपुञ्ज हारी ॥ नाथ तू अनाथको अनाथ कौन मोसो। मो समान आरत नहि आरतहर तोसो ॥ ब्रह्म तू हौं जीवहौं तू ठाकुर हौं चेरो। तात मात गुरु सखा तू सब विधि हित मेरो ॥ तोहि मोहिं नातो अनेक मानिये जो भावै। त्यों त्यों तुलसी कृपालु चरण शरण पावै ॥ २६६ ॥

राग झिझोटी।

मै किहि कहौं विपति अति भारी। श्रीरघुवीर दीन हितकारी मम हृदय भवन प्रभु तोरा। तहँ वसे आय बहु चोरा ॥ अति कठिन करै बरजोरा। मानै नहि विनय निहोरा ॥ तम मोह लोभ हंकारा। मद क्रोध बोध रिपु मारा ॥ अति करैं उपद्रव नाथा। मरदै मोहि जानि अनाथा ॥ मै एक अमित बटपारा। कोउ सुनै न मोर पुकारा ॥ भागहु नाहिं उवारा। रघुनायक करो सँभारा ॥ कह तुलसिदास सुन रामा। लूटैं तस्कर तव धामा ॥ चिन्ता यह मोहि अपारा। अपयश ना होय तिहारा ॥ २६७ ॥

राग आसावरी।

लाज न लागत दास कहावत। सो आचरण विसार शोच तज जो हरि तुमको भावत ॥ सकल सङ्ग तज भजत जाहि मुनि जप तप याग बनावत। मो सम मन्द महा खल पामर कौन जतन तिहि पावत ॥ हरि निर्मल मन प्रसन हृदय असमंजस मोहि जनावत।

जिहिं सर काक कंक बक शूकर क्यों मराल तहँ आवत ॥ जाकी शरण जाय कोविद दारुण त्रयताप बुझावत । तिहूँ गये मद मोह लोभ अति स्वर्गहि मिटत नशावत ॥ भवसरिताको नाव मन्त यह कह औरन समुझावत । हौ तिनसो हरि परम वैर कर तुमसों भलो मनावत ॥ नाहिन और ठौर मोको ताते हठ नातो लावत । राख शरण उदार चूडामणि तुलसिदास गुणगावत ॥३६८॥

राग कालिंगड़ा ।

हम रघुनाथ गुणनके गवैया । ताना रीरी ताना रीरी तानुम तन नाना नाना नाहि जाने ताता थैया॥भैरू ध्रुपद कवित्त तलानो नाहिन ख्याल खिलैया । गीत संगीत प्रबध त्रिवत अति इनके नाहि गढैया ॥ डूम अथाई कालकलाउंत नाहिन भांड भवैया । रतनहरी रघुनाथ भजन विन काहूसो राम रमैया ॥ ३६९ ॥

मै तो पतित उधारो श्रीरामा । मेरे दुःख निवारो श्रीरामा ॥ मै तो बावलदे घर नंढडी । गलहार हमेल सोहे कढडी ॥ प्यारे बाझो नही जीया में ठंढडी । मै तो बावलदे घरभोलडी ॥ आगे जज पिछे मेरी डोलडी ॥ बाझों नहि में सोहदडी । हत्थी छल्ले छापांवाही हो चूडीयां । प्यारे बाझो सभी गल्लां हो कूडीयां ॥ लालन मिले तां सभी गल्लां पूरीयां। शाहुसैन फिरै जी उतावला। पहली चोट न थीदे चिट्टे हो चावला ॥ कोई ढंग मिले माई हो रावला ॥ ३७० ॥

राग आसावरी ।

कौन जतन विनती करिये । निज आचरण विचार हार हिय मान जान डरिये ॥ जिहि साधन हरि द्रवो जान जन सो हठ परिहरिये । जाते विपति जाल निशिदिन दुख तिहिं पथ अनुसरिये ॥ जानत हूं मन कर्म वचन परहित कीने तरिये ।

सो विपरीत देख परसुख विन कारण ही जरिये ॥ श्रुति पुराण सबको मत एही सतसग सुदृढ धरिये। निज अभिमान मोह ईर्षा वश तिसे न आदरिये ॥ सन्तत सो प्रिय मोहि सदा जाते भव-निधि परिये। कहो अब नाथ कौन बलते ससार शोक हरिये ॥ जब कब निज करुणा स्वभावते द्रवो तो निस्तरिये। तुलसिदास विश्वास आन नहिं कत पच पच मरिये ॥ २७१ ॥

सवैया।

आगम वेद पुराण बखानत कोटिक मारग जायँ न जाने। जे मुनि ते पुनि आपुही आपको ईश कहावत सिद्ध सयाने ॥ धर्म सभी कलिकाल ग्रसे जप योग विराग लै जीव पराने। को करि शोच मरै तुलसी हम जानकीनाथके हाथ विकाने ॥२७२ ॥

कवित्त।

जाहि हाथ धनुप चढ़ायो तोहि सीतापति, जाही हाथ रावण सँहारी लंक जारी है। जाही हाथ तारचो औ उबारचो हाथ हाथी गहि, जाहि हाथ सिंधु मथि लक्ष्मी निकारी है॥जाही हाथ गिरि-को उठाय गिरिधारी भयो, जाही हाथ नन्दकाज नाथ्यो नाग-कारी है। हौ तो हूँ अनाथ हाथ जोर कहो दीनानाथ, वाही हाथ मेरो हाथ गहवेकी वारी है ॥ ३७३ ॥

राग भैरवी।

कब ढुरिहौ रघुनाथ हमारे। जैसे ढुरे भक्त प्रहलादहि खंभ फारि हिरणाक्ष सँहारे ॥ जैसे ढुरहे राजा बलिके देत दरश नित नितप्रति द्वारे। जैसे ढुरहे भक्त विभीषण लंका जार सो रावण मारे॥जैसे ढुरहे द्रुपदसुता पै खैंचत चीर दुशासन हारे। ऐसे ढुरहो दासतुलसी पर हमसे पतित अनेकन तारे ॥ २७४ ॥

राग धनाश्री।

हरिजू मेरो मन हठ न तजे। निशिदिन नाथ देउँ शिख बहुविधि करत स्वभाव निजे॥ ज्यों युवती अनुभवत प्रसव अति दारुण दुख उपजे। होय अनुकूल विसार शूल सब पुनि खल पतिहिं भजे॥ लोलुप भ्रमत श्रमित निशिवासर शिर पदत्रान बजे। तदपि अधम विचरत तिहि मारग अजहुँ न मूढ लजे॥ हौं हारचो बहु यत्न विविध कर अतिशय प्रवल अजे। तुलसिदास वश होत तबे जब प्रेरक प्रभु बरजे॥ ३७५॥

राग सोरठ।

ऐसी मूढता या मन की। परिहरि राम भक्ति सुरसरिता आश करत ओसन की॥ धूम समूह निरख चातक ज्यों तृषित जान मति घनकी। नहिं तहँ शीतलता न वारि पुनि हानि होत लोचन की॥ ज्यों गज कांच विलोकि शेर जड़ छांह आपने तनकी। टूटत अति आतुर अहार वश क्षति विसार आननकी॥ कहँलग कहौं कुचाल कृपानिधि जानतहो गति जनकी। तुलसिदास प्रभु हरो दुसह दुख लाज करो निज पनकी॥ ३७६॥

राग टोडी।

और कौन मांगिये को मांगबो निवारिहै। तुम विना दातार कौन दुख दरिद्र टारिहै॥ धर्मधाम राम काम कोटि रूप हरो। साहब सब विधि सुजान दान खड्गसूरो॥ सुसमय द्वै दिन निशान सबके द्वार बाजे। कुसमय दशरथके दानि तू गरीबनिवाजे॥ सेवा विन गुण विहीन दीनता सुनाये। जेजे तैं निहाल किये फूले फिरत पाये॥ तुलसीदास याचकरुचि जान दान दीजिये। रामचन्द्र चन्द्र तू चकोर मोहि कीजिये॥ ३७७॥

राग जैजैवन्ती ।

प्रीतकी रीति रघुनाथ जाने । जाति कुल वरणको नाहि माने प्रीत प्रह्लादकी जान करुणानिधी खंभसो प्रगट नख उदर भाने दौड गजराजके फन्दको काटने गरुडको छोड़ आये उलाने अधम कुल भीलनी बेर दिये रामको पाय मन मगन अति सराने । गीध पक्षी महा अधम आमिष भखी ताहि तनु परश सु पुर पठाने ॥ जानकी कारणे जोरि कपि भालु दल कोटिसी लंक गढ़को ढहाने । वैरको भाव टरलाह हारि मिलनको अन्तकी वे अगमें समाने ॥ भक्त भगवन्त अन्तर निरन्तर नहीं यही तो निगम आगम वखाने । दास कान्हर यही रीति रघुनाथकी आपसे भक्तको सरस माने ॥ ३७८ ॥

राग सोरठ ।

जानत प्रीति रीति रघुराई । नाते सव हाते कर राखत राम सनेह सगाई ॥ नेह निवाह देह तज दशरथ कीरति अचल चलाई ऐसेहु पितुते अधिक गीध पर ममता गुण गरुवाई ॥ तियविरही सुग्रीव सखा लखि प्राणपिया विसराई । रण परयो बन्धु विभीषण ही को शोच हृदय अधिकाई ॥ घर गुरु गृह प्रिय सदन सासुरे भई जव जहँ पहुनाई । तव तहँ कही शवरीके फलनकी रुचि माधुरी न पाई ॥ सहज स्वरूप कथा मुनि वर्णत रहत सकुच शिरनाई । केवट मीत कहत सुख मानत वानर बन्धु बड़ाई ॥ प्रेम कनौडो रामसो प्रभु त्रिभुवन तिहुं काल न भाई । तेरो ऋणी हौं कह्यो कपिसों ऐसी मानिहै को सेवकाई ॥ तुलसी राम सनेह शील लखि जो न भक्ति उर आई ॥ तौ तोहि जन्म जाय जननी जड तनु तरुणता गँवाई ॥ ३७९ ॥

राग धनाश्री ।

हरिजू मेरो मन हठ न तजै । निशिदिन नाथ देउँ शिख बहु विधि करत स्वभाव निजै ॥ ज्यो युवती अनुभवत प्रसव अति दारुण दुख उपजै । होय अनुकूल विसार शूल सब पुनि खल पतिहिं भजै ॥ लोलुप भ्रमत श्रमित निशिवासर शिर पदत्रान बजै । तदपि अधम विचरत तिहि मारग अजहुँ न मूढ लजै ॥ हौ हारचो बहु यत्न विविध कर अतिशय प्रबल अजै । तुलसिदास वश होत तबै जब प्रेरक प्रभु बरजै ॥ ३७५ ॥

राग सोरठ ।

ऐसी मूढता या मन की । परिहरि राम भक्ति सुरसरिता आश करत ओसन की ॥ धूम समूह निरख चातक ज्यो तृपित जान मति घनकी । नहि तहँ शीतलता न वारि पुनि हानि होत लोचन की ॥ ज्यो गज कांच विलोकि शेर जड़ छांह आपने तनकी । टूटत अति आतुर अहार वश क्षति बिसार आननकी ॥ कहँ-लग कहौं कुचाल कृपानिधि जानतहो गति जनकी । तुलसिदास प्रभु हरो दुसह दुख लाज करो निज पनकी ॥ ३७६ ॥

राग टोडी ।

और कौन मांगिये को मांगबो निवारिहै । तुम बिना दातार कौन दुख दरिद्र टारिहै ॥ धर्मधाम राम काम कोटि रूप रूरो । साहब सब विधि सुजान दान खड्गसूरो ॥ सुसमय द्वै दिन निशान सबके द्वार बाजै । कुसमय दशरथके दानि तू गरीबनिवाजै ॥ सेवा बिन गुण विहीन दीनता सुनाये । जेजे तैं निहाल किये फूले फिरत पाये ॥ तुलसी दास याचकरुचि जान दान दीजिये । रामचन्द्र चन्द्र तू चकोर मोहि कीजिये ॥ ३७७ ॥

राग जैजैवन्ती।

प्रीतकी रीति रघुनाथ जाने। जाति कुल वरणको नाहि माने प्रीत प्रहलादकी जान करुणानिधी खमसो प्रगट नख उदर भाने दौड गजराजके फन्दको काटने गरुडको छोड आये उलाने अधम कुल भीलनी बेर दिये रामको पाय मन मगन अतिह सगने। गीध पक्षी महा अधम आमिष भखी ताहि तनु परश सुर पुर पठाने ॥ जानकी कारणे जोरि कपि भालु दल कोटिसी लंक गढ़को ढहाने। वैरको भाव उत्साह हारि मिलनको अन्तकी वे अगमें समाने ॥ भक्त भगवन्त अन्तर निरन्तर नहीं यही तं निगम आगम बखाने। दास कान्हर यही रीति रघुनाथकं आपसे भक्तको सरस माने ॥ २७८ ॥

राग सोरठ।

जानत प्रीति रीति रघुराई। नाते सब हाते कर राखत राम सनेह सगाई ॥ नेह निबाह देह तज दशरथ कीरति अचल चलाई। ऐसेहु पितुते अधिक गीध पर ममता गुण गरुवाई ॥ तियविरही सुग्रीव सखा लखि प्राणपिया बिसराई। रण पर्यो बन्धु विभी-षण ही को शोच हृदय अधिकाई ॥ घर गुरु गृह प्रिय सदन सासुरे भई जब जहँ पहुनाई। तब तहँ कही शबरीके फलनकी रुचि माधुरी न पाई ॥ सहज स्वरूप कथा मुनि वर्णत रहत सकुच शिरनाई। केवट मीत कहत सुख मानत वानर बन्धु बडाई ॥ प्रेम कनौडो रामसो प्रभु त्रिभुवन तिहुँ काल न भाई। तेरो ऋणी हौं कह्यो कपिसों ऐसी मानिहै को सेवकाई ॥ तुलसी राम सनेह शील लखि जो न भक्ति उर आई ॥ तौ तोहिं जन्म जाय जननी जड तनु तरुणता गँवाई ॥ २७९ ॥

राग जैतश्री ।

श्री रघुवीरकी यह बानि । नीच हूँ सों करत नेह सो प्रीति मन
[illegible]नुमानि ॥ परम अधम निपाद पामर कौन ताकी कानि । लियो
[illegible]ो उर लाय सुत ज्यो प्रेमको पहचानि ॥ गीध कौन दयालु जो
[illegible]ेधि रच्यो हिसा सानि । जनक ज्यो रघुनाथ ताको दियो जल
[illegible]नेज पानि ॥ प्रकृति मलिन कुजाति शवरी सकल अवगुण
[illegible]ानि । खात ताके दिये फल अति रुचि वखान वखानि ॥ रजनि-
[illegible]र अरु रिपु विभीपण शरण आयो जानि । भरत ज्यों उठ ताहि
[illegible]टत देह दशा भुलानि ॥ कौन सौम्य सुशील वानर जिनहि
[illegible]ुमिरत हानि । किये ते सव सखा पूजे भवन अपने आनि ॥
[illegible]ाम सहज कृपालु कोमल दीन हित दिन दानि । भजहि ऐसे
[illegible]भुहि तुलसी कुटिल कपट न ठानि ॥ ३८० ॥

राग प्रभाती ।

साँचे मनके मीता रघुवर साँचे मनके मीता । कव शवरी
[illegible]ाशीको धाई कब पढि आई गीता ॥ जूँठे फल ताके प्रभु खाये
[illegible]क लाज नहि कीता । लङ्कापतिको गर्व हर्‌यो है राज्य विभीपण
[illegible]ीता ॥ सुग्रीवहि सखा कियो रघुनदन वानर किये पुनीता ।
[illegible]फल यज्ञ मुनि जनके कीने सव भूपन वल जीता ॥ भसम रवाई
[illegible]हाँ अहल्या गणिका योग न लीता । तुलसिदास प्रभु शुद्ध-
[illegible]वत्त लखि सवहिं मोक्ष पद दीता ॥ ३८१ ॥

राग सोरठ ।

ऐसे राम दीन हितकारी । अति कोमल करुणानिधान विन
[illegible]ारण पर उपकारी । साधनहीन दीन निज अघ वश शिला
[illegible]ई मुनि नारी । गृहते गवन परश पद पावन घोर शाप-

ते तारी ॥ हिंसारत निषाद तामस वपु पशु समान वनचारी। भेट्यो हृदय लगाय प्रेम वश नहि कुलजाति विचारी॥ यदपि द्रोह कियो सुरपति सुत कहि न जाय अति भारी। सकल लोक अवलोकि शोक हत शरण गये भट टारी ॥ विहँग योनि आमिष अहार पर गीध कवन व्रतधारी। जनक समान क्रिया ताकी निज कर सब बात सँवारी ॥ अधम जाति शवरी योषित शठ लोक वेदते न्यारी। जान प्रीति दे दरश कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी ॥ कपि सुग्रीव बन्धु भय व्याकुल आयो शरण पुकारी। सहि न सके दारुण दुख जनके हत्यो बालि सह गारी ॥ रिपुको बन्धु विभीषण निशिचर कौन भजन अधिकारी। शरण गये आगे होय लीनो भेट्यो भुजा पसारी ॥ अशुभ होय जिनके सुमिरणते वानर रीछ विकारी। वेद विदित पावन किय ते सब महिमा नाथ तुम्हरी ॥ कहँ लग कहों दीन अगणित जिनकी तुम विपति निवारी। कलिमल ग्रसित दास तुलसी पर काहे कृपा बिसारी ॥ ३८२ ॥

राग भैरव।

ऐसी हरी करत दास पर प्रीति। निज प्रभुता विसार जनके वश होत सदा यह रीति ॥ जिन बांधे सुर असुर नाग नर प्रबल कर्मकी डोरी। सो परब्रह्म यशोमति बांध्यो सकत नही तनुछोरी॥ जाकी माया वश विरंचि शिव नाचत पार न पायो। करतल ताल बजाय ग्वाल युवतिनसो नाच नचायो ॥ विश्वभर श्रीपति त्रिभुवनपति वेदविदित यह लीख। बलिसो कछु न चली प्रभुता वर हो द्विज माँगी भीख ॥ जाके नाम लिये छूटत भव जन्म मरण दुख भार। अंबरीष हित लागि कृपानिधि सो जनम्यो दश बार॥ योग विराग ध्यान जप तप कर जिहि खोजत मुनि ज्ञानी। वानर भालु चपल पशु पामर नाथ तहां रति मानी ॥ लोकपालयम

राग जैतश्री ।

श्री रघुवीरकी यह बानि । नीच हूँ सों करत नेह सो प्रीति मन
ानुमानि ॥ परम अधम निषाद पामर कौन ताकी कानि । लियो
ो उर लाय सुत ज्यों प्रेमको पहचानि ॥ गीध कौन दयालु जो
ावि रच्यो हिंसा सानि । जनक ज्यों रघुनाथ ताको दियो जल
नज पानि ॥ प्रकृति मलिन कुजाति शबरी सकल अवगुण
ानि । खात ताके दिये फल अति रुचि बखान बखानि ॥ रजनि-
ार अरु रिपु विभीषण शरण आयो जानि । भरत ज्यों उठ ताहि
ेंटत देह दशा भुलानि ॥ कौन सौम्य सुशील वानर जिनहि
ुमिरत हानि । किये ते सब सखा पूजे भवन अपने आनि ॥
ाम सहज कृपालु कोमल दीन हित दिन दानि । भजहि ऐसे
भुहि तुलसी कुटिल कपट न ठानि ॥ २८० ॥

राग प्रभाती ।

साँचे मनके मीता रघुवर साँचे मनके मीता । कब शबरी
ाशीको धाई कब पढि आई गीता ॥ जूँठे फल ताके प्रभु खाये
क लाज नहि कीता । लङ्कापतिको गर्व हरयो है राज्य विभीषण
ीता ॥ सुग्रीवहि सखा कियो रघुनंदन वानर किये पुनीता ।
ाफल यज्ञ मुनि जनके कीने सब भूपन बल जीता ॥ भसम खाई
कहाँ अहल्या गणिका योग न लीता । तुलसिदास प्रभु शुद्ध-
चित्त लखि सबहिं मोक्ष पद दीता ॥ २८१ ॥

राग सोरठ ।

ऐसे राम दीन हितकारी । अति कोमल करुणानिधान विन
ारण पर उपकारी । साधनहीन दीन निज अघ वश शिला
ाई मुनि नारी । गृहते गवन परश पद पावन घोर शाप-

ते तारी ॥ हिंसारत निषाद तामस वपु पशु समान वनचारी । भेंट्यो हृदय लगाय प्रेम वश नहि कुलजाति विचारी॥यदपि द्रोह कियो सुरपति सुत कहि न जाय अति भारी। सकल लोक अवलोकि शोक हत शरण गये भट टारी ॥ विहँग योनि आमिष अहार पर गीध कवन व्रतधारी । जनक समान क्रिया ताकी निज कर सब बात सँवारी ॥ अधम जाति शवरी योषित शठ लोक वेदते न्यारी । जान प्रीति दे दरश कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी ॥ कपि सुग्रीव बन्धु भय व्याकुल आयो शरण पुकारी। सहि न सके दारुण दुख जनके हत्यो वालि सह गारी ॥ रिपुको बन्धु विभीषण निशिचर कौन भजन अधिकारी। शरण गये आगे होय लीनो भेट्यो भुजा पसारी ॥ अशुभ होय जिनके सुमिरणते वानर रीछ विकारी । वेद विदित पावन किय ते सब महिमा नाथ तुम्हरी ॥ कहँ लग कहौं दीन अगणित जिनकी तुम विपति निवारी। कलिमल ग्रसित दास तुलसी पर काहे कृपा बिसारी ॥ ३८२ ॥

राग भैरव।

ऐसी हरी करत दास पर प्रीति । निज प्रभुता विसार जनके वश होत सदा यह रीति ॥ जिन बांधे सुर असुर नाग नर प्रबल कर्मकी डोरी। सो परब्रह्म यशोमति बांध्यो सकत नही तनुछोरी॥ जाकी माया वश विरंचि शिव नाचत पार न पायो। करतल ताल बजाय ग्वाल युवतिनसो नाच नचायो ॥ विश्वभर श्रीपति त्रिभुवनपति वेदविदित यह लीख । बलिसो कछु न चली प्रभुता वर हो द्विज मॉगी भीख ॥ जाके नाम लिये छूटत भव जन्म मरण दुख भार । अंबरीष हित लागि कृपानिधि सो जनम्यो दश बार॥ योग विराग ध्यान जप तप कर जिहि खोजत मुनि ज्ञानी । वानर भालु चपल पशु पामर नाथ तहां रति मानी ॥ लोकपालयम

काल पवन रवि शशि सब आज्ञाकारी । तुलसिदास प्रभु उग्रसेन-के द्वार बेंत करधारी ॥ ३८३ ॥

राग जैतश्री ।

ऐसी कौन प्रभुकी रीति । विरदहेतु पुनीत परिहर पामरनपर प्रीति ॥ गई मारन पूतना कुच कालकूट लगाय । मातकी गति दियो ताहि कृपालु यादवराय ॥ काम मोहिता गोपिकन पर कृपा अतुलित कीन । जगत पिता विरंचि जिनके चरणकी रज लीन ॥ नेमते शिशुपाल दिनप्रति देत गिन गिन गार । कियो लीन सो आपमे हरि राजसभा मझार ॥ व्याध चरणहिं बाण मार्यो मूढ़ मति मृग जानि । सो सदेह स्वलोक पठयो प्रगट कर निज बानि॥ कौन तिनकी कहै जिनके सुकृत औ अघ दोय । प्रगट पातक रूप तुलसी शरण राखे सोय ॥ ३८४ ॥

राग सोरठ ।

ऐसो को उदार जग माही । विन सेवा जो द्रवै दीनपर राम सरिस कोउ नही ॥ जो गति योग विराग जतन कर नहि पावत मुनि ज्ञानी । सो गति देत गीध शबरीको प्रभु न बहुत जिय जानी ॥ जो सपति दशशीश अर्प कर रावण शिव पे लिनी । सो सम्पदा विभीषणको अति सकुच सहित हरि दीनी ॥ तुलसिदास सब भाँति सकल सुख जो चाहित मन मेरो । तो भज राम काम सब पूरण करैं कृपानिधि तेरो ॥ ३८५ ॥

राग जंगला ।

ऐसो श्रीरघुवीर भरोसो । बारि न बोर सको प्रहलादहि पावक नाहिं जरोसो ॥ ऐसो० ॥ हरणाकुश बहु भाँति सतायो हठकर बैर करोसो । मार्यो चहै दास नरहरिको आपे दुष्ट मरो-सो ॥ ऐसो० ॥ मीराके मारनके कारण पठयो जहर खरोसो।राम

नाम अमृत भयो ताको हँस हँस पान करोमो ॥ ऐसो० ॥ द्रुपदसुताको चीर दुशासन मध्यसभा एकरोसो। ऐंचत ऐंचत भुजबलहारे नेक न अँग उघरोसो ॥ ऐसो० ॥ भारतमे भरुहीके अण्डा कोटिनदल बिखरोसो। राम नाम जब पक्षिन टेरचो घंटा टूट परोसो ॥ ऐसो० ॥ जारचो लंक अजनीनन्दन देखत पुर सगरोसो। ताके मध्य विभीषणको गृह राम कृपा उबरोसो ॥ ऐसो० ॥ रावण सभा कठिन प्रण अगद हठ कर हरि सुमिरोसो। मेघनाद सम कोटिन योधा टारे पग न टरोसो ॥ ऐसो० ॥ तुलसिदास विश्वास रामको का कर नारि नरोसो। और प्रभाव कहां लग वरणों ज्यहि यमराज डरोसो ॥ ऐसो० ॥ ३८६ ॥

रे मन राम भरोसो भारी। पानी पर जिन पाहन तारे और अहल्या तारी ॥ यमके बांधे पतित छुडाये ऐसे परउपकारी। सबकी खबर लेत दुख सुखकी अर्जुनके हितकारी ॥ तू दयालु प्रभु वेद पुकारे महिमा सुनी तिहारी। मिहरदास प्रभु शरण गहेकी राखो लाज हमारी ॥ ३८७ ॥

राग काफी।

जानकी नाथ सहाय करे जब कौन बिगार करे नर तेरो। सूरज मङ्गल सोम भृगू सुत बुध अरु गुरु वरदायक तेरो ॥ राहु केतुकी नही गम्यता शनीचर होत उचेरो। दुष्ट दुशासन निबल द्रौपदी चीर उतार कुमन्तर प्रेरो॥ जाकी सहाय करी करुणानिधि बढ़गये चीरके भार घनेरो। गर्भमे राख्यो परीक्षितराजा अश्वत्थामा जब अस्त्र प्रेरो ॥ भारतमे भरुहीके अंडा तापर गजको घंटा गेरो। जाकी सहायकरी करुणानिधि ताके जगतमे भाग बडेरो ॥ रघुवंशी सन्तन सुख दाई तुलसिदास चरणनको चेरो ॥ ३८८ ॥

राग वड़हंस ।

जगके रुसे ते क्या भयो जाके राम हैं रखवार हो । अव देख प्यारे खम्भमें नरसिंह होकर अवतरे ॥ हिरण्याक्षको मारके प्रहलाद रक्षा करे हो । अव देख प्यारे सभामे जहँ कपटके पांसे परे ॥ द्रौपदीको चीर बढ़ायके खैंचत दुशासन हरेहो । अव देख प्यारे समरमे तैयार दोऊदल खरे ॥ चिगना बचे भर दूलके गज घट वापर परे हो । अव देख प्यारे लंकामे संकट विभीपणको परे ॥ तुलसी सराहत रामको जिनको अवध मङ्गल भरे हो ॥ २८९ ॥

राग झंझोटी ।

अम कछु समुझि परै रघुराया । विन तव कृपा दयालु दास हित मोह न छूटै माया ॥ वाक्य ज्ञान अत्यन्त निपुण भव पार न पावै कोई । निशि गृह मध्य दीपकी वातिन तम निविरत नहि होई ॥ जैसे कोउ इक दीन दुखित अति अशन हीन दुख पावै । चित्र कल्पतरु कामधेनु गृह लिखै न विपति नशावै ॥ पट रस बहु प्रकार भोजन कोउ दिन अरु रैनि बखानै।विन बोले सतोप जनित सुख खाय सोई पे जानै ॥ जब लग नहिं निज हृदय प्रकाश अरु विपय आश मन माही । तुलसिदास तवलग जग भरमत सुपनेहू सुख नाहीं ॥ २९० ॥

हे हरि कस न हरो भ्रम भारी । यद्यपि मृपा सत्य भासे जवलग नहि कृपा तुम्हारी ॥ अरथ अविद्यमान जानीये ससृत नाहिं जाय गुसांई । विन बांधे निज हठ शठ परवश पर्‍यो कीरकी नाई ॥ सुपने व्याध विविध बांधा जनु मृत्यु उपस्थित आई । वैद्य अनेक उपाय करैं जागे विन पीर न जाई ॥ श्रुति गुरु साधु स्मृतिसम्मत यह दृश्य सदा दुखकारी । तिहि विन तजे भजे विन रघुपति

विपति सकै को टारी ॥ वहु उपाय ससार तरनको विमल गिरा श्रुति गावै । तुलसिदास मै मोर गए विन जिय सुख कभूं न पावै॥३९१॥

राग विलावल ।

केशव कहि न जाय क्या कहिये । देखन तव रचना विचित्र हरि समझ मनहिं मन रहिये ॥ शून्य भीत पर चित्र रंग नहिं विन तनु लिखा चितेरे । धोये मिटै न मरिय भीत दुख पाइय यह तनु हेरे ॥ रवि करनीर वसे अति दारुण मकर रूप तिहि माही । वदन हीन सों ग्रसै चराचर पान करन जे जाही ॥ कोउ कह सत्य झूठ कह कोऊ युगल प्रबल कर मानै । तुलसिदास परिहरै तीन-भ्रम सो आपन पहँचानै ॥३९२ ॥

राग भैरव ।

राम जप राम जप राम जप वावरे । घोर भव नीरनिधि नाम निज नाव रे ॥ एकही साधन सब ऋद्धि सिद्धि साध रे । ग्रसे कलि रोग योग संयम समाध रे ॥ भलो जो है पोच जो है दाहिनो जो वाम रे । रामनामहीसे अत सवहीको काम रे ॥ जग नभ वाटिका रहीहै फल फूल रे । धूआंकेसे धौलहैं तू देख मतभूल रे ॥ रामनाम छांड जो भरोसो करै और रे । तुलसी परोसो त्याग मांगै कूर कौर रे ॥३९३॥

राम नाम जप जिय सदा सानुराग रे । कलि न विराग योग याग तप त्याग रे ॥ राम नाम सुमिरण सब विधिहीको राज रे । रामको बिसारवो निषेध शिरताज रे ॥ राम नाम महामणि फणि जगजाल रे । मणि लिये फणिजियै व्याकुल विहाल रे ॥ राम नाम काम तरु देत फल चार रे । कहत पुराण वेद पडित पुकार रे ॥ राम नाम प्रेम परमारथको सार रे । राम नाम तुलसीको जीवन अधार रे ॥ ३९४ ॥

राग जैजैवंती।

राम सुमिर राम सुमिर यही तेरो काज है। मायाको सं
त्याग हरिजूकी शरण लाग जगत सुख मान मिथ्या झूठो सं
साजहै॥ सुपने ज्यो धन पछान काहेपर करत मान वारूकी भीत
तैसे वसुधाको राजहै। नानक जन कहत बात विनश जैहै तेरे
गात छिन छिन कर गयो काल तैसे जात आजहै॥ ३९५॥

राग भैरव।

सुमिर सनेहसों तू नाम रामरायको। सवरनिसंवरको सखा
असहायको॥ भागहै अभागेहूंको गुण गुणहीनको। गाहक गरीबको
दयालु दानि दीनको॥ कुलअकुलीनको सुन्यो जो वेद साखहै॥
पांगुरेको हाथ पांव आंधरेको आंखहै॥ माई बाप भूखेको अधार
निराधारको। सेतु भवसागरको हेतु सुखसारको॥ पतितपावन
रामनामसो न दूसरो। सुमिरि सुभूमि भयो तुलसीसो ऊसरो३९६॥

राग पहाड।

सव मतको मत यह उपदेशू। मूल मंत्र यह उचित शिखावन
भज मन सुत अवधेश॥ अहिपुर नगपुर देवलोक पुर रक फकीर
नरेशू। जो जापक सियराम नामको सो भवसिंधु तरेसू॥ जप
तप संयम दान नेम मख तीरथ अमित करेसू। तुलहि न सीता-
राम नाम सम वेद पुराण कहेसू॥ गावत शंभु आदि नारद मुनि
व्यास विरंचि गणेशू। यह सव गावत नाम महातम काग भुशुंडि
खगेसू॥ नाम प्रतीत राख हिरदेमें उमा सो कह्यो महेसु। तुलसि-
दास यह नाम कि महिमा कलिमल सकल हरेसू॥ ३९७॥

राग कालिंगडा।

राम सुमिरले सुमिरन करले को जाने कलकी। खवर ना या
जगमें पलकी॥ रैनि अंधेरी निर्मल चंदा ज्योति जगे झलकी।

धीरे धीरे पाप कटत है होत मुक्ति तनकी ॥ कौडी कौडी माया जोडी कर बाता छलकी । शिरपर गठरी धरी पापकी कौन करै हलकी ॥ भवसागरके त्रास कठिन है थाह नही जलकी । धर्मी धर्मी पार उतर गये डूबे अधम जनकी ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो काया मडलकी । भज भगवान आन नहि कोई आशा रघुवरकी ॥ ३९८ ॥

राग धनाश्री ।

राम सुमर राम सुमर राम सुमर भाई । राम नाम सुमरन विन बूड़त अधिकाई ॥ वनिता सुत देह गेह संपति सुखदाई । इनमें कछु नाहि तेरो काल अवधि आई ॥ अजामील गणिका गज पतित कर्म कीने । तेऊ उतर पार परे राम नाम लीने ॥ सूकर कूकर योनि भ्रम्यो तऊ लाज न आई । राम नाम छॉड़ अमृत काहे विष खाई । तज भर्म कर्म विधि निषेध राम नाम लेही । गुरु प्रसाद जन कबीर राम कर सनेही ॥ ३९९ ॥

राग भैरव ।

रामचरण अभिराम कामप्रद तीरथराज विराजै । शकर हृदय भक्ति भूतल पर प्रेम अक्षैवट छाजै ॥ श्यामचरण पद पीठ अरुण तल लसत विशद नख श्रेनी । जनु रविसुता शारदा सुरसरि मिल चलि ललित त्रिवेनी ॥ अकुश कुलिश कमल धुज सुदर भॅवर तरंग विलासा । मज्जहिं सुर सज्जन मुनि जन मन मुदित मनोहर वासा॥ विन विराग जप योग योग व्रत विन तीरथ तनु त्यागे॥ सब सुख सुलभ सद्य तुलसी प्रभुपद प्रयाग अनुरागे ॥ ४०० ॥

राग विभास ।

भज मन रामचरण सुखदाई । जिहि चरणनसे निकसी सुरसरी शकर जटा समाई॥जटा शकरी नाम पर्योहै त्रिभुवन तारन आई

जिहि चरणनकी चरण पादुका भरत रह्यो लवलाई ॥ सोई चरण केवट धोय लीने तब हरि नाव चलाई । सोई चरण संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई ॥ सोई चरण गौतम ऋषि नारी परश परमपद पाई । दंडकवन प्रभु पावन कीनो ऋषियन त्रास मिटाई॥ सोई प्रभु त्रिलोकके स्वामी कनक मृगा सँग धाई । कपि सुग्रीव वधु भय व्याकुल तिन जय छत्र फिराई ॥ रिपुको अनुज विभीषण निशिचर परशत लंका पाई । शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहसमुख गाई ॥ तुलसिदास मारुतसुतकी प्रभु निज मुख करत बड़ाई ॥ ४०१ ॥

राग परज।

भज मन रामचरण दिनराती । काहेको भ्रमत फिरत हो निशिदिन भजन करत अलसाती ॥ बिरथा जन्म गँवायो मूरख सोवत रह्यो दिनराती । राम सियाको नाम अमीरस सो काहे नहि खाती॥सवत सोलहसौ इकतीसा जेठ मास छठिस्वाती। तुलसिदास यह विनय करत हैं प्रथम अरजकी पाती ॥ ४०२ ॥

रे मन क्योन भजो रघुवीर । जाहि भजत ब्रह्मादिकसुर नर ध्यान धरत मुनि धीर ॥ श्याम वरण मृदु गात मनोहर भजन जनकी पीर । लछिमन सहित सखा सँग लीने विचरत सरयू-तीर ॥ ठुमक ठुमक पग धरत धरणि पर चचल चित हो वीर। मद मंद मुसकात सखन सो बोलत वचन गँभीर ॥ पीतवसन दामिनि द्युति निदत करकमलन धनु तीर । रामदास रघुनाथ भजनविन धृग धृग जन्म शरीर ॥ ४०३ ॥

राग सोरठ।

रे मन राम सो कर प्रीत । श्रवण गोविंद गुण सुनो अरु गाउ रसना गीत ॥ कर साधु संगति सुमिर माधो होय पतित पुनीत।

काल व्याल ज्यो पर्‌यो डोलै मुख पसारे मीत ॥ आज कल पुनि तोहि ग्रसिहै समझ राखो चीत। कहै नानक राम भजले जात औसर बीत ॥ ४०४ ॥

राग धनाश्री ।

सुन मन मूढ़ शिखावन मेरो । हरिपद विमुख काहु न लह्यो सुख शठ यह समझ सवेरो ॥ विछुरे शशि रवि मन नयननते पावत दुख बहुतेरो । भ्रमत श्रमत निशिदिवस गगनमे तहँ रिपु राहु बडेरो ॥ यद्यपि अति पुनीत सुरसरिता तिहुँपुर सुयश घनेरो तजे चरण अजहूँ न मिटत नित बहवो ताहू केरो ॥ छूटे न विपति भजे बिन रघुपति श्रुति सदेह निवेरो । तुलसिदास सब आश छांड कर होउ रामको चेरो ॥ ४०५ ॥

राग ललित ।

गा ले रे गोविंद गुणा रे। ऐसो समय बहुरि नाहि पावे फिर पछतावेगा मूढ मना रे ॥ पानीकी बूँदसे पिंड प्रगट कियो नयन नासिका मुख रसना रे । ताको रचत मास दश लागे ताहि न सुमिर्‌यो एक छिना ॥ बाल अवस्था खेल गँवाई भर ज्वानी बहुरूप बना रे । वृद्ध भयो तब आलस उपज्यो माया मोहके फंद घना रे ॥ अधम तरे अपराधी तारे जो जो आये हरि शरना रे । ना माने तो साख बताऊँ अजामील गणिका सधना रे ॥ धन यौवन अजलिको जल ज्यो घटत जात है छिना छिना रे । जो सुख चहै भजे रघुनदन नामदेव आयो हरि शरणा रे ॥ ४०६ ॥

राग भैरवी ।

जाग जाग जीव जड जोहै जग यामिनी । देह गेह नेह जान जैसे घन दामिनी ॥ सोवत सुपने सहे ससृत संताप रे । बूड्यो मृग वारि खायो जेवरिके सांपरे ॥ कहै वेद बुध तू तो बूझ

जिहिं चरणनकी चरण पादुका भरत रह्यो लवलाई ॥ सोई चरण केवट धोय लीने तव हरि नाव चलाई । सोई चरण संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई ॥ सोई चरण गौतम ऋषि नारी परश परमपद पाई । दंडकवन प्रभु पावन कीनो ऋषियन त्रास मिटाई॥ सोई प्रभु त्रिलोकके स्वामी कनक मृगा सँग धाई । कपि सुग्रीव वधु भय व्याकुल तिन जय छत्र फिराई ॥ रिपुको अनुज विभीषण निशिचर परशत लंका पाई । शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहसमुख गाई ॥ तुलसिदास मारुतसुतकी प्रभु निज मुख करत बड़ाई ॥ ४०१ ॥

राग परज।

भज मन रामचरण दिनराती । काहेको भ्रमत फिरत हो निशिदिन भजन करत अलसाती ॥ बिरथा जन्म गँवायो मूरख सोवत रह्यो दिनराती । राम सियाको नाम अमीरस सो काहे नहि खाती॥सवत सोलहसौ इकतीसा जेठ मास छठिस्वाती। तुलसिदास यह विनय करत है प्रथम अरजकी पाती ॥ ४०२ ॥

रे मन क्यो न भजो रघुवीर । जाहि भजत ब्रह्मादिकसुर नर ध्यान धरत मुनि धीर ॥ श्याम वरण मृदु गात मनोहर भंजन जनकी पीर । लछिमन सहित सखा सँग लीने विचरत सरयू-तीर ॥ ठुमक ठुमक पग धरत धरणि पर चचल चित हो वीर। मंद मंद मुसकात सखन सो बोलत वचन गँभीर ॥ पीतवसन दामिनि द्युति निदत करकमलन धनु तीर । रामदास रघुनाथ भजनविन धृग धृग जन्म शरीर ॥ ४०३ ॥

राग सोरठ।

रे मन राम सो कर प्रीत। श्रवण गोविंद गुण सुनो अरु गाउ रसना गीत ॥ कर साधु संगति सुमिर माधो होय पतित पुनीत।

काल व्याल ज्यो पर्‍यो डोलै मुख पसारें मीत ॥ आज कल पुनि तोहि ग्रसिहे समझ राखो चीत। कहै नानक राम भजले जात औसर वीत ॥ ४०४ ॥

राग धनाश्री ।

सुन मन मूढ़ शिखावन मेरो । हरिपद विमुख काहू न लह्यो सुख शठ यह समझ सवेरो ॥ बिछुरे शशि रवि मन नयननते पावत दुख बहुतेरो । भ्रमत श्रमत निशिदिवस गगनमे तहँ रिपु राहु वडेरो ॥ यद्यपि अति पुनीत सुरसरिता तिहुँपुर सुयश वनेरो तजे चरण अजहूँ न मिटत नित वहवो ताहू केरो ॥ छूटे न विपति भजे बिन रघुपति श्रुति सदेह निवेरो । तुलसिदास सब आश छांड कर होउ रामको चेरो ॥ ४०५ ॥

राग ललित ।

गा ले रे गोविद गुणा रे । ऐसो समय बहुरि नाहि पावे फिर पछता-वेगा मूढ मना रे ॥ पानीकी बूँदसे पिड प्रगट कियो नयन नासि-का मुख रसना रे । ताको रचत मास दश लागे ताहि न सुमिर्‍यो एक छिना ॥ वाल अवस्था खेल गँवाई भर ज्वानी बहुरूप बना रे । वृद्ध भयो तब आलस उपज्यो माया मोहके फंद घना रे ॥ अधम तरे अपराधी तारे जो जो आये हरि शरना रे । ना माने तो साख वताऊँ अजामील गणिका सधना रे ॥ धन यौवन अजलिको जल ज्यों घटत जात है छिना छिना रे । जो सुख चहै भजे रघुनंदन नामदेव आयो हरि शरणा रे ॥ ४०६ ॥

राग भैरवी ।

जाग जाग जीव जड जोहै जग यामिनी । देह गेह नेह जान जैसे घन दामिनी ॥ सोवत सुपने सहै समृत संताप रे । बूड्यो मृग वारि खायो जेवरिके सापरे ॥ कहै वेद बुध तू तो बूझ

मन माहिं रे। दोष दुख सुपनेके जागे ही पै जाहि रे ॥ तुलसी जागे ते जाय ताप तिहूँ ताप रे। राम नाम शुचि रुच सहज स्वभाव रे ॥ ४०७ ॥

राग प्रभाती।

क्यों सोया गफलतका माता जाग रे नर जाग रे ॥ या जागे कोई योगी भोगी या जागे कोई चोर रे। या जागे कोई संत पियारा लगी रामसो डोर रे ॥ ऐसी जागन जाग पिया रे जैसी ध्रुव प्रह-लाद रे। ध्रुवको दीनी अटल पदवी दिया प्रहलादको राज रे ॥ हरि सुमिरे सोई हंस कहावे कामी क्रोधी काग रे। तनुका चोला भया पुराना लगा दाग पर दाग रे ॥ मन है मुसाफिर तनुका सरा विच तू कीता अनुराग रे। रैनि वसेरा करले डेरा उठ चलना परभात रे। साधु संगत सतगुरुकी सेवा पावे अचल सुहाग रे। चिदानंद भज राम गुमानी जागत पूरण भाग रे ॥ ४०८ ॥

राग देश ।

राम ज्यो राखे त्यो रहिये ॥ जो प्रभु करै भलो कर मानो मुखते बुरो न कहिये। हरि होनी अन होनी करदे सो सब शिरपर सहिये ॥ करें कृपा हरि नाम जपावे सो अंतर ले गहिये। मिहर-दास हरि हुकुम मानिये यह सेवकको चहिये ॥ ४०९ ॥

राग पूरवी।

अपनी ओर निबाहिये वाकी वाहू जाने। भली बुरी कछु जानत नाही कर्म लिख्यो सो पाइयो ॥ ४१० ॥

राग सोरठ ।

जाको प्रिय न राम वैदेही। सो छाँडिये कोटि वैरी सम यद्यपि परमसनेही॥ तज्यो पिता प्रह्लाद विभीषण बंधु भरत मह-

तार। । बलि गुरु व्रजवनितन पति त्यागे भइ जग मगलकारी॥ नाते नेह रामके मनियत सुहृद सुसेव्य जहां लौं। आंजन कहा आंख जिहि फूटे वहुतो कहो कहां लौं ॥ तुलसी सो सब भांति परम हित पूज्य प्राण ते प्यारो। जासो होय सनेह रामपद सोइ हैं हितू हमारो ॥ ४११ ॥

राग मलार।

जाको लगन रामकी नाही। सो नर खर कूकर शूकर सम वृथा जियत जग माहीं ॥ काम क्रोध मद लोभ नींद भय भूख प्यास सबहीके। मनुज देह सुर साधु सराहत सो सनेह सिय पीके ॥ सूर सुजान सुपूत सुलक्षण गनियत गुण गरुवाई। बिन हरि-भजन इन्द्रायनके फल तजत नहीं करुवाई ॥ कीरति कुल करतूति भूति भलि शील स्वरूप सलोने। तुलसी प्रभु अनुराग रहत जिमि सालन साग अलोने ॥ ४१२ ॥

राग केदारो।

ऐसे जन्म समूह सिराने। प्राणनाथ रघुनाथसे प्रभु तज सेवत चरण बिराने ॥ जे जड़ जीव कुटिल कायर खल केवल कलिमल साने। सूखत वदन प्रशसत तिनको हरिसे अधिक कर माने ॥ सुख हित कोटि उपाय निरन्तर करत न पॉय पिराने। सदा मलीन पथके जल ज्यों कभू न हृदय थिराने ॥ यह दीनता दूर करवेको अमित जतन उर आने। तुलसी चित चिन्ता न मिटै विन चिंतामणि पहिचाने ॥ ४१३ ॥

राग भैरव।

मोह जनित मल लाग विविध विधि कोटो जतन न जाई। जन्म जन्म अभ्यास निरत चित अधिक अधिक लपटाई ॥

निरस्य इंद्रियादिकं प्रयांति ते गतिस्वकं ॥
त्वमेक मद्भुत प्रभु निरीह मीश्वर विभुं ।
जगद्गुरु च शाश्वत तुरीयमेव केवल ॥
भजामि भाववल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभं ।
स्वभक्त कल्पपादपं समस्त सेव्य मन्वहं ॥
अनूप रूप भूपति नतोऽह मुर्विजापति ।
प्रसीदमेनमामिते पदाब्जभक्ति देहिमे ॥
पठंति ये स्तवं इदं नरादरेण ते पदम् ।
व्रजंतिनात्रसंशयःत्पदीयभक्तिसंयुताः ॥ ४१९ ॥

अथ चेतावनी सामयिक ।



सवैया ।

पूरण ब्रह्म बताय दीयो जिन एक अखंड है व्यापक सारे ॥
राग रु द्वेष करे अव कौन सो जोई है मूल सोई सब डारे ॥
सशय शोक मिट्यो मनको सव तत्व विचार कहो निरधारे ॥
सुन्दर शुद्धकिये मलधोयके वा गुरुको उरध्यानहमारे ॥ ४२० ॥

कवित्त ।

काहू सों न रोष तोष काहू सो न राग द्वेष काहू सो न वैर भाव काहू की न घात है ॥ काहू सो न बकवाद काहू सो नहीं विषाद काहू सो न सङ्ग नातो कोऊपक्षपात है ॥ काहू सो न दुष्ट बैन काहू सों न लैन देन ब्रह्मको विचार कछु और न सुहात है ॥ सुन्दर कहतसोई ईशनको महाईश सोईगुरु देवजाके दूसरी न बातहै ॥ ४२१ ॥

लोह कूं ज्यों पारस पषाण हू पलट लेत कञ्चन छुवत होय जगमें प्रमानिये ॥ द्रुमको ज्यों चंदन हू पलटे लगाय बास आपके समान ताको शीतलता आनिये ॥ कीटको ज्यों भृंगहू पलटके करत भृंग सोऊ उड़जाय ताको अचर्ज न मानिये ॥ सुन्दर कहत यह सगरे प्रसिद्ध बात शुद्ध शीख पलटे सो सतगुरु जानिये॥ ४२२॥

गुरु बिन ज्ञान नाहि गुरु बिन ध्यान नाहि गुरु बिन अतमे विचार न लहत है। गुरु बिन प्रेमनाहिं गुरु बिन प्रीति नाहि गुरु बिन शीलहू संतोष न गहत है ॥ गुरु बिन वास नाहि बुद्धिको प्रकाश नाहि भ्रमहूँ को नाश नाहि संशय रहत है । गुरु बिन बाट नाहिं कौडी बिन हाट नाहिं सुन्दर प्रगट लोक वेद यो कहत है ॥ ४२३ ॥

कोऊ देत पुत्र धन कोऊ देत बल धन कोऊ देत राज साज देव ऋषि मुन्योहै । कोऊ देत यश मान कोऊ देत रस आन कोऊ देत विद्याज्ञान जगतमें गुन्यो है । कोऊ देत ऋद्धि सिद्धि कोऊ देत नव निद्धि कोऊ देत और कछु ताते शीश धुन्यो है । सुन्दर कहत एक दियो जिन रामनाम गुरुसो उदार कोऊ देख्यो है न सुन्यो है ॥ ४२४ ॥

भूमिहूको रेणुकी तो सख्या कोऊ कहतहै भार हू अठारह द्रुमनके जो पात है। मेघनकी सख्या सोऊ ऋषिन विचार कही बूंदनकी संख्या तेऊ आयके बिलात है ॥ तारनकी सख्या कोऊ कही है पुराण माहि रोमनकी सख्या पुनि जितनेक गात हैं ॥ सुन्दर जहां लौ जन्तु सबहीको आवे अन्त गुरुके अनन्त गुण कापै कहे जात है ॥ ४२५ ॥

गोविदके किये जीव जात है रसातलको गुरु उपदेश सों तो छूटे यमफद ते ॥ गोविदके किये जीव वश परे कर्मनके गुरुके

दुनियाँको दौरताहै औरतको लोरताहै औजूदको मोरताहै बटोई सरायका ॥ मुरगीको मोसताहै बकरीको रोसताहै गरीव-को खोंसताहै बेमहर गायका ॥ जुलमको करताहै मालिक सो न डरताहै दोजखको भरताहै खजाना बलायका ॥ होयगा हिसाव तव आवेगा न ज्वाव कछू सुन्दर कहत गुनहगार है सुखदायका ॥ ४३६ ॥

सवैया ।

ये मेरे देश विलायतहैं गज ये मेरे मंदिर ये मेरे थाती ॥ ये मेरे मात पिता पुनि बांधव ये मेरे पूत सो ये मेरे नाती ॥ ये मेरे कामिनी केलि करैं नित ये मेरे सेवक है दिन राती ॥ सुंन्दर वैसेहि छांडि गयो सब तेल जर्‍यो सो बुझी जब बाती ॥ ४३७ ॥

कै यह देह जरायके छार किया कि किया कि किया कि किया है ॥ कै यह देह जमीनमें खोद दिया कि दिया कि दिया कि दिया है ॥ कै यह देह रहै दिन चार जिया कि जिया कि जिया कि जिया है ॥ सुन्दर काल अचानक आय लिया कि लिया कि लिया कि लिया है ॥ ४३८ ॥

तू कछु और विचारतहै नर तेरो विचार धर्‍यो ही रहैगो ॥ कोटि उपाय करै धनके हित भाग लिख्यो तितनोहि लहैगो ॥ भोर कि सांझ घरी पल मांझ सो काल अचानक आय गहैगो ॥ राम भज्यो न कियो कछु सुकृत सुदर यो पछिताय रहैगो ॥ ४३९ ॥

वीतगये पिछले सबही दिन आवत है अगलो दिन नेरे ॥ काल महाबलवंत बडो रिपु साधि रह्यो शर ऊपर तेरे ॥ एक घरीमहँ मारि गिरावत लागत ताहि कछू नहिं बेरे ॥ सुंदर संत पुकार कहै सत्र हौं पुनि तोहि कहो अब टेरे ॥ ४४० ॥ सोय रह्यो कहा

गाफिल ह्वैकर तो शिर ऊपर कालदहारै ॥ धामसे धूनस लाग रह्यो शठ आय अचानक तोही पछारै ॥ ज्यो वनमे मृग कूदत फांदत चित्र गले नख सो उरफारै ॥ सुदर काल डरै जिहिके डर ता प्रभुको कहि क्यो नसम्हारै ॥ ४४१ ॥ मात पिता युवती सुत बांधवआय मिल्यो इनसे सनबंधा ॥ स्वारथके अपने अपने सब सो यह जानत नाहिन अधा ॥ कर्म अकर्म करे तिनके हित भार धरे नित आपने कधा ॥ अंत विछोह भयो सबसो पुनि याहीते सुन्दर है जगधधा ॥ ४४२ ॥

कवित्त।

मेरो देह मेरो परिवार सब मेरो धन माल मे तो बहुविध भारो हू ॥ मेरो सब सेवक हुकम कोऊ मेटै नाहि मेरी युवतीकू मे तो अधिक पियारो हू ॥ मेरो वश ऊचो मेरे बापदादा ऐसे भये करत बडाई मे तो सभते उजारो हू ॥ सुन्दर कहत मेरो मेरो करजाने शठ ऐसे नही जाने मे तो कालहीको चारो हूं ॥४४३॥

देह तो सुरूप तौलो जौलो हैं अरूपमाहि सब कोऊ आदर करत सनमान है ॥ टेढीपाग बांध वार बारही मरोरै मूछ वारू उसकारे अति धरत गुमान है ॥ देशदेश हीके लोग आयके हजूर होय बैठ कर तखत कहावै सुलतान है ॥ सुंदरकहत जब चेतना शकति गई वही देह ताकी कोऊ मानत न आन है ॥ ४४४ ॥

सवैया।

नैननकी पलही पलमे छिन आध घरी घटिकाजु गईहै॥याम गयो युग याम गयो पुनि सांझ गई तब रात भईहै॥आजगई अरु काल गई परसो तरसो कछु और ठई है ॥ सुन्दर ऐसेही आयुगई तृष्णा दिनही दिन होत नई है ॥ ४४५ ॥ जो दश बीस पचास भये शत होयँ हजारन लाख मँगैगी ॥ कोटि अरब्ब खरब्ब

असंख्य पृथीपति होन कि चाह जगैगी ॥ स्वर्ग पतालको राज्य करा तृषणा अधिकी अति आय लगैगी ॥ सुन्दर एक संतोष विना शठ तेरी तो भूंख कभी न भगैगी ॥ ४४६ ॥

काहेको दौरतहै दशहुँदिशि तू नर देख कियौ हरिजूको ॥ बैठ रहे दुरके मुख मूंद उघारके दंत खवायहै टूको ॥ गर्भ थके प्रतिपाल करी जिन होयरह्यो तब तू जड मूको ॥ सुन्दर क्यों बिललात फिरै अब राख हृदै बिसवास प्रभू को ॥ ४४७ ॥

भाजन आप गढ्यो जिनने भरि हैं भरि हैं भरिहैभरिहैजू । गावतहै जिनके गुणको ढरिहै ढरिहै ढरिहै ढरिहै जू ॥ आदिहू अंतहु मध्य सदा हरि है हरि है हरिहै हरि है जू ॥ सुन्दर दास सहाय सही करिहै करिहै करिहै करिहै जू ॥ ४४८ ॥

कवित्त ।

या शरीर माहि तू अनेक सुख मान रह्यो ताहि तू विचार यामे कौन बात भली है ॥ मेद मज्ज मांस रग रगनमे रक्त भरयो पेट हू पिटारीसीमें ठौर ठौर मली है ॥ हाड़नसो मुख भरयो हाडनके नैन नाक हाथ पांव सोऊ सब हाडनकी नलीहै ॥ सुन्दर कहत याहि देख जिन भूले कोय भीतर भँगार भरी ऊपर ते कली है ॥ ४४९ ॥

कामिनीको अंग अति मलिन महा अशुद्ध रोम रोम मलिन मलीन सब द्वार हैं ॥ हाड मांस मज्जा मेद चाम सो लपेटराखे ठौर ठौर रकतके भरेही भँडारहै॥मूत्रहू पुरीष आँत एकमेक मिल रही औरहू उदर माहि विविध विकार है ॥ सुन्दरकहतनारीनखशिख निंदारूप ताहिजो सराहैं सो तो बडेही गँवार हैं ॥ ४५० ॥

सवैया।

सर्प डसे सु नहीं कछु तालुक बीछू लगे सु भलो कर मानो॥
सिंह हु खाय तो नाहिं कछू डर जो गज मारत तो नहि हानो॥
आग जरो जल बूड़ मरो गिरि जाय गिरो कछु भय मत आनो॥
सुन्दर और भले सबही दुख दुर्जन संग भलो जनि जानो॥४९१॥

कवित्त।

अपने न दोष देखे परके औगुण पेखे, दुष्टको सुभाव उठि निन्दाही करत है॥ जैसे कोऊ महल सँवार राख्यो नीके कर, कीरी तहा जाय छिद्र ढूँढत फिरत है॥ भोरहीते सांझ लग सांझहीते भोर लग, सुन्दर कहत दिन ऐसेही भरत है॥ पांवके तरेकी नही सूझे आग मूरखको, और सो कहत शिर ऊपर बरत है॥ ४९२॥

देखबेको दौरे तो अटक जाय वाही ओर, सुनबेको दौरे तो रसिक शिरताज है॥ सूंघवे को दौरे तो अघाय न सुगन्ध कर, खायबेको दौरे तो न धापे महाराज है॥ भोगहीको दौरे तो तृपति हू न क्यो ही होय, सुन्दर कहत याहि नेकहू न लाज है॥ काहूको न कह्यो करे आपनीही टेक धरे, मन सो न कोऊ हम देख्यो दगाबाज है॥ ४९३॥

सवैया।

जो मन नारीकी ओर निहारत तो मन होत है ताहीको रूपा॥
जो मन काहू सो क्रोध करै तब क्रोध मयी होयजाय तद्रूपा॥
जो मन मायाही माया रटै नित तो मन बूडत मायाके कूपा॥
सुन्दर जो मन ब्रह्म विचारत तो मन होतहै ब्रह्मस्वरूपा॥४९४॥

कवित्त।

मनहीके भ्रमते जगत यह देखियत, मनहीको भ्रम गयो जगत विलात है॥ मनहीके भ्रम जेवरीमें उपजत सांप, करके विचारे

सांप जेवरी समात है ॥ मनहीके भ्रमते मरीचिका को जल कह
मनहीके भ्रम सीप रूपा सा दिखात है ॥ सुन्दर सकल यह दीस
भ्रम मन हीको, मनहीके भ्रम गये ब्रह्म होय जात है ॥ ४५५
काक अरु रासभ उलूक जब बोलत हैं, तिनके तो वचन सुहा
कहु कौन को ॥ कोकिला सारिका पुनि सूवा जब बोलत हैं, स
कोऊ कान दे सुनत रव तौन को ॥ ताहि तैसो वचन विवेक क
बोलियत, योही आक वाक बकि तोरिये न पौन को ॥ सुन्दरसम
झकर वचन उचार करो, नही तो समझ कर वैठो गहि मौनको४५६।

सवैया।

कोउक निंदत कोउक वन्दत कोउक देत है आयके भक्षण।
कोउक आय लगावत चन्दन कोउक डारत धूरि ततक्षण।
कोउ कहे यह मूरख दीखत कोउ कहे यह आय विचक्षण॥
सुन्दर काहू सो राग न द्वेप सो ये सव जानहु साधुके लक्षण४५७॥
तात मिले पुनि मात मिले सुत भ्रात मिले युवती सुखदाई॥
राज मिले गज वाज मिलै सव साज मिले मन वांछित पाई॥
लोक मिले सुरलोक मिलै विधि लोक मिलै रु वैकुण्ठ हू जाई।
सुन्दर और मिलै सवही सुख सन्तसमागम दुर्लभ भाई॥४५८॥

कवित्त।

देव हू भयेते कहा इन्द्र हू भयेते कहा, विधिहूके लोकते बहुरि
आइयत है ॥ मानुप भयते कहा भूपति भयेते कहा, द्विजहू भयेते
कहा पार जाइयत है ॥ पशुहू भयेते कहा पक्षीहू भयेते कहा, पन्नग
भयेते कहा क्यो अघाइयत है ॥ छूटिवेको सुन्दर उपाय एक
साधुसग, जिनकी कृपाते अतिसुख पाइयत है ॥४५९॥
इद्राणी शृङ्गार करि चन्दन लगायो अंग, ताहि देख इन्द्र अति
कामवश भयो है ॥ सूकरी हू कर्दमके चहितमे लोटकर, आगे जाय

सूकरको मन हरलियो है ॥ तैसो सुख सूकरको जैसो सुख मघवाको तैसो सुख नर पशु पक्षीहू को दियो है ॥ सुन्दर कहत जाके भयो ब्रह्मानंद सुख, सोई साधु जगतमे जीत कर गयो है ॥ ४६० ॥

सवैया ।

मूयेते मोक्ष कहै सब पंडित मूयेते मोक्ष कहै पुनि जैना ॥ मूयेते मोक्ष कहै ऋषि तापस मूयेते मोक्ष कहैं शिवसैना ॥ मूयेते मोक्ष मलेच्छ कहै तेहू धोखेहि धोखे बखानत बैना ॥ सुंदर आतमको अनुभौ सोइ जीवत मोक्ष सदा सुख चैना ॥ ४६१ ॥

कवित्त ।

सोम नाम विप्रवर गिरिजाके वरकर, लीनो सुधाफल कर दीनो नरनाहके ॥ भूपति स्वपतनीको रानी निज मीत हीको, ताने दीनो गीतकीको नीको फल चाहके ॥ आगे गणिका सरागे धरापति आगे धरा, धरानाथ माथ धुना सुना धुना ताहिके ॥ हाहा कामिनीके हित हते काम नीके अब, ताहि तजों ताहि भजो शीश शशी जाहिके ॥ ४६२ ॥

सवैया ।

जिनको नित मे चितमे चितमो तिनकी रति मो तन माहि रती ना ॥ वह आन पुमानके सग रती पुनि ता मनमें गणिका गृह कीना ॥ धृग है अबला धृग कद्रपही अरु मोहि विकार जो मार अधीना ॥ इत रीति समूहकी प्रीति तजी नृप होय योगीश्वर ईश्वर चीना ॥ ४६३ ॥

कवित्त ।

ग्रथनके ज्ञाते माते मत्सरकी कीचवीच, धरानाथ मद साथ भरे दरशात है ॥ दूषण चमोर मोरे भूपणसे भापणको, पडित

भूपाल तो न सुनै मोरी वात हैं ॥ पुनि आन जंतु जेते दुखी दीन मूढ़ तेते, मोते सकुचात हम ओते सकुचात हैं ॥ पात्र विना भाप राखे भवनको राखे तैसे, जीरण मो गात मे सुवात होतजात हैं ४६४

सवैया ।

शांत निजांतर क्यो न गहे कत डोलें वृथा भवमों सघना ॥ होय यथा सु तथा निज ह्वै तुमते अनथा वह होवत ना ॥ प्रीति न साथ वितीत भली कछु हाथ विली ना यथा स्वपना ॥ मौन गहो अब मौन गहो तुम मोर गिरा जिन मोर मना ॥ ४६५ ॥

भावीके भाव अभाव यथा न रमो तिनमो नभके सुमना ॥ मध्यके भोगके मध्य रमो गत राग भ्रमो अन उत्तर ना ॥ ब्रह्म नपुंसक यो मन तू विन ता तव दंपति मों सुख ना ॥ टेरत मैं प्रति फेर तुमै तुम मो मतिको मत फेर मना ॥ ४६६ ॥

कवित्त ।

इद्रियोके भोग सारे भारे रोग, देन वारे, ताको कीजै हेय मत श्रेयपथ तज रे ॥ पाप अद्रि नाशनको वज्र पाकशासनको, दाहे दोष घासनको मोक्ष शिखी सज रे ॥ हूजो शांत भव बीच प्रापत कदापि नीच, आपनी कलोल लोल गन ते न लज रे ॥ क्षणभंग भवराग ताको मन करो त्याग, मोक्षको वैराग सहकारी तासु भजरे ॥ ४६७ ॥ प्रवाग सनेहको निवार देह मन बीच, वीची बुदबुदे रेखा दामिनी समानिये ॥ पुन दीत आगिनमे नागनमें नदी वेग, माहिं जैसे सुख नाहि तैसे ताहि जानिये ॥ देवनदी तीरकी पवित्र धारापर बैठि, नीलकण्ठ माहिं नील उतकंठा ठानिये ॥ अव ऐसी रीति करो भोरानकी प्रीति हरो, वेद वाक्य चित्तधरो तीन ताप हानिये ॥ ४६८ ॥

भूमि सेज मूल फल मेघ नव बलकल करने न परे देव आगे रचवरेहैं ॥ करो इन्हे साथ रति प्यारी प्रेम धारी मति उठो उठो

तामे अब जामे विवठरे है ॥ तुच्छ अविवेकी शठ मूढ मन बोल कटु, जाके चित चिता आग कर सदा जरे है॥ ऐसे धनवानन के नाम मात्र काननमें, जाहि महाकाननमें कवौनाहि परेंह ॥४६९॥

दीपमें पतग परे जरे न प्रताप जाने, मीन सु अज्ञाने भखे कुडि मिले मासको ॥ गज गजी हेत परो खात खात अंकुशको, रागमें कुरंग राग करे निज नाशको ॥ पकजकी गध वीच नीच भृग मीच गहे, इत्यादि अज्ञानी नाश करें निज मांमको॥ अहो हा सघन महामोहको प्रताप लहा, शुभाशुभ जानो पे न हानो भोग आसको ॥ ४७० ॥

सवैया ।

यह श्रुति ज्ञान सुजाननके अभिमान मदादि विकार निवारे ॥ केचित मोसम नीचनके चित मो वहु मान मदादिक धारे ॥ शून्य यथा मठ साधनको अति मूपको साधन दोप प्रहारे॥ सो हमसे मदनातुरको अति कामको कारण वाम समारे॥ ४७१॥

कवित्त ।

पुण्यनके वश ते सुभोग चिर वशते न मित्रनसे नशते मर्याद आदि दिनमे ॥ कौन भेद भोगनके भेदमें न तजे जन एकको बियोग तो अवश्य होत तिनमें ॥ स्वते जब जावे तब मनको तपावे भारी मोपे तिने आप ताप मोपे तिन्हें छिनमे ॥ ऐसे मोप प्रतिवन्धी विपे लखेमे सम्बन्धीको कुभागी विना मे जो रागी होत इनमे ॥ ४७२ ॥

जाहि मात पिताते मे भयो उतपति, ते तो काल वशभये चिर कान वीत गयो है ॥ सम वेस वारे द्वारे सुमरत सिधारे सागे, रहे हम शेप देह धप लयो हे ॥ नदी र॰ तोर पर तरु यो शरीर

भयो, प्रतिदिन मृत तीर तीर अब आयोहं ॥ गिले काल व्याल सम मेढक के अजे हम, भजे भोग मच्छरको मोसों मूढजायोहै ॥४७३॥

जाके वामे दाहिने सुमंत चक्र होते अश्र, राजनकी सभा थी मयक मुखी नारियां ॥भूपनके पुत्र थे विचित्रवीर अहंकारी,वृद वदीजन होते वंशके उचारियां ॥ अहो भाई भारो कष्ट भारी भूप भये नष्ट, स्मृति पद प्रविष्ट सु जाकी कथा भारियां ॥ हसक प्रपंच सब रंचको असंग पुना, ताहि काल वीरको जुहार बार वारियां ॥ ४७४ ॥

गङ्गतीरपर हिमगिरि शिलापर हम बांधे, पदमासनको मन इंद्रि जीतके ॥ ब्रह्मजूके ध्यानकी अभ्यास विधि सो निवास, योग निद्रा माहि करो हरो ताप चीतके ॥ जठर कुरंग करे शृंगो सङ्ग कडू मोहिं, सुख सो अभीत मोको जाने सम भीतके ॥ पारवती-नाथ मैं अनाथके अभीत वारे, उत्तम दिलारे कब आवें ऐसी रीतके ॥ ४७५ ॥

काशी गंगाके किनारे भवते किनारे होय, कदा बसों वसन कौपीन एक धारके ॥ दोउ हाथ जोरे कर नाय माथ नमो करों, मृदुवाणी साथ रटो नाम समरार के ॥ भो प्रभो भवानी वर शंकर त्रिनेत्र हर, त्रिपुरारी चन्द्रधर भव भवहारके ॥ क्षण सम दिन सब मोरे बीत जावें जब, ऐसे अह आवे कब कहो कृपाधारके॥४७६ ॥

रुचत सुमेर मो न आवे कहूं काम जो, न निज गौरता मैं सोना सदा गलतान है ॥ जीव जे सन्तोष कर त्रिपत सदैव तर, ताको शेष आनन्द रह्यो कछू न आन है ॥ पुना जेई आन जन धन लोभ कर मन, व्याकुल हैं जाके ताकी तृषणा महान है ॥ कौनके निमित्त ऐसी सम्पदा अमित रची, इत विधि करके न विधि बुधिमान है ॥ ४७७ ॥

हिसा नाहि करे परद्रव्य को न हरे, सत्य वचन उचारे पुण्य समै पुण्य कर हैं ॥ कथा बितकथा पर नारीकी न सुने भन. ताते गुग बोला बने भोला समचर हैं ॥ तृष्णाको प्रवाह भङ्ग गुरो विषे नम्र अङ्ग, मित्रभाव सब सङ्ग करै हर हर हे ॥ गायो सर्व ग्रन्थनमें सन्त ऐसे पन्थनमें,राग दोष मोष चरें जैसे दिनकर हे ॥ ४७८॥

कभी भूमि आसन सिंहासनपै वास कभी, कभी भिक्षाग्रास कभी व्यञ्जन अहार है ॥ कभी शत खण्डवती गोदरीको ओढे यती, कम्बरको कबहूँ दिगम्बरको धार है ॥ कभी भानुकर तपे कभी शीश छत्र दीपे, कहूँ सतकार होत कहूँ त्रिसकार है ॥ तदपि न सन्त जन सुखी दुखी होत मन, आतमा असग लखि देहको विहार हे ॥ ४७९ ॥

देव एक महादेव नदी देवनदी सेव, गिरि गुहा धाम एव चीर दिशा चार हे ॥ एव काल मीत नीको व्रत निरदीनताको, सङ्ग बुध युवतीको प्रिय बडु डार है ॥ सुता निरवैरता कुमार ब्रह्मको विचार, और कहा भनो जाको वन्यो या अचार हे ॥ ऐसे सदाचार परवार कर जोऊ नर, सदा पारवारो सदा ताहिको जुहार है ॥ ४८० ॥

शुचि वनके निवासी मृगों सङ्ग हासी, खेल मेल दासदासीको न मेधफल आसी है ॥ कभी व्रत नदी तट कभी समसाने मठ, कबहूँ पषाण वट तरु तरे बासी हे ॥ केवल प्रशात मन तुल्य आयतन वन, तदपि एकांत घन बासी सुखराशी हैं ॥ ईशके उपासीकी प्रकाशी या विभूति ताहि, गावे सुने ध्यावे नाहिं पावे यमफासी है ॥ ४८१ ॥

तजे दुराराध्य स्वामी कृपण कुमगगामी, वजावत चल चित भूपनके भामिये ॥ ताते मे सथूल चाह पूरी होत नाहि ताते,लियो मन ताहि माहि पद जो महानिये ॥ जरा हरे काय हरे काल

समुदाय प्राण, ताते तप करो सखे विदुषो बखानिये ॥ तप बिन आन मग श्रेयको न मध्य जग, तप नाम चित्तकी एकाग्रताको जानिये ॥ ४८२ ॥

सवैया ।

शुचि गंग तरंगकी बूंद कनीकर शीतल चारु हिमचलकी सिल ॥ जिहि फूल फलान उपान धरे शिवको नित सेवत देवबधू मिल ॥ पर भोजनमें निज जो जनदे दिल ता गिरको कत काल लयो गिल ॥ अपमानसही अपमानसही विद धीर सही नृपधाम अहीविल ॥ प्रति कानन विर्छन तेमन वांछत लाभ सुखेत फलादि अपारा ॥ सरिताके सुथान सुथान विषे शुचि शीतल मिष्ट मिले बहु बारा ॥ जल पत्रवती मृदु साथर शीतल पादके होवत भूपन द्वारा ॥ सटके मतिमान महा भटके मतिमान तहां कृत होत खुवारा ॥ ४८३ ॥ ४८४ ॥

कवित्त।

कन्दरा ते कन्द मूल कहा निरमूल भये, बार बार नग किधों देत है न बन को ॥ मीठे फलो वारी डारी तरों की न फल देत, कैधों द्रुम देत है न वलकल जन को ॥ दुखसों मनाक धन साधके मदांध भये, मद व्यार साथ जो भ्रमावे भूल तनको ॥ खलोके कुमुखोको सबल सुपुरुष पेखे, अहो कैसे तजे ऐसे चिंतामन वनको ॥ ४८५ ॥

तुंग भोग इन्द्रलोक सत्त लोक लग जेते, तेतेही तरंग सम भग पहिचानो रे ॥ जीवनके जीवनेकी रास एक सांस सोऊ दामिनी समान क्षण माहिं हानि जाने रे ॥ जोवनको सुख थोरे दिनमें विमुख होरे, मीतनकी प्रीति पुनि नीत न पछाने रे ॥ सकल संसारको विचारके असार तजो, बोध हेत बुद्धिमानो मेरी बुद्धि मानोरे ॥४८६॥

मांसग्रन्थि कुचनको कञ्चनके कुम्भ कहे, सोम सम मुख कफधामको उचारे हैं ॥ चम्पाकलीके समान दाडिमके दाने माने, हाडनकी दांत पांतको दिवाने सारे हे ॥ मृतभिगी जघनकी सघनी बड़ाई भने, निंदत गजिदकर केलाको निवारे हैं ॥ अहो निन्द योग्य रूप अगनाको ताकी ऊप, धुनि मतवारे शीश धुने मतिवारे हे ॥ ४८७ ॥

जग कर श्वेत बार नरोंके निहार नार, करे ताहि त्रिसकार भागे फेर नारको ॥ हाड घटी रजु नार मन्दर सहेर डार, विप्र नार वृद्ध रूप कूप चमिआरको ॥ दाहे तीन ताप भान नैन ज्ञान कान तजे, तजे ताहि मान आदि यो उदार को ॥ अहो कष्ट जीव दुष्ट तजे न अनिष्ट अजे, नारी तजे तन भजे मन अजे नारको ॥ ४८८ ॥

आननकी छवि वली गणो कर टली गली, काननकी गली वल अको मे न भास हैं ॥ लोइनाके माहिं कछु लोइ नाहि परे स्वच्छ, रसना सो रसनासो नास कला नास हैं ॥ केश भये उजर न रह्यो कछु उजर, जवानी गई उजर न सांसको विसास हैं ॥ तृष्णा तो अनन्त अन्त भयो है सघातसम, शान्त भई शान्ति नाहि शांत भोग आसहै ॥ ४८९ ॥

तनु वृद्ध भयते न वृद्ध भई भोग आश, मन में तो भोगनकी कोटि मन रत है ॥ सनै सनै उच्चस्थान लोचनकीदुतिहान, मानवको बहु मान हान भयो अत हे ॥ सखे समबैस वारे प्राणो वत जेई प्यारे, कबके पधारे नाक देख ऐसी गत है॥अहो अजे नीच निज मीच वीच हासी भजे जीव ना चहत मृत जीवना चहत हैं ॥४९० ॥

शुभ शत संवत नरानकी प्रमान आयु, तासु आधभाग नास होय रैन सोय है ॥ वालवृद्ध माहि ताहि आधो भाग वाधो जाहि, जाड़ता अशक्य ताकी खाण वैस दोय है ॥ शेपकी अवधि जोऊ आधि व्याधि सग सोऊ, भ्रमनो विदेश होऊं सेवकादि खोय है॥ जीवनकी आयुमाहि सुखको तो नाउँ नाहि, तोयके तरंगके समान भग होय है ॥ ४९१ ॥

विविध प्रकार वेद अर्थके सवेद वासी, चेतना मो चञ्चलाई सों निकाई हत है ॥ नानाविध वाक्यनके कौतुकमें रस जोऊ, सो विरस भयो जाहि माहि विलसतहै ॥ भाँति भाँति सकल विकलपै प्रशांत जामे, रजो तमो रहत सु सतोके सहत है॥ईश्वरकी सेव हित ऐसो चित्त चाहियत, ऐसे चितहीमो सत चित विकसत है ४९२॥

हरि मे सनेह तग जनम मरन डर, उर माहि कीनो वरबधु में न राग है॥मनोभव जो विकार मंद ससकार डार संग,दोप दुख टार वसे कांत-वाग है ॥ या वैराग्य भये कहा होर त्याग योग रहा,हती सव चाह जो वैराग ते वैरागहै ॥ हेतु परमारथको उत्तम वैराग ऐसो, भाग वडे भागको अभाग ताते भाग है ॥ ४९३ ॥

भोगमे रोग भय सुखो विपे क्षय भय,धन मध्य भय भूप चोर-को रहत है ॥ दास माहि स्वामि भय जय माहि रिपु भय,भय कुल बीच नीच नारीको महत है ॥ मान मे महान भय गुणी में खलान भय, काय में कृतांत भय सर्वगत है ॥ निर्भय वैराग एक धरो नरो सविवेक, गायो मैं अनेक वार थाकी मोरी मन है ॥ ४९४ ॥

सवैया ।

तीर्थन माहि सनान समान करे बहुदान महान मनीके ॥ समसान मठान तरून तरे असथान करे उत तीर नदीके ॥

मुख मौन धरे तज भौन चरे अरु वेद ररे सु पढावत नीके ॥ गुण ये तत वृन्द वरात जना वर एक वैराग विना सब फीके॥४९५॥

कवित्त ।

अत-तो मलीन दिन हीन पुरुपारथ सो, कर्मन विहीन पीन पापको कहा कहो ॥ विपया अधीन और कहा लौ कहे प्रवीन, काम क्रोध लोभ मोह मदके धका सहो ॥ रावरे समर्थ हे सो मोसे खल तारवेको, अधम उधारन हो और ते नदा चहो ॥ सरल सुजान सत प्यारेकी निछार मोहि, दीजै शर्णागत सत-सग मा पगे रहो ॥ ४९६ ॥

सवैया ।

आपनो रूप पिछान नी लाभ न भूल सी हान बड़ी नहि जीको ॥ नाहि वडो सुख भक्ति ते दूसरो दु ख न जानिवो राधिका पीको ॥ चारिहु नीक न जान परे विन साधुके सग कहो कर नीको ॥ वेद कहे अरु लोक लखे मतसगत सेव्य सही सबहीको ॥ ४९७ ॥

झूलना ।

समता गहे सचको जाने दुःखसुक्ख सम आड़ा है॥मेटे मान मोह मगरूरी काम क्रोध सो खाड़ा है ॥ छोड कुसग सग सम साध सुरत शब्द मन गाड़ा है ॥ यो शिरके पद चले सग ढिग क्या तनु हलुवा माडा है ॥ ४९८ ॥

इद्रिय जीत करे वश अपने तजे जगतकी आसा है । जोडे प्रेम नेम साईं सो रहै दरस रस प्यासा है ॥ आपा मेट गर्द कर डारे शिर दे लखे तमासा है ॥ यहि विधि गहै सत तब होवे यो क्या दूध वतासा है ॥ ४९९ ॥

कवित्त।

झूठी एक माटीको घरौदा सो शरीर मन, ताको कहै मेरो वपु अति अभिराम है ॥ आगे पाछे भाव नाहिं मध्य दुःख भोग यामें, जानें जाको खेह विट कृमि परिनाम है ॥ विषयको भोग जैसे दाद को खुजाये सुख, अंत दुःखराशि तामें मानतविश्राम है ॥ इंद्रिन के संग लाग्यो आपनो स्वरूप त्याग्यो, कुसंग अनुराग्यो यामें याको कहा काम है ॥ ५०० ॥

कुण्डलिया।

भेडिनमें जिमि सिंहको शावक रह्यो भुलाय ॥ तिनके संग भेंभें करै निज पौरुष बिसराय ॥ निज पौरुष बिसराय तिनहिके धारे लच्छन ॥ यों नहिं समुझे नेक सकल ये मेरे भच्छन ॥ तैसे गो गण संग फिरत मन पग भ्रम बेडी । आप अपनपौ खोय भयो भेड़िनमें भेडी ॥ ५०१ ॥

कवित्त।

रविको प्रकाश जैसे देखिये मुकुर मध्य, मुकुर प्रकाश जैसे जलको अभास है ॥ जलके प्रकाश हू ते होत जो प्रकाश ताते, देख्यो परै मदिरके भीतर उजास है ॥ तैसे परमातमा ते आतमा विचार लीजै, आतमाते मन ताते जगत विलास है ॥ साक्षी परमातमा अखंडित सभीके माहि, सबही ते न्यारो सदा आनंदकी रास है ॥ ५०२ ॥

स्वपनेमे सती यती मुनि राव रंक सब, स्वपनेमें चार दश लोकन फिरत है । स्वपनेमे मेरो तात मात भ्रात नारी सुत, मेरो यह धाम ग्राम नाम यो कहत है ॥ स्वपनेमें भवके समुद्र माँझ वह्यो फिरे, पेरत थकत पुनि बूडत तरतहै ॥ जागे विन जाने नाहिं आपही सकल भयो, आपही तो निरखत आपही निरत है ॥ ५०३ ॥

सवैया ।

चाह जितो चित चाहै अनेकन होत तितो दुःख ही जु विचारे॥
है इन इंद्रिनको सुख हेर सुतेरो न हेत जो नीके निहारे ॥
पेट लफाये फिरे जु कहा अतिदीन दुवारन दांत निकारे ॥
ले हरिकी किन भक्ति सदा जु चहै सुखसो अपनी निसतारे॥८०४॥

देने दई फल फूल अनेक औ मूल जिते तित तोहि अहारे ॥
डासनको कुश ले परी भूमि चहै जितही तित पायँ पसारे ॥
ताल तरंगिनि ताप हरै अरु सूरज पावक शीत निवारे ॥
याके लिये हठके शठ तू कह पांवर पौरिन हाथ पसारे ॥ ८०५ ॥

कवित्त ।

जाको जाको चाहै सो तो जात है चला है सब कौनसी निबाहै नेह देहहू तो छीजिये ॥ रवि शशि तारागण सुरासुर सातो सिंधु, भूमिहू आकाशको विनाशिही पतीजिये ॥ ब्रह्मा अरु कीट लो विनाशवन्त दीसै सब,आपा मान रह्यो सो तो आपहू न जीजिये कासो मानो नातो कासो करत हिताहित सो देख जो परत शोच काको काको कीजिये ॥ ८०६ ॥

अंगी अरधंगी हितबन्ध सनबन्धी ताके, हेत मति बधी मन पाछे पछताय है ॥ अंग ही लौ अंग छिनभंगी जब होय गयो, नाश भे अनंगी तब अंगी कहा पाय है ॥ घर ही लौ कोई कोई आंगन डगरही लौ, चिताके समीप कोऊ जाय है तो जाय है ॥ जेतो है हुतंगी दिना चारहीके रंगी सब, अंतके समैको तेरो संगी यमराय है ॥ ८०७ ॥

सवैया ।

आये कहांते कहो तुम आपहे आये कहांते तुम्हारे ये नात है॥
जात भये कितको सिगरे अरु तू मरके कितको कहँ जात है ॥

नाचत पूतरी पेखनो लो जग डोर नचावन हारके हाथ है ॥ तेरो कहा जो तू मेरो काहे हठ हेरो विचार कहा विललातहै ॥ ५०८॥

कवित्त ।

मान लियो तात भ्रात मान लियो पिता मात मान लियो अरि मित्र जाति अरु पांति है ॥ मान लियो आपा पर मान लियो नारि नर, मान लियो दुःख सुख दिन अरु रात है ॥ मान लियो नर्क स्वर्ग पाप पुण्य मान लियो मान लियो हानि लाभ भाँति हू विभांतहै ॥ जग सब झूठ है मरीचिकाकी ज्योति जैसे, जान लियो साँच मान लियो एक बात है ॥ ५०९ ॥

राग विहाग ।

औभे वह वह झाकी दाहुण पडदा किसतो राखीदा । जिसतन इश्क का जोर हुआ वह बेखुद है बेहोश हुआ वह क्योंकर रहे खमोश हुआ जिन प्याला पीता साफीदा ॥ तुसी आप अम्बा-बल आएहो किस कोलों भेद छिपाएहो किते अदम पीर वन आएहो विच पडदा रखिया खाकीदा । तुसी आपे कहदे सारे हो तुसी आपे कहदे न्यारेहो तुसी आपे लयो न जारे हो किते लाला नयन इसाकीदा ॥ तूं ना कर इतना सेडाहै तुध बाझों दूज केहडा है असां देख्यो वडा अधेरा है अपने आप नूं दूजा आखीदा । किते रूमी हो कित शामी हो तुसी आपने आपत मामी हो किते साहिब किते सलामीहो केन्हो खोटा खरा सुलाकीदा ॥ मनसूर नूं सूली चाव्या ईशाह शम्मस पोश उतारयाई हुण मिसकीना वल आया हैं कुछ लेखा रहिदा वाकीदा । बुल्या इस तन दी तूं भाठी कर वाल हड्डा नूं काठी कर ज्ञान अगन सो नाती कर फिर तिस-पर मधुवा चाखीदा ॥ ५१० ॥

राग जंगला ।

कोई मोडो दिलांदियां वागा नूँ ॥ मन समझाया समझ नाही रात दिने उठ पैदा राही ढूँढन जाय स्वादां नूँ ॥ यह मन मेरा कौआ कहिये विना हस क्यो मोती लहिये मिल हसा तज कागां नूँ ॥ और किसीको दोष न दीजे जो कछु बीजिया सो सुन लीजै दोष है अपन्यां भागां नूँ ॥ कहै हुसैन सुनो भाई साधो मन मजवूत पकड़ जब बांधो फेरकी करो किताबां नूँ ॥ ५११ ॥

तेरा राम वसता है तेरेही मनमे मूरख काहेको भटकत वनमे ॥ दूध दहीकी मटिया जमाई तामे माखन वस्तु लभाई मथन विना कुछ हाथ न आवे जैसे चदा छिप जात घन मे ॥ पथरीमे आग जाने सब कोई चकमक झाडके धूनी रमाई गुरु अपनेसे आज्ञा पाई जैसे मुख देखत दर्पनमे ॥ महिदीके पातमे लाली रहत है विन वॉटे रग चढे न हाथ पे ऐसी खोजना करो मन अपने निश्चय कर चितला साधनमे ॥ गजके कुभ सो निकस्यो मोती अँधरेसे क्या कीमत होती हेमदास कोई विरला जाने ज्ञानी समझत है सैननमें ॥ ५१२ ॥

सतगुरु पूरा पाया भला मै साहव पूरा पाया है ॥ गढ कञ्चन्-के महला त्यागे त्यागी सगरी माया है॥दारा सुत दोनो मे त्यागे गोविद हिरदे में समाया है ॥ जन्म २ कासा मै दुखिया छिनमे दु:ख गँवाया है॥सुखी गई आनँद सँग राता गोविदका गुण गाया है ॥ मन महला मै सेज विछाया सुखमें जाय समाया है ॥ जाग्रत स्वपना दोनो त्यागे तुरिया माहि जमाया है ॥ पवन दा घोड़ा सुरत लगामा भयदा चाबुक लाया है ॥ प्यादेके असवार वनाया विन पखा जु उडाया है ॥ शौह अपने दी रैगी रगसां

छोड़के आश सभी जगकी हियमे सुख शांतिको वास करो ॥
यह जीवनहू की तजो शरधा जग जीवत ही बिन मीच मरो ॥
अवलों जु भई सु भई अवहूं चित चेत विवेक की ओर ढरो ॥
तुम काके हो को हो कहां हो कछू अपनी सुधि आपन आप धरो ॥
काल निहारत काल सदा सब लोग विचारत ही पच हारे ॥
कोऊ बच्यो न कहूं कितहूं जलहूं थल व्योम पताल विचारें ॥
है छिन एक को पेखनोसो तू तहां कह कौनकी आश निहारें ॥
यामें कहा तोहिं अर्थ मिले यो विनर्थहि मानुप जन्म निहारे ॥
तू ममता मद माहिं पग्यो रचके पचके बहु धाम सँवारे ॥
लोभ अधीन जो पापको मूल रह्यो चित भूल न आप सँभारे ॥
काल रह्यो ढिग श्वास गिनै छिन मांझ लवा जिमि बाज पछारे ॥
नदके नंदहि क्यो न भजे जो सदा अपने जनको प्रतिपारे ॥८२४॥
सन सदा उपदेश बतावत केश सभी शिर श्वेत भये हे ॥
तू ममता अजहूं नहि छाडत मौतने आय सँदेश दये हैं ॥
आज कै कालिह चलै उठ मूरख तेरेही देखत केते गये हैं ॥
सुन्दर क्यों नहि राम सम्हारत या जगमें थिर कौन रहे हैं॥८२५॥

राग प्रभाती ।

तू खुश भर नीद क्यों सोया । नगारा कूचका होया ॥ नगारा मौत का बाजे । ज्यो साधन मेघुला गाजे ॥ जिन्हा सँग नेह सी तेरा । तिन्ह किया खाकमें डेरा ॥ न आये फेर कर फेरा । कहां गये मुल्क के वाली । जो चल्ते हंसकी चाली ॥ गये दरबार कर खाली ॥ कहँ गये खान मद माते । जो सूरज चद्र लौ जाते ॥ न देखे वह किसी जाते ॥ कहां गये मीर और काजी । जो चढ़ते तुरकियां ताजी ॥ गये वैरान कर वाजी ॥ जो टूटी अबकी डाली । जो सोता बाग का माली ॥ बडेही शौकसे पाली । जिन्हां सिर केश थे काले ॥ मलाइयां दूधसे पाले ।

कि आखर अगिनमें जाले ॥ जिन्होके लाख थे पल्ले । वो खाली हाथ कर चल्ले ॥ उन्होने जंगले मल्ले ॥ जिन्हा शिरसोहँदे चीरे । चबावे पानके वीरे ॥ तिन्हाको खा गये कीरे ॥ जिन्हा घर रेशमी बसते । तिन्हां पर बैठ कर हँसते ॥ सो देखे खाकमें धसते ॥ जिन्हा घर पालकी घोडे । सोहें तन मखमली जोडे ॥ सोई सुख मौतने तोडे ॥ जिन्हां घर झूलते हाथी । हजारो लोग थे साथी ॥ तिन्हां-को खागई माटी ॥ जो तन धन गर्व नहि करना । कि आखर खाक मे रलना ॥ बली कहे फिर नहि मिलना ॥ ५२६ ॥

राग जगंला ।

इस दुनिया पर रोज मुसाफिर नित उठ बाग बहार नही ॥ काची कथ बालुका गारा तिस पर महक उसार नही ॥ भाई बंधु कुटुंब बनेरा भीर परी कोइ यार नही ॥ बारू भीत बनाई रच पच सो रहती दिन चार नही ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो आवत दूजी बार नही ॥ ५२७ ॥

राग भैरवी ।

याद करेगा इस जीवननूँ भला मुसाफिर बंदे ॥ आयासी कछु लाहे कारन रुँझगिया केहडे धंधे ॥ भवसागर तैंनू तरना पौंसी पाप पुण्य धर कधे ॥ भाई बंधु कुटुंब बनेरा जन्म जन्मके अंधे ॥ कहत कबीर सोई पार उतर गये हरि हर नाम जपदे ॥ ५२८ ॥

राग परज ।

बात चलन दी करहो जग रहना नाही ॥ खाय सुराकां पहिपुसकां जमदावकरा पल हो ॥ गंगा जावें गोदावरी न्हावे अजे न समझे खलहा ॥ उमर तेरी ऐवें पई जादी घडी घडी पल पलहो ॥ कहे हुसन फकीर साईंदा भय साहिब दा कर हो ॥ ५२९ ॥

राग प्रभाती ।

अवतो जाग मुसाफिर प्यारे-रैनि घटी लटके सब तारे॥आवा-गौन सराई डेरे साथ तयार मुसाफिर तेरे अजे न सुनदा कूचनगारे॥ करलै आज करनदी वेला वहुरि न होसी आवन तेरा साथ तेरा चल चल्ल पुकारे ॥ आपो आपने लाहे दौडी क्या सरधन क्या निरधन बौरी लाहा नाम तू लेहु सँभारे ।वुल्हा शोहदी पैरी पारैवे गफ़लत छोड़ हीला कछु करिये मिर्ग जतन विन खेत उजारे९३०॥

किही राहीं जानरो मुसाफिर कल्ले ॥ इन्हां मुसाफरांदे दूर ठिकाने खरच न बन्हदे पल्ले ॥ इन्हां मुसाफिरांदी की आशनाइ आज आये कल्ह चल्ले ॥ ९३१ ॥

वैठ रे मन सवरके हुजरे।जैसी जैसी आवै तैसी तैसी गुजरे॥ शांत वहारी हत्थ गहलीजे धूर खुदी दी दूर करीजे तव अँधरेको सव कछु सुझरे ॥ वृथा जन्म गँवायो रे प्राणी कभू न सुमिर्‍यो अंतर्यामी उमर तेरी ऐवे पैया उजरे ॥ शिर पर मन्न लई सव रजाई हरदम आखी साई सबही मुशक्कतां पावेगा मुजरे॥ जे मन जांदा मोड ल्यावे तांरजादाशाह कहावे अपना मरम तू आपही वुझ रे ॥ ९३२ ॥

राग वड़हंस ।

अरी अरी एरी माई डरदी तेरीयांनकी वांदेकोलो रव्वा आल्हे छिपके मै खलोनीहां॥ मैली टोपी साबुन थोडा मल मल धोदिय पीया तेरा जोड़ा दागां दा कोई ओडक नाहीं नाली वोदीयां नाले मैं रोनीहां ॥ दुःखांसूला ने कीता एका नाकोई साहरा नाकोई पैका दर तेरे ते पई तड़फदी सुनले हाल नमानीदा शाहहुसैन खड़ा तिन गाजे काल नगारा तेरे शिरपर वाजे चार दिहाडे गोरी वासा आखर कूच न पारीदा ॥९३३ ॥

राग प्रभाती।

रहुवे बीवी रहुवे अड़या बोलनदी नही जावे अडया॥ जे शिर कट्ट लवे धड नालो पाछे कदम न देवी हालो तदभी कुछभी न कहुवे अडया॥ जे तैं हक दा राह पछाना दमना मारी रही चुपाता गरदन केद्दु ना बहु वे अडया॥ गोर न मानी दियां छमकां केहीयां हूं हवा विच रह गैयां सेयां कहिदा शाहहुसैन वे अडया॥ ५३४॥

राग जंगला।

हॅमके गुजार दम साईं नाल लावी नेह देवी तेहंढावी खावी कित कारण संचना॥ जोडे सीवथेरे दम आये भी न किसे कम लखांते हजारां वालेनंगी पैरी चल्लना॥ सीधे मारग पाऊंराख चुभे नही कटाकाख विगेमारग पॉउ न धरिये होवे अग भगना॥ शाहबादशाह झूरे किसेदेन न कम पूरे दुल्हेदी वलाय झूरे आखिर मर वजना॥ ५३५॥

लाज मूल न आइया नाम धरायो फकीर॥ राती राती बदिया करे दादिन मूॅसदावें पीर॥ अपना भारा चाय न सकदा लोका वभावें धीर॥ कुडम कुटब दी फाही फस्या गल विच पालाईया लीर॥ दर गह लेखा मंगीये हुसेना रोवेगा नीगेनीर॥५३६॥

राग धनाश्री।

मेरी आंख दिया हो लाज मूलन आइया यार॥ मेरी मेरी रावण कर गये शाह सिकंदर दारा॥ बाजीगर दी बाजी वांगूं रच्या कूड पसारा॥ मेरी मेरी कौरो कर गये दुर्योधनके भाई॥ सोलां योजन छत्र झुलत सी देही गिर्झन खाई॥ मेरे पुत्र मेरी या धीया मेरा कुटुम्ब मेरे भाई॥ जिन्हां दी खातर पाप कमावे तिन्हा ठौर न काइ॥ यह दुनिया है चार दिहाडे नाकर मन दा भाणा॥ कहे हुसेन फकीर साईं दा नगी पैरी जाणा॥५३७॥

राग भैरवी ।

माटी खुदी करेदी यार ॥ माटी जोडा माटी घोडा माटी दा असवार ॥ माटी माटीनूं मारन लागी माठी दे हथियार ॥ जिस माटी पर बहुती माटी तिस हंकार ॥ माटी बाग बगीचा माटी माटी दी गुलजार ॥ माटी मांटी नूं देखन आई माटी दी वाहर ॥ हंस खेल फिर माटी होई पौंदी पांव पसार ॥ बुल्लाशाह बुझारत बुज्झी लाह सिरो भो मार ॥ ५३८ ॥

गजल ।

जिन प्रेम रस चाख्या नही अमृत पिया तो क्या हुआ । जिन इश्कमें शिर ना दिया युग युग जिया तो क्या हुआ ॥ मशहूर हुआ पंथमे साबित न कीया आपको । आलिम ओर फाजिल बना दाना हुआ तो क्या हुआ ॥ देखी गुलिस्तां बोस्तां मतलब न पाया शेखका । सारी किताबां याद कर हाफिज हुआ तो क्या हुआ ॥ जबलग प्याला प्रेमका पीकरके मतवाला नही । राग तार मडल बाजते जाहिर सुना तो क्या हुआ ॥ जोगी व जगम वेषकर कपडे रँगाकर पहिनते । वाकिफ नहीं उस हालके कपडे रँग तो वया हुआ ॥ दिलमे दरद नहि दिया को बैठा मुशाइख होयके ॥ दिलका हरट फिरता नही तसवी फिरी तो क्या हुआ ॥ औरां नसीहत तू करे आप अमल करता नही । दिलका कुफर टूटा नही हाजी हुआ तो क्या हुआ ॥ जब इश्कके दरियावमें गर्काब तू होता नहीं । गगा यमुन गोदावरी न्हाता फिरा तो क्या हुआ ॥ बलीराम पुकारत है यही पीपी जो करते जी दिया । मतलब हासिल ना हुआ रो रो मुआ तो क्या हुआ ॥ ५३९ ॥

राग जंगला ।

क्यो वे बीवा मान भरचा रमता योगी गुल चमन दुनियाके पर इक लहिजे का मुकाम है । करता है मेरी मेरी

रे यां तेरा कौन है ॥ टुक दम का है बसेरा दुनिया आवागौन है ॥ भाई बंधु बिरादरी फरजंद यार मन । सब सुखके हैं समीपी रे तू समझ यार मन ॥ रावण सरीखे होगये जिनके गाढे निशान । इक पलमे मार डारे तेग क्या चले अभिमान ॥ अब कहत है कबीर रे तू समझ यार मन । इक राम नाम सांचा है और झूठा सब जतन ॥ ५४० ॥

राम रंग लागा हरी रंग लागा । मेरे मनका संसा भागा ॥ जब मैं होतीथी अहिल दिवानी तब पिया मुखो न बोले । जब बंदी भई खाक बराबर साहब अंतर खोले । साहब बोले तो अंतर खोले सेजाडेयां सुख दीजे । रोम रोम प्यारे रंग रत्तीयां प्रेम प्याला पीके । सॉचे मनते साहब नेडे झूठे मन ते भागा । हरि जन हरिजीको ऐसे मिलत जैसे कंचन संग सुहागा ॥ लोक लाज कुलकी मरयादा तोड दियो जैसे धागा । कहत कबीर सुनो भाइ साधो भाग हमारा जागा ॥ ५४१ ॥

राग काफी ।

ना जानू मेरा राम कैसा है । मुल्ला होके बांग जो देवेक्या तेरा साहिब बहरा है ॥ कीडीके पग नेवर बाजे सोभी साहिब सुनता है । माला पहरी तिलक लगाया लंबियां जटा बढाता है ॥ अंतर तेरे कुफुर कटारी यू नहि साहिब मिलता है । कौडी कौड़ी माया जोड़ी जोड़ जमी पर धरता है ॥ चलनेकी जब त्यारी होई हाथ पसारे चलता है। हीरा होवे परख दिखावां कौडी परखन कैसा है । कहत कबीर सुनो भाइ साधो हरि जैसे को तैसा है ॥ ५४२ ॥

राग सोरठ ।

उपजे निपजे निपज समाई । नयनन देख चल्यो जग जाई ॥ लाजन मरो कहो घर मेरा । अंतकी बार नही कछु तेरा ॥

राग भैरवी ।

माटी खुदी करेंदी यार ॥ माटी जोडा माटी घोडा माटी दा असवार ॥ माटी माटीनूं मारन लागी माठी दे हथियार ॥ जिस माटी पर बहुती माटी तिस हंकार ॥ माटी बाग बगीचा माटी माटी दी गुलजार ॥ माटी मांटी नूँ देखन आई माटी दी बाहर ॥ हंस खेल फिर माटी होई पौंदी पांव पसार ॥ बुल्लाशाह बुझारत बुज्झी लाह सिरो भा मार ॥ ५३८ ॥

गजल ।

जिन प्रेम रस चाख्या नही अमृत पिया तो क्या हुआ । जिन इश्कमे शिर ना दिया युग युग जिया तो क्या हुआ ॥ मशहूर हुआ पंथमें साबित न कीया आपको । आलिम ओर फाजिल बना दाना हुआ तो क्या हुआ ॥ देखी गुलिस्तां बोस्तां मतलब न पाया शेखका । सारी किताबां याद कर हाफिज हुआ तो क्या हुआ ॥ जबलग प्याला प्रेमका पीकरके मतवाला नही । राग तार मंडल बाजते जाहिर सुना तो क्या हुआ ॥ जोगी व जगम वेषकर कपडे रँगाकर पहिनते । वाकिफ नहीं उस हालके कपडे रँगे तो क्या हुआ ॥ दिलमे दरद नहिं दिया को बैठा मुशाइख होयके ॥ दिलका हरट फिरता नही तसवी फिरी तो क्या हुआ ॥ ओरां नसीहत तू करे आप अमल करता नही । दिलका कुफर टूटा नही हाजी हुआ तो क्या हुआ ॥ जब इश्कके दरियावमें गर्काब तू होता नहीं । गगा यमुन गोदावरी न्हाता फिरा तो क्या हुआ ॥ बलीराम पुकारत हैं यही पीपी जो करते जी दिया । मतलब हासिल ना हुआ रो रो मुआ तो क्या हुआ ॥ ५३९ ॥

राग जंगला ।

क्यो वे बीबा मान भरचा रमता योगी गुल चमन दुनियाके पर इक लहिजे का मुकाम है । करता है मेरी मेरी

रे यां तेरा कौन है ॥ टुक्ड दम का है बसेरा दुनिया आवागौन है ॥ भाई बधु बिरादरी फरजद यार मन । सब सुखके हैं समीपी रे तू समझ यार मन ॥ रावण सरीखे होगये जिनके गाढे निशान । इक पलमें मार डारे तेरा क्या चले अभिमान ॥ अब कहत है कबीर रे तूं समझ यार मन । इक राम नाम सांचा है और झूठा सब जतन ॥ ५४० ॥

राम रग लागा हरी रग लागा । मेरे मनका ससा भागा ॥ जब मैं होतीथी अहिल दिवानी तब पिया मुखो न बोले । जब वदी भई खाक बराबर साहब अतर खोले । साहब बोले तो अतर खोले सेजाडेयां सुख दीजे । रोम रोम प्यारे रग रत्तीयां प्रेम प्याला पीके । सॉचे मनते साहब नेडे झूँठे मन ते भागा । हरि जन हरिजीको ऐसे मिलत जैसे कचन सग सुहागा ॥ लोक लाज कुलकी मरयादा तोड दियो जैसे धागा । कहत कबीर सुनो भाइ साधो भाग हमारा जागा ॥ ५४१ ॥

राग काफी ।

ना जानू मेरा राम कैसा है । मुल्ला होके बाग जो देवेक्या तेरा साहिब बहरा है ॥ कीडीके पग नेवर बाजे सोभी सहिब सुनता है । माला पहरी तिलक लगाया लबियां जटा बढाता है ॥ अतर तेरे कुफर कटारी यू नहि साहिब मिलता है । कौडी कौड़ी माया जोड़ी जोड़ जमी पर धरता है ॥ चलनेकी जब त्यारी होई हाथ पसारे चलता है। हीरा होवे परख दिखायां कौडी परखन कैसा है । कहत कबीर सुनो भाइ साधो हरि जैसे का तैसा है ॥ ५४२ ॥

राग सोरठ ।

उपजे निपजे निपज समाई । नयनन देख चल्यो जग जाई ॥ लाजन मरो कहो घर मेरा । अतकी बार नही कछु तेरा ॥

अनेक जतन कर काया पाली। मरतीवेर अगिन संग जाली ॥ चोआ चंदन मरदन अंगा । सो तनु जलै काठके संगा ॥ कहत कबीर सुनो रे गुनिया। विनशगो रूप देखेगी दुनिया ॥ ५४३ ॥

राग होरी ।

तन मन रंग बनाय पिया सँग खेलिये होरी । तार बनाऊं जियाकी तनका करूंजी तंबूरा ॥ खेलूं अपने श्याम सो सब कारज पूरा । शीशी भरी गुलावकी हत्थ लेहों पिचकारी । छिरकूं अपने श्याम पे सब देखनहारी ॥ चोआ चंदन मेलके हत्थली-योजी अवीरा।सब संतन मिल खेल्यो संग दास कबीरा ॥ ५४४ ॥

राग धनाश्री ।

प्रीतम जान लेहु मन माही । अपने सुखसे सब जग बांध्यो कोउ काहूको नाही ॥ सुखमें आय सभी मिल बैठत रहत चहूं दिशि घेरे । विपति परे सबही संग छांडत कोउ न आवत नेरे ॥ घरकी नारि बहुत हित जासों सदा रहत सँग लागी । जबही हंस तजी यह काया प्रेत प्रेत कर भागी॥या विधिको व्योहार बन्योहे जासों नेह लगायो । अन्तकाल नानक बिन हरिजी कोऊ काम न आयो ॥ ५४५ ॥

राग सोरठ ।

मन रे प्रभुकी शरण विचारो। जिहि सुमिरत गणिका सी उधरी ताको यश उर धारो ॥ अटल भयो ध्रुव जाके सुमिरन अरु निर्भय पद पाया ॥ दुख हरता या विधि को स्वामी तैं काहे विसराया ॥ जबही शरण गही किरपानिधि गजह्रु ग्राह ते छूटा ॥ महिमा नाम कहां लग वरणो राम कहत बंधन तिहि टूटा ॥ अजामील पापी जग जाने निमिष माहि निस्तारा ॥ नानक कहत चेत चिंतमणि तैं भी उतर सपारा ॥ ५४६ ॥

या जग मीत न देख्यो कोई ॥ सकल जगत अपने सुख लाग्यो दुखमे संग न होई । दारा मीत पूत संबधी सगरे धन सो लागे॥जबही निरधन देख्यो नरको सङ्ग छांडि सब भागे ॥ कहा कहूँ या मन बौरेको इनसो नेह लगाया ॥ दीनानाथ सकल भय भञ्जन यश ताको विसराया ॥ श्वान पूँछ ज्यो भयो न सूधो बहुत जतन मैं कीनो॥नानक लाज विरदकी राखो नाम तिहारो लीनो॥५४७॥

राग बरवा।

हरि नाम लाहा लेत रे तेरो जन्म बीत्यो जात ॥ जैसे वृक्ष पक्षी आन बैठे उठ चले परभात ॥ गयो श्वॉस न बहुडियोतेरी पलक लखियो न जात ॥ जुऍ जुवॉरी धन हरयो मन खेलने दे चाउ॥खेलकर पछतायगा रे तू हार घर क्यो जात ॥ बनजारेने बैल जैसे टांडा लदियो जाय ॥ लाभ कारन आयो प्रानी चल्यो मूल गॅवाय ॥ आछे दिन पाछे गये तैं हरि सो कियो न हेत ॥ अब पछतावा क्या करे जब चिडियां चुग गईं खेत॥ काची काया कॉच की रे समझ देखो लोय ॥ सगुरे को समझ परत है निगुरा जावे खोय ॥ जबलग तेल दीवेमें बाती सूझत है सब कोय ॥ जल गया तेल निकस गई बाती लेचल लेचल होय ॥ रल मिल सखी सागर चली शिर फूट गागर परी॥पछतायगी पनिहार जिऊँ कर रीते घर क्यो जात॥फटी सुरनाही फूक निकसी जाय सुनी अब धेहि॥कहे नानक दास प्रभुका तेरी अन्त हो जाऊ खेदि ॥५४८॥

राग परज।

मन पछितैहै औसर बीते ॥ दुर्लभ देह पाय हरि पद भज कर्म वचन मन हीते ॥ सहसबाहु दशवदन आदि नृप बचे न काल बलीते ॥हम हम कर धन धाम सॅवारे अंत चले उठिरीते ॥ सुत बनितादि जान स्वारथरत ना कर नेह इन्ही ते॥अन्तों तोहिं तजैंगे पामर तू न तजे अबही ते ॥ अब नाथहि अनुराग जाग

जड त्याग दुराशा जीते । बुझै न काम अगिनि तुलसी जिमि विषय भोग बहु घीते ॥ ५४९ ॥

राग भैरवी ।

वार वार समझाय रहो मैं मानले रे मन मेरी कहीको॥दुख सुख सो बीती सो बीती याद न कर बरबाद वही को ॥ एक ब्रह्म पूरण सब जगमें छोड कपटकी गांठ गही को ॥ जानकी दास सुमिरु श्रीरघुवर गई सो गई अब राख रहीको ॥ ५५० ॥

राग कालिंगडा ।

क्या देख दिवाना हुआ रे॥माया बनी सारकी सूली नारि नरक्का कूँआरे ॥ हाड़ चाम नाडी को पिंजर तामे मनुआं सूआरे । भाई बन्धु कुटुम्ब घनेरा तिनमें पच पच मूआ रे ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो हार चल्यो जग जूआँ रे ॥ ५५१ ॥

राग जंगला ।

पीले रे अवधू हो मतवारा प्याला प्रेम हरी रसका रे ॥ पाप पुण्य दोउ भुगतन आये कौन तेरा है तू किसका रे ॥ जो दम जीवे हरि के गुण गाले धन यौवन स्वपना निशिका रे ॥ वाल अवस्था खेल गँवाई तरुण भयो नारी वशका रे ॥वृद्ध भयो कफ वाईने घेर्यो खाट पड़ा नहि जाय मसका रे ॥ नाभिकमलमें है कस्तूरी कैसे भरम मिटे पशुका रे ॥ विन सतगुरु ऐसे दुख पावे जैसे मृगा फिरे बनका रे॥लाख चुरासी उबर्यो चाहे छोड कामिनीका चसका रे ॥प्रेम मगन चरणदास कहत है नखशिख रूप भर्यो विसका रे ॥ ५५२ ॥

राग कान्हरा ।

सुमिरन कर श्रीरामनाम दिन नीके बीते जातेहै ॥ तज विषय-भोग सब और काम तेरे संग न चलसी एक दाम जो देते है सो

पातेहैं ॥ कौन तुम्हारा कुटुंब परिवारा किसके हो यां कौन तुम्हारा किसके बल हरिनाम बिसारा सब जीते जीके नातेहैं॥लाख चुरासी भ्रमके आया बडे भाग्य मानुष तनु पाया तापर भी नहि करी कमाई फिर पीछे पछतातेहैं॥जो तू लागे विषय विलासा मूरख फँसे मौतकी फाँसा क्या देखे श्वाँसनको आसा गये फेर नहि आतेहैं ॥५५३॥

राग तिलंग।

यह जग दर्शन मेला है॥ जे तूँ आया है ईहा पै कछु देख भाल मिल जुल चल फिर हस बोल बतादे लेखा भी किस कारन ते सबको इक ठौर इकेला है ॥ दिल भरके देख सकुच मत रे जिस जागे जो जो माया है ईहां तेरी जिनस जमा है और कोई नही पराया है ॥ पर इतना कहना मान मेरा जो करना हे सो जलदी कर ॥ टुक देर तोहिं कोइ दम की है और ज्यादा नहीं झमेलाहे ॥ इस मंदर बीच निरख तूं क्या रंग बरंगी मूरतहै ॥ हिरदेसे तनक परख तू इस मूरतमे क्या सूरत हैं ॥ धनि उस कारीगरको कहिये जिन अपने हाथ बनाई है ॥ गुन ज्ञान जोबन छबिरूप रंगमें एकहि एक नवेलाहै ॥ यह जो तू देखे आपसमे इहा एकसे एकका हे नाता ॥ कोई बाप बना कोई बेटा कोई चाचा भतीजा कहलाता ॥ कोई मीयां आपको जाने हे कोई दास आपको मानेहै॥ कोई पीर मुरीद कहाता है कोई गुरू कोई चेला है ॥ अबलो तब ईहां है सबको सैरे हे बाग बहारेंहे ॥ मन आनद और चैनें हे करते हे लहरे मारे हें ॥ पर सुखके समे यह है सगरे यह देखन हारेहै ॥ आजही के कल आप आप को चल जायेगा एक इकेला है ॥ जिस दम यह अपना अपना है इहां से रस्ता गह जावेंगे ॥ यह दोस्ती निस्बत नाते सब इहाके इहां रह जावेगे ॥ यह बूंदें जिस दरिया की हें सब मौजहीसे मिल जावेंगी ॥ फिर कछु टंटा है न बखेडा है झगडा है ना झमेला है ॥ ५५४ ॥

राग झिंझोटी ।

आरती सदाही होत संतन घट माही ॥ ब्रह्म जोत प्रगट भई विकसत दर्शाई ॥ वेदके बजत्र बाजें ज्ञान धूप धुपन लागे समता चित छाय रही जिह्वा गुण गाई ॥ प्रेमकी जो बाती लागी सकल ब्रह्म जोत जागी अनुभवसो द्रुमत भाग इक संग मिल जाई ॥ सोहं धुन शंख पूर भेद भर्म किये चूर इत उत सब चिद स्वरूप आत्म दर्शाई ॥ कहिहै कवि लोक दास आश्चर्य गुरु कियोप्रकाश अतिहुलास होत जहाँ जन्ममर्ण नाही ॥ ८८५ ॥

राग सोरठ ।

रेमनी समझ ऐसी बात ॥ नदीके परवाह ज्योसब जगतचल्यो जात ॥ सुत मात भ्रात अरु पिता वनिता बन्यो आय संघात ॥ वसे संग सरायके परभात को उठ जात ॥ आकाश धरती पौन पानी चंद सूरज रात ॥ काल सबको खायगा मन लाय बैठो घात ॥ भजन कर गोविंदका सद्गुरु बताई बात ॥ नँदलाल प्रभुजी सुमिर रे मन उतर भौ जलजात ॥ ८८६ ॥

राग विहाग ।

काहेको बिसारी रे जपाकर माला ॥ रामभजनको तुलसीकी माला ओढनको मृगछाला ॥ खानपानको बासी जो टुकरा रहनेको कुञ्ज तमाला ॥ धन जोवन मदमें मत भूले जम करि है बेहाला ॥ निशिदिन रट हरि नाम छिनहि छिन रहो प्रेम मतवाला ॥ कृष्णप्रिया विन हितू न जगमें सब झूंठा जजाला ॥ ८८७ ॥

राग धनाश्री ।

केते दिन हरि सुमिरन विन खोये ॥ परनिंदा रसनाके रससे अपने करम विगोये ॥ तेल लगाय कियो तनु मर्दन वस्तर मल मल धोये ॥ तिलक लगाय चलेवन स्वामी विषयनके संग जोये ॥

काल बली तें सब जग कांप्यो ब्रह्मादिक मुनि रोये ॥ सूर अधमकी कौन गती हे उदर भरे भर सोये ॥५५८॥

सब दिन गये विषयके हेत ॥ तीनो पन ऐसेही बीते केश भये शिर श्वेत ॥ रूधी श्वांस मुख बैन न आवत चन्द्र ग्रस्यो जिमि केत ॥ तजि गंगोदक पियत कूप जल हरि तजि पूजत प्रेत ॥ कर प्रमाद गोविंद बिसारचो बूड्यो कुटुंब समेत ॥ सूरदास कछु खरच न लागत राम नाम मुख लेत ॥५५९॥

राग सारंग ।

तजो मन हरि विमुखन को सङ्ग ॥ जिनके सग कुबुद्धि उपजे परत भजन मे भङ्ग ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह मे निशि-दिन रहत उमंग ॥ कहा भयो पय पान कराये विष नहि तजत भुवंग ॥ कागहि कहा कपूर खवाये श्वान न्हवाये गंग ॥ खरको कहा अरगजा लेपन मर्कट भूषण अग ॥ पाहन पतित बान नहिं भेदत रीतो करत निषग ॥ सूरदास खल कारी कामर चढ़त न दूजो रंग ॥५६०॥

राग देश ।

-राधे कृष्णा क्यो नाहि बोलो पीछे पछताओगे ॥ जाने तोको जन्म दियो ताको नाम क्यो ना लियो यह तो मानुष देही बदे फेर नहीं पाओगे ॥ त्रिया और कुटुम्बकी खातर पच पचके कमा-ओगे ॥ माया तेरे संग नचाले जगमे भरम गमाओगे ॥ आवंगे वे जमके दूत पकर पकर लेजावेंगे॥मजबूत तुमसे मागेंगे हिसाब प्यारे क्या बतलाओगे । सूर प्रभुकी शरण आओ आवागमन मिटा-ओगे ॥ श्रीठाकुरजीको ध्यान धरले पार लगजाओगे ॥५६१॥

राग विभास ।

गायो न गोपाल मन लायके निवारि लाज पायो न प्रसाद साधु मण्डलीमे जायके ॥ धायो न धमक वृन्दाविपिनकी कुञ्जन-

वसत अमोलक कर मेहँदी सों लाल ॥ मृदु मुसक्यान मनोहर चितवन बोलन अधिक रसाल ॥ कुंजभवनमें बैठ दोउ जन गावत अद्भुत ख्याल ॥ नागायण या छबिको निरखत पुनि पुनि होत निहाल ॥ ९६८ ॥

जै जै युगल किशोर विहारी ॥ जै निकुंजमें अविचल जोरी जै मनमोहन प्रीतम प्यारी ॥ जै मुखचंद्र चकोर परस्पर जै छवि सिन्धुरूप मनुहारी ॥ जै ब्रज जीवन रसित शिरोमणि महिमा अमित अपार तिहारी ॥ जै भक्तनवश रहत निरंतर नाना चरित करत सुखकारी ॥ भक्तराम निशिदिन यह याचत चरन कमल राखो उरधारी ॥९६९ ॥

यह रस रीत प्रिया प्रीतमकी दिव्यदृष्टिजल जैसे री ॥ विषयी ज्ञानी भक्त उपासक प्राप्त सबनको तैसे री ॥ कदली खंभ पपीहा सीपी स्वाति बूंद जल जैसे री ॥ भगवन् कछू विषमता नाही भूमि भाग फल तेरो री ॥ ९७० ॥

सतनको यह परम धन सब ग्रथन को सार ॥ भक्तन को सर्वस्व यह, रसिकन प्राण अधार ॥ सादर जो जन याहिको,पढ़ै नित्त कर नेम ॥ निश्चयते जन पावही, हरि चरणन दृढ प्रेम ॥ हरि चरणन दृढ प्रेम जिहि, धन्य धन्य ते धन्य ॥ भक्तराम को देहि वर, सकल होय परसन्य ॥ पढत सुनत आके भयो, जो मन अधिक हुलास ॥ मेरीहू सुध लीजियो, जान आपनो दास ॥ जै वृन्दावनचंद्रकी, जैजैजै सुखरास ॥ निज चरणनमें राखिये एक तुम्हारी आस ॥ ९७१ ॥

इति रागरत्नाकर दूसरा ॥

॥ श्री० ॥

अथ हियहुलासप्रारम्भः ।



दोहा ।

प्रथमहिं ताको सुमरिये, जिन दीन्हो गुण ज्ञान ॥
ज्ञानी गुण गावें सदा, ध्यानी धरें जु ध्यान ॥ १ ॥
अवर थाप्यो थभ विन, धरणी अधर धराय ॥
मनुपरूप ह्वै अवतरयो, देखत कलिको भाय ॥ २ ॥
वा विन तीनों लोकमें, दूजा नाही कोय ॥
मनमें निज करि देखिये, होनी होय सु होय ॥ ३ ॥
पुनि कछु वरणों रीतिरस, रमहे जनको जीव ॥
रसना रसको यस कहै, सुनि सुख उपजे हीव ॥ ४ ॥
हिय हुलास या ग्रथको, राख्यो वाम विचार ॥
यामे सगरे रागके, सबे रूप शृंगार ॥ ५ ॥
आदि नाद अनहद भयो, ताते उपज्यो वेद ॥
पुनि पायो वा वेदते सकल सृष्टिको भेद ॥ ६ ॥
प्राण स्वरे षड्राग सुनि, तब उपज्यो वैराग ॥
बारे तरुनै वृद्धको, ताते भावत राग ॥ ७ ॥
जगको धीरज राग है, राग सगकी खान ॥
मनमंजन इह राग है, राग प्रेमके प्रान ॥ ८ ॥
राग अभूषण रूपको, रूप रागको भोग ॥
याहीते सब कहत है, रागरग सयोग ॥ ९ ॥
राग हरे सब रोगको, राग चहे रसभोग ॥
विरह बूझे रागको, उपजे विरह वियोग ॥ १० ॥

अथ षट्राग वर्णनम् ।

दोहा--राग प्रथम भैरो कह्यो, मालकोस पुनि जानि ॥
हिंडोलराग तीजो कहत, दीपकराग बखानि ॥ ११ ॥
श्रीराग कवि कहतहैं, मेघराग पुनि सार ॥
षटरागनके नाम ये, कहें भेद विस्तार ॥ १२ ॥

अथ रागनकी रागिनी वर्णन ।

दोहा--भैरौकी धुनि भैरवी, बगाली वैरारि ॥
मधु माधव अरु सिंधवी, पांचौ विरहिनि नारि ॥ १३ ॥
टोडी गौरी गुनकली, खंमायत पहँचानि ॥
और कुँकविको कहत हैं, मालकोसकी जानि ॥ १४ ॥
रामकली पटमंजरी, और कहें देवसाखि ॥
ए नारी हिंडोलकी, ललित विलावल राखि ॥ १५ ॥
देशी नट अरु कान्हरो, केदारो कामोद ॥
दीपककी प्यारी सबै, महाप्रेम परमोद ॥ १६ ॥
धनाशरी आसावरी, मारू बहुरि बसंत ॥
श्रीरागकी रागिनी, मालसिरी है अन्त ॥ १७ ॥
भोपाली अरु गूजरी, देशकार मल्लार ॥
वंकवियोगनिकामिनी, मेघरागकी नार ॥ १८ ॥

अथ षट्रागनके गुण वर्णन ।

भैरोसुर सुरतां गहे, कोल्हू चले जु धाय ॥
मालकोस जब जानिये, पाहन पिघलि बहाय ॥ १९ ॥
चलै हिंडोलो आपतें, सुनत राग हिंडोल ॥
वरसे जलघन धार अति, मेघरागके बोल ॥ २० ॥

श्रीरागके सुर सुने, सूखो वृक्ष हराय ॥
दीपक दीयो बरि उठै, जो कोउ जानै गाय ॥ २१ ॥

अथ रागका समय वर्णन।

दोहा--पिछले पहरे निशि समै, भैरो राग बखान ॥
मालकोस तब गाइय, जब सब निकसे भान ॥ २२ ॥
एक पहर जब दिन चढै, करै राग हिंडोल ॥
ठीक दुपहरीके समय, दीपकके सुरबोल ॥ २३ ॥
श्रीराग चौथे पहर, जौलौं दिन अथवाय ॥
मेघराग जबही भलो, तबै मेह बरसाय ॥ २४ ॥
फागुनमे ए राग सब, जागत आठौ याम ॥
बसत ऋतुमे निशिसमै, एक याम विश्राम ॥ २५ ॥
भैरोशरद् कुशकशिशिर, अरुहिंडोल वसन्त ॥
दीपक ग्रीषम हेम, श्री, मेघ सुपावस अंत ॥ २६ ॥

अथ बाजनके भेद वर्णन।

दोहा--जगमे सब सुरता कहैं, बाजे साढे तीन ॥
खालतार अरु फूंक पुनि, अरधताल सुरहीन ॥ २७ ॥
खाल नगारे ढोल डफ, और पखावज जानि ॥
तार तंबूरा बीनहे, बहुरि रबाब बखानि ॥ २८ ॥
फूंक नफीरी बाँसुरी, सुरनाई करनाय ॥
ताल मंजीरा झाँझ सब, बाजे दिये बताय॥ २९ ॥
आधो बाजो कहत है, कठतारी सुरहीन ॥
भेद कहे बाजेनके, गुणिजन जे परवीन ॥ ३० ॥

अथ आलाप करनेकी युक्ति।

दोहा--बैठे आसन ऊटके, तो शुध होय अलाप ॥
चलते टेढे मुर भरे, जानो महाकलाप ॥ ३१ ॥

अथ स्वरनिमित्त सरस्वती चूर्ण ।

दोहा--शाखाहूली मुलहटी, ब्राह्मी वासा आनि ॥
हरड कूच बच बावची, सेंधो जीरा जानि ॥ ३२ ॥
भगरेह अजमोद पुनि, बहुरि शतावरि लेहु ॥
समकरि पीसे छानि करि, प्रात सु मुखमें देहु ॥ ३३ ॥
एक हथेलीभरि सदा, साधै दिन चालीस ॥
सुर सुन्दर हो बुद्धि बहु, विधिविद्या जगदीश ॥ ३४ ॥

इति हियहुलास सम्पूर्ण ।

अथ रागमाला प्रारम्भः।

भैरों रागको स्वरूप वर्णन ।

दोहा--भैरो शिव छवि शिर जटा, श्वेत वसन त्रय नैन ॥
मुण्डनकी माला गरे, सिहरूप सुखदेन ॥ ३५ ॥

सवैया ।

शिवमूरति भैरो को भावबन्यो त्रयनैन समुण्ड कि माल गरे ॥
पट श्वेत सवै तनुमे पहिरे हिग्दे भगवानको ध्यान धरे ॥
तिरसूल बिराजत है करमें सब भामिनिकी मति लेत हरे ॥
मुख छारलगी द्युति दूनी भई चित चाहनमे छबि जात छरे॥३६॥

अथ भैरोंकी रागिनी भैरवीको स्वरूप ।

दोहा--शिव पूजत कैलासपर, दोउ करनमें ताल ॥
श्वेत चीर अँगिया अरुण, रूप भैरवी बाल ॥ ३७ ॥

अथ बंगाली रागिनीको स्वरूप ।

दोहा--भस्मपिटारी कर गहे, हाथ लिये तिरसूल ॥
बंगाली व्याकुल भई, गई सबै सुधिभूल ॥ ३८ ॥

सुर ॥७॥ १ सुर ॥७॥

अथ वेरारी रागिनी स्वरूप।

दोहा--कदम पुष्प कानन धरे, करकचन शृङ्गार ॥
शीशकेश सोहत छुटे, श्वेतवसन वैरार ॥ ३९ ॥

अथ मधुमाधवी स्वरूप।

दोहा--कंचन तनु लोचन कमल, नागरि महा अनूप ॥
प्रिय पैठहि हँसत है, मधुमाधवी स्वरूप ॥ ४० ॥

अथ सिंधवी रागिनी स्वरूप।

दोहा--कानफूलदुपहरिया, पहरे वस्तरलाल ॥
क्रोधवन्त तिरशूलकर, रूपसिंधवी बाल ॥ ४१ ॥

अथ मालकोस रागको स्वरूप।

दोहा-मालकोस नीले वसन, श्वेत छरी लिये हाथ ॥
मुतियनकी माला गरे, सकल सखी हैसाथ ॥ ४२ ॥

सवैया।

कौसकको उनमान भलो तनु गौर विराजत है पट नीले ॥
माल गरे कर श्वेत छरी रस प्रेम छक्यो छवि छेल छबीले ॥
कामिनि के मनमोहत है सबके मन भावत रूप रसीले ॥
भोर भये उठि बैठ्यो ही भावत नागरनायक रंग रँगीले ॥४३॥

अथ मालकोसकी रागिनी टोडीको स्वरूप।

दोहा--टोडी करवेणी गहे, गावत पियके हेत ॥
चंचल छवि मृग मोहनी, पहरे वस्तर श्वेत ॥ ४४ ॥

गौरी रागिनीको स्वरूप।

दोहा--गोरी छवि अति साँवरी, अध कुप धरि कान ॥
तृपावन नित कामकी, गावत ऐंठी तान ॥ ४५ ॥

---

३ सुर ॥ ७ ॥ ४ सुर ॥ ७ ॥ ५ ॥ सुर ॥ ७ ॥ ६ सुर ७ ॥ ७ सुर ॥ ७ ॥

अथ गुनकली रागिनीको स्वरूप ।

दोहा--छुटे केश शिर गुनकली, बैठी पियके पास ॥
नीची ग्रीवा करि रही, अतिही चित्त उदास ॥ ४६ ॥

खंभायत रागिनीको स्वरूप ।

दोहा--खंभायत गोरे वदन, गावत कोकिल बैन ॥
अति आतुर चातुर खरी, कामवती दिनरैन ॥ ४७ ॥

अथ कँकुवि रागिनी।

दोहा--कॅकुवि नायिका निशिसमै, जागी पियके संग ॥
रति माने के चहन अति, अंगअंग भे रंग ॥ ४८ ॥

अथहिंडोल राग स्वरूप ।

दोहा--पीत वसन हिंडोलके, है जु हिडोले माहिं ।
सखी झुलावै चावसों, गाय गाय मुसकाहिं ॥ ४९ ॥

सवैया।

कीन्हे बनाव महाछबि सुदर भावते बैठ्यो हिडोलहि डोलै ॥
झोल झुलावत औरीनहूं सब गावत हैं सखियां मुख खोलै ॥
गोरे जो गात दिपात भरी द्युति दामिनिसी मानों पीत पटोलै ॥
केलि करै अबला अलबेली अलोल सबै रस काम किलोलै॥ ५० ॥

अथ हिंडोल रागकी रागिनी रामकलीको स्वरूप ।

दोहा--रामकली नीले वसन, कंचनसी सब देह ॥
प्रिय वाणी गावत उठी, पियके परम सनेह ॥ ५१ ॥

अथ पटमंजरी रागिनी स्वरूप ।

दोहा--विरहभरी पटमंजरी, मनमैली तनुछीन ॥
सखी सीख अति देतहै, भई प्रेम आधीन ॥ ५२ ॥

देवसाखि रागिनी स्वरूप।

दोहा--पियके करपर कर धरे, अति व्याकुल मन काम ॥
तनु दुर्बल देवसाखि है, महाविरहनी नाम ॥ ५३ ॥

ललित रागिनीस्वरूप।

दोहा--ललित गरे माला पुहुप, सुन्दर तरुणी जानि ॥
गोरी छवि वस्तर अरुण, वदन मदनकी खानि ॥ ५४ ॥

बिलावल रागिनीको स्वरूप ।

दोहा--कामदेवको ध्यान धरि, पटते पटसगीत ॥
करत शृंगार विलावली, नीले वस्तर प्रीत ॥ ५५ ॥

अथ दीपक रागका स्वरूप ।

दोहा--दीपक गजकी पीठपर, बैठ्यो बागेलाल ॥
मुक्तमाल पहरे गरे, चहूँओर रसवाल ॥ ५६ ॥

सवैया ।

दीपकको परताप बडो चढो बैठ्यो गयदकी पीठि विराज ॥
अंवर रातो शरीर सबै मुकतानकी माल गरे छविछाजे ॥
संग सखी सब सोहत हैं तिनमाहि जो आय गयंदसो गाजे ॥
साँवरो रूप अनूप महाद्युति देखत दुःख दिगंतर भाजे ॥ ५७ ॥

अथ दीपक रागकी रागिनी देशीको स्वरूप।

दोहा--देशीके बस्तर हरे, काम सताई नार ॥
पतिको टेर जगावती, मिस करि वारंवार ॥ ५८ ॥

नटरागिनीको स्वरूप।

दोहा--अरुन वरन सगरे वसन, नटवामी नरनारि ॥
ग्रीवा पकरे करनसो, पिय तनु रही निहारि ॥ ५९ ॥

अथ रागिनी कान्हरो स्वरूप ।

दोहा–शीशपत्र गजदंतको, कर नॅगी तरवारि ॥
मोर कंठके वरन है, रूप कान्हरो नारि ॥ ६० ॥

अथ रागिनी केदारो स्वरूप ।

दोहा–शीश जटा सब तनु लटा, गरे जनेऊ नाग ॥
केदारो इह रूप है, धरे ध्यान वैराग ॥ ६१ ॥

अथ कासोद रागिनीको स्वरूप ।

दोहा–कामवंत कासोदनी, पीत वसन वनदास ॥
चहूँओर पियको तकत, अतिहीं चित्त उदास ॥ ६२ ॥

अथ श्रीरागको स्वरूप ।

दोहा–श्रीय रागके कर कमल, पुहुप रूप पट लाल ॥
बरस अठारहुको तरुण, गावत कठरसाल ॥ ६३ ॥

श्रीरागकी–सवैया ।

वर्ष अठारहको तरुनो मुख देखतही रोवक मन भावे ॥
वाम सबै वशकी अपने गुण गायकै भावते भेद बतावै ॥
रातो जो वागो विराजत है कर वारिज फूल लिये मुसकावे ॥
पुष्पके रूप स्वरूप बन्यो सबहीमें भलो श्रीराग कहावै ॥ ६४ ॥

अथ श्रीरागकी रागिनी धनाश्रीको स्वरूप ।

दोहा–धनासरी रोवत खरी, हिरदे विरह अपार ॥
सब तनु पीरो ह्वै रह्यो, निपट विरहनी नार ॥ ६५ ॥

आसावरी रागिनी स्वरूप ।

दोहा–चन्दन टीको भाल पर, गरे नागको हार ॥
छबि अति सुन्दर साँवरी, आसावरी कुँवारि ॥ ६६ ॥

अथ मारू रागिनीको स्वरूप ।

दोहा--मारूके माला गरे, पिये प्रेम मधुमात ॥
तरुणी सुंदर सांवरी, बैठी अति अरसात ॥ ६७ ॥

वसन्त रागिनीको स्वरूप ।

दोहा—मोरपंख शिर पर धरे, वसन जु पीत वसत ॥
कानन मौर जु अंबके, चहुँदिशि भौर भ्रमत॥ ६८ ॥

मालसरी रागिनीको स्वरूप ।

दोहा:-मालसरी दुर्बल वदन, सखी हाथ पर हाथ ॥
अवतरे बैठी रहत, विछुरे पियको साथ ॥ ६९ ॥

अथ मेघरागको स्वरूप ।

दोहा--श्याम वसन है मेघको, गहे हाथ करवारि ॥
अति आतुर चातुर खरो, गावत सुरति विचारि॥७०॥

मेघरागस्वरूप सवैया ।

मेघ मलार महाद्युति सुन्दर इन्द्रहिकी छवि आप बनो ॥
पहरे पट श्याम गहे तरवारि जु ग्रथनमें इह भानि भनो ॥
जैयो जहां चहिये सोइ अग सु तैसिय भातिते ठीक ठनो ॥
कामको आतुर है अतिही तियके रतिको चित चाव घनो ॥

अथ मेघरागकी रागिनी भोपालीको स्वरूप ।

दोहा--भोपाली विरहनि बडी , केशरि गेरे चीर ॥
भयो विरहकी ज्वालते, पियरो सबे शरीर ॥ ७२ ॥

अथ गूजरी रागिनीको स्वरूप ।

दोहा--विरह सताई गूजरी, रोवत छूटे केश ॥
कामदेव कानन लग्यो, इहै दियो उपदेश ॥ [illegible] ॥

देशकार रागिनीको स्वरूप ।

दोहा--देशकार कञ्चनवरण, खेलत पियके सङ्ग ॥
हिय हुलाश जो कामकी, चढ्यो चौगुनो रंग ॥७४॥

अथ मलार रागिनीको स्वरूप ।

दोहा--वीन गहे गावत वहुत, रोवत है जलवार ॥
तनु दुर्बल विरहा दही, विरहिनि नारि मलार ॥ ७५ ॥

टंक रागिनीको स्वरूप ।

दोहा--सेज विछाई कमल दल, लेटि रही मनमारि ॥
ले उसास शु सीयसे टक वियोगिनि नारि ॥ ७६ ॥

इति षट्राग तीस रागिनीनके स्वरूपवर्णनम् ।

अथ आमेजीराग वर्णन ।

दोहा--राग रागिनी सव कहै, जैसी जाकी रीति ॥
अव आमेजी रागको, सुनो सकल करि प्रीति ॥ ७७ ॥

छप्पय ।

देशकारको पुत्र पास दरशात राजधन ॥ मडित मुख तंवोर तेज वल गहर गोर तन ॥ श्वेत सरस मिलि वसन कठ मणिमाल मनोहर ॥ कजअक्ष शिरछत्र विजन दहुँ विदित विजै वर॥वेठ्यो कल्याण सिहासनहिं, रतनराग सचारियो ॥पंडित प्रवीन परिजनसहित, दिवस अन्त उचारियो ॥ ७८ ॥

दोहा ।

तिलक गौड़ कामोद ये, मिले मिश्रता मान ॥
इनके किय अलापको, जानो सुध कल्याण ॥ ७९ ॥
तिलक पर्जन्यामोदयुत, आलापिनमें होत ॥
कामोदक पहले कह्यो, वहुरि गौड़को सेत ॥ ८० ॥

इतने मिलि आलापसो, श्लेप सकल सरसाय ॥
सुर उचार यो समुझियो, प्रगट रूप दरशाय ॥ ८१ ॥
शकरभरन स्वरूपहै, गौर रक्त तनुवास ॥
कमलमाल शृंगार है, सखीरूप है तास ॥ ८२ ॥
प्रथम राग केदारमे, मिले बिलावल आनि ॥
इनको मिले अलापसो, शकरभरनि सुजानि ॥ ८३ ॥
केदारोई मन मिले, मिले शुद्ध कल्यान ॥
इनके मिले अलापसो, राग हमीरह जान ॥ ८४ ॥
केदारो कल्याण सम, तनक बिलावल भास ॥
इनके किये अलापसो, ईमन होत उजास ॥ ८५ ॥
सारग मारूके मिले, केदारो सम आनि ॥
मिश्रित करि आलापिये, इहै विहगम जानि ॥ ८६ ॥
तीनि राग तो ये मिले, फेरि मलार मिलाय ॥
इनकी समतासो नही, सो सॉवत कहाय ॥ ८७ ॥
जैतसिरी शकरभरन, नटनारायणतुल्य ॥
इनके मिले विभागसो, राग सरस्वतीतुल्य ॥ ८८ ॥
वहुला आसावरि मिले, अरु मलारसम भाग ॥
कछुक मेलि गंधारको, षडज जानियो राग ॥ ८९ ॥
प्रथम पूरवी नाटसुध, धनाशरी समभाय ॥
समले भाग अलापिये, भीवपलासी आय ॥ ९० ॥
रामकली पुनि गूजरी, गुनकली जु गधार ॥
पूरविरागनिमिश्रिता, शक्तिवल्लभासार ॥ ९१ ॥
भैरवसुधि आसावरी, अरु गौरीको मानि ॥
देवगिरी सभावले, यो गधारहि जानि ॥ ९२ ॥
विलावली वागेश्वरी, नूत विलावल शुद्ध ॥

वागेश्वर सुरपूर है, रागसुहा सुदबुद्ध ॥ ९३ ॥
मिलि धनासिरी कान्हरो, सभागिनि आलाप ॥
सुर उचारसो जानियो, वागेसुरी जु छाप ॥ ९४ ॥
मूल सदेवगिरी गिनो, नटमलार है नून ॥
करि समान आलापिये, सारँगराग सितून ॥ ९५ ॥
समै जु सारंगकी सुनौ, दिन ग्रीषमऋतु पाय ॥
द्रितिय यामते पहर लग, गुनीरूप दरशाय ॥ ९६ ॥
आसावरी अहीरिमिलि, समभागिनि उचार ॥
तौलकरो आलापको, सिंधुराग गुनकार ॥ ९७ ॥
भैरव पचम गूजरी, बंगाली गंधार ॥
संभागिनि उच्चारसो, सोरठ सबसो सार ॥ ९८ ॥
एक अहीरी रागिनी, करनाटी समजोर ॥
राग अडानो जानिये, तान सुमिलिता घोर ॥ ९९ ॥
श्रीतिनिकर नाटकी, मगल अष्ट प्रधान ॥
करिसमान आलापिये, जानि पूरिया तान ॥ १०० ॥
देशकारि अरु गूजरी, स्वल्प रूप आरभ ॥
तान मिलावै युक्तिसो राग अहीरीयभ ॥ १ ॥
फिरैदसूकर नाटयो, समता करै समस्त ॥
छायासावनअडहै, भूपालीपरसस्त ॥ २ ॥
जेतशिरी अरु द्रावडी, समले करो उचार ॥
श्रुतिभंगन नहि सोभिये, धौलसिरी विस्तार ॥ ३ ॥
जेतश्री करनाटकी, केदारो कल्यान ॥
समकारि तान मिलाइये, मंगल अष्ट प्रमान ॥ ४ ॥
प्रथम शुद्ध कल्यानमें, मिले जेतश्री आनि ॥
उभयरूप गाया लखे, जैतकल्यानहि जानि ॥ ५ ॥

माहूटोडी रागिनी, आसा मिले समान ॥
इनहीकी सभवना, पेमपरज पहिचान ॥ ६ ॥
प्रथमपूरबी सारँगहि, जैतोशिरीको जानि ॥
ए समभाग अलापिये, देवगिरी पहिचानि ॥ ७ ॥
कामोदकपङ्जागयो, समकारि करै अलाप ॥
तिलक रागकोजानिये, मिटत सकल संताप ॥ ८ ॥
सिधू अरु बडहसको, नून अधिक सभाव ॥
इनके दुहू प्रतापतें, शिवरी रागहि गाव ॥ ९ ॥
धनाशिरी शिवरी निरा, सस अलापको कीन ॥
कहत कुमारी रागिनी, तानतरल परवीन ॥ १० ॥
चतुर विहारीसम मिले, धनाशरी समजानि ॥
चेतीमारूचारिये, वडहसहि पहिचानि ॥ ११ ॥
चतुर विहारी रागिनी, केदारहि समभाग ॥
इनके होत मिलापसो, लकधैन इह राग ॥ १२ ॥
नटनारायण शुद्धनट, और मलार मिलाय ॥
इनके मिले अलापसो, राग माधवी गाय ॥ १३ ॥
मधुमाधवलकधैनलै, शुद्धविलावल आनि ॥
चौथे शंकर भरनसों, नटनारायण जानि ॥ १४ ॥
ककुभविलावलपूरबी, केदारो समभाग ॥
इनके जुरे मिलापसो, इहंदक्तनटराग ॥ १५ ॥
धौलसिरीदेखास मिलि, फेरि बिलावलि मेलि ॥
करि उचार समभागसो, जैतशरीकी केलि ॥ १६ ॥
केदारो कल्यान है, और बिलावल वाम ॥
इनके समआलापते, तीछन रागसुनाम ॥ १७ ॥

रामकली अरु गूजरी, देशकरी वगाल ॥
पंचमसमभागनिमिलै, बहुलीराग विशाल ॥ १८ ॥
सोरठ और धनासिरी, विलावली समकीन ॥
इनके मिश्रित गानते जैजैवंति प्रवीन ॥ १९ ॥
धनाशरीटोडीमिलै, समकरि तान विलाव ॥
रागअनूपम नामहै, तानसुरनते गाव ॥ २० ॥
नटसंभागकल्यानकरि, मिश्रितउभैवताय ॥
न्यूनअधिकसमजानिकै, इहै शुद्धनटगाय ॥ २१ ॥
नटजोमिलहमीरसो, उहहैनाटहमीर ॥
नटकेदारोसमकर, नटकेदारहमीर ॥ २२ ॥
सारँगमेटोडीमिलै, मिश्रितउभैप्रमान ॥
सम अलापसो गाइये, सारगगौड़निधान ॥ २३ ॥
प्रथमधनाश्रीपूरवी, दोऊसुरसंयोग ॥
इहधनाशरी पूरवी, गुणिजनगावोलोग ॥ २४ ॥
गौरीसारँगसमकरो, स्वरूपललितकोभास ॥
सोचेती गौरीकही, समझो बुद्धिप्रकाश ॥ २५ ॥
सारँगके सुरसो मिलै, करो गौडको ज्ञान ॥
तामे पूरो पूरबी, रागवूरिया जान ॥ २६ ॥
आमेजी ये रागहै, कहैं गरतिजन गाय ॥
भेदराग अरु रागिनी, एसव दिये वताय ॥ २७ ॥

राग ६ रागिनी ३० रागरागिनी ३६ ये मिलिकै आमेजी रागरागिनी ०९९ मियां तानसेन गाई संवत १८५५ चैत्रवदि २ शुक्रवार ॥

इति श्रीरागरत्नाकर द्वितीयभागाङ्ग हियहुलासादि समाप्त ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ रागरत्नाकर ।

तृतीय भाग ३.

श्लोक--नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायंति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

सोरठा--हरिपद प्रीति न होय, विन हरिगुण गाये सुने ।
भव ते छुटत न कोय, बिना प्रीति हरिपद भये ॥

दोहा--अपनी ओर निहारि के, क्षमा करो अपराध ।
जिहितिहिविधिहरिगाइये, कहतसकलश्रुतिसाध ॥
संतनको यह परम धन, सब ग्रन्थनको सार ॥
भक्तनको सर्वस्व यह, रसिकन प्रान अधार ॥
सादर जो जन याहिको, पढें नित्त कर नेम ।
निश्चय ते जन पावहीं, हरि चरणन दृढ प्रेम ॥
हरि चरणन दृढ प्रेम जिहि, धन्य धन्य ते धन्य ।
भक्तराम पर द्रवहि सब, हृदय होय परसन्य ॥
पढ़त सुनत याके कछू, जो मन होय हुलास ।
मेरी हू सुध लीजियो, जान आपनो दास ॥
जयवृन्दावनचन्द्रकी, जय जय जय सुखराम ।
निज चरणनमें राखिये एक तुम्हारी आस ॥

कवित्त।

गिरिको उठाय व्रज गोपको बचाय लियो, अग्नि ते उवारयोपुनि बालक मंजारीको॥ गजकी अरज सुन ग्राह ते छुटाय लीनो, राख्यो

व्रत नेम धर्म पांडवकी नारीको ॥ राख्यो गज घट तरे वालक विहंगिनको, राख्यो प्रण भारतमे भीष्म ब्रह्मचारीको ॥ त्रिविध सताप हारी निज संत सुखकारी, मोहि तो भरोसो भारी ऐसे गिरिधारीको ॥ १ ॥

कमला निवास निज दासनकि पूरै आस, ताके विसवासविष भख्यो मीराबाई है ॥ केशव कमलनैन सन्तन करन चैन सेन-हित भये भूप मजनको नाई है ॥ इन्द्र जू को हरचो मान सुदामाको दियो दान, भक्त जान छानि नामदेव जीकी छाई है ॥ नन्दके कन्हाई निज सतनके सुखदाई, बलदेव भाई सो हमरेहू सहाई है ॥ २ ॥

काहूके अधार सेवा वणिज व्योंपारहूको, काहूके अधार थित वित्त खेत गामको ॥ काहूके अधार तन सार भ्रात बंधुनको, काहूके अधार प्रिय सार निज नामको ॥ काहूके अधार विद्या बुद्धि बलको है, अरु काहूके अधार हाथी घोडा धन धामको ॥ मै तो निराधार मेरी हरिहि करैगे पार, मेरे तो अधार एक जानो हरि नामको ॥ ३ ॥

केऊ कर्म वादी केऊ अनभौ प्रवादी भये, केतनकी मति भई न्याय सांख्य मतकी ॥ केते जग दानी यम नेमको प्रमाण करे, केते परतीत गहे तीरथ हू व्रतकी ॥ केऊ ब्रह्मचारी केऊ योगी जटाधारी भये, वानप्रस्थ केतनको दया सॉच सतकी ॥ मै तो हूँ पतित मेरी कौन धौस ह्वैहै गति, प्रभापति राखो पति मोसेहू पतितकी ॥ ४ ॥

केऊ प्रेम लक्षण भगति मे विचक्षण है, नीचे भॉति सेवा-कर जाने निधि ज्ञानकी ॥ केऊ तत्त्वबोध मेती आतमको शोध क ", साधे नित्त योग गनि जानें रोध पानकी ॥ केऊ तनु सासना-

सवासना जतन सहै, केऊक उपासना गणेश शिव मानकी ॥ हौ तो हू अजान ताकी काहूसे पछान नाहिं, कोऊ कछु जाने हौ तो जानूं नाथ जानकी ॥ ५ ॥

जैसे खग बालकको राख लियो घंटा तरे, लाक्षा गृह बीच राख्यो पांडवन साथको ॥ राख लियो प्रीक्षितको माताके उदर माहि, राख्यो व्रज ग्वाल बाल गिरि धारचो हाथको ॥ पारथके स्वारथको सारथी भये हो तुम, सखा निज जानके जितायो है भारथको ॥पावक प्रजारी तहां रख्योहै मजारी सुत, वैसी भांति राखो नाथ मोसम अनाथको ॥ ६ ॥

केऊ ध्यान धारना समाधि विषे लीनभये, मिलावै पर्मातमामें आतमा विचारीको ॥ केते निपकाम मन अजपाको जाप जपै, केते भजैं शंकर धतूरके अहारीको ॥ केते ह्वै सकाम मन्त्र यन्त्र आठो याम जपै, केते लोभ दामते गणेश सुखकारीको ॥ तेरो ध्यान ज्ञान तेरो आसरो तिहारो मोहि, कोई कछु ध्यावो मैं तो ध्यावो गिरिधारीको ॥ ७ ॥

लीला तो अगाध व्रजवासिनके हेत सेती, धनाजूके खेत विन बोये उपजाय हे ॥ भीपमको प्रण अरु द्रौपदीकी लाज राखी, अशरण शर्ण कीर्ति वेद मध्य गाई है ॥ बूड़त बचायो व्रज कर पर गिरि धारचो, साह बन नरसी की हुण्डी सकराई है ॥ करिये न बार अब सुनिये पुकार मेरी, मोपै व्रजराज गजराज कीसी आईहै८॥

दीनबधु दयासिधु मेटो दुख द्वदन के, ऐसे तो अनेक विध ग्रंथन-मे कही है ॥ गोप मेह ते उबारे राजा वन्दि ते निवारे, भारत में पार्थ हित एते शर सही है ॥ नामदे कबीर गीध गणिका रु कीर ताते, चीर बाढो द्रौपदीको जग जश लही है ॥ बेर हेर मांझ धार मेरो दुख वार देके , एहो नाथ कृपानिधि मेरो हाथ गही है॥ ९ ॥

तब तो भक्तनके सहाय काज ब्रजराज, कंसको विदारचो मति धरी नाहि मामाकी ॥ बाल्द भरल्याये सो जुलाहाके दयाल होय, गऊ हू जिवाई अरु छानि छाई नामा की ॥ सन्तनको प्रण ग्वालगण राख्यो व्याल सेती , विपति हरी है सम्पति दैके सुदामाकी ॥ अहो बलवीर तुम द्रौपदीको बाढचो चीर, हरो क्यो न पीर अब मोसे निपकामा की ॥ १० ॥

कबको पुकारत हो सुनो नहीं एको बात, एहो नंदलाल तुम कैसे प्रतिपाल हो ॥ कहैहे दयाल सो तो दयाहू न देखियत, मेरी मति ऐसी आछे नीके पशुपाल हो ॥ धरचो हो नृसिंह रूप तबहीं प्रह्लाद काज, अबतो न लाज कछु गोधन में ग्वाल हो ॥ डारचो तेल कान मैं कि बस्यो जाय काननमें, शेप सेज लेट कीधों पौढे जा पताल हो ॥ ११ ॥

बेर बेर टेर टेर जीभहू शिथिल भई, हरत न मेरी पीर कैसे अभिमानी हो ॥ कृपण भये हो कीधों मौनको गहेहो कान्ह, दयाहू न आवै अब कैसे उनमानी हो ॥ कैसेकै उदार तुम होत हो मुरारि प्रभु, गोपिनके प्यारे छांछ दूधहूके दानी हो ॥ बकि बकि थकी बानी कछुहू न चित्त आनी, जानी हम जानिबूझ करो आनाकानी हो ॥ १२ ॥

वेद औ पुराणन मे कीनोहै बखान ऐसो, सतयुग वीच ध्रुव प्रह्लादको तृठे हो ॥ त्रेता बीच नीच कुलकी न करी कानि कछु, भीलनीके हाथ प्रभु भखे बेर जूण्ठे हो ॥ द्वापारके अन्त तुम द्रौपदीकी लाज राखी, पांडवके काज दल कौरवके रूठे हो ॥ अब कलि कालमे जो करो न सहाय मेरी, तोहि लोग हँसके कहैगे हरि झूंठे हो ॥ १३ ॥

गौतमकी नारी ताकी कथा बहु विसतारी, यद्यपि उधारी तिन छिद्र उवरायके ॥ दुःशासन द्रोपदीके सभा बीच केश खैचे, तव लाज राख लई लाजकु गमायके ॥ भयो बल हीन तनु अतिही अधीर छिन्न, तव गजकाज हरि आये तुम धायके॥दीनन दयालु प्रभु यामें तौ सँदेह नाही, करो हो सहाय आप नीको तनुतायके ॥ १४ ॥

सवैया।

दास सुदामाको सपति दे चुटकी भर चावल पहलेहि लीने ॥
सागके पात पंचालीके खाय तबै ऋषि भोजन दीने नवीने ॥
कंस की दासी पै चन्दन ले पटरानी करी कहो मान करीने॥
कारज जो जगमे यदुराय अकार लिये विन कौनके कीने॥१५॥

कवित्त।

ब्रह्मा रु महेश शेष नारद गणेश कहै, भक्तनके काज हरि आप देह धारी है ॥ मङ्गलकरण दुख द्वन्द्वके हरण पुनि, पोषण भरण ऐसे रटै नर नारी है ॥ बिरद भक्तवत्सल वेद हू पुराण कहै, जानत हौं जाके अब खोवेकी विचारी है ॥ द्वारकाके बासी भये जायके मेवासी अब, मेरी होत हाँसी यामे तो तिहारीहै ॥ १६ ॥

करो अपराध भोर साझ तरकार नित, अतिही कठोर मति बौरको निकाम हो ॥आतुर अधीर ताते धीरता धरत नाही, ऊंच नीच बोल गति वको आठो याम हो ॥ अरचा न जानूं कछू चरचा न बूझत हो, कछु प्रात हेत से न लेत हरि नाम हो ॥ सब तकसीर बलवीर मेरी माफ करो, कहे माधोदास प्रभु तिहारो गुलाम हो ॥ १७ ॥

छन्द ।

जन्मे श्रीकृष्ण मुरारि भगत हित कारने॥ मथुरा लियो अवतार गोकुल झूले पालने ॥ तिथि आठे बुधवार भाद्रपदकी

करी ॥ रोहिणी नक्षत्र आधीरातको जनमें हरी ॥ धनि धनि वसु-देव देवकी जहां प्रभु अवतरे ॥ धनि धनि गोपी ग्वालकी जिन प्रभु वस करे ॥ धन्य धन्य सुर नर मुनि सब जय जय करे ॥ दुंदुभी बजत आकाश सुमन वर्षा करे ॥ ब्रजवासी गोरस भर भर कर लावही ॥ दधिकांदो बाबा नन्द सु कीच मचावही ॥ बाजत ताल मृदंग वीण अरु बांसुरी ॥ निरखें गोपी ग्वाल चली चित चावरी ॥ यशुमति चीर पहराय नौरंग भई ग्वालनी ॥ सुंदर वदन निहार चकित भई भामिनी ॥ श्री बलभद्रजूके बीर असुर दल खंडना ॥ भगत वछल महाराज सु यदुकुल मंडना ॥ शंकर धरत है ध्यान सु गोद खिलावही ॥ सो मुख चूमत माय सु पलन झुलावही ॥ श्रीनंददास जु नेह चरण चित लावही॥हरिगुण मंगल गाय जन्मफल पावही ॥ १८ ॥

राग जंगला ।

जै जानकी नाथ जै श्री रघुनाथा ॥ दोउ कर जोड़े विनवो प्रभु मोरी सुनो बाता ॥ तुम रघुनाथ हमारे प्राण पिता माता ॥ तुमही सज्जन संगी भक्ति मुक्ति दाता ॥ जय० ॥ चौरासी प्रभु फंद छुडावो मेटो यम त्रासा ॥ निशिदिन प्रभु मोहि राखो अपने संग साथा ॥ जय० ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन संग चारो भैया ॥ जग मग ज्योति विराजै शोभा अति लहिया ॥जय० ॥ हनुमत नाद बजावत नेवर ठिमकाता ॥ सुवर्ण थाल आरती करत कौशल्या माता ॥ ॥जय० ॥ क्रीट मुकुट कर धनुप विराजे शोभा अति भारी ॥ मनीराम दरशनको पल पल बलि-हारी ॥ जय० ॥ १९ ॥

कवित्त ।

जलकी न घट भरें मगकी न पग धरें, घरकी न कछु करें, बैठी भरें सांसु री ॥ एकै सुन लोट गई एकै लोट पोट भई, एक-नके दृगन निकस आये आंसु री ॥ कहै रसनायक सो व्रज वनितन विथ, वधिक कहाये हाय हुई कुलहांसु री ॥ करिये उपाय बॉस डारिये कटाय नहि, उपजेंगे बॉस नाहि बाजै फेरि बासुरी ॥२०॥

भिक्षुक तिहारो कहां बलि मखशाला जहां, सर्पन को सगी कहां ह्वै है क्षीर निधि मे ॥ एरी बहुरगी बैलवालो कहां नाचत है, कीन्हे तिरभगा कही है है ग्वालगन मे ॥ चाउर चबैया कहू होय है सुदामा पास, विपको अहारी कहां पूतनाके घरमे ॥ सिधुसुता आन मिली तर्कसो तर्क करी, गिरिजा मुसक्यात जात झारी लिये करमे ॥ २१ ॥

सवैया ।

शेष महेश गणेश दिनेश सुरेशहु जाहि निरतर गावे ॥
जाहि अनादि अनत अखड अछेह अभेद सु वेद बतावे ॥
नारद लै शुक व्यास रटे पचिहारे तऊ पुनि पार न पावे ॥
ताहि अहीरकीछोहरियां छछियाभर छॉछपे नाच नचावें ॥२२॥
गुंज गरे शिर मोरपखा अरु चाल गयद्की मोमन भावे ॥
सांवरो नदकुमार सबै व्रजमंडल मे व्रजराज कहावे ॥
साजे समाज सबै शिरताजकी लाजकी बात कही नहि आवे ॥
ताहि अहीरकी छोहरियां छछियाभर छॉछपे नाच नचावे ॥२३॥
आज गईहुति भोरहि हौ रसखानि रई कहॅ नदके भौनहि ॥
वाको जियो जुग लाख करोर जशोमतिको सुख जात कह्यो नहिं ॥
तेल लगाय लगाय के अंजन भौह बनाय बनाय डिटोनहिं ॥
डार हमेल निहारति आनन वारति ज्यो चुचकारति छौनहिं॥२४॥

धूर भरे अति शोभित श्याम जु तैसी वनी शिर सुन्दर चोटी ॥
खेलत खात फिरै अँगना पग पैंजनियां कटि पीरी कछोटी ॥
वा छबिको रसखानि विलोकत वारत काम कलानिधि कोटी ॥
कागके भाग कहा कहिये हरिहाथते लैगयो माखन रोटी ॥२५॥
एकते एक अनेरे रहे सब ढीठ सखा सँग लीन्हे कन्हाई ॥
आवतही हौं कहां लौं कोउ कैसे सहै अतिकी अधिकाई ॥
खायो दही मटुकी पटकी नहिं छोड़त चीर दिवाये दुहाई ॥
रसखानि तिहारिये सौंह यशोमति भागि मरूंकर छूट न पाई॥२६॥
लोक कि लाज तजी तबही जब देख्यो सखी ब्रजचंद्र सलोनो ॥
खजन मीन सरोजनकी छबि गजन नैन लला दिन होनो ॥
रसखानि निहार सकै जु सम्हारकै को तिय है वह रूप सु टोनो ॥
भौंह कमान सु जोहनको शर बेधत प्राणन नन्दको छौनो ॥२७॥
सोहत हैं चँदवा शिर मोरके तैसि ये सुन्दर पाग कसी है ॥
तैसि य गोरज भाल विराजत तैसी हिये वनमाल लसी है ॥
रसखानि विलोकत बौरी भई दृग मूँदके ग्वालि पुकार हँसी है ॥
खोल री घूँघट खोलो कहा वह मूरति नैनन माँझ बसी है ॥२८॥
भौंह भरी बरुनी सुथरी अतिकै अधरान रँग्यो रँग रातो ॥
कुडल लोल कपोल महाछबि कुंजन ते निकस्यो मुसक्यातो ॥
रसखानि लखे मन खोयगयो मग भूलगई तनुकी सुधि सातो॥
फूटिगयो दधिको शिरभाजन टूटिगो नैनन लाजको नातो॥२९॥
जादिन ते निरख्यो नँदनन्दन कान तजी घरबन्धन छूट्यो ॥
चारु विलोकन की न सुमार सम्हार गई मन मारने लूट्यो ॥
सागरको सरिता जिमिधावत रोक रह्यो कुल को पुल टूट्यो ॥
मत्त भयो मन संग फिरै रसखानि स्वरूप सुधारस घूट्यो॥३०॥
बांकी विलोकन रंग भरी रसखानि खरी मुसकान सुहाई ॥

बोलत बैन अमीरस दैन महारस ऐन सुने सुखदाई ॥
कुंजनमें पुरवीथिनमें पिय गोहन लागि फिरो मेरी माई ॥
बांसुरि टेर सुनाय अरी अपनाय लई ब्रजराज कन्हाई ॥ ३१ ॥
देखनको सखि नैन भये सुसने तनु आवत गाइन पाछे ॥
कान भयेइन बातनके सुनवेको अमीनिधि बोलत आछे ॥
पै सजनी न सम्हार परै वह बांकी विलोकन कोर कटाछैं ॥
भूमि भयो न हियो यह आली जहाँ पिय खेलत काछनि काछे ३२॥
खंजन नैन फँदे छवि पिंजर नाहि रहैं थिर कैसहु माई ॥
छूटगई कुलकानि सखी रसखानि लखी मुसकानि सुहाई ॥
चित्रलिखी सी भई सब देह न बैन कढैं मुख दीन्हे दुहाई ॥
कैसी करौं जित जावँ तितै सब बोल उठे यह बावरी आई ॥३३॥
वंक विलोकन है दुखमोचन दीरघ लोचन रंगभरे हैं ॥
घूमत वारुनि पान किये जिमि झूमत आनन रंग ढरे हैं ॥
गंडनपै झलकै छवि कुंडल नागरि नैन विलोकि अरे हैं ॥
रसखानि हरे ब्रजवालनिके मन ईषदहासिकी फांसी परे हैं ॥३४॥
अति लोककी लाज समूहमें घेरके राख थकी सब संकटसो ॥
पल में कुलकानकी मेड़ रखी नहिं सेकी रुकी पलकैं पटसो ॥
रसखानि सो केती उचाटि रहीउचटी न सकोचकी औचटसो ॥
अलि कोटि करीहटकी न रही अटकी अँखियां लटकी लटसो ३५
आज सखी नँदनन्दन री तकि ठाढोहै कुंजनकी परछाहीं ॥
नैन विशालकी जोहनको शर बेध गयो हियरा जिय माहीं ॥
घायल घूम खुमार गिरी रसखानि सम्हार रह्यो तनु नाहीं ॥
तापर वा मुसकानकी डोंडी बजी ब्रजमें अबला कित जाहीं ॥३६॥
जा दिनते मुसकान चुभी उर ता दिन ते जु भयो ब्रजबारी ॥
कुंडल लोल कपोल महाछवि कुंजनते निकस्यो सुखकारी ॥

धूर भरे अति शोभित श्याम जु तैसी बनी शिर सुन्दर चोटी ॥
खेलत खात फिरै अँगना पग पैंजनियां कटि पीरी कछोटी ॥
वा छबिको रसखानि विलोकत वारत काम कलानिधि कोटी ॥
कागके भाग कहा कहिये हरिहाथते लैगयो माखन रोटी ॥२५॥
एकते एक अनेरे रहे सब ढीठ सखा सँग लीन्हें कन्हाई ॥
आवतही हौं कहां लौं कोऊ कैसे सहे अतिकी अधिकाई ॥
खायो दही मटुकी पटकी नहिं छोड़त चीर दिवाये दुहाई ॥
रसखानि तिहारिये सौंह यशोमति भागि मरूकर छूट न पाई॥२६॥
लोक कि लाज तजी तवही जब देख्यो सखी ब्रजचद्र सलोनो ॥
खजन मीन सरोजनकी छवि गजन नैन लला दिन होनो ॥
रसखानि निहार सके जु सम्हारके को तिय है वह रूप सु टोनो ॥
भौंह कमान सु जोहनको शर वेधत प्राणन नन्दको छौनो ॥२७॥
सोहत है चँदवा शिर मोरके तैसि ये सुन्दर पाग कसी है ॥
तैसि ये गोरज भाल विराजत तैसी हिये बनमाल लसी है ॥
रसखानि विलोकत बौरी भई दृग मूँदके ग्वालि पुकार हँसी है ॥
खोल री घूँघट खोलो कहा वह मूरति नैनन माँझ वसी है ॥२८॥
भौंह भरी बरुनी सुथरी अतिकै अधरान रँग्यो रँग रातो ॥
कुडल लोल कपोल महाछवि कुजन ते निकस्यो मुसक्यातो ॥
रसखानि लखे मन खोयगयो मग भूलगई तनकी सुधि सातो॥
फूटिगयो दधिको शिरभाजन टूटिगो नैनन लाजको नातो॥२९॥
जादिन ते निरख्यो नँदनन्दन कान तजी घरबन्धन छूट्यो ॥
चारु विलोकन की न सुमार सम्हार गई मन मारने लूट्यो ॥
सागरको सरिता जिमिधावत रोक रह्यो कुल को पुल टूट्यो ॥
मत्त भयो मन संग फिरै रसखानि स्वरूप सुधारस घूट्यो॥३०॥
बांकी विलोकन रंग भरी रसखानि खरी मुसकान सुहाई ॥

बोलत बैन अमीरस देन महारस ऐन सुने सुखदाई ॥
कुंजनमें पुरवीथिनमें पिय गोहन लागि फिरो मेरी माई ॥
बांसुरि टेर सुनाय अरी अपनाय लई व्रजराज कन्हाई ॥ २१ ॥
देखनको सखि नैन भये सुसने तनु आवत गाइन पाछे ॥
कान भयेइन बातनके सुनवेको अमीनिधि बोलत आछे ॥
पै सजनी न सम्हार परे वह बांकी विलोकन कोर कटाछें ॥
भूमि भयो न हियो यह आली जहाँ पिय खेलत काछनि काछे२२॥
खजन नैन फँदे छवि पिंजर नाहि रहैं थिर कैसहु माई ॥
छूटगई कुलकानि सखी रसखानि लखी मुसकानि सुहाई ॥
चित्रलिखी सी भई सब देह न बैन कढै मुख दीन्हे दुहाई ॥
कैसी करों जित जावँ तितै सब बोल उठै यह बावरी आई ॥२३॥
वक्र विलोकन है दुखमोचन दीरघ लोचन रंगभरे हैं ॥
घूमत वारुनि पान किये जिमि झूमत आनन रंग ढरे हैं ॥
गंडनपे झलकै छवि कुंडल नागरि नैन विलोकि अरे हैं ॥
रसखानि हरे व्रजबालनिके मन ईपदहांसिकी फांसी परे हैं ॥२४॥
अति लोककी लाज समूहमे घेरके राख थकी सब संकटसो ॥
पल में कुलकानकी मेड़ रखी नहिं सेकी रुकी पलकें पटसो ॥
रसखानि सो केती उचाटि रहीउचटी न सकोचकी औ चटसो ॥
अलि कोटि करीहटकी न रही अटकी अँखियां लटकी लटसो २५
आज सखी नँदनन्दन री तकि ठाढोहै कुंजनकी परछाही ॥
नैन विशालकी जोहनको शर वेध गयो हियरा जिय माही ॥
घायल घूम घुमार गिरी रसखानि सम्हार रह्यो तनु नाही ॥
तापर वा मुसकानकी डोंडी बजी व्रजमे अवला कित जाही ॥२६॥
जा दिनते मुसकान चुभी उर ता दिन ते जु भयो व्रजवारी ॥
कुंडल लोल कपोल महाछवि कुंजनते निकस्यो सुखकारी ॥

हौं सखि आवत ही बगरे पग पेंड तजी रिझई बनवारी ॥
रसखानि परी मुसकानके पालिन कौन गनै कुल कानि विचारी ३७
कौनको लाल सलोनो सखी वह जाकी बडी अँखियां अनियारी ॥
जो हनि वंक विशाल कै वानन वेधत है हिय तीछन भारी ॥
रसखानि सम्हार परै नहि चोट सु कोटि उपाय करो सुखकारी॥
भाल लिख्यो विधि नेहको बंधन खोलसकै ऐसोको हितकारी३८
मैन मनोहर वेनु बजे सु सजे तनु सोहत पीत पटा है ॥
यो दमकै चमकै झमकै द्युति दामिनि की मनु श्याम घटा है ॥
रसखानि महामधुरी मुखकी मुसक्यान करै कुलकान कटा है ॥
ये सजनी ब्रजराज कुमार अटा चढि फेरत लाल वटा है ॥३९॥
नैन लख्यो जब कुजनते बनिकै निकस्यो मटक्यो मटक्यो री ॥
सोहत कैसो हरा टटको शिर तैसे किरीट लसै लटक्यो री ॥
को रसखान रहै अटक्यो हटक्यो ब्रज लोग फिरै भटक्यो री ॥
रूप अनूपम वा नटको हियरे अटक्यो अटक्यो अटक्यो री४०॥
एक दिना मुरली धुनिमे रसखानि लियो उन नाम हमारो ॥
ता दिन ते यह वैरी बिसासिनि झांकन देति नही है दुआरो ॥
होत चवाव बचावनो क्यौ कर क्योअलि देखिये प्राणपियारो ॥
दीठ परेही लग्यो चटको अटको हियरे पियरे पटवारो ॥ ४१ ॥
कानन दे अँगुरी रहिहौं जबही मुरली धुनि मन्द बजै है ॥
मोहनि तानन सो रसखान अटा चढ़ गोधन गैहै तौ गैहै ॥
टेर कहौ सिगरे ब्रजलोगन काल्हि कोऊ कितनो समुझै है ॥
माई री वा मुखकी मुसकान सम्हारन जैहै न जैहैं न जैहै ॥४२॥

कवित्त ।

गोरज विराजै वाल लहलही वनमाल, आगे गैयां पाछे ग्वाल गावै मृदु तान री ॥ तैसी धुनि बांसुरी की मधुर मधुर तैसी,वक

चितवनि मन्द मन्द मुसकान री ॥ कदम विटपके निकट तटनीके तट,अटा चढ देख पीत पट फहरान री ॥ रस बरसावे तन तपन बुझावे नैन, प्राणन रिझावे वह आवे रसखान री ॥ ४३ ॥

अवई गई खरिक गायके दुहायवे को,वावरीह्वे आई डार दोहनी जो पान की॥कोऊ कहे छरी कोऊ भौन परी डरी कोऊ,कहै मरी मरी गति हरी अंखियान की ॥ सास व्रत ठाने नन्द बोलत सयाने धाय,दौर दौर जानै मानै खोर देवतान की॥सखी सव हँसे सुरझान पहिचान कहू, देखी मुसकान वा अहीर रसखान की ॥ ४४ ॥

कवित्त।

व्याही अनव्याही व्रजमाही सव चाही तासो, दूनी सकुचाही दीठ परै जू जुन्हैया की । नेक मुसकान रसखानकी विलोकतही, चेरी होत एक वार कुजन फिरैया की ॥ मेरो कह्यो मान अन्त याको गुण मानहे री, हौं तौ हौ सकात खातजात सौंह भैया की॥माय-की अटक तौ लौ सासुकी हटक जौ लौ,देखी ना लटक मेरे दूलह कन्हैयाकी ॥ ४५ ॥

सवैया।

नैनन वक विशालके वाणन झेलि सकै वह कौन नवेली ॥
वेधत है हिय तीखन कोर सो मार गिरी तिय केतिक हेली ॥
छोडै नही छिनहूँ रसखानि सुलागी फिरै द्रुमसो जनु वेली ॥
रोर परी छविकी व्रजमण्डल कुण्डल गण्डन कुन्तल केली ॥४६॥

सुन्दर श्याम सजे तनु मोहन जोहन में चित चोरत है ॥
वांके विलोचन की अवलोकन नोकन के दृग जोरत हैं ॥
रसखानि मनोहर रूप सलोनेको मारग ते मन मोरत हैं ॥
काजसमाज सवै कुललाज लला व्रजराज को तोरत हैं ॥ ४७ ॥

मकराकृत कुण्डल गुञ्जकि माल सु लाल लसैं पग पांवरिया॥
बछरान चरावन के मिस भाव तो दे गयो भावती भांवरियां ॥

रसखानि विलोकत ही सिगरी भई बावरियां ब्रजडाबरियां
सजनी सब गोकुलमें विष सो बगरायो है नंदके सांवरियां॥४८
कानन कुण्डल मोरपखा शिर कंठमें माल विराजत है
मुरली करमे अधरां मुसकान तरंग महाछवि छाजत है।
रसखानि लखे तनु पीत पटा शत दामिनिकी दुति लाजत है।
वह बांसुरिकी धुनि कानपरे कुलकान हियो तज भाजत है ॥४९।

कवित्त ।

दूध दुह्यो सीरो पर्‌यो तातो न जमायो बीर, जामन दयो सो धर्‌यो धर्‌योई खटायगो॥आन हाथ आन पायँ सबहीके तबहीं ते, जबहीते रसखान तानन सुनायगो ॥ ज्योंही नर त्योंही नारी तैसेई तरुनि वारी, कहिये कहा री सब ब्रज बिललायगो ॥ जानिये न आली यह छोहरा यशोमतिको, बांसुरि बजायगो कि विष बरसायगो ॥ ५० ॥

सवैया ।

बजी है बजी रसखान बजी सुनिके अब गोप कुमारि न जी है॥
नजी है कदाचित कामिनि कोऊ जु कान परी वह तान अजी है॥
अजी है बचावको कौन उपाय तियान पै मैनने सेन सजी है ॥
सजी है तो मेरी कहा बश है जब बैरिन बांसुरि फेर बजी है॥५१॥
आज अली इक गोपलली भई बावरि नेक न अंग सम्हारै॥
माता अवात न देवनि पूजत सासु सयानी सयानी पुकारै ॥
यों रसखान घिर्‌यो सिगरो ब्रज आनको आन उपाव विचारै ॥
कोउ न कान्हरके करते वह बैरिन बांसुरिया गहि डारै ॥ ५२ ॥
कौन ठगोरी करी हरी आज बजायके बांसुरिया रसभीनी ॥
कान परीजिनके जिनके तिनही तिन लाज बिदा करदीनी ॥

घूमें खरी खरी नदके द्वार नवीन कहा कहौं बाल प्रवीनी ॥
या व्रजमडलमें रसखान सु कौन भटू जु लटू नहि कीनी॥५३॥
ऐ सजनी वह नंदको सांवरो या वन धेनु चराय गयोहै ॥
मोहनी तानन गोधन गाय कै वेनु बजाय रिझाय गयोहै ॥
ताहि घरी कछु टोनो सो कै रसखान हिये मे समाय गयोहै ॥
कोउ न काहूकी कान करै सिगरो व्रज वीर बिकाय गयोहै॥५४॥
मोहनकी मुरली सुनिकै वह बौरी ह्वै आय अटा चढ झांकी ॥
गोप वडेनकी दीठ बचाय कै दीठ सो दीठ जुरी दुहँ वांकी ॥
देखत मोह भयो अँखियानमें का करै लाज औ कान कहां की ॥
कैसे छुटाई छुटै अटकी रसखान दुहूकी बिलोकन बांकी॥५५॥
वेनु बजावत गोधन गावत ग्वालनके सँगमें इत आयो ॥
बासुरी के मधि मेरोई नाम लै साथिनके मिस टेर सुनायो ॥
ऐ सजनी सुन सासके त्रासन नदन के पास उसासन आयो ॥
कैसी करौ रसखान तहौ हित चैन नही चित चोर चुरायो॥५६॥
मेरो सुभाव चितैवेको माई री लाल निहार कै बसी बजाई ॥
वा दिनते मोहि लाग ठगौरि सी लोग कहै लखि बावरि आई ॥
यो रसखान घिरचो सगरो व्रज जानत है जियकी जियराई ॥
जो कोउ चहै भलो अपनो तो सनेह न काहूसो कीजियोभाई॥५७॥
जव कान्ह भये वश बांसुरिके अब कौन सखी हमको चहि है ॥
यह रात दिना सँग लागी रहै यह सौतकि सांसत को सहि है ॥
जिन मोहलियो मन मोहनको रसखान सु क्यो न हमे दहि है ॥
मिल आयो सबै कहि भाग चलै अब तो व्रज मे वँसुरी रहिहै॥५८॥
सुन री पिय मोहनकी बतियां अति ढीठ भयो नहि कान करै ॥
निशि बासर औसर देत नहीं छिनही छिन द्वारेहि आन अरै ॥
निकसो मत नागरी डौंडि बजी व्रजमडलमे यह कौन भरै ॥

अब रूपकी रौर परी रसखान रहे तिय कोउ न मांझ घरे ॥ ८९ ॥
आयोहुतो नियरे रसखान कहा कहो तू न गई वहि ठेयां ॥
या ब्रजकी वनिता जिहि देखके वारहि प्राणन लेहिं बलैयां ॥
कोउ न काहु की कान करै कछु चेटक सो है कऱ्यो यदुरैयां ॥
गायगोतान जमायगो नेह रिझायगो प्राण चरायगो गैयां॥९०॥
हेरत वारहिं बार उतै यह वावरी बाल कहा धौ करैगी ॥
जो कहुँ देख पऱ्यो रसखान तो क्यो हूँ न वीर री धीर धरैगी ॥
मानि है काहूकी कान नही जब रूपठगी हरि रंग ढरैगी ॥
याते कहों शिख मान भटू यह हेरन तेरेउ पैंड परैगी ॥ ९१ ॥
रग भरो मुसकात लला निकस्यो कल कुजन ते सुखदाई ॥
मै तबही निकरी घरते तक नैन विशाल की चोट चलाई ॥
रसखान सो घूम गिरी धरनी हरनी जिमी बान लगे गिरै भाई ॥
टूटि गयो घरको सब बधन छूटिगो आरज लाज बडाई ॥९२॥
आज सखी इक गोपकुमारने रास रच्यो इक गोपके द्वारे ॥
सुदर बानिक सो रसखान बन्यो वह छोहरा भाग हमारे ॥
ये बिधना जो हमे हँसती अब नेक कहूँ उतको पग धारे ॥
ताहि बदो फिरि आवे घरे बिनही तन औ मन जोबन वारे॥९३॥
वह गोधन गावत गोधनमे जब ते यह मारग ह्वै निकस्यो ॥
तबते कुलकान कितीये करो नहीं मानत पापी हियो हुलस्यो ॥
अब तो जु भई सुभई कह होत है लोग अजान हँस्यो सुहँस्यो ॥
कोउ पीर न जानत जानत सो जिसके हियमे रसखान बस्यो९४॥
आज री नन्दलला निकसो तुलसीवनते वनके मुसकातो ॥
देखे बने न बने कहते कछु सो सुख जो मुखमें न समातो ॥
हौं रसखान विलोकनवेको कुलकानको काज कियो हिय हातो ॥
आयगई अलबेली अचानक ऐ भटू लाजको काज कहा तो॥९५॥

समझी न कछू अजहूँ हरि सो व्रज नैन नचाय नचाय हँसै
नित सासकी सीरी उसासनसो दिनही दिन मायकि कांति नसै
चहुँ ओर ववाकि सौं सोर सुने मन मेरेउ आवत रीस कसै
पै मै कहा कहु वा रसखान विलोक हियो हुलसे हुलसे॥ ६६
बॉकी कटाक्ष चितैवो सिख्यो बहुधा बरज्यो हितके हितकारी
तू अपने ढिगको रसखान सिखावन दे दिन हौ पचिहारी
कौन सी सीख सिखी सजनी अजहू तजिदे बलि जॉव तिहारी
नदननन्दके फंद कहूँ परिजैहै अनोखी निहारनहारी ॥ ६७
पूरब पुण्यनते हितई जिन ये अँखियाँ मुसकान भरी री
कोऊ रही पुतरी सी खरी कोऊ घाट डरी कोउ बाट परी री।
जे अपने घरही रसखान कहैं अरु हौंस न आज मरी री।
लाजहिं बाल विहाल करी ते बिहालकरी न निहालकरी री॥६८
वैरिन ते बरजी न रहे अबही घर बाहर बैर बढैगो।
टोना सो नद ढुटोना पढै सजनी तिहि देख विशेष बढैगो।
सुनिहै सब गोकुल गाव अरी रसखान जबै सब लोक रढैगो।
बैस चढे घर ही रह बैठ अटान चढे बदनाम चढैगो॥ ६९।
तेरी गलीनमें जा दिन ते निकसे नँदनन्दन गोधन गावत।
ये व्रजलोग सो कौनसी बात चलायके जो नहिं नैन चलावत।
वे रसखान जो रीझिहौ नेक तो रीझिके क्यो न बनाय रिझावत।
बावरी जोपै कलक लग्यो तौ निशक ह्वै काहे न अक लगावत७०।
औचक दीठपरे कहु कान्हजू तामें कहै ननदी अनुरागी।
सो सुन सास रही मुख फेरि जिठानी फिरै जियमें रिसपागी।
नीके निहार के देखे न आंखन हौ कबहूँ सँग रैन न जागी।
हे पछितैवो यही सजनी कि कलक लग्यो पर अक न लागी॥७१॥
कालिह पर्यो मुरली.धुनि मे रसखान जु कानन नाम हमारो॥

ता छिनते नहि धीर रह्यो जग जान महा मन कानो पवाँरो ।
गॉवन गॉवन मे अवतो वदनाम भई सवसो के किनारो ।
तौसजनी फिर फेरि कहौं पिय मेरो यही जग टोक नगारो॥७२॥
मो मन मोहनसो मिलिकै मधुरी मुसकान दिखाइ दई ॥
मोहनी मूरत मैनमयी सवहीं चितई हमहू चितई ॥
उनतो अपने अपने घरको रसखान भलीविधि गेल लई ॥
मोहि को पाप परयो पलमें पग पावक पौरि पहार भई॥७३॥
प्रेमपगे जु रंगे रॅग सॉवरे माने मनाये न लालची नैना ॥
धावत है उतही जित मोहन रोके रुके नहि घूँघट ऐना ॥
कानन लौं कल नाहि परे सखि प्रीतिसे भीजे सगे मृदु वैना ॥
रसखान भई मधुकी मखियां अब नेहको बंधन क्योहू छुटै ना७४॥
नव रग अनङ्ग भरी छवि सो वह मूरति ऑखि गडी ही रहै ॥
बतियां मनकी मनहीमें रहै वतियां उर बीच अडी ही रहै ॥
तवहूँ रसखान सुजान अली नलिनी जलबून्द पडी ही रहै ॥
जियकी नहि जानत हौ सजनी रजनी अँसुवान लड़ी ही रहै७५॥
आवत है वनते मनमोहन गोहन सग लसै ब्रजग्वाला ॥
वेणु वजावत गावत गीत अमीत इते करिगो कछु ख्याला ॥
हेरत •टेर थकी चहुँओर ते झांकि झरोखन ते ब्रजवाला ॥
देख सु आननके रसखान तज्यो सव द्योसको ताप कशाला७६॥
बंशी वजावत आनकढ़्योरी गली मे छली कछु जादू सी डारै॥
नेक चितै तिरछी कर भौंहै चलो गयो मोहन मूठ सी मारै ॥
वाही घरीते परी वह सेज पे बोलै न डोलै है प्राण से वारै ॥
जागि हे जीहै तौ जीहैं सबै नहि पीहैं सबै विप नदके द्वारै७७॥
अंग ही अंग जराव जरी अरु शीश बनी .पगिया जरतारी ॥
मोतिन माल हिये लटकै लटुआ लटकै सब घूंघरवारी ॥

पूरण पुण्यहूँ ते रसखान ये मोहनि मूरति आन निहारी ॥ चारो दिशाको महाअघ हांके जो झांके झरोखे में बांके विहारी ॥७८॥

कवित्त ।

मीन मृग खजन खसान भरे नैन वान, अधिक गलान भरे कंज कल तालके ॥ राधे छबिलीके छैल छबि छाके छाक भरे, छैल ताके छोरे भरे छबि साथ जाल के ॥ ग्वालकवि आन भरे सान भरे स्यान भरे, कछु अलसान भरे भरे मान मालके ॥ भरे लाज भरे लाग भरे लोभ भरे लाली, भरे लोचन ललोहे नंदलालके ॥ ७९ ॥

फूले फूले फूलनके फूल फूल लिये तोड, रग रग रगीन की रगत निहारीहै ॥ सूत सूत सूत डोर रेशम रसान भरे, गहक गहक गूथ गूंथना निहारीहे॥ ग्वालकवि सौरभ समुद्र ते निकाली मानो, ललित ललाई कोमलाई वेकरारी हे ॥ वानक विशाल वारो मोतिन-की माल जापै, ऐसी वनमाल नदलाल हिये धारी हे ॥ ८० ॥

पीरे वन वाग अनुराग भरे भाग भरे, अग अग रगकी उमंग मन पैठे हे ॥ पीरे पीरे हिये पर पीरे ही वसन सने, पीरे ही रतन तन अतन अमेठे हें ॥ ग्वालकवि पीरे गोले गेंदुवा पलग पीरे, पीरे पान चवे पीरे हार हार ऐठे हैं ॥ हे नई वसत ह्वै वसत रही राधिकाके, दोऊ या वसत में वसंत वन वैठे हें ॥ ८१ ॥

सुदर पलास अरु सुन्दर अँध्यारे वन, फूली फूली वेल जाकी छवि लागे खासी हे ॥ कोकिला की कूक तेरी वानी में पिछानी जात, भौरन की मांग आछी श्यामता प्रकासी है ॥ वन उपवन मे मयककी सी शोभा देत, चांदनी प्रत्यच्छ मानो नीकी छविरासी है ॥ रीस तेरी करवे को आई है वसत ऋतु, तू तो हे वसत ये वसत तेरी दासी हे ॥ ८२ ॥

बसी रहै शशि छवि ज्यों मन चकोरनके, अति मति मालती सुमनमे बसी रहै ॥ बसी रहै गज मन रेवा कीच अरु रेणु,मोरनकी रुचि घनाघन में बसी रहै ॥ बसी रहै श्रीपति सदन कमलाजू जैसे, लोभी मन रुचि चित्त- धनमें बसी रहै ॥ बसी रहै त्योही तेरे छबिकी लगन कृष्ण, सूरति तिहारी मेरे मन मे बसी रहै ॥ ८३ ॥

सवैया ।

सोई है रासमे नेकसु नाचिकै नाच नचाये कितै सबको जिन ॥
सोई है री रसखान इहे मनुहारहु सूधे जितौत नही छिन ॥
तो मे धौ कोन मनोहर भाव विलोकि भयो वश हाहा करी तिन ॥
औसर ऐसो मिले न मिलै फिर लगर मोडो कनोडो करै किन८४॥
वारहि गोरस बेच री आज तू मायके मूड़ चढै कित मोडी ॥
आवत जात लौ होयगी साँझ भटू यमुना भरौड लौ औडी ॥
एतेमे भेटत ही रसखान ह्वैहै आँखियां विन काज कनौडी ॥
ऐरी बलाय ल्यो जायगी वाज अबै ब्रजराजसनेहकी डौडी॥८५॥
मोरकी चंद्रिका मोर लसै दिन दूलह है अलि नंदको नदन ॥
श्रीवृषभानु सुता दुलही लही जोरी बनी विधिना सुखकदन ॥
रसखान न आवत मोपै कह्यो कछु दोऊ फँदे छवि प्रेम के फंदन ॥
जाहि विलोके सभी सुख पावत ये ब्रजजीवन दुःखनिकदन८६॥
आज अचानक राधिका रूपनिधानसो भेट भई वनमाही ॥
देखत दीठ जुरी रसखान मिले भर अक दिये गलवाही ॥
प्रेमपगी बतियां दुहुंघांकी दुहूंको लगी अतिही चित चाहीं ॥
मोहनीमंत्र वशाकर तन्त्र हाहा पियकीतियकी नहिं नाही ॥ ८७॥
लाडिली लाल लसैं लखिये अलिपुजन कुजनमे छवि गाढी ॥
ऊजरी ज्यों विजरी सी जुरी चहूं गूजरी केलिकला सम काढी ॥
त्यों रसखान न जान परे सुखमा तिहु लोकनकी अति बाढी ॥

लालन वाल लिये बिहरें छहरें शिर मोरपखी ठग ठाढी ॥ ८८ ॥
दृग दूने खिचे रहे कानन लौं लट आनन पै लहराय रही ॥
छक छैल छबीली छटा छहरायके कौतुक कोटि देखाय रही ॥
झुक झूम झमाकन चूम अमी चहि चादनि चन्द दुराय रही ॥
मन भाय रही रसखान महा लखि मोहन की तरसाय रही॥८९॥
जात हुती जमुना जलको मनमोहन घेरलियो मग आयके ॥
मोद भरे लपटाय गयो पट घूँघट टार दियो चित चायके ॥
और कहा रसखान कहो सुख चूमत घातन बात बनायके ॥
कौन निभे कलकानलियेहिये सावरिमूरतिकी छबिछायकै॥९०॥
...भाव सो ग्वालिन गोधन लायो ॥
...ो हरवाय दै गात सो गात छुवायो ॥
...तुरता चुपचाप रही जबलौं घर आयो ॥
॥ ६४॥ ... सकाय सु ओट ह्वे जाय अँगूठे दिखायो॥९१॥

कवित्त ।

... कालिह सब लोक लाज त्यागि दोऊ, सीखेह-सबै
... सरसायबो ॥ यह रसखान दिन द्वे मैं बात फैल जैहै,
... सयानी चन्द हाथन छिपायबो ॥ आज हौं निहारयो
... नपट कलिंदी तीर, दोउन को दोउन सो मुख मुसकायबो॥
... परें पैयां दोउ लेत हैं बलैयां उन्हे, भूल गई गैयां बरज-
...ागर उठायबो ॥ ९२ ॥ ...तरावो

सवैया । ...जो होय

एक समै जमुनाजलमै सब मज्जन हेत धसी ब्र...
त्यो रसखान गयो मनमोहन लैकर चीर कदं...
न्हाय जबै निकसीं वनिता चहुँओर चितै चित, खोट बतावो ॥
हार हियो भर भावन सो पट दीनै लला वचनानि लजावो ॥ रत्न

जडे आभूषण पहरे छॉछ लिये करको फैलावो ॥ नारायण सब लोग हँसैंगे प्रथम उतार इन्हे धरि आवो ॥ १०२ ॥

राग मलार ।

क्योरे छेल मेरी मटुकिया पटकी । करके ढिठाई मग दधि बिखराई सब चूरी मुरकाई सुकुमार बैयां झटकी ॥ अबही यशोदाढिग पकर लै जाऊ तोहि एक न सुनूंगी तेरी बात नटखट की ॥ बदलो लेउँगी न डरूगी नारायण कौनसी गरज मेरी तोसो अब अटकी ॥ १०३ ॥

राग खंमाच ।

प्रीतम तुम मोहि प्राण ते प्यारो जो तोहि देख हिये सुख पावत सो बड भागिनवारो ॥ तुम जीवन धन सर्वस तुमहीं तुमहीं दृगनके तारो । जो तुमको पलभर न निहारूं दीखत जग अँधियारो ॥ मोद बढ़ावनके कारण हम माननी रूपको धारो । नारायण हम दोऊ एक हैं फूल सुगधि न न्यारो ॥ १०४ ॥

राग देश ।

सखि जबसो नँदलाल निहारे। तबही सो बौरी भई डोलू इत उत गली गिरारे ॥ शीश मुकुट शिरपेंच रतनको लसत बार घुंघरारे । खंजन नयन मैन मद गजन अजन रेख समारे ॥ कुण्डल लोल कपोल मनोहर कोटि भानु उजियारे । मानो रूप सिधुमें खेलत मकँरन के द्वै बारे ॥ मंद हँसन मुख श्याम बरन छबिशशि मनोज लख हारे । दशन पाँति ज्यो मुतियनकी लर अधर सोहे अरुणारे ॥ नाक बुलाक कुटिल वर भ्रुकुटी वचन रचन अति प्यारे । नारायण नख शिख शृंगार कर ठाढे भवनके द्वारे॥ १०५॥

राग सोरठ।

जाहि लगन लगे घनश्याम की धरत कहूँ पग परत हैं कितहूँ भूल जाय सुध धाम की ॥ छबि निहार नहि रहत सार कछु घरी पल निशि दिन याम की। जित मुँह उठे तितही धावै सुरति न छाया घामकी ॥ कोई करो निंदा कोई स्तुति मेड़ तजी कुल ग्राम-की। नारायण बौरी भई डोले रहै न काहू काम की ॥ १०६ ॥

राग काफी।

यह नैना रिझवार नयेरी। एक बेर लखि रूप श्यामको तज घर बार फकीर भयेरी॥ अबदेखे बिन डारत आँसू युग समान पल बीत गये री। नारायण येहू अति चंचल फल पाये जो बीज बये री ॥ १०७ ॥

राग भैरवी।

अब मैं कैसे करूंगी वीर। हौं तो घनो चाहूँ न करू सुध मन तो धरत न धीर ॥ जों घायल उन नयन बानके सो जानत यह पीर। नारायण करगयो बावरी सुन्दर श्याम शरीर ॥ १०८ ॥

राग परज।

अब नन्द भवनमे चलोरी बीर। साँवरे कन्हाई बिन कल न परत घरी पल छिन मन न धरत हे धीर ॥ दृग अति अकुलावें नहि पलक लगावें पुनि उतही को धावे परी इनपै भीर। तनुसुरत बिसारी लगी चटपटी भारीनारायण हमारी को जानतपीर १०९

राग खट।

एक सखी उठ बडे भोरही नन्दरायके भवन गई। ताही समय जागे मनमोहन आलसवश मुखकांति नई ॥ नैन उनीदे झूमत पलकें शिथिल वचन अति मोद मई। नारायण यह छबि लखि ग्वालिन मानो भीतिको चित्र भई ॥ ११० ॥

देख सखी नव छैल छबीलो प्रात समै इतसो को आवै । कमल समान बडे दृग जाके श्याम सलोने मृदु मुसक्यावै ॥ जाकी सुन्दरता जग वरणत मुख शोभा लख चन्द्र लजावै । नारायण यह किधों वही है जो यशुमतिको कुँवर कहावै ॥ १११ ॥

राग विभास ।

यही मोहन जिन मोही व्रजवाला । गजगति चलत बजत पग नूपुर उर सोहै बनमाला ॥ कमल फिरावत मृदु मुसक्यावत बोलत बचन रसाला । श्याम वरन लखि लजत नीलमणि पंकज मेघ तमाला॥नैन सैन कर हरत मैन मन मुख द्युति चन्द विशाला । नारायण प्रगट्यो जादूगर नन्दरायको लाला ॥ ११२ ॥

राग भैरव ।

आज सखी प्रातकाल मेरे गृह आये लाल भई मैं निहाल वाके रूपको निहार री । पूरण शशी सम कपोल तिनपै कुंडल किलोल मधुर मधुर सुनके बोल रही ना सँभार री ॥ नाकमें बुलाक सोहै चितवन चितहीको मोहै अद्भुत शृंगार चरण नूपुर झनकार री । नारायण हौं तौं उठी मिलन इतसो आई लाज मनकी मनहीमे रही कर न सकी प्यार री ॥ ११२ ॥

राग आसावरी ।

सखी मेरे मनकी को जाने । कासों कहूँ सुनै जो चितदे हितकी बात बखाने ॥ ऐसो को है अन्तर्यामी तुरत पीर पहिंचाने । नारायण जो बीत रही है कब कोई सच माने ॥ ११४ ॥

राग सोरठ ।

मनमोहन जाकी दृष्टि परत ताकी गति होतहै और और । न सुहात भवन तन अशन वसन वनहीको धावत दौर दौर ॥ नहीं

धरत धीर हिय विरह पीर व्याकुल भई भटकत ठौर ठौर ॥ कव अँसुवन भर नारायण मन झांकत डोलत पौर पौर ॥ ११५ ॥

राग झंझोटी ।

सॉवरे क्यों मोसों रिस मानी । तेरे काज घर वार त्याग के गलियन फिरत दिवानी ॥ लोकलाज कुल रीति प्रीत जग इनहू को दियो पानी । नारायन अव तो हँस चितवो ऐ रूप गुमानी ॥ ११६ ॥

राग काफी ।

लाल तेरे जादू भरे दोउ नैन । चितवन मे चित वश कर लेवें मोहनी मन्त्र है सैन ॥ अति बाँके सुन्दर मतवारे अनियारे छवि ऐन ॥ नारायण इनके विन देखे पद छिन परत न चैन ॥ ११७॥

राग कालिंगडा ।

सखी तवसों चैन नहिं आवे । जवसों मे निरख्यो नँदलाल गल मुतियन माल सुहावे ॥ घुंघरारी अलकें मुख राजत कोटि मदन दृग छवि लखि लाजें कुण्डल हलन चलन श्रवणनमें वसी मधुर बजावे । सुध बुध हरन वचन हँस बोलें चाल मराल इतै उत डोलें ॥ बजत चरन छम छननन नूपुर ताहू पर मुसक्यावे ॥ कर कंकन पहुँची मणि झलकें देख स्वरूप लगत नहि पलकें नारायण बेसर को मोती लटकत हिये समावे ॥ ११८ ॥

सखि यह दृग वा रूप लुभाने । मचल रहे शशि मुख निरखन को जा विधि बाल अयाने॥लोकलाज कुलधर्म खिलौना दिये तउ हिं माने । नारायण सोऊ इन फोरे ऐसे निडर सयाने॥११९॥

राग झिंझोटी।

श्याम दृगनकी चोट बुरी री। ज्यों ज्यो नाम लेत तुम वाको मो घायल पे नोन पुरो री॥ न जनुं अब सुध बुध मेरी कौन विपिनमें जाय दूरी री। नारायण नहिं छूटत सजनी जाकी जासों प्रीति जुरी री॥ १२०॥

राग ईमन दादरा।

लगन नही छूटे एरी वीर। ताने देहु भले नाम धरो चाहे कोटि करो तदवीर॥ छिनमें करत चतुरको बौरा नृपको करत फकीर। नारायण अब कठिन है बचवो बिधे हिये दृग तीर॥ १२१॥

मोपे कैसी यह मोहनी डारी। चितचोर छैल गिरिधारी॥ गृह कारजमें जी न लगत है खान पान लगै खारी। निपट उदास रहतहू जबसों सूरत देखि तिहारी॥ सगकी सखी देत मोहिं धीरज वचन कहत हितकारी। एक न लगत कही काहूकी कहत कहत सब हारी॥ रही न लाज सकुच गुरुजनकी तन मन सुरति बिसारी। नारायण मोहि समझ बावरी हँसत सकल नरनारी॥ १२२॥

राग सोरठ।

सखी री यह मेरो चित चोर। भृकुटी कुटिल वक अवलोकन सुन्दर नवल किशोर॥ गैल चलतमे सहजहि निरखी या छलिया की ओर। नारायण जानै कहा कीयो इन लखि नैनन कोर॥ १२३॥

मोहन बस गये मेरे मनमें॥ लोकलाज कुलकान छूटगई इनकी लगन लगनमे। जित देखू तितही यहि दीखे घर बाहर आंगन में। अंगअग प्रति रोम रोममें छाय रहे सब तन में॥ कुण्डल झलक कपोलनसोहै बाजूबंद भुजनमे। कंकन कलित ललित मणिमाला नूपुर धुनि चरणन मे॥ चपल नयन भृकुटी बर बांकी

ठाढे सघन लतनमे । नारायण बिन मोल बिकी मैं इनकी नेक हँसन में ॥ १२४ ॥

राग झँझोटी।

ये दोऊ झूले री मनके मोहन हार । सजनी री इक सांवरे रग के सँग वृषभानु कुमार ॥ सावन मास सुहावन भावन फूल रही फुलवार । रेशम डोर जड़ाऊ पटली सघन कदमकी डार ॥ गरजत घन चमकत है चपला बुँदन परत फुहार । ठौर ठौर मिल मोर नचत हैं या सुखको नहिं पार ॥ भाँति भाँतिके पक्षी बोल शीतल चलत बयार । फूले कमल सरोवर माही भ्रमर करत गुंजार॥चहूँ ओर छाई हरियाली अद्भुत विपिन बहार । लिपट रही वर बेलि द्रुमनसो हरषत युगल निहार॥ वरन वरनके लाल सोसनी सखियन किये शृङ्गार।विविध प्रकार बजावत बाजे गावत राग मलार ॥ चतुर सखी इक जान गई तब उरसो चीर उघार । हँस हँस परत लखावत औरन यह लगर छलवार॥ललिता कहे इन नहि व्यापे तनक लाज ससार । पल पल माहि स्वांगधर आवत कबूँ पुरुष कबूँ नार ॥नारायण बोली प्रीतमसो कीरति प्राण अधार।वनिता वेष उतार आपनो रूप लियो निज धार ॥ १२५ ॥

राग मलार।

सखी री यह सावन मनभावन । चातक मोर चकोर कोकिला बोलत वचन सुहावन ॥ गरजत घन घन घननन घननन कर लगे मेह बरसावन । नारायण भीजत मेरे गृह श्याम सुंदरको आवन ॥ १२६ ॥

राग जंगला।

आवो री यह शोभा निहारें । नन्दलाल वृषभानु नन्दनी झूल रहे गरबैयां डारें ॥ परत फुहार विपिन हरियाली वन पक्षी मृदु

वचन उचारे। अति निर्मल जल भरे सरोवर फूले कमल भ्रमर गुजारे ॥ पवन झकोर उडत प्रिय को पट झट प्रीतम निज हाथ सँभारे ॥ नारायण इनकी या छवि पे आज सखी हम सरवस वारें ॥ १२७ ॥

राग कान्हरो।

आज बशीबट बरसत रंग। यमुना तीर समीर सुहावत बोलत विविध विहंग॥ कीरत कुँवरि लाल नन्दजीको झूल रहे इक संग। रूपसिंधुके अग अंगते छबिकी उठत तरंग। वजत बीन ताऊस सरगी वंशी झांझ मृदंग। नारायण गावत मिल सजनी हियमें बढत उमंग॥ १२८॥

राग मलार।

सघन वन झूलें दोउ सुकुमार। हिय हरषत छवि निरख परस्पर छिन छिन बाढत प्यार॥ कबहुं मुदित मन तान लेत मिल होत सखी बलिहार। नारायण द्रुम बेलि सुहावन हरो कियो शृङ्गार॥ १२९॥

राग काफी।

गोरी कुञ्जनमें आज होरी मची तू कहा बैठी मांग सँवारे। मेरी कही जो सांच न माने सुनले डफ धुधकारे ॥ उठ सजनी चल फाग खेल ले प्रीतम तोहिं पुकारे । नारायण तब जात है तेरी तू जीते पिय हारे॥ १३०॥

पिय प्यारी आज होरी खेलत यमुना तीर। हँस हँस वदन अरगजा डारत मारत मूठ अबीर॥चलत कुमकुमा रंग पिचकारी भीज रहे तन चीर। जनु घन दामिनि रूप धरे हैं गोरे श्याम शरीर॥ बजत अनेक भांति मृदु बाजे होय रही अति भीर। नारायण या सुख निरखे विन कौन धरे मनधीर॥ १३१॥

देख सखी वृषभानु किशोरी। निज प्रीतमको रूप निहारत जा विध चंद चकोरी ॥ भलो फाग खेलन को निकसी बीच भई चित चोरी। नारायण अटके दृग छविमें भूल गई सुधि होरी ॥१२२॥

राग झंझोटी।

आज श्याम मग धूम मचाई। धूम मचाई करत ढिठाई ॥बिन रँग डारे देत नहि निकसन मैं तेरीसों देखके आई। तू कहू भूलके मत उत जैयो जानै कहा वह करे लँगराई ॥ नारायण होरीके दिननमें अपने ही हाथ है अपनी बड़ाई ॥ १२२ ॥

राग काफी।

मति मारो पिचकारी श्याम अब देउँगी मैं गारी। भीजैगी लाल नई मेरी अँगिया चूँदर बिगरैगी न्यारी ॥ देखेगी सास रिसायगी मोपै सगकी ऐसी है दारी ॥ हँसैगी दै दै तारी ॥ घाट बाट सबसों अटकत हो लै ले रारि उधारी ॥ कहांलो तेरी कुचाल कहूँ मैं एक एक ब्रजनारी ॥ जानत करतूत तिहारी ॥ मूठ अबीर न डारो दृगनमें दूखेगी आंख हमारी ॥ नारायण न बहुत इतरावो छांडो डगर गिरिधारी ॥ नये भये तुमही खिलारी ॥१२४॥

राग होरी काफी।

होरी हो ब्रजराज दुलारे। अब क्यो जाय छिपे जननी ढिग रे ढ्रे बापन वारे ॥ कै तो निकसके होरी खेलो कै मुखसो कहो हारे ॥ जोर कर आगे हमारे ॥ बहुत दिननसों तुम मनमोहन फागहिं धाग पुकारे ॥ आज देखियो सैर फागकी पिचकारिनके फुहारे ॥ चले जब कुमकुमा न्यारे ॥ निपट अनीति उठाई तुमने रोकत गैल गिरारे ॥ नारायण सब खबर परैगी नेक तो आयके द्वारे ॥ सुरति अपनी तू दिखा रे ॥ १२५ ॥

राग कान्हरो ।

नंदनंदनके ऐसे नैन । अति छवि भरे नागके छौना तुरत डसें कर सैन ॥ इन सम सांवरि मंत्र न होई जादू यंत्र तंत्र नहि कोई एक दृष्टिमे मन हर लेवें कर देवे वेचैन ॥ चितवनमें घायल कर डारें इनपे कोटि बाण ले वारें अति पैने तिरछे हिय कसके श्वास न देवे लेन ॥ चचल चपल मनोहर कारे खंजन मीन लजावन हारे नारायण सुंदर मतवारे अनियारे दुख देन ॥ १२६ ॥

राग मलार ।

मनमोहन सम सुन्दरको है । मैं अपने अनुमान कहूँ अब उनकी पटतर और न सोहै ॥ चितवन चपल रूप उजियारी जाको मुख नित चंद हू जोहै । नारायण जो एक दृष्टिमें सुर नर नाग सकल को मोहै ॥ १२७ ॥

राग जैजैवन्ती ।

आज सखी प्रीतम जो पाऊं, तो अपने बड़ाभाग मनाऊं । सांवरी मूरत नैन विशाला, चंद वदन गल मुतियन माला, रूप मनोहर चाल मराला, सुंदरता पर बलि बलि जाऊं ॥ जो प्यारो इन गलियन आवै, मो विरहनको दरश दिखावै, बैठ निकट मृदु वचन सुनावै, मैं उनको हँस कंठ लगाऊं । नारायण जीवन गिरिधारी, कब लैंगे सुध आय हमारी, जब मोसो वो कहैंगे प्यारी, तबमें फूली अँग न समाऊं ॥ १३८ ॥

राग नायकी कान्हरा ।

आज रच्यो रसरास विहारी । जैसोइ वृन्दा विपिन सुहावन तैसिही शरद रैन उजियारी ॥ यमुना तीर पुलिनको शोभा फूल रही चहूँ दिशि फुलवारी । चलत पवन मन मोद बढावन शीतल मन्द

सुगंधित प्यारी ॥ निरतत लाल सहित व्रजवाला चपल चतुर गति ले ले न्यारी । बजत अनेक भाति मृदु बाजे परम प्रवीन बजावत वारी ॥ कोऊ सखी स्वर दुगन अलापत करत बड़ाइ लाल गिरिधारी । नाचत सुमन झरत है शीशते मुख श्रमबिंदु देत छबि न्यारी ॥ कबहूं श्याम बिमल ह्वै नाचत ताल देत मिल गोप कुमारी । नारायण नभते सुर निरखत वर्षत फूल सहित निज नारी ॥ १३९ ॥

राग भैरव ।

बंशीवट जमुना तट निरतत बनवारी । अति सुगंध मंद मंद पवन चलत प्यारी ॥ चन्दवदन श्याम रसिक मुकुट चन्द शीश लसत चन्द्रमुखी प्रिय शरद चाँदकी उजारी । बाजे बाजत विशालगति मति सुर अधिक ताल रागरंग विविध भांति नूपुर धुन न्यारी । नारायण शिव सुजान गोपिकाको वेष ठान निरख निरख नृत्य गान भये चित्रकारी ॥ १४० ॥

राग जोगिया ।

आज सखी सपनो में देखो रैन । तबही सो जिय भई अति व्याकुल पल छिन परत न चैन ॥ श्याम वरण इक पुरुष मनोहर नव जोवन छबि ऐन । शीश मुकुट कुंडल गल माला सुन्दर बांके नैन ॥ मै उनसो कछु कहन न पाई सुने न उनके बैन । नारायण तब आँख उघर गई न कछु लैन न दैन ॥ १४१ ॥

सवैया ।

मानकी औधि है आधी घरी अरु जो रूखानि डरे डरके डर ॥
तोरिये नेह न छोडिये पां परो ऐसे कटाक्ष महा हियरो हर ॥

राग कान्हरो ।

नदनंदनके ऐसे नैन । अति छवि भरे नागके छौना तुरन डसे कर सैन ॥ इन सम सांवरि मत्र न होई जादू यत्र तंत्र नहिं कोई एक दृष्टिमे मन हर लेवें कर देवें बेचैन ॥ चितवनमें घायल कर डारे इनपे कोटि बाण ले वारे अति पैने तिरछे हिय कसके श्वास न देवे लैन ॥ चचल चपल मनोहर कारे खंजन मीन लजावन हारे नारायण सुदर मतवारे अनियारे दुख देन ॥ १२६ ॥

राग मलार ।

मनमोहन सम सुन्दरको है । मैं अपने अनुमान कहूँ अब उनकी पटतर और न सोहे ॥ चितवन चपल रूप उजियारो जाको मुख नित चद हू जोहे । नारायण जो एक दृष्टिमें सुर नर नाग सकल को मोहे ॥ १२७ ॥

राग जैजैवन्ती ।

आज सखी प्रीतम जो पाऊं, तो अपने वडाभाग मनाऊं । सांवरी मूरत नैन विशाला, चंद बदन गल मुतियन माला, रूप मनोहर चाल मराला, सुंदरता पर वलि वलि जाऊं ॥ जो प्यारो इन गलियन आवे, मो विरहनको दरश दिखावै, बैठ निकट मृदु वचन सुनावै, मैं उनको हँस कठ लगाऊं । नारायण जीवन गिरिधारी, कब लैंगे सुध आय हमारी, जब मोसो वो कहेंगे प्यारी, तबमें फूली अँग न समाऊं ॥ १२८ ॥

राग नायकी कान्हरा ।

आज रचो रसरास विहारी । जैसोइ वृन्दा विपिन सुहावन तैसिही शरद रैन उजियारी ॥ यमुना तीर पुलिनकी शोभा फूल रही चहूँ दिशि फुलवारी । चलत पवन मन मोद बढावन शीतल मन्द

सुगंधित प्यारी ॥ निरतत लाल सहित व्रजबाला चपल चतुर गति लै लै न्यारी । बजत अनेक भांति मृदु बाजे परम प्रवीन बजावत वारी ॥ कोऊ सखी स्वर दुगन अलापत करत बड़ाइ लाल गिरिधारी । नाचत सुमन झरत है शीशते मुख श्रमबिंदु देत छबि न्यारी ॥ कबहूँ श्याम विमल ह्वै नाचत ताल देत मिल गोप कुमारी । नारायण नभते सुर निरखत वर्षन फूल सहित निज नारी ॥ १३९ ॥

राग भैरव ।-

बशीवट जमुना तट निरतत वनवारी । अति सुगध मद मद पवन चलत प्यारी ॥ चन्दवदन श्याम रसिक मुकुट चन्द शीश लसत चन्द्रमुखी प्रिय शरद चाँदकी उजारी । बाजे बाजत विशालगति मति सुर अधिक तालरागरग विविध भांति नूपुर धुन न्यारी । नारायण शिव सुजान गोपिकाको वेप ठान निरख् निरख नृत्य गान भये चित्रकारी ॥ १४० ॥

राग जोगिया ।

आज सखी सपनो में देखो रैन । तबही सो जिय भई अति व्याकुल पल छिन परत न चैन ॥ श्याम वरण इक पुरुप मनोहर नव जोवन छबि ऐन । शीश मुकुट कुंडल गल माला सुन्दर बांके नैन ॥ मै उनसो कछु कहन न पाई सुने न उनके वेन । नारायण तब ऑख उघर गई न कछु लैन न दैन ॥ १४१ ॥

सवैया ।

मानकी औधि है आधी घरी अरु जो रसखानि डरे डरके डग॥
तोरिये नेह न छोडिये पा पगे ऐसे कटाक्ष महा हियरो हग ॥

लाल गुपालको हाल विलोक री नेक छुवै किन दै करसो कर ॥
ना कहवे पर वारत प्राण कहा लखि वारिहै हां कहिये पर ॥ १४२ ॥
वह सॉवरो नन्दको छैल अली अव तो अतिही इतरान लगो ॥
नित घाटन वाटन कुंजनमें मोहि देखतही नियरान लगो ॥
रसखान बखान कहा कहिये तक सैननसों मुसकान लगो ॥
तिरछी वरछी सममारतहैदृगवान कामन सु कान लगो ॥ १४३ ॥
आई सबे व्रज गोप लली ठिठकी ह्वै गली यमुना जल न्हानें ॥
औचक आय मिले रसखान बजावत वेणु सुनावत तानें ॥
हाहाकरी सिसकी सिगरी गति मैन हरी हियरा हुलसानें ॥
घूमैं दिमाने अमाने चकोरसे ओरसे दोउ चले दृग बानें ॥ १४४ ॥
मोरपखा शिर ऊपर राखिकै गुजकी माल हिये पहरोंगी ॥
ओढ पिताम्बर लै लकुटी वन गावत गोधन संग फिरोंगी ॥
भाव तो मोहि वही रसखान सों तेरे कहे सव स्वांग करोंगी ॥
येमुरली मुरलीधरकी अधरान धरी अधरान धरोंगी ॥ १४५ ॥
को रिझवारिन सो रसखान कहै मुकतान सो मांग भरोंगी ॥
कोउ कहे गहनों अँग अँग दुकूल सुगंध सन्यो पहिरोंगी ॥
तू न कहै यो कहे तौ कहै हूँ कहू न कहूँ तेरे पॉय परोंगी ॥
देखहु याहि सुफूलकी माल यशोमतिलालनिहाल करोंगी॥ १४६॥
लीने अबीर भरे पिचका रसखान खरो बहु भाव भरो जू ॥
मारसे गोपकुमार कुमार वे देखत ध्यान टरो न टरो जू ॥
पूरब पुण्यन दांव परचो अब राज करो उठ काज करो जू ॥
अंक भरी निश्शंक उन्हें यहि पाख पतिव्रत ताख धरो जू ॥ १४७ ॥

कवित्त ।

गोकुल को ग्वाल एक चौमुँहकी ग्वालिन सों, चांचरि रचाई धूअनि महि मचायगो । हिये हुलसाय रसखान तान गाय,

वाके सहज सुभाय सब गांव ललचायगो ॥ पिचका चलाय सब युवती भिजाय लोल, लोचन नचाय उरपुरमे समायगो ॥ सास हितचाय गोरी नदहि नचाय गोरी, वैरिन संचाय गोरी मोहि सकुचायगो ॥ १४८ ॥

सवैया ।

एक समे इक सुदरिको ब्रजजीवन खेलत दीठि परचो है ॥ बाल प्रवीन प्रवीनता कै सरकायकै काधलै चीर धरचो है ॥ यो रस ही रस ही रसखान सखी अपनो मन भायो करचो है ॥ नन्दके लाडिले ढाकदेशीश हहा मेरो गोरस हाथ भरचो॥ १४९॥

दूर ते आय दुरे ही दिखाय अटा चढ जाय गह्यो तहं वारो ॥ चित्त कहूँ चितवै कितहू हित ओर सो चाहि करै चखचारो ॥ रसखान कहै इहि बीच अचानक जाय सिढी चढ सास पुकारो ॥ सूख गईसुकुमारहियोहनि सैननसों,कह्यो कान्ह सिधारो॥ १५०॥

कवित्त ।

आपनो सो ढोटा हम सवहीको जानतहैं, दोऊ प्राणी सबही के काज नित धावही ॥ तेतो रसखान सब दूर ते तमासो देखें, तरनि तनूजा के निकट हू न आवहीं ॥ आन दिन बात अनहित न की कहौं कह, हितू जेजे आये तेऊ लोचन दुरावही ॥ कहा कहौं आली खाली देत सब ठाली हाय, मेरे वनमालीको न कालीते छुडावही ॥ १५१ ॥

सवैया ।

लोग कहैं ब्रजके रसखान अनदित नन्द यशोमति जू पर ॥ छोहरा आज नयो जनम्यो तुम सो कोउ भाग भरचो नही भू पर ॥ वारक दाम सँवार करौ घनी पानी पियो सु उतार लळू पर ॥ नाचत रावरो लाल गुपालहो कालसेव्यालकपालकेऊपर॥ १५२॥

कंसके कोपकी फैल गई जबही ब्रजमंडल बीच पुकार है ॥
आय गयो तबही कछनी कसिकै नटनागर नन्दकुमार है ॥
द्रदको रद खैंच लियो रसखान तबै मन आयो विचार है ॥
लागी कुठौर लई लखि ऐंच कलंक तमाल ते कीरति डार है १५३॥
लाजके लेप चढायकै अंग पची सब सीखको मंत्र सुनायकै ॥
गारुड है ब्रज लोग थक्यो कर औषध बासुक सौंह दिवाय कै॥
ऊधो सो को रसखान कहै जनि चित्त धरो तुम एते उपाय कै ॥
कारेबिसारेकोचाहै उतारचोअरी विष बावरो राख लगायकै १५४॥
सारकी सारी सो भारी लगे धरि है कहां शीश बघंबर दैया ॥
दासी जु सीख दई सुदई पे लई गह क्यो रसखान कन्हैया ॥
योग गयो कुबजाकी कलान मे री कब ऐहै यशोमति छैया ॥
हाहा न ऊधो कुढ़ाय हमे अबहीं कह देब्रज बाजे बधैया॥१५५॥
जानत हो न कछू हम ह्यां उन ह्यां पढ़ि मन्त्र कहा धौं दयोहै ॥
सांची कहै जियमे निज जानकै जानती हौ जस जैसो लयोहै ॥
रसखान यहै सुनकै गुनकै हियरा सत टूक ह्वै फाट गयो है ॥
लोग लुगाई सबै ब्रज माहि कहै हरि चेरीको चेरो भयोहै॥१५६॥
जानै कहां हम मूढ सबै समझी न तबै जबही बन आई ॥
शोच रहीं मनही मन में अब कीजै कहा बतियां कछु भाई ॥
नीचो भयो ब्रज लोकको शीश भली न भई रसखान दुहाई ॥
चेरीको चेटक देखहु री हरी चेरी कियोधौं कहापढ आई॥ १५७॥
काहूको माई कहा कहिये सहिये सु जोई रसखान सहावै ॥
नेम कहा जब प्रेम कियो अब नाचिये सोई जु नाच नचावै ॥
चाहत हैं हम और कहा सखी क्योंहूँ कहूं पिय देखन पावै ॥
चेरिहीसो जु गुपाल रच्यो तौ चलोरी सबैमिलचेरीकहावै १५८॥

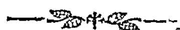
कवित्त ।

ग्वालनके संग जैबो ऐबो औ चरैबो गाय, हेरी तान गैबो शोचि नैन फरकत हैं॥ह्यांके गजमोतिनमाल वारों गुजमालपै, कुज सुधि आये जायप्राण धरकते हैं ॥ गोबरको गारो सुतौ मोहिं लगै प्यारो नहि, भावै ये महल जे जडित मरकत हैं॥मदर तेऊचे कहा मदिर हैं द्वारकाके व्रजके खरक मेरे हिय खरकत है॥ १८९॥

सवैया ।

मोहनजूके वियोगकी ताप मलीन महाद्युति देह तियाकी ॥
पकज सो मुख गो मुरझाय लगै लपटै विरहागि हियाकी ॥
ऐसेमे आवत कान्ह सुने तुलसी सुतनी तरकी अँगियाकी ॥
यो जग ज्योति उठीतनुकीउसकाय दईमनौ वाति दियाकी १९० ॥
इक ओर किरीट लसैं दुसरी दिशि नागनके गण गाजत री ॥
मुरली मधुरी धुनि ओठन पै तुरही कलनाद सो बाजत री ॥
रसखान पितंबर एक कंधा पर एक बघबर छाजत री ॥
अरी देखहु सगम लै बुड़की निकसे वर देप विराजत री॥ १९१॥
यह देख धतूरेके पात चबात सुगात मे धूरि लगावत हैं ॥
चहुँओर जटा अटकीं लटकै शुभ शीश फनी फहरावत हैं ॥
रसखान जोई चितवै चित दै तिहिके दुख द्वद्व भजावत हैं ॥
गज खाल कपालकी मालधरे हर गाल बजावतआवत हैं॥ १९२ ॥
वैद्की औपधि खात कछू न करै कछू सयम री सुन मोसे ॥
तेरोइ पानी पिये रसखानि सजीवन जानि लहै सुख तोसे ॥
एरी सुधामयी भागीरथी सब पथ्य कुपथ्य बनै तोहिं पोसे ॥
आक धतूर चबात फिरै विप खात फिरै शिव तेरे भरोसे ॥ १९३॥
सुनिये सबकी कहिये न कछू रहिये इमि या भव बागर मे ॥

श्रीरामचन्द्रजीके कवित्त ।



सवैया ।

अवधेशके द्वारे सकारे गई सुत गोदमे भूपति लै निकसे ॥
अवलोकि हौ शोचविमोचनको ठगि सी रही जो न ठगे धिकसे॥
तुलसी मनरंजन रंजित अंजन नैन सु खंजन जात कसे ॥
सजनी शशिमें समशील उभै नवनील सरोरुहसे बिकसे १७६॥
पग नूपुर औ पहुँची कर कंजन मंजु बनी मणिमाल हिये ॥
नव नील कलेवर पीत झँगा झलकैं पुलकै नृप गोद लिये ॥
अरविंद सो आनन रूप मरंद अनंदित लोचन भृंग पिये ॥
मनमे न बस्यो ऐसो बालक जो तुलसी जगमे फलको न जिये ॥
तनुकी दुति श्याम सरोरुह लोचन कंज किमंजुलताई हरें ॥
अति सुन्दर सोहत धूर भरे छवि भूरि अनंग कि दूर धरैं ॥
दमकैं दतियां दुतिदामिन ज्यो किलकैं कलबाल बिनोद करें ॥
अवधेशके बालक चारि सदा तुलसी मन मंदिरमे विहरे॥१७७॥
कबहूं शशि मानत आरि करैं कबहूँ प्रतिबिंब निहारि डरैं ॥
कबहूं करताल बजाय के नाचत मातु सबै मन मोद भरैं ॥
कबहूं रिस आइ कहे हठिकै पुनि लेत सोई जिहि लागि अरैं ॥
अवधेशके बालक चारि सदा तुलसी मन मंदिरमे बिहरैं॥१७८॥
पदकंजन मंजु बनी पनही धनुही शर पंकजपाणि लिये ॥
लरिका सँग खेलत डोलत हैं सरयूतट चौहट हाट हिये ॥
तुलसी अस बालक सो नहिं नेह कहा जप योग समाधि किये ॥
नर वे खर शूकर श्वान समान कहो जगमे फल कौन जिये १७९॥
सरयू वर तीरहि तीर फिरैं रघुवीर सखा अरु वीर सबै ॥

धनुहीं कर तीर निपग कसे कटि पीत दुकूल नवीन फबे ॥
तुलसी तेहि औसर लावणिता दश चार नौ तीन एकीस सबे ॥
मति भारति पशु भई जो निहार विचार फिरी उपमा न फबे १८०॥

कवित्त ।

लोचनाभिराम घनश्याम रामरूप शिशु, सखी कहै सखिन-स्रो प्रेमपथ पालि री ॥ बालक नृपालजूके ख्याल ही पिनाक तोग्यो, मडलीक मडली प्रताप दाप दाल री ॥ जनकको सियाको हमारो तेरो तुलसीको, सबको भाव तो ह्वैहै मै जो कह्यो काल री ॥ कौशला की कोखि परतोपि तनु वारियें री, राय दशरत्थकी वलाय लीजै आलि री ॥ १८१ ॥

दूब दधि रोचना कनकथार भर भर, आरती सॅवार वर नार चली गावती ॥ लीनेजयमाल करकज सोहै जानकीके, पहिरावो राघोजीको सखियां सिखावती ॥ तुलसी मुदित मन जनक नगर जन, झांकती झरोखे लागी शोभा रानी पावतीं ॥ मनहुँ चकोरी चारु बैठी निज निज नीड़, चदकी किरन पीवै पलकौ न लावती ॥ १८२ ॥

भले भूप कहत भले सदेश भूपन सों, लोक लखि बोलिये पुनीत रीत मारखी ॥ जगदम्बा जानकी जगतपितु रामचन्द्र, जान जिय जोहो जो न लागे मुख कारखी॥देखेहे अनेक व्याह सुने हैं पुराण वेद, बूझेहें सुजान साधु नर नारि पारखी ॥ ऐसे सम समधी समाज न बिराजमान, रामसे न वर दुलही न सीय सारखी ॥ १८३ ॥

सवैया ।

दूलह श्रीरघुनाथ बने दुलही सिय सुन्दर मंदिर माहीं ॥
गावत गीत सबै मिल सुन्दरि वेद युवा जुरि विप्र पढाहीं॥

रामको रूप निहारत जानकी कंकणके नगकी परछाहीं ॥
यातें सबै सुधि भूल गई कर टेक रही पल टारत नाहीं॥१८४॥
रामके अर्भक काटनको पटु धार कुठार कराल है जाको ॥
सोइ रौं बुझत राजसभा धनुके दलि हौं दलि हौं बल ताको ॥
लघु आनन उत्तर देत बडे लरि हैं मरि है करि है कछु साको ॥
गोरोगरूर गुमान भरचो कहोकौशिक छोटोसो ढोटोहै काको१८५

कवित्त ।

मख राखवेके काज राज मेरे संग, दये दले यातुधान जे जितैया विबुधेश के ॥ गौतमकी तीय तारी मेटे अघ भूरिभारी, लोचन अतिथि भये जनक जनेश के ॥ चंड बाहु दंड बल चंडीशकोदंड खड्यो, ब्याही जानकी नरेश जीते देश देश के॥ साँवरे गोरे शरीर धीर महावीर दोऊ, नाम राम लषण कुमार कोशलेशके ॥ १८६ ॥

सवैया ।

काल कराल नृपालनके धनुभग सुने फरशा लिये धाये ॥
लक्ष्मण राम विलोकि सप्रेम महा रिसहा [illegible] आँखि दिखाये
धीर शिरोमणि वीर बडे विनयी वि[illegible] ।५[illegible] ॥
लायक हौ भृगुनायक सो [illegible] सायक सँ[illegible] लि[illegible]
कीरके कागर ज्यों [illegible] विभूषण [illegible] ।[illegible]

संग सुभामिनि भाय भलो दिन है जतु अवधहु ते पहुनाई ॥
राजिव लोचन राम चले तजि बापको राज बटाऊकी नाई१८९॥

कवित्त।

शिथिल सनेह कहै कौशला सुमित्रा जू सो, मै न लखी सौति सखी भगिनी ज्यों सेई है। कहें मोहिं मैया मे न मैया आलि भरत की, बलैयां लेहों भैया तेरी मैया कैकेई है ॥ तुलसी सरल भाय रघुराय माय मानी, काय मन बानी हूं न जानके मतेई है। बास विधि मेरो सुख सिरिस सुमनसम, ताको छल छुरी कोह कुलिश लै टेई है ॥१९०॥ कीजै कहा जीजै जु सुमित्रा परि पांय कहै, तुलसी सहावे विधि सोई सहियत है। रावरो सुभाव राम जन्म हीते जानियत, भरत कि मात को कीबो सो चहियत है ॥ जाई राजघर व्याही आई राजघर, महाराज पूत याहू पै न सुख लहियत है। देह सुधा गेह ताहि मृगने मलीन कियो, ताहू पर चाहु बिन राहु गहियत है ॥ १९१ ॥

सवैया।

नाम अजामिलसे खल कोटि अपार नदीभव बूडत काढे ॥
जो सुमिरे गिरि मेरु शिलाकन होते अजा खुर वारिधि बाढे ॥
तुलसी जेहिके पदपकज ते प्रगटी तटनी जो हरै अघ गाढे ॥
ते प्रभु या सरिता तरबे कहँ मांगत नाव किनारे ह्वै ठाढे ॥१९२॥
यहि घाट ते थोरिक दूर अहै कटिलो जल थाह देखाइहौ जू ॥
परसे पग धूरि तरे तरनी घरनी घर क्यो समुझाइहौ जू ॥
तुलसी अवलंब न और कछू लरिका केहि भाँति जियाइहौ जू ॥
बरु मारिये मोहि विना पग धोये हौं नाथ न नाव चढाइहौं जू १९२
रावरे दोष न पाँयनको पगधूरिको भूरि प्रभाउ महा है ॥
पाहन ते बलवान न काठको कोमल है जल खाइ रहा है ॥

तुलसी सुन केवटके वर बैन हँसे प्रभु जानकि ओर हहा है ॥
पावन पाँय पखारिकै नाउ चढाय हौं आयसु होत कहाहै १९४॥

कवित्त ।

पात भरी सहरी सकल सुत वारे वारे, केवटकी जाति कछु वेद न पढायहौं । सब परिवार मेरो याही लगि राजा जी हौं दीन वित्त हीन कैसे दूसरी गढायहौं ॥ गौतमकी घरनी ज्यौं तरनी तरेगी मेरी, प्रभुसो निषाद ह्वैके वाद ना वढायहौं । तुलसीके ईश राम रावरे सो सांची कहौं, विना पग धोये नाथ नाव न चढाय हौं ॥ १९५ ॥

जिनको पुनीत वारि शिरसि वहै पुरारि, त्रिपथ गामिनी यश वेद कहैं गायकै । जिनको योगींद्र मुनि वृन्द देव देह दम, करत विविधि योग जप मन लायकै ॥ तुलसि जिनकी धूरि परसि अहल्या तरी, गौतम सिधारे गृह गौनो सो लिवायकै । तेई पाँय पायकै चढाय नाव धोये बिनु, ख्वैहौं न पठावनीकै ह्वैहौं न हँसायकै ॥ १९६ ॥

प्रभु रुख पायकै वोलाय वाल घरनीको, वंदिकै चरण चहुँ दिशि वैठे घेर घेर ॥ छोटो सो कठौता भर आन पानी गंगाजूको, धोय पांय पियत पुनीत वारी फेर फेर ॥ तुलसी सराहैं ताको भाग सानुराग सुर, वरपैं सुमन जय जय कहैं टेर टेर । विवुध सनेह सानी वानी असमानी सुन हँसे राघो जानकी लपण तन हेर हेर ॥ १९७ ॥

सवैया ।

जलको गये लक्ष्मणहैं लरिका परखौ पियछांहिघरीकहैं ठाढे॥
पोछि पसेउ वयारि करो अरु पांय पखारिहौं भूभुर डाढे ॥
तुलसी रघुवीर पिया श्रम जानिकै वैठि विलंव सो कटक काढे॥
जानकी नाहको नेह लख्योपुलकी तनु वारि विलोचन वाढे १९८॥

ठाढे हैं नव द्रुम डार गहे, धनु कांधे धरे कर सायक लै॥ विकटी भृकुटी बड़री अँखिया अनमोल कपोलनकी छवि है॥ तुलसी ऐसी मूरति आनु हिये जड़ डारधौं प्राण निछावरिकै॥ श्रम सीकर साँवरि देह लसै मानो रासि महातम तारकमै॥ १९९॥

कवित्त।

जलज नयन जलजानन जटा है शिर, यौवन उमग अंगउदित उदार हैं। साँवरे गोरेके बीच भामिन सुदामिनी सी, मुनि पट धरे उर फूलनके हार हैं॥ करन सरासन शिलीमुख निषंग कटि, अतिही अनूप काहू भूपके कुमार हैं॥ तुलसी विलोकके तिलोकके तिलक तीन, रहे नर नारि ज्यो चितेरे चित्र सार हैं॥ २०० ॥

आगे सोहै साँवरो कुँवर गोरो पाछे आछे, आछे मुनिवेष धरे लाजत अनग है। बान विशिखासन वसन वनही केकटि, कसेहै वनाय नीके राजत निषग है॥ साथ निशिनाथमुखी पाथ नाथ नंदनी सी, तुलसी विलोके चित लाईलेत सग है॥ आनद उमग मन यौवन उमग तनु, रूपकी उमंग उमगत अग अंगहै॥ २०१॥

सुन्दर वदन सरसीरुह सोहाये नैन, मंजुल प्रसून माथे मुकुट जटनके॥ असन शरासन लसत शुचि शर कर, तूण कटि मुनि पट लूटक पटनके॥ नारि सुकुमारि सग जाके अग उवरके, विधि विरचै वरूथ विद्युत छटनके। गोरको वरन देखे सोनो न सलोनो लागे, सांवरो विलोके गर्व घटत घटनके॥ २०२॥

वल्कल वसन धनु तान पाणि तूण कटि, रूपके निधान घन दामिनी वरन हैं॥ तुलसी सुतीय सँग सहज सोहाये अग, नवल कमलहू ते कोमल चरन हैं। औरै सो बसन्त औरै रति औ रतिपति, मूरति विलोके तन मनके हरन हैं॥ तापस वनाये वेष पथिक पथै सोहाये, चले लोकलोचनन सुफल करन हैं॥ २०२

सवैया ।

बनिता बनि श्यामल गोरेके बीच विलोकहु री सखि मोहिसी ह्वै ॥ मग योग न कोमल क्यो चलिहैं सकुचात मही पदपंकज ह्वै ॥
तुलसी सुन ग्रामवधू बिथकीं पुलकीं तनु औ चले लोचन ह्वै ॥
सब भाँति मनोहर मोहनरूप अनूप हैं भूपके बालक द्वै ॥२०४॥
साँवरे गोरे सलोने सुभाय मनोहरता जित मैन लियो है ॥
बान कमान निषंग कसे शिर सोहैं जटा मुनि वेष कियो है ॥
संग लिये विधु बेनी वधू रतिको जेहि रंचक रूप दियो है ॥
पाँयन तो पनहीं न पयादेहिं क्यो चलिहै सकुचात हियो है२०५॥
रानी मे जानी अयानी महा पवि पाहन हू ते कठोर हियो है ॥
राजहु काज अकाज न जान्यो कह्यो तियको जिहि कान कियोहै ॥
ऐसी मनोहर मूरति ये बिछुरे कैसे प्रीतम लोग जियो है ॥
आँखिनमें सखि राखवे योग इन्हैं किमिकै वनवास दियोहै२०६॥
शीश जटा उर बाहु विशाल विलोचन लाल तिरीछी सी भौंहैं ॥
तूण शरासन बाण धरे तुलसी वन मारगमें सुठि सोहैं ॥
सादर बारहिं बार सुभाय चितै तुम त्यो हमरो मन मोहैं ॥
पूँछत ग्रामवधू सिय सों कहो सांवरो सो सखि रावरो को हैं२०७
सुन सुन्दर वैन सुधारस साने सयानी है जानकी जान भली ॥
तिरछे कर नैन दे सैन तिन्हे समुझाय कछू मुसकाय चली ॥
तुलसी तेहि औसर सोहैं सबै अवलोकति लोचन लाहु अली ॥
अनुराग तड़ागमें भानु उदै विकसी मानों मंजुल कंजकली २०८
धर धीर कहै चल देखिय जाय जहाँ सजनी रजनी रहि हैं ॥
कहि है जग पोच न शोच कछू फल लोचन आपन तौ लहि है ॥
सुख पाय है कान सुने बतियां कल आपुसमें कछु पै कहि हैं ॥
तुलसी अतिप्रेम लखी पुलकैं पुलकी लखि राम हिये महि है२०९॥

पद कोमल श्यामल गौर कलेवर राजत कोटि मनोज लजाये ॥
वर वाण शरासन शीश जटा सरसीरुह लोचन सोन सोहाये ॥
जिन देखे सखी सत भावहुते तुलसी तिन तौ मन फेरि न पाये ॥
यहिमारगआज किशोर वधूविधुबैनीसमेत सुभावसिधाये॥२१०॥
मुख पंकज कंज विलोचन मञ्जु मनोज शरासन सी बनी भौंहैं॥
कमनीय कलेवर कोमल श्यामल गौर किशोर जटा शिर सोहैं॥
तुलसी कटि तूण धरे धनु वाण अचानक दृष्टि परी तिरछे हैं ॥
केहिभाँतिकहौंसजनी तोहिसो मृदुमूरतिद्वैनि बसीमनमोहैं२११॥
शर चारिक चारु बनाय कसे कटि पाणि शरासन सायक लै ॥
वन खेलत राम फिरें मृगया तुलसी छवि सा वरणै किमिकै ॥
अवलोक अलौकिक रूप मृगी मृग चौंक चकै चितवै चित दै ॥
न डगे न भगे जियजान शिलीमुख पंच धरे रतिनाह कहे२१२॥
पंचवटी वर पर्णकुटी तर बैठे हैं राम सुभाय सुहाये ॥
सोहै प्रिया प्रिय वन्धु लसें तुलसी सब अंग घने छवि छाये ॥
देख मृगा मृग नैनी कहे प्रिय बैन ते प्रीतमके मन भाये ॥
हेम कुरंग के संग शरासन सायक लै रघुनायक धाये ॥२१३॥

कवित्त।

देख ज्वालाजाल हाहाकार दशकन्ध सुनि, कह्यो धरो धरो धाये वीर बलवान हैं ॥ लिये शूल शैल पाश परिघ प्रचंड दंड, भाजन सनीर धीरधरे धनु बान है ॥ तुलसी समिध सौंज लंक यज्ञकुंड लखि, यातुधान पूगीफल यव तिल धान है ॥ स्रुवा से लँगूर वल मूल प्रतिकूल हवि, स्वाहा महाहांक हांक हन हनुमान हैं ॥ २१४ ॥ बडो विकराल वेष देख सुन सिंह नाद, उठ्यो मेघनाद सविषाद कहै रावनो ॥ वेग जितो मारुत प्रताप मारतण्ड कोटि, कालऊ करालता वडाई जितो बावनो ॥ तुलसी

सयाने यातुधाने पछिताने कहैं, जाको ऐसो दूत सो तो प्रभु अवै आवनो ॥ काहेकी कुशल रोपे राम वामदेव हू की, विपम वली सों वादि बैरको बढावनो ॥ २१५ ॥

हाट बाट कोट ओट अटन अगार पौंर, खोर खोर दौर दौर दीनी अति आगि हैं ॥ आरत पुकारत सँभारत न कोऊ काको, व्याकुल जहाँ सो तहाँ लोक चले भागि हैं ॥ वालधी फिरावे वार वार झहरावे झरें बूँदिया सी लंक पघिलाई पागि पागिहें॥ तुलसी विलोकि अकुलानी यातुधानी कहें, चित्रहूके कपि सो निशाचर न लागि हैं ॥ २१६ ॥

आय हनुमान प्राण हेतु अंकमाल देत, लेत पग धूरि एक चूँवत लगूर है । एक बूझे वार वार सीय समाचार कहो, पवनकुमार भो विगत श्रम शूल है। एक भूँखे जान आगे आन कन्द मूल फल, एक पूजे वाहु वल मूल तोर फूल है ॥ एक कहे तुलसी सकल सिधि ताके जाके,कृपानाथ नाथ सीतानाथ सानुकूल है॥२१७॥

सवैया।

विश्व जयी भृगुनायक से बिनु हाथ भये हनि हाथ हजारी ॥
बातुल मातुलकी न सुनी सिखं का तुलसी कपि लंक न जारी ॥
अजहूँ तो भलो रघुनाथ मिलै फिर बुझिहै को गज कौन गजारी॥
कीर्ति बडो करतूति बडोजन वात बडो सो बडोई बजारी २१८ ॥

कवित्त।

दूपण विराध खर त्रिशिरा कवन्ध वधे, तालहू विशाल वेधे कौतुक हे कालिको ॥ एकही विशिप वश भयो वीर बांकुरो सो, तहू है विदित जस महावली वालि को ॥ तुलसी कहत हित मानत न नेक शक, मेरो कहा जैहे फल पेहे तू कुचालि को ॥ वीरजाति

केसरी कुठारपाणि मानी हार, तेरी यहा चली बूडे तोसे गने घालिको ॥ २१९ ॥

सवैया।

तोसों कहों दशकंधर रे रघुनाथ विरोध न कीजिये बौरे ॥
वालि वली खर दूषण और अनेक गिरे जेते भीतिमे दौरे ॥
ऐसिय हालभई तोहि कौन तो लै मिलु सीय चहे सुख जोरे ॥
रामके रोप न राखिसकै तुलसी विधि श्रीपति शकर सोरे॥२२०॥
तू रजनीचरनाथ महा रघुनाथके सेवकको जन मै हौं ॥
वलवानहैश्वान गली अपनी तोहिलाज न गाल वजावत सोहौ॥
वीस भुजा दश शीश हरौ न डरौ प्रभु आयसु भंग ते जो हौं ॥
खेतमे केहरी ज्यो गजराज दलौ वालिको वालक तो हौं२२१॥
कौशलराजके काज हौ आज त्रिकूट उपारि लै वारिधि वोरौ ॥
त्यो भुजदंड द्वै अंडकटाह चपेटके चोट चटाक दे फोरौ ॥
आयसु भगते जो न डरो सव मीजि सभासद शोणित घोरौ ॥
वालिको वालक तो तुलसी दशहू मुखके रणमे रद तोरौ ॥२२२॥
अतिकोपसो रोप्यो है पाँउ सभा सवलक सशकित शोर मचा ॥
तमके घननाद से वीर प्रचारके हार निशाचर सैन पचा ॥
न टरे पग मेरुहु ते गरु भो सो मनौ महिसग विरचि रचा ॥
तुलसी सव शूर सराहत है जगमे वलशालि है वालि वचा॥२२३॥

झूलना।

कनकगिरि शृङ्ग चढि देख मर्कट कटक वदत मदोदरी परम भीता॥सहजभुज मत्त गजराज रण केशरी परशुधर गर्व जेहि देख वीता॥दास तुलसी समर सवल कौशल धनी ख्याल ही वालि वलशालि जीता ॥ रे कन्त तृण दन्तगहि शरन श्रीराम कहि अजहु यहि भांति लै सौंप मीना ॥ २२४ ॥

रे नीच मारीच बिचलाय हति ताडका भंजि शिवचाप सुख सबहि दीनो ॥ सहस दसचार खल सहित खर दूषणहि पठै यम धाम तें तउ न चीनो॥ मैं जो कहौं कन्त सुन मन्त भगवन्त सो विमुख है बालि फल कौन लीनो ॥ बीस भुज शीश दश खीस गे तबहि जब ईशके ईश सो वैर कीनो ॥ २२५॥

बालि दलि कालि जलयान पापान किये कंत भगवंत तें तव न चीने ॥ विपुल विकराल भट भालु कपिकालसे संग तरु तुंग गिरि शृंगलीने॥आयगो कोशलाधीश तुलसीश जिहँ छत्र मिस मौलि दश दूर कीने ॥ ईश बकसीस जनि खीस करु ईश सुनु अजहुँ कुल कुशल वैदेहि दीने ॥ २२६ ॥

कवित्त।

कह्यो मन मातुल विभीषण हुँ बार बार, अचल अपार पिय पांय लेरु हौ परी ॥ विदित विदेहपुर नाथ भृगुनाथ गति, समय सयानी कीनी जैसी आइ गौ परी ॥ वायस विराध खर दूषण कबंध बाली, वैर रघुवीरके न पूरी काहूकी परी॥कंत बीस लोचन विलोकिये कुमंत फल, ख्याल लंका लाय कपि रांड कीसी झोपरी ॥ २२७ ॥

रोपो रण रावण बोलाये बीर बान इत, जानत जे रीति सब संयुग समाज की ॥ चली चतुरंग चमू चपर हने निसान, सेना सरहान योग गतिचर राज की ॥ तुलसी विलोक कपि भालु किलकत ललकत लख ज्यों कगाल पातरी सुनाज की ॥ राम रुख निरख हरष्यो हिय हनुमान मानो खेलवारे खोले शीश ताज बाज की ॥ २२८ ॥

हाथिन सो हाथी मारे घोरो सो घोरे सहारे,रथन सो रथ बिद-रानि बलवानकी ॥ चंचल चपेट चोट चरण चकोर चाहैं, दाबि

हहरानी फौजें भागी यतुधानकी ॥ वार वार सेवक सराहना करत राम, तुलसी सराहै रीति साहव सुजानकी ॥ लांवी लूम लसत लपेट पटकत भट, देखो देखो लषण लरनि हनुमानकी ॥२२९॥

सवैया।

कानन वास दशानन सो रिपु आननश्री शशि जीतलियोहै॥
वालि महा वलशालि दल्यो कपिपाल विभीषण भूप कियो है ॥
तीय हरी अरु बंधु पर्‌यो पै भर्‌यो शरणागत शोच हियो है ॥
वांहपसार उदार कृपाल कहां रघुवीर सो वीर वियो है॥ २३० ॥
शोकसमुद्र निमज्जन काढि कपीश कियो जग जानत जैसो ॥
नीच निशाचर वैरीको वधु विभीषण कीनो पुरंदर तैसो ॥
नाम लिये अपनाय लियो तुलसी सो कहो जग कौन अनैसो ॥
आरत आरतिभंजन राम गरीवनेवाज न दूसर ऐसो ॥ २३१ ॥
मीत पुनीत किये कपिभालुको पाल्यो नकाहू ज्यो वालतनू जो॥
सज्जनसीव विभीषण भो अजहूं विलसै वर बंधु वधू जो ॥
कोशलपाल विना तुलसी शरणागतपाल कृपालु न दूजो ॥
क्रूर कुजाति कुपूत अघी सवकी सुधरै जो करै नर पूजो२३२ ॥
अपराध अगाध भये जन ते अपने उर आनत नाहिन जू॥
गणिका गज गीध अजामिल के गनि पातकपुंज सराहि न जू॥
लियेवारक नाम सुधाम दियो जिहि धाम महामुनि जाहिं न जू ॥
तुलसी भजु दीनदयालहि रे रघुनाथ अनाथहि दाहिनजू॥२३३॥
प्रभु सत्य करी प्रह्लाद गिरा प्रगटे नर केहरि खंभ महा ॥
झपराज ग्रस्यो गजराज कृपा ततकाल विलम्ब किये न तहां ॥
सुर साखी दै राखी है पांडुवधू पट लूटत कोटिक भूप जहां ॥
तुलसी भजु शोचविमोचनको जनको प्रण रामन राख्यो कहां२३४
नर नारि उघारि सभामहँ होत दियो पट शोच हर्‌यो मनको ॥

प्रहलाद विपाद निवारन वारण तारण मीत अकारनको ॥
जो कहावत दीनदयालु सही जेहि भार सदा अपने पनको ॥
तुलसी तज आन भरोस भजै भगवान भलो करिहैं जनको२२५॥
ऋपिनारि उधारि कियो शठ केवट मीत पुनीत सुकीर्ति लही ॥
निजलोक विरोध सभीत विभीपण भूप कियो जग लीक रही ॥
दशशीश विरोध सभीत विभीपण भूप कियो जग लीक रही ॥
करुणानिधिको भजु रे तुलसी रघुनाथ अनाथको नाथ सही२२६
कौशिक विप्र वधू मिथिलाधिपके सब शोच दले पलमाहें ॥
वालि दशानन वधु कथा सुन शत्रु सुसाहिब शील सराहें ॥
ऐसी अनूप कहें तुलसी रघुनायककी अगुनी गुनगाहें ॥
आरत दीन अनाथनको रघुनाथ करें निज हाथन छाहें२२७॥

कवित्त ।

यातुधान भालु कपि केवट विहंग जो जो पालो नाथ सद्य सो सो भयो कामकाजको ॥ आरत अनाथ दीन मलिन शरण आये राखे सनमान सो सुभाउ महाराजको ॥ नाम तुलसी पै भोंडे भाग सो कहायो दास किये अंगीकार ऐसे बडे दागावाज को॥ समर्थ दशरत्थके दयाल देव दूसरो न तोसो तुही आपनेकी लाज को ॥ २२८ ॥

महावलि वलि दलि कायर सुकंठ कपि सखा किये महाराज हौ न काहू कामको॥भ्रातघात पातकी निशाचर शरन आये किये अंगीकार नाथ एते बडे वामको ॥ राय दशरत्थके समर्थ तेरे नाम लिये तुलसीसे कूर को कहत जग रामको॥अपने निवाजे की तो लाज महाराज को सुभाउ समुझत मन मुदित गुलामको ॥ २२९ ॥

रूप शील सिंधु गुण सिंधु बन्धु दीनको, दयानिधान जान मणि वीर वहु बोलको॥श्राद्ध कियो गीधको सराहे फल शवरीके, शिला शाप सवन निबाह्यो नेह कोलको॥तुलसी उचाउ होत राम को सुभाउ सुनि, को न वलि जाय न विकाय विन मोल को ॥ ऐसे हूँ सुसाहिव सों जाको अनुराग न, सो वड़ाई अभागो भाग जागो लोभ लोलको ॥ २४० ॥

शूर शिरताज महाराजनके महाराज,जाको नाम लेतही सुखेत होत ऊसरो ॥ साहिव कहां जहान जानकीश सो सुजान सुमिरे कृपालुके मराल होत खूसरो ॥ केवट पषाण यातुधान कपि भालु तारे, अपनायो तुलसी सो धींग धाम धूसरो॥ बोलेको अटलबांह को पगार दीनबंधु,दूबरोको दानी को दयानिधान दूसरो ॥२४१॥

कीबे को विशोक लोक लोक पालहू ते सब, कहूँ कोऊ भो न चरवाहो कपि भालु को । पविको पहार कियो ख्याल ही कृपालु राम, वपुरो विभीषण घरोधा हुतो वालको ॥ नाम ओट लेत ही निखोट होत खोटे खल, चोट विन मोट पाय भयो न निहाल को। तुलसी की वार वलि ढील होत शीलसिंधु, विगरी सुधारबे को दूसरो दयाल को ॥ २४२ ॥

नाम लिये पूतको पुनीत कियो पातकीश, अरति निवारी प्रभु पाहि कहे फील की । छलिनकी छोडी सी निगोडी छोटी जाति पांति, कीनी लीन आपमें भामिनी भोंडे भीलकी ॥ तुलसी औतारबो बिसारबो न अन्त मोहु, नीकी है प्रतीत रावरे सुभाव शीलकी ॥ देव तो दयानिकेत देत दाद दीननकी,मेरी बार मेरेही अभाग नाथ ढीलकी ॥ २४३ ॥

आगे परे पाहन कृपा किरात कोलन, कपीश निशिचर अपनाये नाये माथ जू । सांची सेवकाई हनुमानकी सु जान

राम रिनिया कहाये हो बिकाने ताके हाथ जू ॥ तुलसीसे र
खरे होत ओट नामहीकी,महंगी माटी मगहू की मृगमद साथ
बात चले बात कौन मानबो बिलग बलि, काकी सेवा रीझ
निवाजो रघुनाथ जू ॥ २४४ ॥

शिला शाप पाप गुह गीध को मिलाप शेवरी के, पास अ
चलिगये हो सो सुनी मे । सेवक सराह कपिनायक विभीपण क
भरत सभा सादर स्नेह सुरधुनी में ॥ आलसी अभागी अ
आरत अनाथ पाल, साहिब समर्थ कर नीके मन गुनी में ॥ दो
दुख दारिद दलैया दीनबन्धु राम, तुलसी न दूसरो दयानिधा
दुनी में ॥ २४५ ॥

भूमिपाल व्यालपाल नाकपाल लोकपाल, नग्रत कृपालक
सबै के जी की थाह ली ॥ कादरको आदर काहूके नाहिं देखिय
त, सबन सोहात है सेवा सुजान टाहली ॥ तुलसी सुभाय क
नहिं कछु पक्षपात, कौने ईश किये कीश भालु खास माहली ॥
रामहीके द्वारेपै बोलाय सनमानियत, मोसे दीन्न दूवर कपूत
कूर काहली ॥ २४६ ॥

सवैया ।

जाके विलोकत लोकप होत विशोक लहै सुरलोक सुठौरहि॥
सो कमला तजि चचलता अरु कोटि कला रिझवे शिर मौरहिं॥
ताको कहाय कहै तुलसी तुल जाहि न मांगत कूकर कौरहि ॥
जानकी जीवनकोजन है जरजाउ सो जीह जो जाचत औरहिं२४७
सुन कान दिये नित नेम लिये रघुनाथहिके सुन गाथहि रे ॥
सुख मन्दर सुन्दर रूप सदा उर आन धरे धनु भाथहि रे ॥
रसना निशिवासर सादर सो तुलसी जप जानकी नाथहि रे॥
कर संग सुसंतनसो नितही तज कूर कुपंथ कुसाथहि रे ॥२४८॥

सुत दार अगार सखा परिवार विलोक महा कुसमाजहि रे ॥
सबकी ममता तजिकै समता सज संत समान विराजहि रे ॥
नर देह कहा कर देख विचार विगार गवाँर न काजहि रे॥
जनि डोलहि लोलुप कूकर ज्यों तुलसी भज कौशलराजहि रे २४९
जनम्यो जेहि योनि अनेक क्रिया सुखलाग करी न परे बरनी ॥
जननी जनकादि हितू भये भूरि वहोरि भई उर की जरनी ॥
तुलसी अब रामको दास कहाय हिये धर चातककी धरनी ॥
कर हसको वेश बडो सबसे तज दे बक वायसकी करनी ॥२५०॥
भल भारत भूमि भले कुल जन्म समाज शरीर भलो लहिकै ॥
ममता करखा तजिकै वरखा हिम मारुत घाम सदा सहिकै ॥
भजि हैं भगवान सयान सोई तुलसी हठ चातक ज्यों गहिकै ॥
नत और सबै विषबीज बुये हर हाटक कामधुका नहिकै ॥२५१॥
सो सुकृती शुचि सत सुसन्त सुजान सुशील शिरोमणि स्वै ॥
सुर तीरथ तासु मनावत आवत पावन होत है ता तन छै ॥
गुनगेह सनेह को भाजन सो सबही सो उठाय कहो भुज द्वै ॥
सतभाव सदा छल छाँडि सबै तुलसी जो रहै रघुवीर को ह्वै ॥२५२॥
सो जननी सो पिता सोई भ्रात सो भामिनि सो सुत सो हित मेरो ॥
सोई सगा सो सखा सोई सेवक सो गुरु सो सुर साहिब चेरो ॥
सो तुलसी प्रिय प्रानसमान कहाँलौ बनाय कहो बहुतेरो ॥
जो तज देहको गेहको नेह सनेह सो रामको होय सचेरो॥२५३॥
राम है मातु पिता सुत बंधु औ संग सखा गुरु स्वामि सनेही ॥
रामकी सौंह भरोसो है राम को राम रँगी रुचि राचो नकेही ॥
जीवत राम मुये पुनि राम सदा रघुनाथहि की गति जेही ॥
सोई जिये जगमे तुलसी नतु डोलत और मुये धर देही ॥ २५४॥
सिय राम स्वरूप अगाध अनूप विलोचन मीनन को जल है ॥

श्रुति रामकथा मुख रामको नाम हिये पुनि रामहिको थल है॥
मति रामहि सो गति रामहिं सों रति राम सो रामहिं को बल है॥
सबकी न कहै तुलसीके मते इतनो जग जीवनको फलहै ॥२८५॥
झूठो है झूठो है झूठो सदा जग संत कहत न अंत लहा है ॥
ताको सहै शठ संकट कोटिक काढ़त दंत करंत हहा है ॥
जान पने को गुमान बडो तुलसी के बिचार गवाँर महा है ॥
जानकीजीवन जान न जान्यो तो जान कहावत जान कहाहै२८६
तिनते खर सूकर श्वान भले जड़ता वश ते न कहैं कछु वै ॥
तुलसी जिहि राम सों नेह नही सो सही पशु पूछ विपाण न द्वै ॥
जननी कत भार मुई दसमास भई किन बांझ गई किन च्वै ॥
जरिजाउ सो जीवन जानकीनाथ जिये जगमें तुम्हरो विन ह्वै२८७
गज वाजि घटा भले भूरि भटा वनिता सुत भौंह तकै सब कै ॥
धरनी धन धाम शरीर भला सुरलोकहू चाहि इहै सुख स्वै ॥
सब फोटक सोटक है तुलसी अपनो न कछू सपनो दिन द्वै ॥
जरिजाउ सो जीवन जानकीनाथ जिये जगमे तुम्हरो विन ह्वै २८८
सुरराज सो राजसमाज समृद्ध विरिंचि धनाधिप सो वन भो ॥
पवमान सो पावन सो यम सोम सो पूषन सो भवभूषन भो ॥
कर योग समाधि समीरन साधिके धीर बडो वशहू मन भो ॥
सबजाय सुभाय कहै तुलसी जो न जानकीजीवनको जन भो २८९
व्याल कराल महाविप पावक मत्त गयदन के रद तोरे ॥
सासत संग चली डरपे हुते किंकर ते करनी मुख मोरे ॥
नेक विषाद नही प्रहलादहिं कारन केहरि के बल हो रे ॥
कौनकी त्रास करै तुलसी जोपै राखिहै राम तो मारिहै को रे२९०
कृपा जेहि की कछु काज नही न अकाज नही जेहिको मुख मोरे॥
करै तिनकी [illegible] को जाहि विपाण न पूंछ फिरै दिन दोरे॥

तुलसी जिहिके रघुवर से नाथ समर्थ सो सेवक रीझत थोरे ॥
कहा भव भीर परी तिहि धो विचरे धरनी तिनसों तृण तोरे२६१॥
कानन भूधर वारि बयारि महाविप व्याधि दवा अगि घेरे ॥
सकट कोटि जहां तुलसी सुत मात पिता हित बंधु न नेरे ॥
राखि है राम कृपाल तहां हनुमान से सेवक हैं जेहि केरे ॥
नाक रसातल भूतलमे रघुनायक एक सहायक मेरे ॥ २६२ ॥
जवै यमराज रजायसु ते मोहि लै चलि हैं भट बांधि नटैया॥
तात न मात न स्वामि सखा सुत बधु विशाल विपत्ति बटैया ॥
सासत घोर पुकारत आरत कौन सुनै चहुँओर डटैया ॥
एक कृपाल तहां तुलसी दशरत्थको नदन वंदि कटैया ॥ २६३ ॥
जहां यम यातन घोर नदी भट कोटि जलचर दत टेवैया ॥
जहां धार भयंकर वार न पार न वोहित नाव न मीत खेवैया ॥
तुलसी जहां मात पिता न सखा नही कोऊ कहूं अवलब देवैया ॥
तहां विनकारन रामकृपाल विशाल भुजा गहि काढि लेवैया२६४॥
जहां हित स्वामि न सग सखा वनिता सुत बधु न बाप न मैया॥
काय गिरा मनके जनके अपराध सबै छल छांडि छमैया ॥
तुलसी तेहिकाल कृपाल विना दूजो कौन है दारुन दु:ख दमैया॥
जहां सब सकट दुर्घट शोच तहां मेरो साहिब राखे रमैया २६५॥
जप जोग विराग महामख साधन दान दया दम कोटि करै ॥
मुनि सिद्ध सुरेश गणेश महेश से सेवत जन्म अनेक मरै ॥
निगमागम ज्ञान पुरान पढे तपसानल मे जुगपुज जरै ॥
मन सो पन रोपि कहै तुलसी रघुनाथ विना दुख कौन हरै २६६॥
पाप हरे परिताप हरे तन पूजि भो हीतल शीतलताई ॥
हस कियो बल ते बलि जाऊँ कहां लौ कहौ करुना अधिकाई॥
काल विलोक कहै तुलसी मनमे प्रभुकी परतीति अघाई ॥

जन्म जहां तहँ रावरेसों निबहे भरि देह सनेह सगाई ॥२६७॥
लोक कहै अस होहुँ कहों जन खोटो खरो रघुनायक ही को ॥
रावरी राम बडी लघुता जश मेरो भयो सुख दायक ही को ॥
कै यह हानि सहो बलि जाउँ कि मोहू करो निजलायक ही को॥
आन हिये हितमानकरो जो हौ ध्यान धरौ धनुसायक ही को२६८

कवित्त।

छार ते सवार कै पहार हू भारी कियो, गारो भयो पांचमें पुनीत पच्छ पाइ कै ॥ हौ तो जैसो तब तैसो अब अधमाइ कै कै, भरो पेट राम रावरोई ग्न ्ाय कै ॥ आपने निवारे कीजे कीजे लाज महाराज, मेरी ओर हेर कै न बैठिये रिसाय कै ॥ पालकै कृपाल व्यालवाल को न मारिये, औ काटिये न नाथ विषहू को रूख लायकै ॥ २६९ ॥

वेदन पुरान गान जानो न विज्ञान ज्ञान, ध्यान धारना समाधि साधन प्रवीनता ॥ नाहिन विराग जोग जाग भाग तुलसीके, दाय दान दूबरो हौं पापहीकी पीनता ॥ लोभ मोह काम कोह दोष कोप मो सो कौन, कलिहू जो सिखि लई मेरी ये मलीनता ॥ एकही भरोसो राम रावरो कहावत हौ, रावरे दयाल दीनबंधु मेरी हीनता ॥ २७० ॥

रावरो कहावो गुन गावों राम रावरोई, रोटी द्वै हौ पावों राम रावरी ही कानि हौ ॥ जानत शहान मन मेरेहू गुमान बड़ो, मान्यो मैं न दूसरो न मानत न मानि हौ ॥ पांचकी प्रतीत न भरोसो मोहिं आपनोई, तुम अपना यहो तबहि पार जानिहौ ॥ गढगृढ़ छोल छाल कुंद कैसी भाई बातें, जैसी सुख कहो तैसी जीय जब आनिहौ ॥ २७१ ॥

वचन विकार कर तवहु सुआर मन, विगतविचार कलिमलको निधान है ॥ रामको कहाय नाम बेंच बेंच खाय, साधसगत न जाय पाछिलेको ऊपखान है ॥ तेहू तुलसीको लोग भलो कहे ताको पुनि, दूसरोन हेत एक नीके के निदान है ॥ लोकरीत विदित विलोकियत जहां तहां, स्वामिके सनेह श्वानहूको सनमान है ॥ २७२ ॥

स्वारथको साज न समाज परमारथको, मोसो दगाबाज दूसरो न जगजाल है ॥ कौन आयो करो न करौगो करतूति भली, लिखी न विरंचिहूँ भलाइ मोरे भाल है ॥ रावरो शपथ राम नामही की गति मेरे, इहां झूँठो झूँठो सो तिलोक तिहूँकाल है ॥ तुलसीको भलो पै तुम्हारेही किये कृपाल, कीजे न विलंब वलि पानी भरी खाल है॥ २७३ ॥

रागको न साज न विराग जोग जाग जिय, कायर न छाडि देते ठाटिवो कुठाट को ॥ मनोराज करत अकाज भयो आज लग, चाहै चारु चीरपै लहै न टूक टाट को ॥ भयो करतार बडे कूरको कृपाल अति, पायो नाम पारसहौं लालची वराटको तुलसी वनीहै राम रावरे वना ये न तो, धोबी कैसो कूकर न घरको न घाटको ॥ २७४ ॥

सब अँग हीन सब साधन विहीन, मन, वचन मलीन हीन कुल करतूतिहौ ॥ बुधि वल हीन भाव भगति विहीन दीन, गुन ज्ञान हीन हीन भागहू विभूति हौं ॥ तुलसी गरीबकी गई वहोर रामनाम जाहि जप जीह राम हू को वैठो धूति हौं ॥ प्रीति रामनामसों प्रतीत रामनामको, प्रसाद रामनाम के पसारि पायँ सूतिहौं २७५॥

जोग न विराग जप जाग तप त्याग व्रत तीरथ न धर्म जानों वेद विधि किमि है ॥ तुलसीसो पोच न भयो है नहिं ह्वै है

कहूँ, शोच सब याके, अघ कैसे प्रभु छमि है ॥ मेरे तौ न डर रघु-वीर सुनो साँची कहौं, खल अनखैहैं तुम्हे सज्जऊ न गमि हैं ॥ भले सुकृतीके सङ्ग मोहि तुल तौलिये तौ, नामके प्रसाद भार है ॥ २७६ ॥

जातिकेसुजातिके कुजातिके पेटागिवश,खाये टूकसबकेविदित बात दुनी सो ॥ मानस वचन काय किये पाप सतभाय, रामको कहाय दास दगाबाज पुनि सो ॥ रामनामको प्रभाव पाउ महिमा प्रताप, तुलसी सो जग मानियत महामुनि सो ॥ अतिहि अभागे अनुरागत न रामपद, मूढएतोबडो अचरज सुनीदेख सो २७७ ॥

वेदहूँ पुरान कही लोकहूँ विलोकियत, रामनाम हीसे रीझे सकल भलाई है ॥ काशिहूँ मरत उपदेशतमहेश सोई, सधन अनेक चितई न चित लाई है ॥ छांछको ललात जेते रामनामके प्रसाद, खात खुनसात सोधे दूधकी मलाई है ॥ रामराजसु नियत राज-नीतकी अवधि, नामराम रावरो तो चामकी चलाई है ॥ २७८ ॥

जपको न तपखप कियो न कमाई जोग, जागनविरागत्याग तीरथ न तनको ॥ भाईको भरोसो न खरोसो वर रिपुहू सो, वल अपनो न हित जननीजनकको ॥ लोकको न डर परलोकको न सोच देव सेवा न सुहाई गर्व धामको न धनको ॥ रामहीके नामते जो होई सोई नीको लागे, ऐसी ही सुभाउ कछु तुलसीके मनको ॥ २७९ ॥

ईश न गनेश न धनेश न दिनेश न, सुरेश सुर गौरी गिरा पति नहिं जपने ॥ तुमरोई नामको भरोसो भव तरवेको, बैठे उठे जागत बागत सोये सपने ॥ तुलसीहै बावरो सो बावरोई रावरो सो, रावरेहू जान जीव कीजिये जू अपने ॥ जानकी जीवन मेरे रावरे वदन फेरे, ठाँउ न समाउँ कहूँ सकल निरपने ॥ २८० ॥

स्वारथ सयानप प्रपच परमारथ, कहायो राम रावरे हो जानत जहान है । नामके प्रताप बाप आज लौं निबह नीकी, आगेकी गोसाईं स्वामी सबल सुजान है ॥ कलिकी कुचाल देख दिन दिन दूनी देव, पाहरोई चोर हेर हिय हहरान है ॥ तुलसी की लिपि वार वार ही सम्हार कीबो, यद्यपि कृपानिधान सदा सावधान है२८१

जागिये न सोइये बिगोइये न जन्म जाय, दिन दुःख रोइये कलेश क्यों है काम को ॥ राजा रंक रागी औ विरागी भूरिभागी ये, अभागी जीव जगत प्रभाव कलिनामको॥तुलसी कबन्ध कैसो धायबो जो सब अन्ध, धन्य देखियत जग सोच परिनाम को ॥ सोइबो जो रामके सनेहकी समाधिसुख, जागिबो जो जीह जपै नीके रामनाम को ॥ २८२ ॥

बरन धरम गयो आश्रम निवास तज्यो,त्रासन चकृत सोपरावनो परोसो है॥करम उपासना कुवासना बिनास्यो ज्ञान, वचन विराग वेष जगत हरोसो है॥ गोरख जगायो जोगभगति भगायो लोग, निगम नियोगते सो कलिते छरो सो है ॥ काय मन वचन सुभाव तुलसी है जाहि, रामनाम को भरोसो ताहि को भरोसो है ॥ २८३ ॥

सवैया ।

वेद पुरान विहाय सुपन्थ कुमारग कोटि कुचाली चली है ॥
काल कराल नृपाल कृपाल न राजसमाज बड़ोही छली है ॥
वर्णविभाग न आश्रमधर्म दुनी दुख दोष दरिद्र दली है ॥
स्वारथको परमारथको कलि रामको नाम प्रताप बली है॥२८४॥
न मिटै भवसंकट दुर्घट है तप तीरथ जन्म अनेक अटो ॥
कलिमें न विराग न ज्ञान कहूँ सब लागत फोकट झूँठ जटो ॥

नट ज्यो जिन पेट कुपेटके कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो।
तुलसी जो सदासुख चाहिये तो रसना निशिवासर राम रटो२८
दम दुर्मद दान दया मख कर्म सुधर्म अधीन सबै धनको।
तप तीरथ साधन योग विराग सु होय नहीं दृढता तनको॥
कलिकाल करालमें राम कृपाल इहै अवलम्ब वडी मनको॥
तुलसी सब संयम हीन सबै एक नाम अधार सबै जनको॥२८६
पाय सुदेह विमोह नदी तरनी न लही करनी न कछूकी॥
रामकथा बरनी न बनाय सुनी न कथा प्रहलाद न ध्रुवकी॥
अब जोर जरा जर गात गये मन मान गलान कुबान न मूकी॥
नीकके ठीक दई तुलसी अवलम्ब वडी उर आखर दूकी॥२८७॥
राम विहाय मरा जपते बिगरी सुधरी कवि कोकिल हूकी॥
नामहि ते गजकी गनकाहू अजामिलकी चलिगै चल चूकी॥
रामप्रताप बडे कुसमाज बचाय रही पति पांडवधूकी॥
ताको भलो अजहूं तुलसी जेहि प्रीति प्रतीतिहै आखर दूकी २८८

कवित्त।

बबुर बहरको बनाय बाग राखियत, रूँधको सोऊ सुरतरु काटियत है॥गारी देत नीच हरिचंदहू दधीचहूको,आपने चना चवाय हाथ चाटियत है॥ आप महापातकी हँसत हारि हरहूको, आप है अभागी भूरिभागी डाटियत है ॥ कालिकी कलुष मन मलिन किये महत, मशककी पांसुरी पयोधि पाटियत है॥२८९॥

सवैया।

कीबे कहा पढ़वेको कहा फल बूझ न वेदको भेद विचारचो॥
स्वारथको परमारथको कलि कामद रामको नाम बिसारचो॥
वाद विवाद विषाद बढायके छाती पराई औ आपनि जारचो॥
चारहुको छहुको नवको दस आठको पाठ कुकाठ ज्यों फारचो२९०

कवित्त।

नाही मेरे जाति पाँति नाही मेरे माय बाप, नाही मेरे कोऊ काम हौ न काहू कामको॥ लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब, भारी है भरोसो तुलसीके एक नामको॥ अति ही सयानो उपखानो नहि बूझे लोग, साहिबके गोत गोत होत है गुलामको॥ साधुके असाधुके भलोके पोच सोच कहा, का काहू के द्वार परचो जो हौ सो हौ रामको॥ २९१॥

कोऊ कहै करत कुसाज दगाबाज बडो, कोऊ कहै रामको गुलाम खरो खूब है॥ साधु जाने महा साधु खल जाने महाखल, बानी झूँठीसाँची कोटि उठत हबूब है॥ चहत न काहू सोकहत न काहूको, कछू सबकी सहत उर अन्तर न ऊब है॥ तुलसीको भलो पोच हाथ रघुनाथ हीके, रामकी भगति भूमि मेरी मति दूब है॥ २९२॥

जागे जोगी जगम जती समाधि ध्यान धरैं डरें उर भारी लोभ मोह कोह कामके॥ जागे राजा राज काज सेवक समाज साज, सोचै सुन समाचार बडे वैरी वामके॥ जागे बुध विद्याहित पडित चकित चित, जागे लोभ लालच धरनि धन धामके॥ जागे भोगी भोग ही वियोगी रोगी रोगवश सोवै सुख तुलसी भरोसे एक रामके॥ २९३॥

छन्द षट्पद।

राम मात पितु बधु सुजन गुरु पूज्य परम हित। साहब सखा सहाय नेह नातो पुनीत चित॥ देश कोश कुल धर्म कर्म धन धाम धरनि गति। जाति पांति सबभांति लागि रामहि हमरि पति॥ परमारथ स्वारथ सुयश सुलभ रामते सकल फल। कहै तुलसिदास अब जब कबहुँ एक रामते मोर भल॥ २९४॥

महाराज बलजाउँ राम सेवक सुखदायक । महाराज बलजाउँ राम सुन्दर सब लायक॥महाराज बलजाउँ राम सब संकटमोचन महाराज बलजाउँ राम राजीवविलोचन ॥ बलजाउँ राम करुणा-यतन प्रणतपाल पातकहरन । बलजाउँ राम कलिमलविकल तुलसिदास राखिय शरन ॥ २९५ ॥

जय ताड़का-सुबाहुमथन मारीचमानहर । मुनिमखरक्षण दक्ष शिला तारन करुनाकर ॥ नृपगन बल मद सहित शम्भुकोदंड बिहडन ॥ जय कुठारधर दर्पदलन दिनकर कुलमंडन॥जय जनकनगर आनन्दप्रद सुख सागर सुखमा भवन ॥ कहै तुलसिदास सुरमुकुटमणि जय जय जय जानकिरमन ॥ २९६ ॥

जाय सो सुभट समर्थ पाय रन रारि न मंडै ॥ जाय सो यती कहाय विषैवासना न छंडै ॥ जाय धनिक विन दान जाय निर धन विन धर्महि॥जाय सो पंडित पढ पुरान जो रत न सुकर्महि॥ सुत जाय मात पितु भगति विन तिय सो जाय जिहि पति न हित॥ सब जाइ दास तुलसी कहै जो न रामपदनेह नित२९७॥

को न क्रोध निरदहेउ काम वश केहि नहि कीनो ॥ को न लोभ दृढफद बांध त्रासन करदीनो ॥ कवन हृदय नहिं लाग कठिन अति नारिनयन शर ॥ लोचनयुत नहिं अध भयो श्रीपाय कवन नर॥सुर नाग लोक महिमंडलहु को जु मोह कीनो जय न॥ कहै तुलसीदास सो ऊबर जेहि राख राम राजिवनयन॥२९८॥

सवैया ।

भौंह कमानसँधानसुठान जे नारि विलोकन बान ते वाचे ॥
कोप कृशानु गुमान अवाँघट ज्यो जिनके मन आवत आछे ॥
लोभ सबै नटके वश है कपि ज्यो जगमें बहु नाचन नाचे ॥
नीके हैं साधु सबैतुलसी पै तेई रघुवीरके सेवक सांचे ॥ २९९ ॥

कवित्त।

भेष सुबनाय भले वचन कहै चुवाय, जाय तो नजरनि धरनि धन धामकी। कोटिक उपाय कर लाल पालियत देह,मुख कहियत गति रामहीके नाम की ॥ प्रगटै उपासना दुरावै दुर्बासनाहि, मानस निवासभूमि लोभ मोह काम की। राग रोष ईरषा कपट कुटिलाई भरे, तुलसी से भगत भगति चहै राम की ॥ २०० ॥

कालही तरुन तन कालही धरनि धन, कालही जितौंगो रन कहत कुचालि है ॥ काल ही साधोगो काज काल ही राज समाज, मोसो कोऊ कहा भारो महि मेरु हालि है॥ तुलसी यही कुभांति घने घर घालि आये, घने घर घालत है घनघर घाली है ॥ देखत कहत समुझतहू न सूझै सोई, कबहूँ कह्यो न कालहू-को काल कालि है ॥ ३०१ ॥

भयो न तिकाल तिहूँ लोक तुलसी सो मन्द, निंदै सब साधु सुनि मानो न सँकोच हौ। जानको अयोगहिय हानि मानै जान-कीश, काहेको परेखो हौं प्रपची पापी पोच हौं ॥पेट भरवेकेसुकाज महाराजको कहायो, महाराजहू कह्यो है प्रणतविमोच हौ ॥ निज अघजाल कलिकालकी करालता, विलोकि होत व्याकुल करत सोई सोच हौ ॥ ३०२ ॥

राग देवगंधार।

यह मन नेक न कह्यो करे। सीख सिखाय रह्यो अपनी सी दुरमति ते न टरे ॥ मद माया के भयो बावरो हरि यश नहि उचरे। कर परपच जगत को डहके अपनो उदर भरे ॥ श्वान पूँछ ज्यों होय न सूधो कह्यो न कान धरे। कहु नानक भज राम नाम नित जाते काज सरे ॥ ३०३ ॥

राग देवगंधार।

सब कछु जीवतको व्यवहार। मात पिता भाई सुत बांधव अरु पुनि गृहकी नार॥ तनते प्राण होत जब न्यारे टेरत प्रेत पुकार। आध घरी कोऊ नही राखे घरते देत निकार॥ मृगतृष्णा ज्यों जग रचना यह देखो हृदय विचार॥ कहु नानक भजराम नाम नित जाते होत उधार॥ २०४॥

राग देवगंधार।

जगतमें झूंठी देखी प्रीत। अपनेही सुखसों सब लागे क्या दारा क्या मीत॥ मेरो मेरो सभी कहत है हित सो बांध्यो चीत। अंतकाल संगी नहि कोऊ यह अचरज की रीत॥ मन मूरख अजहूं नहि समझत शिख देहारयो नीत। नानक भव जल पार परे जो गावे प्रभुके गीत॥ २०५॥

राग सोरठ।

मनकी मनही माहिं रही। ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी काल गही॥ दारा मीत पूत रथ संपति धन जन पूर्ण मही। और सकल मिथ्या यह जानो भजन राम को सही॥ फिरत फिरत बहुते जुग हारयो मानस देह लही। नानक कहत मिलनकी बिरयां सुमिरत कहा नहीं॥ २०६॥

राग सोरठ।

मन रे कौन कुमति तें लीन्ही। पर दारा निंदा रस राच्यो राम भगति नहिं कीनी॥ मुक्ति पथ जान्यो तें नाहिन धन जोरन को धायो। अन्त संग काहू नहि दीनो बिरथा आप बंधायो॥ ना हरि भजे न गुरुजन सेयो नहि उपज्यो कछु ज्ञाना। घटही माहिं निरंजन तेरे तें खोजत उद्याना॥ बहुत जन्म भरमत तें हारयो अस्थिर मति नहि पायो। मानस देह पाय पद हरि भज नानक बात बतायो॥ ३०७॥

कवित्त।

धरमको सेतु जग मंगलको हेतु भूमि भार हरवेको अवतार लियो नर को। नीन औ प्रतीति प्रीति पाल चाल प्रभुनाम, लोक वेद राखवेको पण रघुवीरको॥ वानर विभीषणकी ओरको कना वडो है, सो प्रसंग सुने अग जरै अनुचर को। राखे रीति अपनी जो होय सोई कीजे बलि, तुलसी तिहारो घर जाइडोहै घरको२०८

नाम महाराजके निवाही नीकी कीजै उर, सवही सोहात मैन लोगन सोहातहौं। कीजै राम बार एक मेरी ओर चपकोर, ताहि लग रक ज्यो मनेह को ललातहौं॥ तुलसी विलोक कलिकाल-की करालता, कृपालको सुभाउ समुझत सकुचातहौं। लोक एक भांतिको त्रिलोक नाथ लोक वस, आपनो न मोच स्वामी सो-चही सुखातहौ॥ २०९॥

तौलौं लोभ लोलुप लमात लालची लवार, बार बार लालच धरनि धन धामको॥ तवलौं वियोग रोग सोगभोग यातनाके, युग सम लागत जीवन जाम जाम को॥ तौलौं दुख दारिद दहत अति नित तन, तुलसी है किंकर विमोह कोह कामको। सब दुख अपने निरापने सकल सुख, जौलौं जन भयो न वजाय राजाराम को॥ ३१०॥

तवलौं मलीन हीन दीन सुख सपने न, जहां तहां दुखी जन भाजन कलेस को। तवलौं उवने पाये फिरत पेटो खलाय, नाये मुह सहत पराभौ देस देस को॥ तवलौं दशावनो दुसह दुर दारिद को, साथरी को सोइवो ओढवो झुने खेसको। जवलों न भजे जीह जानकी जीवन राम, राजन को राजा सो तो साहिव महेशको॥ ३११॥

ईसनके ईस महाराजन के महाराज, देवन के देव प्रानहूके प्रान हौ । कालहूके काल महाभूतन के महाभूत, कर्महू के करम निदान के निदान हौ । निगम को अगम सुगम तुलसीहू से, कोउ एते मान शील सिधु करुना निधान हौ ॥ महिमा अपार काहु बोल को न वारपार, वडी साहिवी मे नाथ वडे सावधान हौ ॥ ३१२ ॥

सवैया ।

आरतपाल कृपाल जो राम जहीं सुमिरे तिहको तहि ठाढे ॥
नाम प्रताप महामहिमा अकरे किये खोटेउ छोटेउ बाढे ॥
सेवक एक ते एक अनेक भये तुलसी तिहु तापन डाढे ॥
प्रेम बधों प्रहलादहि को जिन पाहन ते परमेश्वर काढे ॥ ३१३ ॥
काढ कृपान कृपा न कहू पितु काल कराल विलोकि गे भागे ॥
राम कहां सब ठांउहै खंभसे हां सुनि हांक नृकेहरी जागे ॥
वैरी विदार भये बिकराल कहे प्रहलादहि के अनुरागे ॥
प्रीतिप्रतीत बढी तुलसी तवते सव पाहन पूजन लागे ॥ ३१४ ॥
अंतरयामिहु ते बढ बाहिर जामि हैं राम जे नाम लिये ते ॥
धावत धेनु पन्हाय लवाय ज्यो बालक बोलन कान कियेते ॥
आपन बूझ कहै तुलसी कहवे की न वावरी बात बिये ते ॥
पेंज परे प्रहलादहु को प्रगटे प्रभु पाहन ते न हियेते ॥ ३१५ ॥
वालक बोल दियो बलि काल को कायर कोटि कुचाल चलाई ॥
पापी है बाप बडो परिताप तें आपनि ओर ते खोर न लाई ॥
भूरि दई विप मूरि भई प्रहलाद सुधाई सुधाकी मलाई ॥
रामकृपा तुलसी जनको जग होत भलेको भलोई भलाई॥३१६ ॥
कस करी व्रजवासिन पै करतूति कुभांति चली न चलाई ॥
पांडु के पूत सपूत कपूत सुयोधन भो कलि छोटे छलाइ ॥

कान्ह कृपाल बडे नतपाल गये खल खेचर खीस खलाई ॥
ठीक प्रतीत कहे तुलसी जग होय भलेको भलोई भलाई॥३१७॥
अवनीस अनेक भये अवनी जिनके डरते सुर सोच सुखाही ॥
मानव दानव देव सतावन रावन घाट रच्यो जग माही ॥
ते मिलये धर धूर सुयोधन जे चलते बहु छत्रकी छाही ॥
वेद पुरान कहे जग जान गुमान गोविदहि भावत नाही॥३१८॥
जब नैनन प्रीत गई ठग स्याम सो स्यानी सखी हठ हौ बरजी॥
नही जानो वियोग सुरोगसो आगे झुकी तब हौ तेहिसो तरजी ॥
अब देह भई पट नेह के छाले सो व्योत करे बिरहा दरजी ॥
व्रजराज कुमार विना सुन भृग अनंग भयो जियको गरजी ३१९॥
योग कथा पठई व्रज को सब सो शठ चेरीको चाल चलाकी ॥
ऊधोजी कौन कहै कुबरी जो बरी नटनागर हेर हलाकी ॥
जाहि लगे पर जाने सोई तुलसी सो सुहागिनि नन्दललाकी ॥
जानिहै जान पनी हरिकी अब बांधियेगी कछु पोट कलाकी३२०॥

कवित्त।

पठयो है छपद छवील कान्ह केहू कहू, खोजके खवास खासे कूवरीसी वालको। ज्ञानको गढैया बिन गिरिको पढैया बार, खालको कढैया सो बढैया उर सालको॥ प्रीतिको वधिक रस रीतिको अधिक नीति, निपुण विवेकहै निदेश देश कालको॥ तुलसी कहे न बने सहै ही बनेगो सब; योग भयो योगको वियोग नन्दलालको॥ ३२१ ॥

हनुमान है कृपाल लाडिले लखनलाल, भावते भरत है सेवक सहाय जू ॥ विनती करत दीन दूबरो दयावनो सो, बिगरे ते आप ही सुधारि लीजै भाय जू॥मेरी साहिबनी सदा शीश परबिलसत,

देवि क्यों न दासको, देखाइयत पाय जू ॥ खीझहूमें रीझबेकी बानी राम रीझत हैं रीझि हैं,ई रामकी दोहाई रघुराय जू ॥३२२॥

सवैया ।

वेष विरागको राग भरो मनभाव कहों सत भाव हौं, तोसों ॥ तेरेही नाथको नामले वेचहो पातकी पांवर प्रानन पोसों ॥ एते वडेअपराध अघी कहूँ तू कहूँ अंब कि मेरे तु मोसो ॥ स्वारथको परमाथको परिपूरन भौ फिर वाट न होसो ॥३२३॥

कवित्त ।

जहां वालमीक भये व्याधते मुनिद साधु, मरा मरा जपे सिख सुन ऋपि सात की । सियको नेवास लव कुश को जनम थल, तुलसी छुवत छांह ताप गरे गात की ॥ विटप महीप सुर सरित समीप सोहै, सीखवट पेखत पुनीत होत पात की । वारि पुर दिग पुर वीच विलसत भूमि, अंकित जो जानकी चरन जल-जातकी ॥ ३२४ ॥

मरकत वरन परन फल मानिकसे, लसे जटाजूट जनु रूख वेख हर है । सुखमाको ढेर कैधों सुकृत सुमेरु कैधों, सपदा सकल मुद-मंगलको घर है ॥देत अभिमत जो समेत प्रीत सेइये, प्रतीत माने तुलसी विचार काको थर है ॥ सुरसरि निकट सोहावनि अवनि सोहै, रामरवनीको वट कलि कामतर है ॥ ३२५ ॥

देवधुनि पास मुनिवास श्रीनिवास जहां, प्राकृत है वट पुट वसत पुरारि है । जोगि जपें जोग को विराग को पुनीत पीठ, रागिन को सीठी डीठी वाहरो निवार है ॥ आहस अंदेस वावू भलो भलो भाव सिध, तुलसी विचार जोगी कहत पुकार है । राम भगतनको तो कामतरु ते अधिक, सियवट सेये करतल फल चार है ॥ ३२६ ॥

जहाँ वन पावनो सुहावने विहग मृग, देख अति लागत अनन्द खेत खूट सो ॥ सीता राम लक्ष्मण निवास वास मुनिनको, सिद्ध साध साधक सबे विवेक वूट सो ॥ झरना झरत झार शीतल पुनीत वारि, मन्दाकिनि मञ्जुल महेश जटाजूट सो । तुलसी जो राम सो सनेह साँचो चाहिये तो, सेइये सनेह सो विचित्र चित्र-कूट सो ॥ ३२७ ॥

सवैया ।

ब्रह्म जो व्यापक वेद कहैं गम नाहि गिरा गुन ज्ञान गुनीको ॥
जो करता भरता हरता सुरसाय सुसाहिब दीन दुनीको ॥
सोई भयो द्रवरूप सही जोहै नाथ विरंचि महेश मुनीको ॥
मान प्रतीत सदा तुलसी जल काहेन सेवत देव धुनीको ॥३२८॥
दानि जो चारि पदारथको त्रिपुरारि, तिहू पुरमें सिरटीको ॥
भोरो भलो भले भायको भूखो भलोई कियो सुमिरे तुलसीको ॥
ता विन आसको दासभयो कबहूँ न मिट्यो लघु लालच जीको॥
साधो कहा कर साधन ते जो पैगधो नहीपतिपारवती को॥३२९॥
जाते जरे सब लोक विलोक त्रिलोचन सो विष लोक लियो है ॥
पान कियो विष भूषण भो करुणा वरुणालय साईं हियो है ॥
मेरोई फोरबे योग कपार किधो कछु काहू लखाय दियो है ॥
काहे न कान करो विनती तुलसी कलिकाल विहाल कियो है ३३०

राग विलावल ।

दीन दयाल दीवाकर देवा । कर मुनि मनुज सुरासुर सेवा ॥
हिम तम करी केहरि करमाली । दहन दोष दुख दुरित रुजाली ॥
कोक कोकनद लोक प्रकासी । तेज प्रताप रूप रसरासी ॥
सारथि पगु दिव्य रथ गामी । हरि शंकर विधि मूरति स्वामी ॥
वेद पुरान प्रगट यश जागे । तुलसी राम भगति वर मांगे॥३३१॥

को याचिये शंभु तज आन । दीन दयाल भगत आरति हर सब प्रकार समरथ भगवान ॥ कालकूटज्वर जरत सुरासुर निज पण लाग कियो विप-पान । दारुण दनुज जगत दुखदायक मारयो त्रिपुर एक ही बान ॥ जो गति अगम महामुनि दुरलभ कहत सन्त श्रुति सकल-पुरान । सोई गति मरण काल अपने पुर देत सदाशिव सवहि समान । सेवत सुलभ उदार कलपतरु पारवती पति परम सुजान । देहु राम पद देहु काम रिपु तुलसि-दास कहँ कृपानिधान ॥ ३३२ ॥

राग धनाश्री ।

दानी कहुँ शकर से नाहीं । दीन दयाल दिवो ही भावै याचक सदा सुहाही ॥ मारिके मार थप्यो जगमें जाकी प्रथम रेख भट माही ॥ ता ठाकुरको रीझ निवाजवो कह्यो क्यो परत मो पाही ॥ योग कोटि करि जो गति हरिसो मुनि माँगत सकुचाही । वेद विदित तेहि पद पुरान पुर कीट पतग समाही ॥ ईश उदार उमा-पति परिहर अनत जे याचन जाही । तुलसिदास ते मूढ़ माँगने कबहुँ न पेट अघाही ॥ ३३३ ॥

बावरो रावरो नाह भवानी । दानी बडो दिन देत दिये विन वेद बड़ाई भानी ॥ निज घरकी वर बात विलोकहु हो तुम परम सयानी । शिवकी दई सम्पदा देखत श्रीशारदा सिहानी ॥ जिनके भाल लिखी लिपि मेरी सुखकी नही निसानी । तिन रंकनको नाक सँवारत हौ आयो नकबानी ॥ दुखी दीनता दुखियनके दुख याचकता अकुलानी । यह अधिकार सौंपिये औरहि भीख भली मैं जानी ॥ प्रेम प्रशंसा विनय व्यंग युत सुन विधिकी वर बानी । तुलसी मुदित महेश मनहिमन जगत मातु मुसकानी ॥ ३३४ ॥

भजन—राग रामकली।

मांगिये गिरिजापति कासी। जासु भवन अणिमादिक दासी॥ औढर दानि द्रवत पुनि थोरे। सकत न देखि दीन कर जोरे॥ सुख सम्पति मति सुगति सुहाई। सकल सुलभ शंकर सेवकाई॥ गये जे शरण अरतिके लीने। निरखि निहाल निमिष मह कीने॥ तुलसिदास याचक यश गावे। विमल भक्ति रघुपतिकी पावे २२५॥

कस न दीन पर द्रवहु उमा वर। दारुण विपति हरण करुणाकर॥ वेद पुराण कहत उदार हर। हमरी बेर का भयो कृपिनतर॥ कवनि भक्ति कीनी गुणनिधि द्विज। ह्वै प्रसन्न दीन्यो शिव पद निज॥ जो गति अगम महामुनि गावहिं। तव पुर कीट पतग हु पावहिं॥ देहु काम रिपु रामचरण रति। तुलसिदास प्रभु हरहु भेद मति॥ २२६॥

जय जय जग जननि देवि सुर नर मुनि असुर सेवि भक्त भूतिदायनि भयहरनि कालिका। मगल मुद सिद्ध सदनि पर्व शर्वरीश वदनि ताप तिमिर तरुण तरणि किरण मालिका॥ वर्म चर्म कर कृपाण शूल शक्ति धनुष बाण धरणि दलनि दानव दल रण करालिका। पूतना पिशाच प्रेत डाकिनी शाकिनी समेत भूत ग्रह वेताल खग मृगालि जालिका॥ जय महेश भामिनी अनेक रूप नामिनि समस्त लोक स्वामिनी हिम शैल बालिका॥ रघुपति पद परम प्रेम तुलसी चहै अचल नेम देहु ह्वै प्रसन्न पाहि प्रणत पालिका॥ २२७॥

राग धनाश्री।

जयति जय सुरसरी जगदखिल पावनी। विष्णुपद [illegible] मकरंद इव अंबु वर वहसि दुख दहसिअघ वृन्द विद्रावनी॥ मिलत जल पात्र अज युक्त हरि चरण रज विरज वर वारि त्रिपुरारि शिर

यामिनी । जह्नु कन्या धन्य पुण्य कृत सगर सुत भूधर द्रोणि विदरणि बहु नामिनी ॥ यक्ष गंधर्व मुनि किन्नरोरग दनुज मनुज मज्जहि सुकृत पुञ्ज युत कामिनी । स्वर्ग सोपान विज्ञान ज्ञानप्रदे मोह मद मदनपाथोज हिम यामिनी ॥ हरित गभीर वानीर दुहुँ तीर वर मध्यधारा विशद विश्व अभिरामिनी । नील पर्यङ्क कृत शयन सर्पेश जनु सहस शीशावली स्रोत सुर स्वामिनी ॥ अमित महिमा अमितरूप भूपावली मुकुट मणि बदित्रैलोक पथ गामिनी ॥ देहु रघुवीर पद प्रीति निर्भर मातु दास तुलसी त्रास हरणि भव भामिनी ॥ ३३८ ॥

सेइये सहित सनेह देह भर कामधेनु कलि कासी । शमन शोक सन्ताप पाप रुज सकल सुमंगलरासी ॥ मर्यादा चहुँ ओर चरण वर सेवत सुरपुरवासी । तीरथ सब शुभ अंग रोम शिवलिंग अमित अविनाशी । अतर अयन अयन भल थल फल बच्छ बेर विश्वासी । गल कंबल बरुणा विभाति जनु लूम लसत सरितासी ॥ दण्डपाणि भैरव विषाण भल रुचि खल गण भयदासी । लोल दिनेश त्रिलोचन लोचन कर्ण घंट घंटासी ॥ मणिकर्णिका बदन शशि सुन्दर सूर सरिस सुखमासी । स्वारथ परमारथ परिपूरण पंचकोश महिमा सी ॥ विश्वनाथ पालक कृपाल चित लालति नित गिरिजा सी।सिद्धि शची शारद पूजहि मन जोगवत रहत रमा सी ॥ पचाक्षरी प्राण मुद माधव गव्य सुपंच नदासी । ब्रह्म जीव सम राम नाम दोउ आखर विश्वविकासी ॥ चारितचार्रि कुकर्म कर्मकर मरत जीव गण घासी । लहत परमपद पय पावन जिहि चहत प्रपंच उदासी ॥ कहत पुराण रची केशव निज कर करतूति कलासी । तुलसी बस हर पुरी राम जप जो भयो चहै सुपासी ॥ ३३९ ॥

राग वसन्त ।

सब शोच विमोचन चित्रकूट । कलिहरन करन कल्याण बूट ॥ शुचि अवनि सुहावनि आलवाल । कानन विचित्र वारी विशाल ॥ मंदाकिनि मालिनि सदा सीच । वर वारि विषम नर नारि नीच ॥ शाखा सुशृग भूरुह सुपात । निरझर मधु वर मृदु मलय वात ॥ शुक पिक मधुकर मुनिवर विहार । साधन प्रसून फल चारु चार ॥ भव घोर घाम हर सुखद छाँह । थप्यो थिर प्रभाउ जानकी नाह ॥ साधक सुपथिक बडे भाग पाइ । पावत अनेक अभिमत अवाइ ॥ रस एक रहत गुण कर्म काल ॥ सिय राम लपण पालक कृपाल ॥ तुलसी जो रामपद चहिय प्रेम । सेइये गिरि कर निरुपाधि नेम ॥ ३४० ॥

अब चित चेत चित्रकूटहि चल । कोपित कलि लोपित मगल मग विलसत बढ़त मोह माया मल॥भूमि विलोक रामपद अकित वन विलोकि रघुवर विहार थल । शैल शृङ्ग भव भग हेतु खल दलन कपट पाखड दंभ दल ॥ जहँ जन्मे जग जनक जगतपति विधि हरि हर परिहर प्रपच छल । सुकृत प्रवेश करत जिहि आश्रम विगत विषाद भये पारथ नल ॥ न कर विलब विचार चारु मति वर्ष पाछिले सम अगिलो पल । मत्र सो जाय जपहिं जो जपत मे अजर अमर हर अचय हलाहल ॥ रामनाम जप याग करत नित मज्जत पय पावन पी - जल।करि है राम भावतो मनको सुखसाधन अनयास महाफल ॥ कामदमणि कामदा कल्पतरु सो युग युग जागत जगतीतल । तुलसी तोहि विशेप बूझिये एक प्रतीति प्रीति एकै बल ॥ ३४१ ॥

राग सारंग ।

जाके गति है हनुमान की । ताकै पयज पूज आई यह रेखा

कुलिश पपानकी॥अघटित घटन सुघट विघटन ऐसी विरुदावली नहि आनकी ।सुमिरत संकट शोच विमोचन मूरति मोद निधान की ॥ तापर सानुकूल गिरिजाहर लषण राम अरु जानकी । तुलसी कपिकी कृपावि लोकन खानि सकल कल्यानकी॥३४२॥

अति आरत अति स्वारथी अतिदीन दुखारी।इनको विलग न मानिये बोलहि न विचारी ॥ लोकरीति देखी सुनी व्याकुल नर-नारी । अति बरषे अन बरषे हूँ देहि देवहि गारी ॥ नाकहि आये नाथसो सासत भयभारी । कहआयो कीबी क्षमा निज ओर निहारी॥समय सांकरे सुमिरिये समरथ हितकारी । सो सब विधि ऊपर करै अपराध बिसारी ॥ बिगरी सेवककी सदा साहिबहि सुधारी । तुलसी पर तेरी कृपा निरुपाधि निहारी ॥ ३४३ ॥

राग गौरी ।

मंगल मूरति मारुतनंदन । सकल अमंगल मूल निकंदन ॥ पवनतनय संतन हितकारी । हृदय विराजत अवधविहारी ॥ मात पिता गुरु गणपति शारद । शिवा समेत शंभु शुक नारद ॥ चरण वंदि विनवों सब काहू । देहु रामपद नेह निबाहू ॥ वंदोंराम लषण वैदेही । जो तुलसीके परम सनेही ॥ ३४४ ॥

राग केदार ।

अबहुँक अब अवसर पाइ । मेरियै सुधि द्यायबी कछु करुण कथा चलाइ ॥ दीन सब अंग हीन क्षीन मलीन अघी अघाय । नाम लै भरो उदर इक प्रभु दासी दास कहाय ॥ बूझिहैं सो है कौन कहबी नाम दशा जनाय । सुनत राम कृपालुके मेरी बिगरिऔ बनिजाय ॥ जानकी जग जननि जनकी कियेवचन सहाय । तरै तुलसीदास भव तव नाथ गुण गण गाय ॥ ३४५ ॥

राग केदार ।

कबहुँ समय सुधि द्यायवी मेरी मातु जानकी ॥ जन कहाय नाम लेत हो पन चातक ज्यों प्यास सुप्रेम पानकी ॥ सरलप्रकृति आप जानिये करुणा निधानकी ॥ निज गुण अरिकृत अनहितो दास दोष सुरति चित रहत न दिये दानकी ॥ वानि विसरण शील है मानद अमानकी ॥ तुलसीदास न बिसारिये मन क्रम वचन जाके सपनेहु गति नहिं आनकी ॥ २४६ ॥

राग रामकली ।

ऐसी आरती राम रघुवीरकी करहि मन ॥ हरण दुख द्वन्द्व गोविंद आनन्द घन ॥ अचर चर रूप हरि सर्वगत सर्वदा वसत इति वासना धूप दीजै ॥ दीप निज वोध गत क्रोध मद मोह तन प्रौढ़ अभिमान चित्तवृत्ति छीजै ॥ भाव अतिशय विशद प्रवर नैवेद्य शुभ श्रीरमण परम सन्तोषकारी ॥ प्रेम तांबूल गत शूल संशय सकल विपुल भव वासना बीजहारी ॥ अशुभ शुभ कर्म घृत पूर्ण दश वर्तिका त्याग पावक सतोगुण प्रकास ॥ भक्ति वैराग्य विज्ञान दीपावली अर्पि नीराजनं जग निवास ॥ विमल हृदि भवन कृत शांति पर्यङ्क शुभ शयन विश्राम श्रीराम राया ॥ क्षमा करुणा प्रमु स्वतंत्र परि चारिका यत्र हरि तत्र नहिं भेद माया ॥ यह आरती निरत सनकादि श्रुति शेष शिव देव ऋषि अखिल मुनि तत्त्वदरशी ॥ करै सोई तरै परिहरै कामादि मल वदत इति अमल मतिदास तुलसी ॥ २४७ ॥

राग रामकली ।

हरत सब आरति आरती राम की ॥ दहत दुख दोष निर्मूल नी-कामकी ॥ सुभग सौरभ धूप दीप वर मालिका ॥ उड़त अघ विहग सुन ताल करतालिका ॥ भक्त हृदि भवन अज्ञान तम हारिणी ॥

मेरो भलो कीयो राम आपनी भलाई ॥ हौं तो साईं द्रोही सेवक हित साईं ॥ रामसों बडो है कौन मोसो कौन छोटो रामसो खरो है कौन मोसो कौन खोटो ॥ लोक कहै रामको गुला हौ कहावों ॥ एतो बडो अपराध भो न मन पावों ॥ पाथ मा चढे तृण तुलसी जो नीचो ॥ बोरत न वारी ताहि जान आपन ीचो ॥ ३९३ ॥

राग बिलावल ।

आज महामङ्गल कोशलपुर सुनि नृपके सुत चारि भये । सद सदन सोहिलो सुहावन नभ अरु नगर निशान हये ॥ सज सज यान अमर किन्नर मुनि जान समय सम गान ठये । नाचहिं नभ अप्सरा मुदित मन पुनि पुनि वर्षहिं सुमन चये ॥ अति सुख बेग बोल गुरु भूसुत भूपति भीतर भवन गये । जात कर्म कर नेक वसन मणि भूषित सुरभि समूह दये ॥ दल रोचन फल फूल दूब दधि युवतिन भर भर थार लये । गावत चलीं भीर भई वीथिन वन्दिन बांकुर विरद वये ॥ कनक कलश चामर पताक ध्वज जहि तहिं वन्दनवार नये । भरहि अबीर अरगजा छिरकहिं सकल लोक इक रंग रये ॥ उमँग चल्यो आनन्द लोक तिहुँ देत सबन मन्दिर रितये । तुलसिदास पुनि भरेइ देखियत राम कृपा चितवन चितये ॥ ३९४ ॥

सुभग सेज सोहत [illegible] । रुचिर राम शिशु गोद लिये । वार वार विधु वदन [illegible] चकोर किये ॥ कबहू पौढि पय पान करावै [illegible] हिये ॥ बाल केलि गावत [illegible] पुल[illegible] महेश मुनि सुर सि[illegible] रघुपति पै [illegible] न [illegible]

राग सोरठ।

ह्वैहो लाल कबहिं बड़े बलि मैया। राम लषण भावत भरत रिपुदमन चारु चारयो भैया॥ बाल विभूषण वसन मनोहर अगन विरचि बनेहौं॥ शोभा निरखि निछावर कर उर लाय वारने जैहौं॥ छगन मगन अँगना खेलिहौं मिलि ठुमुक ठुमुक कब धैहौं॥ कल बल बचन तोतरे मञ्जुल कह मा मोहि बुलैहौं। पुरजन सचिव राव रानी सब सेवक सखा सहेली॥ लेहैं लोचन लाहु सुफल लखि ललित मनोरथ बेली। जा सुखकी लालसा लटूशिव शुक सनकादि उदासी॥ तुलसी तिहि सुख सिंधु कौशला मगनपे प्रेम पियासी॥ ३९६॥

राग बिलावल।

पगन कब चलिहौ चारो भैया। प्रेम पुलकि उर लाय सुवन सब कहत सुमित्रा मैया॥ सुन्दर तनु शिशु वसन विभूषण नख शिख निरख निकैया। दल तृण प्राण निछावर कर कर लेहै मात बलैया॥ किलकन नटन चलन चितवन भज मिलत मनोहर तैया। मणि खभन प्रतिबिंब झलन छवि छलकहि भर अँगनैया॥ बाल विनोद मोद मंजुल विधु लीला ललित जुन्हैया। भूपति पुण्य पयोनिधि उमँगेउ घरघर बाजै आनद बधैया॥ ह्वैहै सकल सुकृत सुख भाजन लोचन लाहु लुटैया। अनायास पाइहैं जन्मफल तोतरे वचन सुनैया॥ भरत राम रिपुदमन लषण के चरित सरित अन्हवैया। तुलसी तब केसे अजहूँ जानवे रघुवर नगर बसैया॥ ३९७॥

राग केदार।

राम शिशु गोद महा मोद भरे दशरथ कौशिलहु ललक लषण लाल लिये है। भरत सुमित्रा लिये केकयी शत्रुशमन तन प्रेम

पुलक मगन भये हैं ॥ मेढी लटकन मणि कनक रचित बाल भूषण बनाय आछे अंग अंग ठये हैं। चाहि चुचुकार चूंबि लालन लावत उर तैसे फल पावत जैसे सुबीज वये हैं ॥ घन ओट विबुध विलोकि बरसत फूल अनुकूल वचन कहत नेह नये हैं ॥ ऐसे पितु मात पूत पुर परिजन विधि जानियत आयु भरएई निरमये हैं ॥ अजर अमर होहु करो हरि हर छोह जरठ जठेरिन आशिरवाद दियेहे ॥ तुलसी सराहे भाग तिन जिनके हिये डिभ रामरूप अनुराग रंग रये हैं ॥ ३५८ ॥

आज अनरसे हैं भोरके पय पियत न नीके ॥ रहत न बैठे ठाढे पालने झूलतहु रोवत राम मेरो सो सोच सबही के ॥ देव पितर ग्रह पूजिये तुला तौलिये घीके ॥ तदपि कबहु कबहुंक सखी ऐसेही अरत जब परत दृष्टि दुष्ट ती के ॥ बेग बोल कुल गुरु छुवै माथे हाथ अमीके ॥ सुनत आय ऋषि कुश हरे नरसिंह मंत्र पढ़ जो सुमिरत भय भी के ॥ जासु नाम सर्वस्व सदाशिव पारवती के ॥ ताहि झरावत कौसिला यह रीत प्रीतकी हिय हुलसत तुलसीके ॥ ३५९ ॥

राग आसावरी।

माथे हाथ जब दियो ऋषि राम किलकन लागे। महिमा समुझ लीला विलोक गुरु सजल नयन तन पुलक रोम रोम जागे ॥ लिये गोद धाये गोद ते मोद मुनि मन अनुरागे। निरखि मातु हरषी हिये आली ओट कहत मृदु वचन प्रेम केसे पागे ॥ तुम सुरतरु रघुवशके देत अमित मांगे। मेरे विशेपत गति गवरी तुलसी प्रसाद जाके सकल अमंगल भागे ॥ ३६० ॥

अमिय विलोकन कृपा मुनिवर जब जोये। तबते राम अरु भरत लपण रिपुदमन सुमुखि राखि सकल सुवन सुख मोये ॥ ला.

य सुमित्रा लिये हिये फनि मनि ज्यों गोये ॥ तुलसी निछावर करत मातु अति प्रेम मगन मन सजल सुलोचन कोये ॥ ३६१ ॥
मातु सकल कुल गुरु वधू प्रिय सखी सुहाई। सादर सब मंगल किये महि मनि महेश पर सबन सुधेनु दुहाई ॥ बोल भूप भूसुर लिये अति विनय बडाई ॥ पूजि पांय सन्मानि दान दिये लहि अशीष सुन बरषें सुमन सुर साई ॥ घर घर पुर बाजन लगी आनंद बधाई। सुख सनेह तिहि समयको तुलसी जाने जाको चोगे है चित चहुँ भाई ॥ ३६२ ॥

राग धनाश्री।

या शिशुके गुन नाम बडाई। को कहि सकै सुनो नरपति श्रीपति समान प्रभुताई ॥ यद्यपि बुधि वय रूप शील गुण समै चारु चारचो भाई। तदपि लोक लोचन चकोर शशि राम भगत सुखदाई ॥ सुर नर मुनि कर अभय दनुज हति हरिहि धरनि गरु आई। कीरति विमल विश्व अघमोचन रहहि सकल जग छाई॥ याके चरन सरोज कपट तजि जो भजिहै मनलाई। सो कुल युगल सहित तरि है भव यह न कछू अधिकाई॥सुनि गुरु वचन पुलकि तन दंपति हर्ष न हृदय समाई। तुलसिदास अवलोकि मातु सुख प्रभु मनमें मुसकाई ॥ ३६३ ॥

राग विलावल।

अवध आज आगमी यक आयो। करतल निरखि कहत सब गुन-गन बहुतन परचो पायो ॥ बूढो बडो प्रमानिक ब्राह्मण शंकर नाम सुहायो। संग शिशु शिष्य सुनत कौशिल्या भीतर भवन बुलायो॥पाँय पखारि पूज दियो आसन असन बसन पहिरायो॥ मेल चारु चरन चारो सुत माथे हाथ दिवायो ॥ नख शिख बाल विलोकि विप्र तनु पुलक नयन जल छायो ॥ लैलै गोद कमल

कर निरखत उर प्रमोद अनमायो ॥ जन्म प्रसंग कह्यो कौशिक मिस सीय स्वयंवर गायो । राम भरत रिपुदमन लषणको जय सुख सुयश सुनायो ॥ तुलसिदास रनवास रहस वस भयो सबको मन भायो । सनमान्यो महिदेव अशीसत सानंद सदन सिधायो ॥ २६४ ॥

राग सारंग ।

प्रभु हौ सब पतितन को टीको ॥ और पतित सब दिवस चार के हौं तो जन्मत ही को । बधिक अजामिल गनिका तारी और पूतना ही को ॥ कोऊ न समरथ अघ करबेको खैचि कहत लीको । मरियत सूर लाज पतितन में हमते को है नीको ॥ २६५ ॥

हौं तो पतित शिरोमणि माधो । अजामील बातनही तार्‍यो हुतो जो मोते आधो ॥ कै प्रभु हार मान कर बैठो कै अबही निस्तारो सूर पतितको और ठौर नहि है हरि नाम सहारो ॥ २६६ ॥

राग गौरी ।

प्रानी हरि यश मन नहि आवै । अहनिशि मगन रहै माया मे कहु कैसे गुन गावै ॥ पूत मीत माया ममता सों यहि विधि आप बँधावै । मृगतृष्णा जिमि झूठो यह जग देखि तासु उठि धावै ॥ भुक्ति मुक्ति का कारन स्वामी मूढ़ ताहि बिसरावै । जन नानक कोटिन मे कोऊ भजन राम को पावै ॥ २६७ ॥

साधो यह मन गह्यो न जाई । चंचल तृष्णा संग बसतहै याते थिर न रहाई ॥ कठिन क्रोध घटही के भीतर जिहि सुधि सब बिसराई । रत्न ज्ञान सबको हर लीना तासो कछु न बसाई ॥ योगी यतन करत सब हारे गुनी रहे गुण गाई । जन नानक हरि भये दिआला तो सब विधि बनि आई ॥ २६८ ॥

साधो गोविंदके गुन गावो । मानुस जन्म अमोलक पायो बिरथा काहे गॅवावो ॥ पतित पुनीत दीन बांधव हरि शरण ताहि तुम आवो ॥ गजकी त्रास मिटी जिहि सुमिरत तुम काहे बिसरावो॥तजि अभिमान मोह माया पुनि भजन राम चित लावो । नानक कहत मुक्त पथ एही गुरुमुख होय तुम पावो ॥ ३६९ ॥

कोई भाई भूल्यो मन समुझावे ॥ वेद पुरान साधु मग सुनकर निमिप न हरिगुन गावै ॥ दुर्लभ देह पाय मानुसकी विरथा जन्म सिरावे ॥ माया मोह महासकट वनितासो रुचि उपजावै ॥ अतर बाहर सदा सग प्रभु तासो नेह न लावै ॥ नानक मुक्ति ताहि तुम मानो जिहि घट राम समावे ॥ ३७० ॥

साधो राम शरण विश्रामा । वेद पुराण पढे को यह गुण सुमिरे हरि को नामा । लोभ मोह माया ममता पुनि औ विषयनकी सेवा ॥ हर्ष शोक परसे जिहि नाहिन सो मूरति है देवा । स्वर्ग नरक अमृत विप यह सब त्यों कचन अरु पैसा ॥ अस्तुति निंदा यह सम जाके लोभ मोह पुनि तैसा।दुख सुख यह बांधे जिहि नाहिन तिहि तुम जानो ज्ञानी ॥ नानक मुक्ति ताहि तुम मानो यहि विधि को जो प्रानी ॥ ३७१ ॥

मन रे कहा भयो तैं बौरा । अहनिशि औधि घटे नहिं जानै भयो लोभ सॅग हौरा ॥ जो तन तै अपनो कर मान्यो अरु सुन्दर गृह नारी ॥ इनमें कछु तेरो रे नाहिन देखो सोच विचारी । रतन जन्म अपनो तै हारयो गोविंद गति नहि जानी ॥ निमिप न लीन भयो चरणनसो विरथा औधि सिरानी । कहु नानक सोई नर सुखिया राम नाम गुण गावे ॥ और सकल जग माया मोह्या निर्भय पद नहि पावे ॥ ३७२ ॥

करचो ॥ देव दनुज मुनि नाग मनुज नहि याँचत कोउ उबरचो । मेरो दुसह दरिद्र दोप दुख काहू तो न हरचो ॥ थके नयन पद पाणि सुमति बल संग सकल विछुरचो । अब रघुनाथ शरण आयो जब भव भय विकल डरचो ॥ जिहि गुण ते वश होहु रीझकर सो मोहि सब बिसरचो । तुलसिदास निज भवन द्वार प्रभु दीजै रहन परचो ॥ २८० ॥

माधो जू मो सम मन्द न कोऊ । यद्यपि मीन पतग हीन मति मोहि न पूजे ओऊ ॥ रुचिर रूप आहार वश्य उन पावक लोह न जान्यो । देखत विपति विपय न तजत हौ ताते अधिक अयान्यो ॥ महा मोह सरिता अपार महि सन्तत फिरत बह्यो । श्रीहरिचरण कमल नौका तजि फिर फिर फेन गह्यो ॥ अस्थि पुरातन क्षुधित श्वान अति ज्यो भर मुख पकरचो । निज तालू गत रुधिर पानकर मन सतोप धरचो ॥ परम कठिन भव व्याल ग्रसित हो त्रसित भयो अति भारी । चाहत अभय भेक शरणागत खगपति नाथ बिसारी ॥ जलचर वृन्द जाल अन्तरगत होत सिमिटि इक पासा । एकहि एक खात लालच वश नहि देखत निज नासा ॥ मेरे अव शारद अनेक युग गनत पार नहि पावै । तुलसीदास पतित पावन प्रभु यह भरोस जिय आवै ॥ २८१ ॥

राग धनाश्री ।

कृपा सो कहां बिसारी राम ॥ जिहि करुणा सुन स्रवण दीन दुख धावत हो तजि धाम । नागराज निज बल विचार हिय हार चरण चित दीन ॥ आरत गिरा सुनत खगपति तजि चलत विलम्ब न कीन । दिति सुत त्रास त्रसित निशिदिन प्रह्लाद प्रतिज्ञा राखी ॥ अतुलित बल मृगराज मनुज तनु दनुज हत्यो श्रुति साखी । भूप सदसि सब नृप विलोकि प्रभु राखु कह्यो-

नरनारी ॥ वसनपूरि अरि दर्प दूरि करि भूरि कृपा दनुजारी। एक एक रिपु ते त्रासित जन तुम राख्यो रघुवीर॥ अब मोहि देत दुसह दुख वहु रिपु कस न हरहु भव भीर । लोभ ग्राह दनुजेश क्रोध कुरुराज बंधु खल मार ॥ तुलसिदास प्रभु यह दारुण दुख भंजहु राम उदार ॥ ३८२ ॥ ।

काहे ते हरि मोहिं बिसारो । जानत निज महिमा मेरे अघ तदपि न नाथ सँभारो ॥ पतित पुनीत दीन हित अशरन शरन कहत श्रुति चारो । हौं नहि अधम सभीत दीन किधौं वेदन वृथा पुकारो॥खग गनिका गज व्याध पांति जहि तहि हौंहु वैठारो । अब किहि लाज कृपानिधान परसत पनवारो फारो । जो कलि काल प्रबल अति होतो तुव निदेशते न्यारो ॥ तौ हरि रोष भरोस दोष गुन तेहि भजते तजि गारो। मशक विरिंचि विरिंचि मशक सम करहु प्रभाव तुम्हारो ॥ यह सामर्थ्य अछत मोहिं त्यागहु नाथतां कछु चारो।नाहिन नर्क परत मोकहँ डर यद्यपि हौं अति हारो ॥ यह बड त्रास दास तुलसी प्रभु नामहुँ पाप न जारो ॥ ३८३॥

राग आसावरी ।

आज बनी छबि भारी श्री राघोजीकी । सहित जानकी रत्न सिंहासन राजत अवधविहारी ॥ रविशशि कोटि देख छवि लाजै तिलक पटल द्युतिकारी । वदन मयंक तापत्रय मोचन मन्द हास अति प्यारी ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल अरु वनमाल सुधारी । वाहुविशाल विभूषण सुन्दर कर गह शारँगधारी॥ कटिपर पीत वसनकी शोभा मोहत मदन निहारी। मुनिजन चरण सरोरुह ध्यान धरत त्रिपुरारी ॥ चतुर सखी मिलि करत आरती सज कंचनकी थारी । रामसेवक जय जय धुनि उचरत-गावत पुर नर नारी ॥ ३८४ ॥

राग भैरवी ।

जानकी जीवन की वलि जैहो । चित कहैं राम सियां पद परिहरि अव न कहूं चलि जैहों ॥ उपजी उर प्रतीति सपने सुख हरिपद विमुख न ह्वैहों । मन समेत सब तनके वासिन यही सिखावन देहों ॥ श्रवणन और कथा नहिं सुनिहो रसना और न गैहो । रोकिहो नयन विलोकत औरहि शीश ईश पद नैहों ॥ नातो नेह राम सों करि सब नातो नेह निबैहो । सेवक चरण शरण नित रहिहों मुंह मांगे यह पैहो ॥ २८५ ॥

आज वनी छवि श्रीराघोजीकी भारी । कीटमुकुट मकराकृत कुण्डल धनुष वान कर धारी ॥ सुन्दर भाल तिलककी शोभा अलकें घूंघरवारी । नयन कमल वदनकी शोभा सयननमें रस न्यारी ॥ बाये अंग जानकी सोहैं हनुमत आज्ञाकारी । गौर श्याम सुन्दर तन सोहै चन्द्रवदन उजियारी ॥ रतन जडित अभूपण सोहै मोतियन की छवि न्यारी । मात कौशल्या करत आरती तुलसिदास बलिहारी ॥ २८६ ॥

अथ सीहरफी ।

अलिफ आपणे आपनू समझ पहिलेकी वस्तुहै तेरडा रूप प्यारे ॥ वाझ आपणे आपदे सही कीते रह्यो विच्च बमूरे दे दुःख भारे ॥ होर लक्ख उपाय ना सुक्ख होवी पुच्छ वेख सिआनडे जग्ग सारे ॥ सुखरूप अखड चैतन्य है तू बुल्लाशाह पुकारदे वेद चारे ॥ २८७ ॥

वे वन्ह अक्खी अते कन्न दोवे गोसे बैठके बात विचारिये जी ॥ छड्ड खाहिशां जान जहान कूडा कह्या आरफां दा हिये धारिये जी ॥ पैरी पांय जंजीर वेखाहिशी दे इस नफसनूं कैद करडारिये जी ॥ जान जानदीनूं जान रूप तेरा बुल्लाशाह एऊ खुशी गुजारिये जी ॥ २८८॥

ते तनक छिद्र नहिं विच तेरे जित्थे कक्ख ना इक्क समावँदा ही ॥ ढूंड देख जहानदी ठौर कित्थे अनहुंदड़ा नजरी आवँदा ही ॥ जैसे ख्वाबदा ख्याल होय सुत्तिआँ नूं तरां तरां दे रूप दिखावँदा ही ॥ बुल्लाशाह नां तुज्झ थी कुज्य बाहर तेरा भरम तैनूं भरमावँदा ही ॥ ३८९ ॥

से समझ हिसाब कर वैठ अंदर तूंही आसरा कुल्लजहानदा है ॥ तेरे डिट्ठां दिस्सदा सभकोई नही कोई ना किसे पछाणदा है ॥ तेरा ख्याल ही होय हरतरां हिस्से जिवें चाल वैताल कर जाणदा है ॥ बुल्लाशाह फाहे कौन डावरेनू फसे आप आपे फाही ताणदा है ॥ ३९० ॥

जीम जीवणा भला कर मन्निया ते डरें मरणथी एही अज्ञान भारा । इक्क तूंही तों जिद जहानकेरी घटाकाश जिउँ मिलें सभ-माहि न्यारा ॥ तेरा ख्याल ही होय हरतरां दिस्से आदि अत बाझों लगे सदा प्यारा । बुल्लाशाह संभाल तूं आपताईं तूंतों अमर है सदा नही मरनहारा ॥ ३९१ ॥

हे हिरस हेरान कर सट्टयो तू तेनूं आपणा आप भुलाय आसू। बादशाहीयों सुट्ट कंगाल कीता कर लक्ख थो कक्ख दखलाय आसू ॥ मदमत्तडे शेरनू तद कच्ची पैरी पायके दून्न वहाय आसू। बुल्लाशाहतमाशडा होर देखो लै समुद्र नू कुज्जडी पाहआसू ३९२॥

खे खबर ना आपणी रक्खदा हे लग ख्याल दे नाल तूं ख्याल होया । जरा ख्यालनूं सुट्ट वेख्याल होसां जिमें होय अधजाग्या नाहिं सोया ॥ तदों देख खां अग्गो कौन देखे नही घास मैं छप्प हाथी खलोया । बुल्लाशाह जिउँ गले दे विच्च गहिणा फिरे ढूंडदा तांहिते नाहिं खोया ॥ ३९३ ॥

चे चानणा कुल्ल जहान दा तू तेरे आसरे होय विवहार सारा । होय सभकों ॲख मो देखदा है तुझे सूझदा चानणा औ

अंधारा ॥ नित जागणा सोवणा ख्वाब तीनो देण तेरे आगे होए कई बारा । बुल्लाशाह प्रकाशस्वरूप तेरा घट्ट बद्ध ना होत है एकसारा ॥ ३९४ ॥

दाल दिलगीर ना होय मूले दीगर चीज नापैद तहकीक कीजे । अव्वल जाय करो सुहबत आरफां दी सुखन तिन्हा दे आबहयात पीजै । चशम जिगर दे मलन होरहे मूले नहीं सूझदा तिनोको साफ कीजे ॥ बुल्लाशाह सँभाल तू आपताईं-तूं तां एक आनंदमय सदा जीजे ॥ ३९५ ॥

जाल जरा भी शक्क ना रक्ख मन ते हो बेशक्क तूं ही खुद खसम साईं । जिमैं सिंह भुलाय बल आपणे नूं चरे घास मिल अजा मैं अजान्याईं ॥ पिच्छो समझ बलें गरज्या अजा मारी भयो सिंह को सिंह कछु भेद नाही । तैसे तोहि तरां कछु कीर धारी बुल्लाशाह सभाल तूं आपताईं ॥ ३९६ ॥

रे रंग जहान देखदा है सोहणे वास विचारयां दिस्सदे नी । जिवें होत हुब्बाव बहु रंग देजी अंदर आब दे जरा बिच फिस्सदे नी ॥ आब खाक आतिश बाद भये कट्ठे देख अज्नके कट्ठ विच खिस्सदे नी । बुल्लाशाह संभालके देख खां तूं सुख दुःख सभी कह किस्सदे नी ॥ ३९७ ॥

जे जावणा आवणा नहीं ओथे कोह वांग हमेश अडोल है जी । जिवें बदलां दे चले चंद चलदा लगे बालकॉ नू पडा भोल है जी ॥ मन इंद्री देह प्राण आदिक वोह देखणे दा अडोल है जी । बुल्लाशाह संभाल खुशहाल हूजे ऐन आरफॉहां एहो बोल है जी ॥ ३९८ ॥

सीन सितम करना [illegible] होर कुछ होवणा जी । सईयो लिर [illegible] जानके बालकॉ

रोवणा जी ॥ जरा मैल नाही देख भुल्लना है लग्ग जिक्कडो जाण क्यों धोवणा जी । बुल्लाशाह जजाल नही मूल कोई जाणबुज्झके बुज्झ खलोवणा जी ॥ ३९९ ॥

शीन शुबा नही कोई जरा इसमें सदा आपणा आप सरूप है जी । नही ज्ञान अज्ञानकीठौर उहां कहां सूर में छाउँ अरु धूप है जी॥ पडा सेज ही माहि मे सही सोया कूडा सुपतका रक अरु भूपहेजी ॥ बुल्लाशाह संभाल जब मूल देखा ठौर ठौरमें आप अनूप है जी ॥ ४०० ॥

स्वाद सबर करना आयवणी उत्ते देख रग ना चित्त डोलाइये जी । सदा तुखम दी तरफ निगाह करनी पात फूल फल ओर ना जाइयेजी ॥ जोई आय अर जाय टिक रहे नाही तासो कौन दानिश चित्त लाइये जी ॥ बुल्लाशाह संभाल खुद खण्डचाखी जिसेविषे फल तिसे क्यो खाइये जी ॥ ४०१ ॥

ज्वाद जिकर अरु फिकर को छोड दीजै कीजै नही कछु यही पछानणा है ।जासो उठयां ताही के बीच डारी हो अडोल देखो आप चानणा है॥सदा चीज नापैदही देखियेजी यही यही कर जीय मे आनणा है ॥ बुल्लाशाह सभाल तूँ आपताई तू तां सदा आनन्दमय जानणा है ॥ ४०२ ॥

तोय तोर महबूबदा जिन्हा डिट्ठा तिन्हां दूई तरफोमुख मोडयाई॥ काईलटक प्यारेदी लुट्टलीते हटे नांहि ऐसा जीउ जोडि याई ॥ अट्ठो पहिर दिवान मस्तानफिरदे ओनां पैर आलूद [illegible]ोडियाई॥ बुल्लाशाह उह आप महबूब होये शोक यारदे कुफर [illegible]तोडियाई॥

जोय जुदानही तेरा यार तें थी फिरे ढूँडदा किस [illegible] इस्समैनूँ ॥ पहिले ढूँडणेहार नूँ ढूँड खा जी परतक्ख घरे विज रस्स तेनूँ ॥

तू मत समझ किसी को सभको समझ पराया रे ॥ एक वार भी मन चित दे जिन ईश्वर का गुन गाया रे ॥ लोक प्रलोक में अहकर उसने मानुसजन्म सुधाया रे ॥ ४३६ ॥

गजल।

। तुम्हे धनवाद ऐ ईश्वर तेरे,सब खेल न्यारे हैं ॥ तेरे बेअन्त सागर में कई पैराक हारे हैं ॥ महा अध घोरसे जल पर पृथिवी का रचा मंडल ॥ कमल से ब्रह्मा पैदा करके चारों वेद उचारे हैं ॥ कहीं जल और कही खुश्की कही पहाडो को कर कायम ॥ जुदा हर द्वीप और चश्में जो धरती पर सिगारे हैं ॥ सतॄ बिन अरश कायम कर लगाया रग कुदरत का ॥ जमाया चांद सूरज को सजाये क्या सतारे हैं ॥ बनाकर पेड फूलो किये तकसीम गुलशनमें । अयाँ कुदरतहै हरगुलसे अजब तेरे नजारेहै॥ हुई कायम य जब हस्ती फनाको भी दी तब शक्ती । किसी की बस नही चलती जो रावन जैसे मारेहैं ॥ किसे ताकत दुनीचंद उसकी लीला जो करे वर्णन । ऋपीश्वर औ मुनीश्वर और योगीश्वर सभ पुकारे हैं ॥ ४३७ ॥

जगत सभ गैरहैलोको । य कूडी सैर है लोको ॥ य जग पल छिनक मेला है । सफर पडना इकेला है ॥गई रैन अब सवेला है । जपो राम अब भी वेला है ॥ तजो मोह माया तुम भाई । जनम बिरथा ही सभ जाई । चले नही सॅग पिता माई ॥ य जग सुपने की है नाई॥तू क्यो मस्ते में घेरा है ॥ करे नित मेरा तेरा है ॥ जहां पर पडना फेरा है । कठिन रस्ता अँधेरा है ॥ जो प्रभुको मनसे ध्यातेहै । उसीके गीत गाते है ॥ व वैकुंठोमें जाते हैं। अटल पदवीको पाते है ॥ [illegible] सर [illegible] उसीका नाम निरगुणहै ॥ नही कोई [illegible] न है [illegible]

रात और दिनहै ॥ जहांपर उसको ध्यायाहै । वही मौजूद पाया है ॥
शरण अहकर भी आया है । यही अब जीमे भाया है ॥ ४३८ ॥

हरि से भी मन प्रीत लगाले । जिंदगीका कछु नफा कमाले ॥
यह जीना है चार दिहाडे । किस हस्ती पर पाऊँ पसारे ॥
इस दिहका नहि कुछ भरवासा । काहे दर दर फिरत पियासा ॥
जैसा मोह माया मे कीना । अंत समय वैसा दुख दीना ॥
मुनि जन कर कर गये पुकारा । ऐसाही जीवन समारा ॥
नये साल नित खुशी मनाई । खुशी नही यह उमर घटाई ॥
जिस खातर जग ठाट बनावे । आखिर कुछ तेरे साथ न जावे॥
हाजिर होगा जब जम द्वारे ॥ तुझे मिलेंगे संकट भारे ॥
समझ सोचकर समां विताओ । अन्त समै पूरा सुख पाओ ॥
दुनीचंद हरि प्रीत सहारे । कर मँझधारसे नाव किनारे ॥ ४३९॥

राग प्रभाती।

क्यो सोयाहै जाग मुसाफिर भोर हुआ पथ भारी है । वहुत मुसाफिर पार उतर गये और पूर की त्यारी है ॥ किस कारण तुम बने विदेशी क्यो गफलत वुध मारी है ॥ नींद त्याग कर उत्तम सौंदा सफर न वारवारी है ॥ नेक अमल हरि नाम नफे विन सव विरथा जर जारी है। मोह माया के जाल मे पडना जिल्लत और खुवारी है ॥ स्याही गई सफेदी आई अजल कि दस्तक जारी है । विन खरीद हरी रस सौदाके जीती वाजी हारी है ॥ मेरी मेरीमे मन मूरख आयु कट गइ सारी है ॥ विनमत नाम यह सकल कमाई आखर सभ नाकारी है ॥ सच्चे सफर का फिकर भी करले वहां न किसीसे यारी है । रूप विना हरि नाम कमाई कोई नहीं उपकारी है ॥ ४४० ॥

यह जग है कोइ दिन का मेला ॥ क्यों झूठी है प्रीति लगाई ।भाई बंधु कुटुम्ब छोड़ कर तनहा जावैगा तू भाई ॥ कछु भी तेरे सँग चलना नाही महल माडियां खूब बनाई ॥ इक पलभीं हरि नाम न लीन्हा आयु आपनी वृथा गँवाई ॥ कोई है सुखमे दुखमें है कोई यह रचना है राम बनाई ॥ माधव रहु ईश्वरकी शरणी जो परलोक में हो सुखदाई ॥ ४४५ ॥

गजल।

तू गोविदहै और तू गोपालहै। तूही कृष्ण लाला तू नंदलाल है ॥ एक रूप तेरा जगत्मे समाया । पछावां तेरा कहीं ढूंढे न पाया ॥ मैं ढूँढू किधर नाथ देखू तुझे । कृपा करके अब दर्श दीजो मुझे ॥ मै अनाथ हूं और तू नाथोका है नाथ । नाम अपने की लाज पालो मेरे साथ ॥ तेरे चरणोंमें नित मेरी हो नमाम । गंगाविष्णुकी विनती है मुदाम ॥ ४४६ ॥

राग जगला।

नर अचेत पापसे डररे ॥ दीनदयाल सकल भय भंजन शरण ताहि तू पड रे ॥ वेद पुराण जिसका गुण गावें ताको नाम हिये में धर रे ॥ पावन नाम जगत्में हरिको सुमिर सुमिर पापां मल हररे ॥ मानस देह बहुरि नहिं पावे कछू उपाउ मुक्तिका कर रे॥ नानक कहत गाय करुणामय भवसागर से पार उतररे ४४७

विरथा कहो कौन सों मनकी ॥ लोभ भरयो दशहूं दिशि धावत आशा लागी धनकी ॥ सुखके हेत बहुत दुख पावत सेव करत जन जनकी ॥ द्वारे द्वारे श्वान ज्यों बोलत नहिं सुधि राम भजनकी ॥ मानस जन्म अकारथ खोयो लाज न लोग हँसनकी ॥ नानक हरि यश क्यो नहि गावत कुमति विनाशे मनकी ॥ ४४८ ॥

राग सोरठ ।

भूल्यो मन माया उरझायो ॥ जो जो कर्म कियो लालच लगि तिहि तिहि आप बँधायो ॥ समझ न पडी विषयरस राच्यो यश हरिको बिसरायो ॥ सँग स्वामी सो जान्यो नाहीं बन खोजन को धायो ॥ रत्न राम घट ही के भीतर ताको ज्ञान न पायो ॥ नानक जन भगवन्त भजन विन बिरथा जन्म गँवायो ॥ ४४९ ॥

राग भैरवी ।

हरि यश रे मन गाय ले जोसगीहै तेरो । अवसर बीत्यो जातहै कहा मान ले मेरो ॥ सपति धन रथ राजसो अति नेहु लगायो । काल फांस जब गल पडी सभ भयो परायो ॥ जान बूझके बावरे तैं काज विगारयो । पाप करत सकुच्यो नहि नहि गर्व निवारयो ॥ जिहि विधि गुरु उपदेशिया सो सुन रे भाई । नानक कहत पुकार के गहु प्रभु शरणाई ॥ ४५० ॥

हरि जू राख लेहु पति मेरी॥कालको त्रास भयो उर अतर शरणगही प्रभु तेरी ॥ भय मरनेकी बिसरत नाही तिहिं चिंता तन जारा ॥ किये उपाय मुक्तिके कारण दह दिशको उठधाया ॥ घट ही भीतर बसे निरतर ताको मर्म न पाया ॥ नाही गुण नाही कछु जप तप कौन कर्म अब कीजे ॥ नानक हारपरयो शरनागत अभयदान प्रभु दीजे ॥ ४५१ ॥

अब मैं कौन उपाय करू । जिहि विधि मनको सशय चूके भव निधि पार परूँ ॥ जन्म पाय कुछ भलो न कीनो ताते अधिक डरूँ ॥ गुरु मत सुन कछु ज्ञान ऊपज्यो पशुवत उदर भरूँ । कहँ नानक प्रभु विरद पछानो तब हो पतित तरूँ ॥ ४५२ ॥

राग भैरव ।

मन राम सुमिर पछतायगा ॥ पापी जीउडा लोभ करत नित आज कल्ह उठ जायगा ॥ लालच लागे जन्म गँवायो माया भरम

संतो ऐसा धुन्ध पसारा । इस घट अतर बाग बगीचा इसीमें सिरजन हारा ॥ इस घट अंतर सात समुद्रा इसीमें वारा पारा ॥ इस घट अंतर हीरा मोती इसीमें परखन हारा ॥ इस घट अंतर चांद सूरज हैं इसीमें बेहद तारा ॥ इस घट अंतर अनहद गरजे इसीमें उठत फुआरा ॥ कहें कबीर सुनो भाई साधो याही में गुरू हमारा ॥ ४६० ॥

राग भैरवी।

राम जपो जीया ऐसे ऐसे ॥ ध्रुव प्रहलाद जप्यो हरि जैसे ॥ दीनदयाल भरोसे तेरे ॥ सब परिवार चढ़ायो बेडे ॥ जां तिस भावे तां हुकुम मनावे ॥ इस बेडे को पार लँघावे ॥ गुरु प्रसाद ऐसी बुद्धि समानी ॥ चूकगई बिर आवन जानी ॥ कहत कबीर भज शारंगपानी ॥ वार पार सम एको जानी ॥ ४६१ ॥

जिहि मरने ते सब जग त्रासा ॥ सो मरना गुरु शब्दप्रकासा ॥ अब कैसे मरो मरन मन मान्या ॥ मर मर जाते जिन राम न जान्या ॥ मरनो मरन कहे सब कोई ॥ सहजे मरे अमर होय सोई ॥ कहत कबीर मन भया अनन्द गया भरम रहया परमानद ॥ ४६२ ॥

अमृत कर पीजाना ॥ डबिया में काला नाग जो भेजा में सालगराम कर जाना ॥ मीराबाई प्रेम दिवानी में सांवरिया वर पाना ॥ ४६४ ॥

तुम मेरी राखो लाज हरी। तुम जानत सब अन्तरयामी करनी कछु न करी ॥ औगुण मोसे विसरत नाहीं पल छिन घरी घरी। सब प्रपच की पोट बांध कर अपने शीश धरी ॥ दारा सुत धन मोह लिये हौं सुध बुध सब विसरी। सूर पतित को वेग उधारो अब मेरी नाव भरी ॥ ४६५ ॥

राग खमाच।

काया हरि के काम न आई ॥ भक्ति भाव जहँ हरि यश सुनियत तहां जात अलसाई ॥ काम मनोरथ लोभातुर है तहां सुनत उठ धाई ॥ जब लग प्रेम रग नहि परसत अधे ज्यो भरमाई ॥ सूरदास भगवत भजन विन विषय परम विष खाई ४६६

भले बुरे तो तेरे ठाकुर ॥ हमरे कुल की लाज बडाई विनती सुनो प्रभु मोरे ॥ सब तज तुम शरणागत आयो दृढ कर चरण गहेरे ॥ तव प्रसाद हम वदत न काहू निडर भये घर घेरे ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरी कृपासे पाये सुक्ख घनेरे ॥ ४६७ ॥

राग सारंग।

जिहि तन ना हरि भजन कियो ॥ सो तन सूकर श्वान मीन ज्यो यह सुख कहा जियो ॥ जो जगदीश ईश सबहिन को ताहि न चित्त दियो॥ प्रगट जान यदुनाथ विसार्‍यो आशा मद्य पियो॥ चार पदारथ को प्रभु दाता तिन्हे न मिल्यो हियो ॥ सूरदास रसना वश अपने टेर न नाम लियो ॥ ४६८ ॥

मन मेरो गज जिहवाकाती ॥ मप मप काटो जमकी फासी ॥ कहा करू जाती कहा करू पाती॥ रामका नाम जपो दिन राती॥

जिन्हा नाम ते भोये भार से ॥ आप लये लड लाय दरवेशसे ॥ तिन धन्य जनेदी मां आये सफलसे ॥ परवरदिगार अपार अगमबे अंततू जिन्हां पछाता सच्च चुम्मां पैर भू॥तेरी पनाह खुदाय तू बखशिंदगी शेख फरीदे खैर दीजे वदगी ॥ ४७६ ॥

अंतरमल निर्मल नहि कीनी बाहर भेख उदासी॥ हृदैकमलघट ब्रह्म न चीन्हा काहे भयो संन्यासी॥ भरमे भूले रे जैचदा नहिं नहिं चीना परमानंदा ॥ घर घर खाया पिंड बधाया किंथा मुंदा माया॥भूमि मसानकि भस्म लगाई गुरु बिन तत्त्व न पाया काहे जपो रे काहे तपो रे काहे बलोवो पानी॥ यह सृष्टि है जिन छपाई सो सिमरो निमरो निरवानी ॥ कायक मडल का पडिया रे अठसठ काहे फिराई । वदत त्रिलोचन सुनरे मानी हरि शरनी गत पाई ॥ ४७७ ॥

राग आसा ।

ऐसा नाम रत्न निरमोलक पुण्य पदारथ पाया ॥ अनेक यत्न कर हिरदे राख्या रत्न न छिपे छपाया । हरि गुण कहते कहते कहन न जाई॥ जैसे गूंगे की मठयाई । रसना रमत सुनत सुख श्रवणा चित चेते सुख होई ॥ कह भीषण दोय नयन सतोपे जहिं देखा तहि सोई ॥ ४७८ ॥

कवित्त ।

कोई एक पडित हो विद्या गुण मडित हो, डस्यो कालीनाग गयो गणिका निवास में ॥ कीनो मैथुन निर्वंश ह्वै विषय को प्रवेश, रैन वीती सारी सुख कामके हुलासमे ॥ केलि कर भयो भोर मुसकाय मुख मोर, बोलि एहो प्राणप्यारे मिलोगे अव कासमे ॥ जो पै वेद औ पुराण स्मृति सव सांचे होय, मेरी तेरी भेट होय कुंभी पाक वासमे ॥ ४७९ ॥

कुण्डलिया ।

मडन है ऐश्वर्य को सज्जनता सन्मान । वाणी सज्जन शूरता मंडन धनको दान ॥ मडन धनको दान ज्ञान मंडन इन्द्रीदम । तप मंडन अक्रोध नियम मडन सोहत सम ॥ प्रभुता मंडन माफ धर्म मडन छल छडन । सबहिनमें सरदार शीलता सबका मंडन ॥ ४८० ॥

कवित्त ।

रहाहै न कोई यहांरहि है न कोई यहां, जाने सब कोई पै न मानै मोहपरिगे ॥ हाथी अरु घोड़े रथ छोडे सब ठौर ठौर , मौननमें गाडे भूरि भाडे तेबिसरिगे । कहै छबिनाथ रघुनाथके भजन बिन, ऐसेही बिचारे जन्म कोटिन निसरिगे॥जङ्गवाले जोरवाले जाहिर जरबवाले, जोशवाले जालिम चिता की आग जरिगे ॥४८१ ॥

सवैया ।

भोगमें रोग वियोग सँयोगमें योगमें काया कलेश कमायो॥ त्यों पद्माकर वेद पुराण पढ्यो पढके बहु वाद वढायो ॥दौर्यो दुराशा मे दास भयो पै कहूँ विशराम को धाम न पायो । काया कमायो सो ऐसेही जीवन हाय मैं रामको नाम न गायो॥४८२॥

कवित्त ।

नारिके विकार सब ख्वार किये जीव जन्तु, नारिके विकार ब्रह्मादिक भरमायेहै ॥ नारिके विकार हार चले सब ऋषी मुनी, नारिके विकार शिव ध्यानसा छुड़ाये है ॥ नारिके विकार शशि सूर कला दूर भये, नारिके विकार राउ रंक मरवाये है । कहै एक साईं लोक नारि का विकार तज. ताते योगी जन सत तभी तो कहाये हैं ॥ ४८३ ॥

राग आसावरी।

हौ कुरवाने जाउँ प्यारे हौ कुरवाने जाउँ। हौं कुरवाने जाउँ तिन्हा दे लैन जो तेरा नाउँ ॥ लैन जो तेरा नाउँ तिन्हाके सदगुरु बाते जाउँ। काया रगन जे थिये प्यारे पाईये नाउँ मँजी॥ गंगन वाला जे रगे साहिव ऐसा रंग न डीठ ॥ जिनके चोलेढे रत्तडे प्यारे कन्त तिन्हाके पास ॥ धूड तिन्हाकी जे मिले जी कहु नानक की अरदास ॥ ४८७॥

ऐसो नाम तुम्हारो ठाकुर ऐसो नाम तुम्हारो॥ पतित पवित्र किये कर अपने सकल करत निमिसकारी ॥ जाति वरण कछु पूछे नाही सबको पाप निवारो ॥ नामां जेदेव कबीर त्रिलोचन मुक्त भयो चम्मारो। साधु सगत नानक बुध पाई हरि कीर्तन उद्धारो ॥ ४८८ ॥

मे मन तेरी टेक प्यारे मे मन तेरी टेक॥ और स्यानपा विरथियां प्यारे राखनको तुम एक ॥सतगुरु पूरा जे मिले प्यारे सो जन होत निहाला॥ गुरुकी सेवा सो करे प्यारे जिसनू होवे दयाला ॥ सफल मूरतिगुरुदेव स्वामी सर्व कला भरपूरे॥ नानक गुरु पारब्रह्म परमेश्वर सदा सदा हजूरे ॥ ४८९ ॥

राग आसावारी।

सुन सुन जीवां सोहले तिन्हांके जिन अपना प्रभु जाता॥ हरी नाम अराधने हरि नामबखाने हरि नामे ही मन राता ॥ सेवक जनकी सेवा मांगे पूरे कर्म कमावां॥ नानककी विनती हे स्वामी तेरे जन देखन पावां ॥ ४९० ॥

राग भैरवी।

अब हम गुम हुये अब हम गुम हुये प्रेम नगर के शहर ॥ अपने आप को शोध रहा हूँ शिर हत्थ नही पैर ॥ किते

राग रामकली ।

देखोरे मति बौरानी सदा जीवनमन लोडे । शिव सनका अरु ब्रह्मादिक सोभी काल नछोडे ॥ मुनि विनसे देव दानवा से जिन त्रिलोकी छत्र झूलाया । सोभी कालने वश कर छिनभी रहन न पाया ॥ वैद्य बुलाया वेगही आया पकड कुछ कह्यो ॥ ऐसी औषधि किसी न दीनी यह देही थिर र वेद पुराण कुराण किताबां अरु पडित मुल वाणे ॥ राई घट ना मासा मैं पुछ पुछ रही स्याणे । सकले दीपमें फिर थाकी देश दिशांतर लोई ॥ कहत कबीर जो हरि गुण हमरी औषधि सोई ॥४८४ ॥

राग जेजैवंती ।

जीवनसार विसरा क्यों मन । प्रभु पद सेवा त्याग मूढ फिरे अंध मतवारा ॥ विषय परायण होय जगतमें प्रभुसे कि किनारा ॥ काम रु क्रोध लोभवश होकर हित-अपना न विच रा ॥ धन दारा सुत काम न आवे जिन पर किया सहारा जिस जगमें तू भूल रहाहै दो दिनका है गुजारा ॥ पाप ता सताप दोष सब जो तू चाहे निवारा ॥ गिरधर लाल शरण हा ले तो जो जग प्राण अधारा ॥ ४८५ ॥

तुम विन कौन हमारो प्रभुजी॥होय असत्य के हम अनुरागी हित कर सत्य विसारो ॥ दिव्य ज्ञान विन अंध भये हम सूझे न सार असारो॥कभूं न बैठछिनक निरजन मे जीवन तत्त्व विचारो॥ दीन हीन अति कृपा पात्र लख करुणा हस्त पसारो ॥ पाप विकार हरो गिरिधर अब ज्यों ज्यों जानो सो तारो ॥ ४८६ ॥

राग आसावरी।

हौ कुरबाने जाउँ प्यारे हौ कुरबाने जाउँ। हौ कुरबाने जाउँ तिन्हा दे लैन जो तेरा नाउँ ॥ लैन जो तेरा नाउँ तिन्हाके सदगुरु बाते जाउँ। काया रगन जे थिये प्यारे पाईये नाउँ मँजी॥ रगन वाला जे रगे साहिब ऐसा रंग न डीठ ॥ जिनके चोलेढे रत्तडे प्यारे कन्त तिन्हाके पास ॥ धूड तिन्हाकी जे मिले जी कहु नानक की अरदास ॥ ४८७॥

ऐसो नाम तुम्हारो ठाकुर ऐसो नाम तुम्हारो॥ पतित पवित्र किये कर अपने सकल करत निमिसकारो ॥ जाति वरण कछु पूछे नाही सबको पाप निवारो ॥ नामां जेदेव कबीर त्रिलोचन मुक्त भयो चम्मारो। साधु सगत नानक बुध पाई हरि कीर्तन उद्धारो ॥ ४८८ ॥

मैं मन तेरी टेक प्यारे मैं मन तेरी टेक॥ और स्यानपा विरथियां प्यारे राखनको तुम एक ॥सतगुरु पूरा जे मिले प्यारे सो जन होत निहाला॥ गुरुकी सेवा सो करे प्यारे जिसनू होवे दयाला ॥ सफल मूरतिगुरुदेव स्वामी सर्व कला भरपूरे॥ नानक गुरु पारब्रह्म परमेश्वर सदा सदा हजूरे ॥ ४८९ ॥

राग आसावारी।

सुन सुन जीवां सोहले तिन्हांके जिन अपना प्रभु जाता॥ हरी नाम अराधने हरि नाम बखाने हरि नामे ही मन राता ॥ सेवक जनकी सेवा मांगे पूरे कर्म कमावां ॥ नानककी विनती हे स्वामी तेरे जन देखन पावां ॥ ४९० ॥

राग भैरवी।

अब हम गुम हुये अब हम गुम हुये प्रेम नगर के शहर ॥ अपने आप को शोध रहा हूँ शिर हत्थ नहीं पेर ॥ किते

पकड़ ले चलें घराथी कौन करे निरवैर ॥ खुदी खोई अपना पद चीन्हा तब हो कुल खैर ॥ बुल्लाशाह दोहीं जहानी कोई न दिसदा गैर ॥ ४९१ ॥

बस्स कर जी हुन बस्स कर जी ॥ काई वात असा नाल हस्स कर जी ॥ तूसी दिल मेरे विच वसदेसी ॥ तदों सानू दूर क्यो दस देसी ॥ तदो घत्त जादू दिल खसदेसी ॥ हुनकितवल जासू नस्स कर जी ॥ तुसी मोयानूं मार न मुकदे सी ॥ नित्त खुदो वांगू कुटदेसी॥गल्ल करदे से गल घुटदेसी ॥ हुन तीर लायो तन कस्सकर जी ॥ तुसी छिपदे से असां पकडे हो ॥ तुसींअजे छिपड नूत कडे हो ॥ असां विच जिगर दे जकडे हो॥हुन कहां जाओ दिल खस्स कर जी ॥ बुल्लाशाह असी तेरे बरदे से ॥ तेरे मुख देखन नू मरदे से ॥ तुध वांगू मिन्नता करदे से हुन बैठे पिजरे बिच्य वस्स कर जी ॥ ४९२ ॥

राग विहाग।

इश्क दीनवी ओ नवी बहार॥ जो मै सबक इशकदा पढचा ॥ जीवडा मसजद कोलां डरचा ॥ जां सद वाना शिर पर धरचा॥ घर बिच पाया महरम यार॥ जो में रमजइशक दी पाई ॥ मैनां तूती मार गॅवाई ॥ अंदर बाहर होई सफाई॥जितवल देखां यारो यार ॥ वेद पुराण पढ़े पढ़ थक्के॥ सिजदे कर दियां घस गये मत्थे ॥ नां रब तीरथ नारब मक्के जिन पाया तिन नूर जमाल॥ इशक भुलाया मेरा तेरा हुन क्यो रोवें झेडा ॥ बुल्ला रहिदा चुप चुपता दिल बिच सुल्ले सभ इसरार ॥ ४९३ ॥

गजल।

प्यारे गम छोड दुनियाका साहवसे आशनाई कर ॥सभी कुछ छोड जाना है साहिवसे ना जुदाई कर॥ भिखारिन नाम है मेरा

करूगी हर घडी फेरा ॥ वता देवो पियाका डेरा बिरहो ने जिसके हे वेरा ॥ लागी है प्रेमकी लोकी तुम्हारे दरश की भूँखी ॥ वली को ला मिलओगे नही तो जान अव सूखी ॥ ४९४ ॥

गजल।

काफरे इशकम मुसलमानी मरा दरकार नेस्त ॥ हर रगे मन् तरा गश्तिह हाजते ज़ुन्नार नेस्त ॥ अज सिरे वालीने मन् वरखेज अयनादां तवीव ॥ दर्दशोरे वुलवुल कम न गर्दद गररवद गुल अज चमन् ॥ हुस्न बेवुनियाद वाशद इश्क वे वुनियाद नेस्त ॥ शाद वाश ऐ दिलकी फरदा अज सिरे वाजारे इश्क ॥ वादये कतलस्त वाशद दावए दीदार नेस्त ॥ मा गरीबां रा तमांशय चमन् दरकार नेस्त॥दागहाय सीना वर मन कमतर अज गुलजार नेस्त ॥ नाखुदा दर किश्तिये मन गर न वाशद गो मुवाश ॥ मा खुदा दारेम मारा न खुदा दरकार नेस्त ॥ मदेइशक रा दारू वजुज् दीदार नेस्त ॥ खल्क मेगोयद कि खिसरो बुतपरस्ती मेकुनद ॥ आरे आरे मेकुनम वा खुलके आलम कार नेस्त ॥४९५॥

अयचिहरए जेवाय तो रशके बुताने आजरी हरचद वसूफत मेकुनम् लेकिन अजां वाला तरी ॥ आफ़ाक रागरदी दह अम मिहरे बुतां वरजी दमहम् ॥ विस्यार खूवां दीदह अम अम्मा तो चीजे दीगरी ॥ मनतो सुदम तो मन शुदी मन् तन् शुदम् तो जॉ शुदी ॥ ता कस न गोयद वादजी मन् दीगरम तो दीगरी॥ खिसरो गरीवस्तो गदा उफतादह दर सहरे शुमा ॥ वाशद कि अज बहरे खुदा सूये गरीवा बिगरी ॥ ४९६ ॥

राग परज।

तू वात चलन दी कर रे एथे रहना नाहिं ॥ इस देही विच पांच चोर है इन्हा दा कह्या न कर रे।इह संसार कच्चा दी वाडी

तू सँभल सँभल पग धर रे ॥ साढे तीन हत्थ जिमीं वंद तू एडडे मुल्क न मह्हर ॥ हुसेन फकीर रवाणा झूठी दुनिया कूडा वाणा तू हरि चर्नन चित धर रे ॥ ४९७ ॥

गजल।

। तुझसे मैंने दिलको लगाया ॥ एक तुझको अपना पाया ॥जो कुछ है॥सो तूही है सब कीनो मकां दिल मे तू ॥ कौन दिल है जिसमें नही तू हर एक दिल मे तू ही समाया ॥ जो कुछ है सो तूही है। कैसा मुलायक कैसर इन्सां॥कैसा हिंदू कैसा मुसल्मां॥ जैसा चाहा तूने बनाया॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ कावे मे क्या और देर में क्या॥तेरी परस्तिश है सब जा ॥ आगे तेरे सिर सबने झुकाया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ अरश से लेकर फरसे जिमी तक॥ और जमी से अरशे बरी तक ॥ जहां मे देखा तू ही नजर आया ॥ जो कुछ है सो तू ही है ॥ अरश लेकर फरसे जिमी तक ॥ और जमी से अरशे बरी तक ॥ जहां मे देखा तू ही नजर आया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ सोचा समझा देखा भाला ॥ तुझे छान कर ढूंढ निकाला ॥ अब यही समझ मे जफर के आया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ ४९८ ॥

राग आसा।

क्यो मन भूलाहै ससारा ॥ मन मत दे टुक कर ले गुजारा ॥ इस जगमे सुख नित नहिं भाई यह तो है जैसे पानी की धारा ॥ मात पिता अरु शेप कुटुम्ब सब संग नही कोइ जावन हारा ॥ अत समै सब देखन आवे छिन भर में सब होवें न्यारा ॥ जो कुछ अगमे होगा तुम्हारा वह भी सब मिल लेयँ उतारा ॥ भाई नरकोंमें जब तुम पडोगे तब नही कोई बचावन हारा ॥ भाई मुक्तिका तुम भी करो खोज करुणामय प्रभुतारन हारा ॥ ४९९ ॥

गजल ।

सुनो रे भाइयो तुमको यहाँसे कूच करना है ॥ रहो तुम याद हकमें जब तलक ह्याँ आबो दानाहे ॥ क्यों इतना होके गाफिल भूले इस दुनियाँ के लालच में ॥ करो कुछ ख्याल भाई हकका अगर जिन्नत को पाना है ॥ पडे सोतेहो गफलत में जरा टुक आंख को खोलो ॥ हुई है शाम उठ बैठो मुसाफिर घरको जाना है ॥ न दौलत काम आवेगी न इस दुनियासे कुछ हासिल ॥ अगर तुम सोच कर देखो यह सब कुछ छोड जाना है ॥ हयात अब्दी अगर चाहो तो छोड़ो तुम गुनाहो को ॥ कहे मुकती प्रभु सुमिरो वही सच्चा ठिकाना है ॥ ५०० ॥

बस अब मेरे दिल में बसा एक तू है ॥ मेरे दिलका अब दिल रुबा एक तू है ॥ फकत तेरे कदमोसे अय मेरे खालक ॥ लगा अब मेरा ध्यान शामो सुबू है ॥ मेरा दिल तो तुझसेही पाता है तसकी ॥ बसी मगज मे प्रेमकी तेरी बू है ॥ समझते है यूं मुझको अकसर दिवाना ॥ तेरा जिक्र विरदे जवां कू बकू है ॥ नही मुझको दुनियावी खुशबू से उल्फत ॥ तेरा प्रेम ही अब मेरा मुश्को बू है ॥ रँगूं प्रेम से तेरे दिलका य चोला ॥ जिसे ज्ञान से अब किया कुछ रफू है॥न पाला पडे न फसे शैतांसे मुझको तेरे दास की अब यही आरजू है ॥ ५०१ ॥

प्रभू प्रेम एक शरबते दिलकशा है ॥ गुनह के मरीजो कि नादर दवा है ॥ जो प्रेम एक बारी सिदक दिलसे पीयो ॥ गुनह के मरज से तो हुकमन सफाहे ॥ सिदक दिल से इक बार पीकर तो देखो खुदा के लिये यह मेरी इलतजा है ॥ फँसा जो गुनह में निकलता है मुश्किल ॥ य जालम बुरी [illegible] के हक

मे वबा है॥जो निकला नफस की गुलामी से यारो ॥ उसे मर हवा मरहवा मरहवा है ॥ फिदा हूँ हरदाज पर उसके मैं भी ॥ खुदा को ही जिसने दिल अपना दिया है ॥ गनी होगया जब मिला जिस गदा को ॥ प्रभू प्रेम क्या नुस्खये कीमियाँ है॥ फिदा तूभी विश्वासि हो अब खुदा पर ॥ न ला काम गफलत को अब देर क्या है ॥ ९०२ ॥

अजब तेरा कानून देखा खुदाया ॥ जहां दिल दिया फिर वही तुझको पाया ॥ न यां देखा जाता है मदिर व मसजिद ॥ फकत यह कि तालब सिदक दिल से आया ॥ जो तुझपै फिदा दिल हुआ एक बारी ॥ उसे प्रेम का तूने जलवा दिखाया ॥ तेरी पाक सीरत् क आशक हुआ जो ॥ वही रँग रंगा फिर जो तूने रंगाया ॥ है गुमराह जिस दिल मे बाकी खुदी है ॥ मिला तुझसे जिसने खुदी को गँवाया ॥ हुआ तेरे विश्वासी को तेरा दरशन ॥ गदा को दुरे बेबहा हाथ आया ॥ ९०३ ॥

जलवए हक जहां जिस दिल मे नमूदार हुआ ॥ खुद को सदकह किया रुसवा सिरे बाजार हुआ ॥ जिसने पाया नहीं मुमकिन कि वह खामोश रहे खुद बखुद जलवये हक बाइसे इजहार हुआ ॥ कशिश उलफते दुनिया है बहुत सद्दे राह ॥ जिसने दफा इसको किया वही खबरदार हुआ ॥ भक्ती और प्रेम के फूलो से सजा गुलशने दिल ॥ इक नये तरज क गुलदस्तए बेखार हुआ ॥ डूबा वह दिल जो फँसा उलफते दुनियावी मे ॥जिसने दिल हक को दिया वही वशर पार हुआ॥ तूभी विश्वासी शरण ले उसी हकताला की ॥ जिसको लेकरही हर एक पापी का उद्धार हुआ ॥ ९०४ ॥

गजल।

समझ बूझ दिल खोज पियारे आशक होकर सोना क्या ॥ जिन नैनोंसे नींद गँवाई तकिया लेफ बिछौना क्या ॥ रूखा सूखा रामक टुकडा चिकना और सलोना क्या ॥ कहत कमाल प्रेमके मारग शीश दिया फिर रोना क्या ॥ ५०५ ॥

नाम जपनक्यो छोड दिया॥क्रोधध न छोडा झूठ न छोडा सत्य वचन क्यों छोड दिया ॥ झूंठे जगमे दिल ललचाकर असल वतन क्यों छोड दिया ॥ कौडी कोतू खूब सँभाला लाल रतन क्यो छोड दिया ॥ जिहि सुमिरन ते अति सुख पावे सो सुमिरन क्यो छोड दिया ॥ खालस इक भगवान भरोसे तन मन धन क्यो छोड दिया ॥ ५०६ ॥

रागआसा।

प्रभु को सुमिर सुमिर मन मेरे ॥ पाप कटें सब तेरे ॥ नाम दान असनान निरार्थ जब प्रीत नही मन तेरे ॥ जात पोत की बात न पूछे पूछे काज भलेरे ॥ जिन करतार अकाल पछाना सोई जात उचेरे ॥ दो दिनके सुख कारन मूरख पावत उमर बखेरे ॥गग यमुन काशी वन जंगल हरि घट मो हरि नेरे ॥ पर जो उसको ढूँढन जावत ऊजड फिरत अधेरे ॥ सांच त्याग मिथ्या जिनपकडी अति उन दु:ख सहेरे॥खालस जिन भगवान पछाता हम तिनके है चेरे ॥ ५०७ ॥

राग गौरी।

साधो मनका मान त्यागो ॥ काम क्रोध सगत दुर्जनकी तांते अह निश भागो ॥ सुख दुख दोनो सम कर जाने और मान अपमाना ॥ हर्ष शोक ते रहे अतीता तिन जग तत्त्व पछा-

ना ॥ अस्तुति निंदा दोऊ त्यागै खोजै पदनिरवाना ॥जन नानक खेल कठिन है किनहुं गुरमुख जाना ॥ ५०८ ॥

साधो रचना राम बनाई ॥ इक बिनशै इक अस्थिर मानै अचरज लख्यो न जाई ॥ काम क्रोध मोहवश प्राणी हरि मूरति बिसराई ॥ झूठा तन सांचा कर मान्यो ज्यों सुपना रैनाई ॥ जो दीसै सो सकल बिनाशै ज्यों बादर की छाई ॥ जन नानक जग जानो मिथ्या रहो राम शरनाई ॥ ५०९ ॥

राग कान्हरा ।

तुही एक मेरा मददगार है ॥ तेरा आसरा मुझको दरकार है ॥ किये मैने अपराध बख्शो सभी नही जिनका कुछ भी तो शुम्मार है ॥ कई पतित तारे सुनाऊं मैं क्या क्या बताने में ब्रह्मा भी लाचार है ॥ भगत राम भी दर तेरे पै पडा तू चाहे तो अबही बेडा पार है ॥ ५१० ॥

दोहा—कहा करै रसखानको, कोऊ कुटिल लबार।
जो पै राखन हार है, माखन चाखन हार ॥

इति श्रीरागरत्नाकरे तृतीय भागः समाप्तः ।



ओ तत् सत परमात्मने नमः ।

अथ रागरत्नाकर ।

चतुर्थभागप्रारम्भः ।



अथ ग्रंथसाहिबके शब्द ।

जे युग चारे आग्जा होर दसूणी होय ॥ नमां खडा विच जाणिये नाल चले सभ कोय ॥ चगा नॉउ रखायके यश कीरति जग लेय ॥ जे तिस नदर न आवई तां बात न पुच्छे केय ॥ कीटां अदर कीट घर दोसी दोस धरेय ॥ नानक निर्गुण गुण करे गुणवत्यां गुण देय ॥ तेहा कोय न सूझई जे तिस गुण कोय करेय ॥ १ ॥

जत्त पहारा धीरज सुनिआर ॥ अहरण मत्त वेद हथियार ॥ भौ खल्लां अग्नि तताउ ॥ भांडा भाउ अमृत तित ढाल ॥ घडीये शब्द सची टकमाल ॥ जिनको नदर करम तिन कार॥ नानक नदरीं नदर निहाल ॥ २ ॥

पवन गुरू पाणी पिता माता धरति महत्त॥दिवस रात दोय दाई दाया खेल सकल जगत्त ॥ चगि आइयां बुरी आइयां वाचे धर्म हजूर ॥ करमी आयो आपणी के नेडे के दूर ॥ जिन्ही नाम ध्याईया गये मुशक्कत घाल ॥ नानक ते मुख उज्जले केती छुट्टी नाल ॥ ३ ॥

राग आसावरी ।

सो दर तेरा केहा सो घर केहा जित बहि सर्व समाले ॥ बाजे तेरे नाद अनेक असखा केते वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ गावण तुध नू पवन पाणी

ना ॥ अस्तुति निंदा दोऊ त्यागै खोजै पदनिरवाना ॥जन नानक खेल कठिन है किनहुं गुरमुख जाना ॥ ५०८ ॥

साधो रचना राम बनाई ॥ इक बिनशै इक अस्थिर मानै अचरज लख्यो न जाई ॥ काम क्रोध मोहवश प्राणी हरि मूरति बिसराई ॥ झूठा तन सांचा कर मान्यो ज्यों सुपना रैनाई ॥ जो दीसै सो सकल विनाशै ज्यो बादर की छाई ॥ जन नानक जग जानो मिथ्या रहो राम शरनाई ॥ ५०९ ॥

राग कान्हरा ।

तुही एक मेरा मददगार है ॥ तेरा आसरा मुझको दरकार है ॥ किये मैंने अपराध बख्शो सभी नही जिनका कुछ भी तो शुम्मार है ॥ कई पतित तारे सुनाऊँ मैं क्या क्या बताने मे ब्रह्मा भी लाचार है ॥ भगत राम भी दर तेरे पै पडा तू चाहे तो अबही बेडा पार है ॥ ५१० ॥

दोहा–कहा करे रसखानको, कोऊ कुटिल लबार।
जो पै राखन हार हैं, माखन चाखन हार ॥

इति श्रीरागरत्नाकरे तृतीय भागः समाप्त. ।



ओ तत् सत परमात्मने नमः ।

अथ रागरत्नाकर ।

चतुर्थभागप्रारम्भः ।

—०•०—

अथ ग्रंथसाहिबके शब्द ।

जे युग चारे आरजा होर दसूणी होय ॥ नमां खडा विच जाणिये नाल चले सभ कोय ॥ चगा नॉउ रखायके यश कीरति जग लेय ॥ जे तिस नदर न आवई तां बात न पुच्छै केय ॥ कीटां अंदर कीट धर दोसी दोस धरेय ॥ नानक निर्गुण गुण करे गुणवंत्यां गुण देय ॥ तेहा कोय न सूझई जे तिस गुण कोय करेय ॥ १ ॥

जत्त पहारा धीरज सुनिआर ॥ अहरण मत्त वेद हथियार ॥ भौ खल्लां अग्नि तताउ ॥ भांडा भाउ अमृत तित ढाल ॥ घडीये शब्द सची टकमाल ॥ जिनको नदर करम तिन कार॥ नानक नदरी नदर निहाल ॥ २ ॥

पवन गुरू पाणी पिता माता धरति महत्त॥दिवस रात दोय दाई दाया खेल सकल जगत्त ॥ चगि आइयां बुरी आइयां वाचे धर्म हजूर ॥ करमी आयो आपणी के नेडे के दूर ॥ जिन्ही नाम ध्याइया गये मुशक्कत घाल ॥ नानक ते मुख उज्वले केती छुट्टी नाल ॥ ३ ॥

राग आसावरी ।

सो दर तेरा केहा सो घर केहा जित बहि सर्व समाले ॥ वाजे तेरे नाद अनेक असखा केते वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ गावण तुध नू पवन पाणी

बैसंदर गावै राजा धर्म द्वारे ॥ गावन तुधनूं चित्रगुप्त लिख जानण लिख लिख धर्म विचारे ॥ गावन तुधनूं ईश्वर ब्रह्मा देवी सोहन तेरे सदा सवारे ॥ गावन तुधनूं इंद्र इन्द्रासन बैठे देवतियों दर नाले ॥ गावन तुधनूं सिद्ध समाधी अंदर गावन तुधनूं साध विचारे॥ गावन तुधनू यती सती संतोष गावन तुधनूं वीर करारे ॥ गावन तुधनू पंडित पढ़न ऋषीश्वर युग युग वेदां नाले ॥ गावन तुधनूं मोहनियां मनमोहन सुरंगा मच्छ प्याले ॥ गावन तुधनूं रत्न उपाये तेरे अठसठ तीरथ नाले ॥ गावन तुधनू जोध महाबल सूरा गावन तुधनूं खाणी चारे ॥ गावन तुधनूं खंड मंडल ब्रह्मांडा कर कर रखे तेरे धारे ॥सेई तुधनूं गावन जो तुध भावन रत्ते तेरे भगत रसाले॥होर केते तुधन गावन से मैं चित्त न आवन नानक

अष्ट सिधान ठाकुर कर तल धरचा ॥ जन नानक वल वल सद वल जाइये तेरा अंत न पारावराचा ॥ ५ ॥

राग आसावरी ।

घटघट अन्तर सर्व निरंतर जी हर एको पुरुष समाणा ॥ इक दाते इक भेखारी जी सभ तेरे चोज विडाना ॥ तूं आपे दाता आपे भुगता जी हौं तुध विन अवर न जाणा ॥ तूं पारब्रह्म बे अन्त बे अन्त जी तेरे क्या गुण आख बखाणा ॥ जो सेवाही जो सेवहि तुधजी जन नानक तिन कुरवाणा ॥ ६ ॥

भई प्रात मानुष्य देहरिया ॥ गोविन्द मिलनकी यह तेरी वेरिया ॥ अवर काज तेरे किते न काम ॥ मिल साध सगत भज केवल नाम ॥ सरंजाम लाग भव जल तरन के ॥ जन्म वृथा जात रंग मायाके ॥ जप तप संयम धर्म न कमाया ॥ सेवा साध न जान्या हरिराया ॥ कह नानक हम नीच कर्म्मा ॥ शरण पडेकी राखो शर्म्मा ॥ ७ ॥

राग धनाश्री ।

गगन मय थाल रवि चन्द्र दीपक बने तारिका मडला जनक मोती ॥ धूप मलिआन लो पवन चवरो करे सकल वनराय फूलत जोती ॥ कैसी आरती होय भव खडना तेरी आरती अनहदा शब्द वाजन्त भेरी ॥ सहस तव नयन नन नयन है तोहिको सहस मूरत नाना एक तोही ॥ सहस पद विमल नन एक पद गंध विन सहस तव गंध इव चलत मोही ॥ सबमें जोति जोति है सोय ॥ तिसदे चानण सबमें चानण होय ॥ गुर साखी जोत परगट होय ॥ जो तिस भावै सो आरती होय ॥ हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आहि प्यासा ॥ कृपा जल देहु नानक सारग को होय जीते तेरे नाई वासा ॥ ८ ॥

वैसंदर गावै राजा धर्म द्वारे ॥ गावन तुधनूं चित्रगुप्त लिख जानण लिख लिख धर्म विचारे ॥ गावन तुधनूं ईश्वर ब्रह्मा देवी सोहन तेरे सदा सवारे ॥ गावन तुधनूं इंद्र इन्द्रासन बैठे देवतियों दर नाले ॥ गावन तुधनूं सिद्ध समाधी अंदर गावन तुधनूं साध विचारे॥ गावन तुधनूं यती सती संतोष गावन तुधनूं वीर करारे ॥ गावन तुधनूं पंडित पढ़न ऋषीश्वर युग युग वेदां नाले ॥ गावन तुधनूं मोहनियां मनमोहन सुरंगा मच्छ प्याले ॥ गावन तुधनूं रत्न उपाये तेरे अठसठ तीरथ नाले ॥ गावन तुधनूं जोध महाबल सूरा गावन तुधनूं खाणी चारे ॥ गावन तुधनूं खंड मंडल ब्रह्मांडा कर कर रखे तेरे धारे ॥सेई तुधनूं गावन जो तुध भावन रत्ते तेरे भगत रसाले॥होर केते तुधनूं गावन से मैं चित्त न आवन नानक क्या वीचारे ॥ सोई सोई सदा सच साहिब सांचा सांची नाई ॥ है भी होसी जाय न जासी रचना जिन रचाई॥ रंगी रंगी भांती कर कर जिनसी माया जिन उपाई ॥कर कर देखे कीता अपणा ज्यों तिसदी वडिआई ॥ जो तिस भावै सोई करसी फिर हुकम न करना जाई ॥ सो पातशाह शाहा पति साहिब नानक रहण रेजाई ॥ ४ ॥

राग गुजरी।

काहे रे मन चितवे उद्यम जां आहर हरिजी उपरिआ शैल॥ पत्थर मैं जंत उपाये तांका रिजक आगे कर धरिआ ॥मेरे माधो जी सतसंगति मिले सो तरया ॥ गुरु प्रसाद परमपद पाया सूके काशट हरया ॥ जननी पिता लोक सुत वनिता कोय न किसकी धरया ॥ सिर सिर रिजक संबाहे ठाकुर काहे मन भौ करया ॥ ऊडे ऊड आवै से कोसां तिस पाछे वछरे छरया ॥ तिन कवन खिलावै कवन चुगावै मनमे सिमरन करया ॥ सभ निधानदस

अष्ट सिधान ठाकुर कर तल धरचा ॥ जन नानक बल बल सद बल जाइये तेरा अत न पारावराचा ॥ ५॥

राग आसावरी।

घटघट अन्तर सर्व निरंतर जी हर एको पुरुष समाणा॥ इक दाते इक भेखारी जी सभ तेरे चोज विडाना ॥ तूं आपे दाता आपे भुगता जी हौं तुध बिन अवर न जाणा॥ तूं पारब्रह्म बे अ-त वे अन्त जी तेरे क्या गुण आख बखाणा ॥ जो सेवाही जो सेवहि तुधजी जन नानक तिन कुरवाणा ॥ ६ ॥

भई प्राप्त मानुष्य देहरिया ॥ गोबिन्द मिलनकी यह तेरी बेरि-या ॥ अवर काज तेरे किते न काम ॥ मिल साध सगत भज केवल नाम॥ सरजाम लाग भव जल तरन के ॥ जन्म वृथा जात रग मायाके ॥ जप तप सयम धर्म न कमाया॥ सेवा साध न जान्या हरिराया ॥ कह नानक हम नीच कर्म्मा ॥ शरण पडेकी राखो शर्म्मा ॥ ७ ॥

राग धनाश्री ।

गगन मय थाल रवि चन्द्र दीपक वने तारिका मडला जनक मोती ॥ धूप मलिआन लो पवन चवरो करे सकल वनराय फूलत जोती ॥ कैसी आरती होय भव खडना तेरी आरती अनहदा शब्द वाजन्त भेरी ॥ सहस तव नयन नन नयन हैं तोहिको सहस मूरत नाना एक तोही ॥ सहस पद विमल नन एक पद गध विन सहस तव गंध इव चलत मोही ॥ सवमे जोति जोति है सोय ॥ तिसदे चानण सवमें चानण होय ॥ गुर साखी जोत परगट होय ॥ जो तिस भावे सो आरती होय ॥ हरि चरण कमल मकरद लोभित मनो अनदिनो मोहि आहि प्यासा ॥ कृपा जल देहु नानक सारग को होय जीते तेरे नाई वासा ॥ ८ ॥

राग गौरी पूरबी ।

करों विनती सुनो मेरे मीता संत टहिल की बेला॥ ईहां खाट चलो हरि लाहा आगे बसन सुहेला ॥ औध घटे दिन सुरैना रे ॥ मन गुरु मिल काय सवारे ॥ यह ससार विकार संशय महि तर्‍यो ब्रह्मज्ञानी ॥ जिसहि जगाय प्यावै यह रस अकथ कथा तिन जानी ॥ जाको आये सोई विहाझहु हरि गुरु ते मनहि बसेरा ॥ निजघर महल पावो सुख सहजे बहुर न होयगो फेरा ॥ अंतरयामी पुरुष विधाते सरधा मनकी पूरे ॥ नानक दास इहै सुख मांगै मोको कर संतन की धूरे ॥ ९ ॥

राग श्री ।

मोती तां मंदर ऊसरहिं रतनी तां होहिं जडाउ ॥ कस्तूरि कुगू अगर चंदन लीप आवै चाउ ॥ मत देख भूला वीसरै तेरा चित न आवै नाउ ॥ हरि विन जीव जलबल जाउ ॥ मै आपणा गुरु पूँछ देख्या अवसर नाहीं थाउ ॥ धरती तां हीरे लाल जडती पलँग लालजडाउ ॥ मोहणी मुख मणी सोहै करे रंग पसाल ॥ मत देख भूला बीसरै तेरा चित्त न आवे नाउ ॥ सिद्ध होवां सिद्ध रिद्ध आखां आउ ॥ गुप्त परगट होय बैसा लोक राखे भाउ ॥ मत देख भूला बीसरे तेरा चित्त न आवे नाउ ॥ सुलतान होवां मेल लशकर तखत राखां पाउ ॥ हुकम हासम करी बैठा नैनका सब बाउ ॥ मत देख भूला बीसरैतेरा चित्त न आवै नाउ ॥ १० ॥

जाको मुशकल अति बणे ढोई कोयन देय ॥ लागू होय दुश-मना साक भी भज्ज खले ॥ सभो भज्ज आसरा चुक्के सभ अस-राउ ॥ चित्त आवै उस पारब्रह्म लगै न तत्ती बाउ ॥ साहिब निताणिआं का ताण ॥ आय न जाई थिर सदा गुरु सबदी सच

जाण॥ जेको होवे दुर्बला नग भूख की पीर ॥ दमडा पछे ना पवे ना को देवे धीर ॥ स्वार्थ स्वाउ न को करे ना किछु होवे काज ॥ चित्त आवै उसपार ब्रह्मज्ञता निश्चल होवे राज ॥ जाको चिता बहुत बहुत देही व्यापे रोग ॥ गिरिस्तकुटुम्ब पलेट्या कदे हर्ष कदे सोग ॥ गौण करे कहु चहुँ कुटका घडी न बेसन होय ॥ चित्त आवै उस पारब्रह्म तन तन मन शीतलहोय ॥ काम क्रोध मोह वस कीया किरपन लोभ प्यार ॥ चारे किलविष उन् अघकिये होया असुर संहार ॥ पोथी गीत कवित्त कछु कदे न करन धरचा ॥ चित्त आवे उस पारब्रह्म तां निमिप सिमरत तरचा ॥ सासत सिमृत वेद चार मुखाकर बिचरे ॥ तपी तपीसर योगी या तीर्थ गमन करे ॥ खट करमां ते दुगुने पूजा करता न्हाय॥ रगन लग्गी पारब्रह्म तां सरपर नरके जाय ॥ राज मिलके सिकदारीआ रस भोगन विस्तारा ॥ वाग सुहावे सोहणें चल्ले हुकुम अफारा ॥ रग तमासे बहु विधि चाय लग रहिया ॥ चत्त न आयो पारब्रह्म ता सरपकी जून गया ॥ बहुत धनाढ्य अचारवंत शोभा निर्मल रीत ॥ मात पिता सुत भाइयां साजन सग प्रीत ॥ लशकर तरकस वद वद जीउ जीउ सगली कीत ॥ चित्तन आयो पारब्रह्म तां खड रसातल दीत ॥ कायां रोग न छिद्र कछु नां कछु काढा सोग ॥ मिरत न आवी चित्त तिस अहनिस भोगें भोग ॥ सभ कछु कीतो नआपणा जीउ निशक धरचा ॥ चित्त न आयो पारब्रह्म जम किकर वस परचा ॥ कृपा करे जिस पारब्रह्म होवे साधू सग ॥ ज्यो ज्यो ओह वधाइये त्यो त्यो हरि सो रग ॥ दोहां सिरां कारवसम आय अवर न दूजा थाउँ ॥ सतगुरु तुट्टे पाइया नानक सच्चा नाउँ ॥ ११ ॥

कीता लोडिये कम्म सो हरि पै आखिये॥कारज देय सवार सतगुरु सच साखिये ॥ संतांसंग निधान अमृत चाखिये ॥ भय भजन मिहरवान दास की राखिये ॥ नानक हरिगुण गाय अलख प्रभु लाखिये ॥ १२ ॥

राग मॉंझ ।

पारब्रह्म अपरंपर देवा ॥ अगम अगोचर अलख अभेवा ॥ दीनदयाल गोपाल गोविदा हरि ध्यावो गुरुमुख गाती जी ॥ गुरुमुख मधुसूदन निस्तरे ॥ गुरुमुख संगी कृष्ण मुरारे ॥ दयाल दामोदर गुरुमुख पाइये होर तू किते न भाती जी ॥ निरहारी केशव निरवैरा ॥ कोट जनां चाके पूज पैरा॥गुरुमुख जाके हिरदे हरहर सोई भगत इकाती जी ॥ अमोघ दर्शन बे अंत अपारा वड समरत्थ सदा दातारा ॥ गुरुमुख नाम जपियें तित तरियें गत नानक विरली जाती जी ॥ १३ ॥

राग गौरी ।

जाके वश खान सुलतान ॥ जाके वश है सकल जहान ॥ जाका किया सम कछु होय ॥ तिससे बाहर नाही कोय ॥ कहु बेनती अपने सतगुरु पाहि ॥ काज तुम्हारे देय निबाहि ॥ सभते ऊँच जाका दरबार ॥ सकल भगत जाका नाम अधार ॥ सर्वव्या-पत पूर्ण धनी ॥ जाकी शोभा घट घट बनी ॥ जिस सिमरत दुख डेरा ढहे॥जिस सिमरत जम कछू न कहे ॥ जिस सिमरत होत सूखे हरे ॥ जिस सिमरत डूबत पाहन तरे ॥ सत सभाको सदा जैकार ॥ हरि हर नाम जनप्राण अधार ॥ कह नानक मेरी सुनि अरदास ॥ संत प्रसाद मोको नाम निवास ॥ १४ ॥

वडे वडे जो दीसहि लोग॥ तिनको व्यापे चिता रोग॥ कौन वडा माया वडि आई ॥ सो वडा जिन राम लव लाई॥ भूमिआ भूमि ऊपर नित लूझे ॥ छोडचले तृष्णा नही बूझे ॥ कहुनानक इह तत्व विचारा ॥ विन हरि भजन नही छुटकारा ॥ १५ ॥

राग सोरठ।

अतर की गति तुमही जानी तुझही पास निबेरो ॥ बखश लेहु साहिब प्रभु अपने लाख खते कर फेरो ॥ प्रभुजी तू मेरो ठाकुर नेरो ॥हरि चरण शरण मोहि चेरो॥ बेशुमार बेअत स्वामीऊँचो गुनी गहेरो ॥काट सिलक कीनो अपनो दासरो तौ नानक कहा निहोरो ॥ १६ ॥

जीय जत सभ तिसके कीये सोई सत सहाई॥अपने सेवक की आपे राखे पूरन भई बडाई ॥ पार ब्रह्म पूरा मेरे नाल ॥ गुरु पूरे पूरी सभ राखी होवे सर्व दियाल ॥ अनुदिन नानक नामध्याये जीय प्राण का दाता ॥ अपने दास को कठ लाय राखे ज्यो बालक पितु माता ॥ १७ ॥

राग धनाश्री ।

कितै प्रकार नतूटी प्रीत ॥ दास तेरे की निर्मल रीत ॥ जीय प्राण मन धन ते प्यारा ॥ हौ मे वध हरि देवन हारा ॥ चरण कमल सो लागो नेह ॥ नानक की है विनती एह ॥ १८ ॥

राग गौरी ।

थिर घर बैसो हरिजन प्यारे ॥ सत गुरु तुमरे काज सँवारे॥ दुष्ट दूत परमेश्वर मारे ॥जनकी पेज रखी करतारे ॥ वादशाह सब वश करदीने ॥ अमृत नाम महारस पीने ॥ निरभय होय भजो भगवान ॥ साधु सगत मिल कीनो दान ॥ शरण पडेप्रभु अतरयामी । नानक ओट पकडी प्रभु स्वामी ॥ १९ ॥

उबरत राजा राम की शरणी । सर्व लोक माया के मंडल गिरि गिरि परते धरणी ॥ शास्त्र सिमृत वेद विचारे महा पुरुषन यूँ कह्या ॥ बिन हरि भजन नाही निस्तारा सुख न किनहूँ लह्या तीन भवन की लक्ष्मी जोरी बूझत नाही लहरे बिन हरि भगत कहा थित पावे फिरती पहरे पहरे ॥ अनक विलास करत मन मोहन पूरन होत न कामा। जलतो जलतो कभू न बूझत सकल वृथे बिन नामा । हरि का नाम जपो मेरे मीता इहै सार सुख पूरा । साधु संगत जन्म मरण निवारे नानक जनकी धूरा ॥२० ॥

माधो हरि हा हरि मुख कहिये। हमते कछु नहोवै स्वामी ज्यो राखो त्यो रहिये ॥ क्या कछु करे कि करनेहारा क्या इस हाथ बिचारे ॥ जित तुम लावो तितही लागा तितही पूरण खसम हमारे ॥ करहु कृपा सर्व के दाते एक रूप लवलाइहु ॥ नानक की विनती हरि पै अपना नाम जपावहु ॥ २१ ॥

ब्रह्म गर्व किया नहि जान्या ॥ वेदकी विपत पडी पछता-न्या ॥ जहि प्रभु सिमरे तही मन मान्या ॥ ऐसा गर्व बुरा ससारे ॥ जिस गुरु मिलै तिस गर्व निवारे ॥ बलि राजा माया अहं-कारी ॥ जगत् करे वहु भार अफारी ॥ बिन गुरु पूछे जाय पियारी॥ हरीचद दान करै यश लेवे ॥ बिन गुरु अत न पाया भेवे ॥ आप भुलाय आप मति देवै ॥ दुर्मत हरनाकुश दुरा-चारी।प्रभु नारायण गर्व प्रहारी । प्रहलाद उधार किरपा धारी ॥ भूलो रावण मुगध अचेत । लूटी लंका सीस समेत ॥ गर्व गिआ बिन सतगुरु हेत॥ सहसबाहू मधु कीट महिपासा॥ हरनाकुश ले नखहु बिधासा ॥ दैत संहारे बिन भगति अभ्या-सा ॥ जरासध कालयवन संहारे ॥ रक्तबीज कालनेमि विदारे ॥

दैत सँहार सत निस्तारे ॥ आपे सतगुरु शब्द विचारे ॥ दूजे भाय देव संहारे ॥ गुरुमुख सांचि भगति निस्तारे ॥ बूडा दुरयोधन पति खोई ॥ राम न जान्या करता सोई ॥ जन को दूख पचै दुख होई ॥ जन्मेजय गुरु शब्द न जान्या ॥ क्यो सुख पावे भर्म भुलान्या ॥ इकतिल भूले बहुरि पछतान्या ॥ कस केशी चाणूर न कोई ॥ राम न चीन्हा अपनी पति खोई ॥ विन जगदीश न राखै कोई ॥ विन गुरु गर्व न मेट्या जाय ॥ विन गुरु मति धर्म धीरज हरि नाय ॥ नानक नाम मिले गुण गाय ॥ २२ ॥

अब मोहिं जलत रामजल पाया ॥ राम उदक तन जलत बुझाया ॥ मन मारण कारण वन जाइये ॥ सो जल विन भगवत न पाइये ॥ जिहिं पावक सुर नर हैं जारे ॥ राम उदक जन जलत उवारे ॥ भव सागर सुखसागर माही ॥ पीव रहे जल निघटत नाही ॥ कहत कवीर भजु शारँगपानी ॥ राम उदक मरी तृपा बुझानी ॥ २३ ॥

माधो जल की प्यास न जाय ॥ जल महि अग्नि उठी अधिकाय ॥ तू जलनिधि हौ जलकी मीन ॥ जल महिं रहौ जलहि बिन खीन ॥ तूं पिंजर हौ सुअटा तोर ॥ जम मंजार कहा करे मोर । तू तरुवर हौ पंखी आहि ॥ मदभागी तेरो दर्शन नाही ॥ तूं सतगुरु हौ नौतन चेला ॥ कह कबीर मिल अंत कि वेला ॥२४ ॥

जब हम एको एक कर जान्या ॥ तब लोगहिं काहे दुख मान्या ॥ हम आपतहि अपनी पति खोई ॥ हमरे खोज परो मत कोई ॥ हम मंदे मंदे मनमाही ॥ सांझपात काहू सो नाही ॥ पति अपति ताकी नहिं लाज ॥ तब जानहुगे जब उघरेगो पाज ॥ कह कबीर पति हरि परमान ॥ सर्व त्याग भज केवल राम ॥ २५ ॥

अंधकार सुख कभू न सोइहे ॥ राजा रंक दोऊ मिलि रोइहे ॥ जोपै रसना राम न कहवो ॥ उपजत विनशत रोवत रहवो ॥

जस देखिये तरुवर की छाया ॥ प्राण गये कहु काकी माया ॥ जसजंती महि जीउ समाना ॥ मुये मर्म को काकर जाना ॥ हंसा सरवर कालशरीर ॥ राम रसायन पिउ रे कबीर ॥ २६ ॥

जो जन परमित परम न जाना ॥ वा तनही वैकुठ समाना ॥ ना जाना वैकुंठ कहाही॥ जान जान सभ कहहिं तहांही ॥ कहन कहावन नही पतियेहे ॥ तौ मनमानें जांते हौ मैं जेहे ॥ जबलग मन वैकुंठ की आस ॥ तब लग होय नही चरण निवास ॥ कहु कवीर इह कहिये काहि ॥ साधु संगत वैकुंठहि आहि ॥ २७ ॥

अवर मूये क्या सोग करीजे ॥ तो कीजे जो आपन जीजे ॥ मै न मरो मरबो संसारा ॥ अब मोहिं मिल्यो जियावनहारा ॥ या देही मरमल महकंदा ॥ ता सुख बिसरे परमानन्दा ॥ कुअटा एक पंच पनिहारी ॥ टूटी लाज भरे मतिहारी ॥ कह कबीर इक बुद्धि विचारी ॥ ना वह कुअटा ना पनिहारी ॥ २८ ॥

स्थावर जगम कीट पतंगा ॥ जन्म अनेक किये वहुरंगा ॥ ऐसे घर हम वहुत बसाये ॥ जब हम राम गरभ है आये ॥ योगी यती तपी ब्रह्मचारी ॥ कबहूं राजा छत्रपति कबहूं भिखारी ॥ शाकत मरहिं सन्त सभ जीवहि ॥ राम रसायन रसना पीवहि ॥ कहै कबीर प्रभु किरपा कीजे ॥ हार परे अब पूरा दीजे ॥ २९ ॥

चोआ चंदन मरदन अगा॥ सो तन जले काठके संगा ॥ इस तन धनकी कवन वडाई ॥ धरनि परे उर वार न जाई॥ रात जो सोवहि दिस करेकाम ॥ इक क्षण लेहि न हरिको नाम ॥ हाथ तां डोर मुख खायो तंबोर ॥ मरती बार कस बांध्यो चोर ॥ गुरु मति रस रस हरि गुन गावे ॥ रामहिं राम रमत सुख पावे ॥ किरपा करके नाम द्दढाई ॥ हरि हरि बास सुगंध बसाई ॥ कहत कवीर चेत रे अन्धा ॥ सत्य राम झूठा सब धन्धा ॥ ३० ॥

यम ते उलट भये हैं राम ॥ दुख विनसे सुख कियो विश्राम॥ वैरी उलट भयेहै मीता ॥ शाकत उलट सुजन भयें चीता ॥ अब मोहिं सर्व कुशल कर मान्या ॥ शांत भई जब गोविद जान्या ॥ तन मे होती कोटि उपाधि ॥ उलट भई सुख सहज समाधि ॥ आप पछाने आपै आप ॥ रोग न व्यापे तीनो ताप॥ अब मन उलट सनातन हूआ ॥ तव जान्या जब जीवत मूआ ॥कहु कबीर सुख सहज समावो ॥ आप न डरो न अवर डरावो ॥ ३१ ॥

कचन सो पाइये नहि तोल॥ मनदे राम लियाहै मोल ॥अब मोहिं राम अपना कर जान्या॥सहज सुभाय मेरा मन मान्या॥ ब्रह्मा कथ कथ अत न पाया ॥ राम भगति वैठे घर आया ॥ कह कबीर चचल मति त्यागी॥केवल राम भगतिनिज भागी ३२

जिहि मरने सम जगत त्रास्या ॥ सो मरना गुरु शब्द प्रकास्या॥अब कैसे मरौ मरन मनमान्या ॥ मरमर जाते जिन राम न जान्या॥मरनो मरन कहै सब कोई ॥सहजे मरे अमर होय सोई॥ कह कबीर मन भया अनदा ॥ गया भरम रहा पर्मानंदा॥३३॥

जाके हरिसा ठाकुर भाई ॥ मुक्ति अनन्त पुकारन जाई॥ अब कहु राम भरोसा तोरा ॥ तब काहूका कवन निहोरा ॥ तीन लोक जाके हैं भार ॥ सो काहे न करे प्रतिपार ॥कह कबीर इक बुद्धि विचारी ॥ क्या वश जो विषदे महतारी ॥ ३४ ॥

विन सत सती होयकैसे नारि ॥ पडित देखो हृदै विचारि ॥ प्रीति विना कैसे वँधे सनेह।जबलग रस तबलग नहि नेह॥साहनिसत करै जीय अपने ॥ सो रमैये को मिले न सुपने ॥ तन मन धन गृह सौंप शरीर ॥ सोई सुहागन कहै कबीर ॥ ३५ ॥

विषय व्याप्या सकल संसार ॥ विषया ले डूबी ससार ॥ रे नर नाव चौड कत बोडी ॥ हरि सों तोड विषया सँग जोडी ॥

सुरनरदाधे लागी आग ॥ निकट नीरपशु पीवस न झाग ॥ चेतत चेतत निकस्यो नीर ॥ सो जल निर्मल कथत कबीर ॥ ३६ ॥

जिहि कुल पूत न ज्ञान-विचारी ॥ विधवा कस न भई मह-तारी ॥ जिहिं नर राम भगति नहिं साधी ॥ जन्मत कस न मुयो अपराधी ॥ मुच मुच गरभ गये किन बच्या ॥ बुड भुज रूप जीवैं जग मझ्या ॥ कह कबीर जैसे सुंदर सरूप ॥ नाम बिना जैसे कुब्ज कुरूप ॥ ३७ ॥

जो जन लेहि खसमका नाउँ । तिनके सद बलिहारे जाउँ ॥ जो निर्मल निर्मल हरिगुण गावै ॥ सो भाई मेरे मन भावै ॥ जिहि घट राम रह्यो भर पूर॥ तिनकी पग पंकज हम धूर। जाति जुलाहा मति का धीर । सहज सहज गुण रमे कबीर ॥ ३८ ॥

जिहि मुख पांचो अमृत खाये । तिहिं मुख देखत लूकट लाये। इक दुख रामराय काटहु मेरा । अगनि दहै अर गरभ बसेरा ॥ काया बिगूति बहु विध भाँति । को जारे को गडले माटी ॥ कहुं कबीर हरि चर्ण दिखावहु । पाछेते जम क्यों न पठावहु॥ ३९ ॥

आपे पावक आपै पवना ॥ जारै खसम तो राखै कवना ॥ राम जपत तन जर क्यो लजाय ॥ राम नाम चित रह्या समाय॥ काको जरै काहि दोय हान ॥ नटवर खेलै शारंगपान ॥ कह कबीर अक्षर दोय भाख ॥ होयगा खसम तो लेगा राख ॥ ४० ॥

ना मैं योग ध्यान चितलाया ॥ विनशै राग न छूटै माया ॥ कैसे जीवन होय हमारा ॥ जब न होय राम नाम अधारा ॥ कहु कबीर खोजहुं असमान ॥ राम समान न देखो आन ॥ ४१ ॥

जिहि सिर रच रच धांवत पाग॥ सोसिर चुंचसवाँरहिं काग ॥ इस तन धन को क्या गरवैया ॥ राम नाम काहे न दढैया ॥ कहत कबीर सुनहु मन मेरे ॥ यही हवाल होहिंगे तेरे ॥ ४२ ॥

अहनिशि एक नाम जो जागे ॥ केतक सिद्ध भये लव लागे ॥ साधक सिद्ध सकल मुनि हारे ॥एक नाम कलिपतरे तारे ॥ जोहरि- हरे सो होहि न आना ॥ कहै कबीर राम नाम पछाना ॥ ४३ ॥

राग सोरठ।

रे जीव निलज लाज तोहि नाही॥हरि तज कत काहू के जाही॥ जाको ठाकुर ऊँचा होई ॥ सो जन परवर जात न सोही ॥ सो साहिब रह्या भरपूर ॥ सदा संग नाही हरि दूर ॥ कमला चरण शरण है जाके ॥ कहु जन का नाही घर ताके ॥ सब कोऊ कहै जासु की बाता॥सो समर्थ निज पतिहै दाता॥ कहै कबीर पूरनहै जग सोई ॥ जाके हिरदय अवर न होई ॥ ४४ ॥

कौन को पूत पिता को काको । कौन मरे को देय सतापो ॥ हरि हठ जगको ठगोरी लाई। हरिके ब्योग कैसे जीवो मेरीमाई॥ कौनको पुरुष कौनकी नारी । या तत्त्व लेहु शरीर विचारी ॥कहै कबीर हठ सों मन मान्या । गई ठगौरी ठग पहँचान्या ॥४५॥

अब मोको भये राजा राम सहाई॥जन्म मरण कट परमगति पाई ॥ साधू संगत दियो रलाय ॥ पंच दूत ते लियो छुडाय ॥ अमृत नाव जपोजप रसना ॥ अमोल दास कर लीनो अपना॥ सतगुरु कीनो परउपकारा ॥ काढ लीन सागर संसारा ॥ चरण- कमल सों लागी प्रीत ॥ गोविंद बसे निता नित चीत ॥ माया तत बुझा अगार ॥ मन संतोष नाम आधार ॥ जलथल पूर रहे प्रभु स्वामी ॥ जत पेखो तत अन्तरयामी ॥ अपनी भगति आपही दृढाई ॥ पूरब लिखत मिल्यो मेरे भाई ॥ जिस कृपा करै तिस पुरनसाज ॥ कबीर को स्वामी गरीबनिवाज ॥ ४६॥

राग गौरी ।

हरि यश सुनहि न हरि गुन गावहिं ॥ बातनही असमान गिरावहिं ॥ ऐसे लोगन सों क्या कहिये ॥ जो प्रभु किये भगति ते बाहिज ॥ तिनते सदा डराने रहिये ॥ आप न देहि चुलू भर पानी तिहि निन्दहिं जिहिं गंगा आनी ॥ बैठत उठत कुटिलाता चालहि ॥ आप गये औरन हू घालहि ॥ छाँड कुचर्चा आन नं जानहि ॥ ब्रह्माहू को कह्यो न मानहि ॥ आप गये औरनहू खोवहिं ॥ आग लगाय मंदिर में सोवहि ॥ औरन हँसत आप हैं काने ॥ तिनको देख कबीर लजाने ॥ ४७ ॥

जेते यतन करत ते डूबे भवसागर नाहिं तारचो रे ॥ कर्म धर्म करते बहु संयम अहं बुद्धि मन जारचो रे ॥ सास ग्रासको दाता ठाकुर सो क्यो मनो बिसारचो रे ॥ हीरालाल अमोल जन्म है कौडी बदले हारचो रे ॥ तृष्णातृपा भूँख भ्रम लागी हिरदय नाम विचारचोरे ॥ उनमत मान रह्यो मनमाही गुरुका शब्द न धारचो रे ॥ स्वाद लुब्ध इद्रीरस प्रेरचो मन्द रस लेत बिकारचोरे ॥ भर्म भाग सतन संगाने कासट लोह उधारचो रे ॥ धावत योनि जन्म भ्रम थाके अब दुख कर हम हारचो रे ॥ कह कबीर गुरु मिलत महारस प्रेम भक्ति निस्तारचो रे ॥ ४८ ॥

एक ज्योति एका मिली किवा होय महोय ॥ जित घट नाम न उपजैं फूट मारे जन सोय ॥ सांवल सुन्दर रामेया मेरा मन लागा तोहिं ॥ साथ मिले सिद्ध पाइये कि यह योग की भोग ॥ दुहुँ मिल कारज ऊपजे राम नाम संयोग ॥ लोग जाने यह गीतहै यह तो ब्रह्म विचार ॥ ज्यो काशी उपदेश होय मानस मरती बार ॥ कोई गावै को सुने हरी नामा चित लाय ॥ कहु कबीर संशय नही अंत परमगति पाय ॥ ४९ ॥

कालबूत की हस्तनी मन बौरारे चलित रच्यो जगदीश । काम सुआय गज वश परे मन बौरारे अकुश सह्यो शीश । विषय वाच हरि राच समझ मन बौरारे ॥ निरभय होय न हरी भज्यो मन बौरारे ॥ गह्यो न राम जहाज मरकट मुष्टी अनाज की मन बौरारेलीनी हाथ पसार ॥ छूटन को ससार परयो मन बौरारे नाच्यो घर घर वार ॥ ज्यो नलनी सूअटा गह्यो मन बौरारे माया यह व्योहार ॥ जैसा रग कुसुभ का मन बौरारे त्यो पसरयो पासार ॥ न्हावन को तीर्थ घने मन बौरारे पूजन को वहु देव ॥ कह कबीर छूटन नही मन बौरारे छूटन हरि की सेव ॥ ९० ॥

अगिन न दहे पवन- नहिं मगने तस्कर नेर न आवे ॥ राम नाम धन कर सचोनी सो धन कतहुँ न जावे ॥ हमारा धन माधव गोविन्द धरणीधर यही सार धन कहिये ॥ जो सुख प्रभु गोविन्द की सेवा सो सुख राज न लहिये ॥ इस धन कारण शिव सनकादिक खोजत भये उदासी । मनमुकुन्द जिह्वा नारायण परे न जम की फाँसी ॥निज धन ज्ञान भगति गुरु दीनी तासु सुमति मन लागा॥ जलत अभ थभ मन धावतभ्रम वधन भय भागा॥ कहे कबीर मदन के माते हिरदय देख विचारी ॥ तुम घर लाख कोटि अश्व हस्ती हम घर एक मुरारी ॥ ९१ ॥

ज्यो कपि के कर मुष्टि चनन की लुब्ध न त्याग दियो॥ जो जो कर्म कियो लालचसो ते फिर गरहि परयो ॥ भगति विन विरथे जन्म गयो ॥ साधु सगत भगवान भजन बिन कहीं न सचु रह्यो॥ ज्यों उद्यान कुसुम प्रफुल्लित किनहूँ न प्राण लियो ॥ तैसे भ्रमत अनेक योनि मे फिर फिर काल हयो ॥ या धन यौवन अरु सुत दारा पेखन को जो दियो ॥ तिनही माही अटक जो

उरझे इन्द्री प्रेर लियो ॥ अवध अनल तन तृण को मंदिर चहुँदिशि ठाट ठयो कह कबीर भवसागर तरण को पै सतगुरु ओट लियो ॥ ९२ ॥

राग गौरी पूरबी ।

स्वर्ग वास नहिं बांछिये डरिये न नर्क निवास॥ होनाहै सो होय है मनहिं न कीजे आस रमैया गुन गाइये जाते पाइये परम निधान ॥ क्या जप क्या तप संयमो क्याव्रत क्या अस्नान ॥ जब लग जुगति न जानिये भाव भगति भगवान ॥ संपति देख न हरषिये विपति देख न रोय ॥ ज्यो सपति त्यो विपति हैविधि ने रच्या सो होय ॥ कह कबीर अब जान्या संतन हृदय मँझार । सेवक सो सेवा भले जिहि घट बसहिं मुरार ॥९३ ॥

राग गौरी ।

आस पास घन तुलसीक विरवा मांझ बनारस गाउँरे ॥ वाका सरूप देख मोहि ग्वालनि मोको छोड न आउ न जाउं रे । तोहि शरण मन लागो॥सारंगधर सो मिलै जो बड भागो॥ बृन्दावन मनहरण मनोहर कृष्ण चरावत गाउँरे ॥ जाका ठाकुर तुही शारंगधर मोहि कबीर गाउँरे ॥ ९४ ॥

लख चौरासी जीव योनि में भ्रमत नन्द बहु थाकोरे ॥ भगति हेत अवतार लियो है भाग बडो वपुरा कोरे ॥ तुम जो कहत हो नन्द को नन्दन नन्द सो नन्दन काको । धरणि अकाश दशोदिशि नाही तब यह नंद कहां थोरे ॥ सकट नही परे योनि नहीं आवै नाम निरजन जाकोरे ॥ कबीर को स्वामी ऐसो ठाकुर जाके माई न बापोरे ॥ ९५ ॥

राग गौरी चेती।

देवा पाहन तारीयले ॥ राम कहत जन कस न तरे ॥ तारी ले गानिका बिन रूप कुब्ज व्याध अजामिले तारीयले ॥ चरण बधक जन तेऊ मुक्त भये ॥ हौं बल बल जिन राम कहे ॥ दासी सुत जन विदुर सदामा उग्रसेन को राज दिये ॥ जप हीन तप हीन कुल हीन कर्म हीन नामे के स्वामी तेऊ तरे ॥ ९६ ॥

सतयुग सत त्रेता यज्ञ द्वापर पूजा चार॥ तीनो जुग तीनो दृढे कलि केवल नाम अधार ॥ पार कैसे पायबो रे ॥ मोसो कोऊ न कहे समुझाय ॥ जाते आवागमन बिलाय ॥ बहुविध धर्म निरूपिये करता दीसै सब लोय ॥ कवन कर्मते छूटिये जिहि साधे सब सिध होय ॥ कर्म अकर्म विचारिये शका सुन वेद पुराण ॥ संसासद हिरदय वसे कौन हरे अभिमान ॥ बाहर उदक पखारिये घट भीतर विविध बिकार ॥ शुद्ध कवन पर होयबो शुचि कुंजर विध व्योहार ॥ रवि प्रकाश रजनी यथा गति जानत सभ ससार ॥ पारस मानो तांबो छुये कनक होत नहिंवार ॥ परमपुरुष गुरु भेंटिये पूरब लिखत ललाट ॥ उनमन मन मनही मिले छुटकत बजर कपाट ॥ भगति जुगत मति सति करी भ्रम वन्धन काट विकार ॥ सोई वस रस मन मिले गुण निर्गुण एक विचार ॥ अनिक यतन निग्रह किये टारी न टरे भ्रम फांस ॥ प्रेम भगति नही ऊपजे ताते रविदास उदास ॥९७ ॥

राग आसावरी।

पवन उपाय धरी सब धरती जल अगिन का बध किया ॥ अधले दहिसर मूड कटाया रावण मार क्या वडा भया ॥ क्या उपमा तेरी ऑखी जाय तू सरबे ॥ पूर रह्या लव लाय ॥ जीय उपाय जुगति हथ कीनी काली नथ क्या वडा भया ॥ किस तू

पुरुष जोरू कौन कहिये सर्व निरंतर रम रह्या ॥ नाल कुटंब साथ वरदाना ब्रह्मा भालण सृष्टि गया ॥ आगे अंत न पायो ताका कस छेद क्या वडा भया ॥ रत्नउपाय धरे क्षीर मथ्या होर भख-लाये जिअसी कीया ॥ कहै नानक छिपै क्यो छप्या एही एकी वडा दिया ॥ ५८ ॥

राज मिलक जोवन गृह शोभा रूपवंत जो आनी ॥ बहुत द्रव्य हस्ती अरु घोडे लाल लाख वयआनी ॥ आगे दरगहिं काम न आवहिं छोड चलै अभिमानी ॥ काहे एक विना चित लाइये ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत सदा सदा हरी ध्याइये ॥ महा विचित्र सुदर आखाड रणमें जिते पवाडे ॥ हौं मारों हौं बंधो छोडो मुखते एक बवाडे ॥ आया हुकुम पारब्रह्मका छोड चल्या एक दिहाडे ॥ कर्म धर्म जुगति बहु करता करने हार न जानै ॥ उपदेश करै आप न कमावै तत्त्व शब्द न पछानै ॥ नांगा आया नांगो जासी ज्यो हस्ती खाक छानै ॥ संत सुजन सुनहु सभ मीता झूंठा एक पसारा ॥ मेरी मेरी कर कर डूबे खप खप मुये गॅवारा ॥ गुरु मिल नानक नाम ध्याया सॉच नाम निस्तारा ॥ ५९ ॥

जिस नीच को कोई न जानै ॥ नाम जपत सो चहुँकुट मानै ॥ दर्शन मांगो देहु प्यारे ॥ तुमरी सेवा कौन कौन न तारे ॥ जाके निकट न आवे कोई ॥ सकल सृष्टि वाके चरण मल धोई ॥ जो प्राणी काहू न आवत काम ॥ संत प्रसाद ताको जापिये नाम ॥ साधु सग मन सोवत जागे ॥ तव प्रभु नानक मीठे लागे ॥ ६० ॥

उक्ति सयानप कछू न जानां ॥ दिन रैन तेरा नाम बखानां ॥ मैं निर्गुण गुण नाही कोय । करन करावन हार प्रभु सोय ॥ मूरख मुगध अज्ञान अविचारी ॥ नाम तेरे की आश मन धारी ॥ जप

तप संयम कर्म न साधा ॥ नाम प्रभूका मनहिं अराधा ॥ कछु न जाना मति मेरी थोरी ॥ विनवत नानक ओट प्रभु तोरी ६१॥

चरण कमलकी आस प्यारे ॥ यम किंकर नस गये विचारे ॥ तू चित आवहि तेरी मया ॥ सिमरत नाप सकल रोग गया ॥ अनिक दूख देवहि अवरां को ॥ पहुँच न साकहि जान तेरे को॥ दरश तेरे की प्यार मन लागी ॥ सहज आनंद वसे वैरागी ॥ नानककी अरदास सुणीजे ॥केवल नाम हृदयमे दीजे ॥ ६२॥

आठ पहर निकट कर जाने॥ प्रभुका कीया मीठा माने ॥ एक नाम सत न आधार ॥ होय रहे सभकी पग छार ॥ सत रहत सुनो मेरे भाई ॥ वाकी महिमा कथन न जाई ॥ बरतन जाके केवल नाम ॥ आनन्द रूप कीर्तन विश्राम ॥ मित्र शत्रु जाके एक समाने ॥प्रभु अपने विन अवर न जाने ॥ कोटि कोटि अघ काटनहारा ॥ दुख दूर करन जीयके दातारा ॥ शूरबीर वचन के बली ॥ कमला बपुरी सतत छली ॥ तांका सग वाछहि सुरदेव ॥ अमोघ दरश सफल जाकी सेव ॥ कर जोर नानक करे अरदास॥ मोहि सतहि टहल दीजे गुण तास ॥ ६३ ॥

भगत वच्छल हरि बिरद आप बनाइया ॥ जहि जहि सत अराधहि तहि तहिं प्रगटाइया ॥ प्रभु आप लिये समाय सहज सुभाय भगत कारज सारिया ॥ आनन्द हरि यश महामगल सर्व दुःख विसारिया॥चमत्कार प्रकार दह दिस एक तहि दरशाइया॥ नानक पिअपे चरण जपे भगत वच्छल हरि बिरद आप वना-या ॥ ६४ ॥

थिर सतन सुहाग मरे न जावहे । जाके गृह हरि नाहु सो सदही रावहे॥अविनाशी अविगत सो प्रभु सदा नवतन निर्मला॥ नहिं दूर सदा हजूर ठाकुर दह दिस पूरन सद सदा ॥ प्राण पति

गति मतिजाते प्रिय प्रीति प्रीतम भावहे ॥ नानक बखाने गुरु वचन जाने स्थिर संतन सुहाग मरै न जावहे ॥ ६५ ॥

कूड़ राजा कूड परजा कूड सभ संसार ॥ कूड मंडप कूड़ माडी कूड बैसनहार ॥ कूड सोना कूड रूपा कूड पैनणहार ॥ कूड कायां कूड कप्पड़ कूड रूप अपार ॥ कूड मीयां कूड बीबी खप्प होये खार॥कडे कडे नेहु लग्गा बिसरया करतार॥ किसनाल कीजै दोस्ती सभ जगत चल्लणहार ॥ कूड मिट्ठा कुड माख्यो कूड डोबे पूर ॥नानक बखाने बिनती तुध वाझ कूडो कूड ॥ ६६ ॥

जब लग तेल देवे मुख-बाती तब सूझे सभ कोई ॥ तेल जले बाती ठहरानी सूना मंदिर होई ॥ रे बौरे तोहिं घरी न राखे कोई॥ तूं राम नाम जप सोई ॥ काकी मात पिता कहु काको कवन पुर्ष की जोई ॥ घट फूटे कोउ बात न पूछे काढो काढो होई ॥ देहुरी बैठी माता रोवे खटिया लेगये भाई ॥ लट छिटकाये तिरिया रोवे हंस इकेला जाई ॥ कहत कबीर सुनो रे संतहु भटसागर के सोई॥ इस बंदे सिर जुलम होतहै जम नहीं हटे गुसाईं ॥ ६७ ॥

हज्ज हमारी गोमती तीर ॥ जहां वसहि पीतंबर पीर ॥ वाह वाह क्या खूब गावताहै ॥ हरि का नाम मेरे मन भावताहै ॥ नारद शारद करहि खवासी ॥ पास बैठी बीबी कमला दासी॥ कंठे माला जिहबा राम ॥ सहस नाम लै लै करू सलाम ॥ कहत कबीर राम गुन गावों ॥ हिंदू तुरक दोऊ समझावो ॥ ६८ ॥

कहा श्वान को सिमृत सुनाये ॥ कहा शाकत पे हरि गुन गाये ॥ राम राम राम रमे रम रहिये ॥ शाकत सो भूल नहिं कहिये ॥ कौआ कपूर चुगाये ॥ कहिं बिसीयर को दूध पिआये ॥ सत सगत मिल विवेक बुद्ध होई ॥ पारस परस लोहा कचन सोई ॥ शाकत श्वान सभ करे कराया ॥ जो धुर लिख्या

सो कर्म कमाया ॥ अमृत लैलै नीम सिंचाई ॥ कहत कबीर वाको सहज न जाई ॥ ६९ ॥

लंकासी कोट समुंद्र सी खाई ॥ तिहि रावण घर खबर न पाई ॥ क्या मांगो कछु थिर न रहाई ॥ देखत नयन चल्यो जग जाई ॥ इक लखे पूत सवालखनाती ॥ तिहि रावण घर दिया न बाती ॥ चंद सूरज जाके तपत रसोई ॥ बैसन्दर जाके कपडे धोई ॥ गुरु मति रामहि नाम बसाई ॥ अस्थिर रहे न कतहूँ जाई ॥ कहत कबीर सुनोरे लोई ॥ राम नाम बिन मुक्ति न होई ॥ ७० ॥

कियो शृंगार मिलनके ताई ॥ हरि न मिले जगजीवन गुसाई ॥ हरि मेरो पीर हौ हरि की बहुरिया ॥ राम बडे मे तनक लहुरिया ॥ धनि-पुर एकै संग बसेरा ॥ सेज एक पै मिलन दुहेरा ॥ धन्य सुहागन जो पिय भावे ॥ कह कबीर फिर जन्म न आवे ॥ ७१ ॥

अतर मैल जो तीरथ न्हावै तिस वैकुठ न जाना ॥ लोक पतीने कछू न होवे नाही राम अयाना ॥ पूजो राम एकही देवा॥ सॉचा न्हावन गुरुकी सेवा ॥ जलके मज्जन जे गति होवे नित नित मेंडक न्हवाहिं ॥ जैसे मेंडक तैसे ओह नर फिर फिर योनी आवहि ॥ मनो कठोर मरे बनारस नरक न वाच्या जाई ॥ हरिका संत मरे हाढंबहि सकली सैन तराई ॥ दिन सुरैन वेद नाही शास्त्र तहॅा बसै निरंकारा ॥ कह कबीर नर तिसहि ध्यावो बावरिया ससारा ॥ ७२ ॥

एक अनेक व्यापक पूरक जत देखो तत सोई ॥ माया चित्र विचित्र विमोहत विरला बूझे कोई ॥ सब गोविंदहै सब गोविंद है गोविंद बिन नहिं कोई ॥ सूत एक मणि शत सहस जैसे ओत प्रोत प्रभु सोई॥चलतरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिन्न न होई ।

यह प्रपंच पारब्रह्म की लीला विचरत आन न होई ॥ मिथ्या भ्रम अरु स्वपन मनोरथ सत्य पदारथ जान्या ॥ सुकृत मनसा गुरू उपदेशी जागतही मन मान्या ॥ कहत नामदेउ हरिकी रचना देखो हृदय विचारी ॥ घट घट अंतर सर्व निरंतर केवल एक मुरारी ॥ ७३ ॥

राग गूजरी।

मुस मुस रोवै कवीर की माई ॥ यह वारिक कैसे जीवहि रघुई राई ॥ तनना वुनना सभ तज्यो है कवीर ॥ हरि का नाम लिख लियो शरीर ॥ जवलग तागा बाहो वेहों वेही ॥ तबलग विसरे राम सनेही ॥ ओछी मति मेरी जाति जुलाहा ॥ हरि का नाम लह्यो मे लाहा ॥ कहत कबीर सुनहु मेरी माई ॥ हमरा इनका दाता एक रघुराई ॥ ७४ ॥

जो राज देहि तो कवन वडाई ॥ जो भीख मँगावहि तो क्या घट जाई ॥ तू हरि भज मन मेरे पद निरवान । वहुरि न होय तेरा आवन जान ॥ सब तै उपाई भर्म भुलाई ॥ जिस तूं देवहि तिसहि बुझाई । सतगुरु मिले तां संशय जाई ॥ किस हौं पूजो दूजो नजर न आई ॥ एकै पाथर कीजै भाउ ॥ दूजे पाथर धरिये पाउ॥जेवह देवता वह भी देवा ॥ कह नामदेव हम हरिकी सेवा ॥ ७५ ॥

दूध तो बछरे थनो बिटारयो ॥ फूल भमर जल मीन विगार्‌यो ॥ माई गोविद पूजा कहा ले चढावो ॥ अवर न फूल अनूपम पावो ॥ मलियागिर वैठे हैं भुजगा ॥ विष अमृत वसहि इक सगा ॥ धूपदीप नैवेदहि वासा ॥ कैसे पूज करै तेरी दासा ॥ तन मन अरपो पूज चढावो ॥ गुरु प्रसाद निरजन पावो॥ पूजा अरचा आहि न तोरी ॥ कह रामदास कवन गति मोरी॥७६ ॥

अंतर मल निर्मल नहि कीना बाहर भेप उदासी ॥ हृदय कमल घट ब्रह्म न चीन्हा काहे भया सन्यासी ॥ भरमे भूलीरे जैचन्दा ॥ नही नही चीन्हा परमानंदा ॥ घर घर खाया पिंड बधाया खिंथा मुंदा माया ॥ भूमि मसान की भसम लगाई गुरु बिन तत्त्व न पाया ॥ काय जपो रे काय तपोरे काय विलोको पानी ॥ लख चौरासी जिन उपजाई,सो सुमिरो निरवानी ॥ काय कमडल कापड़िया रे अठसठ काहि फिराही ॥ वदत त्रिलोचन सुनरे प्राणी कण बिन गाहुकि पाही ॥ ७७ ॥

अतकाल जो लक्ष्मी सुमिरै ॥ ऐसी चिता मे जो मरै ॥ सरप योनि बल बल औतरै ॥ अरी बाई गोविंद नाम मत बिसरै ॥ अंतकाल जो स्त्री सुमिरै ऐसी चितामे जे मरै ॥ वेसवा योनि बल बल औतरै ॥ अतकाल जो लडके सुमिरै ॥ ऐसी चितामें जे मरै ॥ शूकर योनि बल बल औतरै ॥ अतकाल जो मंदिर सुमिरै ॥ ऐसी चितामें जे मरै ॥ प्रेत योनि बल औतरै ॥ अतकाल नारायण सुमिरै ॥ ऐसी चिता में जे मरै ॥ वदत त्रिलोचन ते नर मुक्ता पीतांवर वाके हृदय वसे ॥ ७८ ॥

राग देवगंधार।

अब हम चली ठाकुर पहिं हार ॥ जब हम शरण प्रभु की आई राख प्रभु भावे मार। लोकन की चतुराई उपमा ते बैसंदर जार ॥ कोई भला कहो भावे बुरा कहो हम तन दियो है ढार ॥ जो आवत शर्ण ठाकुर प्रभु तुमरी तिस राखो किरपा धार॥ जन नानक शर्ण तुम्हारी हरजी रखो लाज मुरार ॥ ७९ ॥

हरी राम नाम जप लाहा। गति पावहि सुख सहज अनन्दा काटे जमके फाहा। खोजत खोजत खोज सुविचारयो हरी सत जनां पहि आहा। तिन्हा प्राप्त यह निधाना जिनके कर्म लिखा

हा ॥ से वड भागी से पतिवंते सेई पूरे शाहा । सुन्दर सुघड सुरूप ते नानक जिन हरि नाम बिसाहा ॥ ८० ॥

प्रभु एही मनोरथ मेरा । कृपानिधान दयाल मोहिं दीजे कर सतनका चेरा । प्रातहि काल लागो जन चरनी निशिबासरदर्शन पावों ॥ तन मन अर्प करों जन सेवा रसना हरी गुन गावों । सॉस सॉस सुमिरो प्रभु अपना संत संग नित रहिये । एक अधार नाम धन मोरा आनंद नानक यह लहिये ॥ ८१ ॥

राग सोरठ ।

आपै सेवा लांयदा प्यारा आपै भगति उमाहा ॥ आपै गुणगावां यदा प्यारा आपै शब्द समाहा ॥ आपै लेखण आपलिखारो आपै लेख-लिखाहा ॥ मेरे मनजप रामनाम उमाहा ॥ अनुदिन अनँद होवै बडभागी लैगुर पूरै हरि लाहा ॥ आपै गोपी कान्ह है प्यारा बन आपै गऊ चराहा ॥ आपै सॉवल सुन्दर प्यारा आपै वशीब-जाहा ॥ कुवलयापीड आप मरांयदा प्यारा कर बालक रूप-पचाहा ॥ आप अखाडा पाय़ंदा प्यारा कर देखें आप जो चाहा ॥ कर बालक रूप उपायँदा प्यारा चडुर कस केस मराहा ॥ आपै ही वल आपहै प्यारा बल भनै मूरख मुगधाहा ॥ सभ आपै जगत उपायँदा प्यारा बस आपै जुगति हथाहा ॥ गल जेवाडी आपै पायदा प्यारा ज्यो खिचै त्यो जाहा ॥ जो गरवै सो पचशी प्यारे जप नानक भगति समाहा ॥ ८२ ॥

जौलौं भाव अभाव यह मानै तोलौं मिलन दुराई । आन आपना करत विचारा तौलौं बीच विपाई ॥ माधव ऐसी देहु बुझाई सेवों साधु गहों ओट चरना नहिं बिसरै मुहुत चसाई ॥ मन मुगध अचेत चचल चित तुम ऐसी हृदय न आई ॥ प्राण पति त्याग आन तूं रच्या उरझो संग बौराई ॥ शोक न व्यापै आपन थापै

साधु सङ्गत बुद्धि पाई । शाकत का वकना एउं जानो जैसे पवन झुलाई ॥ कोट श्राध अछादयो एह मन कहना कछु न जाई ॥ जन नानक दीन शरण आयो प्रभु सब लेखा रखो उठाई ॥ ८३ ॥

तन सन्तन का धन सन्तन का मन सन्तन का कीया ॥ सन्त प्रसाद हरि नाम ध्याया सर्व कुशल तब थीया । सन्तन बिन अवर न दाता बीया ॥ जो जो शरण परै साधू की सो पार गामी कीया ॥ कोटि अपराध मिटहि जन सेवा हरि कीर्तन रस गाइये । ईहां सुख आगे मुख ऊजल जन का संग बड भागी पाइये ॥रसना एक अनेक गुण पूरण जनकी केतक उपमां कहिये॥ अगम अगोचर सद अविनाशी शरण सन्तन की लहिये ॥निरगुण नीच अनाथ अपराधी ओट सन्तन की आही ।बूडत मोह गृह अन्ध कूप में नानक लेहु निबाही ॥ ८४ ॥

खोजत खोजत खोज विचारयो राम नाम तत्व सारा ॥ किल विष काटे निमिष अराध्या गुरु मुख पार उतारा ॥ हरिरस पीवो पुरुष ज्ञानी ॥ सुन सुन महा तृप्त मन पावै साधू अमृत बानी ॥ मुक्ति भुगति जुगति सचु पाइये सर्व सुखां का दाता॥अपने दास को भगति दान देवै पूरण पुरुष विधाता ॥ श्रवणो सुनिये रसना गाइये हिरदय ध्याइये सोई ॥ करन कारन समरत्थ स्वामी जात वृथा न कोई॥बडे भाग रत्न जन्म पाया करो कृपा कृपाला ॥ साधु संग नानक गुण गावै सुमिरै सदा सदा गोपाला ॥ ८५ ॥

जेती समग्री देखहुरे नर तेती ही छड जानी ॥ राम नाम संग कर ब्योहारा पावहिं पद निरवानी ॥ प्यारे तू मेरो सुख दाता॥ गुरु पुरे दीया उपदेशा तुमही संग पराता ॥ काम क्रोध लोभ मोह अभिमाना तामे सुख नहि पाइये ॥ होहु रैनि तू सकलकी मेरे मन तौ आनँद मंगल सुख पाइये । घाल न भानै अंतर विधि जान

ताकी कर मन सेवा ॥ कर पूजा होम एह मनुआ अकाल मूरत गुरुदेवा । गोविन्द दामोदर दयाल माधव पार ब्रह्म निरंकारा । नाम वर तन नामो वाले वा नाम नानक प्राण अधारा ॥ ८६ ॥

रत्न छांड कौडी सँग लागे जाते कछू न पाइये । पूरन पारब्रह्म परमेश्वर मेरे मन सदा ध्याइये ॥ सुमिरो हरि हरि नाम प्रानी ॥ विनशै काची देह अज्ञानी मृग तृष्णा अरु सुपन मनोरथ ताको कछु न बडाई ॥ राम भजन बिन काम न आवसि संग न काहू जाई ॥ हौ हौ करत विहाय अवरदा जिय को काम न कीना ॥ धावत धावत नहि तृपतास्या राम नाम नहिं चीना ॥ स्वाद विकार विषय रस मातो असंख खते कर फेरे ॥ नानक की प्रभु पाहि बीनती काटो अवगुण मेरे ॥ ८७ ॥

गुण गावो पूरण अविनाशी काम क्रोध विष जारे ॥ विषम अग्निको सागर साधू संग उधारे । पूरे गुरु मेट्यो भ्रम अंधेरा । भज प्रेम भगति प्रभु मेरा । हरि हरि नाम निधान रस पीया मन तन रहे अघाई । जत कत पूर रह्यो परमेश्वर कत आवै कत जाई । जप तप संयम ज्ञान तत्त्ववेत्ता जिस मन बसै गुपाला । नाम रतन जिन गुरुमुख पाया ताकी पूरण घाला । कलि कलेश मिटे दुख सकले काटी यमकी फांसा । कहु नानक प्रभु किरपा धारी मन तन भये बिकासा ॥ ८८ ॥

माया मोह मगन अँधियारे देवनहार न जाने । जीव पिंड साज जिन रच्या बल अपनो कर माने । मन मूढे देख रह्यो प्रभु स्वामी ॥ जो कछु करहि सोई सोई जाणे रहे न कछु ऐछानी ॥ जिह्वा स्वाद लोभ मद मातो उपजे अनिक विकारा ॥ बहुत योनि भ्रमत दुख पाया हौ मैं बन्दनके भारा । देय किवाँड अनिक पडदेमे परदारा सँग फाके ॥ चित्रगुप्त जब लेखा मांगहि तब कौन पडद

तेरा ढाके ॥ दीन दयाल पूरन दुख भंजन तुम बिन ओट न काई। काढि लेहु संसार सागर महि नानक प्रभु शरनाई ॥ ८९ ॥

सकल वनस्पतिमें बेसदर सकल दूधमें वीया ॥ ऊँच नीच में जोति समानी घट घट माधो जीया ॥ सतो घटघटरह्यो समाह्यो ॥ पूरनपूर रह्यो सर्वमे जल थल रमैया आह्यो ॥ गुणनिधान नानक यश गावै सतगुरु भर्म चुकायो ॥ सर्व निवासी सदा अलेपा सबमे रह्यो समायो ॥ ९० ॥

अविनाशी जीवनको दाता सुमिरत सब मल खोई ॥ गुण निधान भगतन को वर्तन विरला पावै कोई ॥ मेरे मन जप गुरु गोपाल प्रभु सोई ॥ जाकी शरण परे सुख पाइये वहुरि दुःख न होई ॥ वडभागी साधुसग प्राप्त तिन भेटत दुर्मति खोई ॥ तिनकी धूर नानक दास वांछे जिन हरि नाम हृदय परोई ॥ ९१ ॥

रामदास सरोवर न्हाते । सब उतरे पाप कमाते ॥ निर्मल होय कर अस्नाना । गुरु पूरे कीने दाना ॥ सब कुशल क्षेम प्रभु धारे । सहीसलामत सब थोकदा उवारे ॥ गुरुका शब्द विचारे ॥ साधु संग मल लाथी ॥ पारब्रह्म भयो साथी ॥ नानक नाम ध्याया॥ आदि पुरुष प्रभु पाया ॥ ९२ ॥

प्राणी कौन उपाव करै ॥ जाते भगती रामकी पावै यमको त्रास हरे ॥ कोन कर्म विद्या कह कैसी धर्म कौन पुनि करई ॥ कौन नाम गुरु जाके सुमिरे भवसागर को तरई ॥ कलिमे एक नाम किरपानिधि जाहि जपै गतिपावै॥और धर्म ताके सम नाहिन यह विधि वेद बतावै ॥ सुख दुख रहत सदा निरलेपी जाको कहत गुसाई ॥ सो तुमहीमे वसे निरतर नानक दर्पण न्याई ॥ ९३ ॥

माई मै किहि विधि लखो गुसाई ॥ महा मोह अज्ञान तिमिर-में मन रह्यो उरझाई ॥ सकल जन्म भ्रम ही भ्रम खोयो नही

स्थिर मति पाई ॥ विषयासक्त रह्यो निशिवासर नहिं छूटी अधमाई । साधुसंग कबहूं नहिं कीना नहिं कीरति प्रभु गाई ॥ जन नानक मैं नाहीं कोऊ गुण राखि लेहु शरणाई ॥ ९४ ॥

माई मन मेरो बश नाहि ॥ निशि वासर विषयनको ध्यावत किहि विधि रोको ताहि ॥ वेदपुराण स्मृति के मत सुन निमिष न हिये बसावै ॥ परधन परदारा सो राच्यो बिरथा जन्म सिरावै ॥ मद मायाके भयो बापरो सूझत नहिं कछु ज्ञाना ॥ घट ही भीतर वसत निरंजन ताको मर्म न जाना॥ जबहीं शरण साधु की आयो दुरमति सकल विनासी ॥ तब नानक चेत्यो चिन्तामणि काटी यमकी फाँसी ॥ ९५ ॥

रे नर यह सांची जिय धार ॥ सकल जगतहै जैसे सुपना विनशत लगत न वार ॥ बारू भीत बनाई रचपच रहत नही दिन चार ॥ तैसेही यह सुख माया को उरझ्यो कहा गवांर ॥ अजहूं समझ कछू बिगरचो नाहिन भज ले नाम मुरार ॥ कह नानक निजमति साधन को भाष्यो तोहि पुकार ॥ ९६ ॥

मन रे गह्यो न गुरु उपदेश ॥ कहा भयो जो मूंड मुंडायो भगवो कीनो भेष ॥ साँच छाडके झूठहि लाग्यो जन्म अकारथ खोयो ॥ कर परपंच उदर निज पोष्यो पशु की नाई सोयो ॥ राम भजन की गति नहिं जानी माया हाथ बिकाना ॥ उरझ रह्यो विषयन सँग बौरा नाम रत्न बिसराना ॥ रह्यो अचेत न चेत्यो गोविद बिरथा औध सिरानी ॥ कह नानक हरि विरद पछानो भूले सदा परानी ॥ ९७ ॥

जो नर दुखमें दुख नहि मानै ॥ सुख सनेह अरु भय नहिंजाके कंचनमाटी मानै॥नहि निंदा नहिंअस्तुति जाके लोभमोहअभिमाना॥हर्ष शोक ते रहे नियारो नाहि मान अपमाना॥आसा मनसा

कल त्यागिके जगत रहे नीरासा ॥ काम क्रोध जिहिं परसे नाहिन तिहि घट ब्रह्म निवासा ॥ गुरु किरपा जिहिं नरको कीनी तिहिं यह जुगति पछानी ॥ नानक लीन भयो गोविंद सो ज्यो पानी सँग पानी ॥ ९८ ॥

जब जारिये तब होय भसम तन रहे किरम दल खाई ॥ काची गागर नीर परत है या तन की यही बड़ाई ॥ काहे भया फिरतो फूल्या फूल्या ॥ जब दश मास ऊर्ध्व मुख रहता सो दिन कैसे भूल्या ॥ ज्यो मधु माखी त्यो सठोर रस जोर जोर धन कीया॥ मरती वार लेहु लेहु करिये भूत रहन क्यो दीया॥ देहरी लौं वरी नारि सग भई आगे सजन सुहेला ॥ मरघट लौं सब लोग कुटुंब भयो आगे हस इकेला ॥ कहत कबीर सुनो रे प्रानी परे काल ग्रस कूआ ॥ झूठी माया आप बँधाया ज्यो नलिनी भ्रम सूआ॥९९॥

वेद पुराण सभी मत सुनके करी कर्मकी आशा ॥ काल ग्रसत सब लोग सयाने उठ पंडितपहि चले निराशा ॥ मन रे सर्यो न एको काजा भज्यो न रघुपति राजा ॥ वनखंड जाय योग तप कीनो कदमूल चुन खाया ॥ नादी वेदी शब्दी मौनी यमके पट लिखाया॥भक्ति नारदी हृदय न आई काछ पूछ तन दीना ॥ रात रागिन डिंभ होय बैठा उन हारे पहि क्या लीना ॥ पर्यो काल सभी जग ऊपर माहि लिखे ब्रह्मज्ञानी ॥ कहु कबीर जन भये खलासे प्रेम भगति जिहि जानी ॥ १०० ॥

क्या पढिय क्या सुनिये ॥ क्या वेद पुराणा सुनिये ॥ पढे सुने क्या होई ॥ जो सहज न मिल्या सोई ॥ हरिका नाम न जपसि गवॉरा ॥ क्या सोचहि वारंवारा ॥ अँधियारे दीपक चहिये॥इक- वस्तु अगोचर लहिये ॥ वस्तु अगोचर पाई ॥ घट दीपक रह्यो

समाई ॥ कह कबीर अब जान्या ॥ जब जान्या तो मन मान्या॥ मन माने लोग न पतीजे ॥ न पतीजे तो क्या कीजे ॥१०१॥

हृदय कपट मुख ज्ञानी ॥ झूँठे कहा विलोकत पानी॥काया मांसज कौन गुना ॥ जो घट भीतर है मलना ॥ लोकी अडसठ तीरथ न्हाई ॥ करुणापन तऊ न जाई ॥ कह कबीर वीचारी ॥ भवसागर तार मुरारी॥ १०२ ॥

बहु प्रपच कर परधन ल्यावै ॥ सुत दारा वहिं आन लुटावै ॥ मन मेरे भूले कपट न कीजै ॥ अत निबेरा तेरे जीय पहिं लीजै॥ छिन छिन तन छीजे जरा जनावे ॥ तब तेरी ओप कोई पानी हूँ न पावे ॥ कहत कवीर कोई नहि तेरा ॥ हिरदय राम क्यों न जपहि सवेरा ॥ १०३ ॥

भूखे भगति न कीजै ॥ यह माला आपनि लीजै ॥ हौ मागो संतन रेना ॥ मै नही किसीका देना ॥ माधो कैसी बने तुम संगे ॥ आपन देहु तो लेवो मंगे ॥ दोय सेर मांगो चूना ॥ पाउ घीउ संग लूना ॥ आधसेर मांगो दाले ॥ मोको दोनो वखत जिमाले ॥ खाट मांगों चौपाई ॥ सिरहाना अवर तुलाई ॥ ऊपर को मांगो खीधा ॥ तेरी भगति करे जन बीधा ॥ मै नाही कीता लब्बो ॥ इक नाम तेरा मैं फब्बो ॥ कह कबीर मनमान्या ॥ मनमान्या तो हरि जान्या ॥ १०४ ॥

पार परीसन पूछले नामा कापहि छानि छवाई हो ॥ तो पहिं दुगनी मजूरी देहो मोको वेढी देहु बताई हो ॥ री बाई बेढी देन न जाई देख बेढी रह्यो समाई ॥ हमारे बेढी प्राण अधारा ॥ वेढी प्रीति मजूरी मांगै जो कोउ छान छवावे हो ॥ लोक कुटुम्ब सबहू ते तोरे तो आप न बेढी आवेहो ॥ ऐसो वेढी बर्न न साकों सभ अतर सभ ठाईं हो ॥ गूंगे महा अमृत रस चाख्या पूछे

कहन न जाई हो ॥ बेढी के गुण सुनरी बाई जलधि बांध ध्रुव थाप्योहो ॥ नामे के स्वामी सीय बहोरी लंक बिभीषण आप्यो हो ॥ १०५ ॥

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मे नाही ॥ अनल अगम जैसे लहरि मय उदधि जल केवल जलमाही ॥ माधव क्या कहिये भ्रम ऐसा जैसा मानिये होय न तैसा ॥ नरपति एक सिहासन सोया सुपने भयो भिखारी ॥ अछत राज बिछुरत दुख पाया सो गति भई हमारी ॥ राज भुवंग प्रसंग जैसे है अब कछु मर्म जनाया ॥ अनिक कटक जैसे भूले परे अब कहतें कहन न आया ॥ सर्व एक अनेके स्वामी सब घट भुगवै सोई ॥ कह रामदास हाथ पै नरै सहजे होय सो होई ॥ १०६ ॥

जो हम बांधे मोह फांस हम प्रेमबन्धन तुम बाधे ॥ अपने छूटन की यतन करो हम छूटे तुम आराधे ॥ माधव जानतहो जै तैसी अब कहा करोगे ऐसी ॥ मीन पकर फांस्यो अरु काट्यो राध कियो बहु बानी ॥ खण्ड खण्ड कर भोजन कीनो तउ न बिसर्यो पानी ॥ आपन बापै नाहीकिसीको भावन को हरि राजा ॥ मोह पटल सब जगत व्याप्यो भगत नही सतापा ॥ कह रामदास भगति इक बाढी अब यह कासो कहिये ॥ जा कारन हम तुम आराधे सो दुख अजहूं सहिये ॥ १०७ ॥

दुर्लभ जन्म पुण्य फल पायो बृथा जात अविवेकै ॥ राज इन्द्र सम सर गृह आसन बिन हरि भगति कहो किहि लेखै ॥ न विचार्यो राजा रामको रस जिहि रस अनरसबीसर जाही ॥ जान अजान भये हम बावर सोच असोच दिवस जाही ॥ इन्द्री सबल निबल विवेक बुधि परमारथ प्रवेश नाही ॥ कहियत आन अचरियत अनकछु समझ न परे अपर माया ॥ कह रामदास उदास दासमति परिहर कोप करो जियदाया ॥ १०८ ॥

चितारे ॥ साधु संग जप निसंक मन निधान धारे॥चरण कमल नमसकार गुण गोविद विचारे ॥ साधु जनां की रेणु नानक मगल सुख सुधारे ॥ ११२ ॥

काहेरे वन खोजन जाई ॥ सर्व निवासी सदा अलेपा तोहि सग समाई॥पुष्प मध्य ज्यों बास वसत है मुकर माही जैसे छाई॥ तैसेही हरि बसै निरतर घट ही खोजो भाई ॥ बाहर भीतर एक जानो यह गुरु ज्ञान बताई ॥ जन नानक विन आपा चीने मिटै न भ्रम की काई ॥ ११३ ॥

साधो यह जग भर्म भुलाना ॥ राम नामका सुमिरन छोड्या माया हाथ विकाना ॥ मात पिता भाई सुत वनिता ताके रस लपटाना ॥ यौवन धन प्रभुता के मद मे अहनिशि रहै दिवाना॥ दीन दयाल सदा दुख भंजन तासो मन न लगाना ॥ जन नानक कोटिन में किनहूं गुरु मुख होय पछाना ॥ ११४ ॥

तिहि योगी को जुगत न जानो॥ लोभ मोह माया ममतापुनि जिहि घट मोहि पछानो॥पर निन्दा स्तुति नही जाके कचनलोह समानो॥ हर्ष शोक ते रहै अतीता योगी ताहि बखानो ॥ चचल मन दह दिश को धावत अचल जाहि ठहरानो॥ कह नानक यह विधि को जो नर मुक्त ताहि तुम मानो ॥ ११५ ॥

दिनते पहर पहरते घडियां आयु घटे तन छीजे ॥ काल अहेरी फिरे वधिक ज्यों कहो कवन विधि कीजे ॥ सो दिन आवनलागा मात पिता भाई सुत वनिता कहो कोउ है है कांका ॥ जब लग जोति काया मे बरते आपा पशू न बूझे ॥ लालच करे जीवन पद कारण लोचन कछू न सूझे ॥ कहत कबीर सुनोरे प्राणी छोडो मनके भरमा॥केवल नाम जपोरे प्राणी परो एक की शरणा ११६॥

जो जन भाव भक्ति कछु जाने ताको अचरज काहो ॥ ज्यों जल जलमें पैठ न निकसे त्यो ढुर मिल्या जुला हो ॥ हरिके लोगा मै तो मति का भोरा ॥ जो तन काशी तजहि कबीरा रमैये कहा निहोरा ॥ कहत कबीर सुनौरे लोई भर्म न भूलो कोई ॥ क्या काशी क्या ऊसर मगहर राम हृदय जो होई ॥ ११७ ॥

इन्द्र लोक शिवलोकहि जैबो ॥ ओछे तप कर बाहर ऐवो॥क्या मागों कछु थिर नाही॥ राम नाम राख मनमाही ॥ शोभाराज विभव बडि आई ॥ अंत न काहू संग सहाई ॥ पुत्र कलत्र लक्ष्मी माया ॥ इनते कहु कवने सुख पाया ॥ कहत कबीर अवर नहि कामा ॥ हमरे मन धन राम को नामा ॥ ११८ ॥

गहरी करके नींव खुदाई ऊपर मंडप छाये ॥ मार्कंडेय ते को अधिकाई जिन तृण धरमूड चलाये ॥ हमरो करता राम सनेही काहेरे नर गरब करत हो बिनशि जाय झूठी देही ॥ मेरी मेरी कौरव करते दुर्योधन सौ भाई ॥ बारह योजन छत्र चले था देही गिर जन खाई ॥ सर्व सोने की लंका होती रावण से अधिकाई॥ कहा भयो दर बांधे हाथी क्षण मे भई पराई ॥ दुर्वासासो करत ठगौरी यादव यह फल पाये ॥ कृपा करी जन अपने ऊपर नामदेव हरि गुण गाये ॥ ११९॥

हमसर दीन दयाल न तुम सर अब पतिआर क्या कीजे ॥ बचनी तोर मोर मन माने जनको पूरण दीजै॥ हौं बलबल जाऊं रमैया कारने ॥ कारण कवन अबोल बहुत जन्म बिछुरे थे माधव यह जन्म तुम्हारे लेखे ॥ कह रामदास आश लग जीवो चिर भयो दर्शन देखे ॥ १२० ॥

धूप दीप घृत साज आरती ॥ वारने जाऊं कमलापति ॥ मंगला हरि मंगला ॥ राजा नित मंगल राम राय को ॥ उत्तम

दियरा निर्मल वाती ॥ तुही निरंजन कमलापाती ॥ रामा भगति रामानद जानै ॥ पूरन परमानंद बखानै ॥ मदन मूरति भयतार गोविदे ॥ सेन भणे भज परमानदे ॥ १२१ ॥

कायो देवा कायो देवल कायो जंगम जाती ॥ कायो धूपदीप नैवेदा कायो पूजो पाती ॥ काया बहु खंड खोजते नव निधि पाई ॥ ना कछु आयवो ना कछु जायवो रामकी दुहाई ॥ जो ब्रह्मड सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥ पीपा प्रणवे परमतत्त्व है सतगुरु होय लखावे ॥ १२२ ॥

राग जैतश्री।

मन रे साँचा गहो विचारा ॥ राम नाम विन मिथ्या मानो सगरो यह ससारा ॥ जाको योगी खोजत हारे पायो नहि तिहिं पारा ॥ सो स्वामी तुम निकट पछानो रूप देख ते न्यारा ॥ पावन नाम जगतमे हरि को कबहूँ नाहि सँभारा ॥ नानक शरण पऱ्यो जग वंदन राखो विरद तिहारा ॥ १२३ ॥

नाथ कछुअ न जानो ॥ मन माथाके हाथ विकानो ॥ तुम कहियतहो जगत गुरु स्वामी ॥ हम कहियत कलियुगके कामी॥ इन पंचन मेरो मन जो विगाऱ्यो ॥ पल पल हरि जीते अंतर पाऱ्यो ॥ जत देखो तत दुखकी रासी ॥ अजहुँ न पतियाय निगम भये साखी ॥ गौतम नारि उमापति स्वामी॥ शीश धरनि सहस- भग गामी ॥ इन दूतन खलवध कर माऱ्यो ॥ बडो निलाज अजहुँ नहि हाऱ्यो ॥ कह रामदास कहा कैसे कीजे ॥ विन रघु- नाथ शरण काकी लीजे ॥ १२४ ॥

राग टोडी।

धायो रे मन दह दिशि धायो। माया मगन स्वाद लोभ मोह्यो तिन प्रभु आप भुलायो ॥ हरि कथा हरि यश साधु संगत

सो इक मुहूर्त न यह मनलायो ॥ विगरचो पेख रंग कुसुंभको पर गृह जोहन जायो॥चरणकमलसीं भाव न कीनो नहीं सतपुरुष मनायो ॥ धावतको धावहि बहु भांती ज्यों तेली वृषभ भ्रमायो॥ नाम दान अस्नान न कीयो इक निमिष न कीरति गायो॥ नाना झूँठ लाय मन तोष्यो नहि बूझ्यो अपनायो॥ पर उपकार न कबहूँ कीये नहिं सतगुरु सेव ध्यायो ॥ पंच दूत रच सगत गोष्ठी मतवारो मद मायो ॥ करो वीनती साधु संगत हरि भगत वच्छल सुन आयो ॥ नानक भाग परचो हरि पाछे राख लाज अपनायो ॥ १२५ ॥

मांगौ दान ठाकुर नाम ॥ अवर कछु मेरे सग न चालै मिलै कृपा गुण ग्राम ॥ राज माल अनेक भोग रस सकल तरुवर की छाम ॥ धाय २ बहु विधिको धावै सकल निरारथ काम॥ विन गोविंद अवर जे चाहों दीसै सकल बात है खाम ॥ कहु नानक सत रेणु मांगो मेरो मन पावै विश्राम ॥ १२६ ॥

कहो कहा अपनी अधमाई । उरझ्यो कनक कामिनीके रस नहि कीरति प्रभु गाई ॥ जग झूँठको सांच जनके तासो रुचि उपजाई ॥ दीनबंधु सुमिरचो नहि कबहू होत जो संग सहाई ॥ मगन रह्यो मायामे निशिदिन छुटी न मनकी काई ॥ कह नानक अब नाहि अनत गति विन हरिकी शरनाई ॥ १२७ ॥

राग तिलंगा ।

यक अर्ज गुफतम पेश तो दर गोश कुन करतार ॥ हक्का कबीर करीम तू वेऐब परवर दिगार॥ दुनिया मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥ सर मूईराईजल गरिफ्तह दिल हेच नादानी ॥ जन पिसर पिदर विरादरां कस नेस्त दस्तगीर॥ आखिर बिपफ्तम कस नदारत चूँशवद तकबीर॥शव रोज गश्तम दर हवा करदेम

वदी ख्याल ॥ गाहे न नेकी कार कर दम गम ईंचुनी अहवाल॥ वद वख्त हैं गचू वखील गाफिर वेनजर वेबाक ॥ नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पा खाक ॥ १२८ ॥

चेतना है तो चेतले निशि दिन मे प्रानी ॥ छिन छिन अवध बिहात है फूटे घट ज्यों पानी ॥ हरि गुनि काहे न गावही मूरख अज्ञाना ॥ झूँठे लालच लाग के नहि मर्म पछाना ॥ अजहूं कछु बिगर्‍यो नही जो प्रभु गुन गावे ॥ कहु नानक तिहि भजन ते निरभय पद पावे ॥ १२९ ॥

मे अंधले की टेक तेरा नाम खुदकारा । मे गरीब मैं मिसकीन तेरा नाम है अधारा ॥ करीमा रहीमा अलाह तू गनी ॥ हाजरा हजूर दरपेश तो मनी ॥ दरियाउ तू दिहंद तू बिस्यार तू धनी॥ देहि लेहि एक तू दिगर को नही ॥ तू दाना तू बीना मे बीचार क्या करी ॥ नामे चे स्वामी वखशिंद तू हरी ॥ १३० ॥

हले यारां हले यारां खुश खबरी॥बल बल जाउँ गहौं बल बल जाउँ॥नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउँ ॥ कुजा आमद कुजा रफ्ती कुजा मेरवी ॥ द्वारका नगरी रस्ता बुगोई ॥ खूब तेरी पगरी मीठे तेरे बोल ॥ द्वारका नगरी काहे के मगोल ॥ चदी हजार आलम एक लखाना ॥ हम चुनी पात शाह सांवले वरना॥ अश्वपति गजपति तरह नरिंद ॥नामे केस्वामी मीर मुकुंद॥ १३१॥

राग सूही ।

नीच जाति हरि जपत्यां उत्तम पदवी ॥ पाय पूछो बिदुर दासी सुतहि कृष्ण उतार्‍या घर जिस जाय ॥ हरिकी अकथ कथा सुनो जन भाईजित सशय दूख भूक सब लह जाय ॥ रामदास चमार अस्तुति करे हरि कीरति निमिप इक गाय ॥ पतित जाति

उत्तम भया चार वर्ण परे पग आय ॥ नामदेव प्रीति लगी हरि सेती लोक छीपा कहे बुलाय ॥ क्षत्री ब्राह्मण पीठ दे छोडे हरि नामदेव लिया मुख लाय ॥ जितने भगत हरि सेवका मुख अड-सठ तीर्थ तिन तिलक कढाय ॥ जन नानक तिनको अनुदिन परसे जे कृपा करे हरिराय ॥ १३२ ॥

बाजीगर जैसे बाजी पाई ॥ नानारूप भेष दिखलाई॥ स्वांग उतार थंम्यो पासारा ॥ तब एको एककारा ॥ कवन रूप दृष्ट्यो कवन शायो ॥ कतहि गयो वह कतते आयो ॥ जलते उठहि अनीक तरंगा ॥ कनक बिभूषण कीने बहु रंगा ॥ बीज ते जो देख्यो बहु प्रकारा ॥ फल पाके ते एककारा ॥ सहस घटामे एक अकाश ॥ घट फूटते वही प्रकाश॥भ्रम लोभ मोह माया विकार॥ भ्रम छूटे ते एककार ॥ वह अविनाशी विनशत नाही ॥ नाको आवे नाको जाही ॥ गुरु पुरे हौ में मल धोई ॥ कहु नानक मेरी परम गति होई ॥ १३३ ॥

सेवाथोरी मांगन बहुता ॥ महल न पावै कहतो पहुता ॥ जो प्रिय मानै तिनकी रीसा ॥ कूडे मूरख की हाठीसा ॥ भेष दिखावै सच नकमावै ॥ कहतो महली निकट न आवे ॥ अतीत सदा ये माया का माता ॥ मन नही प्रीत कहै सुखराता ॥ कहु नानक प्रभु बिनय सुनीजे ॥ कुचल कठोर कानी मुक्त कीजे ॥ १३४ ॥

बुरे काम को ऊठ खलोया ॥ नाम की बेला पै पै सोया ॥ अवसर अपना बूझे न अयाना ॥ माया मोह रंग लपटाना ॥ लोभ लहर को बिकस फूल बैठा ॥ साधु जनां का दर्शन डीठा॥ कबहूं न समझे अज्ञान गवारा ॥ बहुर बहुर लपट्यो जजारा ॥ विषय नाद करण सुन भीना॥हरि यश सुनत आलस मन कीना॥

दृष्टि नाही रे पेखत अधे ॥ छोड जाहि झूठे सब धन्धे ॥ कहु नानक प्रभु बखस करीजे । कर किरपा मोहिं साधु सग दीजे ॥ तौं कछु पाइये जो होइये रेना ॥ जिसहि बुझाये तसनाम लेना ॥१२५॥

कवन काज माया वडियाई ॥ जाको बिनशत बार न काई ॥ यह सुपना सोवत नहिं जानै ॥ अचेत व्यवस्था मे लपटाने ॥ महामोह मोह्यो गवाँरा ॥ पेखत पेखत ऊठ सिधारा ॥ ऊँच ते ऊँच ताका दरबारा ॥ कई जतु बिनाहि उपारा ॥ दूसर होया नाकोई होई ॥ जप नानक प्रभु एको सोई ॥ १२६ ॥

सुमिर सुमिर ताको हौ जीवा ॥ चरणकमल तेरे धोय धोय पीवा ॥ सो हरि मेरा अन्तरयामी ॥ भगत जनांके सङ्ग स्वामी ॥ सुन सुन अमृत नाम ध्यावां ॥ आठ पहर तेरे गुण गावां ॥ पेख पेख लीला मन आनदा ॥ गुण अपार प्रभु परमानदा ॥ जाके सिमरन कछु भय न व्यापे ॥ सदा सदा नानक हरि जापे ॥१३७॥

भली सुहावी छापरी जामे गुण गाये ॥ कितही काम न धौलहर जित हरि बिसराये ॥ अनन्द गरीबी साधुसङ्ग जित प्रभु चित आये ॥ जल जाउ एह बडपना माया लपटाये ॥ पीसन पीस ओढ कामरी सुख मन सन्तोपाये ॥ ऐसो राज न किते काज जित नहि तृताये ॥ नग्नफिरत रग एकके ओह शोभा पाये ॥ पाटपटम्बर बिरथिया जिहिं रच लोभाये ॥ सब कछु तुम्हारे हाथ प्रभु आप करे कराये ॥ सॉस सॉस सिमरत रहां नानक दान पाये ॥१३८॥

संताके कारज आप खलोया हरि कम्म करावन आया राम ॥ धरति सुहावी ताल सुहावा विच अमृत जल छाया राम ॥ अमृतजल छाया पूरन साज कारया सकल मनोरथ पूरे॥जैजैकार भया जग अन्तर लाथे सकल बसूरे॥पूरनपुरुष अच्युतअविनाशी

आवे ॥ योग यज्ञ निष्फल तिहि मानो जो प्रभु यश विसरावै ॥ मान मोह दोनोको परिहरि गोविन्दके गुण गावै ॥ कह नानक यहि विधिको प्राणी जीवनमुक्त कहावै ॥ १४८ ॥

जामें भजन राम को नाहीं ॥ तिहि नर जन्म अकारथ खोयो यह राखो मनमाही ॥ तीरथ करै व्रत पुनि राखै नहिं मनुआ वश जाको ॥ निष्फल धर्म ताहि तुम मानो सांच कहत मैं याको ॥ जैसे पाहन जलमे राख्यो भेदै नहि तिहि पानी ॥ तैसेही तुम ताहि पछानो भगवतहीन जो प्रानी ॥ कलिमे मुक्ति नाम ते पावत गुरु यह भेद बतावे ॥ कह नानक सोइ नर गुरुवा जो प्रभु के गुण गावै ॥

ऐसे यह ससार पेखना रहन न कोऊ पइहै रे ॥ सूधे सूधे रेग चलो तुम नतरक धका देवइहै रे ॥ बारे बूढे तरुने भैया सवहूं यम लै जइहै रे ॥ मानस वपुरा मूसा कीनो मीच बिलैया खइहै रे ॥ धनवन्ता अरु निरधन मनई ताकी कछू न कानी रे ॥ राजा परजा सम कर मानें ऐसो काल बडानी रे ॥ हरिके सेवक जो हरि भाये तिनकी कथा निरारी रे ॥ आवहि जाहिं न कबहूँ मरते पारब्रह्म संगारी रे ॥ पुत्र कलत्र लक्ष्मी माया इहै तजहु जिय जानी रे ॥ कहत कबीर सुनो रे संतहु मिलिहै शारंग-पानी रे ॥ १४९ ॥

विद्या न पढो वाद नहि जानो ॥ हरि गुण कथत सुनत बौरानो ॥ मेरे बाबा मै बौरा सब खलक स्यानी मैं बौरा ॥ मैं बिगर्यो बिगरै नति औरा ॥ आपन बौरा राम कियो बौरा ॥ सतगुरु जार गयो भ्रम मोरा ॥ मै बिगरे अपनी मति खोई ॥ मेरे भर्म भूलो मत कोई ॥ सो बौरा जो आप न पछानै ॥ आप पछानै तो एकै जानै ॥ अबहि न माता सो अरु कबहूं न माता ॥ कह कबीर रामहि रग राता ॥ १५० ॥

गृह तज वनखंड जाइये चुन खाइये कंदा ॥ अजहू विकार न छोडई पापी मन मदा ॥ क्यो छूटो कैसे तरो भव जलनिधि भारी ॥ राख राख मेरे वीठुला जन शरण तुम्हारी ॥ विषय विषयकी वासना तजी नाहि जाई ॥ अनिक यतन कर राखिये फिर फिर लपटाई ॥ जरा जीवन यौवन गया कछु किया न नीका ॥ यह जियरा निरमोलको कौडीलग मीका ॥ कह कबीर मेरे माधवा तू सर्वव्यापी ॥ तुम समसर नाही दयाल मोहि सम सर पापी ॥ १८१ ॥

नित उठ कोरी गाजर आने लीपत जीउ गयो ॥ ताना बाना कछू न सूझे हरि हरि रस लपट्यो॥हमार कुल कौने रामै कह्यो ॥ जबकी माला लई निपूते तबते सुख न भयो ॥ सुनहु जिठानी सुनहु दिरानी अचरज एक भयो ॥ सात सूत इन मुडिये खोये यह मुंडिया क्यो मुयो ॥ सर्व सुखांका एक हरि स्वामी सो गुरु नाम दियो ॥ सत प्रहलादकी पैज जिन राखी हरनाकुश नख बिदर्‌यो ॥ घरके देव पितर को छोडी गुरुको शब्द लियो॥ कहत कबीर सकल अघखंडन सतहि लै उधर्‌यो ॥ १८२ ॥

राखि लेहु हमते बिगरी ॥ शील धर्म जप भगति न कीनी हौं अभिमान टेढ पगरी ॥ अमर जान संची यह काया यह मिथ्या काची गगरी ॥ जिनहि निवाज साज हम कीये तिनहि बिसार अवर लगरी ॥ सधिकि तोहि साध नहिं कहियो शरण परे तुमरी पगरी ॥ कह कबीर यह बिनती सुनियो मत घालो यमकी खबरी ॥ १८३ ॥

दारिद देख सबकोय हँसे ऐसी दशा हमारी ॥ अष्टादश सिद्धि करतले सब कृपा तुम्हारी ॥ तूं जानत मैं कछु नहीं भव खंडन राम ॥ सकल जीवन शरणागती प्रभु पूरण काम ॥ जो तेरीशर-

णागती तिन नाही भार ॥ ऊँच नीच तुमते तरे आल जु संसार॥ कह रामदास अकथ कथा बहु काय करीजै ॥ जैसा तू तैसा तुहीं क्या उपमा दीजै ॥ १८४ ॥

जिहि कुल साधु वैष्णव होय ॥ वर्ण अवर्ण रंक नहिं ईश्वर विमल वास जानिय जग सोय ॥ ब्राह्मण वैश्य शूद्र अरु क्षत्रिय डोम चंडाल मलेच्छ मन सोय ॥ होय पुनीत भगवंत भजन ते आप तार तारे कुल दोय ॥ धन्य सो गाउँ धन्य सो ठाउँ धन्य पुनीत कुटम्ब सब लोय ॥ जिन पीया सार रस तजे आन रस होय रस मगन डारे विष खोय ॥ पंडित शूर छत्रपति राजा भगत बराबर और न कोय ॥ जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनत रामदास जन्मे जग ओय ॥ १८५ ॥

नृप कन्याके कारने इक भयो भेष धारी ॥ कामारथी स्वारथी वाकी पैज सवारी ॥ तव गुण कहा जगत गुरा जो कर्म न नासै ॥ सिंह शरण कह जाइये जो जम्बुक ग्रासै ॥ एक बून्द जल कारने चातक दुख पावै ॥ प्राण गये सागर मिले पुनि काम न आवै ॥ प्राण जो थाके थिर नहीं कैसे बिरमावो ॥ बूडमुये नौका मिले कहु काहि चढ़ावो ॥ मैं नाही कछु हौं नहीं कछु आहि न मोरा ॥ औसर लज्जा राखलेहु सधना जन तोरा ॥ १८६ ॥

राग गौंड ।

निमाने को जो देतो मान ॥ सकल भूखे को करतो दान ॥ गरभ घोरमें राखनहार ॥ तिस ठाकुरको सदा नमस्कार ॥ ऐसो प्रभु मन माहि ध्याय ॥ घट अवघट जत कतहि सहाय ॥ रंक राउ जाके एक समान ॥ कीट हस्ती सकल पूरन ॥ बीयो पूछ न मसलत धरै ॥ जो कछु करै सो आपहि करै॥जाका अंत न जान-कोय आये । आप निरंजन सोय ॥ आप अकार आप निरकार ॥

घट घट घट सब घट आधार ॥ नाम रंग भगत भये लाल ॥ जस करते सत सदा निहाल ॥ नाम रंग जन रहे अघाय । नानक तिन जन लागे पाय ॥ १५७ ॥

गुरु की मूरत मन में ध्यान॥गुरुके शब्द मंत्र मन मान॥गुरुके चरण हिरदे लै धारो॥ गुरु पारब्रह्म सदा नमसकारो॥मत को भ्रम भूलें संसार ॥ गुरु विन कोय न उतरत पार ॥ भूलेको गुरु मारग पाया ॥ अवर त्याग हरि भगती लाया ॥ जन्म मरण की त्रास मिटाई॥गुरू पूरे की वे अत बडाई ॥ गुरु प्रसाद ऊरध कमल विकास ॥ अधकार मे भया प्रकाश ॥ जिन किया सो गुरु ते जान्या ॥ गुरु कृपाते मुगध मन मान्या ॥ गुरु करता गुरु करने योग्य॥गुरु परमेश्वर है भी होग ॥ कह नानक प्रभु यही जनाई॥ विन गुरु मुक्ति न पाइये भाई ॥ १५८ ॥

राम नाम सग कर व्योवहार॥ राम राम राम प्राण अधार ॥ राम राम राम कीर्तन गाय ॥ रमत राम सब रह्यो समाय ॥ सत जनां मिल बोलो राम ॥ सबते निरमल पूरण काम ॥ राम राम धन संच भंडार ॥ राम राम राम कर अहार ॥ राम राम वीसर नही जाय ॥ कर किरपा गुरु दियो बताय ॥ राम राम राम सदा-सहाय ॥ राम राम राम लव लाय ॥ राम राम जप निर्मल भये॥ जन्म जन्म के किल्विप गये ॥ रमत राम जन्म मरन निवारे ॥ उचरत राम भय पार उतारे ॥ सभते ऊँच राम परकास ॥ निशि बासर जप नानक दास ॥ १५९ ॥

अचरज कथा महा अनूप ॥ परमात्मा पारब्रह्मका रूप ॥ ना यह बूढा ना यह बाला ॥ ना इस दूख नही यमजाला ॥ ना यह विनशे ना यह जाय ॥आद जुगादी रह्यो समाय ॥ ना इस उष्ण नही इस शीत ॥ ना दुशमन ना इस मीत ॥ ना इस हर्ष नहीं

इस शोग ॥ सभ कछु इसका यह करने योग॥ ना इस बाप नहीं इस माया ॥ इह अपरपर होता आया ॥ पाप पुण्य का इस लेप न लागै ॥ घट घट अंतर सदही जागै ॥ तीन गुणां इक शक्ति उपाया ॥ महा माया ताकी है छाया ॥ अछल अछेद अभेद दयाल ॥ दीनदयाल सदाकृपाल ॥ ताकी गति मित कछु न पाय ॥ नानक ताके बल बल जाय ॥ १६० ॥

संत मिलै कछु सुनिये कहिये ॥ मिलै असत मष्ट कर रहिये॥ बाबा बोलना क्या कहिये ॥ जैसे राम नाम रम रहिये ॥ संतन सो बोले उपकारी ॥ मूरखसो बोले झखमारी ॥ बोलत बोलत बढै विकारा ॥ बिन बोले क्या करै विचारा ॥ कह कबीर छूछा घट बोलै ॥ भरचा होय सो कबहूं न डोलै ॥ १६१ ॥

नरू मरे नर काम न आवै ॥ पशू मरै दश काज सवांरै ॥ अपने कर्मकी गति मैं क्या जानो मैं क्या जानो बावा रे ॥ हाड जलै जैसे लकरी का तूला ॥ केश जलै जैसे घासका तूला ॥ कहत कबीर तबही नर जागे ॥ यमका दंड मूंड में लागे॥ १६२॥

भजा बांध भिला कर डारचो॥हस्ती कोप मूड महिमा रहचो॥ हस्ती भाग के चीसां मारै ॥ या मूरत के हौ बलिहारै ॥ आहि मेरे ठाकुर तुमरा जोर ॥ काजी बकबो हस्ती तोर ॥ रे महावत तुझ डारों काट ॥ इसहि तुरावहु घालो साट ॥ हस्तन तोरै धरै ध्यान ॥ वाके हिरदय वसै भगवान ॥ क्या अपराध संतहै कीना बांध पोट कुंजर को दीना ॥ कुंजर पोट लै लै नमसकारै ॥ बूझी नही काजी अँध्यारै ॥ तीन बार पतीया भर लीना ॥ मन कठोर अजहूं न पतीना ॥ कह कबीर हमरा गोविंद ॥ चौथे पदमें जनकी जिंद ॥ १६३ ॥

ना इह मानुस ना इह देउ ॥ ना इह यती कहावै सेउ ॥ ना इह योगी ना अवधूता ॥ ना इस माय न काहू पूता ॥ या मंदिर में कौन बसाई ॥ ताका अंत न कोऊ पाई ॥ ना इह गिरही नाहि उदासी ॥ ना इह राज न भीख मँगासी ॥ ना इस पिंड न रकतू राती ॥ ना इह ब्राह्मण ना इह खाती ॥ ना इह तपा कहावै शेख ॥ ना इह जीवै न मरता देख ॥ इस मरते को जो कोउ रोवै ॥ जो रोवे सोई पति खोवे ॥ गुरु प्रसाद मै डगरो पाया ॥ जीवन मरन दोऊ मिटवाया ॥ कहु कवीर इह रामकी अंस ॥ जस कागद पर मिटे न मस ॥ १६४ ॥

अश्वमेध यगने ॥ तुलापुरुप दाने ॥ प्राग अस्नाने ॥ तौ न पुजहि हरि कीरती नामा ॥ अपने रामहि भज रे मन आलसिया ॥ गयो पिंड भरता बनारस असि बसता ॥ मुख वेद चतुर पढ़ता ॥ सकल धर्म अछिता ॥ गुरु ज्ञान इंद्री दृढ़ता ॥ पट्र कर्म सहित रहता ॥ शिवा शक्ति सवाद ॥ मन छोड छोड सकल भेद ॥ सिमर सिमर गोविंद ॥ भज नामा तरसि भव ॥ १६५ ॥

नाद भ्रमे जैसे मिरगाये ॥ प्राण तजे वाको ध्यान न जाये ॥ ऐसे रामा ऐसे हेरो ॥ राम छोड चित अनत न फेरो ॥ ज्यो मीना हेरै पशुआरा ॥ सोना गढ़ते हेरै सुनारा ॥ ज्यो विषयी हेरै परनारी ॥ कौडी डारत हिरै जुआरी ॥ जहि जहि देखो तहिं तहि रामा ॥ हरिके चरण नित ध्यावै नामा ॥ १६६ ॥

मोको तारले रामा तारले ॥ मैं अजान जन तरबे न जानों बाप बीठुला बाहिंदे॥ नर ते सुर होयजात निमिपमें सतगुरु बुध सिखलाइ ॥ नरते उपज स्वर्गको जीत्यो सो औषध मैं पाई ॥ जहां जहा ध्रुव नारद टेके नेके टिकावो मोहि ॥ तेरे नाम अवलंब बहुत जन उधरे नामेकी निज मति इह ॥ १६७ ॥

खिच्या सूत तो आई थाय ॥ चहुँमे एकै मट है किया ॥ ताहि विखडे थान अनिक खिडकिया ॥ खोजत खोजत द्वारे आया ॥ तौ नानक योगी महल घर पाया ॥ १७० ॥

कौडी वदले त्यागे रतन ॥ छोड जाय ताहूँका यतन ॥ सो सचय जो होछी वात ॥ माया मोह्या टेढा जात ॥ अभागे ते लाज नाही ॥ सुखसागर पूरन परमेश्वर हरि न चेत्यो मनमाही ॥ अमृत कौडा विपया मीठी ॥ शाकतकी विधि नैनै डीठी ॥ कूड कपट अहकार रिझाना ॥ नाम- सुनत जनु विछू डसाना ॥ माया कारन सदही झूरे ॥ सनमुख कबहुँ न अस्तुतिकरे ॥ निर्भय निर- कार दातार ॥ तिससो प्रीति न करे गवांर ॥ सब सांहा शिर सांचा साह ॥ वेमुहताज पूरा पातसाह ॥ मोह मगन लपट्यो भ्रम गिहरे ॥ नानक तरिये तेरी मिहरे ॥ १७१ ॥

गऊ कों चारे शारदूल ॥ कौडी का लख हुआ मूल ॥ वकरीको हस्तीप्रतिपाले ॥ अपना प्रभु नदर निहाले ॥ कृपानिधान प्रीतम प्रभु मेरे ॥ वर्ण न सकों वहु गुण तेरे ॥ दीसत मोसन खाय बिलाई ॥ महा कसाव छुरी सटपाई ॥ करनहार प्रभु हिरदय वूठा ॥ फाथी मछलीका जाला तूठा ॥ सूखे काष्ट हरे चलूल ॥ ऊचे थल फूले कमल अनूप ॥ अग्नि निमारे सतगुरु देव ॥ सेवक अपनी लायो सेव ॥ किरत घनाका करे उधार ॥ प्रभु मेरा है सदा दियार ॥ सतजनका सदा सहाई ॥ चरण कमल नानक शरणाई ॥ १७२ ॥

रे मन ओट लेहु हरि नामा ॥ जाके सुमिरन दुरमति नाशैपावहिं पद निरवाना ॥ बडभागी तिहि जनको जानो जो हरिके गुण गावे ॥ जन्म जन्मके पाप खोयकै पुनि बैकुठ सिधावै ॥ अजा- मिलको अतकालमें नारायणसुधि आई ॥ जा गतिको योगीश्वर वांछत सो गति छिनमें पाई ॥ नाहिंन गुण नाहिंन कछु विद्या धर्म

कौन गज कीना ॥ नानक विरद रामका देखो अभयदान तिहि दीना ॥ १७३ ॥

साधो कौन जुगत अब कीजे ॥ जाते दुर्मति सकल विनाशै राम भगति मन जीजे ॥ मन मायामें उरझ रह्योहै बूझे नहिं कछु ज्ञाना ॥ कौन नाम जग जाके सिमरे पावै पद निरवाना ॥ भये दयाल कृपाल सन्तजन तब इह बात बताई ॥ सर्व धर्म मानो तिहि कीये जिहिं प्रभु कीरत गाई ॥ राम नाम नर निशिवासरमें निमिप एक उर धारे ॥ यमको त्रास मिटे नानक तिहि अपनो जन्म सवाँरे ॥ १७४ ॥

प्राणी नारायण सुधि लेहु ॥छिन छिन औध घटे निशिवासर वृथा जात है देह तरुनापन विषयनसो खोयो बालापन अज्ञान ॥ बिरथ भयो अजहूँ नहि समझे कौन कुमति उरझाना ॥ मानुस जन्म दियो जिहि ठाकुर सो तूँ क्यों बिसरायो ॥ मुक्त होत नर जाके सिमरे निमिप न ताको गायो ॥ मायाको मद कहा करतहै सग न काहू जाई ॥ नानक कहत चेत चितामणि ह्वै है अन्त सहाई ॥ १७५ ॥

कवन काज सिरजे जग भीतर जन्म कवन फल पाया ॥ भवनिधि तरन तारन चितामणि इक निमिप न इह मन लाया ॥ गोविंद हम ऐसे अपराधी ॥ जिन प्रभु जीव पिंड था दीया तिसकी भाउभक्ति नहि साधी ॥ परधन परतन परतिय निन्दा पर अपवाद न छूटे ॥ आवागमन होतहै पुनि पुनि इह प्रसंग ना टूटे ॥ जिहि घर कथा होत हरि संतन इकोनिमिप न कीनो मैं फेरा ॥ लंपट चोर दूत मतवारे तिन संग सदा बसेरा ॥ काम क्रोध माया मद मत्सर इहं सपे मो माही ॥ दया धर्म अरुगुरुकी सेवा इह सुपनंतर नाही ॥

दीन दयाल कृपाल दामोदर भगत बछ्छल भय हारी ॥ कहत कबीर भीर जिन राखो हरि सेवा करो तुम्हारी ॥ १७६ ॥

आनीले कागद काटीले गूडी आकाश मध्ये भरमीयले॥पच जाना सो वात बतोआ चीत सो डोरी राखीयले॥मन राम नामा वेधीयले ॥ जेसे कनक कला चित मांडीयले ॥ आनीले कुभ भराईले ऊदक राज कुअरि पुरदरये॥हँसत विनोद विचार करतिहै चीत सो सागर राखीयले मदिर एकद्वार दस जाके गऊ चरावन छांडीयले ॥ पांच कोस पर गऊ चरावत चीत सो वछरा राखीयले॥कहत नामदेउ सुनो त्रिलोचन बालक पालन पौढीयले ॥ अतर वाहर काज बिरूधी चीत सो वालक राखीयले ॥ १७७॥

वानारसी तप करे उलट तीर्थ मरे अग्नि दहै काया कलप कीजे ॥ अश्वमेध यज्ञ कीजै सोना दान दीजै राम नाम सरतऊ न पूजे ॥ छोड छोड रे पाखंडी मन कपट न कीजे॥ हरिका नाम नित नितहिं लीजे॥गगाजी गोदावरी जाइये कुम्भ जो केदारन्हाइये ॥गोमती सहस गऊ दान कीजे ॥ कोटि जो तीर्थ करे तनजो हिमाले गौर रामनाम सर तऊ न पूजे॥अश्वदान गजदान सिद्धजा नारी भूमिदान ऐसो दान नित नितहि कीजे॥आत्मजो निर्मायलकीजे आप बराबर कंचन दीजै ॥ रामनाम सर तऊ न पूजे ॥ मनहि न कीजै रोप यमहि न दीजे दोप निर्मल निर्वाण पद चीन लीजै ॥ दशरथराय नंद राजा मेरा रामचंद्र प्रणवै नामा तत्वरस अमृत पीजे ॥ १७८॥

पढिये गुनिये नाम सव सुनिये अनुभव भाव न दरसे॥ लोहा कचन हिरण्य होय केसे जो पारसहि न परसे ॥ देव सशय गाठ न छूटे काम क्रोध माया मत्सर इन पांचो मिल लूटे ॥ हम वड कवि कुलीन हम पडित हम योगी सन्यासी ॥ ज्ञानी गुनी शूर

इम दाते इह बुद्धि कबहिं न नासी ॥ कहु रामदास सभी नही समझत भूल परे जैसे बौरे ॥ मोहि अधार नाम नारायण जीवन प्राण धन मोरे ॥ १७९ ॥

राग नटनारायण ।

हौं क्या जाना क्या भावे ॥ मन प्यास बहुत दरशावे ॥ सोई ज्ञानी सोई जन तेरा जिस ऊपर रुचि आवे ॥ कृपा करो जिस पुरुपविधाते सो सदा सदा तुझ ध्यावे ॥ कवन योग कौन ज्ञान ध्यान कवन गुनी रीझावे ॥ सोई जन सोई निज भगताजिस ऊपर रंग लावे ॥ सोई मति सोईबुद्धि स्यानप जित निमिप न प्रभु बिसरावे ॥ संत सग लग इह सुख पायो हरि गुण सदहीगावे देख्यो अचरज महा मगल रूप कछु आन नहिं दृष्टावे ॥ कह नानक मोरचा गुरु लाह्यो तहिं गरभ योनि कहि आवै॥ १८०॥

राग नट ।

मेरे सर्वस नाम निधान ॥ कर किरपा साधू संग मिल्यो सतगुरु दीनो दान ॥ सुखदाता दुख भजनहारा गाउँ कीर्तन पूरण ज्ञान ॥ काम क्रोध लोभ खंड कीने विनश्यो मूढ अभिमान ॥ क्या गुण तेरे आँख बखाणाँ प्रभु अतरयामी जान ॥ चरण कमल शरण सुखसागर नानक सद कुर्बान ॥ १८१ ॥

राग माली गौडा ।

धन्य धन्य राम वेणु वाजे ॥ मधुर मधुर धुन अनहद गाजे ॥ धन धन मेघा रोमावली ॥ धन धन कृष्ण ओढे कांबली ॥ धन धन तू माता देवकी ॥ जिहि गृह रमैया कमलापती ॥ धन धन वन खंड वृंदावना ॥ जहि खेलै श्रीनारायना ॥ वेणु बजावै गोधन चारै ॥ नामे का स्वामी आनंद करै ॥ १८२ ॥

मेरो बाप माधो तू घन केशो सांवलियो बीठुलायेले ॥ कर धरे चक्र वैकुण्ठ ते आये गज हस्तीके प्राण उधारियले ॥ दुश्शासनकी सभा द्रौपदी अंबरलेत उबारियले ॥ गौतम नारि अहल्या तारी पावन केतक तारियले ॥ ऐसा अधम अजाति नामदेव तव शरणागति आइयले ॥ १८३ ॥

राग मारू।

डरपे धरती अकाश नक्षत्रा शिर ऊपर अमर करारा ॥ पौण पाडी वैसंदर डरपै डरपै इन्द्र विचारा ॥ एका निरभय बात सुनी ॥ सो सुखिया सो सदा सुहेला जो गुरु मिलगाय गुनी ॥ देह धार अर देवा डरपहि सिद्ध साधक डर मोया ॥ लख चौरासी मर मर जन्मे फिर फिर योनी जोया ॥ राजस सत्त्विक तामस डरपहि केते रूप उपाया ॥ छल वपुरी इह कमला डरपै अति डरपै धर्मराया ॥ सकल समग्री डरहिं व्यापी विन डर करने हारा॥ कह नानक भक्तनका सगी भक्त सोहै दरबारा ॥ १८४ ॥

पांच वर्पको अनाथ धुरू बालक हरि सुमिरत अमर अटारे ॥ पुत्र हेत नारायण कह्यो यम किंकर मार विदारे ॥ मेरे ठाकुर केते अगनित उधारे ॥ मोहि दीन अलपमति निर्गुण पर्यो शरण द्वारे ॥ बालमीक सुपचारो तर्यो बधिक तरे विचारे ॥ एक निमिप मन माहि अगध्यो गजपति पार उतारे ॥ कीनी रक्षा भगत प्रहलादहि हरनाकुश नखेहि विदारे॥ विदुर दासीसुत भयो पुनीता सकले कुल उज्यारे ॥ कवन अपराध बतावो अपने मिथ्या मोह मग्ना रे॥ आयो साम नानक ओट हरिकी लीजे भुजा पसारे ॥ १८५ ॥

हरिको नाम सदा सुखदाई ॥ जाको सिमर अजामिल उधर्यो गनिकाहू गति पाई ॥ पचालीको राजसभामें रामनाम सुध आई ॥

ताको दुख हरचो करुणामय अपनी पैज बजाई ॥ जिहि नर यश किरपा निधि गायो ताको भयो सहाई ॥ कह नानक में यहै भरोसे गही आन शरणाई ॥ १८६ ॥

अब मैं कहा करो री माई ॥ सकल जन्म विषयन सो खोयो सिमरचो नाहिं कन्हाई ॥ काल फॉस जब गरमें मेली तिहि सुध सब बिसराई ॥ राम नाम बिन या सकटमें को अब होत सहाई ॥ जो सपति अपनी कर मानी छिनमें भई पराई ॥ कह नानक यह सोच रही मन हरियश कबहुँ न गाई ॥ १८७ ॥

माई मैं मनको मान त्याग्यो ॥ माया के मद जन्म सिरायो राम भजन नहि लाग्यो ॥ यम को दंड परचो शिर ऊपर तब सोवत तैं जाग्यो ॥ कहा होत अबके पछिताये छूटत नाहिन भाग्यो ॥ यह चिंता उपजी घटमें जब गुरु चरणन अनुराग्यो ॥ सुफल जन्म नानक तब हुआ जो प्रभु यशमें पाग्यो ॥ १८८ ॥

अच्युत पारब्रह्म परमेश्वर अंतरयामी ॥ मधुसूदन दामोदर स्वामी ॥ हृषीकेश गोवर्धन धारी मुरलीमनोहर हरिरंगा ॥ मोहन माधव कृष्ण मुरारे ॥ जगदीश्वर हरिजी असुर सँहारे ॥ जग-जीवन अविनाशी ठाकुर घट घट वासी है संगा ॥ धरणीधर ईश नृसिंह नारायण ॥ दाढा अग्रे पृथिवी धरायण ॥ बावन रूपकी यातुध करते सहबी सेती है चंगा ॥ श्रीरामचन्द्र जिस रूप न देख्या ॥ वनमाली चक्रपाणि दर्श अनूप्या ॥ सहस नेत्र मूरत है सहसा इक दाता सब है मगा ॥ भगत वच्छल अनाथहि नाथे ॥ गोपीनाथ सकल है साथे ॥ वासुदेव निरंजन दाते वर्ण न साको गुण अगा ॥ मुकुंद मनोहर लक्ष्मीनारायण ॥ द्रौपदी लज्जा निवार उधा-रण ॥ कमलाकांत करे कौतूहल अनंद विनोदी निहसंगा ॥ अमोघ दर्शन अजूनी सभो ॥ अकाल मूरत जिस कदे नाही खो अविनाशी

अविगत अगोचर सब कछु तुझही है लग्ग ॥ श्रीरंग वैकुंठ के वासी ॥ मच्छ कच्छ कुर्म आज्ञाऔतरासी ॥ केशव चरित करें निराले कीता लोडे सो होयगा ॥ निरहारी निरवैर समाया ॥ धार खेल चतुर्भुज कहाया ॥ सांवले सुन्दर रूप बनावहि वेणु सुनत सब मोहेगा ॥ वनमाला विभूषण कमल नयन ॥ सुन्दर कुण्डलं मुकुट बैन॥शख चक्र-गदा है धारी महासारथी सत्सगा पीत पीतांबर त्रिभुवन धनी ॥ जगन्नाथ गोपाल मुख भणी शार्ग-गधर भगवान बीटुला मैं गणत न आवै सरवगा ॥ निहकटक निहकेवल कहिये धनजय जल थल है महिये॥मिरत लोक प्याल समीपत स्थिर थान जिस है अभगा ॥ पतित पावन दुख भय भजन ॥ अहकार निवारण है भवखडन ॥ भगति तोपत दीन कृपाला गुणे न कितही है भग्गा ॥ निरकार अछल अडोलो जोतिस रूपी सब जग मोलो ॥ सो मिले जिस आप मिलाये आपहु कोय न पावेगा ॥ आपे गोपी आपे कान्हा ॥ आपे गऊ चरावै वाना ॥ आपि उपावहि आपि खपावहि तुध लेप नही इक तिल रंगा ॥ एक जीह गुण कवन बखाने ॥ सहस फणीशेषे अन्त न जानै ॥ नूतन नाम जपै दिनराती इक गुण नाही प्रभु कहसगा ॥ ओठ गही जग तपित शरनाया ॥ भय भ्यानक यमदूत दुस्तर है माया होहु कृपाल इच्छा कर राखो साधु सन्तन केसग सगा ॥दृष्टिमान है सकल मिथेना ॥ इक मागो दान गोविन्द सत रेना ॥ मस्तक लाय परम पद पावो जिस प्रात सो पावेगा जिनको कृपा करी सुखदाते ॥ तिन साधू चरण लै हिरदय पराते सकल नाम निधान तिन पाया अनहद शब्द पन वाजंगा ॥ कृत्तम नाम कथे तेरे जिह्वा ॥ सत्त नाम तेरा परा पूर्वला॥ कह नानक भगत पराशननाई देहु दर्श मन रग लगाई ॥ १८९ ॥

काम क्रोध लोभ मोह विवर्जित हरिपद चीन्है सोई ॥ रजगुण तमगुण सतगुण कहिये यह तेरी सभ माया ॥ चौथे पदको जो नर चीन्है तिनही परमपद पाया ॥ तीर्थ वर्त नेम शुचि संयम सदा रहै निहकामा॥तृष्णा अरु माया भ्रम चूका चितवत आतम रामा ॥ जिहि मंदिर दीपक प्रकास्या अंधकार तिहिं नासा ॥ निरभय पूर रहे भ्रम भागा कह कबीर जन दासा ॥ १९८ ॥

किनही बनज्या कांसी तांबा किनही लौंग सुपारी ॥ संतन बनज्या नाम गोबिंद का ऐसी खेप हमारी ॥ हरिके नामके व्योपारी ॥ हीरा हाथ चढ्या निरमोलक छूट गई संसारी ॥ साँचे लाये तौ सच लोगे साँचके व्योहारी ॥ साँची वस्तुके भार चलाये पहुँचे जाय भँडारी ॥ आपहिं रत्न जवाहर मानक आपैहै पासारी ॥ आपै दह दिस आप चलावै निहचल है व्यापारी ॥ मन कर बैल सुरत कर पैडा ज्ञान गोन भरडारी ॥ कहत कबीर सुनो रे संतहु निबही खेप हमारी ॥ १९९ ॥

काम क्रोध तृष्णाके लीने गति नहि एकी जानी ॥ फूटी आंखें कछू न सूझै बूड मुये विन पानी ॥ चलत कत टेढे टेढे टेढे ॥ अस्थित चर्म विष्टाके मूंदे दुर्गंधहिके वेढे । राम न जपहु कवन भ्रम भूले तुमते काल न दूरे ॥ अनिक यतन कर इह तन राखहु रहै अवस्था पूरे ॥ आपन कीया कछू न होवै क्या को करैपगनी ॥ जां तिस भावै सतगुरु भेटै एको नाम बखानी ॥ बलुआके घरुआ में बसते फुलवत देह अयाने ॥ कह कबीर जिहिं राम न चेत्यो बूडे बहुत सयाने ॥ २०० ॥

टेढी पाग टेढे चले लागे बीरे खान ॥ भाव भक्ति सो काज न कछु है मेरो काम दिवान ॥ राम बिसार्योहै अभिमानी ॥ कनक कामिनी महा सुन्दरी पेख पेख सचु मान ॥ लालच झूठ

विकार महामद इह विधि औध बिहानी ॥ कह कबीर अतकी बिरियां लागो काल निदान ॥ २०१ ॥

चार दिन अपनी नौबत चले वजाय ॥ इतनाकु खटीया गढीया मटीया संग न कछू लेजाय ॥ दिहरी बैठी मिहरी रोवै द्वारे लौ संग माय ॥ मरघट लग सब लोक कुटुब मिल हस इकेला जाय॥वह सुत वह वित वह पुर पाटन बहुरि न देखे आय॥ कहत कबीर राम क्यो न सिमरो जन्म अकारथ जाय ॥ २०२ ॥

खट् कर्म कुल संयुक्त है हरि भगति हिरदय नाहिं ॥ चरणारविद न कथा भावे श्वपच तुल्य समान ॥ रे चित चेत चेत अचेत काहे न वालमीकहि देख ॥ किस जातिते किहि पदहि अमरचो राम भगति विशेख ॥ श्वान शत्रु अजात सभते कृष्ण लावे हेत ॥ लोक वपुरा क्या सरा हे तीन लोक परवेश ॥ अजामल्ल पिंगुला लुभत कुजर गये हरिके पास ॥ ऐसे, दुर्मति निस्तरे तूं क्यो न तरै रामदास ॥ २०३ ॥

राग भैरव ।

मेरी पटीयां लिखहु हरि गोविंद गोपाला ॥ दूजे भाय फाथे यम जाला ॥ सतगुरु करे मेरी प्रतिपाला ॥ हरि सुखदाता मेरे नाला ॥ गुरु उपदेश प्रहलाद हरि उचारे ॥ सासना ते बालक गमन करें ॥ माता उपदेशे प्रहलाद प्यारे ॥ पुत्र राम नाम छोडो जीय लेहु उबारे ॥ प्रहलाद कहे सुनो मेरी माय ॥ राम नाम न छोडो गुरु दीया बुझाय ॥ पडामरका सभ जाय पुकारे ॥ प्रहलाद आप विगडचा सभ चाटडे विगाडे ॥ दुष्ट सभामें मन्त्र पकाया ॥ प्रहलादका राखा होय रघुराया ॥ हाथ खडग कर धइया अति अहकार ॥ हरि तेरा कहां तुझ ल्ये उबार ॥ छिनमे भ्यानक रूप निकस्या थभ उपार ॥ हरनाकुश नखी

विदारचा प्रहलाद लीया उवार ॥ संतजनांके हरिजी कारज सवॉरे ॥ प्रहलाद जनके इकीस कुल उधारे ॥ गुरुके शब्द हौ मैं विष मारे ॥ नानक राम नाम संत निस्तारे ॥ २०४ ॥

तूं मेरा पिता तूंही मेरी माता तूं मेरे जीव प्राण सुखदाता ॥ तूं मेरा ठाकुर हौ दास तेरा ॥ तुझ बिन अवर नहीं कोइ मेरा ॥ कर किरपा करो प्रभु दात ॥ तुमरी अस्तुति करों दिन रात ॥ हम तेरे जंत्र तूं बजावन हारा ॥ हम तेरे भिखारी दान देहु दातारा ॥ तव प्रसाद रंगरस माणे ॥ घटघट अतर तुमहि समाणे ॥ तुमरी कृपाते जपिये नाॅउ ॥ साधु संग तुमरे गुण गाॅउ ॥ तुमरी दयाते होय दरद विनास ॥ तुमरी माया ते कमल विकास ॥हौ बलिहार जाॅउ गुरु देव ॥ सफल दर्शन जाकी निर्मल सेव ॥ दया करो ठाकुर प्रभु मेरे ॥ गुण गावे नानक नित तेरे ॥२०५॥

प्रथमें छोडी पराई निंदा ॥ उतर गई सभ मनकी चिंदा ॥ लोभ मोह सभ कीनो दूर ॥ परम वैशनो प्रभु पेख हजूर ॥ ऐसो त्यागी विरला कोय ॥ हरि हरि नाम जपै जन सोय ॥ अहंबुद्धि का छोडा संग ॥ काम क्रोध का उतरा रंग ॥ नाम ध्याये हरि हरि हरे ॥ साधु जनांके सग निस्तरे ॥ वरी मीत होये समान ॥ सर्व महि पूर्ण भगवान ॥ प्रभुकी आज्ञा मान सुख पाया ॥ गुरु पूरे हरिनाम दृढाया ॥ कर किरपा जिस राखै आप ॥ सोई भगत जपै नाम जाप ॥ मन प्रकाश गुरु ते मति लई ॥ कह नांनक तांकी पूरी पई ॥ २०६ ॥

सुख नाही वहुतैं धन खाटे ॥ सुख नाहीं पेखे निर्त नाटे ॥ सुख नाही बहु देश कमाये ॥ सर्व सुखां हरि हरि गुण गाये ॥ सुख सहज आनद लहो ॥ साध संगत पाइये वडभागी ॥ गुरु-सुख हरि हरि नाम कहो बंधन मात पिता सुत वनिता ॥ बंधन

कर्म धर्म हो कर्ता ॥ बंधन काटनहार मन वसे ॥ तौ सुख पावे निज घर वसे ॥ सब याचक प्रभु देवनहार ॥ गुण निधान बेअत अपार ॥ जिसनूं कर्म करे प्रभु अपना ॥ हरि हरि नाम तिन्ही जन अपना ॥ गुरु अपने आगे अरदास ॥ कर किरपा पुरुष गुरु तास ॥ कह नानक तुमरी शरणाई ॥ ज्यो भावे त्यों रखहु गुसाईं ॥ २०७ ॥

लाज मरे जो नाम न लेवे ॥ नाम विहीन सुखी क्यो सोवे ॥ हरि सिमरन छांड परमगति चाहे ॥ मूल विना शाखा कत आहे ॥ गुरु गोविंद मेरे मन ध्याय ॥ जन्म जन्म की मैल उतारे ॥ बधन काट हरि सग मिलाय ॥ तीर्थ न्हाय कहा शुचि सैल ॥ मनको व्यापे हो में मैल ॥ कोट कर्म बंधनका मूल ॥ हरिके भजन बिन विरथा पूल ॥ बिन खाये बूझै नहिं भूख ॥ रोग जाय तो उतरे दूख ॥ काम क्रोध लोभ मोह व्याप्या ॥ जिन प्रभु कीना सो प्रभु नही जाप्या ॥ धन धन साधु धन्य हरि नाउँ ॥ आठ पहर कीर्तन गुण गाउँ ॥ धन हरि भगति धन्य करनेहार ॥ शरण नानक प्रभु पुरुष अपार ॥ २०८ ॥

नाम लेत कछु विघ्न न लागे ॥ नाम सुनत यम दूरहूँ भागे ॥ नामलेत सभ दूखहि नास । नाम जपत हरिचरण निवास । निरविघ्न भगति भज हरि हरि नाउँ ॥ रसिक रसिक हरिके गुण गाउँ ॥ हरि सिमरत कछु चाखन जोहे ॥ हरि सिमरत देत देउन पोहे ॥ हरि सिमरत मोहमान नबधे ॥ हरि सिमरत गर्भ योनि न रुधे ॥ हरि सिमरन की सगली बेला ॥ हरि सिमरन बहु माहि इकेला ॥ जाति अजाति जपै जन कोय ॥ जो जापै तिसकी गति होय ॥ हरि का नाम जपीये साधु संग ॥ हरिके नामका पूरन रग ॥ नानकको प्रभु किरपा धार ॥ श्वास श्वास हरि देहु चितार ॥ २०९ ॥

तिन करते इक चरित उपाया ॥ अनहदबानी शब्द सुनाया ॥ मनमुख भूले गुरुमुख बुझाया ॥ कारन कर्ता करदा आया ॥ गुरु का शब्द मेरे अंतरध्यान ॥ हौं कबहुँ न छोडो हरिका नाम ॥ पिता प्रहलाद पढन पठाया ॥ लै पाटी पांडे के आया ॥ नामबिना नहि पढो अचार ॥ मेरी पटीया लिख देहु गोविंद मुरार ॥ पुत्र प्रहलाद सो कह्यो माय ॥ प्रविर्तन पढ़हु रही समझाय ॥ निरभय दाता हरिजी मेरे नाल ॥ जे हरि छोडो तो कुल लागै गाल ॥ प्रह- लाद सभ वांटडे बिगारे ॥ हमारा कहा न सुनै आपणेकारज सवाँरे ॥ सभ नगरी मे भगति दृढाई ॥ दुष्ट सभा का कछु न बसाई ॥ संडे- मरके कीनी पुकार ॥ सभी दैत्य रहे झकमार ॥ भगत- जनाकी पति राखै सोई ॥ कीते के कहिये क्या होई ॥ किरत संयोगी दैत राज चलाया ॥ हरि न बूझै विन आप भुलाया ॥ पुत्र प्रहलाद सो वाद रचाया ॥ अंधा न बूझे काल नेडे आया ॥ प्रहलाद कोठे विच राख्या डार दीया ताला ॥ निरभय बालक भूल न डरई मेरे अंतर गुरु गोपाला ॥ कीता होवै सरीकी करे अणहोदा नाउँ धरा- या ॥ जो धुर लिखया सो आय पहुँचा जनसों वाद रचाया ॥ पिता प्रहलादसो गुरुज उठाई ॥ कहां तुम्हारा जगदीश गुसाई ॥ जगजीवन दाता अंत सखाई ॥ जहिं देखां तहि रह्या समाई ॥ थंभ उपाड हरि आप दिखाया ॥ अहंकारी दैत मार पचाया ॥ भगतां मन आनद वजी वधाई ॥ अपने सेवक को दे वडिआई ॥ जंमण मरना मोह उपाया ॥ आवण जाणा करते लिख पाया ॥ प्रहलादके कारज हरि आप दिखाया ॥ भगतां का बोल आगे आया ॥ देव कुली लक्ष्मी को करहिं जैकार ॥ माता नरसिंह का रूप निवार ॥ लक्ष्मी भय करे नसाके जाय ॥ प्रहलाद जन चरणो लागा आय ॥ सतगुरु नाम निधान दृढाया ॥ राज माल झूठी सभ माया ॥

लोभी न रहे लपटाय ॥ हरि के नाम दिन दरगह मिले सजाय ॥ कहे नानक सब को करे कराया ॥ सो प्रमाण जिन्ही हरि सो चित लाया ॥ भगतांका अंगीकार करदा आया ॥ करते आपणा रूप दिखाया ॥ २१० ॥

इह धन मेरे हरि को नाउँ ॥ गांठ न बाधो बेच न खाउँ ॥ नाउँ मेरे खेती नाउँ मेरे बारी ॥ भगति करो जन शरण तुम्हारी॥ नाउँ मेरे माया नाउँ मेरे पूंजी ॥ तुमहिं छोड जानो नहि दूजी ॥ नाउँ मेरे बांधव नाउँ मेरे भाई ॥ नाउँ मेरे सग अंत होय सखाई॥ माया में जिस रखे उदास ॥ कह कबीर हो ताको दास ॥ २११ ॥

नांगे आवन नांगे जाना ॥ कोय न रहि है राजा राना ॥ राम राजा नौनिधि मेरे ॥ सपे हेत कलत धन तेरे ॥ आवत सग नजात सॅगाती ॥ कहा भयो दर बांधे हाथी ॥ लंका गढ सो सोनेका भया ॥ मूरख रावण क्या ले गया ॥ कह कबीर कछु गुण वीचार ॥ चले जुआरी दोय हथझार ॥ २१२ ॥

गगा के सग सरिता बिगरी ॥ सो सरिता गंगा होय निबरी॥ बिगर्‍यो कबीरा राम दुहाई ॥ साँच भयो अनकतहिं न जाई ॥ चन्दनके सॅग तरुवर बिगर्‍यो ॥ सो तरुवर चदन होय निबर्‍यो॥ पारसके सॅग तावा बिगर्‍यो ॥ सो तांवा कचन होय निबर्‍यो ॥ सन्तन सग कबीरा बिगर्‍यो ॥ कबीर रामहि होयनिबर्‍यो२१३॥

माथे तिलक हथ माला बाना ॥ लोगन राम खिलौना जाना ॥ जो हो बौरा तो राम तोरा ॥ लोग मर्म कहि जाने मोरा ॥ तोरो न पाति पूजो न देवा ॥ राम भगति बिन निहफल सेवा ॥ सतगुरु पूजो सदा सदा मनावो ॥ ऐसी सेव दरगहिं सुख पावो ॥ लोग कहैं कबीर-बौराना ॥ कबीर का मर्म राम पहिचाना ॥ २१४॥

निरधन आदर कोई न देय ॥ लाख यतन करै ओह चित न धरेय ॥ जो निरधन सरधन के जाय ॥ आगे बैठा पीठ फिराय॥ जो सरधन निरधन के जाय ॥ दीया आदर लिया बुलाय ॥ निरधन सरधन दोनो भाई ॥ प्रभुकी कला न मेटी जाई ॥ कह कबीर निरधनहै सोई ॥ जाके हिरदय नाम न होई ॥ २१५ ॥

गुरु सेवा ते भगति कमाई॥तव इह मानस देही पाई॥इस देही को सिमरे देव॥सो देही भज हरि की सेव॥भजहु गोविंद भूल मत जाहु॥ मानुस जन्म का एही लाहु ॥ जब लग जरा रोग नहि आया ॥ तब लग कालग्रसी नाहि काया ॥ जब लग विकल भई नहिं बानी॥ भजले रे मन सारँगपानी ॥ अबना भजहि भजहि कब भाई ॥ आवै अंत न भज्या जाई ॥ जो कछु करहि सोई अब सार ॥ फिर पछताहु न पावहु पार ॥ सो सेवक जो लायो सेव ॥ तिनही पाये निरजन देव ॥ गुरु मिल ताके खुले कपाट ॥ वहुरि न आवै जोनी बाट ॥ इही तेरा औसर इह तेरी बार ॥ घट भीतर तू देख विचार ॥ कहत कबीर जीत कै हार ॥ बहु विध कह्यो पुकार पुकार ॥ २१६ ॥

सभ कोइ चलन कहत वहां ॥ न जानो बैकुंठ है कहां ॥ आप आपका मर्म न जाना ॥ बात नही बैकुंठ वखाना ॥ जब लग मन बैकुंठ की आस ॥ तब लग नाही चरण निवास ॥ खाई कोट न परल पगारा ॥ न जानो बैकुठ दुआरा ॥ कह कबीर अब कहिये काहि ॥ साधु संगत वैकुठहि आहि ॥ २१७ ॥

क्यो लीजे गढ़बंका भाई ॥ दोवर कोट अरु तेवर खाई ॥ पांच पचीस मोह मदमत्सर आडी परवल माया ॥ जन गरीब को जोर न पहुँचे कहा करो रघुराया ॥ काम किवाँरी दुख-सुख दरवानी पाप पुण्य दरवाजा ॥ क्रोध प्रधान महावड द्वन्द

तहिं मना मवासी राजा ॥ स्वाद सनाह टोप ममताको कुबुद्धि कमान चढाई ॥ तृष्णा तीर रहे घट भीतर यो गढ लियो न जाई ॥ प्रेम पलीता सुरत हवाई गोला ज्ञान चलाया ॥ ब्रह्म अग्नि सहजे परजाली एकहि चोट सिझाया ॥ सत संतोप ले लरने लगा तोरे दोय दरवाजा ॥ साधु संगत अरु गुरुकी किरपा ते पकरचो गढ को राजा॥ भगवत भीरि शक्ति सिमरनकी कटी काल भय फाँसी ॥ दास कबीर चढचो गढ ऊपर राज लियो अविनासी ॥ २१८ ॥

गंग गुसाईंन गहर गभीर ॥ जंजीर बाँध कर खरे कबीर ॥ मन न डिगे तन काहेको डराय ॥ चरण कमल चित रह्यो समाय ॥ गङ्गाकी लहर मेरी टुटी जजीर ॥ मृगछाला पर बैठ कबीर ॥ कह कबीर कोउ सङ्ग न साथ ॥ जल थल राखतहैं रघुनाथ ॥ २१९ ॥

कोटि सूर जाके परकास ॥ कोटि महादेव अरुक विलास ॥ दुरगा कोटि जाके मर्दन करे ॥ ब्रह्मा कोटि वेद उचरे ॥ जो जांचो तो केवल राम ॥ आन देव सो नाही काम ॥ कोटि चन्द्रमें करहि चराक ॥ सुर तैतिसो जेवहि पाक ॥ नव ग्रह कोटि ठाढे दर्बार ॥ धर्म कोटि जाके प्रतिहार ॥ पवन कोटि चौबारे फिरहि ॥ बासुकि कोटि सेज बिस्तरहि ॥ समुद्र कोटि जाके पनिहार रोमावलि कोटि अठारहि भार ॥ कोटि कुबेर भरहि भण्डार ॥ कोटिक लक्ष्मी करहि शृंगार ॥ कोटिक पाप पुण्य बहु हरहि ॥ इन्द्र कोटि जाके सेवा करहिं ॥ छपन कोटि जाके प्रतिहार ॥ नगरी नगरी खियत अपार ॥ लट छूटी वरते विकराल ॥ कोटि कला खेलै गोपाल ॥ कोटि यक्ष जाके दर्बार ॥ गधर्व कोटि करहि जैकार ॥ विद्या कोटि सभी गुण कहै ॥ तऊ पारब्रह्म का

अंत न लहै ॥ बावन कोटि जाके रोमावली ॥ रावणसेना जहि
ते छली ॥ सहसकोटि बहु कहत पुरान ॥ दुर्योधनका मथ्या
मान ॥ कंदर्प कोटि जाके लवै न धरहि ॥ अन्तर अन्तर मनसा
हरहिं ॥ कह कबीरसुन सारंग पान ॥ देह अभय पद मांगो दान२२०

रे जिहूबा करो शतखंड ॥ नाम न उचरस श्रीगोविंद ॥
रंगीली जिहूबा हरि के नायँ ॥ सुरग रंगीले हरि हरि ध्याय ॥
मिथ्या जिहूबा अवरे काम ॥ निर्वाण पद इक हरि का नाम ॥
असख्य कोटि अन पूजा करी ॥ एक न पूजस नामहि हरी ॥
प्रणवै नामदेउ इह कारण ॥ अनंत रूप तेरे नारायण २२१ ॥

परधन परदारा पर हरी ॥ ताके निकट बसहि नरहरी ॥ जो न
भजंते नारायना॥ तिनका मै न करो दर्शना ॥ जिनके भीतर
है अन्तरा ॥ जैसे पशु तैसे वह नरा ॥ प्रणमत नामदेउ ना कहि
विना ॥ ना सोहै बत्ती सुलक्षना ॥ २२२ ॥

दूध कटोरी गडवे पानी ॥ कपिल गाय नामे दुह आनी ॥
दूध पियो गोविन्दराय ॥ दूध पियो मेरो मन पतिआय ॥ नाहीं
तो घरको बाप रिसाय ॥ सोरन कटोरी अमृत भरी ॥ लै नाम
हरि आगे धरी ॥ एक भगत मेरे हिरदे बसे ॥ नामे देख नारायण
हँसे ॥ दूध प्याय भगत घर गया ॥ नामे हरि का दर्शन भया २२३

मै बहुरी मेरा राम भ्रतार ॥ रचरच ताको करो शृंगार ॥ भले
निंदो भले निंदो भले निंदो लोग ॥ तन मन राम प्यारे योग ॥
वाद विवाद काहू सो न कीजै ॥ रसना राम रसायन पीजै ॥
अब जिय जान ऐसी बन आई ॥ मिलों गुपाल निशान बजाई ॥
अस्तुति निंदा कर नर कोई ॥ नामे श्रीरंग भेटल सोई ॥ २२४॥

कबहूँ खीर खांड घिउ न भावै ॥ कबहूँ घर घर टूक मँगावै ॥
कबहूँ कूरन चने विनावै ॥ ज्यो राम राखै त्यो रहिये रे भाई ॥

हरि की महिमा कछु कथन न जाई ॥ कबहूँ तुरे तुरंग नचावे ॥ कबहूँ पांय पनही हूँ न पावे ॥ कबहूँ खाट सुपेदी सुहावे ॥ कबहूँ भूमिपे आर न पावे ॥ भनत नामदेव इक नाम निस्तारे ॥ जिहिं गुर मिले तिहि पार उतारे ॥ २२५ ॥

हँसत खेलत तेरे देहुरे आया ॥ भगति करत नामा पकरे उठाया ॥ हीनडी ज्ञाति मेरे यादव राया ॥ छीपे के जन्म काहे-को आया ॥ ले कमली चल्यो पलटाय ॥ देहुरे पाछे वैठा जाय ॥ ज्यो ज्यो नामा हरि-गुण उचरे ॥ भगत जनां को देहुरा फिरे २२६

घर की नारि त्यागै अंधा ॥ पर नारी सो घाले धंधा ॥ जैसे सिंबल देख सुआ बिगसाना ॥ अंत की बार मूआ लपटाना ॥ पापीका घर अग्नी माहि ॥ जलत रहै मिटवे कब नाहिं ॥ हरिकी भगति न देखे जाय ॥ मारग छोड अमारग पाय ॥ मूलहु भूला आवै जाय ॥ अमृत डार लाद विष खाय ॥ ज्यो वेश्याके पडे अखारा ॥ कापर पहर करें शृंगारा ॥ पूरे ताल निहाले सास ॥ वाके गले यमका है फास ॥ जाके मस्तक लिख्यो कर्मा ॥ सो भज परहै गुरुकी शर्णा ॥ कहत नाम-देउ इह बीचार ॥ इन विधि सतहु उतरो पार ॥ २२७ ॥

संडामरका जाय पुकारे ॥ पढै नही हमही पचहारे ॥ राम कहै करताल बजावै ॥ चटिया सभी बिगारे ॥ राम नाम जपवो करे ॥ हिरदय हरिजीको सिमरन धरे ॥ वसुधा वश कीनी सभ-राज विनती करे पटरानी ॥ पत प्रहलाद कह्यो नाह माने तिनतो औरहि ठानी ॥ दुष्ट सभा मिलि मंत्र उपाया करसहि औध घनेरी ॥ गिरि तर ज्वाला भय रख्यो राजा राम माया फेरी ॥ काढ खडग काल भय कोप्यो मोहिं बताए जो तोहि राखे ॥ पीतांबर त्रिभुवन धनी थंभ माहि हरि भाखे ॥ हरनाकुश जिन

नखहि विदारचो सुर नर किये सनाथा ॥ कह नामदेउ हम नर-हरि ध्यावहिं राम अभय पददाता ॥ २२८ ॥

सुलतान पूँछे सुन बे नामा ॥ देखों राम तुम्हारे कामा॥नामा सुलताने बांधला ॥ देखो तेरा हरि बीठुला ॥ बिसमल गऊ देहु जिवाय ॥ नातर गरदन मारों ठांय ॥ बादशाह ऐसी क्यो होय ॥ बिसमल किया न जीवे कोय ॥ मेरा कीया कछू न होय ॥ करिहै राम होयहै सोय ॥ बादशाह चढचो अहंकार ॥ गज हस्ती दीनो चमकार ॥ रुदन करै नामे की माय ॥ छोड राम क्यो न भजहि खुदाय ॥ ना हौ तेरा पूंगडा ना तूं मेरी माय ॥ पिंड पडे तो हरिगुण गाय॥करे गजिंद शुंड की चोट ॥ नामा उबरै हरिकी ओट ॥ काजी मुल्ला करहि सलाम ॥ इन हिंदू मेरा मल्या मान ॥ बादशाह बीनती सुनेह ॥ नामेसरभर सोना लेह ॥ माल लेउँ तो दोजक परो ॥ दीन छोड दुनियाको भरो ॥ पावो बेडी हाथों ताल॥ नामा गावे गुण गोपाल ॥ गंग यमुन जो उलटी बहै ॥ तो नामा हरि करता रहै ॥ सात घडी जब बीती सुनी ॥ अज हूं न आयो त्रिभुवन धनी ॥ पाखतन वाज बजायला ॥ गरुड चढे गोविंद आयला ॥अपने भगत पर की प्रतिपाल ॥ गरुड चढे आये गोपाल॥ कहहि तो धरनि इकौडी करों ॥ कहहिं तो लेकर ऊपर धरो ॥ कहहि तो मूई गऊ देहुं जिवाय ॥ सब कोई देखै पति याय ॥ नामा भणवै सैलम सेल ॥ गऊ दुहाई बछरा मेल॥ दूधहि जब मटुकी भरी ॥ ले बादशाह के आगे धरी ॥ बादशाह महलमे जाय ॥ औघटकी घट लागी आय ॥ काजी मुल्लॉ विनती फर-माय ॥ बखशी हिंदू मै तेरी गाय ॥ नामा कहे सुनो बादशाह॥इह कछु पतीया मुझे दिखाय ॥ इस पतीयेका इहै प्रमान ॥सॉच सील चालहु सुलतान ॥ नामदेव सब रह्या समाय ॥ मिल हिंदू सभ

तामे पहि जाहि॥जो अबकी वार न जीवे गाय॥ तो नामदेवका पतीया जाय ॥ नामे की कीरति रही ससार ॥ भगत जनां लै उधरया पार ॥ सकल कलेश निदक भ्या खेद ॥ नामे नारायण नही भेद ॥ २२९ ॥

जो गुरुदेव तो मिले मुरार ॥ जो गुरुदेव तो उतरै पार ॥ जो गुरुदेव तो वैकुण्ठ तरै ॥ जो गुरुदेव तो जीवत मरे ॥ सत्य सत्य सत्य सत्य सत्य गुरुदेव ॥झूठ झूठ झूठ झूठ आन सभ सेव ॥ जो गुरुदेव तो नाम दृढावे ॥ जो गुरुदेव न दह दिस धावे गुरुदेव पंच ते दूर ॥ जो गुरुदेव न मरवो झूर ॥ जो गुरुदेव तो अमृत बानी॥जो गुरुदेव तो अकथ कहानी॥जो गुरुदेव तो अमृत देह ॥ जो गुरुदेव नाम जप लेह ॥ जो गुरुदेव भवन त्रय सूझे ॥ जो गुरुदेव ऊँच पद बूझे ॥ जो गुरुदेव तो सीस अकास ॥ जो गुरुदेव सदा सावास ॥ जो गुरुदेव सदा बैरागी ॥ जो गुरुदेव परनिंदा त्यागी ॥ जो गुरुदेव बुरा भला एक ॥ जो गुरुदेव ललाटहि लेख ॥ जो गुरुदेव कंध नहि हिरै ॥ जो गुरुदेव देहुरा फिरै ॥ जो गुरुदेव तो छांपर छाई ॥ जो गुरुदेव सहस निकसाई ॥ जो गुरुदेव तो अड़सठ न्हाया ॥ जो गुरुदेव तन चक्र लगाया ॥ जो गुरुदेव तो द्वादश सेवा ॥ जो गुरुदेव सभी विष मेवा ॥ जो गुरुदेव तो संशा टूटै ॥ जो गुरुदेव तो यमते छूटै ॥ जो गुरुदेव तो भौजल तरै ॥ जो गुरुदेव तो जन्म न मरै ॥जो गुरुदेव अठदश ब्योहार ॥ जो गुरुदेव अठारहि भार ॥ बिन गुरुदेव अवर नहि जाई ॥ नामदेव गुरुकी शरणाई ॥ २३० ॥

आउ कलदर केशवा ॥ कर अवदाली भेशवा ॥ जिन आकाश कुलहि शिर कीनी कोशै सप्त पियाला ॥ चमर पोसका मंदिर तेरा इह विधि बने गुपाला ॥ छपनकोट का पेहन तेरा सोलहे

सहस हजारा ॥ भार अठारह मुदगर तेरा सहनक सभ संसारा॥ देही महजिद मन मौलाना सहज निमाज गुजारै॥ बीबीकौला सौका इन तेरा निरंकार आकारै॥ भगति करत मेरे ताल छिनाये किहि पै करों पुकारा॥ नामे का स्वामी अंतरयामी फिरे सकल वेदेसारा॥ २३१॥

राग वसन्त हिंडोल।

शालग्राम बिप पूज मनावो सुकृत तुलसी माला॥ राम नाम जप बेडा बांधो दया करो दयाला॥ काहे कलरा सिंचो जन्म गवांवो॥ काची ढहग दिवाल काहे गच लावो॥कर हरिहट माल टिड परावो॥ तिस भीतर मन जोवो अमृत सिचो भरो क्यारे तौ मालीके होवो॥ काम क्रोध दोय करो बसोले गोडो॥ धरती भाई ज्यो गोडौ त्यो तुम सुख पावो किर्त न मेट्यो जाई॥ बगुले ते पुनि हँसुला होवे जे तू करहि दयाला॥ प्रणमत नानक दास न दासा दया करो दयाला॥ २३२॥

साधो इह तन मिथ्या जानो॥ या भीतर जो राम बसत है सांचो ताहि पछानो॥ इह जग है संपति सुपने की देख कहा ऐडानो॥ संग तिहारे कछू न चाले ताहि कहा लपटानो॥ अस्तुति निंदा दोऊ परिहरि हरि कीरति उर आनो॥ जन नानक सभही मे पूरन एक पुरुष भगवानो॥ २३३॥

राग वसन्त।

पापी हीये मे काम बसाय॥ मन चंचल याते रह्यो न जाय॥ योगी जंगम अरु सन्यास॥ सभही पर डारी इह फाँस॥ जिहि जिहिं हरि का नाम सम्हारा॥ ते भवसागर उतरे पारा॥ जन नानक हरि की शरनाय॥ दीजे नाम रहे गुण गाय॥ २३४॥

माई मै धन पायो हरि नाम ॥ मन मेरो धावन ते छूट्यो कर बेठो विश्राम ॥ माया ममता तनते भागी उपज्यो निर्मल ज्ञान॥ लोभ मोह यह परस न साकै गही भगति भगवान ॥ जन्म जन्म का सशय चूका रत्न नाम जब पाया ॥ तृष्णा सकल विनाशी मनते निज सुख माहि समाया ॥ जाको होत दयाल कृपानिधि सो गोविन्द गुणगावे ॥ कह नानक यह विधिकी सपै कोऊ गुरु-मुख पावे ॥ २३५ ॥

मन कहा विसार्‌यो राम नाम ॥ तन विनसै यम सो परे काम॥ इह जग धूएँका पहार ॥ तैं सांचा मान्यो किहि-विचार ॥ धन दारा सपति और गेह ॥ कछु सग न चालै समझ लेह ॥ इकभगति नारायण होय सग ॥ कह नानक भज तिहि एक रंग ॥ २३६ ॥

कह भूल्यो रे झूठे लोभ लाग ॥ कछु विगर्‌यो नाहिंन अजहुँ जाग ॥ सम सुपने के इह जग जान ॥ विनसै छिनमें साँची मान॥ संग तेरे हरि वसत नीत ॥निशिवासर भज ताहि मीत ॥ वार अंत की होय सहाय ॥ कह नानक गुण ताके गाय ॥ २३७ ॥

सुन-साखी मन जप प्यार ॥ अजामल्ह उधर्‌या कह एक वार॥ वालमीकहि होया साधु सग ॥ ध्रुव को मिल्यो हरि निशक ॥ तेर्‌यां सता जाचो चरण रेन ॥ ले मस्तक लावो कर कृपा देन॥ गणिका उधरी हरि कहे तोत ॥गजेद्र ध्यायो हरि कियो मोक्ष॥ विप्र सुदामे दारिद भज॥ रे मन तूभी भज गोविंद ॥ वधिक उधार्‌यो खम प्रहार ॥ कुवजा उधरी अगुष्ट धार ॥ विदुर उधार्‌यो दासत भाय ॥ रे मन तू भी हरि ध्याय ॥ प्रहलाद रखी हरि पैज आप ॥ वस्त्र छीनत द्रोपदी रखी लाज ॥ जिन जिन सेवया अत वार ॥ रे मन सेव तू परहिं पार ॥धन्ने सेवया बाल वुद्धि ॥ त्रिलोचन गुरु मिल भईसिद्धि ॥ वेणी को गुरु कियो

सहस हजारा ॥ भार अठारइ मुदगर तेरा सहनक सभ संसारा॥ देही महजिद मन मौलाना सहज निमाज गुजारै ॥ बीबीकौला सौका इन तेरा निरकार आकारै॥ भगति करत मेरे ताल छिनाये किहि पै करो पुकारा ॥ नामे का स्वामी अंतरयामी फिरे सकल बेदेसारा ॥ २३१ ॥

राग वसन्त हिंडोल।

शालग्राम विप्र पूज मनावो सुकृत तुलसी माला ॥ राम नाम जप बेडा बांधो दया करो दयाला ॥ काहे कलरा सिचो जन्म गवॉवो॥ काची ढहग दिवाल काहे गच लावो॥कर हरिहट माल टिड परावो ॥ तिस भीतर मन जोवो अमृत सिचो भरो क्यारे तौ मालीके होवो ॥ काम क्रोध दोय करो वसोले गोडो ॥ धरती भाई ज्यो गोडो त्यों तुम सुख पावो किर्त न भेटचो जाई॥ बगुले ते पुनि हँसुला होवे जे तू करहि दयाला ॥ प्रणमत नानक दास न दासा दया करो दयाला ॥ २३२ ॥

साधो इह तन मिथ्या जानो ॥ या भीतर जो राम बसत है सांचो ताहि पछानो ॥ इह जग है संपति सुपनेकी देख कहा ऐडानो ॥ संग तिहारे कछू न चाले ताहि कहा लपटानो ॥ अस्तुति निंदा दोऊ परिहारि हारि कीरति उर आनो ॥ जन नानक सभही में पूरन एक पुरुष भगवानो ॥ २३३ ॥

राग वसन्त।

पापी हीये में काम बसाय ॥ मन चचल याते रह्यो न जाय ॥ योगी जंगम अरु सन्यास ॥ सभही पर डारी इह फॉस ॥ जिहि जिहिं हरि को नाम सम्हारा ॥ ते भवसागर उतरे पारा ॥ जन नानक हरि की शरनाय ॥ दीजै नाम रहै गुण गाय ॥ २२४ ॥

माई मे धन पायो हरि नाम ॥ मन मेरो धावन ते छूट्यो कर बैठो विश्राम ॥ माया ममता तनते भागी उपज्यो निर्मल ज्ञान॥ लोभ मोह यह परस न ताके गही भगति भगवान ॥ जन्म जन्म का संशय चूका रत्न नाम जब पाया ॥ तृष्णा सकल विनाशी मनते निज सुख माहि समाया ॥ जाको होत दयाल कृपानिधि सो गोविन्द गुणगावै ॥ कह नानक यह विधिकी सपै कोऊ गुरु-मुख पावै ॥ २३५ ॥

मन कहा बिसार्‌यो राम नाम ॥ तन विनसै यम सो परै काम॥ इह जग धूएँका पहार ॥ ते सांचा मान्यो किहिं विचार ॥ धन दारा सपति और गेह ॥ कछु सग न चालै समझ लेह ॥ इकभगति नारायण होय सग ॥ कह नानक भज तिहिं एक रंग ॥ २३६ ॥

कह भूल्यो रे झूठे लोभ लाग ॥ कछु विगर्‌यो नाहिन अजहुँ जाग ॥ सम सुपने के इह जग जान ॥ विनसै छिनमें सॉची मान॥ सग तेरे हरि वसत नीत ॥निशिवासर भज ताहि मीत ॥ वार अत की होय सहाय ॥ कह नानक गुण ताके गाय ॥ २३७ ॥

सुन साखी मन जप प्यार ॥ अजामल्ह उधर्‌या कह एक वार॥ वालमीकहिं होया साधु सग ॥ ध्रुव को मिल्यो हरि निशक ॥ तेर्‌यां सता जाचौं चरण रेन ॥ लै मस्तक लावौ कर कृपा देन॥ गणिका उधरी हरि कहे तोत ॥गजेद्र ध्यायो हरि कियो मोक्ष॥ विप्र सुदामे दारिद भज॥ रे मन तूभी भज गोविद ॥ वधिक उधार्‌यो खम प्रहार ॥ कुवजा उधरी अगुष्ट धार ॥ विदुर उधार्‌यो दासत भाय ॥ रे मन तू भी हरि ध्याय ॥ प्रहलाद रखी हरि पैज आप ॥ वस्त्र छीनत द्रोपदी रखी लाज ॥ जिन जिन सेवया अत वार ॥ रे मन सेव तू परहिं पार ॥धन्ने सेवया बाल बुद्धि ॥ त्रिलोचन गुरु मिल भईसिद्धि ॥ वेणी को गुरु कियो

प्रकास ॥ रे मन तूभी होहिं दास ॥ जेदेव त्याग्यो अहमेव ॥ नाई उधरयो सैन सेव ॥ मन डिगे न डोलै कहूँ जाय ॥ मन तूभी तरसहि शरण पाय ॥ जिहि अनुग्रह ठाकुर कियो आप॥ सो ते लीने भगत राख ॥ तिनका गुण अवगुण न विचारयो कोय ॥ इह विध देख मन लगा सेय ॥ कबीर ध्यायो एक रंग ॥ नामदेव हरिजी वससि संग ॥ रामदास न्याये प्रभु अनूप ॥ गुरुनानकदेव गोविन्द रूप ॥ २३८ ॥

पडित जन माते पढ पुरान ॥ योगी माते योग ध्यान ॥ संन्यासी माते अहमेव ॥ तपसी माते तपके भेव ॥ सभ मदमाते कोऊ न जाग ॥ संग ही चोर घर भुसन लाग ॥ जागे शुकदेव अरु अक्रूर ॥ हनुमंत जागे धर लंगूर ॥ शंकर जागे चरण सेव॥ कलि जागे नामा जैदेव ॥ जागत सोवत बहु प्रकार ॥ गुरुमुख जागे सोई सार ॥ इस देही के अधिक काम ॥ कह कबीर भज राम नाम ॥ २३९ ॥

इस तन मध्ये मदन चोर ॥ जिन ज्ञान रत्न हरि लीन मोर ॥ मे अनाथ प्रभु कहो काहि ॥ को को न बिगूतो मे को आहि ॥ माधो दारुन दुख सह्यो न जाय ॥ मेरी चपल बुद्धि सो कहा बसाय ॥ सनक सनंदन शिव शुकादि ॥ नाभि कमल जाने ब्रह्मादि ॥ कवि जन योगी जटा धार ॥ सभ आपन औसर चले सार ॥ तूं अथाह मोहे थाह नाहि॥प्रभु दीनानाथ दुख कहों काहि ॥ मेरो जन्म मरण दुख आप धीर ॥ सुखसागर गुण रम कबीर ॥ २४० ॥

कहत जाइये रे घर लागो रंग ॥ मेरा चित न चलै मन भयो पंग ॥ एक दिवस मन भई उमंग ॥ घस चन्दन चोवा बहुसुगन्ध ॥ पूजन चाली ब्रह्म ठाय ॥ सो ब्रह्म बतायो गुरु मनहि

माहि ॥ जहाँ जाइये तहि जल पखान ॥ तूं पूर रह्यो है सभ समान ॥ वेद पुराण सब देखे जोय ॥ ऊहाँ तौ जाइये जो ईहाँ न होय ॥ सतगुरु मैं बलिहारी तोर ॥ जिन सकल विकल भ्रम काटे मोर ॥ रामानन्द स्वामी रमत ब्रह्म ॥ गुरु का शब्द काटै कोटि कर्म ॥ २४१ ॥

तुझहि सुझन्ता कछु नाहि ॥ पहिरावा देखे ऊभ जाहि ॥ गर्ववती का नाही ठाऊँ ॥ तेरी गर्दन ऊपर लवे काउँ ॥ तू काहि गर्वहि बावली ॥ जैसे भादो खूबरा जो तूं तिससे खरी उतावली॥ जैसे कुरंग नही पायो भेद ॥ उन सुगन्ध ढूँढ प्रदेश ॥ अप तन का जो करे विचार ॥ तिस नहि यम किङ्कर करे खुआर ॥ पुत्र कलत्र का करहि अहकार ॥ ठाकुर लेखा मगन हार ॥ फेडे का दुख सहे जीउ ॥ पाछे किसहि पुकारहिं पीउ पीउ ॥ साधूकी जो लेहि ओट ॥ तेरे मिटहिं पाप सभ कोट कोट ॥ कह रामदास जो जपहि नाम ॥ तिस जाति न जन्म न योनि काम॥ २४२ ॥

सुरहि की जैसी तेरी चाल ॥ तेरी पूँछट ऊपर झमक वाल॥ इस घर में है सो तू ढूँढ खाहि ॥ और किसही के तू मतिही जाहि ॥ चाकी चाटहि चून खाहि ॥ चाकीका चीथरा कहां ले जाहि ॥ छीकेपर तेरी बहुत डीठ॥ मत लकरी सोटा तेरी परै पीठ ॥ कह कबीर भोग भले कीन ॥ मति कोऊ मारे ईट. डीम ॥ २४३ ॥

राग सारग।

जप मन राम नाम पढ सार ॥ राम नाम बिन थिर नहि कोई और निष्फल सब निस्तार॥ क्या लीजै क्या तजिये बौरे जो दीसे सो छार ॥ जिन विषय को तुम अपने कर जानो सो छोड जाहु शिर भार॥ तिल तिल पल पल औधि पुनि घाटे बूझ न

कहा नर अपनो जन्म गँवावे ॥ माया मद विषया रस राच्यो राम शरण नहि आवे ॥ इह ससार सकल है सुपनो देख कहा लोभावे ॥ जो उपजे सो सकल विनाशे रहन न कोऊ पावै ॥ मिथ्या तन सांचो कर मान्यो इह विधि आप बँधावे ॥ जन नानक सोऊ जग मुक्ता राम भजन चित लावे ॥ २४९ ॥

मन कर कबहुँ हरिगुण गायो ॥ विषयासक्त रह्यो निशि-बासर कीनो अपनो भायो ॥ गुरु उपदेश सुन्यो नही कानन पर-दारा लपटायो ॥ परनिंदा कारन बहुधावत आगम नहि समझा-यो ॥ कहा कहो मैं अपनी करनी जिहिं विधि जन्म गवाँयो ॥ कह नानक सभ औगण मोमें राख लेहु शरनायो ॥ २५० ॥

कहा नर गरबस थोरी बात ॥ मन दश नाज टका चार गांठी ऐंडो टेढो जात ॥ बहुत प्रताप गाउँ सो पाये द्वे लख टका बरात॥ दिवस चार की करो साहिबी जैसे बन हर पात ॥ ना कोऊ ले आयो इह धन ना कोऊ ले जात ॥ रावण हूँ ते अधिक छत्रपति छिन में गये बिलात॥हरिके सन्त सदा थिर पूजा जो हरि नाम जपात ॥ जिनको कृपा करत है गोविंद ते सतसङ्ग मिलात ॥ मात पिता वनिता सुत सम्पति अंत न चलत सँगात ॥ कहत कबीर राम भज बौरे जन्म अकारथ जात ॥ २५१ ॥

काहे रे मन विषयाबन जाय ॥ भूलो रे ठग मूरी खाय ॥ जैसे मीन पानीमें रहै ॥ काल जाल की सुध नही लहै ॥ जिह्वा स्वादी लीलत लोह ॥ ऐसे कनक कामिनी बांध्यो मोह ॥ ज्यो मधु माखी सँचे अपार ॥ मधु लीनो मुख दीनो छार ॥ गऊ बाछ को सचै क्षीर ॥ गला बांध दुह लेय अहीर ॥ माया कारन श्रम अतिकरै ॥ सो माया ले गाडे धरै ॥ अति सचै समझै नहिं मूढ ॥ धन धरती तन है गयो धूड ॥ काम क्रोध तृष्णा अति जरे ॥ साधु संगत

सके गवॉर ॥ सो कछु करे जो साथ न चाले इह शाकत का आचार ॥ सत जनां के सङ्ग मिल बौरे तौ पावहिं मोक्ष द्वार ॥ बिन सतसग सुख किने न पाया जाय पूछहु वेद विचार ॥ राणा राउ सभी कोऊ चाले झूठ छोड जाय पासार ॥नानक संत सदा रिथर निश्चल जिन राम नाम आधार ॥ २४४ ॥

ठाकुर तुम शरणाई आया ॥ उतर गयो मेरे मनका संशा जब ते दर्शन पाया ॥ अन बोलत मेरी विर्था जानी अपना नाम जपाया ॥ दुख नाठे सुख सहज समाये अनद२ गुण गाया ॥ बाहँ पकर कढ लीने अपने गृह अध कूप ते माया ॥ कह नानक गुरु वन्धन काटे विछुरत आन मिलाया ॥ २४५ ॥

गोविन्दजी तूं मेरे प्राण अधार ॥ साजन मीत सहाई तुमही तू मेरो परिवार ॥ कर मस्तक धारचो मेरे माथे साधु संग गुण गाये ॥ तुमरी कृपा ते सभ फल पाये रसिक राम नाम ध्याये ॥ अविचल नींव धराई सतगुरु कबहूँ डोलत नाही ॥ गुरु नानक जब भये दयाला सर्व सुखांनिधि पाही ॥ २४६ ॥

हरि विन तेरो कौन सहाई ॥ काकी मात पिता सुत वनिता को काहूको भाई ॥ धन धरनी अरु सम्पति सगरी जो जो मान्यो अपनाई॥ तन छूटे कछु सग न चाले कहा ताहि लपटाई ॥ दीन दयाल सदा दुखभजन तासो रुचि न बढाई ॥ नानक कहत जगत सम मिथ्या ज्यो सुपना रैनाई ॥ २४७ ॥

कहा मन विपयनसो लपटाई ॥ या जग में कोउ रहन न पावै इक आवै इक जाई ॥ काको तन धन सपति काकी कासो नेह लगाई ॥ जोदीसे सो सकल विनाशै ज्यों वादर की छाई ॥ तज अभिमान शरण संतन गहु मुक्त होइ छिन माही ॥ जन नानक भगवंत भजन विन सुख सुपने भी नाही ॥ २४८ ॥

कहा नर अपनो जन्म गँवावै ॥ माया मद विपया रस राच्यो राम शरण नहि आवै ॥ इह संसार सकल है सुपनो देख कहा लोभावै ॥ जो उपजे सो सकल विनाशे रहन न कोऊ पावै ॥ मिथ्या तन सांचो कर मान्यो इह विधि आप बँधावै ॥ जन नानक सोऊ जग-मुक्ता राम भजन चित लावै ॥ २४९ ॥

मन कर कबहुँ हरिगुण गायो ॥ विपयासक्त रह्यो निशि-वासर कीनो अपनो भायो ॥ गुरु उपदेश सुन्यो नही कानन पर-दारा लपटायो ॥ परनिंदा कारन बहुधावत आगम नहिं समझा-यो ॥ कहा कहो मैं अपनी करनी जिहिं विधि जन्म गवाँयो ॥ कह नानक सभ औगण मोमें राख लेहु शरनायो ॥ २५० ॥

कहा नर गरबस थोरी बात ॥ मन दश नाज टका चार गांठी ऐंडो टेढो जात ॥ बहुत प्रताप गाउँ सो पाये द्वै लख टका बरात॥ दिवस चार की करो साहिबी जैसे वन हर पात ॥ ना कोऊ ले आयो इह धन ना कोऊ लै जात ॥ रावण हूँ ते अधिक छत्रपति छिन में गये बिलात॥हरिके सन्त सदा थिर पूजा जो हरि नाम जपात ॥ जिनको कृपा करत हैं गोविंद ते सतसङ्ग मिलात ॥ मात पिता वनिता सुत सम्पति अत न चलत सँगात ॥ कहत कबीर राम भज बौरे जन्म अकारथ जात ॥ २५१ ॥

काहे रे मन विपयावन जाय ॥ भूलो रे ठग मूरी खाय ॥ जैसे मीन पानीमें रहै ॥ काल जाल की सुध नही लहै ॥ जिह्वा स्वादी लीलत लोह ॥ ऐसे कनक कामिनी बांध्यो मोह ॥ ज्यो मधु माखी सँचै अपार ॥ मधु लीनो मुख दीनो छार ॥ गऊ बाछ को संचै क्षीर ॥ गला बांध दुह लेय अहीर ॥ माया कारन श्रम अतिकरै ॥ सो माया ले गाडे धरै ॥ अति सचै समझै नहि मूढ़ ॥ धन धरती तन ह्वै गयो धूड ॥ काम क्रोध तृष्णा अति जरै ॥ साधु सगत

कबहूँ नहिं करै ॥ कहत नामदेउ ताचीआन ॥ निरभय ह्वै भजिये भगवान ॥ २५२ ॥

बदो क्यो ना होड माधो मोसो ॥ ठाकुर ते जन जन ते ठाकुर खेल परचोहै तोसो ॥ आपन देव देहरा आपन आप लगावे पूजा ॥ जल ते तरंग तरंग ते है जल कहन सुनन को दूजा ॥ आपहि गावै आपहि नाचै आप बजावै तूरा ॥ कहत नामदेउ तू मेरो ठाकुर जन ऊरा तू पूरा ॥ २५३ ॥

तै नर क्या पुराण सुन कीना ॥ अनपायनी भगति नहिं उपजी भूखे दान न दीना ॥ काम न बिसरचो क्रोध न बिसरचो लोभ न छूटचो देवा ॥ परनिंदा मुखते नहिं छूटी निफल भई सभ सेवा ॥ बाट पार घर मूस बिरानो पेट भरै अपराधी ॥ जिहि पर लोक जाय अपकीरत सोई अविद्या साधी ॥ हिंसा तो मन ते नहिं छूटी जीय दया नहि पाली ॥ परमानंद साधु संगत मिल कथा पुनीत न चाली ॥ २५४ ॥

हरि बिन कौन सहाई मनका ॥ मात पिता भाई सुत बनित-हित लागो सभ फनका ॥ आगेको कछु तुलहा बांधो क्या भर वासा धनका ॥ कहा बिसासा इस भांडे का इतनक लागै ठनका ॥ सकल धर्म पुण्य फल पावो धूर बांछहु सभ जनका ॥ कहै कबीर सुनो रे सतहु इह मन उडन पखेरू वनका ॥ २५५ ॥

राग मलार ।

माई मोहिं प्रीतम देहु मिलाई ॥ सकल सहेली सुख भर सूती जिहि घर लाल बसाई ॥ मोहिं अवगुण प्रभु सदा दयाला मोहिं निर्गुण क्या चतुराई ॥ करों बराबर जो पिया संग राती इह मेरी ढीठाई ॥ भई निमाणी शरण इक ताकी श्रीसतगुरु पुरुष सुख

दाई ॥ ऐक निमिप में मेरा सभ दुख काट्या नानक सुख रैन विहाई ॥ २५६ ॥

मेरे प्रीतम प्राण पियारे ॥ प्रेमभक्ति अपनो नाम दीजे दयाल अनुग्रह धारे ॥ सुमरो चरण तिहारे प्रीतम हृदय तिहारी आसा॥ सत जनां पै करो वेनती मन दर्शनकी प्यासा ॥ विछुरत मरन जीवन हारि मिलते जन को दर्शन दीजै ॥ नाम अधार जीवत धन नानक प्रभु मेरे किरपा कीजै ॥ २५७॥

• हरिके भजन कौन कौन न तारे॥खग तन मीन तन मृग तन वराह तन साधू संग उधारे ॥ देव कुल दैत्य कुल यक्ष किन्नर नर सागर उतरे पारे॥जोजो भजन करे साधूसग ताके दुःख विदारे ॥ काम क्रोध महा विपया रस इनते भये निरारे ॥ दीनदयाल जपहि करुणामय नानक सद बलिहारे ॥ २५८ ॥

हे *गोविंद हे गोपाल हे दयाल लाल ॥ प्राणनाथ अनाथ सखे* दीन दरद निवार ॥ हे समर्थ अगम्यपूर्ण मोहि मया धार ॥ अध कूप महा ध्यान नानक पार उतार ॥ २५९ ॥

सेवील गोपाल राय अकुल निरजन ॥ भगति दान दीजै याचहि संतजन॥ याचहि धारि दिग दिसै सरायचा वैकुंठ भवन चित्रशाला सप्त लोक सामान पूरीयले ॥ याचहिं घर लक्ष्मी कुआरी॥ चद सूरज दीवडे कौतुक काल बपुडा कोतवाल सुकरासिरी ॥ सो ऐसा राजा श्रीनरहरी ॥ यांचै घर कुलाल ब्रह्मा चतुर्मुख डांवडा जिन विश्व संसार राचीले॥ जाके घर ईश्वर वावला जगत गुरु तत्त्व सारखा ज्ञान भापीले ॥ पाप पुण्य यॉचे डांगी द्वारें चित्रगुप्त लेखी या ॥ धर्मराय परली प्रतिहार ॥ सो ऐसा राजा श्रीगोपाल॥ यॉचै घर गण गधर्व ऋपि बपुरे ढाडीया गावन आछे॥ सर्व शास्त्र बहुरूपिया अनगहूआ आखाडा ॥ मड गो़ बोल

घर ठौर नठाई ॥ जिसनू भये गोविंद दयाला ॥ गुरु का वचन तिन बांध्यो पाला ॥ कोटि मध्ये कोई संत दिखाया ॥ नानक तिनके संग तराया ॥ जेहोवे भाग तौ दर्शन पाइये ॥ आप तरे सभ कुटुंब तराइये ॥ २६७ ॥

राग जैजैवंती।

राम भज राम भज जन्म सिरात है ॥ कहो कहा बार बार समझत नांहि क्यो गवॉर बिनशत नही लगे बार और सम गात है ॥ सकल भर्म डार देह गोविंदको नाम लेह अंत बार सग तेरे यही एक जात है ॥ विषया विष ज्यो विसार प्रभु को यश हिये धार नानक जन कह पुकार औसर विहात है ॥ २६८ ॥

रे मन कौन गति होयहे तेरी ॥ इह जगमें राम नाम सो तो नही सुन्यो कान विषयनसो अति लुभान मति नाहिन फेरी ॥ मानुस को जन्म लीन सिमरण नहि निमिष कीन दारासुखभयो दीन पगहुँ परी बेरी ॥ नानक जन कह पुकार सुपने ज्यो जग पसार सिमिरत नहि क्यो मुरार माया जाकी चेरी ॥ २६९ ॥

बीत जैहे बीत जैहै जन्म अकाज रे ॥ निशि दिन सुनके पुराण समझत नहि रे अजान काल तो पहुँच्यो आन कहां जेहे भाज रे ॥ अस्थिर जो मान्यो देह सो तो तेरी ह्वै है खेह क्यो ना हरि को नाम लेह मूरख निलाज रे ॥ राम भगति हिये आन छोडदे तू मनको मान नानक जन कह बखान जग मे विराज रे ॥ २७० ॥

वाहि गुरु वाहि गुरु वाहि गुरु वाहिजी ॥ कमलनयन मधुर बैन कोटि सैन संग शोभ कहत मा जसोध जिसहि दही भात खाहिजी ॥ देख रूप अति अनूप मोह महा मग्न भई किंकिणी

विषया परिहरे ॥ मनकी वासना मनते टरै ॥ इन्द्रीजित पच दोष ते रहित ॥ नानक कोटि मध्ये कोऊ ऐसा अपरस ॥ २९३ ॥

कई कोटि राजस तामस सात्विक ॥ कई कोटि वेद पुराण सिमृत अर सासत ॥ कई कोटि कीये रत्न सुमंद ॥ कई कोटि नाना प्रकार जंत ॥ कई कोटि कीये चिरजीवे ॥ कई कोटि गिर मेरु स्वर्ण थीवे ॥ कई कोटि यक्ष किन्नर पिशाच ॥ कई कोटि भूत प्रेत सूकर मृगाच ॥ सभते नेरे सभते दूर ॥ नानक आप अलिप्त रह्या भरपूर ॥ २९४ ॥

छिनमें नीच कीटको राज॥पारब्रह्म गरीब निवाज ॥ जांकी दृष्टि कछु न आवै ॥ तिस ततकाल दहि दिशि प्रगटावै ॥ जाको अपनी करै बखशीश ॥ ताका लेखा न गिने जगदीश ॥ जीव पिण्ड सभ तिसकी रास ॥ घट घट पूरण ब्रह्म प्रकाश ॥ अपनी वनिता आप बनाई ॥ नानक जीवे देख वडाई ॥ २९५ ॥

जिसके अन्तर राज अभिमान ॥ सो नर्क पाती होवत श्वान॥ जो जाने मैं यौवन वत ॥ सो होवत विष्टाका जत ॥ आपनको कर्मवत कहावै ॥ जन्म मरण बहु योनि भ्रमावै ॥ धन भूमिका जो करै गुमान ॥ सो मूरख अधा अज्ञान ॥ कर किरपा जिसके हिरदय गरीबी बसावै ॥ नानक इहां मुक्ति आगे सुख पावै ॥ २९६॥

धनवत होय कर गर्वावे ॥ तृण समान कछु सङ्ग न जावे ॥ वहु लशकर मानुस पर करै आश ॥ पल भीतर ताका होय विनाश ॥ सभते आप जाने बलवत ॥ छिनमें होय जाय भसमंत ॥ किसे न वदे आप अहकारी ॥ धर्मराय तिस करै खुआरी ॥ गुरुप्रसाद जाका मिटै अभिमान॥सो जन नानक दरगहि पर्मान ॥ २९७ ॥

नहिं कछु जन्मे नहि कछु मरै ॥ आपन चलित आपही करै ॥ आवन जावन दृष्ट अनदृष्ट ॥ आज्ञाकारी धारी सम-

रामदास पैरी पाइया ॥ अंते सतगुरु बोल्या मैं पिच्छे कीर्तन करो निर्वाण जी ॥ केशो गुपाल पण्डित सद्दो हर हर कथा पढैं पुराण जी ॥ हर कथा पढिये हर नाम सुनिये बेवान हर रंगगुरु भावये ॥ पिड पत्तल किरया दीवा फुल्ल हर सर पावये ॥ हर भाइया सतगुरु बोल्या हर मिल्या पुरुष सुजानजी ॥ रामदास सोढी तिलक दीया गुरु शब्द सच्च नीशानजी ॥ सतगुरु पुरुष यह बोल्या गुरु शिखां मन्न लई रजायजी ॥ मोहरी पुत्त सन्मुख होइया राम दासहिं पैरों पाय जी ॥ सभ पवै पैरी सत गुरुकेरी जित्थे गुरू आप रख्या ॥ कोई कर वखीली निभै नाही फिर सतगुरु आननिवाइया ॥ हर गुरुहिं भाना दई वडियाई धुर लिख्या लेख रजाय जी ॥ कहे सुन्दर सुनो सन्तो सभ जगत पैरी पाइया ॥ २१४ ॥

इति श्रीग्रंथसाहिबके पद सम्पूर्ण ।

राग कान्हरा ।

ल्यावो मैया मोहिं चंद खिलौना ॥ लाख योजन पर चन्द वसत है कैसे आवै लाला नंदजीके भौना ॥ जलका थार भर लाई नंदरानी लीजो श्याम तुम चंद खिलौना जल में हाथ डारे नंद नंदन हिलै चद हँसे श्याम सलोना॥ सूरदास प्रभु तुमरे दरशको खेल कियो अचरज मन भौना ॥ २१५ ॥

राग देश ।

रूखडी न खाइयो स्वामी रूखडी ना खाइयो ॥ हाथ हमारे घिरत कटोरी अपना बांटा लेजाइयो ॥ दौडे दौडे जात स्वामी रोटडियां मुख माहीं ॥ हमतो दौडे पहुंच न साकें मेल लेहु गोसाई॥ घट घट वासी सर्व निवासी पलमें भेष बँटाया ॥ कूकर ते ठाकुर ह्वै प्रगटे नामदेव दर्शन पाया ॥ २१६ ॥

छोड यह फानी दगा बाजीक बाना है ॥ गलत पहमी यहै तेरी नही आराम इस जग में ॥ मुसाफर बेवतन है तू कहां तेरा ठिकाना है॥प्यारे नजर कर देखो न खेशो मे कोई तेरा ॥ जनो फरजग सभ-कूकें किसे तुझको छुडाना है ॥ तमामी रैन गफलत मे गुजारे चारपाई पर ॥ गुजारे रोज खेलो मे वृथा आयू गँवाना है ॥ य होगे सर बसर लेखे हशरके रोज ऐ गाफिल ॥ य दोजख वीच वद अमलीसे तन अपना जलाना है ॥ ३४७ ॥

राग देश ।

माल जिन्होने जमा किया वनजारे हारे जाते है ॥ भाई वधु कुटुम्ब कबीला दावा कर कर खाते हैं ॥ जभी मुसाफर मारा जायगा सभी अलग हो जाते हैं ॥ तू क्या जाने सोई का रस्ता बाटर मारेग बहुत से है ॥ इस रस्ते के वीच मुसाफर अकसर मारे जाते है ॥ ऊंचे नीचे महल बनाये बैठ रहे चौबारे में ॥ जागत रहना सोना नाही हाथ पसारे जाते है ॥ अग्नि पलीता राज दड अरु चोर मूस ले जाते है ॥ राम नाम पर कभी न दीना माल जमाई खाते है ॥ भाई वधु संबंधी सारे सभी अलग हो जाते है ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो अपने हाथ जलाते है ॥ ३४८ ॥

जरा टुक सोच ऐ गाफिल क्या दमका ठिकाना है ॥ निकल जब यह गया तन से तो सभ अपना बिगाना है ॥ मुसाफर तू है और दुनिया सरां है भूल मत गाफिल ॥ सफर परलोक का आखिर तुझे दरपेश आना है ॥ लगाता है अवश दौलत पे क्यों तू दिल को अब नाहक ॥ न जावे संग कछु हरगिज यहीं सभ छोड जाना है॥ न भाई वंधु है कोई न कोई- आशना अपना ॥

बखूबी गौर कर देखा तो मतलबका जमाना है ॥ रहो लग यादमे हकके अगर अपनी शफा चाहो ॥ बली दुनियाके धंधो मे हुआ तू क्यों दिवानाहै ॥ ३४९ ॥

राग माँझ।

दूनिया झूठी ते साईं सच्चापर दुनिया प्यारी लग्गे ॥ सच्च छोड के झूठ व्याझे न्याउं प्या तेरे अग्गे ॥ घर जिहिंदे विच दुश्मन होवन ओह किचरक ताई तग्गे ॥ संतरैन ओह कदी न मिलमन जो दुनियाँ दे ठग्गे ॥ ३५० ॥

दुनियाँ झूठी ते लोकभी झूठे सब झूठे दावे करदे ॥ सोई दुनियाँ जेढी साथ न जावे तिस पिच्छे लड २ मरदे ॥ खास खजाना अतर तेरे ढूंढे हर दर दर दे ॥ संतरैनि ओह कदी न मिलनी जो दुनियाँ दे वरदे ॥ ३५१ ॥

बांकियां पग्गां ते टेढीयां चालां राह न छडडे कदाईं ॥ आप छड्डे तां सब कुछ पावैं ओडक एन्हां रहना नाहीं ॥ मुडकेदे तू पच्छो तासी जद ताण न रहसी बाहीं ॥ संतरैन तूं समझ सवेरे नहीं रोसे वेदे छाढाऊं ॥ ३५२ ॥

एह जुवानी तेरी मस्त दिवानी कुछ अग्गे दा करी तोसा ॥ कई जुवानियां तें अग्गे छड्डियां हुण इसदा कौन भरोसा ॥ मिल सतगुरु कम्ल , करलै झवदे पकड वही कोई गोशा ॥ संतरैन ढिल्ल तेरी वड्डो रब्ब नही तेरे नाल रोसा ॥ ३५३ ॥

अज्जदा कम्मन पत्ती कलहते की जानां कल्ह केहा ॥ सता नाल गुजरान जो थीवे आवे खाके वेहा नेहा ॥ हुणदियां भुल्लया नूं ठौर न को ना कोई सुख सुनेहा ॥ संतरैन हुण ढिल्ल न करिये तैनूं लक्खां दी गल्ल एहा ॥ ३५४ ॥

नदीयां तुला पुराना सिरपर गठरी भारी ॥ अमलां वाले लंघ२ जांदे मैं रहगई औगुनहारी ॥ ताहूडे तर वन्ने लग्गे डुब्बे जिन्हां सिरभार ॥ हत्थी सी महिंदी चोटी सी माखन कपडे रगालये तेले ॥ स्याही गई न सुफेदी आई लगडा इशक कवेले ॥ दिलदा महरम कोई न मिल्या जेठा साथ करे उस बेले ॥ कर कर सिदक बडा बिच वेढे रब्ब मिलावे मेरा यार सुपनेदे अदर जम्या जाया सुपने पलना पाया ॥ सुपनेदे अंदर चोला सीता सुपने पाड हढाया ॥ सुपनेदे अंदर ब्याह कराया सुपने लै गललाया ॥ बुल्ला शाह दिवाना होया पल पल करे दीदार ॥ ३६० ॥

राग कान्हरा ।

सॅभालके नेहु लगावे दिलबर आखर तू पछतावेगा ॥ जांदा यार न आवे फेर ओथे बेपरवाहियां ढेर ओथे दहल खलोबन शेर वहिंदा तू भी जावेगा ॥ कललां दे घर पासे ओथे आवन मस्त प्यासे ओथे भर भर देदे कासे तेरा जीव ललचावेगा ॥ इक नांदे पोप लहाईदे इक आरयां नाल चराइदे इक सूली चाइ चढाई दे तेरा दिल कतरावेगा ॥ बुल्या गैर शरनाहो सुखदी नीद न भर भर सो ऐनल हक तू रिदय बगो चढ सूली ढोला गावेगा ॥ ३६१ ॥

राग धनाश्री ।

मेरी फरियादहे महाराज ॥ यह तो माया सिंहनी रोक रहीहे चारों धाम ॥ मेरे भागनेकी ठौर नहीं सकट से लेहु निवाज ॥ हाथ खड्ग लिये खडा बडी—दो को लेत मार ॥ मेरा साहिब मचला हो रहा मे किहिदर करो पुकार ॥ हमसो कारज बिगड्या प्रभु तुमही लेहुगे सॅवार ॥ जे मैं मनो विसारया प्रभु तूं

थे वो है जिनका फरिश्तो से न मिलता था मजाज ॥ पूँछ तू इनसे कि मालो मिकनते दुनियाँ से आज ॥ कुछ भी इनके पास गर अज हसरतो अफसोस है ॥ ३५७ ॥

रागआसा।

चले गये सभ अचलके मुँह में खुश्की रही ना तरी रही ॥ सभ निशान मिट गये तिन्हा दे नाम न नामावरी रही ॥ यह दो दिन जीवन दुनिया का क्या शाह अमीर वजीर बने ॥ कंगाल करी गुजरान जगत में दो दिन चरचा खरी रही ॥ पल छिन में कूच नगारा है कोइ जुलम करो कोइ अदल करो ॥ जब मौत ने आकर पकड लिया तब मनकी मनमें धरी रही ॥ ३५८ ॥

राग धनाश्री।

मिल लेहुनी सहेलडियोनी में साहुरडे घर जाणानी ॥ एथे रहन किसीदा नाही चलना वारो वारी ॥ चंगी चगे री पकड मंगाइया मैं किसदी पनिहारी ॥ जिन्हा दे पल्ले वारी खर्च घनेरा सोइयो शौह नू प्यारी ॥ बावल मेरे दाज रंगाया इक चोली इक चुन्नी ॥ दाज बावलदा देखके मैं आंसू भर भर रुन्नी ॥ इक विछोडा मैं नू सैयां वाला मैं डारो कुंजविछुन्नी रंगरंगीले सूलां मोढे चहूँवल पेदियां झोकां ॥ एथेदे दुख नाल चलनगे मैं अगले किसनूं सोंपा ॥ सास ननंद मैनूं मारत ताने बनी मुसीबत मैं नूं ॥ बुल्लेशाह दातार मुनीदा वेला अटक न जाइये ॥ अदल करे ता ठौर न कोई फजलो बखरा पाइये ॥ ३२९ ॥

पढले इशक किताब मेरा वीवा हुण केही तोवा तोवा ना कर मेरा यार ॥ सांवें देकर लवे सवाये डेउढेयां चक लेखे लये कूड कितवां सिर पर चाइयाँ एहो तेरा इतबार ॥ दूधीयां

नदीयां तुला पुराना सिरपर गठरी भारी ॥ अमलां वाले लंवर जांदे मै रहगई औगुनहारी ॥ तारूडे तर बन्ने लग्गे डुब्बे जिन्हां सिरभार ॥ हत्थी सी महिंदी चोटी सी माखन कपडे रगालये तेले ॥ स्याही गई न सुफेदी आई लगडा इशक कवेले ॥ दिलदा महरम कोई न मिल्या जेठा साथ करे उस वेले ॥ कर कर सिदक वडा बिच वेढे रब्ब मिलावे मेरा यार सुपनेदे अदर जम्या जाया सुपने पलना पाया ॥ सुपनेदे अंदर चोला सीता सुपने पाड हंढाया ॥ सुपनेदे अंदर व्याह कराया सुपने लै गललाया ॥ बुल्ला शाह दिवाना होया पल पल करे दीदार ॥ ३६० ॥

राग कान्हरा ।

सँभालके नेहु लगावे दिलवर आखर तू पछतावेगा ॥ जांदा यार न आवे फेर ओथे वेपरवाहियां ढेर ओथे दहल खलोवन शेर वहिदा तू भी जावेगा ॥ कललां दे घर पासे ओथे आवन मस्त प्यासे ओथे भर भर देदे कासे तेरा जीव ललचावेगा ॥ इक नादे पोप लहाईदे इक आग्यां नाल चराइदे इक सूली चाइ चढाई दे तेरा दिल कतरावेगा ॥ बुल्या गैर शरनाहो सुखदी नीद न भर भर सो ऐनल हक तू रिदय वगो चढ सूली ढोला गावेगा ॥ ३६१ ॥

राग धनाश्री ।

मेरी फरियादहे महाराज ॥ यह तो माया सिहनी रोक रहीहे चारों धाम ॥ मेरे भागनेकी ठौर नही सकट से लेहु निवाज ॥ हाथ खड्ग लिये खडा वडी-दी को लेगा मार ॥ मेरा साहिव मचला हो रह्या मै किहिदर करो पुकार ॥ हमसो कारज विगडचा प्रभु तुमही लेहुगे सँवार ॥ जे में मनो विसारच्या प्रभु तूं

न अंत विसार ॥ ईहां तो दुःख बहुतेरे हैं किसनूं सुनावां रोय ॥ गरीब जनकी विनती मैं फिर न आऊ इस लोय ॥ ३६२ ॥

राग गौरी।

उड रे पखेरू दिन तौ रहगया थोडा ॥ उड़त्यांउडत्यां जन्म गवॉया जहां शहर तहॉ डेरा ॥ चुन चुन कंकर महल बनाया मूरख कहे घर मेरा ॥ ना घर तेरा ना घर मेरा चिडियां रैन बसेरा ॥ शाह हुसेन फकीर साईदा जंगल होगया डेरा ॥ ३६३ ॥

राग धनाश्री।

धृग धृग नर नारी नाम विना ॥ हरिके भजन विना ॥ विधवा नारि जैसे करत शिगार ॥ शोभा न पावे विन भरतार ॥ तेग विना कैसे रजपूत ॥ नाम विना कैसे अवधूत ॥ जिस कुल में नहि हरिको दास ॥ सो कुल जानो साधो भूत पिशाच ॥ कहे कबीर सुनो अटल प्रताप ॥ तन मन धन सतन पर वार ॥ ३६४ ॥

राग प्रभाती।

एक घडी मैं नाम न जप्या एवें सारी उमर बिहानी ॥ रल मिल सैयां पनिये न चलियां जिन्हां ने भरया सिर पर धरया मैं तां कुचज्जी डोले हत्थ नलाया खाली घड़ा लेके घर नूं सिधानी रल मिल सैयां तिजन लाये जिन्हा कत्ते दाज रँ गाये मैंतां कुचज्जी चरखे दंत न पाया ना मेरा पेटा ना मेरी तानी॥ रौले मे आये रौले में चल्ले समझ कुचज्जी ये तूं होजा स्यानी ॥ बुल्लेशाह रल मिल सैयां पत्तन मल्ले जिन्हाने मल्ले कम सवल्ले इकतां लघ गेयां कर कर हल्लेम तां खडी हां विच्च न मांनी ॥ ३६५ ॥

माये खेलन दे दिन चारनी फेर खेलन तेरे किन आवन ॥ चरखा भन्न परोटरे जारूं पूनियां रुलियां वजार ॥ कोटि सुरेश ब्रह्मा

बीत गयेहैं सरग अपार ॥ रावण मरत मानधातासे राजे मरे हजार ॥ जे सुर नर मुनि देखन आवे गिरेंगे सभ सिर भार ॥ चन्द सूर सरिता पति नाशे हमरो कौन विचार ॥ दास गुलाव विराग भयो मन झूठो सभ ससार ॥ ३६६ ॥

राग देश ।

भाई तेंने सितम गुजारा रे ॥ दिलसे राम विसारा ॥ बालापन औ तरुण अवस्था जव नहि राम सँभारा ॥ वृद्ध भया कफ बायने वेग थकत भया हंकारा ॥ महल गाडियां छिनमे छीने वाँध घाट पर डारा रे ॥ शाहसे सभ भये वटेऊ लुटन लगा घर बारा रे ॥ धरे ढके की पूछन लागे कुटुंब कबीला सारा रे ॥ मर्म कर्म की कोई न पूछे दगावाज संसारा रे ॥ नंगे पेर कँटीला रस्ता ज्यों खांडे की धारा रे ॥ विश्वामित्र महवूव साहिब को भजले वारं-बारा रे ॥ ३६७ ॥

राग कालिंगडा ।

जो तूं राम नाम चित धरतो ॥ अबको जन्म आगलो तेरो दोऊ जन्म सुधरतो ॥ नफा होत साधुकी सङ्गत मूल गांठ ते न टरतो ॥ तंडुल घृत सँवार हरिजूको सन्त परेसो फरतो ॥ यमको त्रास सभी मिट जातो भगत नाम तेरो परतो ॥ सूरदास वैकुंठ पन्थमे कोऊ न फेट पकरतो ॥ ३६८ ॥

राग गौरी ।

श्यामकी वशी ना दूंगी ॥ श्याम की वशी पाई जो वनमें, राख छिपाऊँ अपनेतनमे, कुवरी सोच करेगी मनमें, कहु कुँवर मैं क्या करूगी ॥ हटो सखी मोहिं जिन समझावो, नहीं तो विष मैं खाय मरूगी ॥ अपने तनको घायल करूगी, एककी लाख करोड कहूँगी ॥ प्रीति छिपाई छिपत न मोहन, अव लागे कुवरी सँग

सोहन,तुमतो लागे हमको कोहन,हरि के द्वार पुकार करूंगी ॥ इत ते आवत उत चमकावत, इत उत कछु दर्श दिखावत,जैसा नाच नचाया हमको,तैसा नाच नचा छोडूंगी ॥ मुराद अलीकी साँची बात,ना कोई छल बल ना कोई घात,प्रभुको पाया अपने हाथ, कहो सखी मैं क्या करूंगी ॥ ३६९ ॥

गजल।

दरश अपना जो तुम रघुवरदिखादोगे तो क्या होगा ॥ जो तुम भानु सो कुल भानु तेरा भानुका सा मुखडा ॥ सकुचा है मन कमल मेरा खिलादोगे तो क्या होगा ॥ अब इस संसार सागरमें मेरी नैया जो वहती है ॥ निकट तटके जो तुम रघुवर लगादोगे तो क्या होगा ॥ इसी संसार रजनी में मुझे आते बडे स्वपने ॥ सोये गफलतमें मुझको तुम जगा दोगे तो क्या होगा ॥ लगीहै प्यास खुश दिलको तेरे दर्शन की हे भगवन् ॥ वरसा कर स्वाती की बूंदे मिटादोगे तो क्या होगा ॥ ३७० ॥

राग होरी।

मन मोहन रिझवार री तेरे नयन सलोने ॥ तू अलबेली आन गामकी अवहीं आई है गोने ॥ सिखवन देहों सिखवन लेहों पाग जिन धरत अगोने ॥ अबकी होरी तेरे वगरमें केते कौतुक होने ॥ दया सखी या व्रजमें वसिके नेह निभायो कोने ॥ ३७१ ॥

राग कान्हरा।

भूरि भाग भाजन भई ॥ रूपराशि अवलोकि बन्धु दोउ प्रेम सुरंग रई ॥ कहा री कहु किहि भाँति सराहूं नहिं करतूत नई ॥ विन कारण करुणाकर रघुवर किहि २ गति न दई ॥ करि बहु विनय राख उर मूरति मंगल मोद मई ॥ तुलसी ह्वै विशोक पति लोकहिं प्रभु गुण गुणत गई ॥ ३७२ ॥

कवित्त।

पढे वेद सारे जप तप व्रत धारे करे, गङ्गा औ प्रयागनकी सेवा मन लायके ॥ कञ्चन औ नारी गजबाजी असवारी दान, करे कुरुक्षेत्र माहिं पडितको पायके ॥ करे हयमेध कन्यादान सरबास्व देत, श्रौत औ समारत की नीकी विधि भायके ॥ ईश नाम गान सम होत ना गुलाब अग, वेद औ पुरान व्यास कही समुझायके ॥ ३७३ ॥

गजल।

सोच कर चलना मुसाफिर यां ठगोंका गाम है ॥ इस सरके बीच आके बहुत से मारे गये ॥ अब कदम रखना बढाके होने वाली शामहै ॥ पाचो चोर बसे नगरीमें सोते को लूटाकरें॥ जागना तुमको मुनासिब पल्ले तेरे दामहै ॥ दोस्त सभ दुश्मन तुम्हारे इनसे बचना तमाम है ॥ बाजीगर पुतली नचावे काढे अपना कामहे ॥ यादोपति यजमान हमारे तिनके घर जाना हमे ॥ जातिका ब्राह्मण गावे खुशदिल जिसका नाम है ॥ ३७४॥

दीजिये दर्शन मुझे वंशीके बजानेवाले ॥ दूधके खानेवाले माखनके चुरानेवाले ॥ गजने टेर करी द्वारकासे धाये ॥ सभामें द्रौपदीके चीर बढानेवाले ॥ चौंक सुपनेमें पडी देख राधे मोहन को ॥ डार गलबेयां गये छोड जगाने वाले ॥ कुब्जाको राज दिया हमको वैराग बताया क्याओर नहींहै सत भसम रमानेवाले ॥ ३७५ ॥

राग जंगला।

नामको आधार मेरे नामको अधारा ॥ मेरी मेरी करत जात दिन ही रेन सारा ॥ नजर भरके देख प्राणी धुंधका पसारा॥ यमुनामें गेंद गिरी ग्वाल बाल हारा ॥ कालीनाग नाथ लीनो

कृष्ण भयो कारो ॥ राजा बलिके द्वारे ठाढे वामन रूप धारा ॥ बीस भुजा रावन की छिनमें काट डारा ॥ मथुरा में जन्म लीनो गोकुला सिधारा ॥ कसको निरवंश कीनो मोरमुकुटवारा ३७६॥

गोविंद नही गाया तैने गाया क्या नर बावरे ॥ अहिरन की चोरी करें करे सुई का दान रे ॥ कोठे चढके देखन लागे आवत कहां विमानरे ॥ महल चुनाये वाडी चुनाई और चुनाया दलान रे ॥ इक दिन तुम पर ऐसा होगा पडे रहो मेदान रे ॥ माटीका पुतला बनाया धरचो आदमी नाम रे ॥ आपहीबैठे राह मुसाफिर कहा बसाया गामरे ॥ पतिव्रता भूखी मरे वेश्या चावे पान रे ॥ साधू खावे सूखे टुकडे माल मसखरे खान रे ॥ पाथरकी तैं नाव बनाई उतरा चाहे पार रे ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो डूबेगा मँझधार रे ॥ ३७७ ॥

राग कालिंगडा।

मुखडा क्या देखे दर्पनमें ॥ तेरे दया धर्म नहीं मनमे ॥ आंब की डालकोयलिया बोले सुअना बोले वनमे ॥ घर बारी तो घरमे राजी फक्कर राजी वनमें ॥ ऐंठी धोती पाग लपेटी तेलचुआ जुलफनमे ॥ गली गली की सखी रिझाई दाग लगायो तनमे ॥ पाथर की इक नाव बनाई उतरा चाहे छिनमे ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो यह क्या चढेंगे रनमें ॥ ३७८ ॥

राग जंगला।

श्रीरामचन्द्र दसरथ सुतनंदन यह पद भज मन मोरा रे ॥ बालापनमे खेल गँवाई ज्वानी योवन जोरा रे॥ वृद्ध भयो चिंता तब उपजी अब क्या करत निहोरा रे ॥ पाचों चोर समझ कर पकडो चढो प्रेमरस घोडा रे ॥ ज्ञान खड्ग से मार गिरावो यह मुजरा नर तोरा रे ॥ भूला भूला कहा फिरत है जग में जीवन

थोरा रे ॥ धरे रहें सभ रंगमहल तेरे जंगल होत बसेरा रे ॥ भव-सागर की धार कठिन है वहां तोरा नहीं मोरा रे ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो समझ देख मन भोरा रे ॥ ३७९ ॥

राग देश।

व्रजराजके सखि इश्क का मेरे दिल में तीर समागया ॥ वो जो दर्द था सो बना रहा न बताके कोई दवा गया ॥ मुझे आज वह ब्रजमोहन मिला नंदरायके द्वार पे ॥ नई नई तरह की वो सैन से पिया प्यारा जादू चला गया ॥ मैं तो ढूंढती उन श्यामको चहुँ ओर व्रज कुजन गली ॥ पिया हँसके वशी बजा बजा नई सिरसे नेह लगा गया ॥ इक पल मे होश हवास को लिया लूट कुंज विहारीने ॥ दिखलाके बांकी सी अदा मन हरके वनको चला गया ॥ कहँ रहसके भला इद्रमणि मेरे दिल को सेवरो करार अब ॥ नई छैल श्याम लचक२मुझे बांकीझांकी दिखा गया ३८०॥

राग रेखता देश।

वो झलक जो मोरमुकुट कीथी मुझे लखके श्याम लखा गया ॥ बसी जबसे चितवन चित मे आ चितचोर ही में समा-गया ॥ वो सरूप-रूप था जलवागर लजे कोटि रवि शशि दृष्टि-कर ॥ भौंहै कुटिल शोभा श्यामकी हग देख मृग शरमा गया ॥ कानो मे कुण्डल की दमक दो नागिनी छूटी अलक ॥ विसियर है विष मे विष भरा डसा मन मेरा लहरा गया ॥ कटि पीत पट शिर पे मुकुट तिरछी लटक निर्तत मटक ॥ मुरली मधुर अधरन धरी रस भीनी तान सुनागया ॥ इच्छा शरण आया तेरी रख लाज अब गिरिधर मेरी ॥ मनमें कसक बाकी रही सपने में दरश दिखागया ॥ ३८१ ॥

राग काफी।

बागो ना जा रे तेरी काया में गुलजार करनी। क्यारी वाय केरे रहनी कर रखवार ॥ दया पोद सूखे नहीं रे क्षमा शील जल डार ॥ मन माली प्रबोध केरे संयम की कर बार ॥ दुर्मत काग उडाय कर रे देखे क्यो न वहार ॥ मन गुलाब चित केवडा रे फूलरही फुलवार ॥ मुक्त कली खिल रही सदा गूंथ पहरे क्यो न हार ॥ लोभलहर गहरी नदी रे लख चौरासी धार ॥ निगुरे निगुरे बहगये रे संत उतर गये पार ॥ अष्ट कमल दल ऊपरेरे माया अपरंपार॥कहत कबीरा चित चेतले रे आवागौन निवार॥३८२॥

बसोजी म्हारे नैनन में सियराम ॥ जनकनंदनी जगत वदनी रघुनायक घनश्याम ॥ कनक-मंडप चले रत्न सिंहासन युगल मूरति अभिराम ॥ सरयू-के तीर अयोध्यानगरी चित्रकूट निजधाम । तुलसीदास प्रभूकी छवि निरखत लजत कोटि शत काम ॥ ३८३ ॥

कवित्त।

वैठिये न जहां तहां संगति कुसंगतिमें, कायर के संग शूर भागै पै भागै ॥ फूलकी सुवास जैसे वासनामें मोय रही, कामिनीके संग काम जागैपै जागै॥अरे अरे घरबसे वेरागी के घर केसो,काम क्रोध लोभ मोह पागे पै पागै ॥ काजर की कोठरी मे केसह चतुर घुसो, एक रेख काजर की लागे पे लागे ॥ ३८४ ॥

गजल।

हमनहैं इश्कके माते हमन को दौलतां क्यारे॥नही कछुमालकी परवा किसीकी मिन्नतां क्यारे॥ हमनको खुशाक रोटी वस कमरको इक लँगोटी वस॥ सिरे पर एक टोपी वस हमन को इज्जतां क्यारे॥

कबा शाला वजीरोको जरीजरबक्त अमीरोंको॥हमन जैसे फकीरों को जगत की नेअ्रतां क्या रे॥ जिन्होके सुख न स्याने हैं उन्हीको खलक मानेहैं॥ हमन आशिक दिवानेहैं हमन को मजलसां क्या रे॥ कियो हम दरदका खाना लियो हम भेसका बाना॥ वली-बस शौक मन माना किसीकी मसलतां क्या रे॥ ३८५॥

लावनी।

मोहि विसरत नहिं सुध सनम घडी पल तेरी॥ श्रीकृष्ण खबर ना लई आज तक मेरी॥ तेरे इशक से सहा श्याम रंज बहुतेरा॥ कूचे मे देते हरदम सौसौ फेरा॥ नहिं लगा पता कहुँ यार ठिकाना तेरा॥ किस जगा लगा या हमे बतलाना डेरा॥ हम चाकर होरहे बदिल निगाह कित फेरी॥ श्रीकृष्ण०॥ कर प्रीत वढा परतीत कहा डरते हो॥ उलफत का कदम पाछे को कहा धरते हो॥ आंखो में असर जादू का विकल करते हो॥ मारे नयन अदा तिरछी सो कतल करते हो॥ मेरे मार विरह शमशीर किया तन ढेरी॥ श्रीकृष्ण० दिन रैन तसव्वुर ही में गुजर सब जाती॥ दर्शन बिन देखे नैन धडकती छाती॥ काबू से निकल गये कृष्ण बडे तुम घाती॥ तकदीर बिना तदबीर काम नहिं आती॥ क्या विपरीत कृष्णतुम भोले पन पर गेरी॥ श्रीकृष्ण०॥ सहताहूं कृष्ण सब रंज सब्र नहि मुझको॥ अब सहूं कहांतक कृष्ण सुनाऊँ तुझको॥ ॥ कथ शावत कवि प्रभु दयाल ख्याल रग रग को॥ हर वक्त भरोसा राख कृष्णके संगको॥ अब दे हमको दीदार करी क्या देरी॥ श्रीकृष्ण०॥ ३८६॥

सो जन मस्ताना जिन २ पायो पद निर्वाना॥ मगन होय चढ गयोगगन पे अधर धार धर ध्याना॥लगन लाय बिसराय विश्वको अनहद शब्द पछाना॥ पर्म सुन्न में पर्चा हूआ चेतन चग्ण

समाना ॥ निर्गुणसेज तेजकी नगरी यहि अविगत अस्थाना ॥ लक्ष कला लिये चन्द्र प्रकाशे कोटिकला लिये भाना ॥ जगमग लगी महलके भीतर देखत दरश दिवाना ॥ वरसे पदम दामिनी दमके हर हीरो की खाना ॥ गमसे दूर अगमसे आगे अद्भुत अजब ठिकाना ॥ खुलगयो कमल नवल बर पायो नित प्रति अमृत पाना ॥ अमरकन्द दुख भंजन हारा जिस घर भर्म भुलाना ॥ स्तुति निंदा दोऊ त्यागो खोजौ पद निर्वाना ॥ हर्ष शोक से रहे अतीता तिन जग तत्त्व पछाना ॥ पांच पचीस पुरी तज भागे जीत लियो मैदाना ॥ नितानंद महबूब स्वामी अब निश्चय कर जाना ॥ २८७ ॥

राग आसावरी।

रे मन समझ सोच विचार ॥ ढार पासा साधु संगत फेर रसना सार ॥ राख सतरह सुन अठारह नरद पांचो मार ॥ डारदें तीन काणे चतुर चौंक निहार ॥ मानुषी यह देह फिर नहिं आवे वारंबार ॥ सूरदास गोविंद भजन बिन चले दोउ घर झार ॥ २८८ ॥

राग जंगला ।

जन्म तेरो बातो मे बीत गयो ॥ तैंने कबहूं न कृष्ण कह्यो ॥ पांच बरस का आला भोला अबतो बीस भयो ॥ मकर पचीसी माया कारण देश विदेश गयो ॥ तीस बरसकी अब मति उपजी लोभ बढ़े नित नयो ॥ माया जोरी लाख करोरी अजहुं न तृप्त भयो ॥ वृद्ध भयो तब आलस उपजी कफ नित कण्ठ रह्यो ॥ साधु कि सगति कबहुं न कीनी विरथा जन्म गयो ॥ यह संसार मतलबका लोभी झूठा ठाट रच्यो ॥ कहत कबीर समझ मन मूरख तू क्यो भूल गयो ॥ २८९ ॥

राग परज।

दूर रहो रघुवीर खरे मम नावन नाहिं सो पाद छुवावो॥दारन में पुनि शेलन में कछु अंतर होय तौ नाथ बतावो ॥ मानुप चरन नाव लगाय सो दीनदयाल न काज गवाँवो ॥ राजकुमार पखार लेहो पद तौ मम नावनके ढिग आवो ॥ २९० ॥

राग होरी।

झटक्यो मोरा चीर मुरारी ॥गागर शीश रगकी झटकी वेसर मुड़गई सारी ॥ रेशम वंद वसनके टूटे झडगइ कोर किनारी ॥ व्रजमे अनोखा खिलारी ॥ लेकर चीर कदम चढ़ बैठो हौं जल मॉझ उघारी ॥ संगकी सखी मेरी बगर परोसन कर बिनती सव हारी ॥ अरज मानो गिरधारी ॥ अगर सुने मेरी वगर सुनेगी सास सुने देवे गारी ॥ कत सुने मेरो धूम मचावे और सुने सखी सारी ॥ व्रज वसना मोहिं भारी ॥२९१ ॥

नाचत दे दे तारी ग्वाल मोहना सग खरे ॥ इत व्रजनारी भरत पिचकारी उडत अवीर गुलाल कञ्चन कलश भरे ॥ इत मुरली डफ बाज रहीहै बीन पखावज ताल ॥ कृष्णदास प्यारी रँग झिड़कत लपट झपट व्रजबाल लालन लाल गरे ॥२९२ ॥

रँगीली रघुवरकी होरी ॥ तुम देखो री भर नेन रैन दिन प्रेमरंग बोरी ॥ छबीली खेले दोउ जोरी ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन बोल हो होरी ॥ उमँग नहि मनमें कछु थोरी ॥ उड़त अबीर गुलाब लालभइ अवध नगर खोरी ॥ उमड धुन चली चहुँ ओरी ॥ डफ मृदंग मुरचंग झांझ झालर कल घनघोरी ॥ लोक कुल लाज कान चोरी ॥ गावत गारि धमार सभी मिल रही न कछु चोरी॥ देव देखन आये दौरी ॥ छाये व्योम विमान गान कर वरपे रंग

ओ री ॥ मगन भई अवध नगर गोरी ॥ रत्नहरी बलिहार राम छबि निरखत तृण तोरी ॥ ३९३ ॥

प्रिया प्रेमनगरमें आज खेल ले होरी ॥ हरि यश अतर अबीर उडाले कायाकी करले झोरी ॥ श्वास श्वास हरिनाम सुमिर ले सीख मानले मोरी ॥ मानुष जन्म अमोलक पायो थिर ना रहत बहोरी ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो लागी प्रीत न तोरी॥३९४॥

राग खमाच ।

छबि वारियां प्यारे तेरी में छबि पर ॥ कोटि मदन दशरथ के कुवॅरकी मारत अलकां कारियां ॥ तीखी सजल लाल अंजन युत लागत ॲखिया प्यारियां ॥ राम सखे दृग ओट न कारि हो करौ न छिन भर न्यारियां ॥ ३९५ ॥

राग देश ।

सखी री मोहन मुसकाने लागी सोई पे जाने ॥ रात मोहन सुपने में देखे शिथिल भये मोरे प्राने ॥ विरहों हूक लागी पसरी में नेन नीर बरसाने ॥ सखी जिउरा घबराने ॥ हौं जो चढी थी अपनी अटा पर वह झट निकस्यो आने ॥ मंद हॅसन मुख देख कृष्णको क्या हौं कहे बखाने ॥ सखी कोइ पीर न जाने ॥ हौ घायल मृगी ज्यो घूमत परी धरणि पर आने ॥ मंत्र यंत्र औषध घिसलाये विसरे सभी उपाव सखी कोउ लोग स्याने ॥ और उपाव नहीं कोऊ दूजो श्याम मिलावो आने ॥ जानत है पिया पीर हमारी सूरदास के प्राण सखी कोइ और न जाने ॥ ३९६ ॥

राग ध्रुपद ।

सोलहूॅ शृंगार बारो नील मेघन सों कारो आवत प्रमोद वन सजनी यह को है ॥ चंदन सुगंध पान फूल तेल जुलफन अजन लगाये नेन सेनन कर जोहै ॥ बन्धन कसन भूषण मोती मणि

माणिक धनुपबाण तरकस लिये करन अतिही सोहै ॥ पॉयन पनही लाल सजे जनु काम जाल रामसखे बॉको रूप सबको मन मोहै ॥ ३९७ ॥

शब्द ।

बदियां नाकर गाफला मत होवे दिलगीर ॥ लोहे बांगर ताड्ये तेरे गलविच पैन जंजीर ॥ जां यम आवे पकड लेजावे कौन बधावेगा धीर ॥ आगे तेरा संग न साथी ना भाई ना वीर ॥ जे कुछ करे तो छूट सके नहिं सोह जमांदी पीर॥ वदा ढेरी खाक दी कह नानक शाह फकीर ॥ ३९८ ॥

राग बरवा ।

अब मैं अपने रामको रिझाऊं ॥ नाम ध्याऊ भजन गुणगाऊ ॥ पातपात मे साहिब मेरा मुड मुड शीश नवाऊँ ॥ गंगा न जाऊँ यमुना न जाऊ ना कोइ तीरथ न्हाऊँ ॥ अडसठ तीरथ घटके भीतर तिनही मे मल मल न्हाऊँ ॥ औषध न खाऊँ बूटी न लाऊँ ना कोई वैद्य बुलाऊँ ॥ पूरन गुरू मिले अविनाशी भर्मके पुरजे उडाऊँ ॥ ज्ञान कटारा कस कर बांधो सुरति कमान चढाऊँ ॥ पाचों चोर बसें घटभीतर उनको मार गिराऊँ ॥ योगी होय न जटा बढाऊँ न अंग विभूति रमाऊँ॥ जो रँग रँग्यो आप विधाता और क्या रंग लगाऊँ ॥ डाली न छेडूं न पत्ता तोडू ना कोइ जीव सताऊँ ॥ देहरा न पूजो न देवल पूजो परम ज्योति मिल जाऊँ ॥ चद्र सूरज दोउ सम कर राखो सुखमन सेज बिछाऊँ ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो आवागौन मिटाऊँ ॥ ३९९

शब्द ।

जब पलाश फूलन पर आवे ॥ पात पात कर आप लुटावे ॥ काला मुँह कर जग दिखलावे॥ तब लालनकी लाली पावे ॥ ४००॥

राग भैरवी ।

की कुछ भेट सुदामें ऑंदी बीज की पाया चन्ने ॥ बक्कुलि
दी टिड चबाई और चबाये गन्ने ॥ रोटी उत्ते साग खिलाया छ
पलाई छन्ने ॥ तिन्हां नाल शरी कत केही साहिब जि
दी मन्ने ॥ ४०१ ॥

कवित्त ।

अंगुरी प गिरि धरचो गोकुला बचाय लीनी, विपति
सुदामाजू की छिन में मिटाई है ॥ द्रौपदीकी लाज कीनी भ
सभामें न जान दीनी, पारथकी भारत में कीनी सहाईहै ॥ ज
जहां भीर परी तहा तहां रक्षा करी, कहत कवि मार्क
ऐसे होत आई है ॥ बार बार कर पुकार कहो सुनो दीनानाथ
मेरी वेर एती देर काहेको लगाई है ॥४०२ ॥

सवैया ।

लाय समाधि रहे ब्रह्मादिक योगी भये पर अन्त न पाये
सांझ के भोरहि भोरके सांझहि शेष सदा नित नाम जपाये
ढूंढ फिरे त्रैलोकी में साखी सु नारद लेकर बीण बजाये ॥ तां
अहीरकी छोहरियां छछियाभर छांछपर नाच नचाये ॥ ४०३

राग तिलंग ।

दीनानाथ अब बार तुम्हारी ॥ पतित उधारन बिरद जानवे
बिगारी लेहु सँवारी ॥ बालापन खेलत ही खोयो युवा विषय रस
माते ॥ वृद्ध भये सुध प्रगटी मोको दुखित पुकारत ताते ॥ सुत न
तज्यो त्रिया ना तज्यो भ्रात तज तनुते त्वचा भई न्यारी ।
श्रवण न सुनत चरण गति थाकी नैन भये जल धारी ॥ पलि
केश कफ कण्ठ मरूँध्यो कल न पडे दिन राती ॥ माया मोहन

छांडे तृष्णा यह दोऊ दुखदाती ॥ अब यह व्यथा दूर करबको और न समरथ कोई ॥ सूरदास प्रभु करुणासागर तुमते होय सो होई ॥ ४०४ ॥

रे मन मूरख जन्म गँवायो॥ कर अभिमान विषय सो राच्यो श्या शरण नहि आयो ॥ यह संसार फूल सेमर को सुन्दर देख लुभायो ॥ चाखन लाग्यो रुई उड़गई हाथ कछू नहि आयो ॥ कहा होत अबके मन सोचे पहिले नाहिं कमायो ॥ सूरदास भगवंत भजन बिन शिर धुन धुन पछितायो ॥ ४०५ ॥

राग देश ।

कहां लगाई एती देर ॥ अरे अरे सांवरे रे॥हो गुजराती शिव को उपासी पूजो सांझ सवेर॥ भक्ति मर्मकी सार न जानो हांसी कराई मेरी ढेर ॥ ऊँचे चढ़के टेर सुनाऊं अब सुनियो म्हारी टेर॥क्या कही काज सवॉरे भगतनके क्या निद्रा ने लिये घेर॥ नरसी के प्रभु अधम उधारन राखिये अबकी बेर ॥ ४०६ ॥

राग खमाच ।

कैसी बँसिया बजाय जादू डारा रे॥श्रवण सुनत नहिं परत चैन तन मन तुम पै वारा रे ॥ बांकी छबि दिखलाई चित चपल चलाई ऐसी बातें बतलाई मेरा जिया ललचाई कर तिरछी नजर भर मारा रे ॥ जाकी मधुरी हँसन मुसकान तकन झमकन झुमकन कर मुरली लसन धर ध्यान दुलारे मन थारा रे ॥ ४०७ ॥

राग तिलंग ।

जग जानी कछु मसलत करले जांदी रैन विहानी॥तेरो कोलो लख चल चल जांदे ते मन एक न आनी ॥ एक घड़ी हरि भजन न कीना दिसदा काल सिरानी॥ शाहहुसेन फकीर साईदा आखर दुनिया फानी ॥ ४०८ ॥

राग बरवा ।

मन मस्ताइय छड हो यारा ॥ यह दिन जांदे गिणवे ॥ अ
मजला मारियां गौरे भार न लद वो यारा ॥ मगसंगदा बादर
हीयां मनदे आँखे न लग होय यारा ॥ शाहहुसेन फकीर साई
मन मुरशिद विच लभ वो यारा ॥ ४०९ ॥

राग विहाग ।

घूंघट चक सज्जना हुन शरमां केहीयां रखीयां वे ॥ जे जा
तू एवें करनी में सूल न लांदी अखियां वे ॥ दो नैनां दा ती
चलाया में आजज दे सीने लाया घायल करके मुख छपाय
यह घातां किन दसीयां वे ॥ जुलफ कुंडल ने घेरा पाया बि
अर बनके डग चलाया कहुखां तेरे की हथ आया एह पीत
कित्थो सिखीयां वे ॥ मैं अयाणी नेहुडाकी जाणा तिजन वैर
मौजां माणा इशक तेरा मैनूं सौण न देंदा मैं डरदी आखन सकी
थां वे ॥ हम रसके मैं लाइयां आपे रोशन होई तूं झिडकनमा
एक इशक दे बडे स्यापे तू मुबा बैठो अखीयां वे ॥ मैं बन्द
दा जे तूं सांई कदी तां आवीं फेरा पाईं मिहर करी ते मुख दिख
लाईं मैं काग उडांदी थकीयां वे ॥ बुल्ले शाह ने ना तरसावें
करीं अनायत मैं बल आवी शाह अनायत गल नाल लावी मैं
तेरी हो हो नच्चीयां वे ॥ ४१० ॥

गजल ।

श्यामकी ऊधो जुदाई अब सही जाती नहीं ॥ न चैन दिनको
रातको आंखो में नीद आती नही ॥ बेवफा हमसे खफा हो जा
दिया सौतनको दिल ॥ क्या खता मेरी खबर भेजी कोई पाती
नही ॥ दिल दिया गैरोको हमदम गम दिया हमको सनम ॥ अब
कोई मिलने की सूरत हमको दिखलाती नहीं ॥ छोड कर

माखन औ मिसरी वह गये पीनेको छॉछ ॥ ताव जुगनू की कहीं महताव को पाती नही ॥ क्या कहें गोकुल के तुमसे हाल बरसाने के हम ॥ कुंजकी कोई गली हरगिज हमे भाती नही ॥ उनकी उलफतमें हमेशा गोपियां गाती थीं राग ॥वहे गये जबसे कोइ गाती हैं परभाती नहीं ॥ कानो मे मुद्रा गले सेली मले तनुमे विभूत ॥ होवें हम योगिन उन्हें कहते शरम आती नही ॥ मार कर आसन लिये माला करो कुंजन भजन ॥ यह सखुन लिखते तबीअत तरस कुछ खाती नही ॥ आइये गोकुल मनोहर आरजू करते गणेश ॥ है कोई दाना सखी हम दमको समझाती नही ॥ ४११ ॥

कवित्त ।

दास तो तिहारे जो उदास तो तिहारे दूर पास तो तिहारे आम खास तो तिहारे हैं ॥ दीन तो तिहारे मतिहीन तो तिहारे जो नवीन तो तिहारे पराचीन तो तिहारे हैं ॥ क्रूर तो तिहारे गुणपूर तो तिहारे राचे नूर तो तिहारें साचे शूर तो तिहारे हैं ॥ भायक तिहारे यशगायक तिहारे हो सहायक हमारे हम पायक तिहारे है ॥ ४१२ ॥

सुदामा तन हेरे तो रंक हू ते राव कीने, विदुर तन हेरे तो राजा कीने चेरें ते॥कूबरी तन हेरे तोसुन्दर स्वरूप कीने, द्रौपदी तन हेरे तो चीर बाढे टेरे ते ॥कहत छत्रशाल प्रहलादकी प्रतिज्ञा राखी, हरनाकुश मारयो का नेक नजर फेरे ते ॥ कामी अभिमानी गुनी ज्ञानी भये कहा होत, नामी नर होत गरुडगामी के हेरे ते ॥ ४१३ ॥

राग धनाश्री ।

जन्म गँवायो ऊआ बाई ॥ भजे न चरण कमल यदुपतिके रह्यो विलोकत छाई ॥ धन यौवन मद ऐंडो ऐंडो ताकत नारि पराई ॥ लालच लुब्ध श्वान जूंठन ज्यो सोऊ हाथ न आई ॥ रँचकांच सुख लाग मूढ़ मति कंचन राशि गवांई ॥ सूरदास प्रभु छांड सुधारस विषय परम विष खाई ॥ ४१४ ॥

राग सोरठ ।

नही ऐसो जन्म बारंबार ॥ क्या जानूं कछु पुण्य प्रगटे मानुसा अवतार ॥ बढ़त पलपल घटत छिनछिन चलत न लागे बार ॥ बिरछ के ज्यो पात टूटे लगे नहि पुनिडार ॥ भवसागर अति जोर कहिये विषम औखी धार ॥ सुरत का नर बांध बेडा बेग उतारो पार ॥ साधु संतां ते महंतां चलत करत पुकार ॥ दास मीरां लाल गिरिधर जीवना दिन चार ॥ ४१५ ॥

राग देश ।

कहि न जाय छबि राधाबरकी ॥ चटकीली उरमाल विराजे मटकीली गति श्याम सुन्दर की ॥ मोती लोल चारु नासामें चन्दन खौर आड केसरकी ॥ अटक रह्यो मन ललित माधुरी निरख लटक वा मुरलीधरकी ॥ ४१६ ॥

रेखता ।

परजंग नंदजूका मन बीच भामदा ॥ वर पायोहै कहांसे सुन्दर सुहामदा ॥ लटको की चाल चलता प्यारा मेरे आमदा ॥ गल जामा है जरी का कटि काछनी बनी ॥ पीले दुपट्टे वाला बीडे चबामदा ॥ कुण्डल झलकते हैं दुरुस्त गोशे में ॥ आवाज

बाँसुरी की शीरी बजामदा ॥ काँधे कमरिया सोहै गैया चरामदा ॥ मीर माधो वलिहारी यश तेरा गामदा ॥ ४१७ ॥

राग सिंध ।

दसीयो मोहन किस दानी ॥ आवदा जावंदा नजर न आवे अजब तमाशा इसदानी ॥ दधि मेरी खायो मटुकिया फोरी लोभी यह गोरस दानी ॥ मात यशोदा दही बिलोवे, माखन लैले नसदानी ॥ मीराके प्रभु गिरधर नागर लूंटू दे ब्रिच रसदानी ॥ ४१८ ॥

राग सिंधडा ।

क्या कहें आलममे इन्सान या हैवान थे ॥ खाक थे क्या थे गरज इक आनके मिहिमान थे॥कर रहे थे अपना कब्जा गैरो के इमलाक पर ॥ छीनली जब उसने तो जाना कि हम नादान थे ॥ एक दिन इक उस्तख्वाँ पर जापडा मेरा जो पाउँ ॥ क्या कहे उस वक्त मेरे दिलमें क्या क्या ध्यान थे ॥ पाउँ पडतेही गरज उस उस्तख्वाँ ने आह की ॥ अरकहा जालम कभी हमभी तो साहिब जान थे॥दस्तो पा जानूं शिरो गर्दन शिकम पुश्तो कमर ॥ देखने को आंख और सुन्नेकी खातर कान थे ॥ अबरू ओ बीनीजबी नक्शो नगारे खालो खत ॥ लाल मरवारीद से बिहतर लबो ददान थे ॥ रातके सोनेको क्या क्या नरमो नाजुक थे पलंग ॥ दिनकी खातर बैठनेको ताक औ ऐवान थे ॥ लग रहाथा दिल कही चचल परीजादोके साथ॥ कुछ किसीसे अहद था और कुछ कही पैमान थे ॥ गुलबदन औरगुलअजारो से कनारो बोस्ता ॥ कुछ निकाले थे हवस कुछ और भी अरमान थे ॥ होरही थी चहचही और मच रही थी कहकही ॥ साकी औ

सागर सुराही अतर फूल और पान थे ॥ एकही चक्कर अजल ने आनकर ऐसा दिया ॥ न तो हम थे न वह सारे ऐश के सामान थे ॥ ऐसी बेरहमी से मत रख पाऊँ हमपै ऐ नजीर ॥ वो मियां हम भी कभी तेरी तरह इन्सान थे ॥ ४१९ ॥

राग पहाड़ी ।

गोविंद लीना मोल ॥ कोई कहे महँगा कोई कहे सस्ता लिया तराजू तोल ॥ ब्रजके लोग करें सभ चर्चा लिया बजाके ढोल ॥ सुर नर मुनि ज्ञाको पार न पावें ढक लिया प्रेम पटोल ॥ जहर प्याला रानाने भेज्या पिया मैं अमृत झोल ॥ मीरा प्रभुके हाथ बिकानी मैं सर्वस दीना घोल ॥ ४२० ॥

राग पीलो ।

ब्रजमोहन आयो रे ग्वालिन मिलन चली ॥ सोहनी विरहों विराजे रे शिरापर झूल रही ॥ गल नरमेदा जामे रे मोतियां तनी ओ तनी ॥ राधे शिरधर मटुकी रे बेचा मैं दूध दही ॥ केहा चेटक लायो वे भूल गया दूध दही ॥ पुत्र नंदे वाला वे कीता मैं आज सही ॥ लक्क पेटिया सोहे वे हीरीयां जडत जडी ॥ श्यामा मैं नही रहना वे तेरी या ब्रज नगरी ॥ बिच मथुरा नगरी आवे कान्हा जगात लई ॥ यश केवल गावे रे चरनी मैं लाग रही ॥ ४२१ ॥

राग पहाडी ।

श्यामा तेरी वशी सितम करेंदी ॥ यंत्र मंत्र जादू टोना पढ पढ मन वश करलेंदी ॥ जब सोऊँ तो नींद न आवे अँखियाँ जल बरसेंदी ॥ कृष्णदास हित प्रीत रीत वश चरण कमल चित देंदी ॥ ॥ ४२२ ॥

राग जगला ।

आली मोहिं लागत वृन्दावन नीको ॥ घर घर तुलसी ठाकुर पूजा दर्शन गोविंदजीको ॥ निर्मल नीर वहत यमुनाको भोजन दूध दही को ॥ रत्न सिंहासन आप विराजे मुकुट धरचो तुलसी को ॥ कुंजन कुंजन फिरत राधिके शब्द सुनत मुरली को ॥ मीराके प्रभु गिरधर नागर भजन विना नर फीको ॥ ४२३ ॥

राग रामकली ।

निरख सखी शोभा श्रीराम की ॥ मग्न भई लग्न लागी हीयरामें सुध न रही तन मन धन धाम की ॥ साँवरे वरण मनके हरण मनसिज मन मोह करण अरुण वरण सुन्दर अभिरामकी ॥ पीत वसन कद दशन मंद हसन लसन फसन अलक कुण्डल वर वाम की ॥ रत्न हरी कर विचार पल पल पर प्राण वार छवि निहार दशरथ सुत श्याम की ॥ ४२४ ॥

गजल ।

हमनसे मत मिलो लोगो हमन खफती हिवाने हैं ॥ खुशी का राह छोड़ा है कठिन मे जा समाने है ॥ तजी खिदमत वजीरी की पाई लज्जत फकीरी की ॥ चढे किश्ती सबूरीकी फकरके यह मकने है ॥ हमन दिन रैन रोते हे गमो से जान खोते हे ॥ शूलो कि सेज सोते हे विरहीके यह निशाने है ॥ हमारा यार जो जानी पीवे हरि नामका पानी ॥ कि आखिर होवना फनी वली रामे समाने हैं ॥ ४२५ ॥

राग पहाडी ।

यशोदाजी के द्वारे पर नीमाये मे वार वार जानीयां ॥ गिरिधर मैनूं नजर न आवे सौ सौ फेरा पानीयां ॥ लाजकी मारी मे

कुछ नही सकदी दूतां थों शरमानीयां ॥ कृष्ण सखी प्यारे दर्शन
शाझो कुञ्ज वांगू कुरलानीयां ॥ ४२६ ॥

राग जंगला ।

रघुवर चरण शरण सुखदायक क्यो न गहो मन मेरे ॥ कोटि
जन्मके संचित सगरे पाप विनाशें तेरे ॥ जिन चरणन की शरण
गही ते उधरे पतित घनेरे ॥ अजामील गणिका गज गीधन हरि पुर
किये बसेरे ॥ जिन चरणन की रेणु परस मुनि पत्नी तरी सवेरे ॥
भालु भील रजनीचर वानर काट गये भव फेरे ॥ कोटि कलंक
मेंट कुमतिन के जिन चरणन के हेरे ॥ रत्नहरी हम जान भयेहैं
इन चरणनके चेरे ॥ ४२७ ॥

राग देश ।

मैने थारा कांई बिगारचो काज ॥ मोसे क्यो रूसे महराज॥
लोक लाज कुल कान गवाँई तज कुटुम्ब शरणागत आई,कीनी
प्रीत नंद के नंदन छोंडत आई न तोको लाज ॥ कुब्जा कूड
कंसकी दासी जा मुख देखत आवत हांसी ऊँच नीच तुमनेंकछु
न विचारी चेरी करी शिरताज ॥ इतनी विनती मानो हमारी
जन्म जन्म की में दासी तिहारी, श्रीव्रजनिधिके कुञ्जविहारी
आन उधारो मोहि आज ॥ ४२८ ॥

राग सिंध ।

आज अति बाढ्योहे अनुराग ॥ पूत भयोरी नंद महरके
बडे वेस बड भाग ॥ दई सबच्छ लच्छ धेनू अरु नंद बढायो
त्याग ॥ गुनी गण वंदी जन सब मांगत पायो अपनो लाग ॥
कूदे ग्वाल मनो रण जीते आनन्द फूले बाग ॥ गोपी गोप ओप

सबके मुख गावत मङ्गल राग ॥ हरद दूध दधि माखन छिड़कत मच्यो वधैया फाग ॥ परमानद दास भक्तन के भयो सो परम सुहाग ॥ ४२९ ॥

राग पीलो।

आज माई गोकुल भयो री आनंद ॥ रानी यशोमति बालक जायो प्रगट्यो पूरण चन्द ॥ व्रज वनिता सब बन ठन आई गावत नाना छंद ॥ सूरदास प्रभु पुरण प्रगट मेट दिये दुख द्वन्द ॥ ४३० ॥

राग जंगला।

कोई असां नाल चल्ले मेरीयो सेयो नी ॥ असां ता मुलक अडिठड़े न जावनां ॥अडिठड़े देशके मरहम नाही खर्च नही कछु पल्ले ॥ दूर गयाँ दी खबर न आइया कोई सुनेहडा घल्ले ॥ कतने कारन गोडहे आंदे चर्खा मूल न हल्ले ॥ हार सिंगार सभी कुछ देनीहां दस्ता दे देनीहां छल्ले ॥ एथोंदा खटिया एथे रहजाना झाड़ पल्लू उठ चल्ले शाहहुसेन फकीर साईदा आखर जाना इकल्ले॥ ४३१ ॥

राग पहाड।

हमरी प्रणाम बांके विहारी को ॥ मोर मुकुट माथे तिलक विराजे कुंडल अलकां कारी को ॥ अधर मधुर धर वंशी बजावे रीझ रिझावे राधा प्यारी को ॥ यह छवि देख मग्न भई मीरा मोहन गिरिवर धारी को ॥ ४३२ ॥

शब्द।

हर हर हर भज मेरया मना यह औसर नहि पावेगा ॥अधम कर्म ते बाज न आवे बॉध्या यमपुर जावेगा ॥ सोई यो तेरे सङ्ग

क्या करनाहे संतति संपति मिथ्या सब जग माया है ॥ शाल दुशाले हीरा मोती मे क्यों मन भर्मायाहै ॥ मात पिता पुत्र वंधू सब गोरख धंध बनाया है ॥ ललित किशोरी आनँद घन हरि हिरदे कमल बसाया है ॥ ४४१ ॥

राग होरी ।

राधावर खेलत होरी ॥ नंदगामके ग्वाल इते उत बरसानेकी गोरी ॥ डफ करताल वजावत गावत केसर कुंकुम घोरी॥परस्पर रंग मे बोरी ॥ दशहूँ दिशान गुलाल घुमंड में काहू कछु लख न परो री ॥ उचक आय धाय चन्द्रावलि ललितादिक लै दौरी ॥ गह्यो हरिको बरजोरी ॥ गारी गावत नारी सभी मिल नागरी योवन जोरी ॥ नंदके लाल बडे रसिया हो करो इनसो बरजोरी॥ फाग में कौन की चोरी ॥ छीन लई बनमाल मुरलिया पीतवसन लियो छोरी ॥ नागरी वेप बनाय कहत देखो नंदराय की छोरी ॥ बनी छवि काम करोरी ॥ तारी देदे नचावत ग्वालिनि अपनी अपनी ओरी ॥ वा दिनकी सुध भूली लला यमुना तट चीर हरो री ॥ आज यह दॉव परो री ॥ कृष्णरंग मन भावत फगुवा लेकर वहुत निहोरी ॥ हो अधीन वृषभानु सुताके विनय करों कर जोरी ॥ लाज कछु रहीहै न थोरी ॥ ४४२ ॥

सवैया ।

अपनी ओरकी चाहे लिखी लिखीजात कथा उत मोहन ओरकी॥
प्यारे दया कर वेग मिलो सही जात व्यथा नहि मान मरोर की॥
आपहि बांचत अग लगावत हो [illegible] ी चिट्ठि [illegible] ॥
राधिके मौन रही धर ध्यान औ [illegible] नंदकि [illegible] ४३॥

कवित्त ।

मुनि मख राख्यो मार ताडका सुबाहु वीर, चरण छुवाय जिन शिला तार दीना है ॥ सो कवि रसीले आय मिथिला शहर माहिं, नर अरु नारिनको मन हरलीना है ॥ सोई यह सलोने सुकुमार दशरत्थजूके, राजत निहार कोटिकाम छबि छीनाहै ॥ मेरी महारानी तीन लोकमें प्रमानी सिया, सोनेकी अँगूठी राम साँवरो नगीनाहै ॥ ४४४ ॥

राग झूलना ।

जङ्गलमें अब रमते हैं दिल वस्ती से घबराताहै ॥ मानुप गन्ध न भाती है सग मर्कट मोर सुहाता है ॥ चाक गरेवाँ करके दमदम आही भरने भाता है ॥ ललित किशोरी इश्क रैन दिन यह सब खेल खिलाता है ॥ ४४५ ॥

राग झिंझोटी ।

तेरी खातर श्यामां वे मैं योगिन होइयाँ ॥ अङ्ग अग छाई श्यामां वे मैं मल मल रोई प्रीति लगी तन वारी ॥ केधर जावां श्यामा वे मैं केन्हू आखाँ ॥ प्रीत लगी श्यामा दिल अन्दर राखाँ ॥ विरहो दी अग्नि करके मैं जारी ॥ तैंतों श्यामाँ मेरी सुधहू न लीनी ॥ व्याकुल करके वे मैं कमली कीनी ॥ चन्दसखी बलिहारी ॥ ४४६ ॥

छला मोको यमुना जान न देय नन्दमहर दा छू करू ॥ वालूडा तोडे मेरा चोलूडा फाडे छैलावे मैंकी हँस हँस गारीयाँ देय ॥ चोलूडा फाडे मेरा तालूडा तारे छैलावे सान्नू हस्से गलाँ-दा केय ॥ जित मिलदा तित करे मसुरतां छैला व साडा धिंगे

लगाँदा नेह ॥ कीकर बसना गोकुल नगरी छैलावे एहनूं कोई समझावो एह ॥ मयाराम असी देखी देखी जीवना छैलावे साडे मन तन बस रहचा एह ॥ ४४७ ॥

राग बिलावल।

ऊधो इतनी कहियो जाय ॥ अति कृश गात भई है तुम बिन बहुत दुखारी गाय ॥ जल समूह बर्षत अँखियन ते हूँकत लेले नाउँ ॥ जहां जहां गउ दोहन करते ढूंढत सोइ सोइ ठाउँ ॥ परत पछार खाय तेही छिन अति व्याकुल ह्वै दीन ॥ मानो सूर काढ़ डारी है बारि मध्य ते मीन ॥ ४४८ ॥

राग सोरठ।

मेरी कौन गति ब्रजनाथ ॥ भजन विमुख अरु शरण नाहिन फिरत विपय साथ ॥ हौं पतित अपराध पूरण भरचो काम विकार ॥ काम कुटिल अरु लोभ चितवन नाथ तुम न विसार॥ उचित अपनी कृपा करहो तऊ जान्यो जाय ॥ सोऊ करहो जे चरण सेवे सूर जूँठन खाय ॥ ४४९ ॥

राग होरी।

ऊँचो गोकुल गाम जहां हरि खेलत होरी ॥ चल सखि देखन जाहि पिया अपने की जोरी ॥ बाजत ताल मृदंग और किन्नर की जोरी ॥ गावत देदे गारि परस्पर भामिनि गोरी ॥ बूका सुरंग अँबीर उडावत भर भर झोरी ॥ इत गोपिनके झुण्ड उत हरि हलधर जोरी ॥ नवल छबीले लाल तनी चोली की तोरी ॥ राधा चली रिसाय ढीठसो खेले को री ॥ खेलत कैसो मान सुनो वृपभानु किशोरी ॥ सूर सखी उर लाये हँसत भुज गह झकझोरी ॥ ४५० ॥

राग सोरठ।

प्रभु हो कबलो नाच नचैहो ॥ अपने जनके निलज तमाशे कबलौं जगहि दिखेहो ॥ कबलौं इन विमुखनके मुख सो निज गुण गणहि लजैहो ॥ कबलौं जिनपै सतत हँसत यम तिनसो हमहि हँसैहो ॥ छिन छिन बूडत जात पक लख मोहि कब चित्त द्रवैहो ॥ जन्म जन्मके निज हरिचन्दहि फिरकै कब अपनैहो ॥ ४९१ ॥

कुंडलिया।

प्राण पुत्र दोऊ बडे चारो युग परमान ॥ सोदशरथ नृप परिहर्‍यो वचन न दीनो जान ॥ वचन न दीनो जान बडेन की बूझ बडाई ॥ बात रहे सो काज और बरु लवँस जाई ॥ कह गिरधर कविराय भये दशरथ प्रणत्राना ॥ वचन कहे नहि तजे तज निज सुत अरु प्राणा ॥ ४९२ ॥

रही न रानी केकयी अमर भई यहबात ॥ कौन पूर्वले पाप ते बन पठयो जगतात ॥ बन पठयो जगतात कन्त सुरलोक सिधार्‍यो॥ जिहि सुतकाजहि मर्‍यो राउ नहि वदन निहार्‍यो॥ कह गिरिधर कविराय भई यह अकथ कहानी ॥ यश अपयश गहिगयो रही नहि केकयि रानी ४९३ ॥

साँई वैर न कीजिये गुरु पंडित कवि राय ॥ बेटा वनिता पौरिया। यज्ञकरावनहार ॥ यज्ञ करावनहार राज मंत्री जो होई॥ विप्र परोसी वैद आपको तपै रसोई ॥ कह गिरिधर कविराय बात चतुरन के ताईं ॥ इन तेरह सो तरह दिये बनिआवे साईं ॥४९४॥

दौलत पाय न कीजिये सुपने मे अभिमान॥ चंचल जल दिन चार को ठाउँ न रहत निदान ॥ ठाउँ न रहत निदान जियत जग मे यश लीजै ॥ मीठे वचन सुनाय विनय सभही की कीजै॥

मन ते जगभीतर नाहि रहे अब और रहे कहु को जगमाही ४७४॥
नादके लोभ तजे मृग प्राण सो बीन सुने अहि आप बँधाये ॥
मीन सो त्याग अगाध जलै उर लोभ जगे गल लोह पहाये ॥
कागज की पुतली कारिनी वश मत्त गयंद सो अंकुश खाये ॥
या भुविमंडलमाहि सुनो उरलोभ करे दुख कौन न पाये ४७५ ॥
नभमें सुरलोक रचे हरिजी अरु भूमि विषे निधि क्षीर बनाये ॥
मणि हीरन के गिरि कूट रचे फल फूलन के वन कोटि उपाये ॥
सब लोकन को प्रभु पोषत हो सभ भूँख मिटे तुम में मन लाये ॥
बिन प्रेम कहा फल फूल दिये बिन ते पदपंकजकी रज पाये४७६॥
वर कौन मँगो तुमते हरिजी थिर नाहिं रहे जग भीतर कोई ॥
नहिं राज रहे गज वाजि रहे तनुलौ मिटिजाय पिखों जग जोई॥
बिन ते पदकंज लहे न कहूँ सुख जो नर दूर फिरे तिहुँ लोई ॥
पदमंजुल जो सनकादि भजें तिनकी प्रभु सेव दिजे मम सोई४७७॥
विधि एक अनीति रची जग में शुभ सतनके तन पेट लगायो ॥
मुख चार न फेर विचार कियो तृण पह्लव नाहि अहार बनायो॥
अति दीन मलीन दुखी नर जो तिनके घर भीतर भीख मँगायो॥
मनकेअनुसाररचो जगकोविधिजानतहो नहि सीखवनायो४७८॥
खान मिला अरु पान मिला बहु मान मिला धन धाम रहाई ॥
कुल मोट मिला गढ़ तोप मिला पृथी राज मिला सेना बहु पाई॥
पुत्र मिला अरु पौत्र मिलाबहु मित्र मिला दिन दिन अधिकाई॥
गजवाजिमिला बहुताजीमिला सबही सुखधूरसमानकहाई४७९॥
प्रेम लग्यो परमेश्वर सो तब भूल गयो सगरो घर बारा ॥
ज्यों उनमत्त फिरे जितहीं तित नेव रहे न शरीर सँभारा ॥
श्वास उसांस उठे सभ रोम चले दृग नीर अखडित धारा ॥
सुंदर कौन करे नवधा विधि छाक पर्यो रस पी मतवारा४८० ।

कवित्त ।

नीर बिन मीन दुखी क्षीर बिन शिशु जैसे, पीरकी औषध बिन कैसे रह्यो जात है॥ चातक ज्यो स्वाति बूंद चंद को चकोर जैसे, चदन की चाहकर सर्प अकुलात है॥ निर्धन ज्यो धन चाहे कामिनी को कत चाहे, ऐसी जाकी चाह ताहि कछु न सुहात है॥ प्रेमको प्रवाह ऐसे प्रेम तहां नेम कैसे, सुन्दर कहत यह प्रेमहीकी बात है॥ ४८१॥

कुंडलिया।

बानी बहुत प्रकार है ताको नाही अत॥ जोई अपने काम की सोई सुने सिधांत॥ सोई सुने सिधांत संतजन गावत होई॥ चित्त आन के ठौर सुने जो नित प्रति सोई॥ यथा हस पय पिये रहे ज्यो को त्यो पानी॥ ऐसे लहे विचार शिष्य बहुविधि है बानी॥ ४८२॥

सवैया।

जानु भुजा कटि केहरि के सम कजप्रभा दृग हे मदमाते॥
कोटि सुरागण नाचत हैं अरु गंध्रव आय सभी पुर गाते॥
भौल भँडार अपार भरे धन या विधि आप रचे सो विधाते॥
यो विषयादि भई तो कहा जब जानकीनाथके रग न राते ४८३
दश चार सौ भौन रचे जिनके इक आहि बली भुवमडलमाहीं॥
जिनके दश चार सौ भौन बली इक त्याग गये तृणज्योघरमाहीं॥
दश चार सो भौन को भोगत हे इक एकहिं राज करे जगमाही॥
दश बीसक ग्रामको राज लहे नर क्यो गरवे अपने उरमाही४८४॥
धन ईश दियो जगभीतर जो बिन बुद्धि गयो नकछू फलपाये॥
शुभ सतनकी नहिं सेव करी अरु विप्रन ते नहि यज्ञ कराये॥
नहि कूप खने जलहेत कभी घरभीतर ना जलताल बनाये॥

बलहीनन को सुखदान दिये नही दीननको दुख दूर मिटाये४८५॥
अपने हित त्याग करे परके हित ते नर उत्तम हैं जगमाही ॥
अपने हित संग करे परको नर आहि समान वही भवमाही ॥
अपने हित नाश करे परको हित राक्षस हैं नर ते जगमाही ॥
विनही अपने हित नाशकरे परको हित ते नर कौन कहाही४८६॥
जो सुख है सतसंगति में चतुरानन में सुख नेक न पायो ॥
जो सुख इंद्रके लोक नही अरु सो सुख शंभु के ध्यान न आयो॥
सो सुख जाप न ताप किये अरु सो सुख योग न ज्ञान दृढायो॥
सो सुखहै सतसगतिमें अविनाशीके रूपमें जाय समायो॥४८७॥

राग प्रभाती ।

आपे खेल खिलारी सतगुरु आपे लीला धारी है ॥ आसमान ते तंबू बनाया जमी गलीचा भारी है ॥ चद्र सूर्य्य दोउ मिसल बनाये तेरी कुदरत न्यारी है ॥ राम नामका चौपड मांड्या तू पॉसा जग सारी है॥ पॉसा चाहे तिसे जितावे सारी कौनविचारी है ॥ पजो छिकयो नरद बचावे बाजी कठिन करारी है॥ जिसकी नरद पकी घर आवे सोइ यो सुघड खिलारी है ॥ शृंगी जैसे वनमें लूटे शकर नेजा धारी है ॥ बडे बडे हकारी लूटे रैयत कौन विचारी है ॥ जिनको बल है सतगुरु पूरा तिनका जगत भिखारी है ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो अबके जीत हमारी है ॥ धन धन केशवा कटत कलेशवा गावत शेश महेशवा रे ॥ गज के कारण धाये प्यादवा नाम धरायो हरि संगवा रे॥ प्रह्लाद दास प्रह्लादवाके कारण रघवाके भये अब बघवा रे ॥ ४८८ ॥

शब्द ।

रास फकीरी उन्हांदी थीदी बाग जिन्हांदा हरया ॥ अव्वी शाजी वाहरो बादी इश्क नगारा धरया ॥ शूरा ठिह्ठ वड्याविच्च

रणदे मौतो मूल न डरया ॥ हरगोविद ओही शूरमा जो पज जित घर वडया ॥ पंजे मेरे वीर प्यारे नाउँ पंजांदा छेया ॥ पंज मैनूं एउँ लग रहे ज्यो कमली नू लेहा ॥ पजे उठके करन तगादा इक्को पंजां जेहा ॥ हरगोविद इक वस्य न हुंदा दोष पंजां नृ केहा ॥ ४९० ॥

यह मन लोभी लालची आंखे मूल न लग्गे॥कन्नी सुणदा आंखी देखे वाणी मूल न लग्गे ॥ श्रीभागवत गीता पढदे देखे पौन हुलारे वग्गे ॥ हरगोविद सभ रुढदे देखे काम लहरके अग्गे४९०॥

श्वासो श्वासों कर गुजारा तेरा साहिब भला करेसी ॥ छेड तकव्वर ढेह पौ वूहे तेरी कर्दा ता कूक सुनेसी ॥ सत सतोष न छड्डी बदे होनी होय सो होसी ॥ हरगोविद उठ भजन करो प्रभु बिरद की लाज रखेसी ॥ ४९१ ॥

सवैया ।

नाहिं फले जगमाहिं निशेश दिनेश फले जग मे कहु काही ॥
पुण्य बिना फल आहि कहां विधिलोक सो भूमि रसातल माहीं ॥
नाहि सुरेश फले जगमें सो महेश फले जगमे कहु काहीं ॥
और फले नहिं को जगमे कृत पुण्य फले द्रुम ज्यो ऋतु माही४९२॥
इक देवहिं वदत हो भुव मे जोइ चातुर ते खल सेव कराये ॥
जग भिक्षुकको छिन एक भये महिमडल राजको सुक्ख भुगाये ॥
महिमडलके पति को छिन एक दरे दर माहि सो भीख मँगाये ॥
भुव माहिं अगाध गती तिनकी सभ हार परे गति कोय न पाये४९३
ढिग बैठ धनी नरके हरिजी निज प्राणन रोक सु बैन उचारे ॥
नहिं बैठ तपोवन में हरिजी फल खाय सदा तव नाम सँभारे ॥
धन पावन को निशि नीद तजी हरि पावन को नहिं नैन उघारे॥

जगमे शुभकाज विसारतहो विधि कौन सुधा सुख पावँ मुरारे४९४
तातको आयसु मान चले जिनके पदपंकज पूजत लोई ॥ राज-
विभूति तजी छिन में वनको निकसे जननी बहु रोई ॥ तो न फिरे
पुर को हरिजू जब भ्रात गहे कर में पद दोई ॥ धर्म बराबर राज
नहीं यह सूचत राम सनातन जोई ॥ ४९५ ॥

रघु भूप दिलीप तजी क्षितिहै अरु जाय बसेसो तपोवन माहीं॥
अज नाभिको नदन त्याग विभूति गयो वनको न रमे पुरमाही ॥
महिमडल राजको त्याग दियो पुरमंडल त्यागनमें श्रम नाहीं ॥
अब औरन बात कहाकहिये रघुवीर विभूति तजी छिनमाहीं४९६॥
जे चतुराननके सुत चार गही न विभूति रमे हरिमाहीं॥यद्यपि
है हरि पूरण ते अबलौं रति है शुभ संतनमाही ॥ शेष समीप सुनें
हरिको यश शंभु समीप सदा चल जाहीं ॥ होवत हैं गुण उत्तम
नाश कुसगतिते सनकादि डराही ॥ ४९७ ॥

शेष धरे धरनी शिरमे अरु सूर फिरे सो सदा नभ माहीं॥धार
गदा अबलो हरिजी बलि द्वार रहे सो पतालके माही ॥ घेर हला-
हल लोक चरे दृग शंकर नीठ धरे जगमाही ॥ प्राणसमान धरे
व्रत को दुख भूरि भये व्रत टारत नाही ॥ ४९८ ॥

कवित्त।

एक ब्रह्म मुख सो बनाय कर कहतहै अंतःकरण तो विकारन
सोई भरचोहै ॥ जैसे ठग गोबरको कूँपो भर राखत है सेर पंच
घृत लेके ऊपर ज्यो करचो है ॥ जैसे कोई भांडे माही प्याज को
छिपाय राखे चीथरा कपूरको ले मुख बांधि धरचो है ॥ सुंदर
कहत ऐसे ज्ञानी है जगत माहिं तिनको तो देख कर मेरो मन
डरचो है ॥ ४९९ ॥

देह सो ममत्व पुनि गेह सो ममत्व सुत दारा सो ममत्व मन मायामे रहत है ॥ थिरता न लहै जैसे कंदुक चौगान माहिं कर्मन के वश मारचो धक्का को सहत है ॥ अंतःकरण तो सदा जगत सो रच रह्यो मुखसो बनाय बात ब्रह्मकी कहत है ॥ सुन्दर याहीते मोहि अधिक अचम्भो आहि भूमिपर परचो कोऊ चन्द्रको गहत है ॥ ५०० ॥

एकनके वचन सुनत अति सुख होय, फूलसे झरत हैं अधिक मनभावने ॥ एकनके वचन तो असि मानो वरपत, श्रवनके सुनत लगत अलखावने ॥ एकनके वचन कटुक कटु विपरूप, करत मरत छेद दुख उपजावने ॥ सुन्दर कहत घट घट में वचन भेद, उत्तम रु मध्य अरु अधम सुहावने ॥ ५०१ ॥

प्रथम हिये विचार डीम सो न दीजे डार, ताहीते सु वचन संभार कर बोलिये ॥ जाने न कुहेत हेत भावे तैसी कहै देत, कहिये सो तव जब मन माहिं तोलिये ॥ सबहीको लागे दुख कोऊ नही पावे सुख, बोलके वृथाही तातें छाती नही छोलिये ॥ सुन्दर समझ कर कहिये जु नीकी बात, तवही तो वदन कपाट गृह खोलिये ॥ ५०२ ॥

और तो वचन ऐसे बोलत हैं पशु जैसे, तिनके तो बोलवे में ढंगहू न एक है ॥ कोऊ रात दिवस बकत ही रहत ऐसे, जैसी विधि कूपमे बकत मानो भेक है ॥ विविध प्रकार कर बोलत जगत सब, घट घट प्रति मुख वचन अनेक है ॥ सुन्दर कहत ताते वचन विचार लेहु, वचन तो वही जामे पाइये विवेक है ॥ ५०३ ॥

वचन ते आन मिले वचन विरोध होय, वचन ते राग बढे वचन ते दोप जू ॥ वचन ते ज्वाल उठे वचन शितल होय, वचन ते मुदित वचन ही तें रोप जू ॥ वचन ते प्यारो लगे वचन ते

दूर भगे, वचन ते मरजाय वचनते पोप जू॥ सुन्दर कहत यह वचन को भेद ऐसो, वचन ते बंध होत वचन ते मोक्षजू ॥५०४॥

देखै तो विचार कर सुनै तो विचार कर, बोले तो विचार कर करे तो विचार है॥ खाय तो विचार कर पीवे तो विचार कर, सोवे तो विचार कर जागे तो न टार है॥ बैठे तो विचार कर उठै तो विचार कर, चले तो विचार कर सोई मतिसार है॥ देय तो विचारकर लेय तो विचार कर, सुन्दर विचार कर याही निरधार है ॥५०५॥

सवैया।

जो परब्रह्म मिल्यो कोउ चाहत तो नित संत समागम कीजे॥ अंतर मेट निरंतर ह्वैकर ले उनको अपनो मन दीजे ॥ वे मुख-द्वार उचार करे कछु सो अनयास सुधारस पीजे ॥ सुन्दर सूर प्रकाश भयो जब और अज्ञान सभी तम छीजे ॥ ५०६ ॥

कवित्त।

धूल जैसो धन जाके शूल संसार सुख भूल जैसो भाग देखे अंत जैसी यारी है ॥ पाप जैसी प्रभुताई शाप जैसो सनमान बड़ाई बिच्छुन जैसी नागिन सी नारी है ॥ अग्नि जैसो इन्द्र-लोक विघ्न जैसो विधिलोक, कीरति कलङ्क जैसी सिद्धि सी ठगारी है ॥ वासना न कोई बाकी ऐसी मति सदा जाकी, सुन्दर कहत ताहि बंदना हमारी है ॥ ५०७ ॥

जिन तन मन प्राण दीने सभ मेरे हेत, औरहू ममत्व बुद्धि आपनी उठाई है ॥ जागतहू सोवत हू गावत हैं मेरे गुण, करत भजन ध्यान दूसरो न कोई है ॥ तिनके मैं पीछे लाग्यो फिरत हो निशि दिन, सुन्दर कहत मेरी उनते बडाई है ॥वेहै मेरे प्रिय मैंहू उनके अधीन सदा, संतनकी महिमा तो श्रीमुख सुनाई है ॥५०८॥

सॉचे उपदेश देत भली भली शिख देत , समता सुबुद्धि देत कुमती हरत है ॥ मारग दिखाय देत भावहू भगति देत, प्रेमकी प्रतीन देत अभरा भरत है॥ ज्ञान देत ध्यानदेत आतम विचारदेत, ब्रह्मको बताय देत ब्रह्ममे चरत है॥ सुन्दर कहत जग सन्त कछुलेत नही, सतजन निशिदिन देवोही करत हैं॥५०९॥

सवैया ।

प्रीति की रीत कछू नहि राखत जाति न पॉति नहीं कुलगारो॥
प्रेमको नेम नही कहुँ दीसत लाज न कान लग्यो सब खारो ॥
लीन भयो हरिसो अभिअन्तर आठोही याम रहे मतवारो ॥
सुन्दर कोऊक जान सके यह गोकुलगामको पैडोही न्यारो५१०॥
है दिलमे दिलदार सही अँखियां उलटी कर ताठि चितेये॥
आबमे खाकमें बादमे आतश जानमे सुन्दर जान जनैये ॥
नूरमे नूरहै तेज मे तेज है ज्योति ते ज्योति मिले मिल जैये ॥
क्या कहिये कहते न बनै कछु जो कहिये कहतेही लजैये ५११॥

कवित्त ।

जाहिके विवेक ज्ञान ताहि के कुशल भयो , जाही ओर जाय वाको ताही ओर सुख है ॥ जैसे कोई पायँन पैजारको चढायलेत, ताको तो न कोऊ काटे खोवरे को दु:ख है ॥ भावे कोऊ निदा करे भावै तो प्रशसा करे , वे तो देखे आरसी मे अपनोही मुखहै॥ देहको व्योहार सभ मिथ्य कर जानत है, सुन्दर कहत एक आतमाही रुख है ॥ ५१२ ॥

सवैया ।

सूरके तेजते सूरज दीसत चन्द्रके तेजते चन्द्र उजासी ॥ तारे के तेजते तारे हूँ दीसत बीजुली तेजते बीज चकासी ॥ दीपके

दूर भगे, वचन ते मरजाय वचनते पोप जू॥ सुन्दर कहत यह वचन को भेद ऐसो, वचन ते बंध होत वचन ते मोक्षजू ॥५०४॥

देखै तो विचार कर सुनै तो विचार कर, बोले तो विचार कर करे तो विचार है॥ खाय तो विचार कर पीवे तो विचार कर, सोवे तो विचार कर जागे तो न टार है॥ बैठे तो विचार कर उठै तो विचार कर, चले तो विचार कर सोई मतिसार है॥ देय तो विचारकर लेय तो विचार कर, सुन्दर विचार कर याही निरधार है ॥५०५॥

सवैया।

जो परब्रह्म मिल्यो कोउ चाहत तो नित सत समागम कीजे॥ अंतर मेट निरंतर ह्वैकर ले उनको अपनो मन दीजे ॥ वे मुख-द्वार उचार करें कछु सो अनयास सुधारस पीजै ॥ सुन्दर सूर प्रकाश भयो जब और अज्ञान सभी तम छीजै ॥ ५०६ ॥

कवित्त।

धूल जैसो धन जाके शूल ससार सुख भूल जैसो भाग देखे अंत जैसी यारी है ॥ पाप जैसी प्रभुताई शाप जैसो सनमान बड़ाई बिच्छुन जैसी नागिन सी नारी है॥ अग्नि जैसो इन्द्र-लोक विघ्न जैसो विधिलोक, कीरति कलंक जैसी सिद्धि सी ठगारी है ॥ वासना न कोई बाकी ऐसी मति सदा जाकी, सुन्दर कहत ताहि वंदना हमारी है ॥ ५०७ ॥

जिन तन मन प्राण दीने सभ मेरे हेत, औरहू ममत्व बुद्धि आपनी उठाई है ॥ जागतहू सोवत हू गावत हैं मेरे गुण, करत भजन ध्यान दूसरो न कोई है ॥ तिनके मैं पीछे लाग्यो फिरत हो निशि दिन, सुन्दर कहत मेरी उनते बडाई है ॥वेहै मेरे प्रिय मैंहूँ उनके अधीन सदा, सतनकी महिमा तो श्रीमुख सुनाईहै ॥५०८॥

साँचे उपदेश देत भली भली शिख देत , समता सुबुद्धि देत कुमती हरत हैं ॥ मारग दिखाय देत भावहू भगति देत, प्रेमकी प्रतीत देत अभरा भरत है॥ ज्ञान देत ध्यानदेत आतम विचारदेत, ब्रह्मको बताय देत ब्रह्ममें चरत हैं॥ सुन्दर कहत जग संत कछुलेत नही, सतजन निशिदिन देवोही करत है॥५०९॥

सवैया ।

प्रीति की रीत कछू नहि राखत जाति न पाँति नही कुलगारो॥ प्रेमको नेम नहीं कहुँ दीसत लाज न कान लग्यो सब खारो॥ लीन भयो हरिसो अभिअंतर आठोही याम रहे मतवारो॥ सुन्दर कोऊक जान सके यह गोकुलगामको पैडोही न्यारो५१०॥

है दिलमे दिलदार सही अँखियां उलटी कर ताहि चितैये॥ आबमे खाकमे बादमे आतश जानमे सुन्दर जान जनैये॥ नूरमे नूरहै तेज मे तेज है ज्योति ते ज्योति मिले मिल जैये॥ क्या कहिये कहते न बनै कछु जो कहिये कहतेही लजैये ५११॥

कवित्त ।

जाहिके विवेक ज्ञान ताहि के कुशल भयो , जाही ओर जाय वाको ताही ओर सुख है ॥ जैसे कोई पायॅन पैजारको चढायलेत, ताको तो न कोऊ काँटे खोबरे को दु ख है॥ भावे कोऊ निंदा करे भावै तो प्रशसा करे , वे तो देखे आरसी मे अपनोही मुखहै॥ देहको व्योहार सभ मिथ्य कर जानत है, सुन्दर कहत एक आतमाही रुख है ॥ ५१२ ॥

सवैया ।

सूरके तेजते सूरज दीसत चन्द्रके तेजते चन्द्र उजासी ॥ तारे के तेजते तारे हूँदीसत बीजुली तेजते बीज चकासी ॥ दीपके

तेजते दीपक दीसत हीरेके तेजते हीरोही भासी ॥ तैसेही सुन्दर आतम जानहु आपके ज्ञानते आप प्रकासी ॥ ५१३ ॥

कवित्त ।

एक तो श्रवण ज्ञान पावक ज्यो देखियत माया जाल परसत बेगि बुझिजात है॥एकहै मनन ज्ञान बिजली ज्यो घनमध्य माया-जल बरषत ता में न बुझात है ॥ एक निदध्यास ज्ञान वडवा अनल जैसे प्रगट समुद्रमाहि मायाजल खात है ॥ अनुभौ साक्षात ज्ञान प्रलैकी अगिनि सम सुन्दर कहत द्वैतप्रपच बिलात है५१४॥

भोजनकी बात सुन मनमे मुदित भयो मुखमे न परै जौलो मेलिये न ग्रास है ॥ सकल सामग्री आन पाकको करन लागो मनन करत कब जेंवो यह आस है ॥ पाक जब भयो तब भोजन करन बैठो मुखमें मेलत जाय यह निदध्यास है ॥ भोजन पूरणकर तृपित भयो जब सुन्दर साक्षातकार अनुभौ प्रकाश है ॥ ५१५ ॥

जबही जिज्ञासा होय चित्त एकठौर आन मृग ज्यो सुनत नाद श्रवण सो कहिये ॥ जैसे स्वाति बूँदहू को चातक रटत पुनि ऐसेही मनन करै कब बूँद लहिये ॥ रात्रिको चकोर जैसे चद्रमाको धरे ध्यान ऐसे जान निदध्यास दृढ कर गहिये॥यही अनुभवयही कहिये साक्षातकार सुंदर पारे ते गल मानी होय रहिये ॥५१६॥

काहूको पूँछत रंक धन कैसे पाइयत कान देके सुनत श्रवण सोई जानिये ॥ उन कह्यो धन हम देख्योहै अमुक ठौर मनन करत भयो कब घर आनिये ॥ फेर जब कह्यो धन गाड़्यो तेरे घरमाहि खोदन लग्यो है जब निदध्यास ठानिये ॥ धन निकस्यो है जब दारिद गयो है तब सुन्दर साक्षातकार नृपति बखानिये ॥ ५१७ ॥

सवैया।

ऋषिनारि तरी कपि रीछ तरे सो लँगूर तरे जिहिं नाम उचारे॥
बन भीलसुता जिहिं नाम तरी सो जटायु विहंगम जाहि उधारे॥
अब चेतन बात कहाकहिये जड भूधर नाम तरे निधि खारे॥
अब औसर राम भजो मनरे दुख मेटि तरो भवसागर पारे९१८॥
भव हारकके चित नेम कहे यम हैं भवहारक और बखाने॥
इक त्याग कहे इक दान कहें इक योग सो साधन कै उर ठाने॥
इक यज्ञ कहे तपसा परसाधन तीरथवास सो एक प्रमाने॥
ब्रज हे भवहारक एक भने हमतो एक रामहि नाम पछाने९१९॥
जग मानव देह मिले न सदा नर राम भजो जिहिते सुख पावो॥
जग भोग वराटकके बदले न अमोलक लाल अकाज गवांवो॥
लरकापन जाठर मे बल छीन सो योवन मे दृढ पुण्य कमावो॥
शुभसीख इहे जन मान चलो जिहिते नहिं अंत समै पछतावो९२०॥
जग रूखन सूखन भोजन कै फल फूलन कै तनु पालन कीजै॥
जग बैठ जहां तहां ठौर भली प्रभु पावनको उर जाप जपीजै॥
तृण कोमल बीन बिछाय भले दृग नींद भरे घर माहि सोईजै॥
धूरत मूढ दियाकुल बैन सो भूपतिके नहि पास वहीजै॥९२१॥
शैलशिलातल सेज करे गिरि कंदर ही गृह है वन माही॥
पादपछाल सो चीर करे अरु मीत सखा मृग हैं वन माही॥
भोजन पादपको फल है जलपान करे झिरना गिरी माही॥
पेटके हेत न सेव करे नर ते नर ईश गिने भवमाही॥९२२॥
धन्य भई तिनकी जननी किरतारथ सो जग वंदन गाई॥
कुल पावन ताहि करी सगरी जग धन्य भई तिन मीत सखाई॥
पद कंजन तासु पुनीत धरा रज पावन ते जन पाप मिटाई॥
जो भवमंडलमाहि भजे छिन एक एकागर राम सहाई॥९२३॥

कुण्डलिया ।

वादल दौरे जातहैं दौरत दीसत चन्द ॥ देहसंग ते आतमा चलत कहै मतिमंद ॥ चलत कहै मतिमंद आतमा अचल सदा ही ॥ हलत चलत यह देह थापले आतम माही ॥ सुन्दर चंचल बुद्धि समझ ताते नहिं वौरे ॥ दौरत दीसे चद जात है बादल दौरे ॥ ५२४ ॥

सब कोऊ ऐसे कहैं, काटत हैं हम काल ॥ काल नाश सबको करै वृद्ध तरुण अरु बाल ॥ वृद्ध तरुण अरु बाल शाल सबहिन को भारी ॥ देह आपको मान कहत हैं नर अरु नारी ॥ सुन्दर आतम अमर देह मरिहै घर खोऊ ॥ काटत हैं हम काल कहत ऐसे सब कोऊ ॥ ५२५ ॥

राग माली गौड ।

हरि नाम ते सुख ऊपजे मन छांड आन उपाय रे ॥ तनुकष्ट कर कर जो भ्रमे तो मरण दुःख न जाय रे ॥ गुरु ज्ञानको विश्वास गह जिन भ्रमे दूजी ठौर रे ॥ योग यज्ञ कलेश तप व्रत नाम तुल्य न और रे ॥ सब सत यूँही कहत हैं श्रुति सिमृत ग्रन्थ पुराणरे ॥ दास सुन्दर नामते गति लहै पद निरवाण रे ॥५२६॥

राग मारू ।

सोई जन रामको भावै हो ॥ कनक कामिनी परिहरै नहि आप बँधावै हो ॥ सबही सो निवैरता काहू न दुखावहि हो ॥ शीतल वाणी बोलके रस अमृत प्यावे हो ॥ कै तो मौन गहे रहै कै हरि गुण गावै हो ॥ भर्म कथा संसारकी सब दूर उडावै हो ॥ पांचो इन्द्रिय वश करै मन मनहि मिलावै हो ॥ काम क्रोध अरु लोभको खन खोद वहावै हो ॥ चौथे पदकै

चीन्हके ता माहिं समावै हो ॥ सुन्दर ऐसे साधके ढिग काल न आवै हो ॥ ८२७ ॥

राग वरवा ।

मानती न प्यारी सखियां सब हारी हारी ॥ जब हारै वेप कियो युवतीको पहिन कुसुमरी सारी ॥ मुकुट उतार गुही शिर वेनी नख शिख मांग सवाँरी ॥ कुडल त्याग तरौना पहिरे ककण नूपुर बारी ॥ काजर नैन कठिन कुच कंचुकि वेसर चूरी सवाँरी ॥ नखन महावर तिलक आडदे भये कपट नट नारी ॥ प्रण कारि चले संग ललिता के मोहे देत हित कारी ॥ कृष्णदास आली करसो पकर लिये मिले कुज पिय प्यारी ॥ ८२८ ॥

राग परज ।

रघुवर तेरोही दास कहाऊं ॥ तुमरोही नाम जपो निशि वासर तुम्हरेही गुण गाऊं ॥ तुमही मेरे प्राण जीवन धन तुम तजि अनत न जाऊं ॥ तुम्हरे चरण कमलको मधुकर रत्नहरी सुख पाऊं ॥८२९॥

राग भैरवी ।

डरदा डरदा अर्ज इक करदा ॥ सुन तैनूं दरियाउ मिहरदा॥ तु लाडाला दशरथ रघुवर दा ॥ कर वरदा मैनूं अपने घरदा ॥ रत्नहरि हुण केहा पडदा ॥ ८३० ॥

राग होरी ।

मतो तुमसो होरी खेलो कान्ह साँवरे ॥ अबीर गुलाब भरे भर डारो यह मेरे मन चाव रे ॥ केसर रंग भिजोवो तोको भाग कहां अब जाव रे ॥ सब दिनकी अब कसर निकारो कहा करोगे राव रे ॥ रत्नहरी प्रभु या होरीमे लाग्यो हमरो दाँव रे ॥ ८३१ ॥

राग कालिंगडा।

होरी नन्द नन्दन खेलें अब कैसे लाज रहे ॥ जो कोउ
यमुन जल भरने व्राही पै रंग बहे ॥ बाट चलत वह ढीठ
रवा बरजोरी बैयां जो गहे ॥ रतहरी या व्रजको बसिबो
कैसे निबहे ॥ ९३२ ॥

राग केदार।

पूरी न परत प्रहलादकी प्रतिज्ञा राखी खम्भ हू से नि
नृसिंह देह धारी है ॥ द्रौपदीकी लाज काज द्वारका से
आली सकट बिडार गज दीन हितकारी है ॥ सुदामा गरीब
सो मंदिर कनक कियो गौतमकी नारी चर्ण छायके उधारी है
दशरथनंदन श्रीरामचन्द्र विनै सुनो एते काज किये प्रभु
काज भारी है ॥ ९३३ ॥

कवित्त।

गर्व ते सुलक्ख जाय सूमता ते यश जाय, कुपुत्र ते कुल ज
जोग तो कुसंग ते ॥ लाड किये पुत्र जाय शोकते शरीर जा
मूँख ते मर्यादा जाय बुद्धि जाय भंग ते ॥ कपट ते मित्र जा
लोभ ते बडाई जाय, मांग हू ते मान जाय पाप जाय गंग ते
नीति बिना राज जाय क्रोध ते तपस्या जाय, रजपूती जा
जब मुडे जात जंग ते ॥ ३३४ ॥

राग गौरी।

कदम चढ लाल बुलावत गैयां ॥ बंशी टेर सुनी जब श्रवण
जहि तहिं ते उठ धैयां ॥ आवो रे सब सखा संगके कर पावो
ठैयां ॥ गोविंद प्रभु बलदाऊसे कहत हैं अब घरको बगदैयां ॥९३५

राग बिलावल ।

सखी री मुझे आज मिले नँदलाल ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल गल वैजन्ती माल ॥ पीत वसन घनश्याम मनोहर घूँघर-वाले बाल ॥ देख देख मोहनकी छबिको तनक न तनकी सँभाल॥ लक्ष्मी नारायण को जाने आगे कौन हवाल ॥ ५३६ ॥

राग सोरठ ।

जगर मे प्यारी आज मिले कही श्याम ॥ लट पट पाग सोहे पचरगी पीताम्बर अभिराम ॥ नख शिख अमित आभरन मनोहर बशीधर गुणधाम ॥ देख जाय पद नखकी शोभा कोटि लजावत काम ॥ लक्ष्मीनारायण दर्शनबिन तलफूँ आठो याम ५३७॥

सवैया ।

लालहि लालके लालहि लोचन लालनके मुख लालहि बीरा ॥ लाल बनी कछनी कटि लालके लालके शीश सुलालहि चीरा ॥ लालहि बाग बने अतिसुन्दर लाल खडे यमुनाजीकेतीरा॥ गोविंद यो प्रभु शोभा बखानत लालके कठ विराजत हीरा५३८॥
पीरोहि कुण्डल पीरोहि नूपुर पीत पीतांबर ओढे ओ ठाढो ॥ पीत बनी कटि काछनियां अरु पीरोसो खौर बन्यो चहि गाढो॥ पीरोहि मूकुट लालको सोहत पीरोहि खोर बन्यो पटुकाको ॥ गोविंद यो प्रभु शोभा बखानत पीरो लकुट्ट लियो हथ गाढो५३९
धौरेहि मोहन धौरेहि सोहन धौरेहि चदन खौर विशाल ॥ धौरे कडे कर हाथन सोहैं औ धौरे सोहैं गल फूलनहार ॥ धौरो दधि वेचन को निकसी मग रोकत मोहिं नंदको लाल ॥ गोविद यो प्रभु शोभा बखानत धौरी सोहैं गल मोतिनमाल ॥५४० ॥
कारेहि मोहन कारेहि सोहन चाल कालिंदीजुके तट आयो ॥

राग कालिंगडा ।

होरी नन्द नन्दन खेलें अब कैसे लाज रहे ॥ जो कोउ जाय यमुन जल भरने वाही पै रंग बहे ॥ बाट चलत वह ढीठ लॅग-रवा बरजोरी वेयां जो गहे ॥ रतहरी या ब्रजको बसिबो अब कैसे निबहे ॥ ५३२ ॥

राग केदार ।

पूरी न परत प्रहलादकी प्रतिज्ञा राखी खम्भ हू से निकस नृसिह देह धारी है ॥ द्रौपदीकी लाज काज द्वारका से धाये आली संकट बिडार गज दीन हितकारी है ॥ सुदामा गरीबको सो मंदिर कनक कियो गौतमकी नारी चर्ण छायके उधारी है ॥ दशरथनंदन श्रीरामचन्द्र विनै सुनो एते काज किये प्रभु मेरो काज भारी है ॥ ५३३ ॥

कवित्त ।

गर्व ते सुलक्ख जाय सूमता ते यश जाय, कुपुत्र ते कुल जाय जोग तो कुसग ते ॥ लाड किये पुत्र जाय शोकते शरीर जाय, भूँख ते मर्जादा जाय बुद्धि जाय भंग ते ॥ कपट ते मित्र जाय लोभ ते बडाई जाय, मांग हू ते मान जाय पाप जाय गंग ते ॥ नीति विना राज जाय क्रोध ते तपस्या जाय, रजपूती जाय जब मुडे जात जंग ते ॥ ३३४ ॥

राग गौरी ।

कदम चढ लाल बुलावत गैयां ॥ बंशी टेर सुनी जब श्रवणन जहि तहि ते उठ धैयां ॥ आवो रे सब सखा संगके कर पावो इक ठैयां ॥ गोविंद प्रभु बलदाऊसे कहत हैं अब घरको बगदैयां ॥५३५॥

राग विलावल ।

सखी री मुझे आज मिले नँदलाल ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल गल बेजन्ती माल ॥ पीत वसन घनश्याम मनोहर घूँघर-वाले बाल ॥ देख देख मोहनकी छबिको तनक न तनकी सँभाल॥ लक्ष्मी नारायण को जाने आगे कौन हवाल ॥ ५३६ ॥

राग सोरठ।

जगर में प्यारी आज मिले कहीं श्याम ॥ लट पट पाग सोहे पचरंगी पीताम्वर अभिराम ॥ नख शिख अमित आभरन मनोहर बंशीधर गुणधाम ॥ देख जाय पद नखकी शोभा कोटि लजावत काम ॥ लक्ष्मीनारायण दर्शनबिन तलफूं आठो याम ५३७॥

सवैया ।

लालहि लालके लालहि लोचन लालनके मुख लालहि बीरा ॥ लाल बनी कछनी कटि लालके लालके शीश सुलालहि चीरा ॥ लालहि वाग बने अतिसुन्दर लाल खडे यमुनाजीकेतीरा॥ गोविंद यो प्रभु शोभा वखानत लालके कठ विराजत हीरा५३८॥

पीरोहि कुण्डल पीरोहि नूपुर पीत पीतांबर ओढे ओ ठाढो ॥ पीत वनी कटि काछनियां अरु पीरोसो खौर बन्यो चहिं गाढो॥ पीरोहि मूकुट लालको सोहत पीरोहि खोर वन्यो पटुकाको ॥ गोविंद यो प्रभु शोभा वखानत पीरो लकुट्ट लियो हथ गाढो५३९

धौरेहि मोहन धौरेहि सोहन धौरेहि चंदन खौर विशाल ॥ धौरे कडे कर हाथन सोहैं औ धौरे सोहैं गल फूलनहार ॥ धौरी दधि वेचन को निकसी मग रोकत मोहिं नदको लाल ॥ गोविंद यो प्रभु शोभा वखानत धौरी सोहे गल मोतिनमाल ॥५४० ॥

कारेहि मोहन कारेहि मोहन घाल कालिंदीजुके तट आयो ॥

राग पीलू।

चल री नई कुंज बुलाई राधे॥ तुम बिन व्याकुल कुँवर कन्हाई कहा मानजिया ठान रही अरु तुमसों चतुर न कोय ॥ छांड देय निठुराई इतना कहा हमारा मानो नवनागर ब्रजबाल ॥ मनमोहन आधीन तिहारे बिहरो दे गल बाहि कारण कौन रुसाई॥ या सुन प्रीति किशोरी किशोरी उर बाढी नँदलाल ॥ वेग उठी मिलि धाय पिया सो मदन खुशाल मनाई बहुत भाँति समझाई ॥ ५५१ ॥

राग वसंत।

देखो देखो ब्रजबासिनके भाग ॥ मोहन सँग होरी खेलत फाग॥ जाको निगम उचारें बारबार॥ कछु कहि न सकें महिमा अपार॥ ब्रह्मादिक जाको न पावें अत ॥ सो ग्वारिन सँग खेलत वसंत ॥ एक कहै मोरे बैठो आय ॥ एक कहै मुरली बजाय ॥ एक पीतांबर लेत छिनाय ॥ अद्भुत लीला लखी न जाय॥ एक परस्पर करे बात ॥ एक माला गुथ ल्याई अनेक भांत ॥ एक बीडी विमल बनाय देत ॥ कर जूठे अपने हरि को देत॥ एक कहै चलो कुज ओर ॥ गुंजत कोकिल नचत मोर॥ एक कहै कंधे उठाय ॥ परमानंद स्वामी रहे लुभाय ॥ ५५२॥

नवल वसत नवल श्रीवृन्दावन नवले फूले फूल॥ नवले कान्ह नवल सब गोपी नितत एकै तूल ॥ नवल कुमकुमा केसर नवलै नवलै वसन अमोल ॥ नवल यमुना जल पल्लव शाखा नवल पवनकी झूल ॥ नई नई छीट लगी केसरकी मेटत मन को शूल ॥ नये नये बाजे बाजत श्रीभट कालिंदीके कूल ॥ ५५३ ॥

देखो वृन्दावनके कैसे भाग जहां राधा माधो खेलत फाग ॥ कई कोटिक ब्रह्मादिक कई कोटि इद्र कई कोटिक आदित्य कोटि चन्द्र जाको ध्यान धरत मुनि रहेहैं हार ॥ ताको सकल

गोप मिल देत गार जाके मोर मुकुट माथे तिलक भाल ललित माल लोचन विशाल ॥ जाको शेश सहस मुख लहे न अंत ताको गुण गावत नारद वे अंत जाको अगम निगम ते अगम पुंज सो तो हाहा करत फिरत कुज कुज ॥ सूरदास मैं तुम्हारे दास कबहुं न पावो यमकी त्रास ॥ ५९४ ॥

ऐसो बालक खेले नंद द्वार तीन लोक जाके मुख मँझार॥कान कुण्डल जाके पदन पाउँ वसुदेव पिता देवकी माउ कोटि भानु जाका दिव्य शरीर सो तो धेनु चरावे यमुना तीर ॥ जाको निगम कहत है नेत नेत सो तो गोपनके सग हेरी देत पाउँ पताल जाका पताल जाका शिर अकास ताको जानतहे कोउ हरिको दास ॥ शिव सनकादिक करत सेव ब्रह्मादिक जाको लहै न भेव कहत कबीर जाको गुण अपार ताको सुमर सुमर नर उतरे पार५९५॥

राग सोरठ।

देखोरी या बेनी गूथी नंदके कुमार ॥ करकोमल फूलनके गजरे ओ पहिराये हार ॥ तू बडभागिन भानुनन्दनी वश किये कृष्ण मुरार ॥ उठ बखतावर मिलु चल अबहीं छिन छिन होत अबार ॥ ५९६ ॥

राग बिलावल।

मोहन छबीला मन भामदा सैयो मैनूं ॥ मृदु मुसकामदा चित ललचामदा ॥नाहक जी तरसामदा ॥ तान नमानी ने घायल करया मन बिच फदापामदा ॥ दिल बिच उपजी आतश विरहोदी ब्रजनिधि सैन चलामदा ॥ ५९७ ॥

सवैया।

बलि बासव जीतवको मत राख भली विधि सो उन यज्ञपढी॥ सन्मानके दान दिये द्विज देवत नेकहु नाहिन भौंह चढी ॥

लकुटी पकडे हरि आये तहां महि मॉग लई करबेको मढी॥ तहँ बावनके कर अंगके सग सुखी लकडी बिन पातवढी ५५८॥

राग झंझोटी।

जा दिन मन पंछी उड जैहैं॥ ता दिन तेरे तनु तरुवरके सब पात झरि जैहैं॥ घरके कहें वेग ही काढो भूत भये कोउ खैहैं॥ जा प्रीतम सो प्रीति घनेरी सोऊ देख डरैहैं॥ कहँ वह ताल कहाँ वह शोभा देखत धूर उडैहैं॥ भाई बंधु कुटुम्ब कबीला सुमर सुमर पछितैहैं॥ बिना गुपाल कोऊ नहिं अपना यश कीरति रहजैहैं॥ सो तो सूर दुर्लभ देवनको सतसंगतिमें पैहं ५५९॥

राग वसंत।

होये री त्यार वसन्त खेलनको दशरथके सुत चार॥ रामते लक्ष्मण भरत शत्रुहन चारो राजकुमार॥ पहरे पीत पीतांबर वस्तु तुरियनके असवार॥ उडत गुलाल लाल भये वादर केशर पडत फुहार॥ घनियर गरज वादर बरसे बिजली की चमकार॥ या छवि निरख श्रीराम दूल्होकी अग्रदास बलिहार॥ ५६०॥

राजत राम जानकी जोरी॥ चतुरनारि डारत तृण तोरी॥ श्याम सरोज जलज सुन्दर वर दुलहिनि तडित वरन तनु गोरी॥ मडप में दोउ ओर मनोहर गठत चूनरी पीत पिछोरी॥ कनक कलश सजदेत भॉवरी देख रूप शारद भई बोरी॥ व्याह समय शोभित वितान तर उपमा कौन कहै मति थोरी॥ मनो मदन मजुल मडप तर छवि शृंगार शोभा इक ठोरी॥ मतानन्द वशिष्ठ आदिदै वंश प्रशस करे दोउ ओरी॥ गान

निशान वेद धुन सुन सुन मुनि वर्पत सुमन झकोरी ॥ नैननकी फल लेत मुदित मन सखि अशीश दे ईश निहोरी॥ तुलसीदास छवि देख मगन भये क्या वरणों रसना इक मोरी ॥ ९६१ ॥

राग भैरवी ।

सुन मैया मेरी तू जननी यह मोहि वहुत खिजावैं ॥ ग्वालवाल लिये सगहि खेल खेलन मोहिं न पावे ॥ गह २ वाहि लेजातीहै घर को करसो ताल वजावे ॥ मोहि कहे घर नाच रे छौरा माखन तोहि खिलावै ॥ नाचो तो नवनीत न देवे पीत पछोरी लावै ॥ कोऊ कछनी छीन लेत है मुरली कोउ चुरावै ॥ भागजाउँ पाछे पड मोको पुनि गह कठ लगावै ॥ यह अनीति कैसे कर सहिये और ठौर उठजावैं ॥ दया राम सुन हँसी यशोदा झूठी चेरियां लावै ॥ ९६२ ॥

रागकान्हरो ।

या मोहनकेमें रूप लुभानी ॥ हाटवाट मोहिं रोकत टोकत या रसियाकी में सार न जानी ॥ सुदरवदन कमलदललोचन वांकी चितवन मद मुसकानी॥ यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावे वशी में गावे मीठी वानी ॥ तन मन धन गिरिधरपर वारू चरण कमल मीरा लपटानी ॥ ९६३ ॥

राग होरी ।

होरीको छैल मोहि ढूँढत डोले अब कित्थे जाय छिपो मोरी देया ॥ लाजभरी गारी वशी मे मेरो नाम लेले गावै कन्हैया ॥ सास सदा मेरे वैर पडी है ननँद निगोरी करै लडैया ॥ कृष्ण जीवन लच्छीरामके प्रभु प्यारे फागन मास वडो दुखदैया ॥ ९६४ ॥

राग भैरवी ।

तू न भयो अपना रे लोभी मन ॥ यह संसार ओसको मोती जैसे रैनका सुपना ॥ जैसे आगको रोकत धुआं ज्यों दर्पणको ढकना ॥ ऊधोदास यह गावे राम नाम जपना ॥ ९६५ ॥

राग गौरी ।

बांको छैल गुमानी मैया तेरो ॥ संग लिये लरिकनको डोले बोले अटपटी वानी ॥ बाट घाट दधि खोसही खावे और फोडे जो मथानी॥दधि मेरो खायो घनेरो नायो भाजनको पछितानी॥ आवे पौर दौर कर पकरो तू घर जाहि सयानी ॥ दामोदर घर दूध घनेरा नंद महारि मुसकानी ॥ ९६६ ॥

राग जंगला ।

मैंतो थारे दामन लगी जी गोपाल ॥ किरपा कीजो दर्शन दीजो सुध लीजो ततकाल ॥ गल वैजती माल बिराजे दर्शन भई है निहाल । मीराके प्रभु गिरधर नागर भक्तनके रछपाल ॥९६७॥

जिन पायो ऊधो प्रेमहू से पायो रे ॥ बिना प्रेम कछु हाथ न आयो रे ॥ घस घस चदना लगावे मधुसूदन कहो काहू योग उस कूबरी कमायो रे ॥ तुम जो कहत ऊधो प्रेम तज योग लीजे प्रेम कौन घाट याग कौन बडो आयो रे ॥ सूरश्याम- जीके आगे ऐसे जाय कहियो ऊधो तुम जो पठायो योग पानी में वहायो रे ॥ ९६८ ॥

नेह जुरयो नँदनदन सो अब कैसे लाज रहे मेरी सजनी ॥ यह अँखिया अब रह न सकत हैं देखे विना ब्रजराज री सज- नी ॥ अटके नैंन माधुरी मुसकन भूल गये सभ काज री सज- नी ॥ देह गेहकी सुध बिसरानि रहो गिरो भावे आज री स- जनी ॥ लोक लाज कुल कान छूटगई लवा निरख ज्यो-

बाजरी सजनी ॥ मयाराम अब ओट न कोऊ ज्यो खन सिंधु जहाज री सजनी ॥ ५६९ ॥

राग विहाग ।

मेनूं अयानी संदेशा श्यामदा सुनो ब्रजनार भला ॥ योगकी पतियां पठाई मोपै रल मिल करो री विचार ॥ ऐसी करी जैसी देखी न सुनी री हम सँग नन्दकुमार ॥ सुर श्याम विन तरफत निशि दिन जानै न निपट गवाँर ॥ ५७० ॥

राग जैजैवंती ।

बहुत तुम कहत सभ चलो या मात पै तात रस मत्त यशुमत्त रानी ॥ देख लई लच्छ कर पुत्रकी पच्छकर अच्छ भर बात हमरी न मानी ॥ चलो सब बाम गृह काम तज ढूंढिये घेर कर श्याम कुल छाँड कानी॥देहिंगी धाम सन्मान सो कान्हको बांध कर देहु भये नये दानी ॥ लेगये श्याम वनधाम सब सखिनको झपट पट ओट वशी बजानी ॥ निज मुख आपही बोल उठे बाजी कहूँ बाजी कहे या दिशा बजत ज्ञानी ॥ ५७१ ॥

गजल ।

यशोदा ढीठ है तेरो किशोरी ॥ झपट गह चट मेरी बेयां मरोरी॥ गई दधि बेचवे मैं ब्रजकी खोरी ॥ कह्यो मुसकायके कहँ जात गोरी ॥ अचानक टार घूँघटपट कन्हाई ॥ लगायो कंठ मोतिनमाल तोरी ॥ भरी शिरसे गगरिया धरणि पटकी ॥ वहुत हटकी न मानी एक मोरी॥कियो मोहिं बावरी चितवन मिलाके ॥ नजानूं कौनसी डारी ठगोरी ॥ महरी तेंने अनोखो पूत जायो ॥ फिरे वन वनकरे

माखन की चोरी ॥ बसेंगी जायके कहि अंत ठौरें ॥ जुगलचरणों मे मैं करती नि होरी ॥ ५७२ ॥

राग देश।

चलोरी आली वंशीबट तीरें ॥ रट लागी श्रीराधेराधे नागर नटवर श्याम शरीरें ॥ कहूँ लकुट कहुँ मुकुट पीत पट शिथिल अंग मन विरह अधीरें॥ ललित किशोरी सुन व्याकुल गति चल मिल मेटो मदनकी पीरें ॥ ५७३ ॥

सवैया।

शैल कपीचर पार परे यहि भाँति सुन्यो हरिजी बल तोरा ॥ है मन चंचल वानर सो अरु शैल समान सो चित्त कठोरा ॥ नाहि करी तमसा तुम्हरी बल औसर बेन सुनोप्रभु मोरा ॥ नाथ भले बलवान हुते मम दासकी बेर भयो बल थोरा ॥ ५७४ ॥

गह तंदुल ब्राह्मणके करसे तव आपद ताकी सुदूर निवारी ॥ गज कंज दिये तब ग्राह कटे फल खायके भील सुता सो उधारी॥ गल फूलनमाल गही कुबजा तब कूबरिकी कटि नाथ सवाँरी ॥ बिन मूल न काम करो हरिजी जग लोगनकी गति तैं उर धारी ॥ ५७५ ॥

गुण थोरेही ते प्रभु रीझ रहो वह भूल गईअबबानि तुम्हारी॥ फल फूलन ते बन भीलसुता मथुरा पुरमें हरि कूबरि तारी ॥ गणिका गजराज उधार करे तो दयालुहुते सु मुकुंद मुरारी ॥ अब के करुणा हरि पीठ दई अरु के कर फारचो तो कागज कारी ॥ ५७६ ॥

कब आवैगे वे मम ऊपर ते दिन देह रटे मम गङ्ग किनारे ॥ सबही जगते पुनि शात लहे मुख नाम सो शीश गँगोदक धारे ॥ पुनि बैठ शिलातलमे हरिकी पदवी दृग मेलके नीत

चितारे ॥ हरि ध्यान समे तनु मोहि गिरे जल मात समान सो सग सँभारे ॥ ५७७ ॥

जा जलको विधि पान कर्यो पुनि पावन वामनपाद पखारे॥ शंकर पावन हेर उरे पुनि शीश निरन्तर सो जल धारे ॥ भूप भगीरथके तपसा पुनि जा जल सो कुलभूपति तारे ॥ सो जल पावन मे पर्यो सो पिखो उर मे वडभाग हमारे ॥५७८॥

कुंचित हैं अलको श्रुति ऊपर कुंडल हैं शुभ कानन माही ॥ कुडलके कच मेचक में लसिके तडिता घन मेचक जाही ॥ वोल समै छबि पुंज तरग कपोलन सागर ते निकसाही ॥ नैन हरे मद कंजनके सम आननके शशि कोटिन नाही ॥५७९॥

हरिके पदपंकज प्रेम करे न करे हरिबेमुख लोकन सगा ॥ नहि आपन मान सो भूल चहै पुनि ऑरन को न करे मन भगा॥ सव ऑर तजे जग अंग महा सो रहै हरि पूरण के रुपरगा ॥ इक ठौर अहार करे न सदा शुभ सत धरे व्रत नीर विहगा ॥५८०॥

हरि नाम भजे जग भीतर जो जननी सुत या विधिको उपजाये॥ अथवा जननी सुत सोइ जने रणभीतर जो अरिके दल धाये ॥ सिर लौं धन दान करे जगमे शुभ के जननी सुत यो निपजाये॥ इन तीन विना कुमिके सुतके हित यैवन नाहि अकाज गँवाये ॥५८१॥

गजल ।

नही हम वेदके वादी विरागी मन हमारा हे॥ नही हम वेष के योगी हमारा पंथ न्यारा हे ॥ रहे हम सुन्न के मडल जहाँ वहु वेशुमारा हे ॥ नही वहँ जाय हरएककी जहां हम जीव डारा हे ॥ देखा दिल दूरवीनी से जहँ तहा पीव प्यारा हे॥ करें हम एक की सेवा चली जिसका पसारा हे ॥ ५८२ ॥

राग सारँग ध्रुपद।

बैठे हरि राधा सग कुज भवन अपने रंग कर मुरली अधर धार सारँग वही गाई है ॥ मोहन अतिही सुजान सर्व कला गुणनिधान एक तान बूझ चूकके बजाई है ॥ प्यारी जब गह्यो बीन चेत्यो तब गुण प्रवीन अति नवीन अतिनवीन ओही तान गाईहै ॥ वल्लभ गिरिधरन लाल रीझ दीनी अंकमाल भले जू भले दयाल संतन सुखदाई है ॥ ५८३ ॥

गजल।

आशिक हुआहूँ उसपै जो नजरो से दूर है॥ साया उसका यह जग जो कुछ जहूर है ॥ जो है ख्याल वहम फहमसो परेसम् ॥ मुरशिदकी सेन वैन से हाजिर हजूर है ॥ औ साफ उसकी जात का क्योकर करूँ बयां ॥ क्या ताब है किसी में अकल क्या शऊर है ॥ घायल किया है मेरे तई उसके इश्कनें ॥ दिल जान उस सजन पे मेरा चूर चूर है ॥ यह काम आशकीका सुनो राम रूप से ॥ पहिले फना जो होय तो फिर वही नूरहै ॥ २८४ ॥

राग प्रभाती।

बन पडे तो नेकी करना आखिर तो है मरना॥ धन यौवनके जोर जुलुममें इतना नही उछलना ॥ कभी जालमें फँस जावोगे जस जगलको हरना॥ गनी गरीबनको हक नाहक इतना नही रगरना ॥ दो दिनकी हशमत है तेरी साहिब सो कछु डरना ॥ कुफल करें अधरमकी दौलत मिसूल बांस का फलना ॥ अभी तुझे मालूम न पडता अत पडेगा भरना ॥ जान बूझ टेढे रस्ते पर वदे कदम न धरना ॥ देव देव कह राम राम भवसागर पार उतरना ॥ ५८५ ॥

कोई सफा न देखा दिल का यह सांचा बना झिलमिल का॥ कोइ चिल्ली कोइ बकुला देखा पहिर फकीरी खिलका ॥ बाहर मुख सो ज्ञान छांटते भीतर गोरा छिलका ॥ औरनके पिसवे में शूरमा पटतर लोढा शिल का ॥ राम नाम मे अजब आलसी जैसे मरा मजिल का ॥ राम लगन बिन जप तप झूठा झूठा तप का फजिल का ॥ क्या कहे गुरुदेव न पाया मरहम आंखके तिल का ॥ ५८६ ॥

तेरी खाक फकीरी दिल से चाह न छूटी ॥ मान बडाईजा दिन भाई ता दिन किसमत फूटी ॥ अपने में सारो जग देखत रसकी लूटा लूटी ॥ या मति बिन दिन दिन तनु छीयो शिर की कूटा कूटी ॥ पूरी बिपति महती आई प्रीति रामसे छूटी ॥ सेवा पूजा सब ठग हारी मिसल जालकी खूटी ॥ चेटक नाटक नट विद्यासे सारी खिलकत जूटी ॥ मिलै नहीं वसुदेव दुलारे प्राण सजीवन बूटी ॥ ५८७ ॥

हरि सो लागा रहु रे भाई तोरी बनत बनत बनजाई ॥ ऐसा भजन करो घट भीतर छोड कपट चतुराई ॥ सेवा बदगी और अधीनता सहज मिले रघुराई ॥ दुनियाँ दौलत माल खजाना बनियां बैल चलाई ॥ एक बात मोहि लाग अचभव खोज खबर नहिं पाई ॥ स्याही गई सफेदी आई अब क्या करिहो भाई ॥ राम नाम सुमिरन नहिं कीना बिरथा जन्म गँवाई॥ ध्रुव प्रह्लाद नामसे तर गये तर गये सदन कसाई॥ हरिकी सरबर कौन करेगो नानक बात बताई ॥ ५८८ ॥

मुख सो राधा कृष्ण बोल तेरा क्या लगेगा मोल ॥ तेरे हाथ पाँव नहि हलते दश बीस कोश नहिं चलते गिरहो कि गांठ नहिं

राग सारँग ध्रुपद ।

बैठे हरि राधा सग कुंज भवन अपने रंग कर मुरली अधर धार सारॅग वही गाई है ॥ मोहन अतिही सुजान सर्व कला गुणनिधान एक तान बूझ चूकके बजाई है ॥ प्यारी जब गह्यो बीन चेत्यो तव गुण प्रवीन अति नवीन अतिनवीन ओही तान गाईहै ॥ वल्लभ गिरिधरन लाल रीझ दीनी अंकमाल भले जू भले दयाल सतन सुखदाई है ॥ ५८३ ॥

गजल ।

आशिक हुआहूँ उसपै जो नजरो से दूर है॥ साया उसका यह जग जो कुछ जहूर है॥ जो है ख्याल वहम फहमसो परेसम् ॥ मुरशिदकी सेन वैन से हाजिर हजूर है ॥ औ साफ उसकी जात का क्योकर करूँ बयां ॥ क्या ताब है किसी में अकल क्या शऊर है ॥ घायल किया है मेरे तई उसके इश्कने ॥ दिल जान उस सज्जन पे मेरा चूर चूर है ॥ यह काम आशकीका सुनो राम रूप से ॥ पहिले फना जो होय तो फिर वही नूरहै ॥ २८४ ॥

राग प्रभाती ।

बन पडे तो नेकी करना आखिर तो है मरना॥ धन यौवनके जोर जुलुममें इतना नही उछलना ॥ कभी जालमें फँस जावोगे जस जगलको हरना॥ गनी गरीबनको हक नाहक इतना नही रगरना ॥ दो दिनकी हशमत है तेरी साहिब सो कछु डरना ॥ कुफल करे अधरमकी दौलत मिसूल बांस का फलना ॥ अभी तुझे मालूम न पडता अत पडेगा भरना ॥ जान बूझ टेढे रस्ते पर बदे कदम न धरना ॥ देव देव कह राम राम भवसागर पार उतरना ॥ ५८५ ॥

कोई सफा न देखा दिल का यह सांचा बना झिलमिल का॥ कोइ बिल्ली कोइ बकुला देखा पहिर फकीरी खिलका ॥ बाहर मुख सो ज्ञान छांटते भीतर गोरा छिलका ॥ औरनके पिसवे में शूरमा पटतर लोढा शिल का ॥ राम नाम मे अजब आलसी जैसे मरा मजिल का ॥ राम लगन बिन जप तप झूंठा झूठा तप क्या फजिल का ॥ क्या कहे गुरुदेव न पाया मरहम आंखके तिल का ॥ ५८६ ॥

तेरी खाक फकीरी दिल से चाह न छूटी ॥ मान बडाईजा दिन भाई तादिन किसमत फूटी ॥ अपने में सारो जग देखत रसकी लूटा लूटी ॥ या मति बिन दिन दिन तनु छीयो शिर की कूटा कूटी ॥ पूरी विपति महती आई प्रीति रामसे छूटी ॥ सेवा पूजा सब ठग हारी मिसल जालकी खूटी ॥ चेटक नाटक नट विद्यासे सारी खिलकत जूटी ॥ मिलै नही वसुदेव दुलारे प्राण सजीवन बूटी ॥ ५८७ ॥

हरि सो लागा रहु रे भाई तोरी बनत बनत बनजाई ॥ ऐसा भजन करो घट भीतर छोड कपट चतुराई ॥ सेवा वदगी और अधीनता सहज मिले रघुराई ॥ दुनियाँ दौलत माल खजाना बनियां बेल चलाई ॥ एक बात मोहि लाग अचंभव खोज खबर नहि पाई ॥ स्याही गई सफेदी आई अब क्या करिहो भाई ॥ राम नाम सुमिरन नहिं कीना विरथा जन्म गॅवाई॥ ध्रुव प्रह्लाद नामसे तर गये तर गये सदन कसाई॥ हरिकी सरबर कौन करैगो नानक बात बताई ॥ ५८८ ॥

मुख सो राधा कृष्ण बोल तेरा क्या लगेगा मोल ॥ तेरे हाथ पॉव नहिं हलते दश बीस कोश नहि चलते गिरहो कि गाठ नहिं

खुलती तू मनकी गुन्डी खोल ॥ तेरा घोड़ा है बहु रंगी घोड़ेकी पांच बछेरी यह पांचों फिरें लुटेरी पांचो की बाग मरोर संसार काचकी बाजी तू किस पर होय राजी यह सकली सुपन समाजी तू तिस पर मन ना डोल ॥ तोहि बहुत गुरू समझावे तू फिर कर जन्म न पावे सॉचा हरि चरणों लावे झूठे जगका नाता तोड़५८९॥

राग कालिंगडा।

लाल तोहि हौंही आज मनाऊँ ॥ झीनी स्वर सों रट मुरली मे राधे राधे गाऊँ ॥ नटवर वेष बनाय आपनी भामिनी तुमहि बनाऊँ ॥ अलकन छिटक अश अपने तव वेणी शीश गुथाऊँ ॥ दै तव भाल अरुणबेंदी हों केसर खोर लगाऊँ ॥ तुम बैठो गह मौन मानिनी हौं बलि विनय सुनाऊँ॥ भृकुटी तान विलोको तुम हौं टोडी हाथ लगाऊँ॥ अंबर झटक मोर मुख बैठो हौं नचसम्मुख आऊँ ॥ कुटिल बोल बोलो घूँघट ले हौं झुकि नैन मिलाऊँ ॥ ललित किशोरी नवल वधू तुम हौं नव रसिक कहाऊँ ॥ ५९०॥

प्यारी हा कैसे कर मान रचाऊँ ॥ कैसे कर नैन तरेरों तुमपै कैसे कर भौंह चढाऊँ ॥ कैसे कर बैन कुटिल निकसे मुख कैसेकर दीठ दुराऊं ॥ कैसेकर झटक नील पट कर सो हाहा तुमहिं खवाऊ कैसे कर विनय ललित मुख प्यारी इन श्रवणनहि सुनाऊ ॥ ललित किशोरी श्रमित तुमहिं क्यो देख धीर उर लाऊं ॥ ५९१

राग सोरठ।

पिया ते मैं क्यों कीनो मान ॥ मोहन आ झरोखा झकि मैं कीनो अभिमान ॥ लागी लगन गोपाल पिया तो छाँड़

दई कुल कान ॥ पुरुषोत्तम प्रभु आन मिलावो नातर तजूंगी प्रान ॥ ९९२ ॥

तुम सुनिये हो बलि राजा बसुधा काहूकी न भई ॥ सतयुग में हरणाकुश राजा चारो खूट मही ॥ अतिव प्रचड महीपति राजा बाहूके संग न गई ॥ त्रेता में रावण भयो राजा कञ्चन कोट भई ॥ इक लख पूत सवा लख नाती लकड़ी काहू न दई ॥ द्वापरमें दुर्योधन राजा नौलख भीड सही ॥ सोरा योजन वाके छत्र झुलत रहे मट्टी गिधन लई ॥ सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग चारो युगन मही ॥ कहत सूर वई नर झूंठे जिन यह अपनी कही ॥९९३ ॥

राम नाम इक सार और सब झूठो है ससारा ॥ रामको नाम अमीरस भाजन सो मोहि अधिक पियारा ॥ भाई बधु अरु लोक कुटुम्ब सब मात पिता सुत दारा॥ अंत समय कोइ काम न आवे देखो दृष्टि पसारा॥यह देही सुमिरनको दीनी मिलत न बारंबारा॥ ताको पाय वृथा क्यो खोवत भजत न एको बारा॥ जगतसिंधु मे आन फॅस्योहै उठत भॅवर भ्रम भारा ॥ युगल चरण की नौका कीजे उतर जाय भवपारा ॥ ९९४ ॥

राग प्रभाती।

राम प्रताप न जाने पिता तू रामप्रताप न जाने ॥ राज पाय बौराने॥नरका शखा मधुकैटभ हरणाणाकुश बलवाने॥तिन तिनका तिनका कर तोरचो ऐसे शारँगपाने॥जाकी कृपा भई जग विजयी तासो वैर सो ठाने ॥ देखो नैन रैन कर सुपना सब तज भज भगवाने॥ रोम रोम रम रह्यो रमापति वेद पुराण बखाने॥निशिदिन अज हर ध्यान धरतहै तू कैसे रिम माने ॥ सह नहिं सकत त्रास

भक्तनके भक्तन हाथ बिकाने ॥ सब कल्यान ज्ञान कर देखो युगल चरण लपटाने ॥ ५९५ ॥

लावनी ।

कैसे करूं कछु नहिं आवत जिय दुख कैसो भारी है। कोई गाय रावल समझावो यह क्या बात बिचारीहै ॥ आठ मास दश गर्भ में राख्यो शरद गर्म ऋतु न्यारीहै॥सो कैसे जननी विष प्यावे बाजी कठिन करारी है॥राम नाम उरसो नहिं छोडत हठ कर कहत पुकारी है ॥ बार बार बहु विधि समुझायो विनती कर २ हारी है ॥ ५९६ ॥

हे माता मन शोच न कीजे राम नाम पद भारी है ॥ जहँ जहँ भीर परी भक्तन पर तहँ तहँ आय निवारीहै॥घट घट में जल थल मे व्यापक हरिकी लीला न्यारी है॥युगलदास प्रभुके चरणन पर बार बार बलिहारी है ॥ ५९७ ॥

राग सोरठ।

राखि लेहु भगवान अबकी राखि लेहु भगवान॥खभसो मोहिं बांध दीनो खड्ग लीनो तान ॥ करके यत्न अनेक हारो रही एक न आन ॥ अबतो कठिन कृपान ताने लियो चाहत प्रान॥मोहि वेग उबार लीजे सुनिये कृपानिधान ॥ युगल चरण सनेह चाहत धरत तेरो ध्यान ॥ ५९८ ॥

राग ठुमरी।

लीजिये करुणानिधान वेग सुरत जानकी ॥ पाप पीन पुण्य क्षीण काय वाक मन मलीन दीन वित्त हीन चित्त आश न गुण गणकी ॥ काल कर्म गुण सुभाव सुखप्रद प्रभु पद विहाय भ्रमत भ्रमत पथ अमित ऐसी रुचि मनकी ॥ स्वारथ हित द्वार

द्वार वार वारकर पसार लाभ तिरस्कार हानि अशनहूँ वसनका ॥ जानत हूँ प्रभु कृपाल भंजन भव फन्द जाल शरण पाल वान प्रणत दीनता हरनकी ॥ काचो मन राचो नहि रावरे सनेह साँचो हरे कौन नाथ विन त्रिविध ताप तनकी ॥ द्रुपदसुता जानकी गजेंद्रको उवार पैज राखी प्रह्लाद तथा पांडुके सुतन की ॥ साँचेहूँ झूँठ रामदास नाम नाते नाथ कीजिये सम्हार लाज राखो निज पनकी ॥ ५९९ ॥

राग जंगला ।

हरि बिन को राखे पति मेरी ॥ अंधको अघ महा जो दुशासन आन सभा में घेरी ॥ भीषम द्रोण कर्ण से बैठे इनहूँ नेक न हेरी ॥ अब मति भ्रष्ट भई सबहिनकी पकरलियो ज्यो चेरी॥एक विश्वास यही दृढ़ मेरे कृष्ण कृष्ण कह टेरी ॥ सूरदासप्रभु वसन बढ़ाये ह्वै गयो पर्वत ढेरी ॥ ६०० ॥

कोइ दमका इहां गुजारा रे तुम किस पर पाउँ पसारा रे ॥ इहां पलक झलक दा मेला है कुछ करले यह अब वेला है कोइ पल का इहां नजारा रे ॥ इहां रात सराय का रहना है कछु स्थिर होय न वहनाहै उठ चलना सांझ सकारा रे ॥ ज्यो जल बीच बतासा है त्यो जग का सभी तमासा है यह अपनी आंख निहारा रे ॥ देखन में जोइ आवे है सभ खाक माहिं मिल जावैहै यह सभी कालको चारा रे ॥ दृष्ट मान सब नाशी है इस कालकी सभ पर फाँसी है इस काल सभनको मारा रे ॥ जिन के दर नौबत बाजे हैं वे तखत छोड़ कर भाजे है जिनके लशकर लाख हजारारे ॥ कई पीर पिगंवर हूएहैं इस काल ने सभी

बिगोए हैं यह सभही ऊपर भारा रे ॥ कई गौस कुतुब सभ घेरे हैं इस काल ने सभी निबेरें हैं तू किनमें कौन विचारा रे ॥ यह मनुष देह कब पावे हैं यह वादही वाद गँवावे हैं क्यों अपना काज बिगारा रे ॥ ६०१ ॥

सवैया ।

दीन मलीन दुखी अँगहीन विहंग परयो छीन दुखारी ॥ राघव दीन दयालु कृपालु को देख दुखी करुणा भइ भारी ॥ गीध को गोद में राखि कृपानिधि नैनसरोजन मे भरि वारी ॥ वारहि बार सुधारत पख जटायुकी धूरि जटानसो झारी॥६०२॥

वेदविरुद्ध महामुनि सिद्ध सशोक किये सुरलोक उजारयो ॥ और कहा कहुं सीय हरी तबहूं करुणानिधि कोप निहारयो ॥ सेवकक्षोभ ते छाँडी क्षमा तुलसी लख्यो राम स्वभाव तिहारयो॥ तौलौनदाप दलो दशकंधर जौलौ विभीषण लातनमारयो६०३॥

कवित्त ।

नीर भरे नैन मुख बैन हू न सके बोल हैं न तन सुध सुख ऐन लख आई है ॥ आली सभ बूझे हर्ष कारण तू कहे क्यों न चैन अति पाय अग पुलकावलि छाई है ॥ बोलीधर धीर बाग देखन द्वे कुवँर आये अंग अंग शोभा सभभांति सो सुहाई है ॥ श्याम गौर वे किशोर कैसे करि गाय कहूं वैन है अनैन नैन वैन नाहिं पाईहै ॥ ६०४ ॥

रूठे क्यो न रादा वाते कछु नहीं काज एक तूही महराजा और कौनको सराहिये ॥ रूठे क्यो न भाई वाते कछू न बसाई एक तूहीहै सहाई और कौनपास जाइये ॥ रूठे शत्रु मित्र उदासीन आठो याम एक रावरे चरणनके नेहको निवाहिये ॥

लोक सब झूठा एक तूहीहै अनूठा सभ चूमेंगे अंगूठा प्रभु तू न रूठा चाहिये ॥ ६०५ ॥

राग विहाग ।

अबकी राखि लेहु भगवान ॥ हम अनाथ बैठी द्रुम डरियां पारधी साध्यो बान ॥ ताके डर निकसन चाहतहो ऊपर रह्यो शचान ॥ दोऊ भांति दुख भयो कृपानिधि कौन उबारे प्रान ॥ सुमरतही अहि डस्यो पारधी लाग्यो तीर शचान ॥ सूरदास गुण कहँ लग बरणो जै जै कृपानिधान ॥ ६०६ ॥

राग प्रभाती ।

उठ जाग घुराडे मार नही ॥ यह सोण तेरे दरकार नही॥ इक रोज जहांनो जानाहै जा कबरे बिचसमानाहै तेरागोशत कीढेखाना है रख चेता मारग विसार नही॥तेरा साहा नेड़े आया है कछु चोली दाज रँगाया है की अपना आप बजाया है ऐ गाफल तैनूं सार नही ॥ तू सोके उमर गँवाई है तेरी साइत नेड़े आई है तू चरखे तद न पाई हैं क्या करसी दाज तयार नही ॥ तू जिस दिन योवन मत्तीसैं तेनाल हूरादे रत्ती सैं हो गाफिल दुनिया सुत्ती सैं हुन बाही तेरी वहार नहीं ॥ तू मुडढो बहुत कुचज्जी सैं तू हर पूजा तू लज्जी सैं तू खाखा खाणे रज्जी सैं ने कोलो कोण बेजार नही ॥ अज कल्ह तेरा मुकलावा नी क्यों सुत्ती हैं कर दवानी अनडिठयां नाल मलावा नी यह भलके गर्म बजार नही तू एस जहानो जायेगी फिर कदम न एथे पायेगी यह योवन रूप बजाग्रेगी तै रहना बिच ससार नही ॥ बुल्लाशाहे बिन कोई नही एथे औथे दोही सगइं सभल सभल कदम टिकाईं फिर आवन दूजीवार नहीं ॥ ६०७ ॥

राग होरी-भैरव ।

प्रातकाल नंदलाल खेलत हैं होरी ॥ आई आनंद भरी ब्रज की सब गोरी ॥ कंचन पिचकारी हाथ औ गुलाल झोरी ॥ शीश पाग लटक रही केसर रँग बोरी ॥ वल्लभ गोपाल निरख विहँसत मुख मोरी ॥ ६०८ ॥

राग भैरव ।

शोभा सदन बदन दोउ देखे ॥ आलस अंग जंग निशि जागे भरे विनोद अपार विशेखे ॥ भूपन बसन मणिन हारावलि ललित नैन काजर छबि रेखे ॥ रसिछ खुशाल विलोकत या छबि राधावर सुखसार विशेखे ॥ ६०९ ॥

राग होरी-देश ।

वीर यह पीर न जाने री मोरी आंखिन मलत अबीर ॥ झटके ते आरोही अटकत भर पिचकारी ताने सुरझावत पट बूंद झपट हँस अतर कपोलन साने ॥ ललित किशोरी निपट हठीलो नट नँद को नहि माने ॥ ६१० ॥

राग मालकौंस ।

आली दशरथसुत सुखदेना ॥ भरनैना देखो सो नैना ॥ सुर नर मुनि मन हरन बरन बर कोटि काम सुंदर सुखमंदिर तन मन धन न्योछावर कीनो निरख सखिन मन चैना ॥ कमल-नैन सुंदरकपेल अलकन झलकन कुंडल सुलोल मुसकानमंद सुखकंद चंद मुख मधुर मधुर बर बैना ॥ अंग अंग वारूं अनंग शिव धनुप भंग कर रंग आसन सिया अग अंग रस रंग रंग मगे रत्नहरी सुख ऐना ॥ ६११ ॥

राग मलार ।

यह दोउ झूलत रंग हिंडोरें ॥ दशरथ सुत अरु जनकनंदनी चितवन मे चित चोरें॥नान्ही नान्ही बून्दन पवन पुरवैया बरसत थोरें थोरें ॥ हरी हरी भूमि घटा झुक आई सरयू लेत हिलोरें॥हय दल पैदल जग दल रथदल कोट बने चहुं ओरें ॥ उपवन माहिं मधुर स्वर बोले कोकिल मोर चकोरे ॥ रत्न जडितको बन्यो हिंडोरा रेशम लागी डोरें॥ अरस परस दोउ झूल झुलावे इकसांवर इक गोरें ॥ वामें विमल सखी उरझानी अपनी अपनी ओरें ॥ तुलसिदास अनुकूल जानके सियाजी हँसी मुख मोरें ॥ ६१२ ॥

राग प्रभाती ।

मैं विरागन श्याम दी लाल वे मेरा पीया वतला देयो ॥ इक अंधेरी कोठरी लाल वे जित्थे दीवा न बाती ॥ बाहोंफडकेलै चले लालवे कोई सङ्ग न साथी ॥ ऊंचा पीपल जाड़ला लालवे लागरां लैन हुलारे ॥ कोठे चढके देखदी लाल वे प्यारा नजर न आवे॥दुलडी तिलडी चौलडी लाल वे गल प्रेम जंजीरी ॥ जा पुच्छो बुल्लेशाह नूं मुशकल बनी है फकीरी ॥ ६१३ ॥

शब्द ।

जिन्हा नूं शौक साईंदा लग्गा सभ कुछ छिर पर झलदे॥झक्खड़ झेडे बाय अधेरी वांग पर्वत ना हलदे ॥ सुख विच रज्ज नग विच कज्जन भुखखे हे इस गल दे ॥ कहे ग्वार जिन्हा अखुखी देख्या क्या कहे सुख पल दे ॥ ६१४ ॥

श्याम विना ऊधो ऐसे भई मैं ज्यो मछली विन पानी ॥ पत्ती रेता पई तडफ़फां वद किसे ना जानी ॥ कुडी दरद फराकतवाली

देही दरद रजानी ॥ महासिह साडा जीवन ताही मिलसी सारँगपानी ॥ ६१५ ॥

माए नी मैं रहां कुआरी बांदी की सुख पाया ॥ सोनादेके लाल व्याहज्या तांबा निकल आया॥खुल्ले केश गले विच मेरेजो लिख्या सो पाया ॥ मया राम जदतों सातों बिछडे तदतो योग कमाया ॥ ६१६ ॥

माए नी सुन मेरि ये माएआप पैयां शिर भारे ॥ लोक जानत हथ मेहँदी रँगुलीं भिन्ने हथ सारे ॥ मारां लत्त बुझावां बत्ती अग लावां इस खारे शगना वारे ॥ जिन्हादे नाल मुब्बत साडी लद चले बनजारे ॥ ६१७ ॥

माय नी सुन मेरीये माय की तदवीरॉ करिये ॥ योगन बनके न मिल्या सॉवरा केहडे पन्थ नूं फडिये ॥ जा तप करिये माधो वन म वहां सांवरा वरिये ॥ मयाराम साडा जीवन ताही जा यमुना डुब मरिये ॥ ६१८ ॥

जबकी श्यामा तैं बंशी बजाई तब मैं आइयॉ वन में ॥ सुन सुन तेरी मुरली दीयॉ वनघोरॉ ताकत रही तन में ॥ रंग रँगीला छैल छबीला ठाकुर मेरा गौआं चारे वन मे ॥ उस दिन ते बलिहारी ऊधो जिस दिन ठाकुर जन्मे ॥ ६१९ ॥

बाएनी तू बग्ग सवेले छम छम वगदी जाई ॥ जो कछु हाल असाडा देख्या प्यारे नू आख सुनाई ॥ साडी बलो तूं मिन्नत करके गल बिच पलडा पाई ॥ सूरदास प्रभु रोदी न छड गये एह गल आख सुनाई ॥ ६२० ॥

शिर धर मटकी जानी यां लटकी ॥ श्याम मिला मैंनूं खिलदा॥ सांवल कोलो नैन छिपाये उस डेरा मल्या दिलदा॥ सांवल मैंडा मैं सांवल दी फरक न रह्या विच तिलदा ॥ लख ग्वार पई झख मारे दिल दित्यां ते दिल मिलदा ॥ ६२१ ॥

राग जंगला ।

हटडी छोड चल्या बनजारा ॥ इस हटडी विच मानक मोती कोइ बिरला परखन हारा ॥ इस हटडी के नौ दरवाजे दशवां ठाकुरद्वारा ॥ निकल गई थंमी ढेह पया मन्दर रल गया चिकड गारा॥कहत कबीर सुनो भाई साधो झूंठा जगत पसारा ॥६२२॥

राग कान्हरो ।

तन मन धन वारो सांवरी सूरत माधुरी मूरत कुण्डल की झलक पर ॥ मुकुट लटक धरन रह्यो मतवारो रह्यो मतवारो ऐन सैन बैन नैन जग में उजियारो ॥ सुर नर मुनि ध्यान धरत मया-राम प्यारो ॥ ६२३ ॥

राग सोरठ ।

पढो भैया रे कृष्ण गोविंद मुरार॥ कह प्रह्लाद सुनो रे बालक लीजो जन्म सुधार॥ को है हरनाकुश अभिमानी जो सकिहै तुम्हैं मार ॥ राखन हार और है कोऊ श्याम धरे भुज चार॥पूरण पुरुष नरायण स्वामी सो करिहैं रखवार ॥ सूरदास प्रभु हरि सो मीता कभू न आवे हार ॥ ६२४ ॥

राग मालकौंस ।

निपट बकट छबि अटके मेरे नैना॥ देखत रूप मदन मोहन को पियत पियूष न मटके ॥ बारिज भवां अलकटेढ़ी मनो अति

सुगध रस अटके ॥ टेढो कटि टेढी कर मुरली टेढी पाग लर लटके ॥ मीरा प्रभुके रूप लुभानी गिरिधर नागर नटके ॥६२५॥

राग वसंत।

खेलत विपिन वसंत लाडिले नेह भरे पिय प्यारी ॥ रत्न जडित सिंहासन बैठे मध्य फुली फुलवारी ॥ तन सुख केसर भीने वागे अनुरागे छबि धारी ॥ भूपन भूपित अंग अंग द्युति दमक चमक मन हारी ॥ ताल मृदंग उपंग बजावत गावत अलि सुख कारी ॥ रस सरिता ललितादिक नितत आनंद मगन महा री ॥ उडत अवीर गुलाल लाल घन वन छबि छाय विहारी ॥ निरखत लाल रूप हित दंपति प्राण सपदा वारी ॥ ६२६ ॥

कवित्त।

गगनके मडलों चन्द्रमा मसालची किये हैं लाख तारे वाके दीपक दर्बार हैं ॥ ब्रह्माहू वजीर विष्णु कारदार देखियत शंकर दीवान रु गणेश चोबदार हैं ॥ शीलहूकी लक्ष्मी सो सदा अंग सग रहे कुवेर भडारी और इन्द्र जमींदार हैं ॥ कहे अवधूत प्यारे समझ विचार देखो राजनृपति राजा महाराजा करतार है ॥६२७॥

राग वसंत ।

फूली वनराई बेलरियां कोयल बोले अंब की डार ॥ भौंरा गुजार करत ऋतु वसंत आई लो खिली वहार ॥ भाँति भाँतिके वृक्ष झुकत झुकत झूम रहे पपीहा पिया पिया कर पुकार ॥ वार वार ग्वाल नार घिरत घिरत घूम रही हाथ लिये करवा फिरत

हैं चहुँ ओर ॥ हरि दासके प्रभु मुदित मुदित भये मोतिनकी माल गरे सज शृंगार ॥ ६२८ ॥

राग मालकोस ।

पारब्रह्म परमेश्वर पुरुषोत्तम परमानन्द नन्दनन्दन यशोदानन्द आनंद कद श्रीगोविंद ॥ करुणामय कमलनैन कृपासिधु सर्व चैन पूरण करता किशोर गुण निधान गोकुल चद॥ दीनानाथ दुखभंजन भक्तवछल जगवदन॥जगजीवन जगतनाथ ब्रजपति हर दीन वंधु॥राम रूप राधावर गोवर्धन कर पर धर रंगनाथ हृषीकेश गावत गुण भये अनद ॥ मधुसूदन मदनमोहन मुरली धर सर्व सोहन वासुदेव वनवारी काटो दुख द्वंद फद॥जन गरीब यश सुन सुन लाग रही अंतर धुन केशव वनवारी ब्रजपति गोकुलचंद ॥ ६२९ ॥

राग भैरवी।

सब मति हूँ ते यह मति भावै ॥ एक अधार नाम यश कीर्तन जव कव पार लगावै ॥ धर्म कर्म तीरथ व्रत संयम योग यज्ञ श्रुति गावै ॥ नहिं अधिकार नही बल माया चंचल मन न ठरावै॥ नानाग्रंथ वेद विधि नाना काहेको डहकावै ॥ भक्तराम प्रभु पतित पावन हैं यह भरोस जिय आवै ॥ ६३० ॥

राग देश।

ग्वारिनि जान उरहनो देह ॥ पूछो तो यह बात श्याम सों किहि विधि जुरचो सनेह ॥ प्रथम जाय वन वसी वृक्ष है छाँडग्राम अरु मेह ॥ एक पाँय सहे मैं सब दुख हिम ग्रीपम अरु मेह ॥

तजे सुमार फूल फल शाखा और सुखाई देह ॥ मार्‍यो तन मन अंग सुलाखत विविध बनाये बेह ॥ जा देहीको गर्व करत हो मुरली सों अति नेहु ॥ सूरश्याम यहि भांति रिझावो तुम अधर रस लेहुं ॥ ६३१ ॥

जिन्हां नू लग्गे प्रेम तमाचे घर दे कम्मो गैयां॥मात पिताकुल आलम सारा वर्जन सब भौ सैयां ॥ लख लख ताने लख लख चदियां वह भी शिरपर सहियां ॥ डुब्ब गया सब लहणा देणा खूह बिच पैयां बहियां ॥ उन्हांदा मुडन बिहारी केहा जेढिआं प्रेम फाही बिच पैयां ॥ ६३२ ॥

कवित्त।

द्वरकाके बीच पांसा खेलै हारि रुकमिनि वाही समै भारि जानी घूर्ण भगवंतजी॥डारे दल श्यामजीने कह्यो मुख अर्ब खर्ब रुकमिनि पूछे यह दाव क्याहै कतजी ॥ द्रौपदीहै भक्त प्यारी दुशासन दुख दीन भारी समै भीर जान देतहो पटतरी ॥ कहै मयाराम धाम त्याग श्याम दौर आये चीर तो बढाये पीर सहै नहि संतकी ॥ ६३३ ॥

संतन सहाय सदा शख चक्र धारे गदा पद्म लिये हाथ प्रभु पूरण गोपालजू ॥ भईहो निराश साथ रहा है मेरे पाउ परो नाथ हारि दीननदयालजू दुख मुरारी सुनो विनै मेरी केशौ राख जू ॥ कहै मयाराम धाम त्याग पीरे कहूँ ९ ३४

राग सोरठ ।

सुवा चल वा वनको रस लीजे ॥ जा वन कृष्ण नाम अमृत रस श्रवण पात्र भर पीजे ॥ को तेरो पुत्र पिता तू काको मिथ्या भ्रम जग केरो ॥ काल मँजार लेजैहे तोको तू कहे मेरो मेरो ॥ हरि नाना रस मुक्त क्षेत्र चल तोको दिखराऊं ॥ सूरदास साधन की संगति वडे भाग्य जो पाऊ ॥ ६३५ ॥

राग विहाग ।

भरोसो दृढ इन चरणन केरो ॥ श्रीयदुनाथ नख चन्द्र छटा विन सभ जग मॉझ अँधेरो ॥ साधन और नही या कलि मे जासे होय निबेरो ॥ सूर कहा कहे द्विविध ऑधरो बिन मोल को चेरो ॥ ६३६ ॥

राग भैरव ।

सुमिर मन गोपाल लाल सुन्दर अति रूप जाल मिटिहैं जंजाल सकल निरखत सग गोपबाल ॥ मोर मुकुट शीश धरे वनमाला सुभग गरे सवको मन हरे देख कुडलकी झलक गाल॥ आभूपण अंग सोहे मोतिनके हार पोहे कठ सिरि मोहे दृग गोपी निरखत निहाल ॥ छीत स्वामी गोवर्द्धन धारी कुवॅर नद सुवन गाइनके पाछेर धरत हैं लटकीली चाल ॥ ६३७ ॥

राग देश ।

चार वरन मे सोई वडा जिन राधाकृष्ण। रटा रटा ॥ काहेको जोडे माल खजाने काहेको छावत ऊची अटा ॥ जव यमकी तलबी आवेगी छोडजाय सभ लटा पटा ॥ यह दम हीरालाल

अमोलिक पल पल जाता घटा घटा ॥ वहां आया तू कौल करार कर यहां फिरता तू नटा नटा ॥ अपने कुटुंबको ऐसा देखे पलक उठाये पटा पटा ॥ जब तेरा हंसा चल्या जाताहै छोड़ जाय तू राजपटा ॥ यह संसार मतलब का गरजी बातां करता झूँठ-मठा ॥ चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि कानन कुंडल मुकुट-जडा ॥ ६३८ ॥

राग होरी जंगला ।

कैसे होरी खेलो पिया सँग दुबिधा रार मचाय रही रे ॥ पांच पचीसो फाग रच्योहै ममता रंग बनाय रही रे ॥ नाचत लाज कर्म के आगे संशय भाव बताय रही रे ॥ करके शृंगार कुमति बैठी भर्मके घुँघुरू बजाय रही रे ॥ यह तीनो ताल मृदङ्ग बजावैं में मैं रागिनी छाय रही रे ॥ कपट कटोरा मधु विष भर२ तृष्णा मन को छकाय रही रे ॥ याहि जीवको वश कर अपने हंसको काग बनाय रही रे ॥ जान बूझके सुनो भाई साधो संत जना ने पीठ दई रे ॥ दास कबीर कहैं कर जोरी हमरी तो ऐसीही बीत गई रे ॥ ६३९ ॥

राग चौबोला ।

कोइ हाल मस्त कोइ माल मस्त कोइ तूती मैना सूये में ॥ कोइ खानमस्त पहिरान मस्त कोइ राग रागनी धूये में ॥ कोइ अमल मस्त कोइ रमल मस्त कोइ सतरँज चौपड़ जूये में ॥ इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब गिरे अविद्या कूयेमें ॥ ६४० ॥

कोइ अकल मस्त कोइ शकल मस्त कोइ चंचलताई हासी में ॥ कोइ वेद मस्त कोइ तिब्ब मस्त कोइ मक्केमे कोइ काशी में ॥

कोइ ग्राम मस्त कोइ धाम मस्त कोइ सेवक मे कोइ दासी में ॥ इक खुद मस्ती विन और मस्त सब फँसे अविद्या फाँसी में ॥६४१॥

कोइ पाट मस्त कोइ ठाटमस्त कोइ भैरव में कोइ काली मे ॥ कोइ ग्रन्थ मस्त कोइ पंथ मस्त कोइ श्वेत पीत रँग लाली मे ॥ कोइ काम मस्त कोइ खाम मस्त कोइ पूरण में कोइ खाली मे ॥ इक खुद मस्ती विन और मस्त सब बँधे अविद्या जाली मे॥६४२॥

कोइ हाट मस्त कोइ घाट मस्त कोई वन पर्वत ओजारामे॥ कोइ जात मस्त कोइ पांत मस्त कोइ तात भ्रात सुत दारा मे ॥ कोइ कर्म मस्त कोइ धर्म मस्त कोइ मसजिद ठाकुरद्वारा मे ॥ इक खुद मस्ती विन और मस्त सब वहे अविद्या धारामे॥६४३॥

कोइ राज मस्त गज वाजि मस्त कोइ छप्पर मे कोइ फूले मे ॥ कोइ युद्ध मस्त कोइ क्रुद्ध मस्त कोइ खड्ग कुठार बसूले में ॥ कोइ प्रेम मस्त कोइ नेम मस्त कोइ छींके मे कोइ झूलेमें ॥ इक खुद मस्ती विन और मस्त सव पड अविद्या चूले मे॥६४४॥

कोइ साक मस्त कोइ खाक मस्त कोइ खासे मे कोइ मलमल में ॥ कोइ योगमस्त कोइ भोग मस्त कोइ स्थिति में कोइ चलचल में ॥ कोइ ऋद्धि मस्त कोइ सिद्धि मस्त कोइ लेन देन की गल गल में ॥ इक खुद मस्ती विन और मस्त सव फंसे अविद्या दलदल में ॥ ६४५ ॥

कोइ ऊर्द्ध मस्त कोइ अधो मस्त कोइ बाहरमें कोइ अंतरमें॥ कोइ देश मस्तकोइ विदेश मस्त कोइ औषधि मे कोइ मंतर में॥ कोइ आप मस्त कोइ ताप मस्त कोइ नाटक चेटक ततर मे ॥ इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब भ्रमे अविद्या जंतर में॥६४६॥

कोइ सुष्ट मस्त कोइ तुष्ट मस्त कोइ दीरघ में कोइ छोटे में ॥ कोइ गुफा मस्त कोइ सुफा मस्त कोइ तूंबे में कोइ लोटे में ॥ कोइ ज्ञान मस्त कोइ ध्यान मस्त कोइ असली में कोइ खोटेमे ॥ इक खुद मस्ती विन और मस्त सब रहे अविद्या टोटेमें॥६४७॥

यह लौलिक मस्त कहां लौं वरणो है मायाके दंगल में ॥ कौन करै तिनकी गिनती सब जकडे हैं दृढ संगल में ॥ छनमे रुष्ट तुष्ट इक छिनमे स्थिती सदा अमंगल में ॥ इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब भूले अविद्या जंगल में ॥ ६४८ ॥

शब्द ।

तर तीव्र भयो वैराग तो मान अपमान क्या ॥ जान्यो अपना आप तो वेद पुराण क्या ॥ खुदमस्ती कर मस्त तो मदिरा पान क्या ॥ किंचा जिनको देह अध्यास तो आतमज्ञान क्या॥६४९॥

वीतरागको ससारकी लोड क्या तृणवत् जान्यो जगत तो लाख करोड क्या ॥ चाह रज्जू सो बँध्यो तो फेर मरोड क्या ॥ किचा भ्रांति साथ विवाद तो फिर होड क्या ॥ ६५० ॥

ततपद त्वपद अर्थ भली विधि जानिये ॥ वाच्य लक्ष्य का भेद युगल पहिचानिये ॥ विरोधी अंश को त्याग अवरोधी मेलिये ॥ किचा या विधि भव संसार युगत सो हेलिये॥ ६५१ ॥

राग कान्हरा ।

होत सो जो रघुनाथ ठटी ॥ पच पच रहे सिद्ध अरु साधक मुनि तबहूं वधी न वटी॥योगी योग धरत मन अपने शिर पर राख जटी ॥ ध्यान धरत महादेव अरु ब्रह्मा तिनहूं पै नवटी ॥ यती

तपी तापस अराधे कोऊ पुनि रहे पती ॥ सूरदास भगवत भजन बिन कर्म फांस न कटी ॥ ६५२ ॥

राग बिलावल ।

रे मन जन्म पदारथ जात॥बिछुरे मिलन बहुरि कब ह्वै है ज्यो तरुवरके पात ॥ सुनत बात कफ कठ विरोधी रसना टूटी बात ॥ प्राण लिये यम जात मूढ मति देखत जननी तात ॥ छिन इक माहिं कोटि युग बीतत पीछे नरककी बात॥यह जग प्रीति सुआ सेमरको चाखत ही उडि जात ॥ यमके फद नही पड़ बौरे चरणन चित्त लगात॥कहत सूर वृथा यह देही अंतर क्यो इतरात॥६५३ ॥

राग रामकली।

अपनो आप मैने जो बिसरचो ॥ जैसे श्वान कांच मंदिर मे भ्रमि भ्रमि भूकि मरचो ॥ ज्यो केहरि प्रतिबिंब देखके आपन कूप परचो॥जैसे गज लख फटिक शिला मे दशनन जाय अरचो॥ मर्कट मूठ छांड नहि दीनी घर घर भ्रमत फिरचो॥सूरदास नलिनीको सुअना कहु कौने पकरचो ॥ ६५४ ॥

राग भूपाली।

विश्वपतीके ध्यानमे जिसने लगाई हो लगन ॥ क्यो न हो उसको शांती क्यो न हो उसका मन मगन ॥ काम क्रोध लोभ मोह शत्रु है सब महाबली ॥ इनके हननके वास्ते जितना हो तुझसे कर यतन ॥ ऐसा बना सुभावको चित्तकी शान्तीसे तू ॥ पैदा न इर्षाकी आंच दिलमे करे कहीं जलन ॥ मित्रता सबसे मनमें रख त्यागके वैर भावके ॥ छोडदे टेढी चालको ठीक कर अपना तू चलना ॥ जिससे अधिक न है कोई जिसने रचा है यह

जगत् ॥ उसकाही रख तू आसरा उसकी ही तू पकड शरन ॥ छोडके राग द्वेषको मनमें तू उसका ध्यान कर ॥ तुझपै दयाल होवेंगे निश्चय है यह परमात्मन् ॥ जैसा किसीक हो अमल वैसाही पाता है वह फल ॥ दुष्टोको कष्ट मिलता शिष्टोंका होता दुख हरन ॥ आप दया स्वरूप है आपही क है आसरा ॥ क्रिरपा दृष्टि कीजिये मुझपै हो वक्त जब कठिन ॥ मनमें हो मेरे चांदना मोक्ष का रस्तामिले ॥ मारके मन जो कें वला इंद्रियों को करै दमन ॥ ६५५ ॥

अथ राग रत्नाकरकी आरती ।

जय जगदीश हरे ॥ भक्त जनोके संकट छिनमें दूर करे ॥ जो ध्यावे फल पावे दुख विनशे मन का ॥ सुख संपति गृह आवे कष्ट मिटे तन का ॥ मात पिता तुम मेरे शरण गहू किसकी ॥ तुम बिन और न दूजा आश करू जिसकी ॥ तुम पूरण परमात्मा तुम अंतरयामी ॥ पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी ॥ तुम करुणाके सागर तुम पालनकरता ॥ मैं मूरख खल कामी कृपा करो भरता ॥ तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपती ॥ किस विधि मिलू गुसाईं तुमको मैं कुमती ॥ दीनबंधु दुखहरता ठाकुर तुम मेरे ॥ अपने हाथ उठावो द्वार परचा तेरे ॥ विषय विकार मिटावो पाप हरो देवा ॥ श्रद्धा भक्ति बढावो सन्तनकी सेवा ॥ ६५६ ॥

जय सच्चिदानन्द ॥ ॐ तत् सत् ॥

इति श्रीरागरत्नाकरे चतुर्थ भाग सम्पूर्ण ॥

समाप्तोऽयं ग्रंथः ।

छन्द।

राम कृष्ण रस रसिक चकोरहु पियहु मधुर रस अमी अघाय॥
जाते क्षुधा तृषा नहिं लागै कोह मोह रुज जाय नशाय॥
पियतहि जगे भक्ति उर प्रभुकी कलिमल भग लगै नहि देर॥
भवनिधि तरन उपाय अन्य जग यहि ते सुलभ न दूसर हेर॥
कृत युग ध्यान यज्ञ त्रेता महँ द्वापर किये चरणकी सेव॥
जो गति लहत जीव सो कलिमहँ प्रभुगुण गाय सहजमहँ लेव॥
रागनको भंडार ग्रन्थ यह अति उदार लखि सज्जन वृन्द॥
पढैं सुनैं गावैं लवलावैं पावैं परम ब्रह्म आनंद॥
बाल चरित्र कृष्ण रघुवरको लीला ललित लिखी यहि माह॥
अहै गायकनको जीवन धन भगतन भगति सिंधु शक नाहिं॥
मति अनुसार सुधारि यथा विधि रामकृष्ण पदरज लवलीन॥
शोधन कियो वदि कवि याकहँ जस कछु प्रभु उर प्रेरण कीन॥
खेमराजकी विनय कान करि धरि उर ध्यान गुनहि मतिमान॥
भूल चूक लखि करहि क्षमापन प्रभु गुण ग्रथित ग्रन्थ यह जान॥